26927



श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ

अनुभूति एवं अभिव्यक्ति

सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ का यह
नुभूति एवं अभिव्यक्ति नाम से
1992 से 2000 के बीच सतत
अर्जुनसिंह पत्रकारों के प्रिय
जाते हैं। पत्रकार वार्ता,
ात्कार, सभा, सम्मेलन, गोष्ठी,
में सदा सक्रिय रहने वाले
प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय
रन्तर मिलते-बतियाते रहे हैं। इस
ब जहाँ-जहाँ आपने जब जो कुछ
बका संकलन और प्रकाशन एक
है,किन्तु महत्त्वपूर्ण चर्चा और वार्ता
अंश इस खण्ड में संकलित किया

र्जुनसिंह हमारी समकालीन राजनीति के
ान् वरिष्ठ नेताओं में अग्रणी हैं,
पनी कार्यशैली में मानवीय मूल्यों और
क समस्याओं को अपना मूल वैचारिक
ाया है। विश्व के राजनीतिज्ञों के बारे में
कालित प्रेरणादायी प्रसंग हम पाते हैं,उस
हटकर श्री अर्जुनसिंह एक अलग पहचान
करने में सफल रहे हैं।
क राजनेता कब, किन परिस्थितियों में,
चता है, कहीं वह किन्हीं प्रौढ़ी जरूरतों के
किसे फैसले लेता है, कहीं वह किसी
र अथवा निरंकुशता के बल पर तो ये
नहीं ले रहा है, उसकी [illegible] शक्ति के
तर्क की गहरी [illegible] है कि नहीं, उसके
र और [illegible] सम्मत है कि
[illegible]
[illegible] में [illegible] नहीं है,
[illegible] पर [illegible]
[illegible] निर्णय किया
[illegible] है।



General Knowledge
26927
REFERENCE BOOKS
Data Entry Complete
B.H.E.L. CAREER COLLEGE BHOPAL
ACC.No.....
Book No.....
Date.....



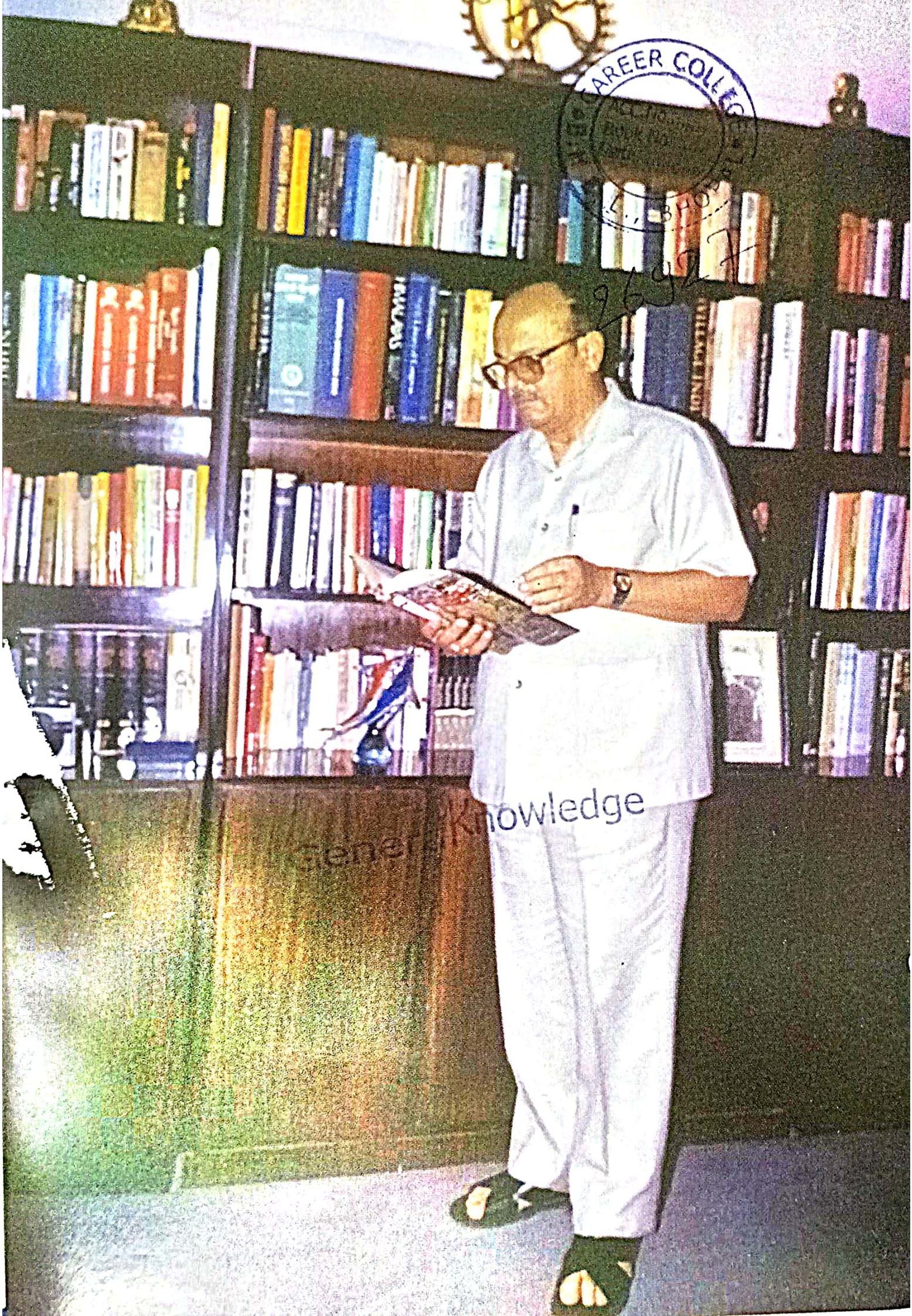
General Knowledge

26927

श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ

सप्तम खण्ड : अनुभूति और अभिव्यक्ति

संयोजन : इण्डियन राइटर्स एसोसिएशन, कोलकाता

प्रकाशन : श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,
4 इन्दिरा प्रेस परिसर, महाराणा प्रताप नगर,
भोपाल-462011

☐ प्रथम आवृत्ति

☐ कार्तिक कृष्ण अष्टमी, विक्रम संवत् 2061, 5 नवम्बर, 2004

☐ © लेखकों के सौजन्य से संपादक

☐ **प्रस्तुति दिग्दर्शक : आशीष**

☐ **मुद्रण निदेशक : मनीष**

कम्पोजिंग : आकृति फोटोटाइपसेटर्स एण्ड प्रोसेसर्स

मुद्रण : आदर्श प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

4/1, इन्दिरा प्रेस परिसर, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462 011

☎ : *2555442, 2550291*

General
Knowledge

26927

श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

खुशवन्त सिंह
सैय्यद हैदर रज़ा
प्रो. के. अयप्पा पणिकर
प्रो. कल्याणमल लोढ़ा
जिया फरीदुद्दीन डागर
प्रोफेसर डॉ. धनंजय वर्मा
दिग्विजय सिंह
डॉ. बिन्देश्वर पाठक
विष्णु खरे
कमलाकर सोनटके
मदन मोहन जोशी
प्रो प्रेमशंकर रघुवंशी
अजीत जोगी
प्रभात गांगुली
राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल
सुभाष यादव
झुमकलाल भेड़िया
बी.आर. यादव

राजेन्द्र सिंह
महेन्द्र सिंह चौहान
बंशीलाल धृतलहरे
प्रताप सिंह बघेल
श्रीमती उर्मिला सिंह
मोहम्मद अकबर
कांतिलाल भूरिया
चरणदास महन्त
डॉ. आर.के. बिसार्य
सत्यनारायण शर्मा
दीपचंद यादव
मोहम्मद युनुस
बी.एल. सिंह
भूपेन्द्र गुप्ता
मुरारीलाल अग्रवाल
पी.सी. पाठक
आशिस सान्याल
छतरसिंह
विष्णु राजोरिया

इंडियन रायटर्स एसोसिएशन

संरक्षक
महाश्वेता देवी
डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र
नीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
अमिताभ चौधरी
सेवाब्रत गुप्ता
तरुण सान्याल
डॉ. प्रभा खेतान
डॉ. सुरभि बन्दोपाध्याय
नीतिश बिस्वास
डॉ. एस. घोष
एस. कृष्णमूर्ति
गौतम प्रसाद बरुआ
डॉ. नलिन पटेल
एस.ए.मलिहाबादी
विश्वम्भर नेवार
डॉ. उज्जल कुमार मजुमदार
होसेनुर रहमान
देवूलाल बनर्जी
गणेश प्याने
सुचित्रा मित्रा
देवाजंन चक्रवर्ती
सुधांशु शेखर डे
के.सी. धर
संकर मण्डलोई
समित सरकार

कार्यसमिति
प्रेसिडेंट
प्रो. कल्याणमल लोढ़ा
कुलपति, जोधपुर विश्व विद्यालय
उपाध्यक्ष
डॉ. के.सी. भुनया
उड़िया लेखक
गीतेश शर्मा
हिन्दी आलोचक
जनरल सेक्रेटरी
प्रो. आशीष सान्याल
बांग्ला लेखक
मुख्य सलाहकार
मुरारी लाल अग्रवाल
कोषाध्यक्ष
प्रो. श्री शंकर झा
हिन्दी-अंग्रेजी लेखक
सदस्य
सचिन दास
बांग्ला लेखक
कल्याण गंगोपाध्याय
बांग्ला लेखक
डॉ. ज़रीना ज़रीन
उर्दू शायर - आलोचक
प्रणब बरुआ
असमी कवि
ज्योर्तिमय दास
बांग्ला लेखक
सोमेन्दु गंगोपाध्याय
बांग्ला लेखक
डॉ. इन्दु जोशी
हिन्दी लेखिका

General Knowledge

संपादन सलाहकार
पद्मभूषण डॉ. बिन्देश्वर पाठक
प्रोफेसर डॉ. धनंजय वर्मा
डॉ. उज्जल कुमार मजुमदार
डॉ. अवधेश प्रसाद पाण्डेय
माधव शुक्ल मनोज
प्रो. प्रेम शंकर रघुवंशी
मदन मोहन जोशी
आशिस सान्याल
संपादन सहयोगी
पंकज शर्मा
संजय द्विवेदी
डॉ. हरिकृष्ण दत्त
अहद प्रकाश
मोहम्मद युनुस
उत्पल बैनर्जी
ज्योतिष जोशी
सहायक संपादक
मनोहर चौरे
संपादक
विष्णु राजोरिया

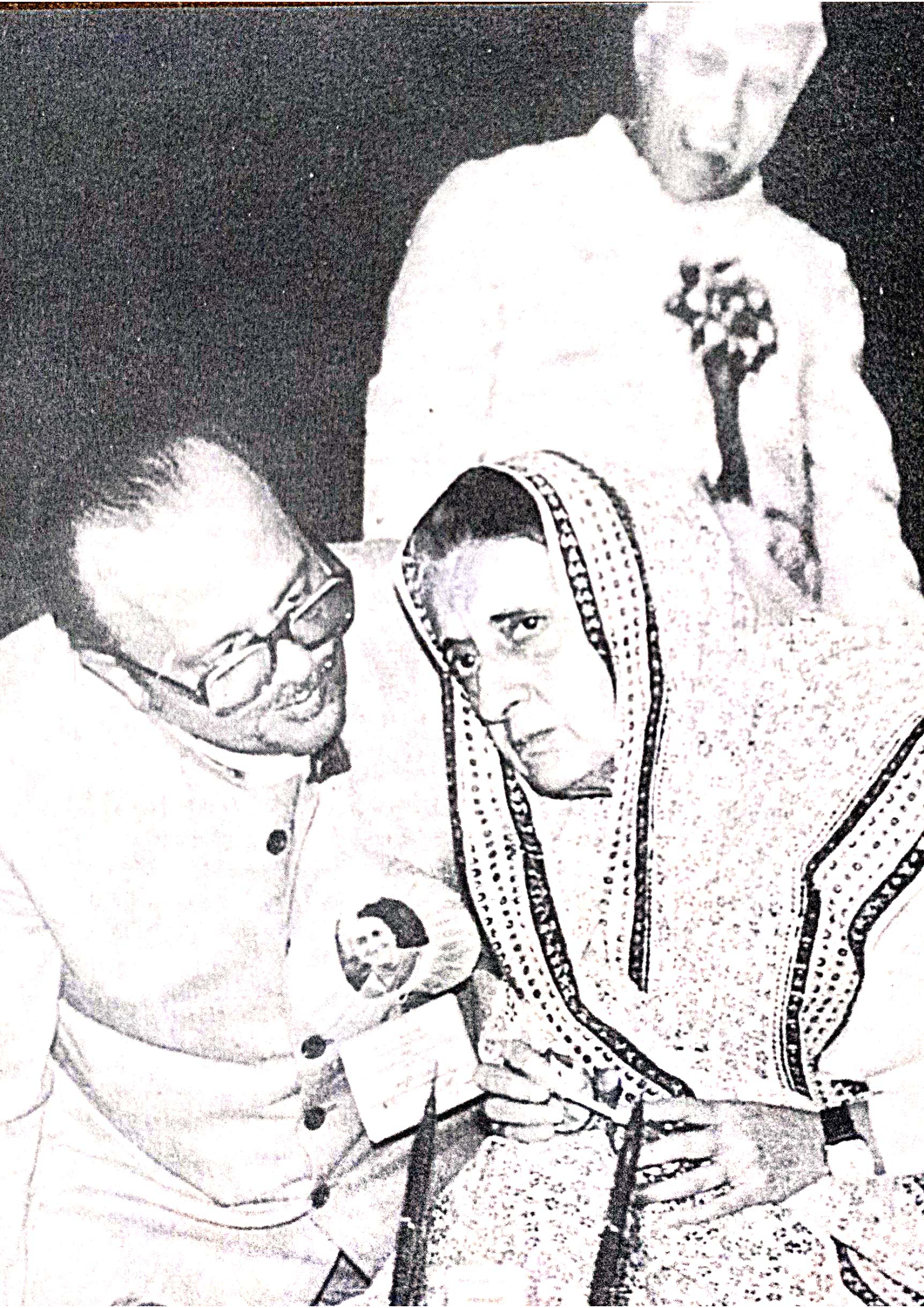

पुरोवाक्

"हम प्रजातंत्र की बात तो करते हैं; लेकिन प्रजातंत्र कोई व्याख्यान नहीं है। कोई कोड ऑफ कंडक्ट नहीं है। प्रजातंत्र केवल जन विश्वास पर टिका हुआ है और वह विश्वास भौतिक भी है और आंतरिक भी है और अगर हम यह मानकर चलें कि देश के सभी लोग जो अपने प्रजातांत्रिक अधिकारों का उपयोग करते हैं, वह अक्षुण्ण है, उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है, लेकिन अगर वह अधिकार बदलते समय ये पूरी तरह से आज़ाद हो अपने विवेक का इस्तेमाल न कर सकें, ज़ोर ज़बर्दस्ती के द्वारा उनकी गणना हो जाये और उससे फायदा उठाकर कोई भी व्यक्ति सत्ता की कुर्सी पर जाकर बैठ जाय तो फिर विश्वास कैसे कायम रह सकता है और यह प्रश्न बीसवीं सदी समाप्त होते हुए इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत के लिए बहुत बड़े प्रश्न बन कर खड़े होंगे।''

1996 की 21 दिसम्बर को रुड़की के स्नातकों को संबोधित इस दीक्षान्त भाषण में श्री अर्जुनसिंह युवा पीढ़ी और भारत के भविष्य को जिस तरह एकाकार और अविच्छिन्न अनुभव करते रहे हैं, उसकी छायाएँ उनके इन कथनों में देखी जा सकती हैं। इनमें लोकतंत्र की स्थूल गतिविधियों, सत्ता-राजनीति की व्यवहार बुद्धि और जानी-पहचानी भौतिक सफलताओं की अनदेखी न करते हुए भी श्री अर्जुनसिंह की दृष्टि हमेशा परम्परा के उन गहरे मूल्यों पर टिकी रही है जिनसे कोई समाज विश्व सभ्यता के पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित करता है।

श्री अर्जुनसिंह हमारी समकालीन राजनीति के उन निष्ठावान नेताओं में रहे हैं जिन्होंने अपनी कार्यशैली में इन मूल्यों और मान्यताओं को निरन्तर प्रकट किया है जिससे समकालीन सत्ता-राजनीति का चेहरा अधिक मानवीय और जनोन्मुख अनुभव किया जा सका है।

ऐसा शायद ही कभी संभव हो कि भारतीय राजनीति के जनप्रतिनिधि और नौकरशाह ऐशो-आराम का जीवन जिएँ और ठेठ श्रम करके दैनंदिन रोज़ी-रोटी जुटाने वाली आबादी तरह-तरह के अभावों और दुखों को झेलती हुई मूक दर्शक बनी रहे। श्री अर्जुनसिंह जैसे

राजनेताओ ने लोकतंत्र की इस अमानवीय खाई को कम करने की भरसक कोशिश की क्योंकि वे हमेशा यह मानते रहे कि मूल्य-रचना, तथा उसे लोक-मान्यता में रूपान्तरित करना तभी संभव हो सकेगा जब सामाजिक जीवन में विश्वासों की पारस्परिकता का विकास होगा और उनकी बुनियादें दृढ़ और गहरी होंगी।

इस संदर्भ मे उन्होंने इस देश के प्रजातंत्र के इतिहास की याद दिलाते हुए कहा— **''इस देश की अपनी परम्परा है। हमारा प्रजातंत्र ऐसे लोगों के सहारे नहीं बना है, जो केवल अपने स्वार्थों तक सीमित रहते हैं। भारत में प्रजातंत्र का प्रादुर्भाव, उसकी स्थापना लाखों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान और तपस्या पर बना है।''**

उनका यह कथन गौर तलब है कि प्रजातंत्र कोई 'कोड ऑफ कंडक्ट नहीं है।' वह एक 'लोक विश्वास' है और इस विश्वास की रक्षा तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति (नागरिक) का स्वाधीन मानस, अपने स्वतंत्र विवेक का उपयोग करने में न केवल सक्षम हो बल्कि उसकी अभिव्यक्ति की सुविधा भी अनुभव करता हो।

सत्ता में निरन्तर रहकर भी उनकी चिन्ता हमेशा इस बात को लेकर रही है कि मतदान पेटियों तक अभी पूरा देश अगर नहीं पहुँच पाता तो क्यों? पचास प्रतिशत लोगों की दिलचस्पी अगर अभी भी नहीं है तो क्यों? क्या उनमें जागरूकता का अभाव है? अगर वे अब भी उदासीन हैं तो उनकी उदासीनता का कारण क्या है? अगर राष्ट्रगान में 'भारत भाग्य-विधाता' वे भी हैं तो वे इस लोकतंत्र और अपने जीवन की नियति को अब तक एकाकार क्यों नहीं कर पा रहे हैं? क्या इसकी कोई जिम्मेदारी उन लोगों की नहीं है, जो राजनीति, शिक्षा, विज्ञान और धर्म के क्षेत्र में नेतृत्व करने की महत्त्वाकांक्षाओं से भरे हुए हैं?

इन प्रश्नों पर सोचते हुए जिस राजनेता का मानस इतना आत्म सजग और लोक परायण हो, वह तभी संभव हो सकता है जब उसकी संवेदनशीलता उन पारम्परिक राजनेताओं की तरह प्रवाहित होती हो जिनमें हद दर्जे की लोकभक्ति और सूक्ष्म जीवन-बोध हो। इसके अभाव में तो इस प्रकार की विचार-दृष्टि की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

अवसरवादिता और कूटनीतिक उठा-पटक कर सत्ता में आने वाले हथकण्डों से अपनी ही पार्टी को सचेत करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने पार्टी-कार्यकर्ताओं से एक अवसर पर कहा था — **''सत्ता में इस तरह बैठने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होगा आम लोगों के करीब जाना। पारदर्शी राजनीति के लिए यह बेहद ज़रूरी है। यह भी कि पार्टी भले ही कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित की जा रही हो, किन्तु पार्टी का अपने कार्यकर्ताओं सहित असली ध्येय तो उस आम नागरिक जीवन में अभ्युदय लाना है जिसके लिए हम राजशाही और औपनिवेशिक शासन को नामंज़ूर करते हुए लोकतंत्र तक आए हैं।''**

एक अनुभवी राजनेता के रूप में श्री अर्जुनसिंह से यह तथ्य कभी छिपा नहीं रहा कि

कार्यकर्ता भटकते हैं तो पार्टी अपने आप भटक जाती है। उनकी सोच गड़बड़ाती है तो पार्टी विचारों के भटकावों का शिकार हो बैठती है, और पार्टी का इस तरह का भटकाव उन अपेक्षाओं और संभावनाओं का भटकाव होगा जिनसे एक बड़े देश और अति प्राचीन परम्पराओं वाले महान् भारतीय समाज का भविष्य जुड़ा है। इसलिए उन्होंने हमेशा यह प्रयास किया कि कांग्रेस एक ऐसे समर्पित और विचारवान् कार्यकर्ताओं की पार्टी हो जिससे देश का भविष्य भटकावों से बच सके।

19 मई 1995 को दिल्ली में कार्यकर्ताओं के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने ने कहा था कि कार्यकर्ता की पहचान उसके सामाजिक लगावों और उसकी वफ़ादारियों से की जाती है। वफ़ादारी क्या चीज़ होती है, इसको स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा— वह जो जीवन भर स्वीकारी जाती है। **सच्चा कार्यकर्ता वह नहीं है जो हर दिन अपनी वफ़ादारियों की कीमत माँगा करता है, न वह, जो तभी तक निभाता है जब तक कि कोई परेशानी या ख़तरा सामने आ खड़ा न हो। दुनिया में ऐसे ही लोग ज़्यादातर हैं जो अपनी-अपनी वफ़ादारियाँ तभी तक निभाते हैं जब तक सामने कोई परेशानी या चुनौती नहीं आती। जबकि सच्चे कार्यकर्ता का जीवन ऐसा नहीं होता। वह तो अपने विश्वासों के लिए मर मिट जाता है। अपने विश्वासों को प्रत्येक पल जीकर उनके लिए कीमतें चुकाता है।** यदि ऐसा नहीं होता तो उसका सारा जीवन संदेह और अविश्वास के घेरे में आ जाता है। और जीवन का इस तरह संदिग्ध और अविश्वसनीय हो उठना केवल किसी राजनीतिक दल या संगठन के लिए ही दुर्घटना नहीं है, उस समाज और राष्ट्र के लिए भी है, जहाँ इस तरह कार्यकर्ता, राजनीतिक पार्टियाँ और मंच काम कर रहे हों।

कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के इसी सम्मेलन में उन्होंने याद दिलाते हुए कहा था कि कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जिसमें गाँधी और नेहरू की महान् कर्मठता की असाधारण सुगंध भरी हुई है। हमको अपनी पहचान इन्हीं आधारों पर बनानी होगी। अगर हमने इसमें गफ़लत की, दुर्योग से भी चूके तो हम खोटे साबित होंगे और अगर सफल हुए, इम्तहानी घड़ियों में खरे उतरे तो हम एक ऐसी संस्कृति का विकास कर सकेंगे जिससे वह परम्परा आगे बढ़ेगी। ऐसा कह, वे अपने साथी कार्यकर्ताओं को उस मूल्यपरक जीवन की ओर ले जाना चाह रहे थे जिसके बग़ैर राजनीति या तो कूटनीति भर बचती है या फिर छल-छद्म भर।

पार्टी कार्यकर्ताओं को वे जिस दृष्टि से आजीवन प्रबोधित करते रहे, उसका परिप्रेक्ष्य भी उनके ध्यान में बराबर रहा। एक ओर वह आकुल-व्याकुल समाज जो अपनी आज़ादी पाने के लिए प्रयासरत है और दूसरी ओर वह सत्ता-पिपासु समूह जो इस व्याकुलता का लाभ उठा समूचे राष्ट्र को भटकाव के पथ पर ला खड़ा करना चाहता है। अपने प्रत्येक संबोधन में उनके समक्ष एक ऐसा 'देश' रहा है जिसकी महान् परम्पराएँ थीं, आलोकधर्मी नेतृत्व था, समर्पित

कार्यकर्ता और उनकी लगावपूर्ण सक्रियता थी। एक ऐसा विराट फ़लक जो अकेले किसी राजनेता का फ़लक नहीं कहा जा सकता, बल्कि एक ऐसे परम्परा-सजग, सचेत बुद्धिजीवी का फ़लक जिसकी दृष्टि केवल भविष्यगामी नहीं है, अतीतगामी तो है ही नहीं; बल्कि आगे-पीछे और दाएँ-बाएँ भी देख पाती है। इस चतुर्दिकता का ही दूसरा नाम अर्जुनसिंह है।

और यह तभी संभव हो पाता है जब व्यक्तित्व में एक खास तरह का संतुलन सधा हुआ हो। किसी शायर का कलाम उधार लेकर कहूँ तो **''जहाँ दिल चाहिए दिल है जहाँ सर चाहिए सर है।''** श्री अर्जुनसिंह के लोकव्यवहार में यह संतुलन किस कोटि का है, इसे समझने के लिए एक ऐसे संयोजन की कल्पना हमें करनी पड़ेगी जिसमें एक ओर सामान्य नागरिक बोध, दूसरी ओर बौद्धिक सजगता और तीसरी ओर वह काल-विवेक जिसके बग़ैर किसी कर्म या अकर्म की पहचान संभव ही नहीं है।

एक राजनेता कब, किन परिस्थितियों में, क्या सोचता है, कहीं वह किन्हीं फ़ौरी ज़रूरतों के तहत कैसे फ़ैसले लेता है। कहीं वह किसी अहंकार अथवा निरंकुशता के बल पर तो ये फ़ैसले नहीं ले रहा है, उसकी इच्छा शक्ति के पीछे तर्क की गहरी सीढ़ियाँ हैं कि नहीं, उसके स्वीकार और नकार के आधार लोक सम्मत हैं कि नहीं, व्यावहारिक धरातलों पर वे खरे उतरने वाले और लोक में पैठ बनाने योग्य हैं अथवा नहीं हैं, इन कसौटियों पर ही किसी राजनेता की साधारणता अथवा असाधारणता का निर्णय किया जाना संभव है।

श्री अर्जुनसिंह ने हमेशा ऐसे कठिन असमंजस के बीच अपनी वरेण्य वैचारिकता का परिचय देते हुए हमें आश्वस्त किया है। भारत जैसे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए देश में जब उदारीकरण और विदेशी कम्पनियों के आगमन का प्रश्न उठ खड़ा हुआ तब उन्होंने एक प्रसंग में जो कहा उससे इस कथन की परीक्षा की जा सकती है—

''मैं विदेशी कंपनियों के भारत में आने के खिलाफ़ नहीं हूँ, लेकिन वे यहाँ आकर क्या करें, इसका फ़ैसला हमें आपको करना चाहिए, देश को करना चाहिए, उसका फ़ैसला औरों के माथे नहीं छोड़ा जा सकता है।''

उनकी यह चेतावनी हमें हमारी संप्रभुता और स्वाधीनता की याद दिलाती है। उस राष्ट्रीय आन्दोलन की याद दिलाती है जिसके पीछे करोड़ों देशभक्तों की शहादतों की अनुगूँजें हैं।

श्री अर्जुनसिंह को पढ़ते और सुनते हुए यह बराबर महसूस किया जा सकता है कि वे हमारे समय के उन राजनेताओं में से हैं जिन्हें भारतीय समाज की विरासतों और उनके पीछे सक्रिय विचार दृष्टि के संरक्षण और विकास की चिन्ता निरन्तर सताती रही है। दुर्ग की एक जनसभा में 16 फ़रवरी 1993 को भाषण देते हुए उन्होंने यह चिन्ता प्रकट की थी— कि **''भारतीय परम्पराओं की मान्यताएँ और वह आदर्श जिन आदर्शों ने भारत के हजारों साल के इतिहास की रचना करने में सहायता की है, उन सबको चुनौती दी**

जा रही है और एक तरह से भारत माता की आत्मा को भी घेराबंदी करने का प्रयास हो रहा है।'' अपनी इस चिन्ता को रेखांकित कर वे यहीं ठहर नहीं जाते। एक गम्भीर बौद्धिक की तरह वे अपने लोगों को यह भी याद दिलाते हैं कि भारत की विशालता उसकी भारतीयता है। भारतीयता का आधार उसकी बहुलता है और बहुलता का आधार भाईचारा और समूचे राष्ट्र का एक साथ जीने और मरने की कला है। इस कला में अपने से दीन-दुर्बल लोगों के लिए बहुत कुछ त्यागने और उनके हितों की रक्षा के लिए किसी भी सीमा तक जाने की चुनौती आएगी और जो लोग इस चुनौती का सामना कर सकेंगे, वे ही सचमुच इस देश के सच्चे सेवक कहे जाएँगे।

कोई भी राजनेता, अगर वह लोक-हृदय में पैठना चाहता है तो उसे निरन्तर लोकहित की साधना करनी पड़ती है। महानायक राष्ट्रपिता गाँधी से प्रेरणा लेकर राजनीति को साधते हुए उन्होंने लोकहित के लिए सतत प्रयास की जो भावना और साधना पंडित नेहरू की रही है उसी का अनुगमन अर्जुनसिंहजी के व्यक्तित्त्व की पहचान रही है।

अपने सात दशकों के जीवन में अगर वे अपने लोगों के अन्तस्तल में यह पैठ बना सके हैं तो उसका कारण उनका यही राजनीतिक आचार है जिसकी जरूरत आज के इस संकट-ग्रस्त राजनीति और उलझनपूर्ण भारतीय समाज को सबसे ज़्यादा है।

हमारा यह काल खण्ड राजनीतिक झंझावातों का है। विचारों के सैकड़ों तूफानों का है। विश्व बाज़ार के भयावह प्रलोभनों का है, अस्तित्व को उखाड़ कर उड़ा ले जाने वाली अंधी निर्मम आँधियों का है। एक तरफ़ धर्म है तो दूसरी ओर धार्मिक कट्टरताएँ, राजनीति है तो दूसरी ओर राजनीतिक दलाल, विज्ञान है तो उसका मायावी-लोक रचने वाले बाज़ार और अप्सरा-पूँजी। इनके बीच जिस साहस, धैर्य और आत्मविश्वास की ज़रूरत है, उसके कण श्री अर्जुनसिंह की चेतना में हैं कि नहीं इसके प्रमाण उनके इन पृष्ठों में खोजे जा सकेंगे। प्रत्येक राष्ट्रभक्त राजनेता को इन स्थितियों में अपनी भूमिका का संकल्प महादेवी वर्मा की इस कविता में व्यक्त विचारों के आलोक में लेना होगा —

झंझा है दिग्भ्रान्त रात की मूर्च्छा गहरी
आज पुजारी बने ज्योति का यह लघु प्रहरी
जब तक लौटे दिन की हलचल
तब तक यह जागेगा प्रति पल
दूत साँझ का इसे प्रभाती तक चलने दो
यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो

— महादेवी वर्मा

यह सम्भव नहीं है कि दुनिया के विकासशील देशों की कीमत पर दुनिया के चंद विकसित देश अपनी तरक्की करते जाएं और उसका दुष्परिणाम केवल विकासशील देश और गरीब देश भुगतते रहे।

— श्री अर्जुनसिंह

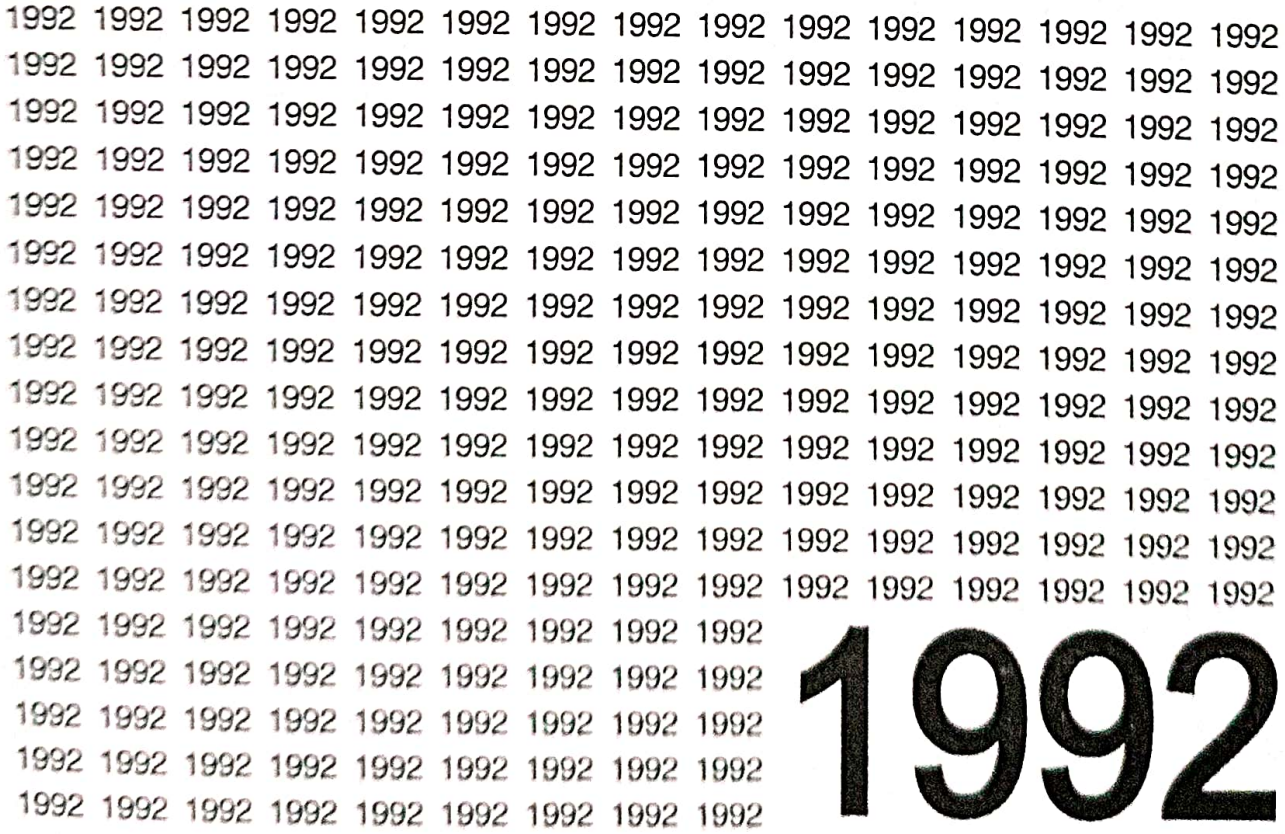

1992

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

पत्रकारों को सतर्क रहना चाहिए

'27 फरवरी 1992 को भोपाल में लघु समाचार पत्र संघ के सम्मेलन में दिये गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

इस अवसर का लाभ लेकर मैं कुछ और भी कहना चाहता था। क्योंकि मकान मिल जाना, एडवर्टिजमेंट मिल जाना और सालों समाचारपत्र चलते रहना, यह आपके लिए निर्णायक नहीं है, आवश्यक हो सकता है और जिस दिन ये बातें निर्णायक हो जाएँगी उस दिन आपकी स्वतंत्रता का हनन हो जाएगा, आप चाहें या न चाहें। इस पौधे को बहुत संजीदगी से बचाए रखने की जरूरत है। अक्सर मेरे ऊपर यह आरोप लगता है कि समाचार पत्रों को मैं जरूरत से ज्यादा प्रोत्साहित करता हूँ और लोगों से प्रभावित होता हूँ। जब मैं यहाँ का मुख्य मंत्री था कुछ दिन, अब पुरानी घटना हो गई इसलिए मैं आप से कह रहा हूँ, उस समय हमारे महामहिम राज्यपाल श्री भगवतदयालजी शर्मा होते थे। बहुत स्नेह करते थे। मैं उनका बहुत आदर करता था। बहुत मार्गदर्शन उन्होंने मुझे अपने अनुभव से दिया। एक दिन मैं उनसे मिलने गया शाम को, वैसे ही, सहज भाव से उन्होंने मुझ से पूछा, मैंने सुना है आज शाम को आपने राजभवन में हमारे पीछे के जो दो कमरे हैं किसी पत्रकार को दे दिए हैं। तो मैंने कहा बाबूजी ऐसा कैसे हो सकता है। कहने लगे, नहीं किसी दिन ऐसा आदेश हो जाए तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। तो उस सीमा तक बात होती थी। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि किसी भी समय किसी भी तरीके से किसी भी संदर्भ में छोटा पत्रकार हो, या बड़ा पत्रकार हो, उसको प्रभावित करने का प्रयास मैंने नहीं किया। यदि वह स्नेह बना है तो केवल इस वजह से बना है कि हम सब पर विश्वास करते हैं। लेकिन माफ करिएगा आज की जो उथल-पुथल की राजनीति है उसमें कितना संयम इस बारे में रखा जा सकता है इसमें मुझे बहुत संदेह है। इसलिए मैं आपसे कहता हूँ स्वयं अपनी समीक्षा के आधार पर अपनी भूमिका निर्धारित करने का एक दफा अगर आप लोग प्रयास करेंगे तो निश्चित रूप से आपकी स्थिति भी मजबूत होगी और सही माने में भारतीय प्रजातंत्र को आप उसका पोषण कर सकेंगे।

अब तो वैसे भी इसको इन्फॅरमेशन टेक्नॉलोजी कहते हैं। वह इतनी तेजी से आगे बढ़ गई है जिसकी कल्पना हम 5 वर्ष पहले नहीं कर सकते थे। तो हमें तो इस इन्फॅरमेशन टेक्नोलॉजी के साथ-साथ भी चलना पड़ेगा लेकिन अपने देश में अभी हम उस मात्रा में कहिए या उस रफ्तार में कहिए नहीं चल पाएँगे इसलिए जो कुछ आज है उसको मजबूत करना है, इसमें लोगों को लगे रहने के लिए सहयोग देना है और इसमें सबसे बड़ी भूमिका छोटे समाचार, लघु समाचारपत्र ही निभा सकते है। यह बात अलग है कि आजकल बड़े-बड़े शहरों में, राजधानियों में जो समाचारपत्र प्रातः पढ़ने को मिलते है उनमें से एक भी नहीं मिलता जो यहाँ पर टेबल पर ला कर रखा गया।

लेकिन मैं क्या पढ़ता हूँ यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, कस्बों में, छोटे गाँवों मे नए-नए जो केन्द्र उभर कर आ रहे हैं, जहाँ नए उद्योग लगे है, विकास की कई नई गतिविधियाँ शुरू हुई है, कहीं डेम बन रहे है, कहीं अस्पताल

बन रहे हैं, वहाँ पर जो समाचारपत्र पहुँचते हैं उनसे आम जनता की राय प्रभावित होती है, बनती है तो वह समाचार लघु समाचारपत्र ही देते है। शासन को इतना जरूर करना चाहिए, उसके खतरों को ध्यान में रखना पड़ेगा कि जो गतिविधियाँ जनोपयोगी है, जिनका सीधा संबंध उन गतिविधियों से है, जो जनता के लिए आवश्यक है, जानकारी चाहिए, क्या हो रहा है, क्या नहीं होना चाहिए वह शासन की ओर से ऐसे समाचारपत्रों तक पहुँचानी चाहिए और वह उसे छाप सकें इस के लिए भी कुछ न कुछ सहयोग देने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन खतरों के लिए मैं फिर से आगाह करना चाहता हूँ उन खतरों को ध्यान में आपको भी रखना पड़ेगा। जब वह समाचारपत्र आपके पास छपने के लिए आएगा और उसके साथ विज्ञापन का आदेश आएगा तो दूसरी और तीसरी दफा विज्ञापन के साथ-साथ यह आदेश भी आएगा कि आप क्या छापें क्या न छापें। वहाँ पर आपको सतर्क रहने की जरूरत है। यह भारत के बदलते हुए परिवेश में यह परिस्थितियाँ निर्मित होंगी उनका हमें साक्षात्कार करना होगा। हमें अपनी गतिविधियों को, अपने दृष्टिकोणों को अपनी प्रतिक्रियाओं को सोच समझ कर व्यक्त करना होगा लेकिन सब के पीछे मूलाधार यही होना चाहिए कि देश का प्रजातंत्र मजबूत हो। भारत जैसे देश में प्रजातांत्रिक पद्धति के अलावा और कोई भी पद्धति कामयाब नहीं हो सकती। जब विदेशी इस देश में आए और दो सौ साल तक उन्होंने राज किया तो एक बहुत महत्वपूर्ण बात देखने की है कि दिल्ली में उन्होंने अपने को मजबूत किया, प्रदेशों की राजधानियों में मजबूत किया, एक सतह तक विदेशी शिकंजा बहुत मजबूत रहा, लेकिन एक सतह के नीचे प्रभावित करने की कोशिश उन्होंने नहीं की और इसलिए 200 साल तक विदेशी शासन चला। जैसे ही उन्होंने उस नीचे स्तर को प्रभावित करने की कोशिश की, एक स्वाभाविक विद्रोह हुआ, नेतृत्व गाँधीजी का था। उस विद्रोह के आगे वह साम्राज्य शाही शक्ति टिक नहीं सकी। तो भारत में प्रजातांत्रिक पद्धति के अलावा और कोई भी पद्धति पनप नहीं सकती। हमें उसी के सहारे आगे बढ़ना है, अपने देश को बढ़ाना है, अपनी शक्ति को बढ़ाना है इसलिए हमें समाचार जगत से भी निकट का संबंध रखना चाहिए और व्यावहारिक और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाकर रखते हुए उनको आगे चलने में सहयोग भी देना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि आपका यह सम्मेलन इस दिशा में कुछ निश्चित मापदण्ड स्थापित करने की दिशा में सफल होगा। मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

पत्रकार जिम्मेदारी का सही ढंग से निर्वहन करें

29 अगस्त 1992 को बिलासपुर पत्रकार संघ में दिए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

सामान्यत: यह सोचा जाता है कि समाचारपत्र और कॉरेसपोडेंट्स जो हैं, पत्रकार जो हैं उनकी जिम्मेदारी केवल दूसरों के कथन को लिपिबद्ध करके प्रकाशित करना है और कभी-कभी बन पड़े तो उसमें नमक मिर्च लगाने में कोई दिक्कत नहीं होती। लेकिन केवल यहीं पत्रकारों की जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती इसके बाद की जो जिम्मेदारी है वह समाज और देश के प्रति है। उस जिम्मेदारी के बारे में सजग रहकर कुछ करना वह मेरे मत में ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस दिशा में बिलासपुर प्रेस क्लब के सभी साथी न केवल सजग हैं, बल्कि सक्रिय भी हैं इसके लिए मैं सबसे पहले उन्हें साधुवाद देना चाहता हूँ कि आपने जो विषय रखा है इस गोष्ठी के लिए वह विषय व्यापक भी है और पेचीदा भी है। इसमें कई प्रकार के अपने-अपने दृष्टिकोण भी हैं। सभी को इतने कम समय में व्यक्त करना शायद सम्भव नहीं होगा।

अभी मुझे बताया गया कि यह गोष्ठी चलेगी दिसम्बर तक। इस बीच में मैं पुन: अक्तूबर महीने में इधर आने वाला

हूँ जो अभी कहना शेष रह जाएगा उस समय कहने की कोशिश करूँगा। आज मैं इसका केवल एक ही पहलू लेता हूँ। किसी भी राष्ट्र में किसी भी समय किन्हीं भी परिस्थितियों में नागरिकों के लिए कुछ विषय चिंता के होते है और उन में सोच समझकर निर्णय लेकर कुछ कदम उठाने का समय होता है और यह हर समय बदलता रहता है। भारतवर्ष में क्योंकि हमारा हजारों हजार साल का इतिहास है इसलिए कई ऐसे विषय अलग-अलग समय और अलग-अलग संदर्भ में उठते रहे और उन पर उस समय के प्रबुद्ध लोगों ने अन्य नागरिकों ने विचार करके उस पर निर्णय लिए और देश आगे बढ़ता गया। कम से कम भारत के इतिहास की धारा कहीं अवरुद्ध नहीं हुई। मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ हमारे इतिहास में हुआ है वह सब बहुत ही उच्च शिखर का है लेकिन कम से कम धारा अवरुद्ध नहीं हुई जब कि अन्य कई ऐसे देश हैं जहाँ इतिहास की धारा केवल अवरुद्ध ही नहीं हुई कहीं-कहीं तो धारा थोड़े दिन के लिए उलटी बहने लगी। आप जर्मनी का उदाहरण लें। यूरोप में जर्मनी राष्ट्र आज भी सबसे आगे है और पहले भी सबसे आगे था। वहाँ के लोगों में अध्यवसाय की क्षमता है, श्रम करने की क्षमता है, तीव्र बुद्धि है, हर प्रकार के नए-नए विज्ञान के आविष्कार करने की क्षमता है और इसकी लम्बी श्रृंखला 18वीं शताब्दी से हम को देखने को मिलती है। उसमें एक के बाद एक को दोहराने की जरूरत नहीं है। लेकिन क्या कारण है कि 1925 से लेकर 1945 तक इस राष्ट्र में इतिहास की धारा जो आगे के लिए प्रवहमान थी, उन्नत थी उसको सहसा बदल दिया गया और ऐसा बदला गया कि वह धारा उस देश के लिए उलटी बह गई और उसकी वजह से शायद आज तक विश्व के इतिहास में जो सबसे बड़ी तबाही हुई है किसी युद्ध के माध्यम से दुनिया में वह तबाही लोगों को भुगतनी पड़ी है। सही-सही आँकड़ें भी आज नहीं हैं कि कितने करोड़ लोग उस युद्ध में हताहत हुए, कितने लोगों की सम्पत्ति नष्ट हुई, उसका क्या मूल्य है। वह सब सीमा के परे है। ऐसा क्यों हो सका और क्यों हुआ इसमें जरा अन्वेषण की आवश्यकता है। जिस देश ने महान फिलॉस्फर पैदा किए, जिस देश ने बड़े-बड़े वैज्ञानिक पैदा किए, जिस देश ने आविष्कारों के क्षेत्र में इतने कीर्तिमान स्थापित किए, लेखक गायक, चित्रकार, ऐसा कोई क्षेत्र देख लो जिसमें जर्मनी ने उत्कर्ष न पाया हो। फिर नाज़ीवाद या फासिस्टवाद वहाँ कैसे बैठ सके, पनप सके और कैसे वह तबाही के कारण बने, यह बात ऐतिहासिक संदर्भ में ही सही लेकिन सोचना जरूरी है।

अन्य बहुत सी बातें तो आप सब को मालूम है, हम सब को मालूम है। मेरे मत में जो सबसे बड़ा कारण बना वह कारण एक ही था, मैं गलत हो सकता हूँ लेकिन मेरा अपना मत है कि हिटलर ने जर्मनी के लोगों में जो राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी है अपने राष्ट्र पर अभिमान; 'अपने राष्ट्र पर गौरव है।' तो यह अच्छी बात इस भावना को उसने एक ऐसा मोड़ दे दिया, एक ऐसा हथियार बना लिया उसे जिससे वह अपनी राजनीतिक सत्ता को मजबूत कर सके और जितनी भी उदार विचारधाराएँ थी जर्मनी की उनको कुत्सित करने में सफल हो गया। वैसे तो यह 5 शब्दों में 5 लाइन में बात कह दो लेकिन आप विचार करें जब प्रखर राष्ट्रीयता कुछ अवसरवादी और बिना किसी सिद्धांत के राजनीतिक व्यक्तियों के हाथ में हथियार पहुँच जाए, उनको स्वयं के सत्ता प्राप्त करके उसको सुदृढ़ बनाने के लिए जो सभी मानवीय मूल्यों को ताक पर रखकर उस माध्यम का इस्तेमाल करके सत्ता के चरम बिंदु पर पहुँचाने की कोशिश करे और जब पहुँच जाए तो उसका उपयोग समूचे देश को पूरी तरह से अपने मूल्यों और मान्यताओं से तोड़ने में काफी सफल हो जाए, यह प्रयास अगर कहीं आधुनिक दुनिया में सफल हुआ है, तो वह जर्मनी में सफल हुआ है। आज के जर्मनी के नागरिक 15 साल के, 20 साल के इतिहास को भूलना चाहते है। एक बुरे सपने के रूप में याद करते है और उन्होंने संकल्प लिया है कि ऐसा पुनः देश में नहीं दोहराया जाएगा। करीब-करीब वही समानान्तर स्थितियाँ आज भारतवर्ष में उभर रही है। यह किसी आलोचना का विषय नहीं है यह विवेचना का विषय

है। विवेचना अगर प्रजातंत्र में स्पष्ट रूप से खुले रूप से नहीं हो सकती है वह प्रजातंत्र कितने दिन तक जीवित रहेगा यह अपने आप में एक प्रश्नचिह्न रहेगा।

आज यहाँ भी उसी राष्ट्रीयता के नाम पर स्वस्थ विरोध को दबाने की कोशिश की जा रही है। उसी राष्ट्रीयता के नाम पर ऐसे विचार जो कभी भी भारतीय मूल से जुड़े नहीं है हमारी संस्कृति के अंग नहीं हैं, हमारी सोच के अंग नहीं है, उन विचारों को न केवल प्रमुखता दी जाती है बल्कि उसे सर्वमान्य सत्ता के रूप में हम और आपको स्वीकार करने के लिए कहा जाता है और हम में से बहुत से लोग उसे स्वीकार करते हैं। जो प्राथमिकताएँ हैं जर्मनी में पहले विश्व युद्ध के बाद नष्ट हुए जर्मनी को उसकी प्राथमिकता थी पुन: निर्माण की, लोगों को जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण की, अपने जीवन स्तर को सुधारने की, संभालने की, स्थिर करने की, घरों की कमी थी, बहुत सी चीजों की कमी थी। बजाय उसको प्राथमिकता देकर करने के हिटलर ने प्राथमिकता दे दी उस राष्ट्रीयता के माध्यम से एक नए युद्ध की मशीन को तैयार करने में। युद्ध की क्षमता को तैयार करने में और इस प्राथमिकता को इस प्रकार से मोड़ देने की जिसकी वजह से अंतत: जर्मन राष्ट्र जहाँ पहुँचा वह आज आपको मालूम है। यह वहाँ के लोगों का एक तरह से आलौकिक क्षमता का ही असर है। 45 वर्ष के पराजय के बाद इस थोड़े से समय में 50 साल के अंदर आज जर्मनी फिर अपने पैरों पर खड़ा हो गया। इसी प्रकार से जब इस प्रकार के विचार प्रमुखता पाते हैं, तो जो सही प्राथमिकताएँ होती हैं, राष्ट्र निर्माण की वह विकृत हो जाती है और उन प्राथमिकताओं से हमारा ध्यान बँट जाता है।

हम दूसरे कामों में लग जाते हैं। जो श्रम शक्ति धन हमें उसमें लगाना चाहिए उसको अन्यत्र लगाना पड़ता है। आप कल्पना करें जिस देश में आज करोड़ों इंसानों के लिए घर के नाम पर फुटपाथ है और छत के नाम पर आसमान है वहाँ पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम के लिए घर ढूँढने की जो उत्सुकता और विह्वता देखने को मिल रही है क्या उसका कोई तारतम्य है, क्या भगवान राम बेघर हैं कि आज उनके पास रहने का स्थान नहीं है, क्या उनको प्रतिष्ठित करने के लिए हमें कहीं और कुछ बनाने की जरूरत है? यदि सच्चा कोई रामभक्त होगा वह मन्दिर में नहीं अपने हृदय में उसकी स्थापना करेगा।

कम से कम जो प्रबुद्ध लोग देश की परिस्थितियों से परिचित हैं उन्हें तो कम से कम इन प्राथमिकताओं को विकृत करने से बचाना चाहिए। कम से कम अपनी आवाज उठानी चाहिए, यह मैं जानता हूँ अच्छी तरह से। मुझे विश्वास है इस देश में बाहुल्य तो विवेकशील लोगों का है। लेकिन जैसा हरदम होता आया है विवेकशील लोग अपने विवेक का इस्तेमाल अपने दैनिक जीवन में कर लेते हैं, अपने दैनिक व्यवहार में तो कर लेते हैं लेकिन जब सामूहिक मसले सामने आते हैं तो वह विवेक रहते हुए भी वह मौन विवेक बन जाता है और प्रजातंत्र के लिए मौन विवेक से बड़ा खतरा और कोई दूसरा नहीं है। क्योंकि प्रजातंत्र तो जनमत पर आधारित है। जब जनमत ही मौन हो जाएगा तो प्रजातंत्र कैसे चलाया जा सकता है यह एक विचारणीय विषय है। मैं समझता हूँ जो आज साम्प्रदायिकता से देश को खतरा समझते हैं उन्हें इस मौन को तोड़ना होगा और इस मौन को तोड़ कर एक सशक्त सामूहिक विवेक को जागृत करना होगा जो ऐसी शक्तियों के सामने अडिग होकर खड़ा हो सके जो आज देश को अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित करने के लिए तत्पर है। केवल इसलिए कि हिटलर की भाँति उन्हें भी सत्ता के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचने में मदद मिल सके। मैं आशा करता हूँ कि यह गोष्ठी इस दिशा में लोगों का ध्यान आकर्षित और केन्द्रित करेगी ताकि हम इस सामूहिक विवेक को जागृत करने में सक्षम बन सके, सफल हो सकें। आपने मुझे यहाँ आने के लिए अवसर दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। जय हिन्द।

आदिवासी अंचलों में अधिकार के लिए संघर्ष की आवश्यकता

29 अगस्त 1992 को बिलासपुर में छत्तीसगढ़ के काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश–

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंहजी, और ब्लाक काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्षगण और काँग्रेस के साथियों। सबसे पहले तो मैं इस बात के लिए दिग्विजय सिंहजी को धन्यवाद और बधाई दोनों देना चाहता हूँ कि उन्होंने प्रदेश भर के संभागों के सम्मेलन आयोजित करके ब्लाक काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व अन्य लोगों को पार्टी की गतिविधियों से परिचित होने का मौका दिया, अपने विचार व्यक्त करने का मौका दिया और इसका उद्देश्य यही है कि सब लोग मिलजुल कर कोई ऐसा रास्ता आगे के लिए निकालें कि काँग्रेसजनों की जो जिम्मेदारी है प्रदेश के प्रति और देश के प्रति उस जिम्मेदारी को निभाने में वह सक्रिय हो सकें।

यह सम्मेलन केवल कुछ लोगों के भाषण देने के लिए नहीं आयोजित किया गया है और भाषण सुनकर चले जाने के लिए नहीं आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन के बाद आपको अपना मन बनाकर कुछ काम करने के लिए, अगर हम आगे बढ़ सकें, तो इस सम्मेलन का महत्व भी है और उसकी सफलता भी है। अक्सर काँग्रेस के सम्मेलन समाचारपत्रों के लिए तो आकर्षक हो जाते हैं, लोगों से भी मिलने का हमें एक मौका हो जाता है लेकिन वहाँ कोई फैसला लेकर कोई उस में अमल करने की बात हो उसमें कभी-कभी कमी रह जाती है। लेकिन आप याद रखिए यह सम्मेलन उस वर्ष में हो रहे हैं जो 42 की क्राँति की स्वर्ण जयन्ती का वर्ष है, जिसमें 9 अगस्त को काँग्रेस का प्रस्ताव था, वह लम्बा चौड़ा प्रस्ताव देश की हालत को बताने के लिए था। लेकिन उस प्रस्ताव के जो कार्यरूप में परिणत करने के शब्द थे, वे तीन शब्द थे और उन तीन शब्दों ने भारत को अंततः आजादी दिलाई। जब प्रस्ताव हो गए, सब के भाषण हो गए, नेताओं के भाषण हो गए तो गाँधीजी ने तीन ही शब्द कहे थे - 'करो या मरो'। उन तीन शब्दों की प्रेरणा ने देश में हजारों-हजार लोगों को देश की बलिवेदी पर अपना सब कुछ निछावर करने की प्रेरणा दी। आज तो आवागमन के रास्ते बहुत अच्छे हैं। रेडियो है, टी.वी. है, तार है, उस समय इतनी सुविधाएँ तो नहीं थीं लेकिन करो या मरो का संदेश धीरे-धीरे कहीं पाँच दिन में पहुँचा, कहीं सात दिन में पहुँचा, कहीं दस दिन में पहुँचा। सारे भारत में फैला और उसके परिणामस्वरूप जो जन आंदोलन खड़ा हो गया देश के अंदर, जबकि सब नेता गिरफ्तार हो गए, वर्किंग कमेटी के गाँधीजी के साथ जितने लोग थे वे तो उसी रात को गिरफ्तार हो गए, देश भर के जितने प्रदेश काँग्रेस के अध्यक्ष थे, वे सब गिरफ्तार हो गए, ब्लॉक तक के नेता गिरफ्तार हो गए, उसके बावजूद उस आंदोलन को इतनी तीव्र गति दी जा सकी कि भारत में साम्राज्यशाही की नींव हिल गई और पाँच वर्ष के अंदर अँग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। तो उसके कारण क्या है? यह सोचने की ज़रूरत है। यहाँ तो अध्यक्ष और न जाने कितने बड़े-बड़े नेता बैठे हैं सब जगह प्रोत्साहित करने के लिए, भाषण सुनकर लोग चले जाते हैं। अगर काँग्रेस में हमें देश को सही दिशा में ले चलने के लिए या जो कुछ करना चाहिए उसके लिए काँग्रेसजनों को प्रेरित करना है, तो वह तभी होगा जब उनके मन में समय की वह भावना का समावेश कर दिया जाए। एक नहीं आपको अनेक कहानियाँ सुनने को मिली होंगी। इतिहास के पन्नों से कि सब नेता जेल के अंदर है। जो काँग्रेस के सतह के नेता हैं, गाँव में काम करने वाले हैं, इस मोहल्ले में काम करने वाले हैं, उनको गाँधी जी ने कहा था जब कोई तुम को रास्ता दिखाने वाला न मिले, सब बंद हो जाए तो तुम खुद अपना रास्ता चुनो। लेकिन उद्देश्य देश की आजादी हो। इस महान प्रेरणा के क्षणों के

जो वर्ष है, मैं यहाँ आप से चाहूँगा कि हम जो कहें हमारे जो और नेता कहें, अध्यक्ष जो कहें, प्रदेश जिला के , ब्लॉक के अध्यक्ष जो कहें, वह सब अपनी जगह तो ठीक है, उसकी बात तो हमें करनी ही है। लेकिन अपने अंदर वह शक्ति पैदा करिए, वह विवेक जागृत करिए जिससे काँग्रेस के सिद्धांतों के अनुसार जो आपको करना है यह फैसला करें कि इस सम्मेलन के बाद उनके क्षेत्र में ऐसी कौन सी चीजें हैं जिन से निहित स्वार्थों की शक्ति बढ़ती है और जनता के ऊपर अत्याचार बढ़ते हैं। उनके खिलाफ आप संघर्ष शुरू कर दीजिए। बाद में डाक से अध्यक्ष महोदय की परमिशन आ जाएगी आपके पास। कम से कम दिग्विजय सिंह जी आपको रोकेंगे नहीं इतना तो मुझे पूरा विश्वास है। लेकिन करने वाले आप हैं। लेकिन आप अगर उस तरफ निगाह नहीं डालेंगे तो फिर काम नहीं बन सकता है। क्योंकि इसका मुझे थोड़ा बहुत अनुभव हुआ है इसलिए मैं आप से यह बात कह रहा हूँ।

यह मन्दिर और मस्जिद का मसला जो देश में उठाया गया, मैं आपसे कहूँगा जरा संजीदगी से इसको समझिए। यह मसला भगवान राम की भक्ति से नहीं उठाया गया। भगवान राम की भक्ति के लिए भव्य मन्दिर नहीं चाहिए, शुद्ध हृदय चाहिए। वह शुद्ध हृदय की इनके पास जरूरत नहीं है। यह तो जितना फरेब हो सके, झूठ हो सके उसी से इनका काम चलता है। यह मसला केवल इसलिए उठाया गया है कि देश के लोगों का ध्यान उन मुद्दों से हटाया जा सके जो आज इस देश के असली मुद्दे हैं - गरीबी से लड़ाई, शोषण से लड़ाई, अशिक्षा से लड़ाई, जलालत से लड़ाई और उस लड़ाई को जितना ही तेज किया जाएगा उतना ही देश के निहित स्वार्थ जो इन सब चीजों के अभाव में अपने फायदे के लिए सब कुछ करते हैं उनके ऊपर अंकुश लगेगा। उनको तकलीफ होगी। उनको तकलीफ होगी तो भारतीय जनता पार्टी को तकलीफ होगी। आज चारों तरफ नजर उठा कर देख लीजिए, चाहे शराब का ठेकेदार हो, चाहे जंगल का ठेकेदार हो, चाहे पुल बनाने का ठेकेदार हो, वह आज किन के हाथों में है? मैं सब का नाम नहीं जानता। आप लोग तो अपने-अपने क्षेत्रों के लोगों का नाम जानते होंगे, उनकी कैफियत जानते होंगे। उन सभी मुद्दों से देश का ध्यान बटाने के लिए भगवान राम के मन्दिर की जरूरत हो गई, मस्जिद को तोड़ने की जरूरत हो गई। काँग्रेस इन सब चीजों से देश को बचाना चाहती है। मन्दिर बने काँग्रेस को कोई एतराज नहीं। मस्जिद न टूटे यह काँग्रेस चाहती है। इस दिशा में प्रधान मंत्री ने पहल शुरू की। आम सहमति बनाने के लिए इन लोगों से कहा है। एक सीमा तक जाने के बाद शायद कुछ सद्‌बुद्धि आई हो, आम सहमति से प्रधान मंत्री के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया है। अब देखें आगे क्या होता है। अगर शुद्ध मन है, शुद्ध हृदय है तो देश को एक बड़े खतरे से बचाने के लिए प्रधान मंत्री के साथ सहयोग करेंगे और आपस में मिल बैठकर इस समस्या का हल निकालेंगे। अगर प्रधान मंत्री को धोखा देने का इरादा होगा तो तीन महीने बाद ही पता चल जाएगा। लेकिन वह क्या करते हैं, नहीं करते हैं हम केवल हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहें यह जरूरी नहीं है। जब तक आप नहीं समझेंगे, आप अपने क्षेत्र में काँग्रेस के साथियों को, आम जनता को नहीं बताएँगे कि देश के सामने आज मुद्दे क्या हैं उन मुद्दों पर हमें क्या करना चाहिए बजाए इसके कि अयोध्या में राम मन्दिर बन रहा है उसके लिए शिलापूजन हो गया उन शिलाओं का कहीं पता नहीं है। खड़ाऊँ पूजन की बारी की बात है। कितने खड़ाऊँ साधू लोग पहनेंगे पता नहीं। एक व्यक्ति दो ही पहन सकता है लेकिन हजारों खड़ाऊँ जाएंगे यहाँ से। उनका क्या हाल होगा वह दो महीने बाद मालूम होगा। कितना पैसा खर्च हुआ और इकट्ठा कितना हुआ अयोध्या में मन्दिर बनाने के लिए इसका हिसाब-किताब न आडवाणीजी के पास है, न जोशीजी के पास है और न अटल बिहारीजी के पास है।

देश की राजनीति को, देश की आर्थिक व्यवस्था को, देश के राजनीतिक ढाँचे को बनाने से, सँवारने से और सुरक्षित रखने के लिए कुछ और चीजों की जरूरत है। एक तो मेहनत की जरूरत है, एकता की जरूरत है और अपने लक्ष्य को साफ रखकर आगे चलने की जरूरत है। प्रधान मंत्री इस देश को एक मजबूत राष्ट्र बनाना चाहते हैं, यह

नारों से नहीं बन सकता है।

यह मेरी अपील है छत्तीसगढ़ वह मार्ग प्रशस्त करेगा इस प्रदेश के अंदर। जहाँ से यह संघर्ष छिड़ेगा और जो संघर्ष निर्णायक संघर्ष होगा निहित स्वार्थों के खिलाफ, राजनीतिक स्वार्थपरता को हामी करने वाले लोगों के साथ जो शोषण के पोषक हैं उनके खिलाफ वह संघर्ष मुक्ति दिलाएगा। छत्तीसगढ़ को, मध्य प्रदेश को इस अवसरवादी सरकार से और इनकी उन नीतियों से जो केवल गरीब को चूसना जानती है, गरीब के हाथ में दो टुकड़े देना नहीं जानती है। यह मेरा आपको संदेश है, यह मेरी आप से अपेक्षा है, यह मेरी आपकी सफलता के लिए शुभकामना है। जय हिन्द।

समाज विरोधी तत्त्वों से सावधान रहें

8 दिसम्बर 1992 को भोपाल में प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सदस्यों के सामने दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

माननीय नागरिक बंधुओं, जो बातें यहाँ पर आपने कही हैं, किसी भी इंसान के दिल को भारी करने वाली बातें हैं। भोपाल की जो अपनी परम्परा रही है वह परम्परा इतनी बुरी तरह से ध्वस्त हो जाएगी इसकी कल्पना करना हमारे लिए संभव नहीं है। मैं सार्वजनिक रूप से दु:ख व्यक्त करता हूँ इन सब के लिए। पहला अवसर नहीं है जो भोपाल में किसी न किसी छोटे बड़े को इसका असर न हुआ हो। समस्याओं पर काबू पाना शांति व्यवस्था के लिए शासन की जिम्मेदारी है, संवैधानिक रूप से उससे बड़ी जिम्मेदारी अपने आप नागरिकों के ऊपर भी होती है और वह जिम्मेदारी निभाने के लिए जो आम नागरिक हैं, सम्भ्रांत नागरिक हैं उनसे बहुत बड़ा बल, एक तरह से सम्बल कहिए प्रशासन को मिलता है। यह सुनकर मुझे बड़ी बेहद हैरानी होती है कि तीन दिन हो गए और आज तक इसकी ओर कोई प्रयास नहीं किया गया कि आप सब लोगों को आगे करके इस नगर में उनके हौसलों को कायम रखा जाए और यह साफतौर से जाहिर हो कि जो समाज विरोधी तत्व हैं न उनकी कोई जात होती है न कोई धर्म होता है। ऐसे लोगों के खिलाफ इस नगर के नागरिकों का जो एक दृढ़ निश्चय है अपने आप में बहुत बड़ा एक माहौल पैदा करने का है, स्थान बनाने का है। किसी पर कोई टिप्पणी करने का आज कोई मतलब नहीं है। यथार्थ क्या है, अपने मुँह से आपने बताया है। आपने जैसा कहा सबसे बड़ी बात तो इच्छा की है। आग की लपटों को बुझाने के लिए आँसुओं की जरूरत नहीं और किसी तरीके की जरूरत है। कल रात से जो मैंने देखा है, आप सब लोगों ने सुना है, बहुत से लोगों से मुलाकात भी हुई, जिनका नाम आगे नहीं आया, जो किसी पार्टी के नहीं हैं, किसी संस्था में नहीं हैं, कोई विशेष जिम्मेदारी अपनी नहीं महसूस करते हैं लेकिन एक ईमान पसन्द और शांतिपूर्ण नागरिक की हैसियत से रहते हैं इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से स्थिति को काबू में पाने के लिए सबसे ज्यादा प्राथमिकता आपको है। मैं भी लेता हूँ। इस संबंध में मैं यहाँ पहुँचने से पहले प्रधान मंत्री को संदेश भेजकर निवेदन करके आया हूँ। निवेदन किया है कि उनके आदेश हों कि शाम होते-होते भोपाल में शांति कायम करने के लिए कदम उठाए जाएँ। मैं मुख्य मंत्रीजी से भी कहूँगा कि इस प्रक्रिया में पूरा सहयोग दें। क्योंकि शांति कायम करना और शांतिप्रिय नागरिकों की सुरक्षा, उनकी इज्जत की रक्षा करना किसी भी शासन का पहला कर्तव्य है। किसी दल का शासन हो इससे कोई मतलब नहीं है। हमें यह आशा करनी है कि वह भी इस प्रक्रिया में पूरा-पूरा सहयोग दें।

दूरदर्शन का इस्तेमाल करने का या संचार के जितने भी साधन हैं वे केवल मनोरंजन के नहीं है, वह देश की निधि है। मनोरंजन तो उसका एक पहलू है लेकिन जब पूरे समाज को एक तरह से जिसको अँग्रेजी में कहते है

- द एंटायर कॉंसेन्शस ऑफ द कम्युनिटी/ सोसाइटी, ऐसे वक्त में संचार साधनों का इस्तेमाल करना चाहिए लोगों तक बात पहुँचाने के लिए। अभी प्रेस कान्फ्रेंस के बाद मैं खुद जाता हूँ दूरदर्शन के पास और अपनी विनम्र अपील करता हूँ। जो कुछ भी मुझ से हो सकता है मैं करने को तैयार हूँ। दूरदर्शन के लोगों से यह कहूँगा जितने भी प्रमुख नागरिक हैं अलग-अलग पार्टियों के, अलग-अलग विचार धाराओं के उन सब की बातें शाम तक दूरदर्शन से आनी चाहिए ताकि वह बात घर-घर पहुँच सके। रेडियो से भी और दूरदर्शन से भी दोनों से यह बातें आनी चाहिए। दुःख मुझे इस बात का है कि इन परिस्थितियों में सबसे ज्यादा परेशानी, सबसे ज्यादा तकलीफ बच्चों को हुई, माताओं को हुई। यहाँ सब के सामने सुनाई गई हैं। बच्चों को दूध तक नहीं मिला, माताओं को घर में चूल्हे जलाने के लिए साधन नहीं मिले। ऊपर से कितने भी बयान दें, कितनी भी कोशिश करें उनकी जो जरूरत है, उनकी जो तकलीफ है, उनको कौन देखेगा। इसलिए घर के अंदर आवश्यक वस्तुओं का वितरण शासन के नियंत्रण में उतना ही आवश्यक है, जितना गोली चलाकर शांति कायम करना जरूरी है। अगर पुलिस काबू पाना चाहती है इस परिस्थिति पर तो बल प्रयोग करके तो जरूर पाने देना चाहिए लेकिन बल प्रयोग करने के साथ-साथ यह जो तकलीफें हैं वह नफरतदार हो जाए, लोग यह समझें और दूसरे लोग यह समझें कि इसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर नहीं है यह तो उनकी जिम्मेदारी है जिनके बच्चे भूखे हैं, हमारे बच्चे तो भूखे नहीं हैं, हमारे बच्चों को तो दोनों वक्त रोटियाँ मिल रही हैं, हम तो अपना काम चला लेंगे, ये कुछ चीजें ऐसी हैं जिनके कारण परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं। हमारे जैसे लोगों की जो जिम्मेदारी है उस पर अमल नहीं होता। मैं इस बात को यहाँ विवाद का विषय नहीं बनाना चाहता। चाहे वह कॉंग्रेस पार्टी हो, चाहे वह कम्युनिस्ट पार्टी हो, सीपीआई (एम) हो, चाहे कोई संस्था हो वह यह समझती है कि उसको तो वोट पाने का अधिकार है और सुख दुख जनता के दोनों उनकी बगल में पड़े हुए हैं, अगर हम समर्थन पाकर, वोट लेकर सत्ता की कुर्सी पर पहुँच सकते हैं तो उनको जब तकलीफ होगी उस वक्त हम किन्हीं भी कारणों से आँख मूँद कर पीठ दिखा देंगे तो मैं समझता हूँ अगर कोई भी ऐसी पार्टी होगी उसका भविष्य नहीं बन सकता। संसद चल रही थी वहाँ उपस्थित रहने का आदेश हुआ था। दिग्विजय सिंहजी आये हुए हैं। इनका कुछ कार्यक्रम बनेगा कॉंग्रेस के साथियों के साथ, आप सब लोगों के साथ और जो भी आप निर्णय करेंगे, जिस प्रकार से भी आगे बढ़ने का फैसला करें मैं मुख्य मंत्रीजी से जाने से पहले कह दूँगा। इन चीजों का कृपया वह प्रोत्साहित करें और प्रोत्साहन का एक पहलू ऐसे लोगों को रास्ते में बाधा नहीं आए और जो बाधा आए उसको दूर करना उनकी जिम्मेदारी है। ये बातें आपने अच्छी कहीं। आपने इस बारे में बहुत तीखी बात नहीं कही। पत्रकार बंधु हैं वह मुझे छोड़ेंगे नहीं। इसका उत्तर मैं उनको दूँगा। आप लोगों ने इन कठिन परिस्थितियों में यहाँ आने का कष्ट किया मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं ज्यादा कुछ कर तो नहीं सकता लेकिन इतना कह सकता हूँ सारे देश के नागरिकों के प्रति जो जिम्मेदारी है उस जिम्मेदारी से मुकर नहीं सकता हूँ और न मुकरूँगा। प्रधान मंत्री भी उतने ही दुखी और आहत हैं जितने हम सब हैं। हम उन पर विश्वास करें। वह हमारे और आप के सब के दिलों में वह स्थान पाने का प्रयास कर रहे हैं जहाँ शांतिप्रिय नागरिक रहते हों वहाँ बिना संगीन की छाया में राहत महसूस कर सकें और जब-जब इस प्रकार की समस्याएँ आए उनसे जूझने में उनका दिमाग, ध्यान पलट न जाए। यह मैं आप से कहना चाहता हूँ। हमारे सब साथी आपस में बैठकर काम करें, आगे बढ़ें। अंततः प्रजातंत्र में नागरिकों के हाथों में अंतिम अधिकार है और उनको साथ रखने की जिम्मेदारी है। इसमें हम सब साथ रहें। हमारी जो संस्था है पूरी तरह से इस मामले में एक मत है और आने वाले दिनों में हम इस पर काबू पा लेंगे। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

Frustration among the young people of India is dangerous

29 दिसम्बर 1992 को इन्दौर के डेली कालेज में आयोजित 53वें इंडियन पब्लिक स्कूल कॉफ्रेन्स में किए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Respected Shri Prasad, Respected Smt. Mahalakshmi, Respected Principal of Daly College, Venugopalji and participants from all over the country in this conference :

I was a little hesitant at the outset to accept the invitation to come here not because I apprehended something unpleasant to happen here but on thinking as to what and in what manner and how shall I be able to contribute something to the great task that each one of you has undertaken as heads of institutions which we in India call Public Schools. Sometimes this name itself becomes a misnomer as the critics of the system point out that it is far removed from the public of India and therefore to call it a ``public school'' is perhaps a contradiction in terms. One does not have to hold this view or not hold this view to appreciate the contribution made by the system to the larger need and task of education in this country, not in the last decade or a few decades earlier, but I think almost from a century. I may not be able to indicate precisely the time since when we got this system in India, but it is certainly not less than a century when the public school system became a vehicle or a means not only to secure knowledge, the personal proficiency in one field or the other but also to equip ourselves individually for the task ahead as adults and as citizens.

One thing that easily stands out, if one were to be a little honest about it, is the total ambience in which this system has been working and contributing to the cause of knowledge in this country. How is it that there was a time in India when people who came through this system or even from outside this system in our schools and colleges had a very high sense of propriety not only for their own self but what is much more important their social responsibility as citizens. It is not a mere coincidence that the young men between the '20s and '40s of this century thought that their first duty is to the country to which they belong. If I could juxtapose it more pointedly, we have examples Like Sardar Bhagat Singh Khudiram Bose, Chandra Shekhar Azad, Ramprasad Bismil and you can count a host of them who preferred to reach out for the gallows so that their country may live and become independent. And why is it today that at the first provocation and at the first point of frustration the young people of India reach out for a kalashinov rifle, a dagger and a scooter. I am not casting any aspersions on any individual institution, but the fact remains that the sense of values has definitely undergone a change to the detriment of our nation. And this is not only true of this country, it is perhaps true of all the countries who would like to call themselves advanced and progressive around the world. I think it is necessary therefore first for the teachers around the world and certainly in this country to come together and debate and decide ultimately how we can restore the sense of values without which no country can prosper and without which we cannot go ahead, however much we may try.

Sometimes one feels that we have returned to the age of Galileo. What was the crime of Galileo? He only spoke out the truth about this universe as he perceived it. Till then everyone said that the earth is flat and it does not rotate. It was the misfortune of Galileo to say that the earth is not flat, it is round and it rotates and that is why we have day and night. And what was the reward? He was sentenced to death and hanged. It appears now we have lost the capacity or courage to speak out the truth, how to get over the nearest obstacle, how to avoid what to us personally or collectively seems to be unpleasent and how not to join issue on matters which are crucial not only to ourselves individually but to our community and to our nation if we want to say that we are a part and parcel of the family of man.

I know you will say I am not talking about mechanism of management of schools. But all these schools, whether public, private or whatever name you give them, will remain empty shells if within the corners of your schools, within the halls and class rooms of your schools the spirit is missing which is producing not statistical scholars but is producing, if I may use that word, men and women who can take up the responsibilities that a very fast changing world is casting on our shoulders.

For us in India, we seem to have come face to face with something which has been dormant in every human being and which has down the ages surfaced now and then to distort not only reason and faith but which enables bigots, total unbelievers and totally unscrupulous people to make superstition and religion the instruments to achieve political power. There seems to be a sense of paralysis in this country and each one seems to be trying to work out for himself or for his group how to take advantage or escape the consequences of this. Instead of standing up and facing it squarely as something which is totally alien to the very concept of India, which is totally alien to the very spirit of religion, we want to trim our sails so that the gust of wind that flows after the tarnado is unleashed enables our ship also to proceed a little further towards where we want to go.

Therefore, the education of our times will first have to address itself to re-kindle that basic and very vital belief in the values of a community, of a country and of a people. We in India are fortunate that we do not have to look around to endorse the validity of those values, the credibility of those principles because for over four or five thousand years this country has witnessed time and again the resurgence of unreasonableness and re-affirmation of faith, perhaps in quick succession, to restore the balance. That is why we have a written history of 5000 years, and not only history for our country, but we have a history which has established linkages with peoples' faiths and beliefs all around the world among thousands and thousands and millions and millions of people who are separated by race, by language, by their own individual perceptions and religions. And yet India has been able to share that belief with them that the human race is one, the world is its home and the barriers that come up inevitably because of this thing or that are only temporary barriers and if the world has to go forward, it will have to bring down those barriers and again proclaim the basic tenets of humanism

which guide and have guided India for centuries.

This has to come back into our educational system. Let me tell you very frankly.. and I say so without any inhibition... that I am not prescribing something to you. The fact is that I am totally incapable of doing that. I have no basic expertise in this field but as a concerned citizen of this country on whose shoulders incidentally because of the for democratic system the responsibility for education rests at the moment, at least I think it is my duty to pose these questions, to raise these questions in a gathering of this kind.

They Daly College in Madhya Pradesh has its own history, has its own great, what I may call, heritage. It was started as a school for princes. It is not that it is now a school for paupers. But it is certainly a school which has increased and spread out facilities that it has for young boys and girls who do not have a long pedigree and who do not descend from any prince or princess. I am sure this egalitarian dimension will be further expanded. Therefore if there is any inhibition or any criticism of this kind, it shall not by argument but by practice be come irrelevant.

I am very grateful to you for affording me this opportunity and I shall be looking forward hopefully to what you deliberate and what you ultimately decide and there is no element in India which should not be approached and there is no path in this country which should not be taken. There should be no wish or hope in this country which is not sought to be fulfilled and this is how we can come together in a common endeavour to enrich our country spiritually, educationally and produce or bring forward those kinds of young boys and girls who will take Mother India to its tryst with destiny as voiced by Pt. Jawaharlal Nehru, on the midnight when we threw off the colonial yoke and decided to march as an independent nation. Thank you very much.

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

श्री वहुगणाजी उदार और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे

सितम्बर 1992 को हेमवतीनन्दन बहुगुणा विश्व विद्यालय गढ़वाल, श्री नगर में छात्रों के सम्मुख दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

सम्माननीय कुलपति महोदय, सभी सम्मानित अध्यापकगण, विश्वविद्यालय के सभी छात्रगण, आज जिन्हें उपाधियाँ मिली है, जिन्हें पुरस्कार मिले है वे सभी सम्मानित भाई, बहन, माननीय सांसद श्री खंडोरी जी, श्रीनगर के सम्मानित नागरिक बंधुओं, सम्मानित देवियों, सज्जनों, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आने का निमन्त्रण देकर आपने जो मेरा सम्मान किया है मै उसके लिए आप सब का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

स्वर्गीय बहुगुणा जी एक प्रतिभासम्पन्न, उदार और राष्ट्रीयता से ओतप्रोत व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने अपने समूचे जीवन को देश सेवा और उन विशिष्ट मूल्यों के प्रति समर्पित किया था जो मूल्य और आदर्श हमारी

सदियों-सदियों की परम्पराएँ है और आधुनिक भारत को भी परिभाषित करती हैं। मुझे सौभाग्य मिला था बहुगुणाजी के सम्पर्क में आने का, सहयोगी की हैसियत से भी और प्रजातंत्र में राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता की हैसियत से भी। और मैं यह कह सकता हूँ कि परिस्थितियाँ कुछ भी हों उनके व्यक्तित्व की छाप से कोई बच नहीं सकता। यही श्रीनगर में लोक सभा के उपचुनाव में बहुगुणाजी के विरुद्ध प्रचार करने के लिए मैं दस दिन रहा हूँ और इस श्रीनगर की जो अपनी अलग पहचान है उससे बहुत निकट से परिचित होने का अवसर मिला है। हमें लोगों का प्रेम और स्नेह तो जरूर मिला लेकिन वोट सब बहुगुणाजी को मिले। इसका मुझे कोई रंज नहीं हुआ क्योंकि इस मिट्टी के एक पुत्र को आपका आशीर्वाद, वरदान, प्रेरणा मिली यह उपयुक्त और उचित था। यहाँ पर यह विश्वविद्यालय अभी बहुत ही शैशव काल में है, विकास की सब मंजिलें पार करना शेष है लेकिन यह स्पष्ट दीख रहा है कि अंतत: यह विश्वविद्यालय इन कठिनाइयों को लाँघ कर देश के विशिष्ट विश्वविद्यालयों में अपना स्थान ग्रहण करेगा क्योंकि यहाँ के लोगों में जो इस विश्वविद्यालय के प्रति प्रतिबद्धता है, जो अनुराग है, जो प्रेम है वही किसी संस्था को उच्च स्तर पर ले जाने में सहायक होता है। वैसे भी हिमालय की गोद में पलने का, बड़ा होने का, शिक्षित होने का और दीक्षित होने का जिन्हें सौभाग्य मिलता है वह अपने आप में धन्य है। क्योंकि हिमालय ही न केवल भारत का प्रहरी है बल्कि भारत की अनेक संस्कृतियों के उद्‌गम और उनकी प्रेरणादायक विकास का भी स्रोत है। ऐसे पर्यावरण में शिक्षा ग्रहण करने का जो आपको अवसर मिला है निश्चय ही आपको यह अपनी प्रतिभा को भी बढ़ाने में सहायक होगी। जैसा मैंने कहा कुछ विलक्षणता को लिये हुए यह विश्वविद्यालय अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करेगा। जो कठिनाइयाँ शुरू में होती हैं वे कठिनाइयाँ इस विश्वविद्यालय को भी रही हैं। कुलपति महोदय ने कुछ का उल्लेख अभी यहाँ पर किया है। कुछ उन्होंने लिखित रूप में देने को कहा है। मैं उनसे इतना ही कह सकता हूँ कि जो वर्तमान सीमाएँ हैं उनसे वे परिचित हैं। लेकिन उन सीमाओं के भीतर इस विश्वविद्यालय के विकास और उन्नति के लिए जो कुछ सम्भव होगा मैं इसे करने की पूरी कोशिश करूँगा। इन हजारों सालों में जो हमें विरासत के रूप में मिला है - सहिष्णुता, परस्पर विश्वास, उदारता, प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा, सब को बराबर की नजर से देखना, प्राणीमात्र को उनकी रक्षा के लिए और उनके बढ़ने के लिए सहायता देने के लिए तत्पर रहना ये कुछ ऐसे गुण हैं जो भारत को विरासत में हजारों साल के इतिहास ने संस्कृति में दिए। यह दुखद संयोग है कि आधुनिक विचारों के द्वंद्व ने आज इन मूल्यों के ऊपर प्रश्नचिह्न लगा दिया है और यह आदर्श चाहे खतरे में है ये आदर्श केवल भारत के अस्तित्व को बनाकर रखने के लिए आवश्यक हैं। देश का अस्तित्व जल्दी मिटता नहीं है यह आवश्यक है, इसलिए कि क्योंकि स्वतंत्र भारत ने यहाँ के लोगों ने यह निर्णय लिया है कि वे प्रजातांत्रिक गणतंत्र के रूप में अपना जीवन व्यतीत करेंगे। प्रजातांत्रिक गणतंत्र को अक्षुण्ण बनाकर रखेंगे। इसके लिए जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह पर कभी नहीं होती है, जिस प्रकार से इस गणतंत्र को संविधान में कहा गया है हम भारत के निवासी अपने लिए भारत को एक गणतंत्र के रूप में स्वीकार करते हैं, तो जब भारतवासियों ने इसे स्वीकार किया है तो उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी भी भारतवासियों की हुई है। इसलिए जो लोग पढ़-लिख कर जीवन में प्रवेश करते हैं, उनका विवेक जागृत है, उनका कर्तव्यबोध जागृत है। समाज की परिस्थितियों से वह अवगत हैं इसलिए जरूरी है कि आप को थोड़ा समय, थोड़ा ध्यान, आपका थोड़ा श्रम भारत के गणतंत्र की रक्षा के लिए भी व्यतीत हो। व्यय हो और मुझे विश्वास है शायद और कहीं कुछ लोग गफलत भी कर सकते हैं लेकिन हिमालय की निश्चल छाया में शिक्षित, दीक्षित हमारे भाई और बहन अपने देश के प्रति इस कर्तव्य का निर्वहन निष्ठा, विश्वास और समर्पण की भावना से करेंगे। इन शब्दों के साथ मैं आप सब को बधाई देता हूँ और इस विश्वविद्यालय की निरन्तर प्रगति होगी आपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। जय हिन्द।

पर्यावरण के सम्बन्ध में नई जागृति आई है

26 सितम्बर 1992 को कानपुर में पर्यावरण संरक्षण पर दिए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

सम्माननीय नरेन्द्र मोहनजी, माननीय जायसवालजी, माननीय मुन्नाजी, माननीय रघुनाथजी, माननीय चंदेलाजी, यहाँ पर मंच पर पधारे हुए सभी अन्य सम्मानित अतिथिगण, आदरणीय देवियों, और सज्जनों।

कानपुर में पर्यावरण को लेकर समारोह अपने आप में एक महत्वपूर्ण संकेत है, और वह संकेत है इस महानगरी के सामान्य जनों का, अपने स्वयं के अड़ोस-पड़ोस नगर के बारे में परिस्थितियों से अवगत होना और उन परिस्थितियों पर जन हित में सुधार करना है। कई वक्ताओं ने कानपुर को प्रदूषण के क्षेत्र में अग्रणी होने की बात कही है। यह चिंता का विषय हो सकता है, संतोष का विषय नहीं। लेकिन संतोष इस बात का जरूर हो सकता है कि यहाँ के नागरिकों ने इसका अहसास करके उसे सुधारने का सँकल्प लिया है और यह समारोह उसी संकल्प का प्रतीक है। इसलिए मैं दुबेजी को और इस संस्था को इस आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आजकल पर्यावरण के संबंध में सारे विश्व में एक नई जागृति, एक नई चेतना आई है और यह जागृति और चेतना स्पष्ट है कि विश्व के नागरिकों को, उनके ध्यान को इस ओर केन्द्रित कर रही है कि जो कुछ हमें इस दुनिया में प्रकृति से विरासत में मिला है हम उस विरासत को किस हद तक संभाल सके हैं और किस हद तक उस विरासत को आज खोने की स्थिति में पहुँच गए हैं। जो चीज अपने प्रयास के बगैर हासिल होती है उसका मूल्य उसी समय महसूस होता है जब वह अपने हाथ से निकल जाती है। वृक्ष है, नदियाँ हैं, हवा है, इनके लिए किसी को प्रयास नहीं करना पड़ता है। यह विद्यमान हैं और विद्यमान थे इसलिए उनके मूल्य को हमने पहचानने की कोशिश भी नहीं की। लेकिन आज सारी दुनिया में मौसम बदल रहा है। सारी दुनिया में अलग-अलग प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं, लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर हो रहा है तब हम सब की निगाहें और उँगलियाँ पर्यावरण की ओर उठ रही हैं। ऐसे मौके पर यदि हम इतना ही ध्यान रख सकें कि जो हमारी पूर्व पीढ़ियों ने हमें दिया था बिना किसी प्रकार से क्षत-विक्षत किए हुए, हम उसकी रक्षा नहीं कर सके लेकिन कम से कम आगे आने वाली पीढ़ियों को हम एक विकृत विश्व, विकृत वातावरण, पर्यावरण न दें, यह संकल्प यदि आज की पीढ़ी नहीं करती है तो आने वाले समय में बड़ी भयावह स्थिति दुनिया में पैदा हो जाएगी। खासतौर से जो विकासशील राष्ट्र हैं, उनके लिए पर्यावरण का संतुलन एक दूसरा पहलू भी रखता है, दूसरी समस्याएँ भी उत्पन्न करता है, क्योंकि यहाँ कभी-कभी प्रतिस्पर्धा हो जाती है। चुनाव करना पड़ता है कि हम अपने विकास के लिए पर्यावरण की रक्षा करें या दोनों वक्त भोजन के लिए जो आवश्यक है, अनिवार्य है उसकी चिंता करें। उदाहरण के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण बात प्रत्येक व्यक्ति और परिवार के लिए है वह अपने घर में भोजन बनाने की है। कोई भी व्यक्ति बिना भोजन के नहीं रह सकता और भोजन पकाने के लिए हमें उर्जा की जरूरत पड़ती है। लकड़ी से आप अग्नि पैदा करें, बिजली से करें जैसा भी करें उसके बगैर रोटी-दाल बन नहीं सकती। और यदि कोई यह कहें कि आप लकड़ी का इस्तेमाल न करें, भले ही आप भूखे रह जाएँ ऐसी बात को कौन मानेगा। इसलिए विकासशील देशों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल निश्चित रूप से कुछ ऐसे उपाय करने होंगे ताकि विकास के और पर्यावरण के बीच में कोई भी प्रतिद्वंद्विता न रहे, हम दोनों को संतुलित बना कर रख सकें। और इसलिए इस दिशा में ऊर्जा के लिए सौर ऊर्जा से बढ़ कर कोई दूसरी वस्तु हमारे काम नहीं आ सकती। इसलिए केन्द्रीय शासन ने एक बहुत ही व्यापक सौर ऊर्जा कार्यक्रम हाथ में लेने का फैसला किया है। जैसा आपने कुछ ही दिन पूर्व प्रधान मंत्री के भाषण के माध्यम से सुना होगा। सौर ऊर्जा की उपलब्धि हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में

उपस्थित है। यदि हम उस तकनीकी को कामयाब कर सकें जिससे यह ऊर्जा एक गरीब से गरीब के घर में नहीं उस गरीब की रोटी दाल बनाने के काम में लाई जा सके तो वह एक महत्वपूर्ण कदम होगा भारतवर्ष में पर्यावरण को सुधार की दिशा में। इसका एक पहलू विकासशील और विकसित देशों के बीच में वर्ग का भी है। अभी जिस सम्मेलन का जिक्र यहाँ पर किया गया है आपके इस सत्र को देखने से मिला है मुझे, पिछली जून में सँयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित ब्राजील में जो सम्मेलन हुआ वहाँ यह बात उभर कर सामने आई। जो विकसित देश हैं, उन्होंने अपने इस्तेमाल के लिए चाहे वह ऊर्जा का क्षेत्र हो, चाहे उपयोग की अन्य वस्तुओं का सवाल हो, चाहे सुविधा की अन्य वस्तुओं का सवाल हो, काफी आगे बढ़ कर उन्होंने इंतजाम कर लिया है। और उस इंतजाम की वजह से आज उनका जीवन स्तर भी आगे बढ़ा है लेकिन उस जीवन स्तर को कायम रखने के लिए जो कदम उन्हें उठाने पड़ते हैं औद्योगिक क्षेत्र में, इंडस्ट्री के क्षेत्र में उसकी वजह से वातावरण सारे विश्व का दूषित होता है। उसका उपयोग दुनिया के चंद मुट्ठी भर देश करते हैं लेकिन वातावरण पर्यावरण पूरे विश्व का दूषित होता है, जब उस पर बंधन लगाने की बात आती है, सीमा लगाने की बात आती है तब वे देश ऐसा समझते हैं अगर एक सीमा से ज्यादा बंधन लगेगा तो शायद उनके उपयोग की वस्तुओं में, सुविधा की वस्तुओं में कमी आ जाएगी और उनको अपने जीवन स्तर को थोड़ा सा कम करना पड़ेगा। तब उनकी समझ यह होती है कि जो विकसित देश हैं वे तो इन चीजों पर बंधन लगाएँ लेकिन उन्हें उस बंधन से उस हद तक मुक्त रखा जाए। यह वजह है जिस पर विश्व को संतुलन कायम करना होगा। यह सम्भव नहीं है कि दुनिया के विकासशील देशों की कीमत पर दुनिया के चंद विकसित देश अपनी तरक्की करते चले जाएँ और उसका दुष्परिणाम केवल विकासशील देश और गरीब देश भुगतते रहें। यह है एक पहलू विषय का कि नये संतुलन को कायम करने की भी अनिवार्यता है। इस विषय पर भी इस दिशा में भी हम को विचार करना चाहिए और अपने बीच में जो विचारविमर्श हो उसमें हमें कोई रास्ता निकालने की कोशिश करनी चाहिए। भारतवर्ष पर्यावरण के संबंध में आज से नहीं आदिकाल से चिंतित रहा है, उसके महत्व को समझता रहा है और यही वजह है कि लोककविताओं में, लोक कथाओं में किवदंतियों में सामान्य धार्मिक पहलुओं पर भी पर्यावरण से संबंधित जो विषय हैं, वह हरदम महत्व के रहे हैं। ऐसा दुनिया का कोई देश नहीं है, जहाँ यह धारणा हो कि पेड़ के लगाने का महत्व होता है पुत्र को जन्म देने के बराबर। जितना महत्वपूर्ण परिवार के लिए पुत्र है, उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उस परिवार द्वारा एक पेड़ लगाने को माना गया है हमारी संस्कृति में। इसका यह तात्पर्य है कि संतुलित पर्यावरण भारतीय परम्परा और संस्कृति दोनों का अभिन्न अंग रहा है। आज हम अपनी संस्कृति की बहुत सी बातें करते हैं लेकिन जो संस्कृति मनुष्य को, वातावरण को, जीवन को, उसके भविष्य को प्रभावित करने वाले की पहल है, उस संस्कृति से अपना मुँह मोड़ते चले जा रहे हैं। संस्कृति कभी एकांगी वस्तु नहीं हो सकती है, सांस्कृतिक दृष्टिकोण केवल एक पहलू का दृष्टिकोण नहीं हो सकता क्योंकि केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत यह हमें सिखाती है और हमारे देश की संस्कृति एक सर्वांगीण दृष्टिकोण को सामने रखकर अभी तक चलती आई है और आगे भी यदि हम भारत के भविष्य को अपने समय के अस्तित्व को कायम रखकर आगे बढ़ना चाहें यह सर्वांगीण दृष्टिकोण हमें अपनाना होगा और उसके लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं एक दूसरे के सहयोग से, बच्चे, बूढ़े, माताएँ, बहनें और भाई सब के साथ एक समन्वय कायम करके सब को भिज्ञ करके इसका आभास दिलाकर अभी भी भारतवर्ष अपना अग्रणी स्थान दुनिया के पर्यावरण को संतुलित बनाकर रखने के लिए योगदान कर सकता है। स्वयं श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने जो पहली विश्व पर्यावरण सम्मेलन जो स्वीडन में, स्टाकहोम में आयोजित थी। विश्व के समक्ष भारत ने अपना एक अलग दृष्टिकोण

रखा है, और हम उस दृष्टिकोण को आज भी कायम रखना चाहते है।

लोगों के दिलों को आपस में जोड़ने की जरूरत

6 दिसम्बर 1992 को मुक्तेश्वर (पंजाब) की आम सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है–

माननीय संसद सदस्य श्री जगवीर सिंह बरारजी, माननीय पंजाब के मंत्री श्री ब्रह्म महेन्द्रजी, प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी के महामंत्री महोदय, कॉंग्रेस के सभी आदरणीय साथियों और यहाँ पधारे हुए इस जिले के और समीप के जिलों से यहाँ उपस्थित आदरणीय बंधुओं। सबसे पहले मैं सब साथियों से माफी चाहता हूँ जिनको दूर से यहाँ आने में दिक्कत हुई, किसी प्रकार की तकलीफ हुई, मैं उनसे बहुत-बहुत क्षमा माँगता हूँ।

आज यह सम्मेलन जिसमें हजारों की संख्या में पंजाब की वीर-भूमि के सपूत इकट्ठे हुए हैं, यह इस बात का सबूत है, कि पंजाब के लोगों के मन में देशभक्ति कूट-कूटकर भरी है। पंजाब के लोगों के मन में हर परिस्थिति मे अमन-चैन को बनाकर रखने की बलवती इच्छा है। पंजाब के बहादुर लोगों के मन में अपनी जन्मभूमि से प्यार है, अपने प्रदेश से प्यार है और अपने देश से प्यार है और ऐसे ही लोगों के लिए हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री का सबसे पहले मै आपको आपके प्रति अभिवादन और शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ। पंजाब को पांच नदियों का प्रदेश कहा जाता है। वे नदियाँ कहीं से भी निकली हों और कहीं भी जाकर मिलें, लेकिन जो उनके अंदर पानी बहता है, उस पानी का रंग एक ही है और वही पंजाब का इतिहास है, वही पंजाब का भविष्य है।

हम सब एक भारत-माता की संतान हैं। हमारी, आपकी माँ एक है, उस माँ की सेवा, उसकी पूजा और उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी उसके सभी पुत्रों पर बराबर है और उस जिम्मेदारी को निभाना हमारा, आपका, सबका परम कर्तव्य है। यह पंजाब का सौभाग्य है कि देश की आजादी की लड़ाई से लेकर पिछले 40-45 वर्षों में जब-जब देश पर संकट आया, पंजाब के बहादुर लोगों ने देश की रक्षा की। केवल पंजाब की सरहदों पर नहीं, दूर हिमालय की चोटियों पर, गुजरात के रेगिस्तानों में और गहरे समुद्र में। अगर देश के दस लोगों की कुर्बानी हुई है तो उसमें कम से कम चार पंजाब के रहे हैं। जिस भूमि की यह महानता हो, जहाँ के लोगों की मान्यता हो, जहाँ के लोगों की यह आस्था और भावना हो, वहाँ के लोगों के प्रति किसी भी प्रकार का अविश्वास मन में रखना या पैदा करना मेरी निगाह में सबसे गलत बात है।

आज से चार-पाँच वर्ष पहले एक बिल्कुल अजनबी की हैसियत से इस सुंदर प्रदेश में मैं आया था। दिल में कशिश, आँखों में नाराज़गी थी, मन बेचैन था और उसी की वजह से बहुत से नौजवानों के हाथों में हथियार थे। मैं जानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति के लिए ऐसी परिस्थिति में काम करना संभव नहीं था, लेकिन मुझे भरोसा दो चीजों का था। एक तो हमारे नेता श्री राजीव गाँधीजी का पूरा विश्वास और दूसरा पँजाब के भाइयों और बहनों की देशभक्ति का, उनके जज्बातों का और उनके अंदर कूट-कूटकर भरी हुई उस भावना का कि वे हिन्दुस्तान के हैं और हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं। प्रश्न केवल विश्वास की कड़ी को जोड़ने का था। यदि राजीवजी अपनी भावनाओं से ऊपर उठकर, अपने दुःख को छोड़कर, जो इंदिराजी की हत्या के बाद स्वाभाविक था किसी भी पुत्र को होता, अगर वे उससे ऊपर नहीं उठते तो संत लोंगोवाल का हाथ उनकी ओर नहीं बढ़ता। संतजी ने, जिन्होंने कई दफे जत्थे निकालकर जेलें भरीं, उनके ऊपर, उनके साथियों के ऊपर भी अत्याचार हुए, अगर उनके मन में भारत-माता की तस्वीर नहीं होती तो वे उससे ऊपर उठकर अमन का, चैन का, विश्वास का हाथ राजीव गाँधी की तरफ नहीं बढ़ाते। इससे हमें इस बात का सबक लेना चाहिए कि जो व्यक्ति अपनी माता की सेवा करना चाहता है, उसे अपने से ऊपर उठकर, अपनी नाराज़गी से, अपनी भावनाओं से, अपने सुख और

दुःख से, अपने स्वार्थ से, जब तक वह ऊपर नहीं उठ सकता है, उसकी सेवा सेवा नहीं हो सकती है, उसके स्वार्थ की केवल पूर्ति हो सकती है। आज जिन परिस्थितियों में भारत घिरा हुआ है, उसमें ऐसे ही देशभक्तों की जरूरत है, वे छोटी-छोटी भावनाओं से ऊपर उठकर इस देश को संभालने की कोशिश करें।

पंजाब की समस्या मुख्य रूप से पंजाब के किसानों की समस्या है। आर्थिक जहाँ तक सवाल है, अगर पंजाब का किसान खुशहाल है, अगर उसकी समस्याओं का समाधान किसी हद तक होता रहता है, यदि उसे अपने काम को करने में अड़चन नहीं आती है तो सारा भारत खुशहाल होता है। आज खाद्यान्न के मामले में अगर हिन्दुस्तान अपने पैरों पर खड़ा हुआ है, हम भीख का कटोरा लेकर दुनिया के देशों में नहीं घूम रहे हैं, उसका किसी को अगर श्रेय है तो वह पंजाब के किसानों को है। ऐसा कौन सा मुल्क होगा जो अपने अस्तित्व को कायम रखना चाहता हो, वह अपने अन्नदाताओं को भुला सकता हो। जिन बातों से किसानों को तकलीफ हो रही है, जिनके बारे में उनकी कठिनाई है, उस एक-एक कठिनाई को दूर करने का संकल्प सरकार ने किया है और वह संकल्प पूरा किया जाएगा आपके सहयोग से, आपके समर्थन से। अगर कोई इस तरह की बात सोचता है या कहता है कि भारत सरकार ने किसानों का साथ छोड़ दिया है या आपकी कठिनाइयों के समय हम लोग आपके साथ नहीं खड़े हैं तो मैं हाथ जोड़कर आपसे विनती करता हूँ कि ये वे लोग हैं जो देश के अंदर असंतोष फैलाना चाहते हैं, जो देश के अंदर ऐसा वातावरण पैदा करना चाहते हैं जिससे हमारी एकता कमजोर हो और मैं समझता हूँ कि यदि कोई भी जन-प्रतिनिधि - चाहे वह विधायक हो या संसद सदस्य हो, हिन्दुस्तान के किसी कोने में किसानों की, मजदूरों की, गरीबों की बात उठाता है तो वह अपना फर्ज पूरा करता है, वह और कुछ नहीं करता। मैं आपसे इस बारे में कहना चाहता हूँ कि इस मामले में आपके मन में कतई कोई शंका नहीं होनी चाहिए।

पंजाब में अभी हाल में दो चुनाव हुए हैं - 1985 में और 1992 में। इन दोनों चुनावों में सात साल का फासला जरूर था, अंतर जरूर था, लेकिन अगर बारीकी से आप देखें तो बहुत कुछ दोनों में एकता है, समानता है क्योंकि हमारे यहाँ प्रजातंत्र है, यहाँ किसी एक व्यक्ति की बात चल नहीं सकती है और ऐसा संभव भी नहीं है कि समूचे देश में जनतंत्र हो, जनता का राज हो और भारत के किसी एक कोने में एक व्यक्ति का राज हो। ऐसी स्थिति तो चल नहीं सकती। 1985 में जब चुनाव कराने का फैसला हुआ तो मैं अपनी जानकारी से आपको बताना चाहता हूँ कि बहुत से लोग उस चुनाव के खिलाफ थे। मैं किसी का नाम लेना आवश्यक नहीं समझता हूँ लेकिन यह बात मैं अपनी जानकारी के आधार पर कहना चाहता हूँ और जब हमारे, आपके दुर्भाग्य से चुनाव की तारीख से दो दिन पहले संत लोंगोवाल की हत्या कर दी गई तो उन लोगों को फिर से मौका मिला यह कहने के लिए कि ऐसे माहौल में चुनाव तो एक मखौल होगा, इसका कोई मतलब नहीं होगा और चुनाव हमें नहीं कराना चाहिए। प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी के पास भी पंचायत जुड़ी, सबसे उन्होंने राय-मशविरा किया और मैं किसी व्यक्ति के बारे में नहीं कहना चाहता, संसद में जो राजीव गाँधी ने उस समय बयान दिया चुनाव के संबंध में, केवल दस लाइन का बयान था, लेकिन वह ऐतिहासिक बयान था। केवल एक प्रधान मंत्री का नहीं, एक ऐसे व्यक्ति का जो भारत में, प्रजातंत्र में आस्था रखता था और प्रजातंत्र की मर्यादा का हर हालत में पालन करना चाहता था। राजीव गाँधी ने केवल एक बात कही थी कि यह चुनाव किसी पार्टी के लिए नहीं हो रहा है। उस आस्था के भरोसे वह चुनाव हुए। कौन पार्टी सरकार में आई, यह तो यहाँ की जनता ने फैसला किया और यही प्रजातंत्र की महिमा है। जनता की अदालत का फैसला ही हिन्दुस्तान में जम्हूरियत की आधारशिला है। अगर स्थिति नहीं बिगड़ती और राजीवजी ने जो वचन दिए थे पंजाब के लोगों को संत लोंगोवाल के माध्यम से, वे पूरे कर दिए जाते तो शायद यहाँ बीच में जो 6-7 साल का खूनी

दौर चला वह पंजाब में नहीं चलता। इसलिए चुनाव 1992 में भी होना जरूरी था क्योंकि इस चुनाव के माध्यम से, कई कमियों के बावजूद, प्रजातंत्र के रास्ते पर चलने का दरवाजा फिर से खोला गया। एक सरकार चुनी गई, काँग्रेस की सरकार और सरदार बेअंत सिंह जी मुख्य मंत्री बने। आज जरूरत इस बात की है कि जो हमारी कठिनाइयाँ हैं, जो हमारी परेशानियाँ हैं, हम जम्हूरियत के रास्ते पर चलकर उन्हें निपटाने की कोशिश करें और पंजाब में अमन-चैन के साथ-साथ यहाँ के लोगों को इस बात का विश्वास दिलाने की जरूरत है कि अब उनको बंदूक पकड़ने की जरूरत नहीं है, उनकी आवाज अपने आपमें इतनी बुलंद है और यह काम अधिकारियों के माध्यम से नहीं हो सकता, यह काम तो उन्हीं के माध्यम से हो सकता है जिनके हाथों में जम्हूरियत की बागडोर होती है।

एक बात यहाँ कई लोगों के मन में उठी और कुछ उठाई गई कि जगवीर सिंह बरार काँग्रेस के खिलाफ हैं, उन्होंने काँग्रेस पार्टी की खिलाफत की है, अनुशासन तोड़ा है और इसलिए उनका बॉयकाट किया जाना चाहिए, उनके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। काँग्रेस के एक बहुत छोटे सिपाही के रूप में, जिसने केवल 33 साल इस संस्था को अपनी सेवाएँ दी हैं, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि काँग्रेस का अनुशासन चाहे कोई भी तोड़े, यह गलत बात है और काँग्रेस के संविधान, नियमों के अनुसार अगर यह प्रमाणित होता है कि जगवीर सिंह बरार ने पार्टी का अनुशासन तोड़ा है तो मैं पहला व्यक्ति होऊँगा जो कहूँगा कि उनको पार्टी से निकाला जाए। लेकिन अगर केवल धौंस-धपट का रास्ता अपनाकर, किसी की आवाज को बंद करने के तरीके के रूप में अनुशासन की तलवार लटकाई जाती है तो मैं समझता हूँ कि इससे बढ़कर इस महान संस्था के साथ और कोई गलत काम नहीं हो सकता और यह बात भी बहुत साफ होनी चाहिए। अमूमन मैं पार्टी के अंदर की बातें बाहर नहीं करता, लेकिन यह पार्टी के अंदर की बात नहीं है, यह पार्टी की साख की बात है और जो पार्टी अपनी साख को बनाकर नहीं रह सकती है, वह आवाम के बीच में जम्हूरियत को चलाने के लिए कामयाब नहीं हो सकती है।

आज मुझे इस बात का अहसास है कि मैं उस भूमि पर खड़ा हूँ जो पूज्य गुरु गोविंद सिंहजी द्वारा जुल्म, अन्याय और आतंक के खिलाफ लड़ी गई आखिरी लड़ाई का स्थान है। इतिहास के हर मोड़ पर ऐसे अवसर आए हैं जब देश को ऐसी ताकतों के साथ मुकाबला करना पड़ा है जो जुल्म, जाति और हठ पर निर्भर रहती है, जो देश के विकास के बजाए विनाश में ज्यादा दिलचस्पी रखती है, जो भारत की एकता को बजाए मजबूत करने के, उसको खंडित करके भी अगर कुर्सी पर पहुँच सकती है, तो कोशिश करती है। पूज्य गुरु गोविन्द सिंहजी ने उस जमाने में ऐसी ही शक्तियों के साथ संघर्ष किया था। आज इस पवित्र धरती पर हम और आप, यहाँ पर जो हजारों लोग इकट्ठे हैं, देश की सुरक्षा के लिए यह फैसला करें, संकल्प करें कि जितने भी खतरे भारत की एकता को हैं, जितनी भी चुनौतियाँ इस देश में अमन-चैन को हैं, जितनी भी बाधाएँ देश की आर्थिक और राजनीतिक तरक्की के रास्ते में हैं, हम सब मिलकर उसी भावना और प्रेरणा से, जो हमको गुरु गोविन्द सिंहजी के महान व्यक्तित्व और प्रेरक चरित्र से मिला है, हम उस संकट से देश को उभारने के लिए एक साथ जुटें और विजय प्राप्त करें उन शक्तियों के ऊपर, जो आज देश को कमजोर करना चाहती है। यही मैं आपसे कहने आया हूँ।

अब यह जगवीर सिंह बरार के क्षेत्र की बात आ गई, आनी भी चाहिए। आखिर सांसद हो या विधायक हो, उसे अपने क्षेत्र की बात करना लाजिमी है। इन्होंने मुझे यहाँ पर एक इनडोर स्टेडियम स्पोर्ट्स के लिए बनाने की बात कही। चूँकि यह काम केन्द्र और प्रादेशिक सरकार को मिलकर करना पड़ता है, जो हमारा इस मामले में नियम है, मैं केन्द्र सरकार के स्पोर्ट्स विभाग की ओर से इस काम के लिए 25 लाख रुपए देता हूँ और मुझे विश्वास है कि प्रदेश की सरकार भी इसमें अपना हिस्सा देकर इस काम को पूरा करेगी। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

धर्म को राजनीति से अलग रखें

27 जुलाई 1992 को पायनियर के श्री परमानन्द झा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न: एक तो जो ये एग्रीमेंट हुआ है और बातचीत हुई है, प्रधान मंत्री की और उन्होंने कार सेवा रोक कर जो लक्ष्मण मंदिर का निर्माण शुरू किया, तो आप व्यक्तिगत रूप से कितने सेटिसफाई महसूस करते है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए मैंने तो यह कहा था कि अच्छा होता कि वहाँ पर कहीं भी कार सेवा न होती, ताकि पूरी तरह से स्थिति शांत होती और फिर विचार विमर्श करके निष्कर्ष पर पहुँचा जाता। ऐसी बात नहीं हुई और हम सब ये उम्मीद करते हैं कि जो आज प्रधान मंत्रीजी ने वक्तव्य दिया है, उसके आधार पर तो आपस में कोई बातचीत के जरिए हल निकल आएगा या फिर अदालत के जरिए हल निकल आएगा। ऐसी ही उम्मीद हम करते हैं।

प्रश्न: परसों विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता ने यहाँ बयान दिया कि तीन महिने के लिए हमने मान तो लिया है, तीन महिने के अन्दर अगर फैसला न हो तो हम राम मंदिर का कार्य फिर से आरंभ करेंगे। इन्होंने साथ-साथ यह भी टिप्पणी की है कि कोर्ट का जो निर्णय है हमने उसको मानने की कोई गारंटी नहीं दी है। इस विषय में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: इस विषय में मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इन्हीं विषयों पर तो मैंने कांग्रेस पार्टी की पार्लियामेन्ट समिति के सामने अपने जो विचार थे, रखे थे। और सतर्कता और सावधानी बरतने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए, यह मैंने कहा था। आज जिस बात का जिक्र कर रहे हैं। यह तो हमारी शंकाओं की पुष्टि करने की दिशा में वक्तव्य है। लेकिन फिर भी हम यह उम्मीद करते हैं कि ठीक है किसी वजह से उन्होंने ऐसी बात की है। लेकिन अन्ततः उन पर प्रधान मंत्री पर विश्वास करके जो कदम उठाया है उस विश्वास में वह विश्वासघात नहीं करेंगे।

प्रश्न: कुछ लोगों का ये मानना है कि ये जो समझौता हुआ है इसके चलते हमने राम मंदिर का कार्य पोस्टपोन किया है। तो इससे बी.एस.पी. और बी.जे.पी. कम्बाइंड को फिर से मौका मिल गया। वह जब चाहें फिर से इस मुद्दे को अपने रूप से उछाल सकते हैं और उसका राजनीतिक लाभ उठा सकते हैं। ऐसा उन्होंने पहले भी किया है?

श्री अर्जुनसिंह: खैर, इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है और पुराने अनुभव के आधार पर जो आप कह रहे हैं, वह सही भी हो सकता है, लेकिन मैं यह कह रहा था कि कम से कम प्रधान मंत्री ने जो भरोसा दिखाया है उन लोगों पर और उनको विश्वास में लिया है और एक शांतिपूर्ण रास्ते से इस समस्या का हल निकालने का प्रयास प्रारंभ करने का वचन दिया है। यह संभव न हुआ तो अदालत के जरिए उसको किसी निष्कर्ष पर लाने का रास्ता अपनाने को कहा है। देश के हित में और समाज के हित में लोग चार दफे सोचेंगे, सोचना चाहिए कि ऐसा कोई कदम न उठाए जिससे बार-बार देश में अशांति का वातावरण बने और साम्प्रदायिक सद्भाव के बजाय साम्प्रदायिक तनाव

पैदा हो। ये तो हर व्यक्ति की अपनी भावना और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

प्रश्न: कुछ ही साल पहले आप लोगों ने संसद में विधेयक पारित किया था जैसे अभी-अभी स्पष्ट हुआ और उसके पहले काफी जोरदार मुहिम छेड़ी भी, आप लोगों ने राजनीति और धर्म को अलग-अलग रखा जाए तो इन दोनों स्प्रिट के पीछे जो स्प्रिट थी, आपको नहीं लगता कि ये जो मंदिर का मुद्दा हो गया है। कम से कम स्प्रिट में इन दोनों विधेयकों के खिलाफ गया?

श्री अर्जुनसिंह: मैं नहीं समझता, बल्कि मैं तो समझता हूँ कि जो कदम कांग्रेस ने पहले उठाया है, केवल उन्हीं मुद्दों को लेकर ही अपने समूचे इतिहास में साम्प्रदायिक तनाव से मुक्त समाज और सर्वधर्म सम्भाव के सिद्धांत के आधार पर समस्याओं को हल करने का प्रयास और देश की एकता और अखण्डता को मजबूत करने की दिशा में ठोस संकल्प को किसी प्रकार की आँच न आ पाए। काँग्रेस और इस सरकार का ये उद्देश्य और उस रास्ते से हटने का प्रश्न नहीं उठाता और न ही ये जो कदम उठाया गया है, ये किसी प्रकार से इन उद्देश्यों के प्रतिकूल जाता है। ये तो केवल एक मार्ग है, जिस मार्ग पर चलकर हम एक जटिल समस्या को हल करने की कोशिश करेंगे। लेकिन हमारी जितनी मान्यताएँ और सिद्धांत हैं, आदर्श हैं, उनमें किसी प्रकार की कमी आने का प्रश्न तो उठता ही नहीं है।

प्रश्न: नहीं, हम काँग्रेस पार्टी की तरफ से कमी की बात नहीं कह रहे थे। हम कह रहे थे कि विधेयक के पीछे जो स्प्रिट थी। अगर भा.ज.पा. आज मंदिर के मामले को एक राजनीतिक इश्यू बना देती है...।

श्री अर्जुनसिंह: वह तो बना ही दिया है, उन्होंने।

प्रश्न: इससे लोग उद्वेलित हो रहे हैं तो ये कानून सिर्फ कागजों में ही रह जाता है। अगर हम कोई ठोस कदम न उठाएँ तो?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, देखिए, वो ऐसा है कि उस विधेयक में बाबरी मस्जिद, राम जन्मभूमि के निर्णय को छोड़ा हुआ है, उसके अतिरिक्त सभी पर लागू है।

प्रश्न: इससे पहले हमने सेपरेशन ऑफ रिलीजन इन पॉलिटिक्स में लिया है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं वो तो हमारे संविधान का अंग है। आपने तो उस बिन्दु पर उँगली रखी है जो बिन्दु जहाँ जिस पर हम या कोई भी पार्टी चाहे वो काँग्रेस हो या बी.जे.पी. हो व्याख्या करके अपने शौक लादने के प्रयास ही नहीं कर सकती वो तो हमारे संविधान का अंग है। हमारे देश के कानूनों का अंग है। ये तो भारतीय जनता पार्टी ने उसके साथ खिलवाड़ करने की बात सोची थी और किया भी। थोड़ी उनको उसमें सफलता भी मिली जहाँ 1985 में दो सीटें थी पार्लियामेंट में आज 117 है और आडवाणी साहब तो खुला-खुला कहते हैं कि हम इस मुद्दे को इसलिए नहीं छोड़ सकते क्योंकि हम दो से 117 इसी के सहारे पहुँचे हैं और तो हमारे पास कुछ है ही नहीं। इस सब के बावजूद आखिर हमें रास्ता तो कोई ऐसा ही ढूँढना पड़ेगा जो परस्पर सहयोग से रास्ता ढूँढा जा सके और वो रास्ता ना निकले तो अदालत के फैसले के आधार पर हम उस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे। इतना ही प्रयास इस नये इनिशियेटिव में किया गया है।

प्रश्न: ये कान्स्टीट्यूशन प्रॉवीजन जो है, कान्स्टीट्यूशन स्प्रिट भी है और सेपरेशन ऑफ रिलीजिन इन पालिटिक्स भी है, इस पर इम्पलीमेन्टेशन कौन करेगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिये ये तो इम्प्लीमेंट करेंगे व्यक्ति और दल अपने स्वयं के डिसिप्लीन से और यदि वे अपने स्वयं के डिसिप्लीन से नहीं कर सकते है और सत्ता प्राप्ति के लोभ का संवरण नहीं करके और इस रास्ते पर चलना चाहते है तो देश के लोग करेंगे और उन्होंने किया है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि बी.जे.पी. ने यह कोशिश पूरी कर ली 89-91 के चुनाव में कि वे उसके सहारे ही वे सत्ता प्राप्त कर लें। लेकिन भारत के मतदाताओं ने ऐसा होने तो नहीं दिया। यही तो हमारे प्रजातंत्र की महिमा है और यह उसके समूचे ढाँचे पर निर्भर करता है।

प्रश्न: ये उत्तर भारत में खासकर के हिन्दी क्षेत्रों में, उसमें जनता दल की जो हालत हो गई है उसके बाद अब सीधा का सीधा काँग्रेस और भा.ज.पा. के बीच ही पार्टी सिस्टम होंगे? और उत्तर भारत में ही भा.ज.पा. मंदिर को एक मुद्दा बना पाई है। दक्षिण राज्यों में नहीं बना पाई है तो उनका ये जो मुद्दा है इसको मान लीजिए खुलकर के विरोध न किया जाए तो इससे आम काँग्रेस कार्यकर्ता में कोई उत्साह है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं आपके प्रश्न की मूल बात समझ गया। निश्चित रूप से काँग्रेस को खुलकर उत्तर भारत में भाजपा के इस धार्मिक मुद्दे का राजनीतिक लाभ लेने की चेष्टा का खुलकर और दृढ़ता के साथ सामना करना चाहिए। किया भी गया है, लेकिन आगे और भी करना चाहिए और काँग्रेस पार्टी ऐसा करेगी। यह संकल्प हमने तिरुपति में अपने राजनैतिक प्रस्ताव को पास करके लिया है। वो प्रस्ताव काँग्रेस पार्टी के केन्द्रीय सेशन ने पास किया है। हम सब उससे बँधे हैं और निकट भविष्य में ही उस दिशा में पहल शुरू हो। ऐसी पिछली काँग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में निर्णय लिया है।

प्रश्न: क्या आपको कभी-कभी ये नहीं लगता है कि आपने जिस तरह से खिलाफत की है, इस मुद्दे को लेकर भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ विजय के लिए तो इसका कोई राजनैतिक असर होने की संभावना है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसे दो ही अवसर तो राजनीति के होते हैं। एक तो चुनाव में हमारे मतदाता यह समझ जाए कि मैं मंदिर के खिलाफ हूँ और हमको वोट न दें। और दूसरा प्रचार के माध्यम से लोग हमारे ऊपर दवाब डालें। मैं दोनों में कोई खतरा महसूस नहीं करता हूँ, क्योंकि जो मेरे मतदाता हैं वह मेरे मंतव्य को और मेरे आदर्शों को बहुत भलिभाँति समझते हैं। मैं मंदिर बनाने के कतई खिलाफ नहीं हूँ, बल्कि मैंने अपने भाषण में, अपने क्षेत्र में और बाहर भी कहा है कि मैं अभी उतना ही आस्तिक हिन्दू हूँ जितना कि शायद अटल बिहारी बाजपेयी भी न होंगे। उनसे अगर ज्यादा नहीं हूँ तो उतना तो जरूर हूँ, लेकिन मेरी यह मान्यता है कि जो हिन्दू किसी दूसरे धर्म का सम्मान और उस धर्म के धर्मावलंबियों की भावनाओं का ध्यान नहीं रख सकता है तो सही मायने में हिन्दू धर्म का भी पालन नहीं कर सकता है। हमारे धर्म की यही महानता रही है, यही मानसिकता रही है और इसी वजह से इस धर्म के पाँच हजार साल से ज्यादा के इतिहास में यह धर्म टकराव में विश्वास नहीं रखता। यह धर्म वर्चस्व कायम करने में विश्वास नहीं रखता। यह आस्था को मजबूत करने में विश्वास रखता है। ये आस्थाएँ स्वप्रेरित हैं। अपने स्वयं के विश्वास से उभरी हैं और दूसरे के प्रति सहिष्णु है, इसलिए मुझे कतई कोई खतरा इससे महसूस नहीं होता, न राजनैतिक और न ही किसी दूसरे तरह का और इसके बावजूद यदि कोई खतरा आता है तो उसको सहर्ष स्वीकार करके उसको लेना ही मैं अपना प्रमुख कर्तव्य समझता हूँ।

Matter of National Reconciliation

27 जुलाई 1992 को स्वतंत्र भारत के ओम गुप्ता पाल के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q: Sir, the editorials, the cartoons, the commentaries are giving an impression that the Prime Minister at the moment is for national reconciliation, while you are for everything minus BJP. That you are having an anti-BJP stance that BJP cannot be a party to any decision making or any national reconciliation. Is that a correct impression or would you like to say something.

A: I think it is clearly motivated impression. I am all for national reconciliation. I am all for seeking a line of action which helps cohesion in the country, which helps integration and which ultimately results in the unity of the nation. All I do put across is that we should be aware of the various pitfalls which in the past have resulted in our journey or in our effort for united India to be, if I may use that word, waylaid.

Q: Up to what extent, you are willing to seek the cooperation of BJP and where would you draw a line of demarcation, so far good, but beyond this no more?

A: You cannot have an artificial line drawn across the minds and hearts of peoole on the basis of one's own perceptions and one's own beliefs, which does not take into account the broad canvas of this country, the strands, that whether to make up the fabric of this country and perceptions which are routed only in overwhelming passion of achieving power under whatever circumstances it may be. In a polity of the kind that we have in this country, a rural society, a society where there are people of various denominations and faith, where languages differ, where people believe in so many things, this polity can only be maintained or be kept intact, when we have a very, very broad catholic and tolerant outlook for each other. And when I come to think of this or why only I, I think our constitutional founding fathers, those who went before it and we can call them the freedom fighters, who struggled for not only the freedom of this country, but also for a certain identity of this country, all have said that this country has to be a secular and a democratic country. Some have also said that it should be a socialist country because economic disparities are also so widespread that if we tend to ignore, this, the social tensions that have been generated by historical factors could go out of hand, and really damage the country or jeopardise its orderly progress.

Now, wherever the BJP agrees with this, I am in agreement with the BJP, but wherever it tends to strike on its own, just because that route they believe, can lead them to political power unmindful of the consequences of that route, well I don't agree with them and this I think, is the dividing line.

Q: Up to what extent do you think, you have an experience of dealing with the BJP, both at the

centre and the State level, up to what extent you think, BJP will be inclined to accept your line of thinking?

A: Well, I am not asking anybody to accept my line. Well, this is not my line or anybody else's line. This is the line of this nation, enshrined in our Laws, enshrined in our Constitution and therefore, I hope and pray that the BJP also recognises. There has to be limitation to their own way of thinking or their own way of acting.

Q: The need to reiterate and to re-define, re-emphasise, this particular point of view is necessary, has become necessary because, perhaps, BJP does not agree into with this and obviously when you point it out, you don't think that the BJP is in agreement with it in totality. So up to what extent, do you think that it is possible to work with them?

A: If they don't accept this and they themselves or their front organisations or their surrogate organisations are going to be allowed to help the country to ransom as and when they feel necessary for them, I think no Indian wants this country to exist as it is today, can cooperate with them and when I am saying this, I am making a fairly strong statement that the experience of last almost thirty years, leads us to this conclusion. Otherwise, if the BJP wants to come to power in the democratic set up that we have, they are most welcome to, whether it is in a State or at the Centre, but look at the methodology, look at the total thrust that they have had. Still they say, they want to mandate the building of the temple and they say we have received this mandate and therefore, this is a task which at least in U.P. they have set for themselves because it depends on a mandate.

Now, the question naturally arises, is it desirable or is it permissible under the laws of the land, the constitutional framework that we have, that any political party or person has the right to seek a mandate on a religious basis. He does not have it and if he seeks such a mandate, it is obviously being sought beyond the parameters of the laws and the constitutional requirements.

Now if somebody says that we don't care for anything because we know this is what is going to get us the support. Therefore, whether it is constitutional, legal or proper or improper, we will do it, then they are throwing a challenge to the entire concept of the Indian polity.

Q: Still when a section of your party including the Prime Minister says on the floor of the House that we don't mind in building the Temple, the Temple can be built - don't you think that to some extent, it is succumbing to that?

A: I don't think so because you see saying that we are for building of the Temple, which is now part of our manifesto and which we have been saying all along, but it is not an unqualified statement. The statement says "Yes, Congress is for building the Temple, but is not for dismantling the Mosque". This is the sentence.

It also says that ``In case the Temple has to be built, let us all agree through dialogue, through mutual discussion that this is now the Temple is going to be built" and if there is something which is irreconcilable, well let us take the rational and democratic route to enable the courts to come to a judicial assessment and decision and let everybody accept it. If the BJP or anybody says, no this is also not acceptable, then what other conclusion is the nation going to draw from it.

Q: Do you find the statement made by the Prime Minister this morning in the Parliament at variance to what you are saying?

A: Not at all. In fact, he has demarcated a framework in which this pursuit of a peaceful solution can be taken up without any side giving up, whatever it may be feeling and if that is not possible, then the commitment to ask the judiciary to decide it is also there in that statement. But the point really is whether those who say that they want to go this route, apart from us and the Prime Minister, are they prepared to commit themselves to the conclusions that may be reached either after mutual discussion or through a verdict of the court?

Q: Do you think that some kind of an assurance of guarantee should have been extracted from them?

A: No, there is no question of assurance or guarantee. Now the dialogue will take place, the framework will be prepared. I am sure as an act of prudence, once that process has begun, somebody will ask everyone of us that look here, you are joninig in this dialogue, you are getting involved in the process, do you have any commitment to its end result. If you have not and you only want to play with us and the country's future, then we will have to see whether it is possible to sit with such people.

Q: What is your feeling?

A: I would not like to reject anything out of hand or impute any motive to any one *per se*, but as I said, let us hope and pray. Past experience has given us a very, very bitter taste in our mouth. When the Shilanyas was made, all these people agreed and appended their signature on an agreement that after the Shilanyas is done, there shall be no construction until and unless all the issues are sorted out and an agrement is reached. Within one week, they started on the plan for construction and I think the entire Rath-Yatra, which I have called the Chariot of Fire arranged by a demi-God across the length and breadth of the country was only for this purpose, in total defiance of that commitment, which was made. Now, this is the experience, but not withstanding this experience, I do hope and pray that now the path that will be followed, everyone will agree to it.

Q: The kind of understanding which the Prime Minister has reached with these saints, was it the

same or was it in totality an agreement what you said in CCPA and CPP - you had raised certain resolutions.

A: Yes, I think, these are not unexceptional things because he said that they will stop the work, then we will start the dialogue and the process of the dialogue and I think, his statement has only elaborated that today.

The real point would come when these people join that dialogue, what do they say and in this respect, there are one or two steps, which I think, are necessary to create or to remove, rather the misgivings that have arisen in the meantime. One is about the plan of the Temple. Though officially, the VHP or the BJP have not yet, or the State Government of UP have not told anyone as to what is the plan of the Temple, but it is difficult to believe that they have started a building without being aware of what the plan is. At least, they are aware of; that awareness must be shared with the people of this country, because the doubt that has been created is that perhaps, I am using the word `perhaps' because I do not know like millions of people in this country, I also do not know, but the apprehension is that the plan has been devised in such a manner that in a final stage, it subsumes the mosgue, the Babri Masjid within the structure of the temple. Now I am not saying that that is so, but if this misgiving has been raised, I think it is in the largest interest of every one that it should be cleared. That plan should become public property.

Q: Do you think that the economic problems and the other kind of communal tensions in the country, at the moment, are so big that we can leave apart all historical legacies and other experiences; we can take up the problem in a different way, which perhaps, has to modify and improvise these thinkings or these perceptions.

A: In the march of any nation through history, you cannot pinpoint any period of time as being the point of time where one has to prove everything all over again. When we were facing the British colonial power, there were certain things which we had to do and take into account. When we became free, no one could say that the same perceptions and the same kind of action was needed in the post- freedom period. In the formative stage of independent India many steps were taken, many thoughts were projected, many actions were taken, as a consequence of that line of thinking. It was helpful in the building up of this country, both economically, socially and politically.

Now, the same things are not relevant today. Perhaps, the same methods also need to be changed, but what is definitely relevant is that some of the basic things that were always before us throughout this period, should not be lost sight of. That is we have to build a strong self-reliant and democratic country. In these broad parameters, a society which provides

social justice, a society which takes care of the feelings of the ambitions and also of the frustrations of all the different sections of the people of this country that can never be lost sight of. And these are the things which we must always keep in mind. Yes, we will be devising a lot of new strategies, quite a lot of new action programmes, a lot of new approaches to serve this angle. At this moment, when we are talking of a new economic policy, we are not giving up everything else and charting a totally new course. We are learning not only from our experience; we are being enriched by our experience. We have gained by our experience. On the road to self-reliance, the beginnings were made by the commanding heights of the public sector, as it was said. Why was this done? Because the capital formation needed for these large investments in the basic industries of this country, power, machine tools, steel, aluminium, they were not available in the private sector. There was no choice; either we should have waited for twenty years for the private sector to be big enough to do this or we did not wait twenty years and we said, all right, these are the areas in which the State will invest and that became the public sector. But that did not mean that this step taken 25, 30 years ago - for all times to come should be taken to mean that nowhere else or at no other point of time, the private sector should not come into this. Now if some people call this as a change of course, they are not able to understand the course of history.

Now the same thousands of crores, which was invested thirty years ago for these industries, naturally they have to be expanded. Now in the expansion programme, if the capital formation is possible beyond the States' own resources, then that should be allowed and the resources that will go into that, should be channelled into other resources, anti-Poverty Programme or whatever else may be needed. So, this is I think what the new economic policy is about and naturally, it has taken into account the global perceptions that have emerged in the last decade of the 20th century.

Q: What is your reaction when a section of media calls you as the Prime Minister in the waiting.

A: Well, I know lot of people who would like to think that way and perhaps, believe that I am all the time thinking that way. I am very clear in my mind, I am not waiting for anything. This waiting game is self-deceiting and also in my veiw, totally irrelevant. At this moment of time, it is a coincidence that I am here because the personal experience through which I have passed during the last three years, could just as well have meant, I am not here today. But that I am here is by the Grace of God and I see my duty only to help this country cope up with the problems, the challenges of this time and of the future. To the extent, I am allowed to something, I think, that alone is sufficient for me. I see no compulsion to become anything to do this.

Q: No, but if a leader of your stature, as you very rightly pointed out your viewpoint or another

point of view or cautioned about certain pitfalls, if you give your opinion on various matters, as and when the need arises, is there any harm in doing it?

A: Well, I have not been hesitant to do that. But then if I do that to read into its meanings which are not relevant, that is also not desirable.

Politics of letter writing

5 अगस्त 1992 न्यूज टाइम्स के सम्पादक श्री डॉ. रामानुजम के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q. What was the purpose of writing the letter?

A. The only thing is that the points that have been mentioned in the letter are receiving the attention of the partymen. That is all. That was the purpose, nothing else.

Q. The media reaction is that you have something else in mind that you would like to project yourself as the leader of the party and this letter is one medium.

A. Well, the media perception, I am no one to challenge because we cannot do without the media.

Q. How do you react to this media response?

A. I think this is too superficial an assessment. I won't say superficial, but too superficial because one can't get projected like this, one and second, I have no intention to project myself because there is no need to do that. I do realise, however, that in the overall context of the Congress party's position is the country today, there is no escape for us, but to strengthen its position in the North because if you take it on a very practical level, the Congress party would be in danger of becoming a regional party. If we don't give adequate and proper attention to North and South, both, may be some other party can devise a strategy, which creates a pocket of influence for itself and because of that they can concentrate there and then use that, whatever comes out of it as a lever for political bargaining or political activity.

Q. No, there is no dispute on that.

A. If the only difference is that I am saying it, therefore....

Q. Even if you said it on any platform, like Congress CWC or Congress party meeting...

A. That I have done already so many times.

Q. But these letters, the Congress culture are always perceived as a sort of challenge to the High Command, for instance, Kamlapati Tripathi sending letters to Mrs. Indira Gandhi or Rajiv Gandhi and now you are doing that. It is always perceived as a sort of challenge, that is why, the media response is like that.

A. Well, I can say very candialy that there is no question of any challenge to the Prime Minister or the leadership because I may not be a very important person in the Congress.

Q. You are a very shrewd politician; you will not pose a direct challenge to him.

A. But I know the challenges that the Congress is facing and I know those challenges have to be met collectively. They cannot be met separately. Since the challenge in the North is by the BJP, our perception of the political contours and intentions its position as many other things of that party is as necessary for the Congress party to maintain. So, this is the reason for this and lot of people thought that this is one thing which was being overlooked. There is no question of any challenge.

Q. Is there anything to the timing in the sense that this letter comes hardly a week after the Prime Minister is supposed to have intervened and sort of at least told...

A. There is no timing except that perhaps, this was the time to say it.

Q. Did you give enough time for them to implement it?

A. Initiation 'to ho kuchh' - I enquired in between and then I wrote the letter. One can always read what one likes into it, but I think this was the time to draw the attention because I have reflected only the silent feelings and opinions of the partymen, as I had perceived it. I have travelled all over the States in the last 4-5 months and interpretation was given to that also.

Q. O.K. Do you think that his action in calling various speakers in discussion with him and sort out the issue, is that correct?

A. Well, That was a step which he took in his wisdom and we all supported it. So, the situation was fairly tense and it has to be defused.

Q. Was there any other way he could handle this issue, rather than talking to VHP fellows?

A. I think this was the most direct way.

Q. But you seem to have gone on record that election is made and has to be made.

A. Still I don't think anyone can dispute that if a situation arises, as it has arisen in the history of many countries, that it becomes inevitable, a generation has to do that. That is what I have said, but that was only the concluding part. The main thing that I have said in the CPP meeting, Parliamentary party was a word of caution - that we should be charry of the manner in which these people have responded and the second was about the intentions and the litmus test for that on the part of the VHP, BJP would be, whatever you said, was that the plan for the temple which they seek to construct, should be known to the country, which they are guarding as a defence secret.

Q. What exactly they want there - they want to construct a temple. Even Rajiv Gandhi said, yes, we would like to build a magnificent temple later on, but not on the disputed land now if you

are going to build a temple at some place other than the disputed part of land, that means mosque will remain as it is. So, you want the idols should be removed and kept in that temple and mosque to remain as it is.

A. You see, don't jump from one to the other. The Congress stand is that a temple should be built, the mosque should not be dismantled.

Q. Now there is also a feeling that there is an attempt to reopen Churhat Lottery case.

A. Well, on this there is total lack of factual knowledge and please don't be hurt if I say...

Q. No, no, not at all, we are only reflecting as to what others say.

A. Yes, because while the media is free to make its own decisions and project its own perception, I think even for the media as it is said: `facts are sacred, comment is free'. When facts are not sacred and comment is free then a different picture emerges. In this case, with all humility, I would like to say that no effort has been made to get at the facts first and then the comments.

Q. Will you please elaborate your comment in brief.

A. Well, I have on hesitation in doing so. But I must repeat one thing to you. My experience has been and that in the last 15-20 days, I won't take the name of any newspaper, I have made this plain to three different people. Every other part of my interview is published, this is not published.

Q. O.K. Let us see this comes out tomorrow or day after tomorrow.

A. I am not taking any assurance from you. I am only stating something which has happened. I will be very brief in this. This whole thing started by a petition filed by Mr. Kailash Joshi, who was then the leader of the Opposition, when I was the Chief Minister. I would like you to get that petition's copy and send it to your trusted lawyer, who will only tell you - you ask only one question in the entire petition that he had filed, did he make any allegation against me. You get the reply from your lawyer, don't go by what I am saying. Then came the judgment. You ask the same lawyer to tell you whether that judgement has held me guilty of anything.

Q. Then why did you resign?

A. Let me finish. In an obiter dicta on an issue which was not for judication before the Court and in which they gave me no opportunity to have my say, the High Court said - even though I am recollecting the words as I recollect - ``Even though we do not agree with the averments made by the petitioner....' I hope you understand the meaning of this....'Yet it would be proper if Mr. Arjun Singh were to explain to the world, not to the Court, as to how he got the funds to build his house".

This was the two-sentence observation in that. That was considered by me and also by my party to be sufficient in the interest of the party image that I should step down. I stepped

down. This was in January, 1989. In April, 1989, I took the matter to the Supreme Court seeking expunction of these comments. The Supreme Court gave a three-line judgement that 'all this that has been stated is not a finding or a fact. Hence there is no question of any order.' This I was satisfied. When the Supreme Court says, it is not a finding or a fact, I am satisfied. This order was delivered on 19th April. After that, the order of the Court a Commission should be appointed to go into the affairs of the Society, how the lottery was run and whether there were any irregularities, monies were siphoned off here and there. I am not a Member of the Society. The Government of Madhya Pradesh, which was then, by a Congress body published advertisements in the entire country, I am sure, your paper must also have published it, in all the fourteen languages that are there in the Eighth Schedule. I do not know how much money was spent on it, but at the end of it, there was only one complaint that came. One, mind you, and this can be borne out by the record, apart from Mr. Kailash Joshi, there was only one person who filed an affidavit or paper before the Commission in the entire country and he also only filed because he had not then received the prize money which he thought, he should have gotten. He did not make any complaint against any one. Now when the Commission started its work, Joshi filed an affidavit and the work started. I was never summoned to the Commission, though time and again, Mr. Joshi made attempts that I should be brought under the purview of the Commission. The Commission rejected all those applications. The Commission was going on. In March, 1990 came the BJP Government. One of the first things they did was, they enlarged the terms of the Commission to include me and I was advised and then I went to the Court that this is not justified because they have no facts to order an enquiry against me. First, you must know, satisfy yourself that there are certain facts which necessitate an enquiry and an enquiry is not an arbitrary act and my stand was upheld by the Court. They quashed that order for enlarging the terms. Against that order, the State of Madhya Pradesh has a right to come to appeal to the Supreme Court. They filed an appeal here asking for two things, stay of the order of the High Court and ex *parte* admission of their petition. The Supreme Court did not grant either of the pleas. They only said, issue notice to Mr. Arjun Singh also. After hearing him, we will decide what to do.

That is the notice that has come to me. It is not the reopening of the whole thing, which is being generally circulated or generally projected. These are the facts. Now after that why should I bother my head in going about the world and saying. Apart from this, I feel and I have said in my petition, when I sought the quashing of that order that how do I go and satisfy the world. This is a very tall order.

There are only two ways how I could have done it. One is the legitimate forum for determining

the sources of income, whether they are legitimate or illegitimate or in exccess from the income-tax authorities. For two years, the income-tax authorities went through everything threadbare. At the end of their enquiry, they gave a sitting order that nothing was improper. All the income that was shown was legitimate; the money used in the house was legitimate and the accounts were reasonably correct.

The second was the world as a politician sees it. It is an electorate. On two occasions, both when I fought the Assembly and when I fought the Parliament, I made this an issue in my election that if you beliveve that I am guilty of this, don't elect me. I can say that I have not done anything wrong in it, that is my claim, I want your support on this. Now what else can I do.

Q. Theoratically yes, you are right.

A. Then what is there.

Q. No, about this electorate business, I do not know whether this is one of the faults of democracies, there are general elections where even dacoits are being elected.

A. I am not saying that what happens in elections, but after all a democracy goes by elections. Is there any other litmus test you apply? I took care of the legal processes. Now if all the laws of the land have to be converted or projected in such a manner....

Q. There is lot of confusion on the definition for secularism. I mean anti-Hindu is considered to be a very secular person. It is another thing when you say a pro-Hindu in Tamil - so this confusion is there.

A. Well, I think this confusion...

Q. For example, let me tell you, when a Hindu procession is attacked in Gujarat, no voice is raised in the Parliament; if the Sadhus are not able to go to Amar Nath and from Jammu they are arrested, no voice is raised. If Congress is praising Muslim League in Kerala, it is not considered a communal thing, but if something is done by BJP or some other party, something pro-Hindu, it is immediately branded as communal.

A. I think that is a very, very prejudicial point of view. I don't believe in this kind of thing.

Q. Did you make your voice heard?

A. I think this is fairly late in the day to be searching for a definition for secularism.

Q. But because it has been distorted.

A. Secularism is so well understood. If it has been distorted then whoever is responsible for that distortion, must bear it up.

Q. You see when Hindu refugees come from Kashmir, no congressman raises a voice.

A. Of course, everyone has raised. Well, I think, the party is trying to give whatever...

Q. But if a Muslim is uprooted or held under perventive detention, a lot of voice is raised.

A. I think this is a very clever BJP line, but I do not think...

Q. But you have to answer that...

A. Yes, we have answerd it.

Q. Whenever any damage is done to Hindu cause, you keep quiet, you don't raise your voice, I am citing instances.

A. Where ths State becomes party to something...

Q. Let me tell you the recent case, yesterday I read in Delhi papers, some fellows, some Hindus or I do not know some Sadhus or something, they wanted to make a pilgrimage to Amar Nath, that Shiva's Ice Lingam and they are not able to go there, they are pervented by the J & K Government.

A. There must have been some reason for it.

Q. What that reason.

A. From the security...

Q. In his own country, he cannot go there.

A. For security reasons.

Q. You provide security for them.

A. There must be some constraints. I do not know the facts of this case what you are saying, but if some such restriction is placed, there must be some rationale and reasonable reason for it. Just because somebody wants to prevent Hindus from going, I don't believe that. If you examine everything and then come to this conclusion, O.K.

Q. People see it like this, to protect a mosque, which is not in use, you do anything, but to give protection to fellows who go to the pilgrimage, you can do anything, you are preventing them on the reason of security.

A. It is not doing anything; it is doing adequate, that is the point.

Q. That is the plank on which the BJP is riding.

A. Well, I think they have ridden roughshod, but this country is big enough and if past experience...

Q. Rather it gives some sort of support to the BJP - that is what I am saying.

A. If past experience is any guide, the people of this country can in my humble opinion, make a very, very sober decisions.

Q. That is what they have done in U.P.

A. Well, that decision, it only needs to be looked at a little closely.

Q. They did it in North, all the four States.

A. It needs to be looked at only closely so far as the all India level is concerned, the mandate is very clear.

Q. I am not talking about the temple.

A. No, no, I am not talking about only of the temple, that approach I did not even raise the name of the temple. I am talking of that religious-political approach.

Q. My feeling is, if you stretch this too far, this secularism concept, you may be pushing the Hindus to the wall, perhaps that danger is there.

A. Well, I don't think that is either intending or intended or is being done.

Q. I have a couple of questions.

A. I think we will have to end because I have to go to the Parliament.

देश की आर्थिक स्थिति गंभीर

21 अगस्त 1992 को न्यू मस्तक पाक्षिक पत्रिका के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

प्र. देश के सामने आज जो समस्याएँ मुँह बाए खड़ी हैं उनमें से आप किसको प्रमुख मानते हैं?

उ. देश के सामने तो बहुत सी चुनौतियाँ हैं, आज की परिस्थिति कुछ ऐसी है। सबसे बड़ी चुनौती तो आर्थिक चुनौती है। जो आर्थिक स्थिति है वह काफी गम्भीर है। अगला एक वर्ष करीब-करीब लगेगा, स्थिति से उबरने की दिशा में बढ़ रहे हैं या नहीं, यह मालूम करने के लिए। लेकिन उस मामले में कठिनाइयों के बावजूद जो रास्ता चुना गया है वह शायद सभी रास्तों से उचित रास्ता है। इतनी अगर तकवारी की जा सके कि जो भी हो, परिस्थितियाँ जो भी बनें उनसे समाज के कमजोर वर्गों पर जो दबाव बना है वह बढ़ेगा उसमें हम उनकी जितनी सहायता कर सकें या कम दबाव वह महसूस कर सके, शायद उतनी ही जल्दी स्थितियाँ बदलेंगी, विशेषकर महँगाई और औद्योगिक उत्पादन की गति अभी पूरी तरह से वैसी नहीं हुई जैसी कि होनी चाहिए। विदेशी मुद्रा की स्थिति भले ही ठीक हो गई हो, लेकिन उस विदेशी मुद्रा के भंडार से तो देश का काम नहीं चलेगा, जब तक कि एक्सपोर्ट से पूरी तरह से निपट सके और पूँजी और न लगे, देश के अंदर भी और देश के बाहर भी।

दूसरी चुनौती है, जो हमारा संवैधानिक ढाँचा है और जो एक प्रजातांत्रिक ढाँचा जिससे निकला है उससे जो खतरे हैं, उन खतरों से भी बचना और बचाना दोनों बहुत आवश्यक है। इसमें यह महत्वपूर्ण नहीं है कि काँग्रेस पार्टी के हक में स्थितियाँ हैं, काँग्रेस पार्टी शासन में है या नहीं है लेकिन कुछ ऐसे मूलभूत आधार हैं जिन को भारत के साथ और हमारे गणतंत्र के साथ ही जोड़ा जा सकता है और देखा जा सकता है। उनमें किसी प्रकार की अगर विकृति पैदा हुई तो उसका असर देश के ऊपर भी पड़ेगा और मैं समझता हूँ क्योंकि भारत इतना बड़ा देश है यह केवल अच्छा या बुरा जो भी हो उसके परिणाम देश के अंदर ही नहीं होंगे अन्तर्राष्ट्रीय परिणाम भी होंगे।

दूसरा है जो हमारी धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप है, ढाँचा है, देश के कानून हैं, चाहे चुनाव हों या अन्य, ये सब उसी पर आधारित है। अगर इनको तिलांजलि देकर कोई काम होता है तो उसका असर निश्चित रूप से पड़ेगा।

और इन्हीं सब चीजों को देश के लोगों को देखना है क्योंकि भारत के अंदर इन सब चीजों की वजह से यदि कुछ होता है तो हमारी एकता कमजोर होगी और एकता कमजोर होगी तो फिर स्वाभाविक है हमारा राष्ट्रीय जो अस्तित्व है उस पर खतरा भी पैदा हो सकता है।

प्र. भारतीय जनता पार्टी शासित राज्यों की सरकार का कामकाज कैसा चल रहा है?

उ. इसमें केवल मेरी प्रतिक्रिया का तो महत्व नहीं है। जितने भी प्रबुद्ध लोग हैं और समाचार पत्रों में जो समीक्षाएँ हम लोग देखते रहे हैं, समाचार देखते रहते है, कामकाज की तरफ किसी की दिलचस्पी है ऐसा तो नजर आता नहीं। सरकारें बन गई, बनी रहनी चाहिए, एक तो यह एक मात्र उद्देश्य दिखता है क्योंकि ऐसे किसी भी राज्य में कोई इस प्रकार की पहल शुरू नहीं हुई जिससे यह प्रतीत हो जो वहाँ की मूलभूत समस्याएँ हैं, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक भी कई समस्याएँ जगह-जगह हैं, उनके समाधान की तरफ कोई बढ़ने की कोशिश हो रही है। प्रतिक्रिया का स्वरूप कुछ भी कहीं हो गया हो, बात अलग है। इसीलिए धीरे-धीरे जो उनका जनाधार है कमजोर हुआ है और मैं काँग्रेस पार्टी में हूँ, काँग्रेस पार्टी के हितों को ही सर्वोपरि मानता हूँ लेकिन जनाधार के आधार पर चुनी हुई कोई सरकार जनाधार की उपेक्षा करे और उसके फलस्वरूप जो परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं उससे अंत तक किसी न किसी रूप में गणतंत्र को ही कमजोरी आती है और इसीलिए मैं उसके बारे मैं जो मेरे विचार है सो तो हैं।

प्र. दिन प्रतिदिन यह धारणा सबल होती जा रही है कि काँग्रेस आई और भारतीय जनता पार्टी ने राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एवं आर्थिक नीतियों एवं समस्याओं पर तकरीबन एक सा रुख अपनाया है। इस संबंध में आपकी क्या राय है?

उ. इसका एक पहलू तो यह है जो नीतियाँ बनाई गई हैं, एक वर्ष पीछे से जिन पर अमल हो रहा है यह कोई भारतीय जनता पार्टी से पूछकर तो नहीं बनाई गई हैं। यह तो उपज काँग्रेस पार्टी के समय के चिंतन की है। और परिस्थितिजन्य निर्णयों से है, बहुत से निर्णय ऐसे लिए गए हैं जो 10 साल पहले लेने की जरूरत नहीं थी। आज उनकी जरूरत है लेकिन काँग्रेस ने अपने मूलाधार से विमुख हुए बिना भी उन निर्णयों को लिया है। ऐसे निर्णयों में अगर भारतीय जनता पार्टी के पास दूसरा विकल्प न हो और विकल्प के अभाव में वे उन नीतियों की आलोचना कर सकें या कोई विकल्प प्रस्तुत न कर सके उसका कोई यह मतलब नहीं है कि हमारे बीच में कोई समझौता है या कि तालमेल है और यही प्रधान मंत्री का शुरू से प्रयास रहा है कि वे जो राष्ट्रीय मुद्दे हैं उन पर आम सहमति बनाने की कोशिश करें। कहीं बनती है कहीं नहीं बनती है। जहाँ नहीं बनती है वह खिलाफ वोट करते हैं। लेकिन इससे कोई काँग्रेस के दृष्टिकोण में फर्क नहीं आया। इसलिए परिस्थितियाँ तो अपने-अपने तरह की हैं। अगर किसी बात पर वह समर्थन करते हैं या उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है तो नही है। उनके सहयोग के लिए किसी नीति में परिवर्तन किया गया हो या उसको बनाया गया हो इसमें कोई ऐसी बात हुई हो मुझे कोई मालूम नहीं होता।

प्र. ऐसा तो नहीं है कुछ गुप्त समझौता हुआ हो, इनके और प्रधान मंत्री के बीच मीटिंग में? आम जनता को ऐसा लगता है जो भारतीय जनता पार्टी पहले चाहती थी या कहती थी, ठीक है आज की आवश्यकता है, जैसा आपने बताया, जैसा वह चाहते थे .....?

उ. जैसा मैंने कहा अगर कोई इस प्रकार की थ्योरी बनाना ही चाहे, क्योंकि ऐसा कोई बहुत विपरीत दिशा नहीं ले पा रहे है इसलिए समझता हूँ एक यह निष्कर्ष निकालने में कोई अड़चन नहीं है लेकिन जहाँ अयथार्थ है मैं नहीं समझता कोई भारतीय जनता पार्टी से समझौता है। उनकी मजबूरी मैं जरूर समझ सकता हूँ क्योंकि

आज की दुनिया में और हमारी जो परिस्थितियाँ है देश के अंदर उनमें विकल्प बहुत से निकलेंगे इतना आसान तो नहीं है। ठीक है विरोध स्वरूप कोई बात कहता रहे, वह अपनी जगह ठीक है, विरोधी पार्टियाँ कभी ऐसा भी करती है। यह स्थिति है लेकिन कोई गुप्त समझौता है ऐसा तो मैं नही मानता।

प्र. यह कौन से मुद्दे हैं जिनको प्रधान मंत्री ने तीन वर्ष तक और अपके द्वारा पाँच वर्ष तक न उठाने की बात कही गई? इसको स्पष्ट करें?

उ. उन्होंने अपने भाषण में जो कहा वह उतना ही संकेत है इसके अलावा कोई संकेत है नहीं। ऐसी समस्याएँ जिनसे देश जुड़ता नही, टकराहट होती है, टूटता है ऐसे कोई शब्द उन्होंने इस्तेमाल नहीं किए। मेरा भी संकेत ऐसी ही समस्याओं की ओर था, उसकी पृष्ठभूमि भी वही थी जो प्रधान मंत्री की पृष्ठभूमि थी, और उसका मतलब यह नहीं है कि ये समस्याएँ गौण हैं इसलिए इन पर विचार नहीं होना चाहिए। उसका तात्पर्य यह है। वह प्राथमिकताएँ अकेले कोई निर्धारित नहीं कर सकता। ठीक है अभी तो सब न न करते हुए अपनी जगह सब फिलहाल चुप रहेंगे लेकिन किसी न किसी समय देश की सब पार्टियों को मिल-बैठकर सोचना पड़ेगा। अगर आज की दुनिया में जो व्यापक तब्दीलियाँ अवश्यम्भावी हैं उन तब्दीलियों से देश को बिल्कुल ले कर जाने के लिए कुछ प्राथमिकताएँ तय करनी हैं। मुझे आश्चर्य नहीं होगा, कुछ महीने बाद इस बात को स्वीकार किया जाएगा। आज तो सब ने सोचा जो हम कह रहे है जिसमें हम लगे हुए हैं अगर सह विराम हो जाएगा तो हम कहेंगे क्या, ठीक है आज उन्होंने सब ने इन्कार कर दिया है लेकिन ऐसी स्थिति ऐसा निर्णय लेने के लिए है इसके बारे में तो किसी ने नहीं कहा, सवाल ही नहीं उठता, कोई प्रश्न ही नहीं है। ऐसे-ऐसे मुद्दों के लिए कह रहे हैं इसको इसमें मत शामिल करिए कुछलोग कहते हैं हड़ताल बगैरह मत शामिल करिए। हड़ताल की बात कहीं नहीं कही प्रधान मंत्री ने कहीं इसका भी संकेत कर दिया राम जन्म भूमि से मेरा मतलब नहीं था। अभी शायद कहीं उन्होने कॉमेंट किया है। सवाल यह है किसी समस्या को मद्देनजर रखकर कोई यह बात सुझाई गई। आज के वातावरण में इस प्रकार की प्राथमिकताएँ तय करने की आवश्यकता है। इसके राष्ट्रीय विकास के लिए। इसके लिए संकेत था। जब तक सब नहीं मानेंगे तब तक उस दिशा में कदम नहीं बढ़ेंगे। लेकिन मैं समझता हूँ किसी न किसी समय लोगों को सोचना पड़ेगा।

प्र. देश में दोहरी शिक्षा नीति तथा अव्यावहारिक शिक्षा नीति के संबंध में आपके क्या विचार है?

उ. शिक्षा नीति जैसे विषय पर बहुत तरह की प्रतिक्रियाएँ समय-समय पर होती रहती हैं और किसी भी नीति को किसी भी प्रकार से वर्णन करना, मैं समझता हूँ देश की परिस्थितियों में व्यावहारिक तो छोड़ दीजिए सम्भव नहीं है। यह कह देना इस नीति में यह है, वह है, जैसा आपने कहा दोहरी शिक्षा नीति, अव्यावहारिक दोनों शब्द प्रतिक्रिया के स्वरूप कहे जा सकते हैं। लेकिन पिछले 45 वर्षों में आजादी के बाद से जो भी शिक्षा के क्षेत्र में कदम उठे हैं, उनके संदर्भ में ये दोनों शब्द आलोचना के तो हो सकते हैं लेकिन सकारात्मक पहल करने के नहीं हो सकते है। बहुत सी खामियाँ होने के बावजूद जिसको आप दोहरापन कह सकते हैं, जितना चाहे कह सकते हैं इस देश की शिक्षा पद्धति ने आखिर बड़े-बड़े साइंटिस्टों, बड़े-बड़े आर्टिस्टों,बड़े-बड़े जर्नलिस्टों सभी को पैदा किया है, उस धारा में कहीं कोई कमी नहीं आई है। लेकिन यह अपनी जगह सही है। बहुत सी ऐसी बातें है जो शायद हमें करनी चाहिए वह हम नहीं कर पाए। यह दोहरी शिक्षा नीति का जो संबंध है यह इससे ज्यादा जुड़ते हैं। दो तरह के स्कूल और कॉलेज बना रखे हैं। एक जैसा बड़े लोगों के लिए हो, सम्पन्न लोगों के लिए हो और एक गरीब की शिक्षा धारा हो। इतने बड़े देश में साधनों को, परिस्थितियों

को देखते हुए किसी भी समय यह कहना कि इस समय के बाद यह बात खत्म हो जाएगी या कि हम समाप्त कर देंगे, मैं समझता हूँ ऐसा कहना दु:साहस होगा। कोशिश होनी चाहिए हम ज्यादा से ज्यादा इस प्रकार के अवसर साधन के द्वारा तैयार करें जिससे दोनों के बीच में जो फर्क है यह कम होता चला जाए। और इस दिशा में काफी कुछ कोशिशें हुई हैं और मैं समझता हूँ यह तो मैं नहीं कहूँगा 80 प्रतिशत, 90 प्रतिशत सफलता मिली है लेकिन हम कम से कम इस बीच का जो फर्क है उसको कम करने की दिशा में जरूर बढ़ रहे हैं। उदाहरण के लिए नवोदय विद्यालय की जो परिकल्पना है यह 1986 में राजीवजी ने जो शिक्षा नीति बनाई थी उसमें एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान इसका है और इसके पीछे एक मात्र उद्देश्य इस दोहरेपन को समाप्त तो नहीं बहुत कम करने का उद्देश्य था। हम देख रहे हैं अभी तो केवल हर जिले में एक स्कूल भी नहीं बन पाया है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक हो पाएगा लेकिन इतनी उसकी माँग बढ़ गई है और यह जो प्रयोग था उसको लोगों ने स्वीकार किया है। शायद बहुत बड़ा रोल प्ले करेगा दोहरेपन को समाप्त करने का। क्योंकि उसके शिक्षा स्तर को उतना ही रखा गया है जो किसी भी पब्लिक स्कूल में है। समाज के कमजोर वर्ग को प्रवेश करने में प्राथमिकता दी गई है। फीस करीब-करीब नही के बराबर है, है ही नहीं। अन्य जो साधन हैं शिक्षा के, जो कम्प्यूटर हैं -- जितने भी आधुनिक हैं उन सब का समावेश है उसमें। जैसी प्रतिक्रियाएँ मिल रही हैं मेरे ख्याल से हम लोग यह भी सोच रहे है, इसी मॉडल पर अगर गैर सरकारी क्षेत्र में भी प्रयोग शुरू हो जाए हमारे इस मॉडल को बना कर रखे और इसके स्वरूप में कोई तबदीली न हो तो व्यावहारिक थोड़ी बहुत हो सकती है, इसका फैलाव बहुत ज्यादा हो जाएगा। और क़ाफी लोग इन्टरेस्टेड है।

प्र. एक बात यह देखी जा रही है, जैसा आपने नवोदय विद्यालय की बात कही है, भाजपा राज्यों में वे अपनी एक अलग शिक्षा पद्धति चला रहे हैं?

उ. उन लोगों का तो राजनीतिक उद्देश्य है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान अर्जित होना जरूरी है; ऐसा ज्ञान जो व्यक्ति को अपने विवेक को जागृत करने में सहायक हो, उस विवेक के आधार पर आप कोई फैसला लें। आप किसी एक की विचारधारा स्वीकार करें, दूसरे की न करें यह तो विवेक के इस्तेमाल का परिणाम होना चाहिए। लेकिन अगर यह कहते हैं जैसे घुटी में पिलाना ही शुरू कर दें तो वह गलत बात है।

प्र. दोषपूर्ण डाक्टरी व इंजीनियरी शिक्षा पर आपकी सरकार ने क्या कोई नीति निर्धारण करने की बात सोची है? कॉलेजो में केपिटेशन राशि लेने के खिलाफ क्या कोई कानून बनाया जा रहा है इसे रोकने के उपायों पर क्योंकि साउथ में और दूसरी जगह पर महाराष्ट्र में कर्नाटक में है?

उ. है, उस बुराई को समाप्त करने की कोशिश हुई है लेकिन हुई नहीं है। वह वाकया बन चुका है। अब जजमेंट भी हाई कोर्ट के और सुप्रीम कोर्ट के आए है। इसमें उम्मीद की जानी चाहिए।

प्र. भारत में गिरते हुए खेल स्तर के लिए आप किसे दोषी मानते हैं?

उ. इसमें हम सब दोषी हैं। मैं किसी की तरफ उँगली उठाना इस मामले में न केवल अनुचित मानता हूँ लेकिन शायद सब परिस्थितियों को सुधारने की दिशा में जो पड़ने से इन्कार करना हो तो आप उँगली उठाना शुरू कर दे वरना इसमें सब दोषी हैं। कुछ इस तरह का हमारा मानस बन गया है। अगर हम अपने-अपने परिवार की बात सोचें तो, अगर हमारे परिवार से, एक समय था जब हम लोग स्कूल में पढ़ते थे, तो लोग यह पूछते थे कौन सा खेल खेल रहे हो? आज उन परिवारो में इस बात की चर्चा नहीं होती है बल्कि थोड़ा बहुत तिरस्कार होता है कि तुम खेल कूद में लगे हुए हो। इस सब का असर धीरे-धीरे पड़ता है। आज हम उसी

स्थिति में आ गए हैं जहाँ खेल कूद के मूल्य का ही हमारे सामने कोई मतलब नहीं है। एक तो इसको बदलना पड़ेगा और इसमें कोई एक व्यक्ति नहीं, सारे समाज के अंदर एक बात आनी चाहिए। फिर जो साधन उपलब्ध कराए जाते हैं उसमें भी क्योंकि फैलाव इतना हो गया है जहाँ पहले एक हाई स्कूल में फील्ड होती थी खेलने के लिए शायद अब बची ही नहीं है, इसके चारों तरफ भवन ही भवन बन गए हैं क्योंकि उसमें छात्रों की संख्या बढ़ गई है, वह कहाँ जाएँ। जहाँ बची भी हैं वहाँ जो साधन मिलने चाहिए वह है नहीं। दूसरे जो हमारे भारतीय खेल हैं इनकी तरफ से कुछ लोगों का ध्यान विदेशी खेलों की उत्तर चला गया है या कहें उनके बारे में जो महत्व मिलता था वह महत्व कम हो गया है और कुछ ऐसे खेलों की तरफ ऐसे लोगों का ध्यान, यह किसी के बनाने और बिगाड़ने से होता नहीं है, इसका अपना एक मूमेन्टम होता है। आज सब क्रिकेट को देखने के लिए आतुर रहते है, इसी खेल को खेलने के लिए भी आतुर रहेंगे।

प्र. वह जबर्दस्त चल रहा है।

उ. खेल कूद के क्षेत्र में एक तो बहुत शैशवकाल में प्रतिभा की खोज जरूरी है। जैसे लिम्बा राम को देखें तो थोड़े से मार्क्स से उसका गोल्ड मैडल रह गया। यह इसी प्रतिभा की खोज की नीति का परिणाम है। इसको बहुत व्यापक बनाने की जरूरत है। फिर जिस को कहते हैं - 'केच यंग,' दूसरे देशों में ऐसा ही करते हैं। जिसको एक दफा छाँट लिया कि इसमें प्रतिभा है फिर उसकी पूरी ट्रेनिंग, उसका पूरा खर्चा, उसको एकाग्र मन से इस तरफ ले जाने की कोशिश होती है। यहाँ वह अभी नहीं है। फिर मूल्याँकन समाज की ओर से होता है। उसमें भी थोड़ी कमी है। कितने ही खेल के अच्छे लोग हैं जो गोल्ड मैडल लेने के बाद भी आज उनकी देखरेख नहीं हो रही है। वह सुबह से शाम तक भटकते हैं। जो उनके रोज के झमेले हैं उनको झेलते हैं। आखिर कहीं न कहीं इससे थोड़ा सा अलग रखने की जरूरत है। उनके लिए कुछ न कुछ सेक्योरिटी का प्रबन्ध होना चाहिए। इकॉनॉमिक है और तरह की चीजें हैं। यह एक-दो दिन में सब चीजें होने वाली नहीं है। लेकिन अगर आज आहत है कि हम खेल कूद के क्षेत्र में इतना नीचे पहुँच गए हैं इस आहत की भावना थोड़ी फैलेगी और उन सब साधनों को जुटाने की हम कोशिश करेंगे तो हो सकता है अगले 5-7 वर्षों में, 9 वर्षों में भारत अपनी दूसरी छवि बना सकेगा।

प्र. आरक्षण के संबंध में केन्द्रीय सरकार अपनी दुल-मुल नीति की वजह से अपनी स्थिति को स्पष्ट नहीं कर पा रही है। आपके विचार से इस समस्या का समाधान क्या होगा?

उ. मैं समझता हूँ आरक्षण की नीति के बारे में कोई ढुलमुल स्थिति नहीं है और इस मामले में गत वर्ष जो काँग्रेस की तरफ से एक नए विकल्प के रूप में जो बात सामने आई है उस पर अमल तो इसलिए नहीं हो पा रहा है कि वह अभी सुप्रीम कोर्ट के सामने विचाराधीन है। जैसे ही वहाँ से निकाल हो जाएगा उसमें आगे बढ़ने के लिए कोई रुकावट मानसिक रूप से हमारी पार्टी में नहीं है। यह बात अपनी जगह है कि यह सब होने के बावजूद भी इस विषय पर जो एक बहुत व्यापक रूप से चिंता, मतभेद सब चीजें हैं उनको एक स्तर पर लाने के लिए प्रयास सामूहिक होना जरूरी है। अगर यह हमारे बीच में विवाद का विषय बन कर रहेगा तो इससे सामाजिक तनाव और बढ़ेगा। वहाँ पर यह कोशिश की बात होनी चाहिए। जैसे ही यह कानून के क्षेत्र से भी स्वीकार होकर निकल आए उसको बिना तनाव के कैसे हम व्यावहारिक रूप से लागू करें इसमें फिर लोगों को साथ में बैठ कर बात करनी होगी। क्योंकि रिजर्वेशन बिल्कुल न हो उसका कोई महत्व ही नही है, उसको समाप्त कर दिया जाए, मैं नहीं समझता देश इस बात को स्वीकार करने की स्थिति में है।

प्र. पंजाब और कश्मीर की समस्या के हल का कोई मसौदा आपकी पार्टी ने तैयार किया? समस्या के लिए आप किसे दोषी मानते है?

उ. दोनों समस्याएँ ऐसी नहीं है कि बहुत सतही तौर पर उनसे निपटा जा सके। कई मामलों में अलग-अलग पहल हुई है, कुछ की प्रतिक्रिया अच्छी हुई है कुछ की नहीं हुई है। लेकिन धीरे-धीरे हम ऐसा समझते हैं कि उस दिशा की ओर बढ़ रहे हैं जिससे ये दोनों सवाल राष्ट्रीय स्तर के सवाल नहीं रहे। जो ऐसे मुद्दे फँसे हैं जिनसे हमारी राष्ट्रीय एकता को खतरा है वह अलग से हों तो यह एक प्रदेश लैवल की बातें प्रदेशों में हैं, वहाँ तो रहेंगी। एक तो प्रजातांत्रिक पद्धति को बहाल करना, जैसा कि प्रधान मंत्री ने कहा है वह नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान का कोई भी कोना प्रजातांत्रिक रूपरेखा से बाहर रहे। पंजाब में चुनाव हुए हैं, काफी लोगों ने उसका समर्थन किया, काफी लोगों ने बायकाट भी किया। लेकिन लोगों के मन में एक बात चली कि यह चुनी हुई सरकार है। वह सरकार कैसे चलेगी, नहीं चलेगी उस पर निर्भर करता है। उसका भविष्य क्या रहेगा? यही प्रयास कश्मीर में भी है। वहाँ अभी पूरी स्थितियाँ ऐसी नहीं बनी हैं कि वहाँ कोई तिथि निर्धारित की जा सके चुनाव की। लेकिन लोगों के मन में इस बात को चला दें कि रास्ता वही है। यदि आप फैसला करना चाहते हैं तो हिन्दुस्तान में बैलेट से ही होगा, बुलेट से नहीं होगा।

प्र. वैसे कोई बातचीत हुई है? कश्मीर विस्थापितों के साथ? उनका झुकाव वैसे सैयद मीर कासिम की तरफ काफी है।

उ. यह तो अलग बात है। नेताओं पर कुछ कहना भी ठीक नहीं है। सभी लोग अच्छे हैं। वहाँ नेता कौन होगा इसका फैसला कश्मीर के लोग ही करेंगे। दिल्ली में बैठकर अब होने का नहीं है, करना भी नहीं चाहिए।

प्र. भारत की आर्थिक नीति को सुदृढ़ बनाने के लिए आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

उ. शुरू में ही मैंने बहुत सी बातें कह दीं। सुदृढ़ बनाने का तो क्या है, यह है कि जो हमारी आर्थिक गतिविधियों की व्यापकता है कितने स्तरों पर किस प्रकार से वह इस देश में चलती है उनको समझने में इतने दिनों में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। लेकिन कभी-कभी होता क्या है, कोई एक पहलू ज्यादा अटेंशन पा जाता है, तो दूसरा कम। इसलिए जो ग्रामीण अंचलों में आर्थिक गतिविधियाँ हैं, खेती से सम्बन्धित है, खेती से जुड़े हुए उद्योगों से सम्बन्धित है, इन पर बहुत ज्यादा फोकस और साधन दोनों के देने की जरूरत है। जैसा कि बॉयोकेमिस्ट्री लेटेस्ट साइंटिफिक हुआ है, इससे रेवोलूशन हो सकता है हमारे देश में। क्योंकि अभी कई दशकों तक इस देश की आर्थिक नींव या ढाँचा खेती के ऊपर ही आधारित रहेगा। वहाँ जो कुछ होगा उसका ही असर देश के आर्थिक स्वरूप पर होगा। अगर वहाँ साइंस और टेक्नॉलॉजी के सहारे हमने मेजर ब्रेक कर लिया, प्रोडक्शन का, जो कि देख रहे हैं संभव है, इसमें सबसे बड़ी खुशी की बात है अपने देश के साइंटिस्ट दुनिया के किसी भी देश के साइंटिस्ट से कम नहीं हैं, कई मामलों में तो वह आगे हैं। उनको पूरा मौका मिलना चाहिए। जहाँ एक एकड़ में अगर हम 25 क्विंटल पैदा करते हैं आज और अगर वह 25 से बढ़कर 75 हो जाए किसी भी अनाज का आप समझ सकते हैं इसके क्या परिणाम होंगे, खासकर तिलहन का है, आज हमें बाहर से बहुत कुछ लाना पड़ता है। मेरा ऐसा ख्याल है अगले 5 वर्षों में एक कायाकल्प होने की पूरी संभावना है। हम कई साइंटिस्ट से मिलते रहते हैं, बुलाते भी हैं, लोग आते भी हैं। मेरे मन में तो आशा है वह आशा निराशा में परिणत न हो जाए इसके लिए भी प्रार्थना के अलावा बहुत सी चीजें करनी पड़ती हैं, वह भी होती रहेंगी।

प्र. बैंकों की साख गिरी है हर्षद मेहता कॉड के कारण। इस बारे में आप कुछ कहना चाहेंगे?

उ. इसमें तो निर्ममता से खोजबीन करें। जो भी दोषी हो उनके क्षमा नहीं करना चाहिए। वह एक पहलू है। उससे क्या होगा बैंकों का नहीं, इस देश में ईमानदारी की साख को भी मजबूत करने की जरूरत है। आज बैंकों की साख के बारे मे हम बात करते हैं तो हमें दूसरी ओर भी देखना है। जो आम आदमी है उसका विश्वास बैंक से ही नहीं पूरी व्यवस्था से उठता जा रहा है। एक तो यह पहलू है। फिर जैसा प्रजातांत्रिक उसमें होना चाहिए, जो कुछ भी आगे हम करना चाहते हैं, सामूहिक विवेक से, उत्पन्न होना चाहिए। बजाय कोई एक्सपर्ट बैठकर नरसिंह्मन कमेटी आ जाए, अपनी जगह उनका महत्व है, उन्होंने सुझाव दिया है उन पर अमल हो लेकिन अब इतना होने के बाद जो चीज सामने आयी हो उसे देखें। यह हमारा एक राष्ट्रीय निर्णय है। मैं समझता हूँ उसी आधार पर आगे की कार्रवाई करने की कोशिश होगी। जैसे जेपीसी बनाई गई। इनका एक काम तो यह है जाँच पड़ताल करके दोषी लोगों को सामने लाए, जो खामियाँ हैं उनको बताए लेकिन उससे बड़ा कहीं बड़ा दायित्व सौंपा गया है उनकी ओर भी इंगित करे ताकि हम आगे कभी ऐसी परिस्थितियों में फिर से न पड़ें, व्यवस्था को इस प्रकार से मजबूत करें। मैं समझता हूँ यह सुझाव सामने आएगा, राष्ट्रीय डिबेट होगी उससे जो बात निकलेगी तो वह साख फिर सुधर सकती है।

जीवन के अविस्मरणीय पल

27 सितम्बर 1992 को नई दुनिया, इन्दौर के श्री सुरेश बाफना के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

प्र. सबसे पहले हमारा सवाल यह है कि इस उम्र के पड़ाव पर बचपन आपको किस ढंग से प्रभावित करता है? बचपन की घटनाएँ खास तौर से जिनसे ऐसा लगता है एक तारतम्य अपने व्यक्तित्व को बचपन की किन घटनाओं के साथ आप जोड़ते हैं जो कि आपकी स्मृति में अभी भी बनी हुई है, कभी मिटती नहीं है?

उ. 61 वर्ष में बचपन से जुड़ना उतना आसान नहीं है। यह बात भी है कि बहुत सी बातें विस्मृत भी हो जाती हैं लेकिन यह बात सही है कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो समय बीतने पर भी उनकी ताजगी नहीं जाती तात्कालिक भले न हो लेकिन संदर्भ बने रहते हैं। यह आपका मतलब है न? मेरा ख्याल है।

प्र. जो कभी आपको भूलती नहीं है। जीवन के अनेक पड़ाव पर वह घटनाएँ एकदम फ्लैश बेक की तरह आपके दिमाग में बनती हैं?

उ. यह बहुत छोटे समय की बात है। मुझे स्मरण नहीं है लेकिन दो-एक चीजें हैं। एक तो इलाहाबाद में जहाँ हमारी शिक्षा प्रारम्भ हुई। जब मैं साढ़े 6-7 साल का था, सेंट मैरी कॉन्वेन्ट में पढ़ता था। वहाँ एक पूर्णतः अँग्रेजी कॉन्वेन्ट स्कूल था। उस समय तो अँग्रेजी साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर, दूसरी ही दुनिया थी जिसकी आज कोई तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। वहाँ हम लोग बार्डर की हैसियत से थे। यह नहीं कि पढ़ने जाएँ और लौट आएँ। लेकिन पिताजी ने वहाँ से अनुमति लेकर प्रबन्ध किया था ताकि हम लोग अपनी जमीन से जुड़े रहें, कटें नहीं अपने भारतीय अस्तित्व से, एक विशेष अनुमति उन्होंने ली थी। हमारे गार्डियन कहिए, ट्यूटर कहिये, पं. ब्रजवासी लाल पाँडेय को विशेष रूप से इलाहाबाद में रखा था ताकि वह रोज हम लोगों को एक घंटा आकर एक तो हिन्दी का ज्ञान कराएँ और बाकी अपनी परम्पराएँ, सब धार्मिक ग्रंथों - रामायण, महाभारत, गीता का, वह घंटा करीब जो बीतता था वह हमारा जो उस वक्त का परिवेश था वह बिल्कुल

एक अनूठा एक घंटा होता था जिसका वहाँ के स्थानीय वातावरण से उससे कोई सामंजस्य नहीं था। लेकिन आज मैं सोचता हूँ अगर ऐसा न होता तो यह सम्भव था कि मेरा दृष्टिकोण एक आँग्ल दृष्टिकोण हो जाता और जो हम लोगों को अपने भारतीय को रट्स कहते हैं उनसे शायद हम कुछ कट जाते। एक तो वह अनुभव है जो सदैव याद रहते हैं। इसी बीच में एक घटना घटित हुई जो और भी ज्यादा याद रहती है। उसके संदर्भ हमें हर वक्त याद रहता है। सन् 1937 में शायद दिसम्बर का महीना होगा, एक तारीख जो रैफर की जा सकती है, उनकी रिकार्डेड डेट है। कमला नेहरू अस्पताल का शिलान्यास करने गाँधीजी इलाहाबाद में आए। हमें उस वक्त गांधीजी, नेहरूजी इन सब लोगों के बारे में सोचने का मौका नहीं मिलता था, एक तो वहाँ ऐसे स्कूल में थे और उम्र के लिहाज से भी, लेकिन यह जो हमारे पंडित ब्रजवासी लाल पाँडेय थे यह बहुत स्टाँच नेशनलिस्ट थे और जो स्वतंत्रता संग्राम था उससे वह हर दम अवगत रहते थे और हम लोगों को भी अवगत कराते रहते थे लेकिन उसकी व्याख्या और उसका दायरा है वह दिमाग में कभी फिक्स नहीं हुआ। तो उन्होंने पूछा, संयोग से गाँधीजी और पंडित नेहरू दोनों यहाँ आ रहे हैं तो क्या वहाँ आप लोग चलना चाहेंगे? हम तीन भाई हैं और तीनों भाई वहाँ थे। केवल इसलिए कि हमें स्कूल से दो-ढाई घंटे बाहर रहना पड़ेगा, एक आकर्षण था और क्योंकि खाना वहाँ करीब-करीब बहुत पसन्द नहीं रहता था। यह हुआ कि उस दो-ढाई घंटे को हम किसी रेस्टराँ में जाकर समोसा वगैरह खाएँगे तो हमने कहा हम लोग जरूर चलेंगे। उन्होंने कहा हम ले तो चलेंगे लेकिन स्कूल से हम आपकी छुट्टी वहाँ के नाम से नहीं लेंगे। थोड़ा ताज्जुब हुआ जब इतने बड़े-बड़े लोग हैं गाँधीजी के बारे में इतना कहते रहते हैं, जवाहरलालजी के बारे में इतना कहते रहते हैं, तो उनके कार्यक्रम में ले चलने के लिए उनको गलत जानकारी देने की क्या जरूरत थी। एकदम से यह बात ठनकी। यदि कहा जाए तो देश की आजादी का संघर्ष हो रहा है उस संघर्ष से हम लोग कितनी दूर कटे हैं यह एक अहसास हुआ। लेकिन कौतूहल की वजह से हम उस समय तो कुछ कह न सके, बाद में जब मैंने सोचा, यह पहला मौका था जब हमें उस उम्र में इस बात का अहसास हुआ कि यह ऐसी बात है जो बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है। लेकिन ऐसी बात है जो उस संदर्भ में वहाँ के लोगों को बताने लायक नहीं है। खैर वह लेकर गए हम लोगों को। क्योंकि छोटे-छोटे बच्चे थे तो हरदम आगे बैठने का स्थान था। बीच में से रास्ता खुला था। हम लोग सबसे आगे डायस के नीचे और बहुत से बच्चों के साथ बैठे थे। आगे की पंक्ति में गाँधीजी आए और तीन सीढ़ियाँ थी मंच पर चढ़ने के लिए। पहली सीढ़ी चढ़ गए, दूसरी सीढ़ी चढ़ गए ठीक उनके पीछे पंडित जी जा रहे थे। जैसे ही तीसरी सीढ़ी चढ़ने लगे तो उनकी धोती का पिछला हिस्सा जो खुसा रहता है, वह निकल गया। इसके पहले कि वह नीचे गिरें लपक कर पंडितजी ने उसको संभाल कर फिर से ठीक कर दिया। एक तो इतने बड़े आदमी की यह पोशाक, वह हम लोगों के लिए थोड़ा ताज्जुब सा लग रहा था और फिर यह अचानक हो गया, थोड़ी सी वहाँ हँसी भी हुई, बच्चे तो बच्चे ही हैं फिर सब ने बड़े सीधे तरीके से हम लोगों को देखा, फिर सब चुप हो गए। लेकिन उसमें दो चीजें हमारे दिमाग पर हुई। एक तो यह गाँधीजी जो आगे-आगे चल रहे हैं यही सबसे बड़े नेता होंगे, नेता शब्द आज मैं इस्तेमाल कर रहा हूँ, यही सबसे अग्रणी होंगे और दूसरे यह कि पंडितजी एकदम उनके पीछे हैं तो यह नम्बर दो पर होंगे। वह जो घटना घटित हुई, पंडितजी एकदम तपाक से गए, पंडित जवाहर लाल नेहरू उनकी अगुवाई में चल रहे हैं, कोई चीज बिगड़ती है, धोती तक बिगड़ती है तो वह उसको ठीक करते और फिर एक मेंटल पिक्चर थी। देट वाज माई फर्स्ट साइट ऑफ बोथ द लीडर्स। किसी न किसी रूप में वह घटना भी हरदम

26927
26927
26927
CAREER COLLEGE BHOPAL
Acc. No.....
Book No.....
Date.....

दिमाग में रही। जब फंक्शन खत्म हो गया, चलने लगे उसी क्रम में नीचे आए तो हम लोग किनारे-किनारे खड़े हो गए तो एक सेकिण्ड के लिए गाँधीजी वहाँ रुके। किसी बच्चे का सिर सहला दिया, किसी के गाल पर थप्पड़ मार दिया और जब मेरे सामने आए तो हम तो अपनी स्कूल ड्रैस में थे, कोट, पैंट और शर्ट-टाई पहने थे, तो सामने खड़े होकर उन्होंने हमारी टाई पकड़ ली और बोले एक शब्द नहीं। केवल टाई पकड़ ली ऐसे। मै कुछ कह भी नहीं सका। वह इतनी पकड़ कर आगे निकल गए। मुझे ऐसा लगा कि पूछना चाहते थे यह क्या है। खैर कोई बात नहीं हुई। जब मैं स्कूल से बाहर निकला दो साल बाद, दो साल तक वह बात हमारे दिमाग में रही। मैं यह समझ गया यह बात गाँधीजी को पसन्द नहीं आई मेरा टाई पहनना। उसके बाद से आज तक मैंने टाई पहनी नहीं। मैं भूल ही गया पहनना। कई ऐसे मौके आए जब लोगों ने कहा कि आप को इस ड्रैस में टाई पहननी चाहिए तो मैंने कहा मुझे आदत नहीं। ये चीजें हैं जब कभी-कभी जाने-अनजाने अपना प्रभाव छोड़ जाती हैं। साढ़े 6-7 वर्ष की उम्र कोई उम्र ही नहीं। यही है उस समय की बात।

प्र. परिवार में कोई ऐसी घटना जो बचपन में आपको...

उ. परिवार के अंदर तो कोई ऐसी विशेष घटना नहीं हुई। दूसरा यह था कि हमारे पिताजी वहाँ रीवा के प्रमुख जागीरदार थे। स्वाभाविक है जागीरदारी प्रथा से बहुत सारी बातें जुड़ी रहती हैं। वह परिवार के वातावरण में रहते हुए थी। उस समय जमींदारी और जागीरदारी काफी प्रभुत्व के साथ विद्यमान थी। एक घटना हुई थी। रात के करीब 12-1 बजे हम लोग छत पर सो रहे थे, गर्मियों के दिन थे। छुट्टियों में गर्मियों के दिन में आते थे वहाँ, इलाहाबाद से। तो मुझे जोर-शोर से किसी के रोने-चिल्लाने की आवाज आई। नींद खुल गई। जाकर मैंने छत से देखा नीचे कि कोई एक व्यक्ति बिना कपड़े धोती लपेटे खड़ा था, कुछ लोग उसको मार रहे थे। उसकी बगल में उसकी स्त्री रही होगी, मैंने पूछा नहीं था, एक छोटा सा बच्चा खड़ा था, वह भी रो रहा था। रात को आधी रात के आसपास एकदम नींद से उठकर वह दृश्य बड़ा बेतुका सा लगा कि यह क्या हो रहा है और मैं बहुत इमोशनली अपसेट हो गया। सबेरे मैंने पूछा कि यह रात को क्या हो रहा था। लोगों ने टरकाना चाहा कि ऐसा है, वैसा है। फिर भी मैं जानना चाहता हूँ तो बताया कि इस आदमी ने कुछ बदतमीजी की कारिंदे वगैरह से, काम करने वाले लोगों से, उसको इसी की सजा दी जा रही थी। ठीक है वह एक्सप्लेनेशन बड़ा सिम्पल था। लेकिन वह दृश्य हमें आज तक नहीं भूलता। मेरे मन पर उसका यह असर हुआ, मन पर छवि पड़ी कि ऐसा क्यों है, कि कुछ लोगों को अधिकार है कि कुछ लोगों को इस प्रकार से प्रताड़ित करें। अपने सेंटीमेंट्स, अपनी भावनाओं में उन लोगों के साथ समझने लगा। जो कि प्रताड़ित किए जा रहे थे। धीरे-धीरे इस तरह की भावनाएँ अपने आप मजबूत होती चली गईं, बाद में कुछ नए संदर्भ मुझे देखने पड़े, कुछ करने पड़े, हरदम मुझे वह दृश्य कौंध जाता है दिमाग में। ऐसी दो-एक चीजें हुईं, बाकी कुछ नहीं। दूसरा यह था कि रियासतों में काँग्रेस का आंदोलन बहुत होता नहीं था। कांग्रेस का आंदोलन तो हरदम रियासतों के बाहर होते थे। लेकिन स्टेट्स पीपल कान्फ्रेंस और स्टेट्स में होती थी। रीवा में विशेष अनुमति दी गई थी काँग्रेस आंदोलन को भी चलाने के लिए काँग्रेस कमेटी को। गोविन्द नारायण सिंहजी के पिताजी कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह और अपने सरदार नवजात प्रताप सिंह उस वक्त के जो बड़े-बड़े लोग थे। ये सब काँग्रेस के प्रमुख थे और हमारे पिता जी की सहानुभूति पूरी उन लोगों के साथ थी। वह मदद भी उन लोगों की किया करते थे, आंदोलन में मदद, मीटिंग के लिए यात्रा के लिए, फलाना-फलाना के लिए। खास तौर से कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह और हमारे पिताजी बहुत निकट थे। मैंने यह देखा जब भी दोनों

रीवा में है तो निश्चित रूप से सबेरे की चाय साथ में होती थी। कैप्टन साहब की जो वेशभूषा थी वह थोड़ी अपनी तरह की थी। वह तो जाँघिया पहनते थे। कभी-कभी धोती और जांधिया और जांघिया भी घुटने से नीचे तक और उसके ऊपर कुर्ता और जाकेट। वह दृश्य उनकी ओर से अटपटा सा था लेकिन बच्चों के नाते हम लोग उससे आकर्षित होते थे। हम उनसे कहानियाँ पूछते। वह भी दो-चार-दस मिनट बिताते। उसी में धीरे-धीरे कप्तान साहब ने हमारे ऊपर थोड़ी सी कृपा करनी शुरू की, वैसे ही। उन्होंने बताया कि इतने दिन तो हम अंडरग्राउंड थे, अब निकल कर आए हैं। तो हमने पूछा आप क्यों छिपते हैं? उन्होंने कहा पुलिस पकड़ लेगी मुझे। मैंने कहा आपने चोरी की है क्या? चोरी नहीं की है यह अँग्रेज सरकार के खिलाफ हम लोग लड़ाई लड़ रहे है। हमने कहा अँग्रेज सरकार तो नहीं यहाँ तो महाराज साहब हैं। तो उन्होंने कहा यहाँ है, महाराज साब अलग है लेकिन इनकी हिम्मत नहीं है वह उनको कुछ कर सकें। यह सब चीजें दिमाग पर असर करती। जब हम इलाहाबाद से यहाँ (रीवा) आते तो कोशिश यह किया करते कि पिताजी और वह साथ हों। एक दिन जब वे इलाहाबाद आए तो उन्होंने कहा सुनते हैं तुम लोग चर्च में भी जाते हो। अपने स्कूल में। यह शायद 39 की बात है मैं 9 साल का था। हमने कहा हम लोग जाते हैं चर्च। क्या करते हो वहाँ? हम लोग प्रार्थना करते हैं। हम को भी लेकर जा सकते हो चर्च में? हमने कहा चलिए हमारे घर के पास ही है, मुश्किल से 200 गज पर, इलाहाबाद का बहुत बड़ा चर्च है, हाईकोर्ट के पास। उस दिन इतवार को हम लोग घर आते थे। चलिए कप्तान साहब हम लोग आपको चर्च ले चलते हैं। वह कहने लगे और क्या करना पड़ेगा? आप देखते रहिए जो कुछ लोग करेंगे वही आप भी करिए। गए हम लोग। पैदल ही। शाम की जो प्रार्थना होती है वहाँ बैंच पर जाकर बैठ गए। पादरी आए, प्रार्थना शुरू हुई, सब के सामने किताब थी। उन्होंने कहा इसमें हम क्या करें हम से तो गाया जाएगा नहीं। हमने कहा गाइए मत, आप सब के साथ खड़े हो जाइए और देखते रहिए। कोई जरूरी थोड़े ही है आप गाएँ। इतने में, बीच में कोई चर्च का रहा होगा, वह आया। नियम है कि कोई भी चर्च में जाएगा तो सिर पर टोपी लगाकर भी जाएगा तो प्रार्थना के वक्त टोपी उतारकर रख ले। कप्तान साहब गाँधी टोपी लगाए हुए थे। उस वक्त उन्होंने आकर कहा प्लीज टेक ऑफ यूवर कैप। समझ तो गए, अँग्रेजी जानते थे, अनसुना कर दिया। घूम फिर कर फिर एक-दो मिनट बाद आए। जेन्टेलमैन प्लीज टेक आफ यूवर कैप। दिस इज चर्च, हाउस ऑफ गॉड, यू कांट कीप ऑन यूवर कैप। खुसफुस हो गई इतने में। सब लोग पीछे देखने लगे। हम लोगों को थोड़ा इम्ब्रैसमेंट हुआ तो कप्तान साहब ने कहा क्या यह अँग्रेज हम को गाँधी टोपी उतारने के लिए कह रहे हैं? मैंने कहा कप्तान साहब इसमें टोपी कैसी इसका मतलब नहीं है। इनका नियम है टोपी मन्दिर के अंदर, चर्च के अंदर नहीं पहननी है। देखो, गाँधी टोपी तो हमारे सिर से नहीं उतरेगी? हमने कहा इस टोपी में ऐसा क्या है जो नहीं उतरेगी। नहीं, वह तो हम बाहर बताएँगे। वह उठकर चले गए वहाँ से। बाद में हम लोगों ने पूछा क्या फर्क पड़ता था आप इसे उठाकर रख लेते और जब प्रार्थना समाप्त हो जाती तो फिर से पहन लेते। कहा कि यह टोपी उतारने की कोशिश तो ब्रिटेन के जो सम्राट हैं वह कर रहे हैं। यह टोपी चर्च के अंदर कैसे उतर सकती थी। फिर उसमें से बात निकली। इस तरह से दिमाग पर असर होता है और जो एक राष्ट्रीय भावना और धारणा बलवती होती है उसका एक उदाहरण है। इस प्रकार से आदमी बनता है और बहुत सी चीजें आगे के लिए निर्मित होती हैं।

प्र. सार्वजनिक जीवन में जो आपका प्रवेश हुआ उसकी प्रक्रिया क्या रही?

उ. उसी क्षेत्र से 52 में हमारे पिताजी चुनाव हार गए। पहला जो चुनाव हुआ उस चुनाव में काँग्रेस के टिकट

से वह खड़े थे। टिकट उनको दिया गया। बाद में कुछ लोगों ने शिकायत की क्योंकि तब तक मुकदमा शुरू हो गया था। लोगों ने शिकायत की, टिकट उनका सार्वजनिक रूप से वापस लेने की घोषणा की गई। वह भी पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा की गई। टूर पर गए थे। जहाँ एक ओर एक पारिवारिक अपमान की स्थिति बनी वहीं यह बात भी सामने आई, जरूर कोई न कोई कारण होगा जिसकी वजह से यह हुआ। तब हम 22 वर्ष के थे, समझते थे यह सब। दूसरे समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार चुनाव हारे हुए थे। मैं भी समाजवादी पार्टी का सदस्य था। 52 के चुनाव में टिकट वापस लेने के बावजूद मैं चुनाव प्रचार में था ही। मुझे अनुभव तो हुआ, चुनाव क्या होता है। 52 के चुनाव में और आज के चुनाव में कोई तुलना नही है? न व्यय में, न प्रचार-प्रसार में। एक तो वह बात थी।

दूसरे जब मैंने यह फैसला किया मुझे सार्वजनिक जीवन में जाना है तो यह स्पष्ट था कि उसका एक माध्यम तो चुनाव ही है। 56 में, 57 में दूसरा चुनाव हुआ। 56 में मैंने उस क्षेत्र का दौरा किया। उस समय मोटर वोटर तो जाती नहीं थी, पहाड़ी इलाके थे, अधिकांश घोड़ों पर, हाथी पर और पैदल चलते थे। तब निकट से मुझे 52 के चुनाव के बाद गाँवों का अनुभव हुआ। वरना स्कूल, कॉलेज, घर, खेल कूद वही सब वातावरण रहता था। जो कुछ मैंने गाँव में देखा, खास तौर से जाड़े के दिनों में, नवम्बर-दिसम्बर का महीना होगा, फरवरी में चुनाव हुए। मैंने देखा तो बहुत बड़ा असर होता है गाँवों में जाड़े में, जब सब लोग काम से निपट कर, निवृत्त होकर आग के सामने बैठते हैं। पूरा गाँव इकट्ठा होता है। न वहाँ जात का सवाल है, न धर्म का सवाल है, गाँव में जो लोग हैं वह वहाँ इकट्ठे होते हैं, बच्चे थोड़ी देर तक रहते हैं फिर सोने चले जाते हैं। जो सयाने हैं वे बारह बजे तक रहते हैं, उसी में गपशप, हुक्का चलेगा, सारी दुनिया की बातें वहाँ होती है। अपने इस दौरे में मैं जहाँ भी रात में गाँव में रुका, उसमें जरूर बैठा। बहुत सी ऐसी चीजें जो आम तौर से आपको मालूम नहीं हो सकती, चुनाव का किस आधार पर संबंध है, कौन किस के ऊपर हावी होता है, कौन किस को अच्छा और कौन किस को बुरा मानता है, ये सब चीजों का ज्ञान इन्हीं आग के चारों तरफ बैठकर मुझे दो महीने में हुआ। साथ ही साथ उनके बीच में बैठकर मुझे उनके साथ अपना संबंध भी जोड़ने का मौका मिला और दिसम्बर तक मैंने यह फैसला कर लिया मुझे इसी क्षेत्र से चुनाव लड़ना है। जब चुनाव की घोषणा हो गई कि 14 फरवरी को होंगे, टिकट बँटने लगे, कप्तान अवधेश प्रताप सिंह ने मुझ से कहा, तुम को इस दफा कॉंग्रेस से चुनाव लड़ना है। सयाने के मुँह पर कुछ कह नहीं सकता। मैंने कहा, हाँ, सोचूँगा। कप्तान साहब, आपकी आज्ञा का कैसे उल्लंघन होगा। उनको टरकाता रहा। लेकिन मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं चुनाव किसी पार्टी के टिकट पर नहीं लड़ूँगा। यह फैसला मैंने 52 में कर लिया था। जब मैं 22 वर्ष का था। केवल इसलिए कि जिस परिस्थिति में पिताजी की पराजय हुई थी मैं सोचता था इसमें किसी पार्टी के माध्यम से मैं आगे नहीं आना चाहता।

प्र. आपको इस अपमान का....

उ. अपमान तो जो था सो था ही। मुख्य यह था मुझे ऐसा लगा... सार्वजनिक रूप से आप इसको डिसअप्रूव करना चाहते थे?

प्र. एक्जेक्टली। डॉ. सुशीला नैय्यरजी अभी जीवित हैं, जैसे आजकल आब्जर्वर जाते हैं तो उन्हें कॉंग्रेस का आब्जर्वर बनाकर विंध्य प्रदेश के लिए भेजा गया, तब तक नए मध्य प्रदेश का गठन हो गया था, वह गई वहाँ। कप्तान साहब ने बताया होगा वरना वह मुझे क्या जानें। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि कॉंग्रेस चाहती

है, पार्टी चाहती है आप काँग्रेस टिकट से इस क्षेत्र से खड़े हों। जब उन्होंने सीधा सवाल पूछा, मैंने कहा, मैं माफी चाहता हूँ, मैं काँग्रेस के टिकट पर नहीं खड़ा होना चाहता। उन्होंने मुझ से पूछा क्यों? उनको मैंने साफ-साफ बताया और उनको मैंने लिख कर भी दिया।

प्र. आपने उनको क्या बताया?

उ. जो आपको बताया। मैं अब की दफा स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ना चाहता हूँ। मेरे विचार, मेरी भावनाएँ सब कुछ पंडितजी के साथ हैं, काँग्रेस के साथ हैं और मैं सिद्धांत रूप से काँग्रेस के पक्ष में हूँ लेकिन चुनाव में काँग्रेस के टिकट पर नहीं लड़ना चाहता। मैंने उनको संदर्भ भी बताया। मुझे ऐसा लगा वह बहुत संजीदा किस्म की महिला है। उन्होंने मुझ से व्यक्तिगत कहा, मैं आप के ऊपर दबाव नहीं डालना चाहती। ठीक है बात खत्म हो गई। कप्तान साहब ने कहा तुमने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर डाली इस वक्त तो लेम्प पोस्ट भी काँग्रेस खड़ा कर देगी तो वह भी चुनाव जीत जाएगा। तुम्हारे पिताजी और कुछ और कारणों से परिस्थिति बन गई, उनके लिए, तुम्हारे लिए इस निर्णय से यही परिस्थिति बनेगी तुम चुनाव हार जाओगे। मैंने कहा, ठीक है कप्तान साहब, हार जाएँगे तो हार जाएँगे। खैर, क्योंकि दो-ढाई महीने टूर पर था उसमें मैं करीब-करीब सब गाँवों से परिचित था और बाकी सब लोग तो महीने भर के प्रचार पर निर्भर करते हैं जब घोषणा हो जाती है। मैं कम से कम दो दफा पूरे क्षेत्र का दौरा कर चुका था। मैंने पाया कि मुनि प्रसाद शुक्ला को काँग्रेस का टिकट दिया गया। मुनि प्रसाद शुक्ला भी वहीं के रहने वाले थे, उसी क्षेत्र के और उनके घर से हम लोगों का बड़ा पुरोहित का रिश्ता था। खैर खड़े हुए, चुनाव हुआ, वह हार गए, उनकी जमानत जब्त हो गई। वह वास्तविक परिणाम हुआ। जब एक दफा अंदर आ गए, साल डेढ़ साल स्वतंत्र ग्रुप रहा विधान सभा में, करीब 20 लोग चुने गए थे इंडिपेंडेंट। हम लोगों ने इंडिपेन्डेन्ट ग्रुप बनाया था, उसका मैं लीडर रहा। बाकी पंडितजी से मिलने का अवसर मिला तो फिर दूसरी स्थिति बन गई। काटजू साहब चीफ मिनिस्टर थे। वह भी हम लोगों के परिवार के बहुत निकट थे। हमारे वकील ही थे लेकिन पारिवारिक रूप से बहुत निकट थे हम लोग। काँग्रेस में आ गए।

प्र. नेहरूजी से जो आपकी पहली मुलाकात हुई उसके बारे में कुछ बताएँगे, इस मुलाकात में आपको क्या लगा?

उ. पहली मुलाकात तो नहीं, पहला दर्शन मैंने आपको बताया जो हुआ था। मुलाकात मेरी एक दफा सन् 1953 में हुई जब वह दौरे पर आए थे रीवा। मैं प्रेसिडेंट था वहाँ कॉलेज का। मुझे उनको माल्यार्पण करने को कहा गया था। मंच पर भाषण देकर नीचे उतरे तो मुलाकात की थी, एक इन्टरॉडक्शन किया किसी ने कि यह प्रेसिडेंट है कॉलेज यूनियन के। उन्होंने अभिवादन स्वीकार किया। कोई बातचीत नहीं हुई। फिर जब मैं यहाँ आ गया विधान सभा में तो उस समय मैंने उनको एक पत्र लिखा कि यहाँ काँग्रेस ज्वाइन नहीं किया था वहाँ की परिस्थितियों को देखते हुए, सब अपने विचार व्यक्त करते हुए और जो कुछ मुझे आश्चर्यजनक लगा, जो मुझे सही नहीं लगा वह सब लिखते हुए। शुरू में ही मैंने अपना परिचय उनको दे दिया। मैंने बताया कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ और किस का लड़का हूँ। उसमें मैंने जो भी घटनाएँ हुई थीं वह सही-सही अंकित किया। अंत में मैंने लिखा मैं आप से भारत के प्रधान मंत्री की हैसियत से कुछ चाहता नहीं। कुछ आप से पाना चाहता हूँ। यह मेरी इच्छा जरूर है कि आपके नेतृत्व में देश के लिए मैं सेवा करूँ, यह मेरी दिली इच्छा है लेकिन लगता है घटनाएँ और कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हमारी इस इच्छा को पूरा नहीं होने देना चाहती। जब भी इच्छा पूरी होगी मैं इंतजार करूँगा। इस तरह से मैंने उनको कन्क्लूड किया। चिट्ठी जिस दिन भेजी उसके

चौथे दिन उनका उत्तर मुझे मिला। उत्तर में उन्होंने मुझे लिखा था मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा, विचारों से बहुत अच्छा लगा और तुम मिलना चाहते हो तो अगली तारीख दे दी थी कि इन तारीखों में दिल्ली आ सकते हो, अगर मुझे टाइम मिला तो मैं मिल लूँगा। मैं वहाँ पहुँच गया 4-5 दिन के बाद। हम और हमारी पत्नी दोनों साथ गए मिलने उनसे तीन मूर्ति भवन में। ऊपर से नीचे तक उन्होंने हमें देखा और फिर कहते हैं अच्छी बात है कॉंग्रेस में रहकर करो काम। मैंने कहा मैं तो अभी इंडिपेंडेंट ग्रुप का लीडर हूँ। उन्होंने कहा वह तो लीडरी है न, वहाँ काम कुछ नहीं होगा। काम तो कॉंग्रेस के अंदर होगा। यह तो मैं जानता हूँ। इसलिए मैंने आपको पत्र लिखा। उन्होंने कहा ठीक है, काटजू भाई को, उनको भाई कहते थे, कह दूँगा। फिर पूछने लगे तुम्हारी और क्या हॉबीज है? हमारी पत्नी चुपचाप बैठी थी। उनकी तरफ मुखातिब होकर पूछा, तुम क्या करती हो? तो उन्होंने तुरन्त कहा मैं तो बच्चों को पालती हूँ। वह काम भी जरूरी है। तुम और कुछ नहीं करना चाहती? शायद उन्होंने पूरी तरह से सुना न हो, जो भी हो। उन्होंने कहा मुझे आप से कुछ नहीं चाहिए। एकदम से हाथ बढ़ा कर पंडित जी ने उनको जोर से पकड़ लिया। कहा, यह मैं कहाँ कह रहा हूँ तुम मुझ से कुछ चाहती हो। जो कुछ तुम कर रही हो वह कोई मालूमी चीज नहीं है। इतनी बात हुई फिर हम लोग चले आए। काटजू साहब से बातचीत की। 8 महीने बाद फिरोज गाँधी की मृत्यु हुई। पंडितजी इलाहाबाद आए उनके क्रियाकर्म के लिए। जब आने की तारीख पहले से तय हुई तो मैंने उनको लिखा हम लोग दर्शन करने इलाहाबाद आना चाहते है, खास तौर से हम अपने बच्चों को लाना चाहते हैं। हमारे बच्चे भी वहाँ पढ़ते थे जहाँ हम लोग पढ़ते थे, इलाहाबाद में ही। उनका उत्तर आया, हाँ, जरूर तुम आओ, मैं कोशिश करूँगा। तो गए हम लोग। 63 की बात है जहाँ तक मुझे याद है, 62 होगा। हम लोगों को ले जाकर बरामदे में बैठा दिया। वहाँ सबसे पहले मेरी मुलाकात जगतपाल सिंह से हुई। जो उनके साथ काम करते थे। उन्होंने पहचाना भी, उनको यह अंदाज हो गया था यह वहाँ से लोग आए हैं। हम लोग करीब आध-पौन घंटे बैठे रहे, पंडितजी जहाँ भी रहे हों। जब वह उधर से आए, मेरे तीनों बच्चे हमारे साथ थे, उन्होंने देखा तो कहने लगे तुम लोग कितनी देर से बैठे हो? मैंने कहा कोई ज्यादा नहीं। उन्होंने पूछा फिर भी? मैंने कहा एक घंटा हो रहा है। उन्होंने कहा बच्चों को एक घंटे तक तुमने भूखे बैठाए रखा? मैंने कहा आपके दर्शन के लिए एक-दो घंटे और बैठना पड़ता तो क्या बुरा था। कहा, नहीं ऐसा नहीं। किसी को पुकारा और कहा कुछ फल दो इनको खाने के लिए। जो मेरा सबसे छोटा लड़का था राहुल उस वक्त मुश्किल से 7-8 वर्ष का था। उसने कहा हम को तो बहुत भूख लगी है। उन्होंने कहा तुम दो केले खाओ। फिर यही हुआ। मैंने कहा मैं आप से और कुछ तो नहीं, इन लोगों को चाहता था मिलाना। उन्होंने पूछा कहाँ पढ़ते हैं? इतने में कुछ ऐसा मुझे लगा यह जल्दी में हैं। मैंने कहा, वाइफ ने कहा ऐसे मौके पर आए हैं, हम सब बहुत दुःखी हैं। क्या कुछ शब्द इन्दिराजी से हम कह सकते है? तुरन्त गए और उनको बुलाकर लाए। उनके साथ राजीवजी भी आए। वहीं पर न जाने कैसे पंडितजी के मन में बात आई। उन्होंने बताया ये लोग वहाँ से आए हैं फिर इन्दिराजी को मुड़ कर कहते हैं यह महाशय, 'महाशय' वर्ड मुझे याद है, महाशय अब कॉंग्रेस में हैं और यह तुम्हारे साथ काम करना चाहते हैं। इन्दिराजी देख कर मुस्करा दीं, वह क्या उत्तर देतीं। फिर हमने कहा, एक तस्वीर लेनी है। तस्वीर ली सब की खड़े हो कर। उसमें राजीवजी भी हैं, संजय भी हैं, पंडितजी भी हैं, इन्दिराजी भी हैं, मैं ही नहीं हूँ क्योंकि मैं तस्वीर लेने वाला था।

प्र. उसके बाद कॉंग्रेस में कभी उनके साथ मुलाकात हुई?

उ. कॉंग्रेस के अंदर कई दफा मुलाकात हुई, जब नेतृत्व परिवर्तन हुआ मंडलोईजी का...

प्र. इसके बाद सिलसिला अंतहीन सिलसिला...

उ. लेकिन इतना मुझे अहसास हुआ उस दिन पंडितजी का इन्दिराजी से इतना कह देना, मैं ऐसा महसूस करता हूँ कभी पूछने की बात तो होती नहीं है, जरा सा ख्याल इन्दिराजी को जरूर हर दम इस बात का रहा होगा।

प्र. पहला जो चुनाव आपने लड़ा था इससे आपको क्या, एक तो यह कि क्या अनुभव हुआ, मुख्य निचोड़ उसका क्या रहा? किस तरह से अपने जीवन में चुनाव को कैसे लिया?

उ. बात बहुत साफ नजर आई, ऊपर से जो दिखता है वह असली चीज नहीं है। अंदर ही अंदर बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिनको ठीक करने की जरूरत है, सुधारने की जरूरत है। ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनके सामने आदमी हतोत्साहित होकर बैठ जाए और फिर मतलब ही क्या है। ये सब बातें समझ में आईं। उनके समाधान का रास्ता भी समझ में आया और वह रास्ता कोई अपने मस्तिष्क का चमत्कार नहीं, उन्हीं लोगों के अनुभव से, उन्हीं लोगों की बातों से...

प्र. एक सवाल में इसके पहले करना चाहूँगा। राजनीति में आपके सार्वजनिक जीवन में जो प्रवेश आपका हुआ उसके पहले आपके माता-पिता व आप अपने भविष्य के लिए कल्पना किस रूप में करते थे?

उ. मैंने तो शुरू से ही सार्वजनिक जीवन को ही अपने मन में बनाकर रखा था।

प्र. शिक्षा के दौरान में भी?

उ. शिक्षा के दौरान में भी लेकिन पत्रकारिता से मेरा बहुत अट्रेक्शन था। ग्रेजुएट करने के पूर्व इन्टरमीडिएट पहले हुआ करता था, उसके बाद जाना जाहता था जर्नलिज्म का कोर्स करने के लिए अमेरिका। सन् 45-46 की बात है। लेकिन वह चीज पिताजी को पसन्द नहीं थी कि अखबारनवीस उस वक्त कोई प्रोफेशन नहीं था। वह समझा जाता था यह तो सड़कों पर चलने वाले लोग हैं जिस पर किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं है किसी के प्रति। वह चाहते थे मैं वकील बनूँ। वकालत पढ़ूँ। मैं समझता हूँ कि उस समय उनका जो ख्याल था ठीक ही था। उसके बाद वह चाहते थे कि मैं उस वक्त आई.सी.एस. अब तो यह खत्म हो गया, उस वक्त यह नई सर्विस आई.ए.एस. बनी थी। वह चाहते थे मैं इस कॅम्पीटीशन में बैठूँ। मैं उनको न तो नहीं कर सका कि मैं कॅम्पीटीशन में नहीं बैठूँगा लेकिन बैठने के पहले ही मैंने तय कर लिया था मैं इसमें पास नहीं होऊँगा। वही हुआ। क्योंकि जो इम्तहान में बैठने वाला ही फैसला कर ले कि मुझे पास नहीं होना तो कौन पास कर सकता है। जब वह हो गया तो उसके बाद वकालत तो मैंने पूरी कर ली और ट्रेनिंग भी इलाहाबाद में डॉ. नारायण प्रसाद अस्थाना के अन्तर्गत उनके साथ रहकर की। उसमें भी मुझे रास नहीं आया।

प्र. वैचारिक स्तर पर किन महापुरुषों के व्यक्तित्व ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया?

उ. सबसे ज्यादा तो गाँधीजी, पंडितजी के व्यक्तित्व ने किया क्योंकि उनसे निकट का संदर्भ था। किताबों पर निर्भर नहीं था। फिर उसके बाद नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का। सन् 42 में जो समय था युद्ध अपनी चरम सीमा पर था। हम प्राय: रोज छिप कर नेताजी के भाषण रेडियो पर सुना करते थे, वह जो रंगून से किया करते थे। खास कर वह स्पीच मैंने सुनी तो रोमांच हो आया - तुम मुझे खून दो मै तुम्हें आजादी दूँगा। याद होगा, वह रेडियो पर लाइव ब्रॉडकास्ट आया था। और फिर विश्व के बहुत से जो पढ़ने के दौरान आए। एक थे लिंकन का, वाशिंगटन के गेलेलियो, जिसने यह आविष्कार किया कि दुनिया समतल नहीं गोल है। उसके लिए उसको फाँसी दे दी गई। यह मुझे लगा कि एक ऐसे सामान्य सत्य को जाहिर करने के लिए भी लोग फाँसी पर लटका दिए जाते हैं। उस समय तात्कालिक विश्वासों के खिलाफ था। और लोग तो लड़ाई झगड़ा करके

कोई जीतता है तो मरता है, हारता है तो मरता है। लेकिन एक व्यक्ति अपने विचारों के लिए फाँसी पर चढ़ा दिया गया इससे गेलेलियो का मेरे ऊपर बहुत उसके जीवन का असर हुआ। इसी प्रकार से लेनिन के बारे मे मैने काफी पढ़ा, बहुत सी चीजें ऐसी है, कम्युनिज्म अपनी जगह है जिनसे आदमी एग्री नहीं करता। लेकिन उसकी एकाग्रता और जो मजदूर वर्ग है, श्रमिक वर्ग है उसके वर्चस्व को कायम करने की उसकी प्रतिबद्धता, इन दो चीजो से मै बहुत प्रभावित हुआ और काफी दिनों तक मैं लेख भी उस समय लिखता रहा था। ये है कुछ बातें। फिर अपने धर्मशास्त्री इतने बड़े लोग हैं, गौतमबुद्ध की जीवनी का असर पड़ा।

प्र. मार्क्सवादी विचारधारा से जो आपका रिश्ता रहा है, आपको एक आकर्षण रहा है उसके प्रति, काँग्रेस में रहते हुए उसकी पृष्ठभूमि क्या है?

उ. यही पृष्ठभूमि है पढ़ने लिखने की।

प्र. आपके जीवन की अनेक राजनीतिक चुनौतियाँ हैं, यह सिलसिला बहुत लम्बा जा रहा है, मैं बहुत कटशॉर्ट कर रहा हूँ, बहुत सारे अप्स एंड डाउन्स आपके पॉलिटिकल कैरियर में आए। आप अपने जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण दायित्व किसे मानते हैं?

उ. पंजाब जब मैं भेजा गया तो मुझे लगा शायद यहाँ जो कुछ होगा वह निर्णायक होगा। क्योंकि बिना किसी संदर्भ में, बिना किसी जानकारी के, बिना किसी पूर्व अनुभव के, केवल किताब में पढ़ा कि पाँच नदियों का देश और शिमला जाते वक्त वहाँ से गुजरा था, उससे आगे उस उम्र में हमारी और कोई विशेष जानकारी नहीं थी। इसलिए लगा कि यहाँ और परिस्थितियाँ कितनी प्रतिकूल थीं, कितना वातावरण चार्ज था, ईश्वर कृपा है, मैं कहूँगा स्वर्गीय राजीव गाँधी का जो एक विश्वास था इन दो वजह से कामयाबी हासिल की जा सकी। वही एक है जो बात है।

प्र. राज्यपाल के रूप में काम करते हुए आपके व्यक्तित्व पर भी उसके दायित्व का निर्वाह करते समय आपको लगा कि आपने उसमें कुछ सीखा है और आपका प्रभाव भी पड़ा होगा?

उ. प्रभाव भी पड़ा।

प्र. प्रभाव किस रूप में पड़ा?

उ. प्रभाव पड़ा कि इतनी कठिन परिस्थिति उत्पन्न होने के बाद भी भावनाएँ इतनी उभर जाने के बाद भी लोगों के मन पर प्रतिशोध और इन सब चीजों का असर होने के बाद भी परस्पर विश्वास व्यक्ति पहचानता है। वह पहचान किसी व्यक्ति के अंदर से जाती नहीं है। लेकिन विश्वास होना चाहिए, दिखावा नहीं। यह बहुत बड़ी चीज है यह सामान्य रूप से किताबों में ही मिलती है पढ़ने को। लेकिन व्यक्तिगत अनुभव फील्ड में करने का मुझे वहाँ मौका मिला।

प्र. आपकी जो अप्रोच थी मैं यह नहीं कहूँगा वह नॉन पॉलिटिकल थी, वह एकदम पॉलिटिकल भी नहीं थी, पंजाब में।

उ. हाँ, यह बात सही है, केवल पॉलिटिकल नहीं थी, केवल पॉलिटिकल अप्रोच होती तो कुछ होता भी नहीं।

प्र. उसमें आपने कुछ नया प्रयोग किया ऐसा आप मानते हैं, एक नए ढँग से राजनीति को, जो सम्बन्धित है पॉलिटिकल रिलेशनशिप से, उसको आपने...

उ. वही मै कह रहा हूँ पॉलिटिकल रिलेशनशिप को एक अस्वाभाविक संदर्भ में बनाने की भी कोशिश होती है। उस संबंध को स्वाभाविक संदर्भ में कैसे बनाया जा सकता है बस इतना ही फर्क था, कोई बड़ी बात नही थी। बाकी जो औजार होते है वह तो सभी लीडर के पास होते है। संतजी से मेरी मुलाकात तो काफी दिन

बाद हुई। लेकिन मैं अमृतसर गया था संतजी के छूटने के बाद...
मुझे जानकारी मिली (संतजी) वह आए हुए हैं। मेरे मन में एकदम से आया कि यही मौका है इनसे सम्पर्क करने का। फिजिकल सम्पर्क तो सम्भव नहीं था वरना वह बात खुल जाती और उसको अलग-अलग तरीके से लोग घड़ना शुरू कर देते। मैंने उनको चिट्ठी लिखी और एक विशिष्ट आदमी के माध्यम से यह देखा कि शाम तक उनके हाथ पहुँच जाए। चिट्ठी मैंने अँग्रेजी में लिखी थी। संतजी अँग्रेजी जानते नहीं थे यह बात मुझे बाद में पता चली कि उन्होंने एक अति विशिष्ट व्यक्ति को बुलाया और उनसे कहा देखो यह गवर्नर से आई है, इसने मुझे यह चिट्ठी लिखी है। क्या है इसमें? हम को कहीं फँसा तो नहीं रहे हैं? मैंने लिखा था उसे पढ़कर सुनाया होगा। उसमें और सब चीजें थीं लेकिन एक सेन्टेन्स यह था आप भी पंजाब की सेवा में रत हैं, अपने आप में वह आपकी जिम्मेदारी है। मुझे जिम्मेदारी देकर भेजा गया है कि मैं पंजाब की सेवा करूँ। क्या सम्भव है कि हम दोनों एक साथ मिलकर वह काम करें जो आप कर रहे हैं और हमें करने के लिए भेजा गया है। उस सेन्टेन्स ने ही संतजी को मेरी ओर आकर्षित किया। एक के बाद दूसरी बार, दूसरी के बाद तीसरी बार, परस्पर मुलाकात हुई। उस सेन्टेन्स लिखने के लिए यहाँ पत्र दिखाया। बाद में भेजा नहीं, रिकॉर्ड में नहीं है यहाँ, दिखाया जरूर। कुछ लोगों ने कहा यह आपको नहीं लिखना चाहिए था। आप गवर्नर है। मैंने कहा ठीक है गवर्नर अपनी जगह है, इंसान अपनी जगह है। लेकिन मैं जानता हूँ वह टर्निंग प्वाइंट था।

प्र. इन्दिराजी और राजीवजी के व्यवहार में आपने क्या फर्क महसूस किया?

उ. इन्दिराजी का तो एक मातृत्व का दृष्टिकोण बन गया था और जैसे माता घर में होती है, खुश भी रहेंगी, नाराज भी रहेंगी, डाँट-डपट भी होगी, खाना भी अच्छा होगा, सब कुछ उन्हीं के हाथों से होगा। बाद में इन्दिराजी का यह स्वरूप बन गया था। जब शुरू-शुरू में प्रवेश किया चारों तरफ से लोगों ने उनको घेरना शुरू किया तब तो वह बिल्कुल लड़ाई की मुद्रा में थीं। लेकिन बाद में उनका कुछ इस तरह का बन गया था। बाकी हर व्यक्ति कोई पसन्द करता है, कोई नापसन्द करता है। किसी व्यक्ति को वह चीज अच्छी लगती है किसी को वह चीज बुरी लगती है। यह तो व्यक्तिगत सवाल थे। मैंने उनमें हरदम अपने प्रति वही मातृत्व की झलक देखी। मुझ से कई गलतियाँ भी हुई होंगी, उन्होंने यह माना कि गलती भी सुधारी जा सकती है कहीं मुझे तिरस्कार नहीं किया। मैं पद में रहूँ या न रहूँ मुझे टिकट भी एक बार नहीं दे सकी, ऐसा भी संदर्भ आया पार्लियामेंट में। मुझे चाहती थीं लेकिन नहीं दे सकीं। लोग आड़े आ गए। उनके यहाँ से जाने के बाद टिकट काट दिया गया। जब वह क्षेत्र में दौरे पर गईं और जब भाषण देती तो उम्मीदवार को आगे बुला लेती थी। उन्होंने मुझ से कहा अर्जुन सिंहजी सामने आओ। क्योंकि जब वह निकली यहाँ से दौरा करते हुए तो वहाँ पहुँचीं। मैंने कहा इन्दिराजी मैं काहे के लिए आऊँ। उन्होंने कहा आप यहाँ से चुनाव लड़ रहे हैं। मैंने कहा नहीं। चुनाव जो लड़ रहे हैं वह हैं। मैंने उनको आगे कर दिया। बड़ी देर तक मुझे देखती रही। वहाँ कुछ नहीं बोली। बाद में उन्होंने पूछा यह कैसे हुआ। मैंने कहा छोड़िए आप क्यों इसमें पड़ती हैं। जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। शायद मैं उस वक्त एम.पी. बन कर आ जाता तो यह मध्य प्रदेश जो है हमारा, वह होता नहीं। लेकिन कभी भी उनकी तरफ से मैंने तिरस्कार नहीं पाया। राजीवजी का ऐसा था वह तो आकस्मिक राजनीति में आए। उनकी व्यक्तिगत रुचि तो उसमें कदाचित नहीं थी। इसलिए किसी भी राजनीतिक व्यक्ति से उनका अंतरंग संबंध बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। कोई यह कहे मेरे नहीं बन सके यह उसकी गलती है। उनकी मनोवृत्ति दृष्टि

मे राजनीति थी ही नहीं। एक चीज का उनको अहसास जरूर हो गया। जब वह आ गए उस पीरियड में, क्योंकि मेरी वफादारी और मेरा समर्पण पूरा इन्दिराजी के साथ था यह उनको अच्छी तरह से मालूम था। इसकी पुष्टि भी उन्होंने कभी न कभी अपनी माताजी से की होगी, ऐसा मैं मानता हूँ। इसलिए वह विश्वास का एक आधार जरूर था। इसीलिए सब कुछ होते हुए भी कम से कम वह आधार तो पूरी तरह से टूटा नहीं था। जो कुछ मैं उनके साथ रहकर काम कर सका। मैंने करने की कोशिश की। उनके स्वाभाविक दृष्टिकोण में काफी अंतर था। उनका परिस्थितियों और समस्याओं को आँकने का अपना दृष्टिकोण भी अलग था। तात्कालिक परिणाम उम्र का तकाजा था। ये सब चीजें थीं लेकिन बेसिकली वह देश से प्रेम करते थे।

प्र. लेकिन यह माना गया है कि जो अनुभव का अभाव था उसकी वजह से उन्होंने...

उ. यह कहने की बात क्या, यह तो स्वाभाविक चीज है। अनुभव जैसी बात तो और कोई हो नहीं सकती। उसका पुट और कहीं से नहीं आ सकता लेकिन फर्क इतना होता है कि जो व्यक्ति ऐसे परिवेश में रहा है जहाँ परिस्थितियों को देखने का, अलग-अलग अनुभव करने का इस तरह से मौका मिलता है तो वह व्यक्तिगत अनुभव न होते हुए भी कुछ आत्मसात करने का होता है।

प्र. चुनौती के क्षणों में, मुझे जैसी जानकारी मिली है, आप नदी के किनारे या आदिवासियों के बीच में जाते रहे हैं। कभी भी आप पर कोई ऐसी राजनीतिक चुनौती या उस जीवन की चुनौती आई है, यह जो आपका लगाव है नदी के किनारे, आदिवासियों के पास जाने का इसके बारे में आप कुछ बताइए?

उ. करीब-करीब दोनों जगह शून्य का अनुभव होता है। स्थिर मस्तिष्क रखने के लिए शून्य का वातावरण शायद सहायक होता है। आदिवासियों के बीच में शून्य की बात तो नहीं है लेकिन करीब-करीब उनके बीच में व्यक्ति बहुत सी उन परिस्थितियों से परे हो जाता है जो आम तौर से आम जगह आम आदमी को मिलती है। ऐसा नहीं है कि कोई नदी न भी मिले, जगह न भी मिले आदमी को जीवन तो बिताना ही है।

प्र. नदी के प्रति आपका जो आकर्षण है वह शुरू से रहा?

उ. शुरू से रहा। एक तो इलाहाबाद में पढ़ने से गंगा यमुना जिनका अंग बन जाता है। हम लोगों के घर के पास सोन नदी बहती है। हम लोगों का अक्सर नदी के किनारे खेलना, नहाना, नाव पर जाना छोटी उम्र से था। एक निरन्तरता का अनुभव होता है। जो चीज कभी समाप्त होने वाली नहीं है। इसलिए हतोत्साहित होने का प्रश्न नहीं है। कभी बाढ़ आ जाएगी तो कभी कम पानी रहेगा लेकिन बहता रहेगा।

प्र. छोटे-छोटे सवाल हैं। जब भी आपको राजनीति के कार्य से फुर्सत मिलती है आप क्या करना पसन्द करते हैं?

उ. आजकल दो ही काम हो सकते हैं, किताब पढ़ता हूँ, जब कभी मौका मिलता है तो कुछ म्यूजिक सिस्टम बच्चों ने लाकर रख दिया उसमें इंस्ट्रूमेंटल शास्त्रीय और कुछ वेस्टर्न म्युजिक सुनने की कोशिश करता हूँ। और तो टाइम ही नहीं मिलता।

प्र. क्या आपको इस बात का अफसोस होता है आप अपने परिवार को अपेक्षित समय नहीं दे पाते?

उ. यह सदैव हर राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कसक की बात है, परिवार वालों के लिए तो और भी है। हमारे छोटे भाई आए हुए हैं, खाने पर।

प्र. किस चीज को आप सबसे अधिक नापसन्द करते हैं?

उ. वैसे तो नापसन्दगी करना कोई अच्छी बात नहीं है। मैं समझता हूँ लोग अपनी पसन्द, नापसन्दगी सार्वजनिक रूप से दिखाते हैं, एक तरह से वह अच्छी बात नहीं है। अगर कोई चीज नहीं भी पसन्द है तो यह मानकर

चलना चाहिए दूसरा व्यक्ति ऐसा करने के लिए मजबूर होगा। कई ऐसे कारण होंगे। व्यक्तिगत संदर्भ में मैं यह पसन्द नहीं करता कि कोई बहानेबाजी मुझ से करे। बता दे कि यह काम ऐसा है, नहीं हुआ। इसमें यह दिक्कत है। कुछ लोग बहाना बताते कि दूसरे पर जिम्मेदारी डालते है कि यह मैंने नहीं किया उसने किया। इसमें लिए मै जिम्मेदार नहीं हूँ तो व्यर्थ लगता है।

प्र. आपकी नजर मे जीवन की सबसे मूल्यवान चीज क्या है?

उ. आत्मविश्वास।

प्र. कौन से शब्द सबसे अधिक आकर्षित करते रहे है?

उ. शब्द तो कोई भी नहीं कह सकता कौन शब्द सबसे अधिक आकर्षित करता है। लेकिन जिन शब्दों के द्वारा निष्ठा को व्यक्त किया जा सके चाहे किसी बारे में हो, राजनीतिक निष्ठा ही नहीं, किसी भी संदर्भ में वह शब्द मै समझता हूँ मनुष्य के लिए मूल्यवान होते हैं क्योंकि हर व्यक्ति अलग-अलग तरह से उसको व्यक्त करता है।

प्र. आपके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी आप से भयभीत क्यों रहते हैं? आपका विश्लेषण क्या है?

उ. यह मेरी बहुत बड़ी कमजोरी है कि जो बिना मतलब के लोग मुझ से भयभीत रहते हैं। जबकि असलियत यह है कि मैं कभी जिनसे मेरी राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता है उनसे किसी से भी आप पूछ लें एक वह घटना या एक कार्य ऐसा बता दें जो उन्होंने बदले की भावना से या परेशान करने की भावना से की हो जिस का तुम प्रमाण दे सको। शायद ही कोई प्रमाण दे सकेगा। मैं नहीं कहता मैंने कभी ऐसा नहीं किया होगा, जरूर कभी न कभी ऐसा हुआ होगा। लेकिन वह मेरे काम करने की शैली है। उलटा हमारे अपने लोग यह कहते हैं कि जिन को आप बनाते हैं, मदद करते हैं, हर तरह से उनको शक्ति देते हैं वह आपके लिए भस्मासुर बन जाते हैं लेकिन भस्मासुर बनने के बाद मैं उनसे दूर तो नहीं होता। न उनका तिरस्कार करता हूँ। इसमें तो यह समझते हैं यह गलतफहमी है। वैसे अपनी विचारधाराओं में शास्त्रों में तो नहीं लेकिन जो सामान्य रूप से लोग कहते हैं उसमें यह कहते हैं दोस्त हो तो ऐसा जो हर समय निश्चित रहे और दुश्मन हो तो ऐसा जो हर समय चिंतित रहे। लेकिन इस दोस्ती और दुश्मनी के बीच में मैंने कभी कोई बहुत अंतर नहीं रखा। बाकी में कह सकता हूँ जिन लोगों ने मेरी खिलाफत की, मैंने पूरे सौहार्द्र से उनके साथ व्यवहार किया। जब मुझसे उनको कभी आवश्यकता पड़ी मैंने कभी उनसे यह नहीं कहा आपने फलाना समय में तो ऐसा किया था अब मैं क्या कर सकता हूँ। ऐसा एक व्यक्ति भी नहीं मिलेगा जो इस तरह की बात मुझे कोट कर सके।

प्र. आप शायद एक मात्र ऐसे राजनेता हैं जिन पर सर्वाधिक आरोप लगे हैं तो इन आरोपों बी बौछारों के बीच आपने कैसा महसूस किया।

उ. दुःख होता है कभी-कभी आत्मग्लानि होती है कि बिना किसी आधार पर, किसी तथ्यात्मक विवेचना के बगैर कुछ लोग समझते हैं यही एक सस्ता रास्ता है अपनी प्रतिद्वंद्वी को परास्त करने का। लेकिन मेरा अनुभव ऐसा है कि थोड़े समय के लिए किसी को लगता होगा, हाँ यह बात हमने पाली है लेकिन मुझे भी हो सकता है तात्कालिक नुकसान हुआ होगा, हुआ है, लेकिन यह मैंने देखा जिसने भी बिना कारण बिना आधार मेरे ऊपर ऐसा किया है सफलता तो अंततः उसको नहीं मिली है लेकिन कहीं न कहीं दैवी शक्तियों ने भी अपना कमाल दिखाया है।

प्र. एक सवाल और है। आप अपने जीवन के किस पक्ष से सबसे अधिक संतुष्ट हैं और किस पक्ष से सबसे अधिक असंतुष्ट है?

उ. जीवन से जो संतुष्ट हो जाए वह फिर जी नहीं सकता। मैं तो यह मानता हूँ। असंतुष्ट हम हर दम रहे इसका यह मतलब नहीं कि जो कुछ हुआ है उसके लिए ईश्वर का आभार न माने या अपने मित्रों का आभार न माने या जिन लोगों ने भी अपने साथ चलने की कोशिश की उनके प्रति कृतज्ञता न रखे। लेकिन हमने सब कुछ कर लिया है ऐसा मान ले फिर आगे चलने का कोई आधार नहीं। इसलिए संतुष्ट और असंतुष्ट का संदर्भ अपने जीवन से जोड़ना अव्यावहारिक है।
थैंक यू वैरी मच।

Protection of democracy

6 सितम्बर 1992 को नेशनल मेल, भोपाल के श्री सुनील कपूर के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q: How do you assess the outcome of October 3 meeting between BJP and Babri Masjid Action Committee held at the instance of the Prime Minister ?

A: I think it is an encouraging meeting because number one, from the approach of all the parties it was very clear that each one of them welcomed this initiative and they have approached the whole issue atleast without reservations on record. Even if there may be some reservations, they were not stated. So we consider it as a good beginning. Number two, because of this agreement which is on record that they will try to keep the tempers down and try to see that peace is maintained even while efforts are on to find a solution, this is a very positive aspect.

Q: How confident you are about their intentions ? You have always been saying that they cannot be depended upon, especially the RSS, BJP, VHP outfit.

A: I think we should at this moment of time give them the benefit that they are sincere. I would like to proceed on that basis and I am sure they realise that trying to upstage the Prime Minister would not be very easy for them and perhaps the consequences also will not be very helpful to them. Let us hope that they would be sincere.

Q: Do you feel there is a marked shift in their stand ?

A: I would go by the face value of what has been said.

Q: Is it out of political compulsion ?

A: Well, that cannot be ruled out, but for whatever compulsion it may be, it has come about, I am sure it will have some positive impact.

Q: Do you feel that other burning problems like unemployment, poverty, corruption are being ignored due to Ayodhya issue?

A: I would not say they are being ignored because no problem of the country can be ignored. But I do feel that many of the issues should be claiming more attention and effort which is not

happening. We are a little giving too much time, attention and effort to this issue. Now this is not something which can be helped by any single party or person. If everyone feels that controlling prices or the process of structural re-adjustment and many other things are now inevtiable and we have to go through it, there is need for getting together, putting our heads together to find out a way where it can be done with a minimum of fall out on the poorer sections -- now all these things are fairly time-consuming efforts. So time has to be found for them because they are real problems of the country. This is a problem which has arisen and it has somehow come centre stage.

Q: Last question as per their requirement. What in your view can be the lasting solution to the problem as also similar issues given the opportunity to political parties for using religion as a tool? Do you feel that the line taken by the Government is correct or on the right track? Secondly, what is the lasting solution to such problems?

A: This is a problem in which an attitude had to be taken, a line had to be taken because of various factors which went/into complicating it. So I don't think this line that has been taken needs to be debated whether it is right or wrong. It is the line which at this moment has to be taken. So far as wider question of such issues bedevilling democratic systems is concerned, it is not only that this is happening in India, there are some other countries where the same thing has happened and has happened with great damage having been caused to the body politic and perhaps the nations themselves. Look at what is happening in Yugoslavia. It is basically an ethnic conflict. There is no political issue involved. Now that country has disintegrated. In other parts of the world for examble in Lebanon, it was a christian versus Muslim I think anybody who wants the democratic system to flourish, there will have to be certain basic commitment which will have to be made both by individuals and political parties who are interested in making this system survive. This is a system which can survive given faith and trust on all sides. You can't say that I will use this system to achieve something and not protect it from the dangers that are likely to arise because of the manner in which I am going to use it. Here it has to be very clearly understood that any issue which has religious, ethnic or other overtones should not be an issue to gain mandate of the people. I am not saying that if such an issue arises in a country, even in a democratic country, it has to be addressed, it has to be solved, but it should not be made an instrument for gaining power. Now that is a decision which no one can impose on anyone.

Q: What kind of precautions you feel can be taken so that such problems do not recur at least in our country?

A: Well, precautions have to be taken by the people and certainly by those who are direcly

involved and responsible. I mean leader of every political party will have to sit down and think. Then collectively they have to sit down and decide as to what are the parameters in which each party is prepared to function and each party is prepared to avoid it. Now these decisions have been taken. It is not as if it was not done here. But some people in some parties chose to violate them because for the time being it suits them to violate them. I think much more stricter laws need be framed.

Q: Recently there were reports, earlier Narora-type brain-storming session was scheduled to take place at Pachmarhi, now it has been repeatedly postponed. Do you think there is a fit case for such a session?

A: Unless sombody says it is unnecessary, there is a fit case and I think it will be held.

Q: How do you feel there is a case for such a session at this juncture?

A: It is not a question of "this Juncture". I think any exchange of views on a very very wide range of subjects affecting political, economic and social issues that are of relevance in the country today cannot but help the party. I do not see how in any way it can be called irrelevant.

Q: Once thing is being said, perhaps since it is your home State that is why it is not being held there.

A: That is something which is too trivial to be commented upon.

Q: Similarly even the AICC session is being postponed again. It has yet again not been decided. Earlier it was scheduled for the 1st or 2nd week of October. We have not heard anything about it. Don't you think this dely will not help the party and this is skirting discussions and debate.

A: Well, holding a session is basically decided on the convenience of every one concerned, and much more that of the President of the party and Prime Minister. I do not read anything else into it. It will be held; when a commitment has been made, it will be held.

Q: Now I come to the question of BJP affairs in the State. Digvijayji has made some comments and BJP has reacted very sharply aginst it. How do you view it?

A: Well, the people asked me at Bhopal the same question about Savarkarji and Shyama Prasadji. What I said there was this is not a question of any,you may call, controversy; this is a question of facts, facts of history. So let somebody find it the facts. X, Y or Z, whether they did or did not participate in the 1942 movement cannot be a matter of opinion. Either they did or they did not. Inferences people can draw, whatever they like. That is what I said: this should be first ascertained. Instead of BJP raising such a hulla-gulla over it, they must find out what the facts are. If on facts, Digvijayji is faulted and it is proved that, no, what he said is not correct and that in fact, somebody did participate, I am sure Digvijay himself will correct himself.

Vocational and Job-oriented education needed

6 अक्टूबर 1992 को स्पेस वर्ल्ड भोपाल के श्रीमनमोहन श्रीवास्तव के साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q: What does your constituency mean to you?

A: Well, my constituency means a very special responsibility to the people who have reposed faith in my party and in me, to whom I owe a special responsibility. To that extent, whatever is possible I try to do. More so with regard to the development of that area and also redressal of public grieances. I have two offices in the constituency and some Congress workers have been requested to help run those offices so that they are in direct touch with the day to day problems. They keep on sending me special requests and special issues. Then at least once in two months I also go and visit. This is how I try to manage. I don't know whether everyone is satisified, but under the circumstances ....

Q: Are you satisfied with your performance?

A: Well, I am not fully satisfied because time is a factor which I think does not give me that kind of satisfaction. But there are limitations; I cannot go beyond a certain ....

Q: BJP Government is in power in Madhya Pradesh. How do you nurse your constituency, being a prominent leader of the Congress?

A: Well, I think the local administration is, by and large, behaving quite all right. And I have no special complaint against the State Government on any issue. But generally, the attitude is not very cooperative. And whenever some problems arise, the tendency is to take a partisan approach rather than a normal and fair approach. There we have to protest. That is all.

Q: You are HRD Minister. What special measures have you taken to expand the educational facilities in your constituency?

A: Well, in the last one year we have opened one Central School, one Navodaya School and we are in the process of opening a Shramik Vidyapeeth. My emphasis is that there should be facilities for quality education and vocational training so that job-oriented things can be done.

Q: What are the future programmes for development?

A: There is a project which is under discussion and will be finalised in a few months which includes Satna also, but there are other districts of the State also in it, in which there will be a total approach to the problems of primary education which is part of the universal education. In that every primary school will be covered in the entire district which also means my constituency.

Q: Satna is turning into a major industrial town.

A: Well, it is an industrial town for some time, though only cement plants are coming up in that district. I think there is need to diversify and I am making some efforts in that direction.

Q: This we wanted to know.

A: Yes. Well, I can't say that anything has been done straightway, but many things are in the pipeline and as soon as they come to that stage, then I can say this is what is going to happen.

Q: Sir ये BJP government ने ग्राम विश्वविद्यालय जो खोला है उसके बारे में what have you to say?

A: I have no objection to any kind of effort being made in any sphere of education or training and all that. I am not fully aware of what is being done there, as to how they are going to make this work. Apprehensions there are that this will be ultimately one more training ground for the RSS workers or for the BJP workers. I hope that does not happen. I only hope; I don't know. Otherwise if they are able to do something concrete and help rural development, I am all for it.

Q: What is the state of education in your constituency?

A: Well, Madhya Pradesh entirely is one of the most backward States in education.

Q: But with you at the helm of affairs ....

A: Doesn't matter because you can't just do things overnight. Efforts can only be accelerated. That is all.

Q: What is the position of Satna-Rewa rail line?

A: They say it will be completed by February.

Q: February 1993.

A: Yes, that is what I have been told, I don't know.

Q: How do you keep in touch? Congress workers are there. But there must be other measures by which you keep in touch.

A: Well, these things develop over a period of time. There is no difficulty for me to keep in touch or informed.

Q: This is your present constituency. There have been many constituencies.

A: Oh, yes, that is true.

Q: Being so busy in Delhi, how do you keep in touch?

A: You see, there are invisible ways of doing that. You can't say this is the pattern or this is the system. Once you are amenable and accessible, then people come -- some for some work, some for just that kind of thing.

Q: What about irrigation project in Satna, and Ban Sagar in particular?

A: Ban Sagar project does not come very much to help Satna because Satna is above the dam site. The only irrigation project which can, apart from the small projects here and there, help

Satna is the Burni canal which I think now has been approved and I don't know when this work will start because in big projects one does not know, but as soon as that canal is completed, almost three-fourths of Satna district will be irrigated.

Q: Satna is supposed to be a dacoit-infested region.

A: I don't think it can be called a dacoit-infested area, but one or two dacoits have been operating in the borders of Uttar Pradesh.

Adivasis are educationally, socially and economically backward

28 नवम्बर 1992 इंकलाब उर्दू, मुम्बई के सम्पादक श्री एस.जाफरी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है–

Q: Some people also feel that if, on the one hand, we want to strengthen the secular value, at the same time we go on talking to Maulwis and Sadhus and intellectuals are side-tracked. So, in fact, we are encouraging revivalism in the country. How do you comment on this?

A: Well, I do not want to comment on any one, but many people in the country feel that the intellectuals want to keep themselves away. They are not prepared to get involved.

Q: They are pushed back.

A: No one can push back any one in a democracy.

Q: No, intellectual can be easily pushed back because they will not go in for race, if you invite them.

A: I think, nobody is preventing the intellectuals coming to the fore and taking up a cause. They have taken up many causes in the past.

Q: One of the major policy decisions that you have announced is that of the Urdu University and an Urdu paper. We are interested in that. There are two sides; you should not misunderstand - one section of people is very happy that a University is coming. The other section says that this is also a sort of bargaining that if the Muslims agree to give up the claim on Babri Masjid, we can give them some tenets.

A: I think, this is farthest from anybody's mind. I am absolutely amazed that this is being said, because this is for the first time, I am hearing it. Many people do not appreciate the idea of setting up a University.

Q: Who are those people?

A: Well, some academicians and some others also. But they are giving different reasons.

No one has voiced this reason.

Q: This is also there.

A: No, as I said, I have not heard it. This is the first time I am hearing it.

Q: Editorially, I opposed such a thing.

A: There can be nothing farther from the truth than this. The University is no bargaining counter for anything, much less, the Babri Masjid.

Q: Did you not think of implementing Gujral Committee's recommendations before announcing the University?

A: No, those recommendations are also in the final stage of being brought into an Action Plan for Minorities, the basis of which was laid by Mrs. Gandhi by her 15-point Programme. Now that has been enlarged subsequently by, like the Gujral Committee, the Jaffri Committee and all these are now before the Cabinet for a final decision.

Q: Sir, don't you feel that this too much talk of minority and giving something like charity, is not helping the minorities to come up and stand up on their own feet?

A: I entirely agree with you that this patronising attitude towards any section of the people in India, whether they are minorities or Harijans, Adivasis or backwards, it is totally alien to the democratic concept, but the fact remains that in India, there are many disadvantaged sections of the people - you may not call them by any other nomenclature, some educationally, some economically, some socially, who deserve and I would say they have a right to a special dispensation in many respects. And this is what ultimately is the intention behind this effort and no one can say that we are acting the benefactor for any one because every one is part of the country. But suppose, something has not been done for whatever reasons, it may be, and it is something which should have been done, I don't see any harm in having some special effort or special direction in that way.

Q: There is no harm at all, but what I can say, for instance, Mr. Khusro or Mr. Rabi D. Sam - whether they belong to minority or not. They stand on their own feet; they are the important people in their fields, but every time they are put on some committee, they are considered as a representative of the country.

A: I don't know what you are hinting at, but as far as I know, all these eminent people are helping in decision making, which have nothing to do with the minority. In the academic sphere, in economic sphere, also in the scientific sphere, we have people, like Dr. Salam. He is not there because he is in minority; he is a scientist par excellence.

Q: His case, of course, is different, but in other committees, etc., generally people say,

that all right he is there, he is a representative of the minority community and then people, of course, who are there, they represent majority of something. So, continuously this feeling is there between minority and majority community.

A: Actually, in a country like ours, the feeling that on any matter which has some importance, the process of consultation or whatever else is required, is broad-based. This has been a feeling which has always been there and it has been acted upon, but I quite see your point that in such decision making committee authority, there is no need to say that he is there only because of his being a minority, though that is also a part of the total picture.

Q: Yes, total picture is there. Now one thing that we have been feeling or experiencing with your Ministry is that even among minority, there is a section, which feels that, that section is in minority. Say, for instance, cultural programmes or the seminars on culture or appointment on certain committees, a few people who can be easily termed as the power brokers in Urdu, time and again, if there are five international conferences, that one or two persons, Dr. So and So and Mr. So and So, who are not in the mainstream of Urdu, but who are closer to the politicians and who arrange functions in their honour...

A: I think that is something which we must be very careful about it.

Q: Something or the other, this is not happening.

A: I quite agree with you. I have also noted in some cases, this thing happening and I am trying to correct that to the extent possible.

Q: They are doing a lot of damage, say for instance, Bharat Bhavan, you created with a purpose.

A: Well, that is part of the democratic game; what can you do. You can't do it before the elections.

Q: Recently, you minght have come to know that the building, which was meant for Urdu Academy, they have taken it away and given two rooms only and named the building as `Sanskriti Bhavan'. So, if this is so and election is important, could you create a process of election rather earlier than....

A: Well, that is not something, which is being attempted. If situation arises, something happens, that is another thing. But we should be planning on a timely election.

प्रश्न: जहाँ तक उर्दू यूनिवर्सिटी की बात तो हमको बहुत अच्छी लगी है, लेकिन प्रायमरी एजूकेशन की तरफ जब हम लोग देखते हैं, तो महसूस यह होता है कि क्या कोई ऐसा बचेगा जो उर्दू यूनिवर्सिटी तक जाएगा, क्योंकि प्रायमरी एजूकेशन जो है, उसकी हालत तो बहुत खराब है। न तो उतनी तादाद के स्टूडेन्ट्स हैं और न उन्हें टीचर मिलते हैं। बहुत से ऐसे सेक्शन हैं, जहाँ टीचर हैं ही नहीं या

उर्दू अकादमी पार्ट-टाइम भी किसी को भेजती है बहुत थोड़े पैसों पर वो पढ़ कर जाते हैं। बहुत से सब्जेक्ट हैं, जिनकी क्लासेस ही नहीं होती हैं, इसलिए कि कोई टीचर नहीं है। उस सूरत में जब बुनियाद या जड़ ही मजबूत नहीं होगी, तो फिर पेड़ कैसे ताकतवर होगा?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए वह तो मुर्गी और अंडे वाली कहावत है। लेकिन इन दोनों को साथ-साथ उखाड़ना पड़ेगा। टास्क इज़ वेरी डिफरेन्ट, इन्डीड। और यह भी सही है कि जितना उर्दू की लोवर लेवल की एजूकेशन को तवज्जो दी जानी चाहिए थी, वह नहीं दी गई। अब इसमें बहाना ढूँढने से तो फायदा होता नहीं।

प्रश्न. तभी उत्तर भारत में...

श्री अर्जुनसिंहः हाँ उसको किसी तरह से सही करना है। अभी एक एजूकेशनिस्ट आए थे, वो कह रहे थे कि ये जो "मदरसा सिस्टम" है, यह उनका सुझाव था। मैंने कहा कि ठीक है, आप जरा एक नोट भेजें इस पर। उन्होंने कहा कि मदरसा सिस्टम जो है, उसको अबॉलिश करने की जरूरत नहीं है, इसका उपयोग करने की जरूरत है। जो आदमी धार्मिक और ये सब बाते हैं, वो तो उसमें आनी चाहिए, लेकिन चूँकि उसको मान्यता मिलती है समाज के अन्दर, उसकी मार्फत आपको और चीजें भी ले जानी चाहिए, वो क्यों रुक जाएँ केवल धार्मिक पढ़ाई पर जाकर।

प्रश्नः नहीं, अब तो शुरू हो गया है।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं, उसका विस्तार करने की जरूरत है।

प्रश्नः जैसे हिस्ट्री, साइंस टीचिंग हैं।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं, उसका विस्तार करने की जरूरत है। उसके अलावा और जो चीजें की जायँ वो भी हैं। The problem is that education is State subject, by and large.

श्री अर्जुनसिंहः एक दिक्कत तो यह है।

Q: And there are certain States which hardly care, whereas the other States like Maharashtra and Andhra, where they care or they are not afraid of Urdu - Urdu can be taught up to any level and there are government schools. Now your Ministry can function as a guide to the State Governments.

A: You can rest assured, I will do whatever is physically possible for me to do.

Q: Knowing Sir that they are using religion for politics, why should we not adopt some policy where they are shown their places that you talk either for politics or for religion. If you are in the Parliament, then you follow the parliamentary process.

A: Well, you see, when certain people - set of people arrogate to themselves the right to do what they think is in their interest, then laws alone cannot help. It is the democratic spirit and democratic atmosphere in a country which can ultimately put a check and to our great fortune, this is what has happened till now. The BJP and this kind of thinking has not got the support in the country democratically. Even in the vote, they might have won in two or three State Governments because the opposition vote was split even in U.P.

प्रजातंत्र में पार्टी के कमिटमेन्ट का महत्त्व है

8 दिसम्बर 1992 को भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

प्र: बाबरी ढाँचे के विध्वंस से किसे अधिक नुकसान हुआ?

उ. देखिए, जो आँकलन की बात है जो अभी हमारे नगर के प्रमुख नागरिकों ने कही है बहुत संजीदगी से कही है और बहुत बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कही है। पूरी तरह से राजनीति करने का समय नहीं है। राजनीतिक रूप से परिस्थिति को देखने का समय नहीं है। सबसे पहले शांति व्यवस्था कायम करने का समय है। इस प्रयास में किस की क्या जिम्मेदारी है उस जिम्मेदारी को निभाने का दायित्व है उस पर जिसकी यह जिम्मेदारी है। अभी तक जो सामने आया है उससे स्पष्ट लगता है कि जिनका जहाँ भी दायित्व था वह पूरी तरह से नहीं निभाया जा सका।

प्र. आपने कहा मैं सहमत हूँ कुछ लोगों ने यहाँ राष्ट्रपति शासन लागू करने की माँग की है...

उ. मैं तो आँकलन की बात कह रहा हूँ, परिस्थिति का आँकलन। जहाँ तक राष्ट्रपति शासन कायम होने या न होने का सवाल है यह वैधानिक प्रश्न है। यह जो संवैधानिक प्रक्रियाएँ हैं, उसके माध्यम से ही कोई बात की जा सकती है।

प्र. रात में जो आपने देखा और सबेरे जो आपने सुना उसमें आपकी प्रतिक्रिया क्या है?

उ. मेरा व्यक्तिगत निष्कर्ष पर पहुँचना किसी फैसले का आधार नहीं हो सकता है। यह आप अच्छी तरह जानते हैं। विधिवत गठित शासन द्वारा जो एक मूल्यांकन और निर्णय करने की प्रक्रिया है वह उसी के माध्यम से होगी। मैं व्यक्तिगत क्या सोचता हूँ, क्या कहता हूँ यह अलग बात है, लेकिन मैं इसको फाइनल कहूँगा यह सम्भव नहीं है।

प्र. आप यहाँ भोपाल में आने का कुछ कारण बताएँगे?

उ. ऐसे समय पर मेरे आने का एक ही कारण है, जो कुछ मैं यहाँ सुन रहा हूँ केवल अखबारों में न पढ़ूँ, जिन के ऊपर यहाँ गुजर रही है उनके मुँह से सुनूँ और जिस हद तक भी मैं उनकी व्यथा और दुःख में सहभागी बन सकता हूँ, बनने की कोशिश करता हूँ।

प्र. मैं सवाल पूछना चाहता हूँ जब राजीवजी जीवित थे, तब वर्किंग कमेटी ने एक प्रस्ताव पास किया था। नवम्बर 90 में, उसके दो भाग थे, अगर मैं गलत नहीं हूँ तो आप उसमें मेम्बर थे। उसमें एक भाग था राम जन्म भूमि विवाद को सुप्रीम कोर्ट को सौंपा जाए और बाकी धार्मिक स्थानों के लिए 26 जनवरी, 50 की स्थिति को यथावत रखा जाए। इस चीज का आपने कानून बनाया। 15 अगस्त, 47 की स्थिति को राम जन्म भूमि को उस कानून के दायरे से बाहर रखा जाए। जो आपकी पार्टी का कमिटमेंट था, उस पर राजीव गांधी ने खुद 30 नवम्बर, 90 को चन्द्रशेखर को पत्र लिखा था, तत्कालीन प्रधान मंत्री को, क्या वह पार्टी भूल गई है? क्या वह इशू अभी भी जीवित है? सुप्रीम कोर्ट को सौंपने का कमिटमेंट आपकी पार्टी का है?

उ. उत्तर तो सुन लीजिए। प्रजातांत्रिक देश में पार्टी का कमिटमेंट महत्व रखता है और आगे बहुत सी पार्टियाँ होती हैं। किसी भी पार्टी के कमिटमेंट को कार्य रूप में परिणित करने के लिए अन्य राजनीतिक दलों का भी सहयोग और उनकी भी उसमें सहमति एक महत्वपूर्ण अंग होता है। आप लोग सब प्रत्यक्षदर्शी है। आप लोग लिखते रहे हैं इस कमिटमेंट को जिसका आधार यह है कि भगवान राम का मन्दिर वहाँ बनना चाहिए और

बाबरी मस्जिद को खतरा नहीं होना चाहिए। यदि उस समस्या से हल ढूँढना है आपसी बातचीत से ढूँढना चाहिए। यदि आपसी बातचीत से नहीं ढूँढा जाता है तो अदालत के माध्यम से उसके ऊपर निर्णय लेना चाहिए यही हमारा कहना था। इसी कमिटमेंट के आधार पर जब भी मौका आया है, काँग्रेस की तरफ से प्रयास हुए हैं। पिछले चार महीनों से जो प्रधान मंत्री कह रहे थे, वह उसी कमिटमेंट को पूरा करने की कोशिश हो रही है। उन्होंने अन्य पार्टियों का सहयोग भी लिया। सब पार्टियाँ उसमें शामिल हैं। यहाँ की भारतीय जनता पार्टी भी, विश्व हिन्दू परिषद् भी जो राजनीतिक पार्टी नहीं है, वे लोग भी, जो एक नया स्वरूप, राजनीतिक स्वरूप देश के सामने आया है साधु-संतों का राजनीतिक स्वरूप जो सदैव ही पूजा पाठ में अपना मतलब रखते थे, उनको भी शामिल किया गया इसमें। लेकिन मेरे पास कोई और शब्द नहीं है इस्तेमाल करने का, जिस बेशर्मी से इस प्रक्रिया को नाकाम करने की कोशिश की गई, वायदे करके वायदे तोड़े गए, सदन के अंदर, सदन के बाहर, राष्ट्रीय एकता परिषद् में और उसके बाहर उसका नजारा सारे देश के सामने स्पष्ट है। 6 तारीख को क्या हुआ अयोध्या में, वह भी सब के सामने स्पष्ट है। एक दफा जिन्होंने अपनी प्रतिबद्धता बता कर उसके ठीक विपरीत काम किया, स्वाभाविक है सारे देश को, समाज को, यह कि हमने ऐसा वायदा किया था और बाकी चीजों पर हम कुछ नहीं करेंगे, कैसे सम्भव है। आप तो देश की रक्षा करेंगे। हमारी एकता की रक्षा करना, हमारे अस्तित्व की रक्षा करना, हमारा अहम सवाल सामने है। उसको ही हमें देखना है वह भी सब के सहयोग से। अकेले काँग्रेस पार्टी उस काम को नहीं कर सकती, यह है आज की स्थिति। उस स्थिति में जो हमारी पार्टी की, जो हमारी सरकार की संवैधानिक और राजनीतिक सीमा है उसको पार्टी विनम्रता से पूरा करे।

प्र. राज्यपाल से मुलाकात हुई?

उ. हाँ, मैं गया था।

प्र. रिपोर्ट दी?

उ. जो जानकारी थी, सभी परिस्थितियों की वह उन्होंने दी है।

प्र. केन्द्रीय सरकार द्वारा सावधान किए जाने के बाद राज्य शासन के द्वारा उठाए गए कदमों को आप पर्याप्त मानते हैं क्या?

उ. अभी तो मैं पूरी जानकारी उनसे मिलकर ही पा सकूँगा।

प्र. जाने के पहले आप मुख्य मंत्री से मिलेंगे?

उ. निश्चय ही।

प्र. तीन दिन हो गए भोपाल जलते हुए आज तक कोई मुख्य मंत्री या मंत्री, या कोई नेता इन दंगा पीड़ितों के आँसू पोंछने नहीं गया, आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

उ. इस विषय में मैं क्या प्रतिक्रिया दूँ। कोई प्रतिक्रिया के लायक हो तो...

प्र. तब से परिस्थिति में सुधार हुआ है या बिखराव हुआ है?

उ. मैं तो यह नहीं कह सकता क्योंकि मैं इसको मानिटर नहीं कर रहा हूँ। यह आँकलन आप लोग करेंगे जो कुछ भी हुआ। लेकिन हमारी कोशिशें और हमारी उम्मीदें यह रहेगी कि स्थिति पर शीघ्र काबू पाया जाए। मैं आशा करता हूँ यही उद्देश्य यहाँ के शासन का भी होना चाहिए।

प्र. आपका प्रधान मंत्री को यह सुझाव है कि यहाँ पर सेना भेजी जाए ताकि स्थिति सुधरे। क्या इसका सीधा अर्थ यह नहीं है कि यह सरकार अपना विश्वास केन्द्र की नजरों में खो बैठी है?

उ. यह सुझाव मैं मुख्य मंत्री को दूँगा।

प्र. क्या यह सही है आप जब दौरे के समय मिले थे तो आपको डिसकरेज करने की कोशिश की गई एडमिनिस्ट्रेटिव एंड पॅलिटिकल लेवल पर?

उ. कम से कम मुझे तो और किसी ने नहीं कहा। किसी के मन के अंदर मंशा रही होगी लेकिन मुझे और किसी से मतलब नहीं है। प्रधान मंत्री से मतलब है। उनकी सहमति और उनके आदर्श के मुताबिक मैं यहाँ आया हूँ। बाकी कोई क्या कहता है, सोचता रहे अपनी बला से।

प्र. आपने कहा सेना को सौंपा जाए। सेना को बुलाया गया पुराने शहर में। मैं जानना चाहता हूँ कि इस वक्त संवैधानिक व्यवस्था में सेना सिविल एडमिनिस्ट्रेशन की मदद करेगी या डायरेक्ट टेक ओवर करेगी?

उ. सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को मदद करेगी। यह प्रक्रिया शासन यहाँ पूरी कर ले मुझे इसमें संदेह नहीं है। अगर उसमें भी वह पूरी नहीं करे तो मैं क्या कर सकता हूँ।

प्र. सेना तो आ चुकी है?

उ. आपको दिखी कहीं पर?

प्र. पुराने शहर में।

उ. अगर दिखती तो इतने लोग आकर बताते नहीं।

प्र. लोगों के सामने आगजनी की घटनाएँ होती चली जा रही हैं। यह केन्द्र कब तक कार्रवाई करेगा और लोगों को लाइफ और प्रॉपर्टी को सुरक्षा कब मिलेगी? इसमें इन्टरवीन किया जाएगा या नहीं?

उ. आप विश्वास रखिए। उपयुक्त समय पर जो हमारी जिम्मेदारी है केन्द्र शासन की वह जरूर पूरी होगी।

प्र. आपकी पार्टी के सांसद ने यह कहा था कि अब राम मन्दिर काँग्रेस को नहीं चाहिए। क्या यह अधिकृत बात है और आप इस तरह का विचार काँग्रेस पार्टी का विचार समझ रहे हैं?

उ. देखिए जो बात प्रधान मंत्री ने कही है उसको हम और आप इन्टरप्रेट करें उससे कोई मतलब नहीं। लेकिन इस वक्त वे सब बातें गौण हैं। इस समय तो देश में उठ रही लपटों को बुझाना जरूरी है। ऐसी बातों को आप इस वक्त न उठाएँ। जिससे एक नया विवाद शुरू हो जाए।

प्र. अर्जुन सिंहजी आपके साथ शिंदे साहब आए हैं उनकी क्या भूमिका है? क्यों कैसे आए?

उ. वे अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के महासचिव हैं, मध्य प्रदेश के इंचार्ज हैं, काँग्रेस को आदेश तो वह देंगे, हम तो देंगे नहीं। केवल मैंने संकेत दिया है। सब लोग राजी हो जाएँ काँग्रेस उसमें शामिल होगी। अभी काँग्रेस वर्कर्स की मीटिंग में यही आदेश उन्होंने काँग्रेस वालों को दिया है।

प्र. दिल्ली में बीजेपी के नेताओं के खिलाफ एक्शन लिया गया है प्रदेश में कुछ लोग यह काम कर रहे हैं उनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जा रहा है।

उ. आपने, जो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया का अधिकृत वर्शन आया है उसे सुना होगा उसमें एक टर्म यूज किया है strongest action will be taken against all those elements who have aided and abetted the crime committed at Ayodhya.

I think the meaning is very clear. As to when that will happen depends on so many things.

प्र. मेरा एक प्रश्न था। क्या साम्प्रदायिक संगठनों पर रोक लगाने की बात तीन दिन से की जा रही है। उसमें देरी का क्या कारण है और कब तक यह सम्भव होगा?

उ. I think Just wait for a little while. उसको अक्षरश: पालन करने की जिम्मेदारी प्रत्येक प्रदेश के शासन की होगी। शासन यह नहीं कह सकता केन्द्र के इस नियम और कानून को हम नहीं मानते। क्योंकि ऐसा कहने का स्पष्ट एक निष्कर्ष निकलेगा।

प्र. क्या अन्य राज्यों में भी केन्द्र के प्रतिनिधि भेजे जा रहे हैं शांति स्थापित करने के लिए?

उ. अब मैं तो यह नहीं कह सकता। जरूर कोई न कोई जाएगा।

Mr. Shinde: AICC is sending two observors everywhere where disturbances occurred in the country. We are sending two or three observors in each State. In Madhya Pradesh we are sending Mr. Deopura from Rajasthan and Mr. Jha from Bihar, who is the Vice-President.

Q: Is it at the instance of the Prime Minister?

Mr. Shinde: No, it is at the instance of the All India Congress Committee.

Q: Only two?

A: Two. And our peace camps under the leadership of President, Pradesh Congress Committee will be started from today onwards. Relief camps also will be started, in the hospitals because the complaint made in the all-party meeting -- we are thankful to them, those parties, particularly the Communist party and other parties, that they would like to join with us. Yes, we will take their assistance in these peace camps.

प्र. केन्द्र कौन-कौन से राज्यों में, दंगा ग्रस्त राज्यों में अपने केन्द्रीय मंत्री या प्रतिनिधि भेजेंगे?

उ. हम जो आब्जर्वर भेज रहे हैं, वह आन्ध्र प्रदेश है, महाराष्ट्र है।

प्र. मध्य प्रदेश में कब आ रहे हैं?

उ. यह कल भेजेंगे। कल रात तक पहुँच जाएँगे। क्योंकि उनको इंटीमेशन जाना जरूरी है।

Danger of Communalism is increasing

11 दिसम्बर 1992 न्यूज टाइम्स के श्री अशोक दामोदरन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: Going by what has happened in the last one week, I mean how far the drift of the government and its inaction has been responsible for it and how much of it is due to the inactivity and indecisiveness of the government?

A: Well, I won't say there was a drift. Government wanted to do something within a certain frame work and to the last extent it wanted to keep it in a process of amicable settlement through negotiations. And that was all in good faith. It is true that the perfidy and the act of betrayal of the BJP-RSS combine created a certain situation.

Q: But there were several warnings which it now seems the Government did not heed. The other secular opposition leaders who met the Prime Minister have now come out and they say we told him so, but he did not act at all.

A: Well, I am not aware of what somebody told him because that only he can say.

Q: How far do you think government's credibility has been damaged because of this?

A: Well, you see, whatever happens, the government either gets the blame or the credit for it. So naturally there is some blame that is bound to attach to the government. But in the circumstances and in the background in which all this happened, then people have to see whether there are extenuating circumstances or it was a deliberate thing. This is the situation. I mean no government can fully escape some blame on this.

Q. This come out of the fact that outside, in private, probably in the corridors of Parliament and in the Central Hall the picture given is totally different from what the briefing is given of the Parliamentary Party. We know for a fact that you addressed the Parliamentary Party after the Prime Minister did and everybody reposed full faith in him. But outside people tend to get the belief that they are singing a different tune.

A. Well, on that I can't give any comment because that is not my impression. If your impression is that, you must have valid grounds to say that.

Q. In spite of that you say that you don't have that sort of impression.

A. No, I don't have that kind of impression that you are saying that people have not reposed faith, do not have faith and yet are saying so. Of course, every one feels that we have been betrayed and this is going to have some consequences and all that. Naturally, the enormity of the act of the demolition of the mosque is no small thing.

Q: Do you agree that a large percentage of Congressmen feel that the Prime Minister has erred?

A: He has been betrayed, yes. If you say he should not have put faith in them, well believing somebody and going along with that with the objective of having an amicable solution, I think he was right.

Q: You have greater experience of fighting the BJP. You know where to trust them and where not to trust them. As Chief Minister of Madhya Pradesh, you dealt with them in your own manner.

A. I mean everyone knows about it.

Q. You mean your letter to the PM, that you wrote in July.

A. In July, 1st August, I think. I am not saying that I am taking back what I have said. I deferred to the better judgement of the Prime Minister that the path of negotiations should be pursued. I have publicly deferred to it, that yes, it is better and should be accepted. A certain situation has arisen. I can say that that has arisen because he had pursued the matter with all sincerity. All efforts that could be made, he made. Right in the middle, abruptly these people changed course. These are the facts. Now so far as my assessment of this party is concerned, I have said so and I say it again that anytime anyone puts faith in these people, he is running a great risk.

Q: Your party is planning to approach the Election Commission for derecognition of B.J.P. Do you think it is a practical step? Do you welcome it?

A: Perhaps you don't know even while I was in hospital with a heart attack, and the Rath Yatra had started and that came to Bhopal, from my hospital bed I had sent a telegram complaining to the Election Commission, requesting the same thing. That time, in 1989! Yes, then I filed a regular petition in the Election Commission, making that prayer. It went on for 1 ½ -2 years. The Supreme Court in its wisdom rejected it. That is the end of the matter.

Q: How practical it is?

A: That is now something which the Supreme Court will have to decide. That the idea is correct, I have no doubt. Such parties as transgress the election law, deliberately go outside the Constitution, to seek political support through the help of religion should be derecognised. But what will happen is something that I can't say.

Q: What will be the configuration after that? Janata Dal is not ready to cooperate with the Congress party as far as fighting communalism is concerned. Left is ready to cooperate with the Congress.

A: Well, in this we will have to make a very sober approach. Ultimately I am quite sure that all the democratic and secular parties realise very much the danger of rise of communalism and they will cooperate. May be in the heat of the present moment, people are saying some things.

Q. Now the Left has also changed its stand two days back. Earlier they were saying that they were not ready to join this secular front. Now suddenly they are saying.

A. Yes, it is so.

Q. Earlier you said, you would never have trusted the BJP.

A. I don't even now. Never ka to sawal hi nahin hey.

Demolition of mosque is of great anguish

12 दिसम्बर 1992 इकानामिक टाइम्स के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: In which case what is the gravest threat in the situation that has developed?

A: The threat is not to a political party, much less to an individual. The threat is to what till now has been the concept of the Indian nation. That concept is seriously threatened. Some people describe it as secularist and democratic. But it is something all put together. Even the democratic thing is under challenge; the secular thing is under challenge; then the tolerance which marks practically every sphere of activity in India, that is under duress. Altogether, everything seems to be falling apart. And that is what has to be defended, made intact.

Wherever damage has occurred, that damage has to repaired. It is only a political exercise.

Q: Is the anguish deepest among the minorities or the Muslims?

A: Well, I think the demolition of the mosque is definitely an event of enormous -- what I may say, the enormity of the event perhaps has yet not sunk deep enough and definitely there is great anguish. And I can say that even amongst the Hindus, and a vast majority of the Hindus, the demolition part has not been accepted as a conduct which is okay; it is being thought of as unbecoming. The building of the Rama temple is definitely something which all the Hindus want and on that there is no dispute from any side. What the BJP has tried to do, and to some extent they have accomplished it, is that they have juxtaposed the temple and the mosque in the minds of that vast majority of the who were not prepared to say "temple at the cost of mosque". They want to make that idea acceptable and perhaps inevitable. If we can Check it, it is okay. Otherwise if that is the idea and the thought that will ultimately become universal, then India is in for great trouble.

Q: It is being said that the real sentiment behind all this is the desire for revenge against what the Muslims did in the past and so on. Would you say that in the demolition of the mosque, in that sentiment there is a difference?

A: The ingenuity of the BJP to orchestrate all these undesirable sentiments with a view to achieve their basic objective -- i.e. political power --- they have succeeded to some extent. When I say that there was no juxtaposition of the temple at the cost of the mosque, it presumes that sentiment was not predominant. Survey after survey you all have conducted. No body projected this that the mosque has to be demolished, only then the temple can be built. Just the contrary was projected. The same was projected in the two general elections in the open vote. So this time, for the BJP it was very central to their entire plan that the mosque should be demolished.

Q: You can look at that mandate in two ways. One, you can say it is only 30% of the votes. The other is, it has doubled in less than two years from 1989 to 1991. What does this kind of vote mean? We are all trying to understand the Hindu psyche.

A: It means that if such unscrupulous and ruthless attempts are not checkmated by people who should have better knowledge of what they want, who should know better, then why do you blame them? Hitler did not come to power on the basis of a mandate. He seized power. And once they come ....

Q: There is a strong sentiment among the Muslims that the Government is guilty of connivance in the whole process. How does the government tackle this perception?

A: Well, "connivance" is a very serious charge and I don't think there is any basis for making this

charge per se. But if this is the perception in the minds of some people, however small their number may be, or however big their number may be, there is a case for dispelling this. How it is to be dispelled, I can't be spelling out entirely on my own, but I think the Congress Party in whatever compaign now we are going to launch after this Working Committee meeting, will have to take this into account. As a political party, we cannot afford not to address ourselves to any kind of reservation, though it may not be true.

Q: Will you say that the situation of the Government today bears resemblance to the situation that Nehruji faced after the China War and even the earlier Congress Government faced after the Bofors issue came on the national agenda because the very legitimacy of the Government is as much under threat and doubt?

A: Well, in a democratic set-up, these things are what sometimes happens. But I don't see immediately that kind of thing here. We have to be very careful about it.

Q: In particular the authority and legitimacy of the Prime Minister is in doubt.

A: Well, the Prime Minister is the leader of the party and Prime Minister of the country. One thing we must be clear about: that for whatever happens when a certain government is in power, that government cannot possibly absolve itself of all responsibility. In a democratic set-up that is just not possible.

Q: Do you see a threat, however small, of militancy on the part of either the Hindus or the Muslims?

A: Well, in a sober and coherent analysis of the situation, one should not rule that out. That is how we will be preparing ourselves to see that it does not happen, and also in case even a fringe of that is possible, then we should be prepared to meet it.

Q: Do you believe in the argument that is would be realpolitik to go to the moderate forces among these communal forces and communal parties?

A: That is a very desirable way of going about it.

Q: That is better than banning them.

A: Those who have been shown time and again that they don't believe tried every trick of the trade including, to begin with, the assassination of Mahatma Gandhi, they will not change. In all the twists and turns of their actions, if you see over the last 45 years, the central point has never been given up.

Q: This cancer has grown. At this point, is it possible to remove the cancer from the body?

A: Well, if the cancer is there, and you don't even make an attempt to remove it, then you better have euthanasia.

Q: On the question of ban, the RSS and a couple of organisations have been banned, but a large

part of their front organisations still remain and banned organisations are not membership organisations. It is the strategy of these people to work through organisations which are not banned, like the members of the Bajrang Dal who were not formally associated with the Bajrang Dal will continue to work through ABVP or some such other organisations. How do you cope with that situation?

A: Well, it that eventuality arises, then we will have to think about that. I quite agree with you. I hope, it is Okay.

Q: Yes. off the record, one question.

A: Just a minute, even my tape should not have it.

Economic Situation of the Country is serious

14 दिसम्बर 1992 को दिल्ली में पी.टी.आई., यू.एन.आई., टाइम्स ऑफ इंडिया तथा हिन्दुस्तान टाइम्स मे संवाददाताओं के साथ चर्चा के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: To come together and try to devise some method to narrow the deep divisions that have been caused by the incident at Ayodhya on 6th December because the danger that lurks now is not to any party or established authority but the danger that now faces us is that whatever was consolidated as a national gain from 1947 to this time is in danger of disintegration. No one can choose to keep silent or turn his or her face away. And the Congress Party, as the premier party of the country, has a special responsibility in this regard and I am sure this responsibility, will be discharged by the party in all earnestness.

A: The first thing, according to me, is to help calm the communal passions that have been aroused.

Number two, all temples and mosques or any other place of worship that have been damaged in the riots anywhere should be repaired.

Number three, a broad alliance of secular, democratic forces must be forged without any delay so that the poison that has been introduced in the body politic of the nation/country is not allowed to spread.

There is one aspect which I feel should be of great concern to all of us and that is the attempt being made to communalise the majority community of India. (I thought you were held up somewhere). And since I believe that the Hindus have always been catholic and cosmopolitan in their outlook, we should make sure that this attempt does not succeed.

The minorities in India enjoyed full protection of the Constitution, the laws of the land and

from practically all the political parties. That commitment should not be allowed to weaken.

Q: Another question that the PM said on 6th that we have been betrayed by BJP, VHP and Bajrang Dal. Now the question is, now that you have banned VHP and Bajrang Dal and others, in this situation how can you expect that the BJP governments in the states will honestly implement it?

A: That is a matter which is still under discussion and no final decision has yet been taken. But I think this is quite obvious ....

Q: How do you trust them?

A: But it is quite obvious that it will be very very naive to say that we are going to be betrayed a second time over. Though a decision has yet to be taken, we cannot be betrayed a second time over by the same people. We have to be very careful in that.

Q: Have you taken any precautions to see that you are not betrayed a second time by them?

A: Well, I think the entire issue is under discussion and all that will have to be taken into account.

Q: One question that arises is, you have banned these organisations only three days ago. Before that they were operating lawfully in the country. You cannot hold them responsible for what they did when the organisations were lawful.

A: No, I am not saying that somebody can be held for somthing which happened when the organisation was doing what was lawful. But if at any point of time, you are banning them for doing something which was not lawful, only then you are banning them, otherwise not that we have not woken up suddenly one fine morning and said, we are banning them from today.

Q: I belive all the Chief Ministers have said, we are implementing the ban.

A: Implementing is not the point. That is what I am saying that that is the short point whether 'A' who on his volition says that he is a member of that organisation which today is a banned organisation, can on any ground be exempted from the action that is going to follow for all others? It is both a constitutional and also a practical issue.

Q: Many Members of Parliament are also RSS men.

A: Well, you see, you cannot be drawing a line. If you are convinced on the basis of whatever evidence you are using for convincing yourself and if you find that A,B,C or X,Y,Z are members of that organisation, I don't think, without doing violence to the very concept of the decision, you can distinguish. Now if somebody says today, hence forward I am leaving this organisation, then of course there is something to consider.

Q: Mr. Sunderlal Patwa has openly said that he is not going to dissociate himself from the RSS.

A: वही तो मैं कह रहा हूँ। On his own volition, जहाँ वह है, वहाँ तो कोई सवाल ही नहीं उठता

Q: From your information who are the Chief Ministers who of their own volition are saying that they are members of RSS?

A: Well, these are the three Chief Ministers. Not my information; it is as good as your information. Because that has been said publicly.

Q: All three of them. What have they said?

A: That they are all members of the organisation. But they will also implement.

Q: How do you visualise the social and political scenario in the coming months?

A: This might be a very far out theory, but I don't think it is a mere theory. That is why I have no hesitation in stating this. The socio-economic thinking, and whatever it is, of the communal elements can easily be perceived and understood as action with every turn of events in the last so many years, as a means to protect the vested interests in this country. You only have to look a little deep to find out the validity of what I am saying. Otherwise in an open way, you say, we are doing this, they are doing that, but deep inside is this thing. Now in that viewpoint, what will emerge in the next four or five months is very difficult to project and, sort of, predict. But we should be cautious that whilst we are looking for the danger in some place, the real danger may come up somewhere else. That is why what is very much needed is that normalcy in every sense of the term should be restored as soon as possible in the country. And if anybody wants to disturb this and wants to prolong the uncertainty that follows violence, speech and action, then we must be very clear what it means. After all the reforms and whatever some people may think about it, the economic situation in the country is quite serious. Now whether you disagree or agree with certain steps is one thing, but the economic situation needs to be, sort of, monitored closely and some steps need to be taken, especially to protect the weaker sections of society. Now if in all this turmoil, one thing goes wrong and we feel that suddenly the weaker sections of society are put under tremendous strain, that will not only affect the economic reforms or whatever it is, it will destabilise the country altogether.

Q: Don't you see that the entire political structure has failed in this?

A: Well, I cannot be making such a sweeping comment. Speaking entirely for myself, I do sometimes feel -- and mind you I am only speaking for myself, I am not saying anything about anybody else -- that perhaps as a politician, for whatever I may be worth, I feel a sense of loss, that somewhere something has gone wrong where perhaps we have Last touch with something. I don't know what somebody else feels.

Q: Can you draw a line? You can't draw a line. .

A: Not draw a line इसका यह मतलब नहीं है कि जो उनको पानी पिलाता है उसको भी आप बन्द कर दें।

Q: According to their own estimate there are around 25 lakh RSS members.

A: I don't know how true the estimate is, but whatever it may be, at least the activists and those who have been very active in this process, well they have to be. And that too not for all time to come. I mean this is one, what you call, shock treatment. So at least that process is halted. Otherwise this continuous inpouring of poisonous language, thoughts and activities -- that must stop. At least give some breathing space to the people of this country.

Hindus are cosmopolitan and Catholic in outlook

14 दिसम्बर 1992 ग्लोब न्यूज पेपर के श्री विल हरगुड के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: The Congress party is back on the top. How do you keep control of the country without factions separating and how do you keep the time-honoured ideal of secularism alive in India in spite of all that has happened?

A: Well, there is no doubt that not only the Congress party but the entire nation is passing through a very very traumatic period because it is not only a question of an event that had taken place at Ayodhya on the 6th of December, but suddenly all the beliefs and all the principles and ideals which held this country together even during the freedom struggle against the British colonial power and definitely after we achieved Independence, suddenly seem to have come under serious question and if we are not able to answer and cope with these questions in a mature way, the unity of the country in the future could be serious by jeopardised. The fate of the Congress party is definitely linked with that of the country, but it is secondary to that of the country. So we have to calm passions, take strong, imaginative decisions and re-focus the nation's attention on issues that are of substance to its present and also to its future. This is broadly how I put it.

Q: Mr. Rao in a very difficult situation. Do you think he responded well? It certainly was not his best hour.

A: Well, it was not the country's best hour. How could it be the best hour for the Prime Minister? But I think under the circumstances he has done what he could.

Q: Would you personally have done the same?

A: Well, I think this is the kind of talk which is totally out of place in the present juncture and I have very strong views on it. It would almost amount to saying that anybody, leave alone me, is entitled to take advantage of the country's distress. It is not done.

Q: Okay. The separation between the Hindus and the Muslims, how would you close that gap. May be it is not a serious thing ....

A: No, I think it is fairly serious. We should not under-estimate it. And that is why I said, mature and imaginative steps are needed and I don't think it is possible to spell out all of them straightway. But as we go along, we will have to see that these steps are carefully taken. And one message must go loud and clear: that we are determined to save this country from communal and obscurantist forces and that effort will succeed only when all sections of the people -- Hindus, Muslims, Christians, Buddhists -- they all believe, yes, there has been a jarring note in all this, If we try to say, you are responsible and he is not responsible, that is not going to help us. You see, the overwhelming majority of the Hindus in this country have always been very cosmopolitan and catholic in their outlook, not just now, but during thousands of years of our history, and it is to them that this nation owes its unity. Even when invaders came from outside, they came as invaders but stayed back to live as Indians. That is how this cosmopolitan, pluralistic nature of the country has emerged. Now if the Hindus are heard feeling let down, it is not going to help. We must also address ourselves to whatever their misconceived or well-conceived perceptions are. What we are seeing and have seen is that a party which has no commitment to the Constitution, laws of the land, to the proprieties has chosen to, what I would call, manipulate and inflamme the minds of people of one religion in the quest of power - political power -- which should be coming through a different process. Religion is not an issue on which people should be asked to vote for or against anyone. Well, this is precisely what has happened. All these things have to be brought out clearly and then the nation prepared to say, yes, we have done something which should not perhaps have happened, how do we go about it? Once that kind of mood comes in the country, I am quite sure we will overcome this also, as we have overcome many crises in the past. After all, it was a Hindu who shot Mahatma Gandhi and he came from the same kind of people who have today demolished the mosque. These are lessons of history which cannot be forgotten, should not be forgotten.

Q: It will set back the country's reform.

A: Well, it will definitely affect it, but that it should set back, that is one thing we will have to be careful about and take steps.

Q: Because in the past two years, the country has been moving towards getting ready to become a major player in South East Asia.

A: Yes, that is true.

Q: And you all have been working very hard, right?

A: Well, whatever capacity we have, we are trying to use it. Because after all we know unless the country is strong economically, political power is only half of what is needed.

Q: In my country -- America -- one of the problems we have is of Church and State, but we try to keep it separate. We strike a line between Church and State. When people feel very deeply about their religious faith and they feel that there has been an abuse, how do you get back into their minds to ensure them that the hatred which the world had seen when the mosque was attacked, can be resolved, that it will be cured, that it will be erased from people's consciousness. We have a big problem with Haiti in my country in the deep south. You certainly know about it. And still it is being worked out. It is not something which you are just going to leave like that. But I think it is much better. But your task to me seems to be far more complex.

A: At the moment it may appear so. But as I said, since the Hindu faith in what we call Hinduism over thousands of years of its history has never been parochial or sectarian, or have its minds closed to anything, it is a very catholic and cosmopolitan faith, that in my view is the only guarantee that we shall be able to overcome this. Had there been ingrained, what you call narrow mindedness in Hinduism, perhaps we would not have been able to come out. But since it is not, therefore I am sure in due course it will be exorcised from our body politic, it I may use that word.

Q: The Congress party, in two years, will be up against elections, is that right?

A: Yes.

Q: Do you think you will be strong?

A: Yes, I think Congress will come back to power.

Q: Are you sure about that?

A: Well, as I said, I count on the sagacity and wisdom of the people. There is no other guarantee for the country.

Q: This is my first visit to your country.

A: I see.

Q: And I find it a very fascinating place, in its history, in its people ....

A: Its geography.

Q: Yes, in its geography. I guess you are as big as America, landwise.

A: No, America, landwise, is slightly bigger.

Q: But you have many more people.

A: Yes, people-wise we are definitely.

Q: You have many more people and that makes for a very interesting picture. You certainly have talents in this country to become a major economic player in South East Asia. Do you think so? Is it possible?

A: I think that is possible and I have a firm belief that it will happen.

Q: Are you going to try to come up with a plan to deal with the State Governments who took advantage of this situation, the banned organisations .....?

A: Well, that is under discussion at the moment.

Q: So which year did you come to Parliament?

A: I was here for a small stint from 1985 to 1986.

Q: Okay.

A: And now this time, 1991 to .... Previous to this, I was in the State Legislature.

Q: Oh, you were in the State Legislature.

A: Madhya Pradesh where I came for the first time in 1957.

Q: Which State?

A: Madhya Pradesh. And I was the Chief Minister there.

Q: You were in the State from 1957.

A: Then I had a nine month stint as the Governor of Punjab from March to November.

Q: In which year was that?

A: 1985, When this accord was signed between Rajiv Gandhi and Longowal. You must have heard of that.

Q: Yes.

A: I was the Governor at that time.

Q: It must have been a very disturbed time.

A: Oh, yes, very disturbed.

Q: You were very close to Rajiv Gandhi?

A: Well, he was our leader. He had trust in me, this much I can say.

Q: After the assassination of Mr. Rajiv Gandhi, Mr. Rao was not, sort of, the natural successor, was he?

A: Well, he was the senior- most amongst us.

Q: Oh, he was.

A: Yes.

Q: How old is he? 73. Is that correct?

A: That you can check. That is a factual thing.

Q: I can get that from who's who.

A: Oh, yes.

Q: Were you ever surprised when he became the Prime Minister?

A: No, we all helped him. He was elected. We were not surprised. We were actually involved in the process of his election.

Q: Now can you briefly explain to me how did it happen? After Rajiv Gandhi was assassinated, did he have to run in the Congress party for an election?

A: He did not have to run.

Q: Like in America?

A: No, it is not like in America. Here the Congress party within itself informally took soundings from all people, and more or less everyone agreed that at this moment of crisis we must have him as the senior- most leader and see to it that the party maintains its unity and addresses itself to the very stupendous task that lay ahead. That realisation brought about the situation in which every one joined in helping him to become the Prime Minister and then helping him all along to run the country.

Q: So your plans right now for the future is just to help the party as much as you can.

A: Absolutely. If the Congress party goes under at this moment of time, there will be serious problems for this country because this is the only cohesive and spread out party all over the country. And with all its faults, is the only vehicle for national communication.

Every religion of the world has a total freedom and respect in this country

16 दिसम्बर 1992 साउथ-एशिया आस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन के ब्यूरो प्रमुख तथा टाइम्स ऑफ लन्दन के संवाददाता श्री क्रिस्टोफर थॉमस तथा द गार्जियन के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q: Mr. Singh, you said that you think this is the most serious crisis the country has faced since partition - why do you say that?

A: Well, I say that because there are many things for which this country has stood for, not since Independence, but what I may say for many, many centuries - that is the commitment to preserving human dignity and all that goes with it and an atmosphere which allows inter-dependence to become a national ethos and so many religions practically every religion that you can think in the world has a pride of place in this country with total freedom and equality. I think, all that has been brought into question by what has happened at Ayodhya on the 6th December. The aftermath of that is very obvious to every one. Now when that kind of thing happens, it means that something very precious and very important is under threat. This is what I meant.

Q: The government of which you are a part, what did it do wrong; I mean, in terms of protecting the mosque, particularly, if some mistakes were made, what were the mistakes?

A: Well, I think, the mistake that I can think of is that we trusted the party and some organisations, not only we trusted them but the assurances that they gave to the Parliament, to the National Integration Council, to the highest court of the country, all those were violated and this is what has happened because of that.

Q: In the period ahead, the decisive leadership - should the Congress be more decisive in future about handling these issues?

Q: Do you have any sympathy with the people on the Left, who say that the economic reform process is, perhaps, going too fast or is not being implemented with enough care to ensure that ordinary people are not hurt?

A: Well, you see the reforms have been thought out by our government very carefully and we have taken into account the possibility that some times and also experience shows that when these reforms are actually implemented, there is hardship to large number of people. We are already on our own trying to ensure that this hardship is not unevenly distributed and the weaker section of the society in India must be protected to the extent possible from any of the hardships that are bound to come because of this.

Well, the Left has its own perceptions about it and they have come out with certain things, but on this the government is absolutely clear that we have to go ahead with these reforms, of course, taking care that it is not too harsh on the weaker sections of the society in India.

Q: There is a perception that an element of hysteria has crept into the relations between India and Pakistan and this is a bad thing for both the countries. What could be done to change the hot atmosphere?

A: Well, I can only say on the basis of what has happened so far that at least India is not overtaken by hysteria on this account and time and again we have extended our hand of friendship. We have made appeals. We have made special efforts to normalise the relationship between India and Pakistan. What has really fouled up the whole thing is the presence of terrorist elements in the State of Kashmir and Pakistan, who draw sustenance from across the border and this has been very well documented over the years. Now we feel that there is no justification for any government or any country to interfere in the internal affairs of any other country in such a blatant way.

Now if Pakistan does not see that this is something which should not be done, then we have no choice but to protect the stability of our country. But we would be very happy to resume and have absolute normal relations with Pakistan, if they could over come this urge to interfere in our affairs. There is no hysteria on our part.

Q: The third aspect of communal tension - there is a feeling in Washington that it could escalate eventually into a fourth war between India and Pakistan and that there is a possibility that that war might turn nuclear. That is of concern world-wide.

A: Thanks very much. My colleague can slip in for a couple of minutes more.

Q: The Parliament today was once again broken up in disorder. It is now nearly 10-11 days after Ayodhya event. The main democratic institution of the country has not managed to remain sensible on this crisis. This is doing damage not only to the reputation of the Congress, but to the entire fabric of the Parliament, as a leading democratic institution.

A: Well, what you are saying is very much correct and we want that Parliament should run and practically all political parties barring the BJP want the same thing to happen and I hope better councils will prevail. We cannot allow Parliament to be obstructed, but as you know, in these matters in a free country, the limits to behaviour are not set by somebody else, but limits of behaviour are set for everyone by themselves.

Q: But is there no machinery or process for suspending those, particularly, unruly Members?

A: Well, there is a machinery, but I think, it should be used sparingly. But if it comes to that, what choice do we have.

Q: Mr. Singh, the dismissal of the BJP government, this will not in fact change the principles of BJP, which seemed to be initially on the run and now we have got Mr. Advani arrested - the dismissal of the governments - isn't there a danger now that the whole atmosphere is going to turn round the BJP is practically to come out as the sole representative of Hindus.

A: If you accept the premise that the BJP is the sole representative of the Hindus in India, only then can you come to this kind of conclusion. We know that that is not the reality, as has been shown up in 1989, 1991 and so many other elections prior to that even when passions were almost as aroused as they are today. And therefore, at least it is my belief and it is the belief of lot of people in the country that when elections take place for the State Assemblies, it is not only that passions will be the deciding factor. Many things more will come into. The Judgement on the work of these governments- they have been functioning for more than two years, the kind of administration they have given, the defaults on so many accounts that they will all be taken when an election takes place and I don't think that will be just slipping back. But this is something which will only have to be seen when it happens.

Q: I was told there was a meeting of Congress MPs from the Southern States within the last 24 hours, is that so?

A: I don't think so. I mean MPs are meeting all the time, but there has not been any special

meeting for anything.

Q: Is there a Cabinet meeting daily?

A: No. It has not met today and there is no schedule for any meeting today.

Q: Do you think there has been time since Independence that India's relations with Pakistan are very low now?

A: Well, the immediate after math of the partition of this country, those feelings had been greatly exercised.

Q: Since then?

A: I don't think since then - of this nature.

Q: On an entirely different issue; are you happy with the way things are going on in Punjab at the moment?

A: Well, Punjab has come a far distance from where we were, say two years ago and I cannot say that I am fully satisfied, but we have definitely made a lot of improvements and I was there only a little while ago. There was a much greater sense of freedom and the atmosphere was much more relaxed. There was a very big gathering there that had gathered for a rally and one could see that they feel that there is a new atmosphere. We still have terrorists having pot-shots and that means that we should not be ignorant of the rangers and we should try to control them. But the situation in Punjab has improved.

Q: In this case what is the comment generally made is - this is because of the indecisiveness rather than action - is it because of the indecisiveness of the leadership? Is he losing grip?

A: Well, I know these things enter the speculative field very quickly, but I don't see him losing grips and he is very, very sad because of the manner in which he has been really betrayed by people in whom he thought trust could be placed, but he is not losing grips and the party wants to stand solidly and help him in overcoming the situation because we know very well that the government of this country has to overcome these things without an instance of disarray.

A: Of course, it was a collective decision.

Q: And the Hindu idols - what is your view on the most recent happenings?

A: Well, all that is related to that. When a decision takes place - I know in the cut and dried manner in which these things are thought of and more so in the West. It is not the way we think of it here and that is why effort was on, but even people have very fixed ideas, could we call a meeting ground so that this thing could be resolved in a manner which usually has been happening in this country.

Now we have got a rude shock, while we were on that route. That is why I think, we would prefer to let the atmosphere calm down so that we can again pursue that kind of effort. This is the situation as of the moment.

Q: What about the measures you are going to take now against the emergence of violence in BJP ruled States?

A: Well, I cannot rule it entirely, but it is now our responsibility to see that it does not emerge. I do hope that the BJP and the other people in the States will also not take that adventurous route because violence does not help anyone. The sufferers are innocent people.

Q: To one observer, I was speaking yesterday; a long time observer of Indian affairs, he said that he is sure the BJP is really a paper tiger and that when they come to the South, they would just not be burrying as something ....

A: Well, I won't use such a harsh word because after all they are a political party in the country. We are certainly political adversaries but we are not enemies. But my own experience also says and that is why that kind of confidance, that when the time comes for a real test of will, may be a democratic will, I am quite sure, that the BJP will blink.

Q: And you got no concern that this combination that you were talking about of banning of arrested leaders, banning of organisations, possible dismissal of their State Governments, possible pushing of these people out of the election. Commission may add up to what some people call a new Emergency.

A: New Emergency - well, I don't think anybody has even the remotest idea of imposing an emergency and I don't think it will come to that, but you see, by all means possible, a democratic system has to protect itself. We cannot be left at the mercy of people, who do not hesitate to throw all the rules, restraints and the parameters in which the democracy functions for the sake of their own interest and I am sure the Indian democratic system will be able to protect itself.

Q: O.K. thank you.

A: Thank you.

भारतीय संस्कृति को व्यापक रूप में देखें

18 दिसम्बर 1992 दैनिक जागरण के श्री शैलेश शर्मा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

प्रश्नकर्ता : इस्लामिक संस्कृति और भारतीय संस्कृति में कोई भेद महसूस करते हैं आप?

श्री सिंह : देखिए, 'भारतीय संस्कृति को अगर हम उसके व्यापक और सही रूप में देखने की कोशिश करें तो उसमें

बहुत सी संस्कृतियों की अलग-अलग धाराओं का समावेश है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ दुनिया भर के लोग अलग-अलग समय पर अपनी-अपनी विचारधारा, अपनी संस्कृति, धर्म और रीति रिवाज लेकर आए, लेकिन इस देश में कुछ ऐसा अनोखापन है कि उसने सबको इस देश को अपना घर मानने में सहायता की। यही भारतीय संस्कृति है जिसमें क्रिश्चियन, इस्लाम, बुद्ध और जौराष्ट्रियन - ये सब धाराएँ मिलकर ही भारतीय संस्कृति का स्वरूप धारण करती है।

प्रश्नकर्ता: नहीं मेरा सवाल यह था कि इस्लामिक संस्कृति से भारतीय संस्कृति को आप कहाँ अलग पाते हैं, कहाँ भेद पाते है?

श्री सिंह : मै कह रहा हूँ कि जब समावेश है तो उसमें भेद का कहाँ सवाल है। अलग-अलग धर्मों के सिद्धांत अलग है, उनके रीति-रिवाज अलग हैं, लेकिन सब मिलकर भारतीय संस्कृति का निर्माण करते हैं। यह मेरे कहने का मतलब है। आप भारतीय संस्कृति की धारा को क्रिश्चियनिटी से, जैनिज्म से, इस्लाम से या जुडाइज्म से अलग नहीं कर सकते। जैसे एक रस्सी होती है, उस रस्सी में हजारों रेशे होते हैं जिनसे मिलकर वह रस्सी बनती है, उसी तरह भारतीय संस्कृति है। यह तो हमारा सौभाग्य है कि भारत इस प्रकार का देश है।

प्रश्नकर्ता: इस तरह हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति तमाम संस्कृतियों का मिश्रण है जबकि इस्लामिक संस्कृति अपने आप में एक संस्कृति है।

श्री सिंह: इस्लाम धर्म अलग हो सकता है, लेकिन संस्कृति और धर्म तो एक नहीं है। इसमें गलतफहमी हमें नहीं रखनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता: विभिन्न राजनीतिक दलों पर जो प्रतिबंध लगाया गया, जैसे जमायते इस्लाम, आर.एस.एस., वी.एच.पी., मुस्लिम लीग और जो दूसरे इस तरह के संगठन हैं, उन पर प्रतिबंध के बारे में आपकी क्या राय है?

श्री सिंह : जो संगठन खुलकर साम्प्रदायिक आधार पर काम करते हैं, उन पर प्रतिबंध लगाया गया। जो ऐसे संगठन हैं, जैसे आर.एस.एस., उससे मिला-जुला संगठन मालूम होता है इस्लामिक सेवक संघ, उस पर बैन लगा है। ऐसे आर.एस.एस. की बहुत-सी अलग-अलग शाखाएँ और अलग-अलग संस्थाएँ हैं।

प्रश्नकर्ता: एक बात चली है पार्टी में कि एक पूर्णकालिक अध्यक्ष होना चाहिए ताकि जिम्मेदारियों का बँटवारा हो और कार्य सुचारु रूप से चले। इस मामले में आपके क्या विचार हैं?

श्री सिंह : मैं समझता हूँ कि इस समय जो काम चल रहा है, उसमें कोई दिक्कत नहीं आई है, जब कभी कोई ऐसा मौका आएगा तो बात अलग है।

प्रश्नकर्ता: तो क्या आप आवश्यकता महसूस करते हैं?

श्री सिंह : देखिए, मैंने पूर्व में ही कहा है कि केन्द्र में तो इन दोनों पदों को एक साथ रखना कोई अनुचित नहीं है और इस मामले में जो कुछ निर्णय लिया जाना है, उसमें श्री नरसिंह रावजी को अपने विवेक से निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र छोड़ा जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता: तिवारीजी जैसे तमाम वरिष्ठ काँग्रेसी नेता हैं जिनकी कि पार्टी के अंदर उपेक्षा हो रही है तो क्या पार्टी के हित में यह उपेक्षा बहुत लंबे समय तक उचित है? आप क्या महसूस करते हैं।

श्री सिंह : नहीं, कदापि उचित नहीं है और मैं आशा करता हूँ कि यदि ऐसी उपेक्षा की बात है तो न केवल उसे समाप्त करना चाहिए बल्कि तिवारीजी जैसे वरिष्ठ नेता को पूरी तरह से योगदान देने में मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता: भा.ज.पा. के खिलाफ एक बड़ी लड़ाई है और भा.ज.पा. के पास पूरे देश के अंदर उनके अलाइड संगठन हैं। तो आपके पास इस तरह के कौन से काडर हैं और इस लड़ाई को किन मुद्दों पर किस तरह से लड़ेंगे?

श्री सिंह: ऐसा है कि, उनके पास काडर है, कानाफूसी के लिए बहुत बड़ी सेना है, यह सब सही है। लेकिन काँग्रेस कोई हल्की-फुल्की जमात नहीं है। हमारे यहाँ पार्टी में कहीं परेड नहीं होती है, कोई दक्ष नहीं बोलता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पार्टी की रीढ़ कहीं कमजोर है और जब-जब भी चुनौतियाँ आई हैं, पार्टी ने बिल्कुल दृढ़ता से उनका मुकाबला किया है। मैं समझता हूँ कि आज भी पार्टी के अंदर यह धारणा और भावना है, केवल एक स्पष्ट मार्ग और स्पष्ट निर्देशन की आवश्यकता है जोकि काँग्रेस को अपनी पार्टी और नेतृत्व की ओर से निश्चित रूप से मिलेगा।

प्रश्नकर्ता: बीच में यह संदेह व्यक्त किया गया था कि पार्टी की कमेटी की मीटिंग्स से आप कुछ मुद्दों पर असहमति व्यक्त करते हुए उठकर चले गए थे, जैसे कि वर्किंग कमेटी की मीटिंग थी .....

श्री सिंह: नहीं मैं तो कभी उठकर नहीं गया। यह दिल्ली तो अफवाहों का घर है। जो अपने तरीके से अपने लिए उचित समझता है, वह उस तरह की अफवाह फैलाता है। अच्छा हुआ, आपने पूछ लिया मुझे तो यह मालूम नहीं था।

प्रश्नकर्ता: एक इंदौर के सांसद हैं, उन्होंने आप पर आरोप लगाया है कि 64 करोड़ रुपए का आपने ऑफर किया था। उस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे? क्या आपकी इस तरह की कोई बातचीत हुई थी।

श्री सिंह : वह संसद सदस्या हैं और महिला हैं, इसलिए मैं और तो कुछ नहीं कहना चाहता, लेकिन अच्छा होता वह पूरे तथ्यों की जानकारी लेकर ऐसी टिप्पणी करतीं। मैंने किसी को एक रुपया भी देने का वायदा नहीं किया, 64 करोड़ रुपए तो बहुत होते हैं। यह बात सही है कि ऐसे जो प्रमुख महात्मा हैं या हमारे देश के संत हैं, उनके लिए मेरे मन में अत्यधिक सम्मान है। कुछ को मैं व्यक्तिगत रुप से जानता भी हूँ। जिनका नाम उन्होंने लिया है, वह इंदौर में गीता भवन के कार्यक्रम में कई दफे आए हैं। मैं भी उनके साथ उस कार्यक्रम में उपस्थित रहा हूँ। उनको मैं जानता हूँ और उस समय जब कि यह मामला ६ तारीख के पहले बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा था तो दो-चार लोगों से मैंने यह निवेदन किया था कि ऐसे समय में आप लोगों द्वारा देश को मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है, लेकिन न मैंने उनके सामने कोई माँग रखी और न पैसे की बात हुई, कुछ नहीं। मैं समझता हूँ कि अपने देश के संत-महात्माओं से इतना भी निवेदन नहीं कर सकते और सब के ऊपर विश्व हिंदू परिषद की ही मोहर लगाने में लोग तुले हुए है, यह देश का दुर्भाग्य है। इतनी बात मैंने कही थी, इसके अलावा मैंने और कुछ नहीं कहा। और कई लोगों से कहा था, कोई अकेले उन्हीं से नहीं कहा था।

Threat from unconstitutional forces is increasing

19 दिसम्बर 1992 दिल्ली प्रेस, क्लब में पत्रकारों के साथ चर्चा के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

President of Press Club: On behalf of the Press Club and on my own behalf, I welcome Mr. Arjun Singh to this meeting. Events of the past six weeks or two months have shown that perhaps he was the only Minister who somehow was confident that things are not going to revert - I am of course talking about Ayodhya. I don't know whether he is No. 2, or No. 1 or No. 6, but he has shown to be a man who knew what was happening. I am sure he would not like to disown responsibility for it because he was a part and parcel of the government. Mr. Arjun Singh. Only members from the club will ask questions and I would request that everybody should identify himself and the organisation to which he or she belongs.

Shri Arjun Singh : There is a small statement I would like to make. Of course, it is not by way of explanation or trying to justify whatever you think I am trying to justify, but this is about what faces us today and how we have to proceed further. So with your kind permission, I would like to read it out:

"Our nascent Republic is passing through the gravest crisis since its inception. As citizens of a free country, we gave to ourselves an edifice founded on equality, liberty, democracy and secularism. Our founding fathers invested our Constitution with the sanctity that grows out of these concepts. Whatever we have been able to build since then as an independent country rests on them. Each one of them is under threat today from forces which had never accepted these premises as valid.

The future of our nation very much depends on the fact that we recognise this threat with all its ramifications and take courage to meet it unitedly. We must be very clear in our minds that no alibis can be presented for the onslaught on these cherished ideals and no alibis can be projected for not facing the challenge unless we decide to allow India to be fragmented and lose its identity.

It is not a time for recrimination, nor is it a time for justifying or controverting any theme or thought. This is essentially a time to search our hearts and decide where on this side we want to stand in the battle for the hearts and minds of millions of our country men. That alone ultimately will determine our destiny. Shall we stand out for our commitments to democratic and secular principles, or shall we allow the dark forces of communalism and casteism to seep into our national consciousness? If we allow this to happen, then ultimately it will weaken our resolve to struggle for the preservation of the ethos of India which has given our country an identity of which all of us are proud. Let us make this choice willingly and with determination. Mother India demands nothing less than this from each of us.

President : This is a ritual which I forgot. I overlooked it Sir.

Shri Arjun Singh : It is time to forget many things.

Shri. Pramod (Gujarat Samachar) : In your statement you have said that no alibis can be projected for not facing the challenge. In the context of what happened on 6th December, do you think that a demand for Prime Minister's resignation for dereliction of discharging his constitutional responsibility is valid? Should not the government resign on this count?

Shri Arjun Singh : I think my preface remarks that this is for the present and the future.

Q: What is your reaction to the most disconcerting and humiliating experience in the context of Ayodhya in which your party, you and the Prime Minister tried your very best to retrieve the situation and solve it amicably?

A: Well, I won't bring in the word ``humiliating". Yes, distressing, yes, and also very sad. The Prime Minister made every effort that could humanly be possible to bring about an amicable solution to this very vexed problem and that it did not happen is now before you and the reasons for which it did not happen are also before you.

Q: Another supplementary for that, Sir.

A: **President :** We will come to second round later.

Q: You don't mind this short question.

A: **President :** Okay.

Q: It is obvious, Mr. Minister, that the real problem that the Prime Minister particularly and you and your party face is being devalued in the streets, mohallas and suburbs all over India for which there has been grisly evidence for the past two weeks.

A: Well, that is a problem which faces the party and as I have just said, faces the country also and that is where ultimately in a democracy the battles are fought - not street battles, mind you, but democratic battles - and that is where they are lost or won. I am in no way trying to diminish that.

Mr. Padmanan Jha : You have said that the Prime Minister did everything humanly possible to reach an amicable solution. Do you think the Government did everything humanly possible to save the structure from being demolished?

A: In the context that all these events were taking place, having chosen to take the path of negotiations, I think that was the path which had to be followed to its logical conclusion. It was another thing that the other parties to this effort had chosen something else.

Q: My question has not been answered.

A: Yes.

Q: The question was : Do you think that the Government did every thing that was humanly

possible to safeguard that structure to save it from being demolished?

A: Well, if you want a literal interpretation of the Constitution, I think, yes. But as I said, there was something else which was being attempted and in that attempt, as the Prime Minister has said, he was truly betrayed.

Q: Mr. Arjun Singhji, what is your or Working Committee's specific action programme to fight communalism?

A: Well, I will not be able to detail out all that the Working Committee is going to decide.

Q: What is your programme?

A: I am coming to that. I think we should draw up a plan which takes care of all the specific aspects on which the communal forces have based their campaign for the last three years or more and we should be able to take this case across the country, to every corner of the country, in co-operation with all those people who would like to become party to it. Thereby we can prove that the premises on which these forces are trying to base their case are not only false premises but are in fact distorted premises. So far as the actual details are concerned, it will be decided on the 22nd.

प्र: **अनिल त्यागी:** मैं बड़ा हाइपोथेटिकल सवाल पूछ रहा हूँ इससे पहले कि आप कहें। मान लीजिए कल को चुनाव आ गए तो चुनाव में क्या किसी नए ध्रुवीकरण की कल्पना देखते हैं? दूसरा यह कि क्या उस ध्रुवीकरण में पुराने काँग्रेसियों को जो दूसरे दलों में हैं उनको इस ध्रुवीकरण में काँग्रेस के साथ मिलाकर चुनाव लड़ने की कोई योजना आप देख रहे हैं?

उ: चुनाव तो एक प्रक्रिया है जो किसी समय पर प्रजातंत्र में अपनाई जाती है एक फैसला लेने के लिए। चुनाव को केन्द्रित करके ही ध्रुवीकरण की बात इस समय मैं समझता हूँ सोचना उचित तो मैं नहीं कहूँगा लेकिन शायद इस समस्या को समाधान के लिए या इस स्थित का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। इस समय तो जितने भी लोग इन शक्तियों से संघर्ष करने के लिए तैयार हैं, एक व्यापक सहमति के आधार पर, उस संघर्ष में साथ जोड़ने की जरूरत है। उसकी परिणति किस चीज में होती है, यह अभी से अंदाज लगाना शायद उचित नहीं होगा।

Q: **Mr. Balachandran:** On December the 6th we had a national tragedy of unprecedented magnitude. Don't you think in the name of political morality, the Prime Minister should have resigned or at least gone through the motions of resigning? Now you are explaining being a senior Minister in the Cabinet. Would you have also resigned?

A: This is a very ungentlemanly question. The fact is that the Prime Minister has very candidly... How can the mike fail in the Press Club? The Prime Minister himself has very clearly said what has been the situation and why he is not resigning. I have no reason to doubt what he has said and I think that is where the matter should test.

Q: **रमेश बतरा** : क्या आप यह बताएंगे जब राष्ट्रपति शासन उत्तर प्रदेश में लगा शाम को उसके बाद से 8

तारीख की सुबह तक सेन्ट्रल फोर्सेज ने कोई कार्रवाई क्यों नहीं की अयोध्या में?

उ: कार्रवाई करने की जिम्मेदारी तो फोर्सेज की होती है और उसमें लॉजिस्टिक और अन्य बातों को देखकर उनको फैसला करना पड़ता है और कोई कारण नहीं है।

Q: **Brij Bhardwaj** - (Hindustan Times): I Would like to ask you one question which relates to your responsibility as a Minister. You as a Minister were responsible for the attempt of the government to have an understanding with the BJP under which you got their man elected as Deputy Speaker. Subsequently you had an understanding with the BJP under which you were looking for a solution of the Ayodhya problem, in which now you say you have been betrayed. But for the failure of this policy don't you think some heads should roll?

A: I don't think it would be correct to relate the election of the Deputy Speaker to this matter. You all know very well the context in which the election to the office of the Deputy Speaker took place and I don't have to repeat all that over again because you are fully aware of it.

Q: The second part of my question has not been answered.

A: Kindly repeat it.

Q: In the context that you deliberately followed a policy of negotiating with BJP and having cooperated with them, shouldn't somebody pay the price for that policy which has led to such a disaster in the country?

A: Well, the policy of negotiations was not only with the BJP; there were other parties to it.

Q: They are not responsible for it; you are responsible for it.

A: I was saying in answer to your question that the negotiations were being held with not only BJP - perhaps BJP was totally out of it - but with the VHP and saints and the Babri Masjid Action Committee was there. The whole thing was put out of gear by the sudden declaration of Kar-seva on the 6th December before the third round of negotiations could start. This was the factual position.

As to why that path of negotiations was followed, I think it has been fairly well explained by the Prime Minister and I don't think we should now be going back and questioning what he was doing because we accepted what he was doing.

Q: Will the culprits of Ayodhya be punished like the culprits of 1984 riots or will it be something different?

A: I am sorry this kind of comparison is unfortunate. But I am not one of those who believe in letting anybody escape especially where a crime has been committed and the enquiry by the CBI is on, judicial inquiry is also on and I am sure all those who are guilty of participation and it is proved that they are, they shall be punished.

Q: **Mr. Jha**: Your colleague, the Home Minister, has declared in Parliament that the Centre could

under Art. 355 of the Constitution deploy forces in a State without the permission of the State Government. He has also told that the Cabinet had discussed that particular provision of the Constitution. Why is it that after demolition you now say that you had no constitutional recourse except under Art. 353(A)?

A: You see, deploying forces is one thing and using them effectively in another thing. As you must be knowing an effort to put the force was made and on that day, the local authorities, under the directions and instructions of the Chief Minister, did not allow the forces to go ahead. And that clearly explains why Art. 356 had to be imposed.

Q: **Neerja Chaudhury**: The Home Minister had promised the country a contingency plan. When the mosque was being demolished for six hours there was no evidence of this contingency plan. Don't you think the Home Minister should step down?

A: Excuse me for saying, Madam, that don't ask me to issue edicts about anybody stepping down or not, but I think the circumstances in which all this happened has been explained to you in Parliament and statements have been made. I think that is the situation that existed.

Q: There is the real problem of accountability of government and somehow you are skirting that issue.

26927
CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.S.E.L. BHOPAL

A: I am not skirting that issue. That accountability in any case is there but there are circumstances which created a certain situation where straightaway you cannot say that this is right and that is wrong. If ultimately as I said the people are the final arbiters, they will take their views and decisions when the time comes.

Q: **Ms. Chopra** Mr. Singh, you just now said that the people have accepted the Prime Minister's and your Cabinet's position. Are you planning to go in for a referendum on this issue? How do you know that the people have accepted it?

A: I think you are putting something before something, Madam. What I said was that the process of negotiations which the Prime Minister had adopted, the country has accepted that. That is what I said.

So far as the referendum is concerned, I don't see any reason for a referendum. Well, if the BJP is that sure, I think they have 117 or 119 M.Ps; they should resign and let the people decide that.

Q: Mr. Singh you and your party joined hands with the BJP to bring down the previous government in 1989.

A: Well, that was a no confidence vote and result was what you are saying. But there was no question of joining hands with anyone. We had our reasons to vote for the motion; they had their own reasons.

President: Dalip Cherian. Where are you?

Q: **Dalip Cherian-** Sir, there is a ominous similarity between what is happening now and what happened in Iran in 1979 to the extent that you had mullas with spirit of sacrifice and martyrdom at their heart marching through the streets of Teheran, wave upon wave, and then a very motivated and infiltrated army and the police refused to shoot at them. Do you foresee a similar scenario in India where the spirit of sacrifice and martyrdom has already permeated the Hindu militant movement on the one hand and we have evidence of police and army - army to a lesser extent, but we have the former Generals and what not to support this - having been infiltrated on the other? In the face of these similarities, could this be a valid argument?

A: You will kindly permit me, I would not like to answer the question about the situation in Iran, now or then, because you should not be commenting on what has happened or what is happening in other countries. I can certainly say about my country that I don't see that that situation has developed because in this country whatever may be the temporary difficulties and indications that may be coming here or there, In India the general mass of people - the authorities, the army and the police - have been doing their duty under very very difficult circumstances and we do not think that kind of situation will arise here.

Q: I must add to that as a supplementary. Mr. Arjun Singh, you have projected yourself as representing certain forces in the country today which do not represent the forces that apparently, according to my perception, Mr. Narasimha Rao is representing. Therefore there is a certain perception in the country today that you are projecting yourself as a rival to certain political forces which Mr. Narasimha Rao represents. Do you think this perception is correct? Or, if it is not correct then what are the areas where you can go with Mr. Narasimha Rao and which you cannot ignore?

A: For the reason of my being present here this afternoon before you, my good friend had requested me to come. It is not part of my projection.

So far as my views are concerned, I think those are the views which the Congress party has always held and Shri Narasimha Raoji as the President of this party is committed to uphold them .... Let me answer.

President : Will you please let him complete?

Q: Please specify.

President : We are not having a debate.

Shri Arjun Singh: No, I don't mind joining a debate and I don't mind that inquisition also, but at least let me have my say.

Narasimha Raoji is the President of the Indian National Congress. The views of the Indian

National Congress on all these matters of Communalisation of politics, trying to disrupt the normal working of political, social and economic forces, the effort that has gone on over the last four and a half decades to use religion by a certain set of people and party to achieve political ends -- the Congress party has consistently opposed it, sometimes with success and sometimes may not be with any success. That policy of the Congress party is the policy of the party and that is the policy of the Prime Minister and I wholly agree with that.

प्र: **अनिल त्यागी** : अभी तक जो बातचीत हुई है उससे दो-तीन बातें स्पष्ट नहीं हो पा रही हैं। आप साफ-साफ शब्दों में बात स्पष्ट कर दीजिए। पहली यह कि आप बीजेपी से कॉंग्रेस में रहते हुए कैसे मुकाबला करेंगे? क्योंकि आपने कॉंग्रेस में बीजेपी से लड़ाई की अगुवाई की है। दूसरे यह कि 72 घंटे में 6 तारीख के बाद से उस पर सरकार मौन क्यों रही? तीसरा यह कि ....

Shri Arjun Singh : You are reserving the third question for later on.

Questioner : Yes, Sir.

उ: जहाँ तक पहला सवाल है बीजेपी से लड़ने का, मैं आपको इतना भरोसा दिलाना चाहता हूँ यदि मेरे भरोसे से आप संतुष्ट हैं। कॉंग्रेस पार्टी ही बीजेपी और जो उसकी विचारधाराएँ हैं उनसे लड़ती आई है, लड़ती रहेगी और लड़ेगी। इसलिए कॉंग्रेस के अंदर से ही उस लड़ाई को अच्छी तरह से लड़ा जा सकता है। जहाँ तक दूसरा आपका सवाल है, मैंने अभी-अभी आपको बताया है उन परिस्थितियों में लोकल जो हमारे कमांडर्स थे यह उनके लॉजिस्टिक पर निर्णय लेने का सवाल था, बीच में दो दफे जाने की उन्होंने कोशिश की लेकिन उन्हें उस समय रोका गया लिखित आदेश दिए गए। इसलिए एक घटना हुई जिसमें बहुत ही दुखद हादसा हो गया इस बारे में किसी के दो मत नहीं हैं। लेकिन अब कमीशन ऑफ इंक्वायरी बैठ गई है, जो करीब-करीब हर व्यक्ति, उसमें शासन भी शामिल है उसकी जिम्मेदारियों की विवेचना करेगी, रिस्पॉन्सिबिलिटी फिक्स करेगी। मैं समझता हूँ उस इंक्वायरी को कम्पलीट होने दीजिए तो उनके निष्कर्ष होंगे वह सारे देश को मंजूर होंगे।

Q: **Sanjay Kapoor** After the happenings on December 6, there is a growing impression that the country is hurtling towards a mid-term election. What are your views on this?

A: Well, I don't think we are hurtling towards a mid-term election. There is no need for a mid-term election.

Q: **Zafar Alam :** The Government has banned cassettes of Newstrack showing the capture and demolition of mosque and every thing. What is the basis for this? Are you thinking of imposing censorship in India?

A: I don't think censorship is at all needed, neither is the government entertaining any such thoughts. The specific cassettes and films are judged by the Censor Board and I do not know what is the reason they have said for not releasing it.

Q: Is the Government not in favour of what happened there not reaching the people. The message comes out that this is banned.

A: No, I don't think that is the message that comes out. But personally I myself do not know the reasons why the ban has been imposed. And some very eminent persons of the media had gone there and I am a little ashamed to recount what happened there. But I think there is no need to suppress news.

Q: In case the BJP if returned to power in the four States, will your party again remove them from power just because the Chief Ministers belong to a banned organisation?

A: Madam, that is one hypothetical question which I would like to answer. If the people decide in a manner, I think in a democracy we have no right to interfere.

Q: There have been efforts to bring the left parties close to the Congress party. How long will these continue? Do you foresee a victory for the Congress in the Budget Session?

A: I think one misconception should be removed -- that the Congress party has a numerical majority in the Lok Sabha, any way. That situation is not going to be altered. Of course, with our allies.

So far as the question of coming close to the left is concerned, it has been made very clear that this effort has a pointed objective -- that is to mobilise public opinion in this country against the communal forces. As of now, that is the objective and I see no difficulty in pursuing that objective.

Q: **Bawaji :** BJP says that it is secular. The government has been saying that it is secular. Secular scenario has been badly shattered -- Golden Temple, Babri Masjid, tomorrow it could be Bodh Gaya. Is it not the right time that we redefined what real secularism is?

A: I am grateful to you for this question because this has given me an opportunity to say something which I could not have said in answer to other pointed questions. Now what the nation perceives as being secular, what the nation perceives should be its ideals, it does not need any definition by somebody. This country is too old, ancient and learned enough to define what tolerance means, to define what respect for other faiths means. I agree with you that events have distorted this basic concept in India. That is why it is essential that all those who believe in these ideals and principles must come out and assert and re-assert what it means. Every political party should be made alert to it. That is how in a democracy, you bring certain things in the forefront,

Q: It is very essential for us to know whether you are going the whole hog on the question of secularism, on the question of how Prime Minister defines secularism and how you define secularism. This is very important for us to know. Then Mr. Rajesh Pilot has said something in Parliament about retired Army Generals training RSS. Is there any substance in that?

A: So far as the first question is concerned, I have no reason to believe and I have not seen

anywhere that Shri Narasimha Raoji is following anything other than what the Congress belief is in secularism. And therefore I have no hesitation in saying that I also believe in the same concept of secularism which Congress has been propounding for the last 70 or more years.

So far as the second question is concerned, there have been reports to this effect and I am sure Mr. Pilot would not have said something which was not totally true.

President, Press Club: On behalf of all of you I thank Mr. Arjun Singh. I assure him that he has not parted with anything that he should not have.

BJP has betrayed the Prime Minister

22 दिसम्बर 1992 आई विटनेस के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: Mr. Arjun Singh, many people believe that your Government has treated Atal Behari Vajpayee badly - do you accept this ?

A: No, I think that was something which happened in view of the Sec. 144 being promulgated and since there was no intention, in any way to harass or to inhibit Vajpayeeji, that is why subsequent steps were taken and he was asked to go and be present in Parliament.

Q: The action of the Government first forced him to go on hunger strike, for it is something as simple as permission for his party to function normally and then the Home Minister conceded all his demands in Parliament. Was this not a political error?

A: Well, I think, the Prime Minister acted in good faith. I would look at it that way.

Q: You arrested him in the middle of a no-confidence motion, even though he was the prime mover of that motion.

A: I think all these factors should be seen in proper perspective. As I said, whatever happened was done in a certain circumstance and as an act of good faith, the Home Minister accepted what he said. I think, we should leave it at that.

Q: Many people say that the result of all this has been that the Government's action has forced a liberal like Mr. Vajpayee into taking a hardline posture.

A: I think these things are more conjectural.

Q: You don't accept that this was a tactical error on the part of the Government.

A: Well, I think, it was in a certain background. The limit was also something which the Home Minister had thought and this should be the end to it. That is why I am saying he did; what he did subsequently in good faith.

Q: You don't think that this has caused any political advantage to the BJP.

A: I don't think so.

Q: Many people say that the Congress party has in the past few months not shown the ability to take initiatives. Do you think that the organisation needs to be re-vitalised?

A: Well, whenever a campaign is launched, it is obvious the organisation has to put in little more extra effort and I am sure the Congress is capable of putting in that extra effort and as the plan will envisage, everywhere we will be able to do that, of that I am absolutely sure.

Q: How different do you think the Congress party needs to make its attitude and its motivation, its aggressiveness, how different it should be from what it has been in the past few months?

A: Well, we should be going out and telling the people where the Congress stands on basic issues, where the Congress would like the people of India to take a stand, how do we deal with the problems under the framework of our Constitution; how do we see that the laws of the land are respected and implemented and how in all these issues, the BJP has defaulted. This will be the broad framework and I am sure there is a lot to say.

मध्यप्रदेश का विकास गरीब की प्रगति पर निर्भर

30 दिसम्बर 1992 दैनिक जागरण, रीवा के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

संवाददाता : हमारा सवाल यह था कि अयोध्या के मसले पर केन्द्र की पहल क्या होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: अब केन्द्र की पहल, पहले तो प्रधान मंत्री ने ही पहल की, उसमें शान्तिपूर्ण उसके, सबकी सहमति से समाधान के लिए। उसमें जो व्यवहार और जो आचरण यू.पी.सरकार और बी.जे.पी., बी.एच.पी. ने किया, वह तो सर्वविदित है। उसकी वजह से स्थिति एकदम बिगड़ी। और, अब तो जो पहल है, वह यही है कि यह जो बिल्कुल शिखर पर चीजें पहुँच गई हैं आपस के तनाव की वजह से, धीरे-धीरे उनको सामान्य लाने में जो भी कदम सहायक होंगे वह लिए जा रहे हैं। अभी जो दो-तीन दिन पहले एक वहाँ एप्रोच दिखाया गया है, सब की प्रतिक्रियाएँ भी आ रही हैं। फिर और देखा जाएगा कि अल्टीमेटली फिर उसमें क्या होता है, अभी तक तो प्रतिक्रियाएँ करीब-करीब बेलेन्स्ड है।

संवाददाता : जी। यह भ्रम बराबर बना हुआ है कि अयोध्या में रामलला के दर्शन हों या मुसलमानों की नमाज हो?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह तो स्थानीय उन लोगों के ऊपर छोड़ा गया है। वही स्थानीय शासन ही तय करेगा। यह सब बातें यहाँ से थोड़े ही तय होंगी। दर्शन तो हो ही रहा था। अब नई परिस्थिति में क्या हो, इसको लेकर हाईकोर्ट में रिट फाइल हुई है इलाहाबाद के। उसका कोई निर्णय शायद जल्दी ही होने वाला है, मैंने सुना है।

संवाददाता : क्या रामलला के दर्शन की अनुमति देकर यह सांकेतिक रूप से साबित नहीं कर दिया गया है कि

प्रधानमंत्री की नजर में वहाँ तदर्थ मन्दिर का निर्माण सही है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं। किसी मन्दिर का निर्माण किया गया है, ऐसी बात तो नहीं है। वह तो 40 वर्षों से चल रहा था। कोई आज शुरू किया गया है, ऐसी बात तो नहीं है।

संवाददाता : नहीं, वह 6 दिसम्बर को जो हुआ उसके बाद जो दर्शन करने की अनुमति का है?

श्री अर्जुनसिंह: अब, ऐसे देखा जाए तो इन लोगों ने उसको हटा ही लिया था, धर्म गुरुओं ने।

संवाददाता : होम मिनिस्टर ने कहा कल, औरंगाबाद में, कि वहाँ नमाज भी पढ़ी जा सकती है और दर्शन भी किए जा सकते हैं। इस तरह के परस्पर बयान से कोई टकराव की आशंका नहीं दिखती है क्या? यदि दोनों आ जाते है तो?

श्री अर्जुनसिंह: गृहमंत्री ने यह तो नहीं कहा कि नमाज पढ़ने लोग जाएँ उन्होंने कहा कि स्थानीय शासन परिस्थिति को देखते हुए अगर ऐसा करता है तो कोई ऐसी बात नहीं है। यह नहीं कहा उन्होंने कि ऐसा करने के लिए अनुमति दी जाती है।

संवाददाता : मध्यप्रदेश में राज्यपाल और वहाँ के सलाहकार के बीच में तकरार की स्थिति बनी हुई है सचिव के हटाने के सवाल पर, क्या इससे देश में गलत संदेश नहीं पहुँच रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। इसको जल्दी ठीक करना चाहिए क्योंकि ध्यान तो प्रशासन का रहता है। पूरे मध्यप्रदेश के प्रशासन तंत्र को जो छिन्न-भिन्न कर दिया था बी.जे.पी.ने ढाई सालों में, उसको फिर से नियंत्रित करने और जन-समस्याओं के निवारण के लिए केन्द्रित करने की आवश्यकता है। जितना जल्दी यह समाप्त हो, अच्छा है। और, इसके अलावा तो मैं क्या कहूँ।

संवाददाता : एक बात यह है कि मध्यप्रदेश के राज्यपाल काँग्रेस के नजरिए में सुविधाजनक नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: राज्यपाल कोई सुविधाजनक तरीके से थोड़े ही होते हैं। मैं तो उनका बहुत सम्मान करता हूँ।

संवाददाता : आज सभी तरफ से यह प्रोजेक्ट करने की कोशिश की जा रही है कि आपके प्रधान मंत्री के साथ सैद्धांतिक मतभेद हैं, व्यक्तिगत नहीं। उन मतभेदों के मूल में कारण क्या दिखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो उन्हीं लोगों से पूछिए, जो प्रोजेक्ट कर रहे है। मेरा तो कोई मतभेद नहीं है। और, जो भी समस्याएँ देश के सामने हैं उन सब में समाधान के लिए मैं तो सहयोग ही देता हूँ।

संवाददाता : भारत की बाहर के देशों में इसलिए आज इज्जत है कि यह देश धर्म-निरपेक्ष है, जैसा आपने भी कहा है। अभी 6 तारीख के बाद 7 तारीख को जब फ्लैश यह होता है टेलीविजन पर, गवर्नमेंट मीडिया से, कि वहाँ मस्जिद बनाई जाएगी। तो धर्म-निरपेक्षता की वह जो परिभाषा है, क्या ऐसा लगता नहीं है कि थोड़ा सा डिफर हो गई है? बाद में मंदिर की बात भी आती है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, उससे कोई धर्म-निरपेक्षता का सीधा संबंध तो नहीं है। आप एक बात तो जरूर महसूस करेंगे, यह बाबरी मस्जिद का गिराया जाना कोई सामान्य घटना नहीं है। उस मस्जिद का कितना मूल्य है, कितना पुरातन है, उसकी पृष्ठभूमि में क्या है, उस पर अलग-अलग विचार हो सकते है, मतभेद हो सकते है, लेकिन अगर धर्म-निरपेक्षता का कोई मतलब है, मूल्य है तो जबरदस्ती चाहे वह मस्जिद हो, चाहे वह मन्दिर हो, चाहे वह गुरुद्वारा हो, चाहे गिरजाघर हो कुछ लोग मन में ठान लें कि हमें इसको नष्ट करना है, कोई भी विचार उनका क्यों न हो, अगर ऐसी छूट और ऐसी स्वच्छंदता इस देश में होनी है तो धर्म-निरपेक्षता की बात करने की कोई जरूरत ही नहीं।

संवाददाता : अभी कुछ महीनों से, मतलब डेढ़ साल से करीब, आप बी.जे.पी. के खिलाफ बहुत ज्यादा मुखर रहे है। आपकी पहचान बनती दिख रही है कि आप प्रो-मुस्लिम हो रहे है, एण्टी-हिन्दू। यह धारणा बनी है लोगों में। उसको कैसे जस्टीफाई करेंगे आप सबके सामने?

श्री अर्जुनसिंह: मै प्रो-इंडियन हूँ और अगर भारतीयता की पहचान हमारी नहीं रहेगी या किसी की नहीं रहेगी तो फिर वह हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई की पहचान से इस देश का नागरिक बनने का कोई अधिकार नहीं रखता। सब नागरिक बराबर है, फिर धर्म हमारा अपना-अपना है। हम हिन्दू हैं तो हिन्दू धर्म मानेंगे, कोई और है तो वह अपने धर्म को मानेगा। हमें क्या अधिकार है किसी दूसरे के धर्म में हस्तक्षेप करने का? अगर हम किसी दूसरे धर्म का सम्मान नहीं कर सकते तो अपने धर्म का पालन भी नहीं कर सकते। यहां तक बी.जे.पी. का सवाल है, तो मैं कोई व्यक्तिगत आधार पर बी.जे.पी. के खिलाफ नहीं हूँ।....

संवाददाता : अभी कुछ दिनों पहले माधवरावजी के यहाँ कुछ लोगों की मीटिंग हुई थी, जिसमें एक स्ट्रैटजी यह तय की गई, वह चार-छह लोग जो हैं सांकेतिक ढंग से, इस ढंग से आपकी खिलाफत करेंगे एकजुट होकर के। आपने इस बारे में क्या सोचा?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने माधवराव सिंधियाजी से स्वयं पूछा था। उन्होंने कहा - ऐसी कोई बात वहॉ नहीं हुई और न कोई इस तरह की कोई मीटिंग करके फैसला किया गया है। मै तो माधवरावजी की बात को स्वीकार करूँगा। उसका एक कारण यह भी है कि उसके एक दिन पहले यहीं सब लोग बैठे थे, माधवराव भी थे, विद्याचरण भी थे, कमलनाथ भी थे, और लोग थे, दिग्विजय सिंह थे और हम लोगों के बीच में तय हुआ था कि किस प्रकार से हमें आज की परिस्थितियों में मध्यप्रदेश में बी.जे.पी. का मुकाबला करना है। तो मैं उसको सही मानूँ, कि समाचार पत्र में जो कुछ छप जाए और जिनके नाम छपे वह खुद ही कह रहे हैं कि ऐसा नहीं हुआ।

संवाददाता : आप मध्यप्रदेश के विंध्य क्षेत्र से आते है। वहॉ आपने काफी यात्राएँ की हैं वहॉ की अब तक की राजनीति में, लेकिन वहॉ जिस ढंग का जातिवाद है, आपके जैसे ऐसी पर्सनलिटी होते हुए भी बी.एस.पी. को वह सीट जा रही है या गई, फिर क्या गारण्टी है कि वह सीट आपको मिल पाएगी या फिर आप उसका मुकाबला कर पाएँगे? .....

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह तो संभावनाओं की बात करना कांटेक्स्ट में कोई मतलब नहीं। यह मैं कह सकता हूँ कि चुनावों में हो या इस तरह से हो, राजनीतिक पार्टी अपना-अपना प्रभाव जमाने की कोशिश करती है, कोई जातिवाद के सहारे करता है, कोई धर्म के सहारे करता है और कभी कभी लोग उसके प्रभाव में आकर फैसले भी कर देते है। ऐसी बात भी नहीं कि कभी होता नहीं। मेरी अपनी स्वयं की यह मान्यता है कि अन्ततः इन आधारों पर फैसला नहीं होगा और वही एकमात्र जो हमारा विश्वास है, उससे हमको ऐसा लगता है कि कोई बहुत बड़ा नुकसान नहीं होगा। यह बात कोई आज की नहीं है, यह तो मैं पिछले 35 साल से देख रहा हूँ और ऐसे ही हवा उठती है और फिर अन्ततः एक फैसला जो है और आधार पर होता है। यह तो अपने विश्वास के मुताबिक चलना चाहिए। जो फैसला भी होगा उसको मानना चाहिए।

संवाददाता : मध्यप्रदेश में चित्रकूट, अमरकंटक और उज्जैन में बी.जे.पी. ने अपने शासनकाल में बहुत बड़े

बड़े भूखण्ड कतिपय विश्वविद्यालयों के नाम पर, कतिपय धार्मिक स्थलों के नाम पर और दूसरे आर्गेनाइजेशन को, पर्टिकुलर फोरेस्ट लैंड, एलॉट करके वहां पर अपना बहुत बड़ा एक आधार खड़ा कर लिया है। अभी जब अयोध्या सुलग रहा है तो चित्रकूट मुख्य आधार और बिन्दु बना हुआ है, जैसे विन्ध्य प्रदेश के अखबार लगातार लिख रहे हैं। इस बारे में क्या कॉंग्रेस शासन, केन्द्र में बैठकर, कोई निर्णय लेगा?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, जो अनधिकृत और गलत तरीके से अगर कोई आवण्टन हुआ है तो उसका पुनर्वालोकन तो होना ही होगा, लेकिन सामान्य रूप से कोई गतिविधियॉं चला रहा है और किसी सिद्धांत या किसी नियम, कानून के खिलाफ अगर नहीं है तो फिर जानबूझकर किसी को छेड़ने से मतलब भी नहीं।

B.J.P. should observe rules of the game

दिसम्बर 1992 टाइम्स मेगजीन, अमरीका के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

Q: We will look at certain broader issues, but in that I would be more interested in issues....

A: Could we finish it in half an hour?

Q: Yes. What sort of man is our Prime Minister? I would like to record not according to the public references, but as you have known him.

A: After all, you are asking me something to be printed, so why should I not .... I have not known him for very long. I first came into touch with him only in a direct way in 1984, as I recollect, when I was the Chief Minister of Madhya Pradesh. And my original discussions with him were about land reforms and how land reforms are necessary and how they are check-mated. When he was Chief Minister, Andhra Pradesh, he had also gone through that and I was also experiencing that in Madhya Pradesh, not only in land reforms, but in other progressive measures that Mrs. Indira Gandhi wanted us to adopt and which we tried to implement there and we were faced with lot of resistance and opposition. Since then I have been in touch with him.

So, it is now eight years since I have known him.

Q: What is his advice or suggestion?

A: Well, his suggestion was always for a positive approach to land reforms and all progressive measures which provide the basic infrastructure for the socio-economic changes which we have as our objectives and which to a large extent has been completed, but also remains to be completed.

Q: What is his advice as far as managing the opposition or resistance is concerned to these land reforms?

A: Well, I don't recollect the precise advice he gave, but one thing that I recollect is that - he said,

you have to first make it absolutely clear that there is a line which you draw, below which you cannot go. There can't be any compromises on these issues beyond a certain limit. And I think, that is a very wise thing because if you give the impression that everything is negotiable or can be discussed and you can dilute everything, then ultimately nothing remains and of course, as a Chief Minister, his experience of handling it there, of course, Andhra Pradesh and Madhya Pradesh, they have a common border also. So, in some areas the problems are also similar.

Q: From your feeling what is the lesson that he learnt from trying to implement the land reforms in the area of Andhra Where the agitation was fuelled by the formers? What are the lessons he learnt from the entire discussion?

A: Well, I did not ask him about the lessons that he learnt. What he told me on his own, I certainly recollect. He said that some people who are basically against reforms were able to acquire a facade. They said, nothing to do with the reforms and that linkage could not be well understood by everyone. So, what happened on the other spheres, they went ahead much more fastally and the basic thing was left. So this is nothing unusual; this happens.

Q: Since then what impressions have you formed of him?

A: Well, my impression is that No. 1, he is a very level headed person and not likely to be pushed around by any point of view or any opinion or anything like that, but open to conviction also. I mean, he is not a man who is rigid totally in what he has made up his mind, that is the final thing, no. And the second thing is, of course, basic personality and integrity of that personality has never been in dire sort. These are the few things that make the crux ....

Q: Could you give me the example of lack of rigidity - he cannot be pushed around, but he is also not too rigid - can you give me any example of this?

A: Well, on the personal level, I perhaps may not be able to, because there was never an occasion where I could touch that, but this is the impression that - everyone with whom I have worked and who has worked with him, they also share this perception.

Q: Well, was there a Cabinet meeting where something like this has come out or some characteristics have come out?

A: Well, I do not know whether I can discuss what happens in the Cabinet meeting with you, but the general approach is, what I am telling you on a lot of issues.

Q: You have worked very closely with both Rajiva and his mother- how would you contrast with their style of functioning?

A: Well, I think, that kind of comparison, basically, I think it is not correct and proper to make those comparisons because each has been functioning in their own back ground and in their

own situations and personal angularities differ from person to person. So, I don't think that kind of comparison is needed, but what Madam Gandhi wanted to do and what Rajivji wanted to do, are now so well documented that I can hardly add anything to it.

Q: But at the level of dealing with a bureaucrat, for example, how well Mrs. Gandhi did and how well Mr. Rajiv did?

A: Well, Mrs. Gandhi dealt with bureaucrats firmly, but she had a very good understanding of their impulses and motivations and she used to give full freedom. Rajivji, because his experience of dealing with the bureaucracy was very, very short. So many times, he was not able to perhaps grasp the real reactions of the bureaucrats and that is where some times things went wrong, but on the personal level, he was also very, very considerate and very understanding of the advice given and as far as I know, I was in his Cabinet for about two years, he also never wanted to be given doctored advice that. 'I want you to advise me this way, so you now better do it this way'. That is where the Prime Minister or whoever is the leader of the team, has to give that impression that he is open to advice and yet can take a decision, which may or may not agree with that advice.

Q: And Narasimha Rao.

A: I think, Narasimha Rao has the same attitude. I think, he has a very good equation with the bureaucracy.

Q: He wants to give them a lot of authority.

A: Yes, He gives them a lot of authority and delegation and I think, that is, as it should be. In a vast country like ours, you cannot have anything else, not only at the bureaucratic level, but delegation of authority at the political level.

Q: Then the other thing is dealing with Congressmen - how was Mrs. Gandhi dealing with them?

A: You see, Mrs. Gandhi had emerged in the Party through a certain period and process which was totally dissimilar to the process in which Rajivji went through and certainly much more dissimilar to the process in which Narasimha Raoji has gone through and Mrs. Gandhi's views were or her final opinions were finality. I mean, whatever she said or did after going through the exercises that she wanted to go through, it was accepted as finalised.

More or less, the same thing held for Rajivji, but I could see in many of the decisions that were taken during Rajivji's time, that something which was decided was also changed. This happened very, very seldom in Mrs. Gandhi's days. Now Narasimha Raoji's case, because he came into the leadership at a very trying and at a very traumatic period, his effort, as I can see it, is to mingle both - decision making authority naturally rests ultimately with the leader, but he should like to give everyone a full feeling that he has also had his say and if necessary, I

think, some decisions have been changed also. So, that is a slight variance. I mean these are nuances, which you can only observe. I don't think you can explain them in very candid terms.

Q: While you are touring, people have seen a lot of significance there.

A: Yes, that is a legitimate question as to why I am touring and especially in the North of the country and also sometimes in the South.

Now if the BJP had a plan, economic, social, economic, political on which they went to the country and wanted support of the people and the people in their wisdom, for they had a very good planned programme, they voted them; that is very good. They are entitled to the support and the mandate is there. Let them run the country, but from 1952 onwards, when this Party came into the picture in one form or the other, first it was Jan Sangh and then all that metamorphosis that went on; they have always gone beyond the democratic options and posed options before the people which are totally outside the parameters of the democratic and secular constitution. Now if people are asked to vote for protection of the cow or for Ganga Jal or for building a temple and demolishing a mosque, now these are not the issues which the constitution or the laws of the land permit any political party to pose before the people, much less to seek the mandate on it.

Q: Don't you think that there are these kinds of pressures and violence created. Narasimha Rao really needs to kind of keep pace of the economic reforms going not to get distracted by this network because that means a lot of danger to the country.

A: Well, that is one of their objectives and that is where we have to be very careful, alert and also very firm.

Q: Did you have lot of reservations on the economic reforms?

A: No, I did not have any reservations and even now I don't have any reservations. All I have been saying and which I say even now - that we know that we are going to face the difficulties; we know that changing into these liberalisation that we have gone into, will create some problems. All I have been saying and I maintain it is a valid point in India that where a large population lives below the poverty line, we cannot be ignorant about the pressures and the effects of this section of the people will be subjected to by some of our policies and our effort should be that while the distress and the hardships come and all of us have to go throught it, the impact of these hardships and these pressures should be the minimum possible on these weaker section of the people. That is all. Beyond that, I have no opposition, Whatsoever.

Q: Mr. Singh, you have had a charismatic era; how did you cope with the lack of this charismatic era?

A: I think, by sustained hard work. There is no other way.

Q: Hard work?

A: Hard work means that whatever we decided to do, we willl have to put everything into it.

Q: At he grass root level.

A: Grass root level and at every level and there again, the same point comes in that we have to see that nothing happens to diminish the basic solidarity of the Party.

Q: It should mean that local party workers must take an active role, local leaders must arise to the occasion.

A: Yes, they have to take active role.

Q: One last question, what is your view about the challenges that lie ahead?

A: Well, the challenge that lies ahead, first is how we go through the economic reforms. As I have told you just now, we have to tamper these reforms at the effort at poverty allleviation. It has to go side by side.

The second is the challenge to the democratic polity of the country, which I have also just underlined. On that we have to create wider and more intense consciousness amongst the people of India. We are already conscious about it, but we have to intensify it so that no popular sanction is received by those forces, who want to act beyond the pail of our Constitution.

No. 3, the adjustments in the world - part of the adustments in the world will have to be on the basis of India's long standing approach to world affairs, which is one of the pursuits for global peace.

No. 4. the opportunity for every country to develop its own genius and be able to function in a sovereign and free manner about issues that concern that country internally; and

No. 5, in the global relationship, it should always be seen with forces which are for peace, non-interference in the internal affairs of other countries and also to strengthen the democratic forces around the country. This is what I see.

Q: Now for the implementation of economic reforms, painful decisions have to be taken. Do you see Narasimha Rao is capable of having the killer instinct, ruthlessness, which is required?

A: Well, I don't think he needs a killer instinct. What he needs is broad and firm support from everyone and he has already given enough hints that he has no intention of deviating from the path that he has chosen and well in the process some harsh decisions, if they come, they will have to be taken.

Q: Do you think he is capable of doing this? He has not been decisive.

A: Well, I think, he will take it; that is my firm hunch.

Q: One last question - what do you think has been the main success so far what he has done - what you contribute to, what is the reason for this?

A: Well, on the peosonal level, I think, he gives the impression that everyone can work with him without any inhibitions; that is a big feeling, and No. 2, the priorities that he has chosen, he has chosen in a very democratic manner, full discussion amongst the parties, in the Cabinet and that sense of participation he has been able to create. I think these are the two things, which will see us through.

धर्म तो हमारे और आप सबके लिए महत्त्वपूर्ण है। चाहे वह किसी भी धर्म को मानता हो। हम मंदिर में बैठें, पूजा करे, मस्जिद में नमाज पढ़े, गुरूद्वारे में जाए, चर्च में जाएँ, आखिर हमारा हाथ उसी भगवान को प्रणाम करता है। मस्तक हमारा उसी के सामने झुकता है। वह तो आपस में नहीं लड़ रहे हैं। उनके नाम पर हम लोग आपस में लड़ रहे है।

— श्री अर्जुनसिंह,
13 जून 1993



1993

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जरूरी

2 जनवरी 1993 को सीधी में आमसभा में भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

आप लोगों के बीच आने का जो मुझे अवसर मिला और आप सबका स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। इस समय कुछ लोगों की मानसिकता कुछ ऐसी बन चुकी है और खास तौर से उन लोगों की, जो किसी जिम्मेदार पद पर थे। ऐसा लोग समझते है कि किसी पद पर रहने की वजह से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त हो जाते है और उसके सहारे कहीं फिर संतुलन कायम रखने की आवश्यकता नहीं होती। अभी कुछ दिन पूर्व प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री पटवाजी ने आकर इसका सबसे ताजा उदाहरण यहाँ पर प्रस्तुत किया। लोग ऐसा समझते हैं, जो कुछ उन्होंने कहा है, उसका उत्तर मुझे देना है। लेकिन, आप तो जानते हैं कि पटवाजी तो कभी-कभी पधारते थे, अब शायद और कम पधारेंगे और हर दफे कोई अनर्गल अपमानजनक बात कहकर जाते थे। उससे न तो मेरा संतुलन बिगड़ा है और न मैं सलीकों को छोड़कर कोई इस तरह की बात किसी बारे में कहना चाहता हूँ क्योंकि इस तरह की बात करने से केवल अपने ही संस्कार उजागर होते हैं।

मैं यहाँ किसी की आलोचना करने नहीं आया हूँ किसी को बुरा भला कहने नहीं आया हूँ और मैं यह जरूर समझता हूँ कि एक प्रजातांत्रिक देश में हर पार्टी को, पार्टी के हर व्यक्ति को अपनी-अपनी बात कहने की पूरी आजादी है और जैसा वह ठीक समझें कह सकते हैं, लेकिन यह आजादी अतिशय न हो जाए। एक जमाना था जब कुछ लोगों की जागीरें थीं, राजे-राजवाड़े भी थे, जागीदार भी थे, लेकिन भारत की आजादी के बाद एक व्यापक संदर्भ में देश के हित में यह उचित समझा गया पंडित जवाहर लाल नेहरू के द्वारा, सरदार पटेल के द्वारा, कि भारत की एकता को मजबूत करने के लिए जागीरदारी प्रथा और राजे-राजवाड़ों को देश की मुख्यधारा में शामिल करना चाहिए और उनके हाथों में जो अर्थ शक्ति थी उस शक्ति को उनक हाथों से ले लेना चाहिए। यह बात 1951, 52, 53 में हुई थी। हो सकता है, पटवाजी उस समय किसी शाखा में जाते रहे हों, इसलिए उनको मालूम न हो कि इस प्रदेश और देश में क्या हुआ है? जागीरें तो समाप्त हो गई, नई जागीरें कहाँ से आ गई'? यह उस मानसिकता का परिचय है, जो मानसिकता अनधिकार चेष्टा के माध्यम से अपने पद का दुरुपयोग करके राजनैतिक और आर्थिक सत्ता को सँजोने की कोशिश करता है।

पिछले ढाई सालों में जो कुछ भी इस मध्यप्रदेश में हुआ, जब भी उसका पर्दाफाश होगा तो उस वक्त पता चलेगा कि राजकीय तंत्र का कितना बड़ा दुरुपयोग पटवाजी ने, उनके साथियों ने नई जागीरें बनाने की कोशिश में जरूर किया, लेकिन मजबूरी यह रही कि यह प्रयास आधे में ही रुक गया। उसी की पीड़ा है, जो उस दिन बोल रहे थे वह। वह मेरी वजह से नहीं है, वह तो उन्हीं के सबके आचरण से हुआ। अगर वह जानना ही चाहते है कि यह देश किसकी जागीर है तो इस प्रदेश के उन इलाकों में जाएँ, जहाँ गरीब, आदिवासी, हरिजन, कमजोर वर्ग के लोग

रहते है। उनको जागीर तो नहीं दी गई थी, लेकिन उनको थोड़ा सा आर्थिक संबल प्रदान किया गया था, चाहे वह जिस रूप में रहा हो। उस सहायता और संबल को जिस बेरहमी से भारतीय जनता पार्टी और पटवाजी ने उनके हाथों से छीना, वह जरूर जानना चाहते है। यह देश, प्रदेश उन गरीबों की जागीर है और उनके हाथों में फिर सौंप दी जाए। यह ऐसा नजारा हमें देखने को मिला उस दौरान, जिसकी कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे। चुनाव के बाद हम सब की यह आशा थी कि इनकी सरकार आने के बाद इस प्रदेश के आम लोगों के हित में, किसानों के हित में, जरूरतमंदो के हित में, आदिवासी, हरिजन और पिछड़े वर्गों के हित में, अल्पसंख्यक समुदाय के हित में कुछ भलाई का काम यह सरकार करेगी और उसी आधार पर हम लोगों ने इनको सार्वजनिक रूप से यह वचन दिया था कि इस प्रदेश की भलाई के लिए जो कुछ आप करेंगे उसमें हम आपकी मदद करेंगे, आपके साथ में रहेंगे, भले ही हम कॉंग्रेस के है, हम चुनाव हारे है, लेकिन प्रदेश की भलाई में हम साथ रहेंगे।

लेकिन हुआ क्या? आप एक-एक जिले में चले जाइए, एक एक शहर में चले जाइए, किसानों से पूछ लीजिए, हरिजनों से पूछ लीजिए, हरिजन, आदिवासियों से पूछ लीजिए, नौजवानों से पूछ लीजिए, और तो और उन्हीं के सरकारी कर्मचारियों से पूछ लीजिए। क्या किया इन्होंने ढाई साल में? तेन्दू पत्ता की बात थी, करीब 17 लाख मजदूरों के हाथों में 150 करोड़ रुपये का मुनाफा जाना था। जो पहले चंद सेठों की जेब में जाता था, वह उनको देने का फैसला श्रीमती इंदिरा गांधी की योजना के अंतर्गत किया गया था। इसमें 37 करोड़ बाँट दिया गया, 113 करोड़ बचा। उस वक्त ऐसे बदल गए पटवाजी, जैसे सचमुच में उनके परिवार का जो धंधा था सूदखोरी का, उसकी कमाई हो। आज किस-किस को जवाब देंगे? वह कहते थे कि हम पहचान नहीं सकते कि किसका पैसा है इसलिए हम नहीं दे रहे। प्रदेश का मुख्यमंत्री अगर ऐसी बात कहे कि यह पैसा किसका है, हम नहीं पता कर सकते और इसलिए नहीं देंगे तो सिवाय उनके ऊपर दया करने के और क्या कर सकते है। एक छोटे से छोटा ठेकेदार भी जो होगा, उसका एक लाख के करीब का काम होगा, वह भी परेशान था। आप जानते हैं उस वक्त कई दलाल सामने आते थे। सीधे मुख्यमंत्री के पास ले जाते थे, पांच मिनट में उसका पेमेण्ट करा देते थे। लेकिन, इन गरीबों की दलाली कौन करे क्योंकि दलाल ही तो सत्ता में बैठ गए थे। तेन्दू पत्ते के जो सबसे बड़े व्यापारी प्रदेश में है, जिनको लखीरामजी के नाम से जाना जाता है, आज वह करोड़ी मल हो गए है और उसी पैसे के आधार पर हो गए हैं, जो पहले गरीब मजदूरों को मिलने वाला था। ऐसा इंतजाम किया गया कि उसका बहुत बड़ा हिस्सा सीधे करोड़ी रामजी की तिजौरी में गया और पटवाजी कहते है कि हमें मालूम नहीं। मै इनका जिक्र क्यों आज कर रहा हूँ? आज चुनाव नहीं होने जा रहा है और न वोट के लिए आपको कुछ कहने आया हूँ। इसका जिक्र मै सिर्फ इसलिए कर रहा हूँ कि सत्ता मिलना एक बात है, लेकिन सत्ता का उपयोग किसके लिए किया जाना है वह दूसरी बात है।

किसानों का भी यही हाल है। चाहे बिजली देने का प्रश्न है या कनेक्शन देने का है, पता नहीं कौन-कौन सी बात यहाँ वहाँ हुई। वह आप जानते है। लोगों को सीधे सीधी से बस्तर छोटे-छोटे कर्मचारियों को भेज दिया। क्या गुनाह था उनका? उनका गुनाह शायद यही रहा होगा कि हमारे, तुम्हारे या हमारे कॉंग्रेस के और जो साथी है उनसे कुछ अच्छी बात कर ली होगी, कोई जनहित में काम रहा होगा तो उनका काम कर दिया होगा। यह उनका दोष था और इसी दोष की वजह से हजारों मील दूर फेंक दिए गए।

इस देश की अपनी परंपरा है। हमारा प्रजातंत्र ऐसे लोगों के सहारे नहीं बना है, जो केवल अपने स्वार्थों तक सीमित रहते है। भारत में प्रजातंत्र का प्रादुर्भाव, उसकी स्थापना लाखों स्वतंत्रता सैनानियों के बलिदान और तपस्या पर बना है। हमारे देश के महान नेता गाँधीजी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, अन्य जो

छोटे बड़े नेता हैं, उनकी तपस्या पर बना है। इसलिए 45-46 वर्षों में देश के नव-निर्माण की जो कहानी है वह उन लोगों की लिखी हुई कहानी है। आज हमको और आपको इस बात पर विचार करके यह फैसला करना होगा कि हम विकास के रास्ते पर चलना चाहते हैं, चाहे वह सीधी जिला हो, कोई हो, चाहे वह कोई प्रदेश हो, चाहे देश हो उसके विकास के लिए, या कि उस रास्ते पर चलना चाहते हैं, जिस रास्ते में केवल खून खराबा है, केवल निर्दोष लोगों के ऊपर तबाही है, बेगुनाह बच्चों को अनाथ बनाने का सिलसिला है, माताओं और बहनों को विधवा बनाने का सिलसिला है, गरीबों की रोजी रोटी छीनने का सिलसिला है? इन दो रास्तों के बीच में इस देश की जनता को फैसला करना होगा। क्योंकि प्रजातंत्र में न मैं मालिक हूँ, न कोई और मालिक हैं, न हमारे प्रधान मंत्री मालिक हैं, आज प्रजातंत्र में अगर सच्चा कोई इस देश का मालिक है तो वह है यहाँ की आम जनता, यहाँ का मतदाता। अगर आप इन बातों पर विचार नहीं करेंगे, इनके बारे में सोचेंगे नहीं और कोई अपना फैसला नहीं करेंगे तो देश के अंदर केवल अराजकता बढ़ेगी, देश के अंदर केवल तबाही बढ़ेगी और हमारी आजादी, जिसको इतनी मुश्किल से और बलिदान से हमने प्राप्त की है वह आजादी भी खतरे में पड़ जाएगी।

दुनिया में कभी भी कोई देश दूसरे के साथ बिना मतलब के उदारता नहीं करेगा। एक उदाहरण पिछले चार पाँच वर्षों में ही हम सबको देखने को मिला है। इस शताब्दी के शुरुआत में रूस में एक क्रांति हुई और उस क्रांति के बाद पूरी दुनियाँ में सोवियत यूनियन जैसा राष्ट्र बना, जो धीरे-धीरे अपने देश को विकसित करते हुए, मजबूत करते हुए दुनिया का दूसरे नंबर का शक्तिशाली राष्ट्र बना, अमरीका को तो वहाँ पर पहुँचने के लिए 150 साल लगे और यह 75 साल ही में पहुँच गया। यह हमने और आपने देखा है। लेकिन, इतना बड़ा देश, जिसके पास असीम शक्ति थी, सैन्य शक्ति थी, आर्थिक शक्ति थी, हर प्रकार से वह मजबूत था, फिर क्या हो गया वहाँ पर, कि जिसकी वजह से तीन साल के अंदर ही उस देश के 11 टुकड़े हो गए? आज वहाँ पर रहने वाले लोगों में फूट-फूट डालकर उद्वेलित किया जाता है। आज दुनिया में फूट सोवियत यूनियन कहकर पुकारा जाता है। क्यों बिखरा? उसके बिखरने का एकमात्र कारण यह था कि वहाँ अलग अलग विचार के जो लोग थे, जो एक संतुलन बना हुआ था, समन्वित देश में अपनी शक्ति और अपनी तस्वीर देखा करते थे, ऐसी अलग-अलग भावनाएँ उभार दी गईं कि जोर्डिश बन गया, तुर्किमिस्तान बन गया, इस तरह 11 देश बन गए और आपस में वह लड़ रहे है। दूसरे देश कभी उसको पैसा देते हैं, कभी इसको पैसा देते हैं और दोहन करने की बात होती है। क्या हम चाहते हैं कि भारतवर्ष के भी टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ। चाहे वह उड़ीसा हो, चाहे बंगाल हो, चाहे वह और कोई प्रदेश हो, हर प्रदेश में अलग-अलग लोगों की संस्कृति कहिए या भावना कहिए या ध्रुव कहिए, विद्यमान हैं, लेकिन सबने मिलकर भारतमाता के चरणों में बैठना स्वीकार किया है। अगर कोई हमें फिर अलग-अलग करने की बात करने लगे तो हम कहाँ जाएँगे और यह बात इसीलिए खतरनाक है।

यह बात साफ हमारी समझ में आना चाहिए कि भगवान श्री राम का मन्दिर श्रद्धा और भक्ति से ओतप्रोत होकर बनना चाहिए। भगवान राम के मंदिर में जो ईंट और पत्थर लगाए जाएँगे क्या जरूरी है कि निर्दोष बच्चों, महिलाओं के खून के छींटे उस पर डाले जाएँ? क्या उन्हीं छींटों से वह पवित्र होगा? जो आज चारों तरफ हो रहा है, यह तांडव नृत्य अगर हम रोकने में असमर्थ रहेंगे तो फिर भविष्य इस पीढ़ी को क्या कहेगा? हम इसकी कल्पना कर सकते है। एक पीढ़ी वह थी, जिसने 200 साल की गुलामी से भारत को मुक्त करके आजादी दिलाई और एक पीढ़ी यह है। आने वाली पीढ़ी यह कहेगी कि इन्होंने, जो इनको विरासत मिली थी उसकी रक्षा करना तो दूर रहा, कई पीढ़ियों के लिए विष घोल दिया भारतवर्ष के पानी में, जिससे मुक्त होना कई पीढ़ियों के लिए मुश्किल हो जाएगा।

क्या यह दोष हम और आप अपने सिर पर लेना चाहते है? मैं समझता हूँ कि कोई भी समझदार व्यक्ति, चाहे जिस जाति का होगा, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला होगा, इतना बड़ा दोष अपने सिर पर नहीं उठाएगा। इनकी सारी नाराजगी विशेष रूप से मुझ पर है क्योंकि मैं जो ठीक समझता हूँ, उसको कहने में मुझे हिचकिचाहट नहीं होती और यह आप अच्छी तरह समझते है, कोई नई बात नहीं बता रहा। आज इस देश के सामने जो खतरा है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि किसी भी प्रकार का संकोच किए बिना और उस पर कोई भी परिणाम हो उसकी परवाह किए बिना, बताना है। मै जगह-जगह जाकर कहता हूँ और मुझे इस बात का बहुत बड़ा संतोष है कि सीधी में ही नहीं, हिन्दुस्तान के हर कोने में मेरी यह प्रार्थना कम से कम सुनी जाती है, उस पर कार्रवाई कोई करे या न करे, लेकिन सुनी जाती है। यह बात मैं इसलिए कहना चाहता हूँ कि यह मेरा घर है। यहाँ से बाहर चाहे जो कुछ होता रहे, लेकिन घर के लोगों को इस बात का भरोसा हमसे मिलना चाहिए कि मैं आपके विश्वास और आपका जो कुछ भरोसा है उससे धोखा कभी भी नहीं करूँगा, चाहे उसका कोई परिणाम क्यों न निकले।

मैं अपने नौजवान भाइयों और बहनों से कहना चाहता हूँ कि जिस आजादी की हवा में वह साँस ले रहे हैं, जहाँ आज वह बड़े हो रहे हैं, पढ़-लिखकर आगे की जिम्मेदारी बढ़ाने का हौसला पा रहे हैं, उनके लिए यह सोचना और भी जरूरी है कि हम इस हौसले को, इस उपलब्धि को, इस सक्षमता को भारत के लिए उपयोग कर कैसे भारत को एक बनाकर रखेंगे? केवल अपने लिए नहीं करना है, अपने लिए तो जमीन पर रेंगता हुआ जो कीड़ा-मकोड़ा भी होता है, अपनी रक्षा और अपना पेट भरने का काम वह भी किसी न किसी तरह से कर लेता है, लेकिन हम कीड़े-मकोड़े नहीं बनना चाहते हैं। यदि हम एक इंसान का दिल रखते हुए इंसानियत को जिंदा रखना चाहते हैं तो फिर ऊपर उठकर, आगे बढ़कर हमें देश को ऊपर भी उठाना पड़ेगा और देश की सेवा भी करनी पड़ेगी।

यही प्रार्थना करने के लिए आज मैं यहाँ आया हूँ। मैं किसी के खिलाफ कुछ कहना नहीं चाहता हूँ। आप सबको अपनी बहुत-बहुत नए वर्ष की शुभकामना देना चाहता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए भी कामना करता हूँ। जयहिंद।

गाँधीजी की विश्वदृष्टि पुस्तक का विमोचन

- 19 जनवरी 1993 को श्री रामेश्वर मिश्र पंकज द्वारा लिखित पुस्तक 'गांधीजी की विश्व दृष्टि के विमोचन समारोह में दिया गया भाषण इस प्रकार है–

माननीय मिश्रजी, अध्यक्ष महोदय, माननीय सिंहजी मेरे साथी आदरणीय देवियों और सज्जनों। इस पुस्तक का विमोचन करने का मुझे अवसर मिला। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं थोड़ा हिचकिचा रहा था इस पुस्तक को लेकर क्योंकि ये बात मैंने उनसे कही थी, हिचकिचा इसलिए रहा था कि गाँधीजी के बारे में कोई पुस्तक निकले और उसका विमोचन केवल विमोचन मात्र ही रह जाय इससे मैं बहुत सहमत नहीं हूँ लेकिन ये औपचारिकताएँ भी आवश्यक होती है। अब तो मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि ये पुस्तक कम से कम अगर इतना ही योगदान दे सकें कि गाँधीजी की दोबारा हत्या करने की साजिश हो तो वह नाकामयाब हो सकें भौतिक रूप से तो 30 जनवरी, 1948 को उनकी हत्या हो चुकी है। अब वैचारिक रूप से उनकी हत्या की साजिश चल रही है। आप में से किसी को इसकी जानकारी तो होगी नहीं लेकिन कुछ लोग धीरे-धीरे ये सब रच रहे है, जिससे दूसरी हत्या गाँधीजी की सहूलियत से हो जाय। अगर ये पुस्तक उस में बाधा डाल सकें तो सार्थक होगी। इसी आशा के साथ धन्यवाद, जयहिन्द।

विरासत की हिफ़ाज़त

16 फरवरी 1993 दुर्ग की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष माननीय दिग्विजय सिंहजी, जिला काँग्रेस कमेटी के सभी आदरणीय साथियों, माननीय भेडिया जी, चौबे जी, भावना जी, सभी माननीय युवा काँग्रेस सेवा दल के साथियों, काफी दिनों के बाद मुझे दुर्ग आने का सौभाग्य मिला। आप सब के दर्शन करने का अवसर मिला और ऐसे समय में जब सारे भारत में एक वातावरण बन रहा है जिस वातावरण में हमारे राष्ट्र की प्राथमिकताएँ, हमारी भारतीय परम्पराओं की मान्यताएँ और वह आदर्श जिन आदर्शों में भारत के हजारों साल के इतिहास की रचना करने में सहायता की है, उन सब को चुनौती दी जा रही है और एक तरह से भारत माता की आत्मा को भी घेराबंदी करने का प्रयास हो रहा है। क्या है विरासत तुम्हारी? विरासत यह है कि भारत एक उदार विशाल देश है जहाँ कई संस्कृतियों ने जन्म लिया, फूली फली और सब ने मिल कर भारतीयता को पहचान लिया। दुनिया के कम देश ऐसे हैं जहाँ प्रत्येक युग की, प्रत्येक शताब्दी की अलग पहचान बनी हो और अंत में जाकर वह सारे देश की पहचान में बदल गई हो। आज उस पहचान को धूमिल करने की उस पहचान को विकृत करने की कोशिश हो रही है। क्या कभी विरासत बाँटी जाती है? क्या उसमें तारीख भी लगाई जाती है? विरासत तो वही है जो सदियों से चली आई हो और हमें मिले। क्या उसमें हम कह सकते हैं फलानी शताब्दी तक तो हमारी विरासत है उसके बाद किसी और की विरासत है? सीमा नहीं लगाई जा सकती। हमारे हिन्दू धर्म की आजकल तो बहुत चर्चाएँ हैं। ऐसी-ऐसी व्याख्याएँ सामने उभर कर आई हैं जो शायद हिन्दू धर्म की जड़ को ही खोद कर समाप्त कर देती है। हिन्दू धर्म की उदारता, उसकी आस्थाएँ, उसके विश्वास कटुता, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा या हिंसा पर आधारित नहीं हो सकती और जो भी व्यक्ति हिन्दू धर्म को इन आधारों को खड़ा करने की कोशिश करेगा वह अपना उल्लू तो सीधा कर सकता है, अपने स्वार्थ की पूर्ति थोड़े समय के लिए जरूर कर सकता है लेकिन हिन्दू धर्म की सेवा कर सकेगा इसमें मुझे बड़ा संदेह है। मैं चाहता हूँ कई कठिनाइयाँ इसमें आती हैं। अपने-अपने तरीके से उन कठिनाइयों को झेलना भी पड़ेगा, उनका सामना भी करना पड़ेगा। यह तो देश के प्रति हमारा कितना कर्तव्य है उस पर निर्भर करता है। काँग्रेस के साथियों से मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि कभी-कभी अवसर आता है इस देश के इतिहास में कि उस पीढ़ी को ऐसा कुछ साबित करने का मौका मिलता है जो आने वाली कई पीढ़ियों तक याद किया जाएगा। जो मौका हमारे महान नेताओं को उस पीढ़ी में मिला, मैं आप से, दुर्ग के नागरिकों से, भाई और बहनों से यह कहना चाहता हूँ कि इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार रहें। काँग्रेस के लोगों को जो इतिहास के निर्णायक मोड़ पर देश की सेवा करने के लिए अवसर मिला है उनसे मेरी प्रार्थना है कि छोटी-छोटी बातों को भुलाकर, अपने बीच के मतभेदों को भुलाकर दृढ़ता के साथ भारत माता की रक्षा के लिए आगे आएँ । यही कार्य किया जा सकता है इसमें कोई दिक्कत नहीं है। किसी भी प्रकार से काँग्रेस कमजोर नहीं है यह मानसिकता हम को स्पष्ट करनी चाहिए। किसी भी हालत में साम्प्रदायिक शक्तियों से, विचारधाराओं से, कट्टरवादियों से कभी भी कोई समझौता काँग्रेस ने न कभी किया और न आगे कभी करेगी।

दूसरी बात यह है आज देश में अगर संरक्षण की जरूरत है, बचाव की जरूरत है, गरीबों के हितों के संरक्षण की जरूरत है, क्योंकि साम्प्रदायिकता हरदम निहित स्वार्थ के कंधों पर चढ़ कर ही आती है। आप नजर उठा कर देखें, जितने बड़े-बड़े नेता है इन्होंने आज देश को इसमें लपेटने की कोशिश की है। उनमें से कई गरीब और बेसहारा आपको दिखेंगे, किसी के चेहरे पर कोई शिकन दिखेगी? सुबह-शाम माल पुआ छान कर भाषण देने के लिए पहुँच जाते है।

गरीब तो वही है जो किनारे पर खड़ा हुआ अपनी रोज की जिन्दगी के बारे में भी नहीं सोच सकता है। उसको इस बात का भी अंदाजा नहीं है कि दोनों वक्त का भोजन कहाँ से आएगा। उसको इस बात का अंदाज भी नहीं है कि किस प्रकार से जिन्दगी को बसर करने के लिए बेहतर जिन्दगी की तरफ बढ़ने के लिए कौन सा रास्ता अपनाए, किधर हाथ बढ़ाए, किधर पांव बढ़ाए, इसको मार्गदर्शन कौन दे, उसका हाथ पकड़ कर आगे कौन ले जाएगा, यही शक्तियाँ ले जाएँगी जिन्होंने कोई कसर उठाकर नहीं रखी भारत के संविधान का मखौल उड़ाने में देश के कानून का मखौल उड़ाने का, सभी मर्यादाओं को भंग करके अपने ही राजनीतिक स्वार्थ को आगे बढ़ाने के सिवाय और कोई उद्देश्य उनके पास नहीं है, कोई आदर्श नहीं है और इसी में ही वे अपना और सारे देश का भला देखने की कोशिश कर रहे हैं। इससे सतर्क रह कर हमें अपने को बचाना है।

मंच गिर गया, बड़ा अच्छा हुआ। इसलिए कम से कम जमीन पर खड़े होकर भाषण देने का मौका तो मिला। जमीन पर खड़े होकर ही संघर्ष होगा। यह भी बिल्कुल सही बात है। हम लोगों ने देखा है, उनके जलवे भी देखे हैं, उनके नक्शे भी देखे हैं, ये कितने बहादुर हैं यह भी देखा है। केवल आत्मविश्वास की जरूरत है, काँग्रेस में एकता की जरूरत है, नौजवानों को आगे करने की जरूरत है। अगर हम नौजवानों को पीछे रखते हैं तो फिर इस लड़ाई में थोड़ी सी कमजोरी आएगी। मैं तो साफ कहता हूँ। मैं किसी वक्त नौजवान था, आज नौजवान तो नहीं हूँ लेकिन नौजवानों के दिलों को पहचानने की थोड़ी बहुत कोशिश जरूर करता हूँ और नौजवान ही जब सामने आएँगे तो हम लोग भी उनके साथ-साथ चलेंगे तो ही हम देश को सही रास्ते पर ले जा सकते हैं और इस खतरे से देश को बचा सकते हैं। क्योंकि यह खतरा छोटा नहीं है। यह खतरा व्यापक भी है और गहरा भी है। उन लोगों ने कोशिश की है कि काँग्रेस मजबूर होकर भगवान राम से टक्कर लेने की कोशिश करे। भगवान राम को इन्होंने अपने पक्ष में करने की घोषणा की। भगवान राम हम सब के हृदय में वास करते हैं। उनको ढाल बना कर जिन्दगी में हम लोगों ने कभी इस्तेमाल नहीं किया। वे हमारी प्रेरणा के स्रोत हो सकते हैं, वह हमारे आदर्श हो सकते हैं। वह हमारे पूज्य हो सकते हैं लेकिन जिन्दगी में आगे चलने के लिए ढाल बनाकर हम भगवान को कभी नहीं रख सकते और कौन सा भगवान? मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भगवान के तो कई रूप हैं। एक बाल्य काल का रूप है जो मुनि विश्वामित्र के साथ जाकर उन्होंने राक्षसों का संहार किया, वह भी भगवान का रूप है। माता-पिता की आज्ञा मानकर 14 वर्ष वनवास में रहे, वह भी भगवान का रूप है। लंका की लड़ाई में बिना रथ के संघर्ष करके लड़ाई करके रावण की आसुरी शक्ति का संहार करने वाले भगवान, वह भी भगवान का रूप है। उससे भी बढ़कर स्वरूप राम का वह है जो शबरी के झूठे बेर खाए। मैं पूछना चाहता हूँ अशोक सिंघल से, मैं पूछना चाहता हूँ आडवाणीजी से, अटल बिहारी वाजपेयी से कि इनमें से राम के किस स्वरूप को आज वह हिन्दुस्तान में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। किस राम की कल्पना को यहाँ पर साकार करना चाहते है, क्या वह केवल इसी में दिलचस्पी रखते है कि भगवान राम का नाम लेकर कमल छाप पर मोहर लगवाई जाए? क्या वह भगवान राम है हमारे लिए? आज जिन शबरी के झूठे बेर खाकर राम ने अपने को धन्य माना, आज उस शबरी के वंशज सारे भारत में भारतीय जनता पार्टी के द्वारा प्रताड़ित किए गए हैं, ऐसा उदाहरण देश के सामने कभी नहीं हुआ। कौन है वे? शबरी का क्या स्वरूप है? शबरी भक्ति की भावना का स्वरूप है और शबरी समाज के सबसे कमजोर, गरीब वर्ग की तस्वीर है। आज गाँधीजी का वह वाक्य मुझे याद आता है, उनसे बढ़कर राम भक्त कोई नहीं था जिन्होंने अंतिम क्षणों में, जिसने उनकी छाती पर गोली मारी उसको भी नमस्कार करके मरते-मरते-हे राम - कहा। उन्होंने कहा था भारतवर्ष में अगर अब पुनः भगवान अवतार लेना चाहेंगे तो भगवान को भारत में रोटी के रूप में ही अवतार लेना होगा और कोई दूसरा स्वरूप भारत का नहीं है। हम साम्प्रदायिक शक्तियों

का मुकाबला करें और इस कर्तव्य को पूरा करने में इस देश की महान जनता के योगदान से सफलता प्राप्त होगी। वही प्रार्थना मैं आज दुर्ग के जागरूक नागरिकों से विनम्रता से करने आया हूँ। आपने जो प्रेम और स्नेह दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

दलित उत्थान ही काँग्रेस का ध्येय

17 फरवरी 1993 महासमुन्द की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंहजी, हमारे सम्मानित अग्रज सांसद श्री पवन दीवानजी, आप मध्यप्रदेश को लीजिए, छत्तीसगढ़ को लीजिए। किसकी भलाई से छत्तीसगढ़ बढ़ेगा। शहरों में रहने वाले कुछ चन्द लोगों की भलाई सिर्फ छत्तीसगढ़ की भलाई नहीं हो सकती। छत्तीसगढ़ की भलाई तो तभी होगी जब दूरदराज के गाँवों में झोपड़ियों में रहने वाले आदिवासी, हरिजन, पिछड़े वर्ग, किसान, मजदूर को इस बात का अहसास होगा कि उनकी जिन्दगी में कुछ तबदीली आ रही है और उस तबदीली को लाने में काँग्रेस का हाथ है, तभी वह काँग्रेस को अपनी शक्ति प्रदान करेगा। आज सबसे पहली जिम्मेदारी हम लोगों की, सबकी यह है कि हम यह सूत्र अगर कहीं कमजोर हो गए हैं या कहीं टूट गए हैं तो उन्हें फिर से जोड़ने की और उनको फिर से मजबूत करने की कोशिश हम करें। इसमें काँग्रेस के संगठन को बहुत बड़ा काम करना होगा। मैं प्रदेशाध्यक्ष महोदय से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि सारे प्रदेश में और विशेषकर छत्तीसगढ़ अंचल में वह बारीकी से इस बात को देखने की कोशिश करें, कौन कहाँ पर है उससे मेरी कोई दिलचस्पी नहीं वह वहाँ बने रहे और तरक्की करें, लेकिन जो सूत्र टूट गए हैं या अलग हो गए हैं उनको जोड़ने की बहुत जरूरत है। इस अहसास से काँग्रेस के लोगों को लेना चाहिए कि वह लोग पार्टी की मुसीबत के समय, पार्टी नेतृत्व की मुसीबत के समय, चाहे 1977 से 80 का समय रहा हो या वह 1989 से 91 का समय रहा हो, पार्टी से जुड़े रहे, नेता के प्रति वफादार रहे, आज वह सड़कों पर घूमते हैं, यह उचित नहीं है। मैं आशा करता हूँ, मुझे पूरी उम्मीद है कि आज की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें इस एकता को प्रदर्शित करना ही पड़ेगा। जो लोग एकता में बाधक बनते हैं, वह सही मायने में काँग्रेस को इस चुनौती का सामना करने में कोई सहायता नहीं कर सकते। यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ।

भाजपा के लोग फिर से एक बवण्डर मचा कर सारे हिन्दुस्तान को भ्रमित करना चाहते हैं। मध्यप्रदेश में तो हम अब भ्रमित नहीं होंगे, आप भी नहीं होंगे क्योंकि अपनी आँखों से आपने देखा है कि इन दो ढाई सालों में क्या हुआ है। यह हालत करीब-करीब उन सब प्रदेशों में है, जहाँ भारतीय जनता पार्टी का शासन रहा है। अगर सबसे ज्यादा कोई प्रताड़ित व पीड़ित हुआ है तो समाज का कमजोर से कमजोर वर्ग, चाहे वह किसी कारण से क्यों न हुआ हो। उसके बाद प्रजातंत्र की हर जड़ को कमजोर किया गया है, चाहे वह पंचायत हो, सहकारिता हो, शहरों व कस्बों की म्युनिसपल कमेटी हो, जहाँ कहीं भी प्रजातांत्रिक प्रक्रिया से किसी संस्था को बनाने का प्रावधान था, इन ढाई सालों में उन प्रावधानों को कैसे नाकाम किया जाए, यही उदाहरण भारतीय जनता पार्टी ने दिया। आपसे मैं निवेदन यह करना चाहता हूँ कि अगर प्रजातंत्र की जड़ें कमजोर हो गईं और प्रजातंत्र कमजोर हो गया तो फिर देश को कमजोर होते समय नहीं लगेगा और यही वह लोग चाहते भी है कि किसी भी प्रकार से देश के, प्रदेश के शासन पर बैठा जाए। दुबारा से अगर यह आ गए तो अभी तक पंचायतें नामजद की है, प्रेक्षक नामजद किए हैं, सहकारी संस्थाओं में नामजद किया है, एक दफा अगर देश के शासन में आ गए तो आगे से समिति और लोकसभा की जगहों पर भी नामजद किए जाएँगे और आपको फिर उन्हें चुनने का मौका नहीं मिलेगा। यह खतरा है जो आज पूरे देश के सामने खड़ा है।

अयोध्या में जो कुछ हुआ, वह इसी भावना का परिणाम है। जो मुख्यमंत्री इस देश की सर्वोच्च अदालत को झूठा हलफनामा दे सकता है, उसकी पार्टी पंचायत के चुनाव में भी क्या आने लायक है, देश की बागडोर तो सौपना और बात है। लेकिन, वह कहते हैं कि वह हमारा काम ही था और कल्याण सिंहजी कहते हैं कि वह तो भगवान की शक्ति थी। हम लोग तो भगवान की शपथ लेकर सच बोलने का वचन देते हैं और वह भगवान का नाम लेकर झूठ बोलने के लिए अपने को सक्षम समझते हैं। यह है नियतियों को गलत ढंग से देखना और उन पर अमल करने का मूल।

आपके सम्मानित सांसद ने बहुत से शिकवे और गिले किए हैं। लेकिन एक बात कहूँ, यह पिछड़ा हुआ क्षेत्र है, कई मायनों में जो काम पूर्ण भी होने थे वह भी पूरे नहीं हो सके। यह भी एक विडंबना ही है। मैं और कुछ इस बारे में नहीं कह सकता, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में जो हमारे हाथ में आज है, महासमुन्द में एक केन्द्रीय विद्यालय की स्थापना कराने की मैं जरूर कोशिश करूँगा, जो कम से कम इस क्षेत्र की भावी पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए।

प्रत्येक व्यक्ति जो काँग्रेस के प्रति निष्ठा रखता है, जो काँग्रेस के प्रति ईमानदारी रखता है, बिना किसी झिझक के आज गरीबों के पक्ष पर फिर उसको चलना पड़ेगा। इन लोगों से संघर्ष करना पड़ेगा और इस संघर्ष में इन निहित स्वार्थों से उठकर भारत के चरित्र को फिर से सुनिश्चित करना पड़ेगा। वही आज का तकाजा है और वही हमारा, आपका, सबका कर्तव्य है।

आपने यहाँ पधार कर मुझे जो स्नेह और आशीर्वाद दिया, उसके लिए हृदय से मैं आभार व्यक्त करता हूँ। जयहिंद।

वोट का महत्त्व हर भारतीय समझता है

17 फरवरी 1993 बिलासपुर की जनसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष माननीय दिग्विजय सिंहजी, माननीय तिवारी जी, माननीय जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेन्द्र जी, माननीय वेदपाल सिंह जी, जी, वी.आर. यादव जी, युवक काँग्रेस के सभी माननीय साथी, मंच पर विराजे हुए भूतपूर्व सांसदगण, विधायकगण, काँग्रेस के सभी वरिष्ठ साथियों, आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, बिलासपुर की धरती पर आने पर सदैव मुझे एक विशेष अनुभूति होती है। यह अनुभूति कोई राजनीतिक संबंधों से प्रेरित नहीं है।

मुझे स्मरण है पहली बार 1964 में मैं बिलासपुर आया था कृषि राज्य मंत्री की हैसियत से और नजदीक से साक्षात्कार हुआ था इस अंचल के किसान भाइयों से। उन किसान भाइयों से जो अपनी मेहनत और अपना श्रम और समय लगाते थे और उसका फायदा कितना उनको मिलता था या नहीं मिलता था इसका उनको स्वयं को ज्ञान नहीं था। उसी समय 1966 से एक भयंकर सूखे के पश्चात् तात्कालिक प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कृषि के क्षेत्र में सारे देश में एक नया अभियान छेड़ने का फैसला लिया था जिसका उद्देश्य भारत को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाना था। यह क्षण हम सब भूल जाया करते है क्योंकि समय इतनी तेजी से बदलता रहता है कि ऐसे निर्णायक दौर की बातें इतिहास बन जाती है। लोग कहते थे उस समय कि छत्तीसगढ़ में किसान तो अनपढ़ है, अनजान है और नई कृषि क्रांति में कोई भी हिस्सा लेने में असमर्थ है। आज मुझे स्मरण है, अच्छी तरह से कि किसानों की कई मीटिंगों में जब नई कृषि नीति को, नई तकनीक को उनकी समीक्षा रखने का मुझे मौका मिला तो एक दफा बड़ा

होशियार बनने वाले लोग तो जरूर थोड़े हिचकिचाए लेकिन इस अंचल के किसान हिचकिचाए नहीं। वह परिणाम चाहते थे कि जो कुछ कहा जा रहा है वह सचमुच में हो सकता है या नहीं हो सकता और उन्हीं के इस कौतूहल का परिणाम था कि सारे मध्य प्रदेश में प्रदर्शित करके हमें यह दिखाना पड़ा कि जो कृषि की नई तकनीक है उसमें सचमुच में किसानों को फायदा है। सन् 66 से लेकर 70 के बीच में हरित क्राँति का दौर देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बना कर भारत के ऊपर एक बहुत बड़ा बोझ जो था विदेशी हुकूमतों के उस बोझ को भारत के किसानों ने अपने कंधो से उतार कर फेंक दिया। यह है भारत के कदम-कदम आगे बढ़ने की कहानी का एक छोटा सा पहलू और इसलिए बिलासपुर में मुझे ऐसा लगता है कि जब कभी भी भारत में किसी तब्दीली की आहट आएगी, जब कभी भी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की आहट आएगी सबसे पहले उसकी आवाज हमें बिलासपुर में सुनने को मिलेगी। जब 77 में काँग्रेस चुनाव हार गई, श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधान मंत्री नहीं रहीं और उन्होंने खड़े होकर उन अवसरवादी गठबंधन को चुनौती दी, जिन्होंने भ्रम का वातावरण पैदा करके काँग्रेस को हराया था, मुझे अच्छी तरह से स्मरण है मध्य प्रदेश में पहली फुँकार काँग्रेसजनों की जो उठी थी बिलासपुर की धरती से ही उठी थी। और जिन लोगों ने निर्भीकता से परिणामों की चिंता किए बगैर नौजवानों ने, हमारे बुजुर्गों ने स्वतंत्रता संग्राम के आदरणीय सेनानियों ने जो एक फौलादी मन बना लिया था उसी का परिणाम था कि तीन साल बाद काँग्रेस को फिर से विजय मिली।

हर पाँचवे साल चुनाव होते हैं और आप फैसला करते हैं किस को आप अपना प्रतिनिधि बनाएँ कौन सी आप सरकार बनाएँ, किस आधार पर फैसला करते हैं? इस आधार पर फैसला करते हैं, कौन सा व्यक्ति आपके विश्वास को पाने लायक है। इस आधार पर फैसला करते हैं कि कौन सी पार्टी के सामने, कौन सी पार्टी किस प्रकार की नीति और कार्यक्रम आपके सामने रखती है जिससे आप अपना भला कर सकते हैं और अपनी भलाई उसी में देखते हैं आप उसी पार्टी का समर्थन करते हैं? प्रजातंत्र में विश्वास ही तो है। अगर वह कागज का एक टुकड़ा जो हर पाँचवे साल में बैलेट बाक्स में डालते हैं उसमें अलग से कोई शक्ति नहीं है। आप चाहें तो उसको फाडकर दस टुकड़े करके फेंक सकते हैं। लेकिन वह कागज का एक छोटा सा टुकड़ा व्यक्तियों की, पार्टियों की राष्ट्र की तकदीर को बदलने की हैसियत रखता है। यह प्रजातंत्र की महिमा है। उस कागज के टुकड़े को ही आज अर्थहीन बनाने की कोशिश हो रही है यह चुनौती है आज देश के सामने।

बिलासपुर से मैं यह अपेक्षा करता हूँ कि जैसा सदैव अपने निर्णायक मोड़ पर अपनी स्वयं की कर्तव्य-परायणता से एक रास्ता हम सब को दिया है वही प्रेरणा मैं आप से फिर लेने आया हूँ और उसी प्रेरणा के सहारे एक सेवक के नाते जो मेरा कर्तव्य है वह करने की मेरे मन में इच्छा है। मुझे विश्वास है आप से वह प्रेरणा भी मिलेगी। आप से वह स्नेह और आशीर्वाद भी मिलेगा ताकि हम सब मिलकर आज जो हमारा कर्तव्य भारत माता के प्रति है, उस कर्तव्य का निर्वहन निष्ठा और ईमानदारी और समर्पण की भावना से कर सकें। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

ओला वृष्टि से तबाही

एक अप्रैल 1993 सतना में जिले के ओला प्रभावित गाँवों में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

माननीय ललिता प्रसादजी तथा आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, यह जो आकस्मिक विपदा आई है सतना जिले के बहुत से गाँवों में मुझे इसकी जानकारी तीन दिन पहले दिल्ली में दी गई और मैंने अपना यह कर्तव्य समझा कि आप लोगों के बीच में आकर इसका मूल्याँकन करने का भी प्रयास करूँ और फिर आगे क्या इसमें सहायता करने की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है उस पर भी आप लोगों से सलाह करके और कार्रवाई करने पर विचार किया

जाए। कई गाँवों में सुबह से मैं स्वयं घूम कर देख रहा हूँ। ओला वृष्टि एक प्रकार से तबाही लेकर आई है। किसानों के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण समय होता है खेती के लिए, फसल पकने लग गई और कुछ दिनों के बाद कटाई शुरू हो कर खलिहान में आएगी उस समय भी इस प्रकार की परिस्थिति निर्मित होती है तो तकलीफ किसान को होती है। साथ ही साथ खेतिहर मजदूरों को भी बहुत कष्ट होता है क्योंकि उनके लिए भी करीब-करीब साल भर का इंतजाम करने का मौका होता है। इसलिए यह परेशानी है किसान की है, खेतिहर मजदूर की है और सामान्यजनों की है। इन परिस्थितियों में केवल धैर्य और साहस से ही काम लिया जा सकता है। शासन अपनी ओर से जो भी करना संभव होगा उसे करने की कोशिश मध्य प्रदेश शासन करेगा ही। हमारे साथियों ने इस विषय पर यह भी कहा है केन्द्रीय शासन की ओर से भी इस परिस्थिति में अलग से गौर करके सहायता मिलना चाहिए। इस विषय पर वहाँ जाकर पहल करूँगा और मुझे उम्मीद है किसी न किसी रूप में केन्द्रीय शासन से भी प्रभावित किसानों के लिए कुछ राहत दिला सकूँगा। यहाँ पर जो बाहर सहायता बाँटने का काम है उसमें सब को सहयोग देने की जरूरत है। क्योंकि यह विपदा सब के लिए है और इसमें सब का सहयोग ही माध्यम बन सकता है, लोगों के पास तक राहत पहुँचाने का। पंचायत के लोग हैं, अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों के लोग हैं, सब के लिए नितांत आवश्यक है और मुझे उम्मीद है सब लोग मिलकर इस समय एक दूसरे की सहायता के काम में जुटेंगे। यह गाँव हमारे अंचल का गाँव है। वैसे तो यहाँ हर परिस्थिति में आने पर हमें प्रसन्नता होती है लेकिन आज आने में प्रसन्नता कम है और दु:ख ज्यादा है क्योंकि सब के मन उदास हैं, हम आपका दु:ख बटाने के लिए आज आपके बीच में हाजिर हुए हैं। आपका स्नेह और आशीर्वाद मिलता रहेगा यही हमें आपसे उम्मीद है। धन्यवाद।

दंगों से गरीबों का नुकसान होता हैं

2 अप्रैल 1993 राजनांदगांव की आमसभा में संबोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

मध्यप्रदेश कॉंग्रेस कमेटी के सम्माननीय अध्यक्ष श्री दिग्विजयसिंहजी आदरणीय देवियों और सज्जनों, राजनाँदगाँव के सम्मानित नागरिकों के समक्ष मुझे आज कुछ बातें कहने का मौका दिया गया हैं। उसके लिए मैं अपने जिला कॉंग्रेस साथियों का आभारी हूँ और आप सब इतनी बड़ी संख्या में यहाँ पधारे इसके लिए आपके प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। दिग्विजयसिंहजी ने काफी विस्तार से वर्तमान परिस्थिति पर और पुराने संदर्भ पर प्रकाश डाला हैं उनको दोहराने से कोई फायदा नहीं होगा। एक बात उन्होंने कही इसको मैं जरूर दोहराना चाहूँगा और वो हैं, कट्टरपंथी विचारधारा का प्रभाव। जब मनुष्य सामान्य रूप से किसी बात पर विचार करता हैं ठंडे दिल और दिमाग से सोचता हैं तब कठिन से कठिन मामले पर भी एक सूझ बूझ का रास्ता निकलता हैं। चार लोग मिल बैठकर रास्ता निकालते हैं या खुद अकेले भी रास्ता निकलता हैं लेकिन जब दिल और दिमाग प्रभावित हो जाय भावनाओं से, ईष्या से, द्वेष से या कट्टरपंथी विचारधारा से तो कभी भी सूझ-बूझ के आधार पर न कोई हल निकाला जा सकता हैं और न किसी प्रकार से किसी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। इसलिए जो आज देश में खतरा पैदा हुआ है, वो कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित लोगों से ही हुआ हैं। क्योंकि उनके दिल और दिमाग पर विवेक का कोई स्थान नही है, चाहे वो हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो कोई भी हो और इसलिए सबसे बड़ा खतरा हमें आज कट्टरवादी लोगों से है। आप सब भली-भाँति उससे परिचित है और इस समय जो मुख्य मुद्दे हमारे देश के सामने है, हमारे विकास के, हमारे साधन जुटाने के देश में रहने वाले अलग-अलग वर्ग के लोगों को देश के मजदूरों को, किसानों

को, खेतीहर मजदूरों को, व्यापारियों को सबको आगे बढ़ने के लिए जो हमें रास्ते खोजने हैं, साधन जुटाने हैं। बेरोजगारी को दूर करने के लिए जो उपाय करने है हमारे औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए जो कदम उठाने हैं। यह सब मुद्दे है, देश के निर्माण से जुड़े रहने के और भारत को इस समय अपने स्थान को बनाकर रखने के लिए और आगे बढ़ने के लिए इन मुद्दों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करने की जरूरत हैं। आज दुनिया कितनी रफ्तार से आगे बढ़ रही है। नए-नए राजनैतिक और आर्थिक समीकरण बन रह हे। हिन्दुस्तान कहाँ खड़ा रहेगा दुनिया में, किस ओर मुँह मोड़कर चलेगा। दुनिया की जो शक्तियाँ हैं उनसे कि प्रकार का तालमेंल करेगा। यह विषय हैं जो प्रमुख है हमारे देश के हित में लेकिन आज हो क्या रहा हैं? इनकी तरफ नजर उठाने के लिए किसी को मौका ही नही दिया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ की बातें भी एक दो आपसे करना चाहता हूँ एक तो मुझे बेहद इस बात का दु:ख हुआ, समाचार-पत्रों में पढ़कर इस अंचल के एक समाजसेवी और समर्पित व्यक्तित्व पवन दीवान की चरित्र हत्या की कोशिश की जा रही हैं राजनीति में बहुत से हथकण्डे अपनाए जाते हैं, लेकिन इस निम्न स्तर पर आकर प्रयास करना शायद उचित नही है। मैं चाहूँगा कि जो लोग भी इस काम में लगे हैं वो इस काम को बंद करें। दूसरी बात सुनने को काफी आ रही है पृथक् छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण की। कभी भी भारत के अन्दर भारत के किसी भी भाग में अगर वहाँ के लोग इस प्रकार की बात सोचते हैं तो उनका प्रजातांत्रिक अधिकार है, वो राज्य बने या न बनें और उन बातों को ध्यान में रखते हुए लेकिन ऐसा कहने में उनको कोई फर्क नही पड़ता लेकिन इससे अन्दर कुछ जाने की जरूरत है। ऐसी माँगें उठती क्यों हैं अगर आपको स्मरण होगा इसी प्रकार से 77 और 80 के बीच में काफी जोर-शोर से ये सवाल उठा था। अंतं में लागों ने जानने की कोशिश की कि आखिर ऐसा क्यों हुआ तो ये बात बहुत साफ उभरकर आयी कि छत्तीसगढ़ जैसा कि हर अंचल में होता है अपना-अपना स्वभिमान होता हैं, अपने-अपने व्यापक हित होते हैं अपने-अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक हित होते हैं जब किसी अंचल को यह आभास होने लगता है कि ये सब उनके हितों पर कुठाराघात किया जा रहा है, उनको नजरअदांज किया जा रहा है तो वहाँ की जो कुण्ठा जन्म लेती हैं उस कुण्ठा से ग्रसित होकर अंत में लोग ऐसा सोचने लगते हैं कि सिवाय इसके उसके साथ और कोई रास्ता नही है। यहाँ पर सिर्फ इसकी पुनरावृत्ति हो रही है।

क्यों अचानक नारायणसिंहजी की पुण्य स्मृमि मनाना बंद हो गया? स्वर्गीय पंड़ित सुन्दरलाल शर्मा का स्मरण करना क्यों बंद हो गया। बहुत सी ऐसी बातें हैं, जो हित में हैं, यहाँ के गरीबों के, मछुआरों के, आदिवासियों के हरिजनों के या पिछड़े वर्ग के लोगों के उनके हितों को नजरअंदाज करने के तरफ क्यों वातावरण बन रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने तो यही किया। 77 और 80 के बीच में उन्हीं की सरकार थी और पिछले ढाई सालों में भी उन्ही की सरकार थी। तो यह मात्र संयोग नहीं है कि उस समय भी ये आवाज उठी थी और आज फिर ये आवाज उठ रही है। कम से कम काँग्रेस जनों को इस बारे में बहुत सतत और अपना जेहन बहुत साफ रखना चाहिए। हम किसी प्रकार से इन भावनाओं को जो कुण्ठा से जन्म लेती है उनको पनपने के कारणों को हम नही रोक सकते हैं, ये अलग बात है लेकिन कम से कम हम तो उसके कारण न बने। मैं यह कहना इसलिए आवश्यक समझता हूँ क्योंकि समाज में स्थिरता और देश कि स्थिरता नितांत आवश्यक हैं। इस चुनौतीपूर्ण अवसर के समय और इसमें आगे प्रजातांत्रिक तरीके से जो फैसला होगा अपनी जगह होगा लेकिन अस्थिरता के दौर से गुजरकर हम लोग फैसला करें ये जरूरी नहीं है न इसके लिए हम मजबूर है इतना हमें जरूर ध्यान में रखना चाहिएँ। बहुत सी अन्य बातें जो यहाँ पर उठाई गई है, मैं उनके बारे में दोहराना नहीं चाहता।

इस बात को ध्यान में रखते हुए हम और आप अपने-अपने जीवन के कार्यों में लगते हुए भी इन बातों को दिमाग में रखकर आगे चलने की कोशिश करेंगे, ये प्रार्थना मैं आपसे विनम्रता के साथ करने के लिए हाजिर हुआ हूँ। आपके स्नेह और विश्वास के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद, जयहिन्द।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्त्व

12 मई 1993 इन्दौर के एक महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं को सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

आदरणी मंत्रीजी महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय एवं अन्य सभी पदाधिकारीगण, यहाँ पर उपस्थित आदरणीय नागरिक बंधुओं, छात्र और छात्राओं, मैं बहुत आभारी हूँ आपका कि आपने शिक्षा के नए क्षितिज खोलने के किए बहुमूल्य प्रयास किए है। मुझे भी इससे सम्बद्ध होने का यह अवसर प्रदान किया। साइंस कॉलेज में जो फेकल्टी आप खोलने जा रहे हैं। निश्चित रूप से उनके माध्यम से बहुत हद तक जनरल अरोड़ा की बात पूरी होगी क्योंकि सभी के लिए यह फेकल्टी रोजगार उन्मुख हैं जिनमें बहुत ज्यादा किसी के ऊपर भरोसा करने की जरूरत नहीं हैं। आज भारत में जो व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में, इन परिवर्तनों का भी अनिवार्य असर यह है कि हमें प्रशिक्षित और शिक्षित नवयुवकों की बहुत लंबी कतार खड़ी करनी होगी। वे एक नई परिस्थितियों में आए है, उनको पूरा कर सकती हैं और इसके लिये शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक भी, और अन्य तरीको से भी हमें प्रयास करने होंगे। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से, साइंस के सबजेक्ट के माध्यम से जो पूरी तरह से तालमेल रखे आधुनिक आवश्यकता से और इस प्रयास में इन्दौर में यह कॉलेज अग्रणी हैं। यह सुनकर मुझे प्रसन्नता तो हुई ही मैं स्वयं अपने को गौरवान्वित समझता हूँ। प्रबुद्ध नागरिक जो पहल करते हैं, वो भी पहल समाज के हितों का साधन करती है जैसा आपने अभी तक इस महाविद्यालय को बनाने का और संचालित करने के प्रयास किए हैं वो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि हमारे देश का सिक्ख समुदाय पूरी तरह से आत्म निर्भर रहकर अपने देश की अपने समाज की सेवा करना चाहता हैं।

अभी डॉक्टर महावीर सिंहजी ने संकाय के संबंध में कुछ बातें कहीं। मुझे आप क्षमा करेंगे यह कहने के लिए कि जो मूलभूत समस्या हैं, वो यही हैं कि हम मित्र को मित्र के रूप में नहीं मानते। इसका मुझसे कोई संबंध नहीं है। ये संकाय के अन्दर की बात हैं कोई भी समाज हो कोई भी देश में वर्ग हो, नागरिकों के किसी भी समय उनके मन में यह भावना नहीं आनी देनी चाहिएँ कि हम उनकी भावनाओं से परिचित नहीं हैं और उसमें अपनी तरफ से कोई योगदान देने की आवश्यकता नहीं हैं। जब इस प्रकार की भावनाएँ होती हैं चाहे भारत में हो या किसी भी देश में हो वहीं से परेशानियाँ शुरू होती हैं। इस देश का सिक्ख समुदाय जिसके खून और पसीने से भारत माता के इस विशाल आँगन में उसकी मिट्टी में सब गुँथा हुआ है तो कैसे संभव है कि कोई ऐसी कल्पना भी कर सकें कि सिक्ख समुदाय अलग समुदाय है और भारतीयता के उस व्यापक संदर्भ में किसी भी प्रकार से भेदभाव देखा जा सकता है। मैं समझता हूँ कि कॉंग्रेस जो इस दौर से गुजर रही है, ये जरूरी है कि हम सतर्क भी रहे और प्रयत्नशील भी रहे कि इस प्रकार की भावनाएँ कहीं भी न पनप सकें। उनको दूर करने की दिशा में चाहे सत्ता में बैठे हुए लोग हो एक तालमेल के साथ अगर हम आगे नहीं बढ़ेंगे तो भारत की एकता के लिए बहुत बड़े खतरे पैदा होंगे। जहाँ तक राजीवजी और लोंगोवालजी के बीच समझौते का सवाल है, जो सही काम है, उस समझौते को देश के उस युवा प्रधान मंत्री ने जिसने अपनी व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर देश की एकता और अखंडता को ज्यादा महत्व दिया और उनके इन प्रयासों के लिए एक हौसले वाला, विश्वास वाला, आस्था वाला व्यक्ति संत लोंगोवालजी के

साथ आगे आए। आज हमारा दुर्भाग्य है कि ये दोनों हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन ये भी उतना ही सही है शायद कुछ लोगों ने कोशिश भी की हो जो समझौते पर दस्तखत राजीवजी और लोंगोवालजी ने किए हैं उसका कोई भी पर्याय अभी तक तो नहीं आया है और देश आज भी ये विश्वास प्राप्त करता है कि जिन भावनाओं से इन दो नेताओं ने ये समझौता किया था उस समझौते को कार्यरूप में परिणित करने से हम देश के उस भाग की मूलभूत समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

यहाँ पर कुछ अपेक्षा की गई। आप जानते है कि प्रादेशिक शासन और भारत शासन में कई मूलभूत भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें है जो आज किसी प्रदेश के मुख्यमंत्री की हैसियत से पाँच मिनट में किया जा सकता हैं, वह भारत शासन के मानव संसाधन मंत्री की हैसियत से करना संभव नहीं है लेकिन फिर भी आपके ये जो प्रयास हैं, उनमें हमारा भी योगदान हो इसे तो मैं स्वीकार करता हूँ और कॉलेज के संस्थापकों से यह निवेदन करता हूँ कि उस शिक्षा अनुदान से सहायता के लिए अपने प्रस्ताव बनाकर भेजे। मैं कोशिश करूँगा कि अनुदान आयोग आपकी आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए कुछ सहायता आपकी जरूर करें। मैं पुनः आप सबका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ और अपनी ये कामना व्यक्त करना चाहता हूँ कि महाविद्यालय जो देश के एक महान सपूत के नाम से आपने स्थापित किया हैं। ये पूरी तरह से विकसित हो और विकसित होकर इन्दौर के शैक्षणिक जगत में अपना अलग और उचित स्थान प्राप्त करे और यहाँ पर पढ़ने वाले भाई और बहन भारत के कुशल निष्ठावान और समर्पित नागरिक के रूप में निकलकर देश की जिम्मेदारी अपने कंधो पर उठाएँ। यही हम सबकी मंगलकामना है। जयहिन्द।

दलित वर्ग का काँग्रेस पर से विश्वास डगमगाया

12 मई 1993 इन्दौर अ.ज.जा. एवं अ.जा. काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं की सभा में भाषा के मुख्य अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय श्रद्धेय श्री दिग्विजयसिंहजी और मंच पर विराजे हुए सभी आदरणीय साथियों। जो प्रयास किया गया है वह निश्चित रूप से सराहनीय हैं और उस प्रयास के लिए हम सबको धन्यवाद देना ही चाहिए लेकिन इस औपचारिकता को पूरा करने की जरूरत हैं। यह जो आज मैं कहने वाला हूँ उसका संदर्भ भी स्पष्ट है। असली परेशानी देश की इसलिए बढ़ रही हैं कि न तो हम संदर्भ को स्पष्ट करना चाहते हैं और न अपने मंतव्य को स्पष्ट करना चाहते है। जो कहना चाहते हैं, वह अल्प रूप से कहना चाहते हैं, जिसकी वजह से विश्वसनीयता घट गई हैं या तो वह समझते है कि इन लोगों का इतना काम नहीं हैं। सम्मेलन बुलाएँगें, लम्बे-चौड़े भाषण होंगे, तालियाँ पिटेंगी, नारे लगेंगे, जिन्दाबाद के और अखबारों में बयान छप जाएँगे, वर्णन छप जाएगा और तीसरे दिन सम्मेलन की स्मृति समाप्त हो जाएगी। क्या यही प्रक्रिया हम चालू रखना चाहते हैं। सबसे पहला सवाल यह है और खासतौर से काँग्रेस के लिए यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि काँग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान से लेकर और देश के नव निर्माण के दौर की यात्रा को चलाने तक, ये हरदम कोशिश की है कि काँग्रेस राष्ट्रीय संदर्भ के बारे में किसी को मुगालतें में न रखे और काँग्रेस के मंतव्य के बारे में किसी को भ्रम पैदा न हो। आज की स्थिति में हम यह बात नहीं कह सकते। आज क्यों देश के कमजोर वर्ग, दलित वर्ग हम पर विश्वास नहीं करते। हम तो वही है। संस्था का स्वरूप वही है संविधान वही है, सब कुछ वही है। लेकिन गाँधीजी कुछ कहते थे तो उसका अर्थ और होता था, पंडित जवाहरलाल नेहरू कुछ कहते थे, तो उसका अर्थ कुछ और होता था, उनके शब्दो पर वे विश्वास करते थें। ये लोग थोड़े दिनों तक हमारे बीच में रहे, लेकिन जितने भी दिन रहे हमारे बीच में उन्होंने करीब-करीब दलितों से अच्छे संबंध कायम कर लिए

थे। इस देश के दलित वर्ग में क्या बात घर कर गई कि आज हम काँग्रेस की हैसियत से जब बात कहने जाते हैं तो उस पर वे विश्वास नही करते इसलिए यह अस्मिता का संक्रमणकाल हैं। क्षमा करिएगा अब उपकार और उपदेश दोनों का समय बीत गया। अब उपदेश सुनकर कोई संतुष्ट होने वाला नहीं है और मैं किसी पर उपकार कर रहा हूँ। इस भावना को कोई स्वीकार करने वाला भी नहीं है। अगर हम इस बात को समझ ले तो जरूर अब भी समय है, काँग्रेस को भी बचाने का। और मै तो सदैव कहता हूँ काँग्रेस बचेगी, तो देश बचेगा, काँग्रेस टूटेगी तो देश टूटेगा। इसके लिए किसी बहुत लंबे-चौड़े प्रस्ताव की आवश्यकता नहीं है। पिछले एक-दो सालों में काँग्रेस ने जो प्रस्ताव पारित किए हैं, इस संदर्भ में उनको पढ़ने का भी हमारे पास टाइम नहीं हैं। पिछले अधिवेशन का प्रस्ताव पढ़ने का भी टाइम नही है। दो साल की बात तो छोड़ दीजिए आज हमें एक और प्रस्ताव पारित करने का क्या महत्व हैं। मुझे कुछ नही मालूम, जरूरत इस बात की है कि जो हमारे हाथों मे अस्त्र हैं, तो हम उसका इस्तेमाल करें लोगों के अधिकारों को दिलाने के लिए और उनके अधिकारों की रक्षा करें। क्या यह मात्र संयोग हैं कि जब झुग्गी झोपड़ी की बात की जाती है, तो वोट पाने के लिए तो सब ताली बजाते हैं, लेकिन मौका मिले तो सबसे पहले झुग्गी पर कब्जा वही लोग करते हैं जो हमारे आपके नाम से जाने जाते है। और हमारी पार्टी क्या करती हैं उनके बारे में कभी पार्टी ने उनसे पूछा कि झुग्गी-झोपड़ी में निवास करने वाले जो लोग हैं, आप अगर उनकी रक्षा नहीं कर सकते तो कम से कम भक्षक तो मत बनिए और अगर यह प्रमाणित होता है कि किसी काँग्रेसी ने ऐसा किया है तो क्या इस आधार पर, नीतिगत आधार पर, हमारे सैद्धांतिक आधार पर किसी काँग्रेसजन को पार्टी से निष्कासित किया गया हैं। ये ऐसे मसले हैं जो केवल चर्चा के मुद्दे नहीं रह गए और अगर हम अभी भी अपने को भ्रम में रखेंगे तो भविष्य क्या होगा? इसकी कल्पना करना भी बहुत दु:खद है, क्योंकि जैसा सिंहदेव साहब ने कहा अब तो बढ़ती जिन्दगी है किसी को जगाने की जरूरत नहीं हैं, सब जाग गए हैं, समझ गए हैं अब तो वह कर्तव्य का सौदा करना देखना चाहते हैं और इसीलिए विरोधाभास का लाभ लेकर अन्य लोग अब इस देश के दलित समुदाय के समक्ष ज्यादा विश्वसनीय होते जा रहे हैं बजाय हम लोगों के, क्योंकि उनके लिए नई बात हैं और उनकों केवल इशारा करना है, संकेत करना है। ये लोग तो 50 साल से आपसे यही कहते आए हैं। आपकी हालत आज क्या हैं और आप हम पर विश्वास करिए हम पांच साल में आपकी हालत बदल देंगे तो जो बिल्कुल सबसे नीचे दबा पड़ा हुआ हैं, घुटन हो रही हैं, वो साँस नहीं ले पाता हैं तो आपने पहले क्या किया उसको कैसे आवश्यकता हैं जो आज साँस लेने में सहायता करना चाहता है, तो उसका हाथ पकड़ेंगे इसमें उसकी कोई गलती नहीं हैं। यह तो हमें समझने की जरूरत हैं, कि ऐसी स्थिति क्यों निर्मित हो रही है। और इसका एक स्पष्ट कारण भी हैं। अगर हम बारीकी से अपने देश की आजादी के पहले और आजादी के बाद आर्थिक प्रगति, राजनीतिक प्रगति और दोनों के तालमेल की समीक्षा करने की हिम्मत करें और मैं 'हिम्मत' शब्द का इस्तेमाल जानबूझकर कर रहा हूँ क्योंकि कभी-कभी यही 'हिम्मत' हमारा साथ छोड़ जाती हैं। अगर हम ऐसी हिम्मत करेंगे तो जो सामने दृश्य आएगा वह बहुत सुखद दृश्य नहीं आएगा, और जब तक उस दृश्य को हम नही देख सकते हैं, ऐसी हिम्मत हमारी नही है तब तक हम उसकी दवाई भी नही कर सकते उसका उपचार भी नहीं कर सकते हैं, उसको ठीक करने के दो कदम भी हम आगे नही बढ़ा सकते।

ये मानकर चलिए समाचार-पत्र उनकी कभी-कभी हिमायत करते हैं क्योंकि उनके पास न कुछ देने के अधिकार है और उनमें एक आतंक है जो प्रशासन तंत्र है जिसके ऊपर से आज भी मेरी मान्यता हैं कि सर्मायेदारी की भावना पूरी तरह से नही गई है जिसको हम सामंती विचारधारा कहते हैं। सामंत भले ही खत्म हो गए हो लेकिन वो विचारधारा इस देश में अभी भी काफी प्रभावशाली है और जो नए-नए सामंत बन रहे हैं, साधनों के केन्द्रित होने से अधिकारों के केन्द्रित होने से वो शायद पुराने सामंतों से कहीं ज्यादा बढ़कर हैं। जब उन पर किसी प्रकार का अंकुश लगाने की

बात आएगी, तो आपका विरोध होगा आपका क्या तजुर्बा हैं, वही होता हैं जो होना चाहिए। आप एक-दो को सस्पेंड करेंगे, चार को सस्पेंड करेंगे, दो को बर्खास्त करेंगे, लेकिन सस्पेंशन और बर्खास्तगी से बातें नहीं होती। ये तो सब हम अपने विचार से उस दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित होंगे वो सबूत हैं और मेरा तो यह भी अनुभव है कि अगर कहीं सख्ती करने की बात आती हैं, समय पर तो ये मैं अपने से कह रहा हूँ कि जो लोग गरीबों के अधिकारों का संरक्षण नहीं करते जो उनको दिए हुए अधिकारों को देने में हिचकिचाहट करते हैं। कभी-कभी बेइमानी भी करते हैं जब उन पर कार्रवाई करने की बात आती हैं, मैं नाम किसी का लेना नही चाहता, बड़े-बड़े लोगों के हाथ उनकी पीठ पर रहते है हमे ऐसे लोगों के खिलाफ लड़ना हैं।

आज काँग्रेस के लिए इस बात का संक्रमण काल हैं, और अगर अगले दो-तीन वर्षों में हमने अपने कथन से नहीं वरन् करनी से यह प्रमाणित नहीं किया कि हम इस संक्रमण काल की बारीकियों को समझते हैं और उसके लिए जो कुछ करना एक नागरिक की हैसियत से एक राजनीतिक पार्टी की हैसियत से आवश्यक हैं। उसको करने के लिए हम तैयार हैं, वो जोखिम उठाने के लिए हम तैयार हैं अगर ये बात लोगों के गले नहीं उतरती हैं, तो सत्ता, प्रजातंत्र में किसी की गुलाम नहीं हैं, प्रजातंत्र में सत्ता वहीं जाती हैं जहाँ आशाएँ होती हैं। यहाँ लोगों के मन में भविष्य के प्रति विश्वास पैदा होता हैं।

ये सम्मेलन आपको मुबारक हो लेकिन दलित समाज को इससे क्या मिलेगा। ये उद्देश्य बना रहेगा। हम चाहते हैं कि वह प्रश्नचिह्न आज की तरुणाई मिटाए और वही मिटा सकती हैं। आप संकोच मत करिए, आप चुप मत बैठिए, जब तक जो बातें कही जाती, उन पर अमल नहीं होता, अधिकार देने की बात कही जाती हैं। वो अधिकार दिए नहीं जाते हैं जो और अगर आप इस बैचेनी को अपने राजनैतिक चरित्र में ढाल देंगे तो दुनिया की कोई शक्ति नहीं हैं जो भारत के सर्वहारा वर्ग को अधिकार दिलाने से रोक सकें। धन्यवाद।

भारत में प्रजातंत्र कायम रहेगा

12 मई 1993 अभ्यास मंडल, इन्दौर के कार्यक्राम में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

आदरणीय देवियों और सज्जनों, सर्वप्रथम तो मैं इस विलम्ब के लिए आप से क्षमा माँगता हूँ लेकिन हकीकत भी बता देना चाहता हूँ। मेरा यहाँ कार्यक्रम बनने के बाद अभ्यास मंडल के सम्मानित साथी हम से मिले दिल्ली में और इस आयेजन में आने के लिए मुझे कहा। क्योंकि यह संस्था और आप सब लोग जिससे जुड़े हैं, उसकी मुझे पूरी जानकारी थी। मैंने इनसे बहुत विनती की कि उस दिन मेरे ऐसे कार्यक्रम लोगों ने बना दिए हैं कि मैं समय पर नहीं पहुँच पाऊँगा। अब की दफा आप माफ करें, अगले मौके पर मैं जरूर हाजिर हो जाऊँगा। मैं हठधर्मी तो नहीं कहूँगा उनका अधिकर है, उन्होंने अपना अधिकार अच्छी तरह से उपयोग में लिया और इसलिए मेरा यहाँ आना तय हुआ। मेरी शंकाएँ भी सही निकली इसलिए विलम्ब हुआ। मैं चाहता हूँ आप इस असुविधा के लिए मुझे क्षमा करेंगे।

जो विषय है जिस पर मुझे शायद बोलना है, अपने भविष्य के बारे में बात करते हुए थोड़ी हिचकिचाहट होती है। क्योंकि भारत में लोकतंत्र रहे इसी में अपना भविष्य सुनिश्चित है। मैं समझता हूँ हिन्दुस्तान में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो इससे सहमत न हो। जो भारत के लोकतंत्र की स्थापना या इसके अस्तित्व से अपने को नहीं जोड़ पाता है उन लोगों के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। क्योंकि वह तो रास्ता ही भिन्न है। दुनिया में हर रास्ते पर चलने वाले लोग हैं, अलग-अलग मंजिल ढूँढने वाले लोग हैं, उस मंजिल पर पहुँच कर अपने-अपने मन की बात करने

वाले लोग है। इसलिए मै उस पर कोई अपनी राय जाहिर नहीं करना चाहता। मैं ऐसा मानकर चलता हूँ कि जितने श्रोतागण यहाँ विराजे हैं वे भारत में लोकतंत्र के अस्तित्व को सुरक्षित देखना चाहते हैं और लोकतंत्र के भविष्य को सुनिश्चित करना चाहते है। इस आधार पर मै आप से दो-तीन बातें कहना चाहता हूँ। यह धारणा है कुछ लोगों की कि लोकतंत्र एक विदेशी व्यवस्था है मूल रूप से। जिसे हमारे संविधान के रचयिताओं ने अंगीकार किया, अजादी के बाद। मै यह प्रामाणिकता से नहीं कह सकता कि इस को कहाँ तक स्वीकार किया जा सकता है, इस कथन को या इस विचार को, लेकिन मेरी राय बहुत स्पष्ट है। प्रजातंत्र का जो मौलिक व्यापक स्वरूप है वह हमारे देश में सदियों, सदियों से विद्यमान रहा है। यदि आज इन 45 वर्षों में अनेकों चुनौतियाँ आने के बावजूद उसका मौलिक स्वरूप विद्यमान है तो 1947 में लगाए हुए पौधे के रूप में नहीं है वह उस शाश्वत वृक्ष के रूप में है जिसकी जड़ें बहुत गहरी है, ऊपर शायद कम दिखती हैं, जड़ों में ज्यादा है। प्रजातंत्र संविधान के रूप में अथवा कानून कायदे के रूप में उसकी अलग व्याख्या है, उसका अलग स्वरूप है, विधान सभाएँ हैं, लोक सभा है, पंचायतें हैं, यह अलग इसका ढाँचा है और मताधिकार का अधिकार स्वतंत्रता के साथ उस अधिकार का उपयोग उसकी आधारशिला है, फिर सरकारें बनती है, बिगड़ती है, व्यक्तियों का चुनाव होता है वह इसका वाह्य रूप है लेकिन मूल में प्रजातांत्रिक भावनाएँ हैं, वे वह आस्थाओं पर टिकती हैं, विश्वासों से बनती हैं और यह आस्था और विश्वास भारत की पुरातन परम्परा है। यह 1947 में शुरू हुई। इसके उदाहरण अगर हमने देखने हैं, आज तो खैर बहुत से मिल सकते हैं लेकिन आज से 50-60 साल पहले भी, आखिर हम लोग तो अपनी जिन्दगी की ही बात करेंगे, आप किसी गाँव में चले जाइए, आपको एक ढाँचा छोटा सा न किसी संविधान से पूरी तरह जुड़ा था न कोई अधिकार दिए गए थे, न कोई विधेयक था, लेकिन गाँव में आम सहमति से कुछ मुद्दे जो समाज से जुड़े हुए मुद्दे ये व्यक्ति से जुड़े हुए मुद्दे नहीं, समाज से जुड़े हुए मुद्दे, उन पर किसी न किसी प्रकार से विचार विमर्श टीका-टिप्पणी के माध्यम से किसी निष्कर्ष पर पहुँच कर सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करने की दिशा में बढ़ने की प्रक्रिया थी। वह प्रक्रिया मेरे मत में मूल रूप से प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का स्वरूप है। आज भी प्रजातंत्र के पीछे कोई लाठी, गोली और तलवार की वजह नहीं है। यदि आप कंस्टीट्यूएंट असेम्बली की डिवेट पढ़ें जिसमें यह विचार विमर्श हो रहा था कि हमारे देश के प्रजातंत्र का क्या स्वरूप हो तो अलग-अलग विचार थे बहुत से लोगों के, रिप्रजेन्टेशनल इलेक्शन होना चाहिए, कुछ लोगों के और विचार थे कि प्रेजीडेन्शियल फार्म होना चाहिए, पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी होनी चाहिए, अलग-अलग सब के विचार थे। इस विषय पर कहीं कोई मतभेद नहीं था। जो उसकी रिसर्च करने वाले लोग हैं वे ज्यादा गहराई से इन सब चीजों को देख और समझ सकते हैं। वे इस बात को देख चुके हैं और इस निष्कर्षों पर पहुँचे चुके हैं। हम लोग तो उन निष्कर्षों से ही अपनी धारणाएँ बना सकते हैं। मुझे संयोग मिला था कंस्टीट्यूएंट असेम्बली की एक डिबेट को सुनने का। यह बात 1948 की है। यह डिबेट आधारित थी या कि सम्बन्धित थी कि हम अपने देश के अंदर किस सीमा तक लोगों के हाथों में अधिकार दे या न दें। क्योंकि चुनावी प्रक्रिया के बारे में काफी मतभेद था। यह एक धारणा थी पढ़े-लिखे लोग ज्यादा नहीं है, अंधविश्वासी कुछ लोग हैं। गरीब लोग ज्यादा हैं, क्या यह सही मतदान जो कि किसी भी प्रजातंत्र की आधार शिला है, कर पाएँगे? यदि नहीं कर पाएँगे तो उससे कितना विकृत हो जाएगा भारत का प्रजातंत्र, इस विषय पर बहस हुई। सब के नाम तो मुझे याद नहीं, तीन भाषण जो मुख्य थे वह मुझे याद हैं। एक तो पंडित जी का था, एक डॉ. अम्बेडकर जी का था और तीसरा दक्षिण भारत के कोई हमारे भावी नेता थे, मैं नाम गलत कह दूँगा इसलिए नाम नहीं लूँगा लेकिन वह हमारे प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में से एक थे। मै करीब दो घंटे रहा।

पहला मुझे साक्षात्कार इस विषय से उस दिन मिला। मेरी उम्र 18-19 वर्ष की थी। मै ज्यादा गहराई से इन बातों को नहीं समझता था। लेकिन देश आजाद हो गया है, हमारा संविधान बन रहा है जिसके आधार पर देश का भविष्य संचालित होगा यह बातें स्पष्ट थीं। उस बात से मुझे निष्कर्ष निकालने को मिले। पहला यह था कि पंडित जी और डॉ. अम्बेडकर के विचार इस मामले में करीब-करीब एक थे। चाहे जितनी भी कमियाँ हों हमारे देश के अंदर - शिक्षा की, समझदारी की, जैसा लोग समझते थे इन बातों का यह मत था कि एक दफा अगर इस प्रजातांत्रिक श्रृंखला से भारत के व्यक्ति को जोड़ दिया जाएगा तो वह हम से और आप से ज्यादा अच्छी तरह से समझ जाएगा, उसके अधिकार क्या हैं और उन अधिकारों को कैसे उपयोग में लाना चाहिए। जो दक्षिण भारत के महानुभाव थे उनका कहना यह था कि वैसे तो सैद्धांतिक रूप से आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन व्यावहारिक आधार पर यह कोरी कल्पना रहेगी और कुछ चंद लोगों के हाथ में प्रजातांत्रिक पद्धति के माध्यम से ही देश की सत्ता सिमट कर आ जाएगी। और फिर उसके बाद अधिनायकवादी स्वरूप ग्रहण करने में कोई बहुत दिक्कत नहीं होगी। अधिनायकवाद और प्रजातंत्र दोनों एक साथ नहीं चल सकते। ऐसा प्रतीत होता है। जो शंकाएँ उस दिन जाहिर की गई थीं ईमानदारी से और जो विश्वास जाहिर किया गया था ईमानदारी से यह तर्क और वितर्क आज भी देश में चल रहा है। जब मैं यह बात कहता हूँ यह सोच समझ कर कह रहा हूँ कि हम अपने को इस आरोप का भागी बना रहे हैं, शायद मैं भी भ्रमित हूँ कौन सी चीज होनी चाहिए, कौन सी चीज नहीं होनी चाहिए, मैं भ्रमित नहीं हूँ। लेकिन मेरा यह विश्वास है जो दूसरा तर्क है उस तर्क को देश के करोड़ों करोड़ लोगों ने तो नकार दिया, किसी डिबेट में नहीं, किसी भाषण के माध्यम से नहीं, लोक सभा के चुनाव और उससे कहीं ज्यादा गिनती विधान सभा के चुनावों के अपने राजनीतिक व्यवहार से उन्होंने इस तर्क को नकार दिया है और यह साबित कर दिया है कि भारत के लोग प्रजातंत्र के महत्व को भी समझते हैं। उसके द्वारा प्रदत्त अधिकारों को भी समझते हैं और उस प्रजातंत्र के ढाँचे को बनाने के जो उनके अधिकार हैं उनका उपयोग कैसा किया जाए इसको भी भलीभाँति समझते हैं। यह मैं समझता हूँ एक ऐसा तथ्य है जो अपने आप ही कह देता है कि यह समझने की ताकत किसी ने दी नहीं है, जिस को अँग्रेजी में कहा जाता है इन्संटिंक्टिव नालिज या रियलाइजेशन, वह इस देश के लोगों में है। यह स्पष्ट है कहीं से उधार नहीं ली जा सकती, कहीं से लेकर रोपी नहीं जा सकती, वह है। आप पूछेंगे इस सब का क्या मतलब है, धर्म निरपेक्षता से। शायद किसी को शंका हो रही है, मैं हटाना चाहता हूँ इसलिए इतनी लम्बी चौड़ी बात कर रहा हूँ ऐसी बात नहीं है। धर्म निरपेक्षता की कोई भी परिभाषा को आप लीजिए जिसको आप मानते हों। क्योंकि उसकी परिभाषाएँ बहुत होने लगी हैं। कुछ छद्म धर्म निरपेक्षता है तो कुछ असली है। कुछ आधी असली आधी नकली है। इस तरह की बातें देश में चल रही हैं लेकिन एक बात स्पष्ट है जिस परिभाषा से भी आप जाएंगे उस परिभाषा में राज्य अर्थात् राजनीति और धर्म के बीच में विभाजन रेखा हो, इसको स्वीकार करना ही पड़ेगा। अगर इस विभाजन रेखा को आप स्वीकार नहीं करते हैं तो फिर कोई भी परिभाषा आप दीजिए धर्म निरपेक्षता की, स्पष्ट है आप मौलिक रूप से मुख्य रूप से स्टेट और रिलीजन के बीच में जो विभाजन रेखा होनी चाहिए उसको नहीं रखना चाहते हैं, नहीं रखना चाहते हैं तो किस उद्देश्य से नहीं रखना चाहते हैं, यह अपने आप प्रकट और स्पष्ट हो जाता है। इसलिए प्रजातंत्र को कायम रखने के लिए भारत जैसे देश में जहाँ इतनी विविधता है, धर्म की है, भाषा की है, बोलचाल की है, रीति-रिवाजों की है, विश्वासों की है, आस्थाओं की है। अगर वह विभाजन रेखा धूमिल हो जाएगी। तो किस का किस के ऊपर असर पड़ेगा यह तो समय बताएगा लेकिन प्रजातांत्रिक स्वरूप प्रजातंत्र का नहीं रह जाएगा और धर्म का स्वरूप धार्मिक नहीं रह पाएगा।

इसलिए भारत में प्रजातंत्र के भविष्य के लिए जिस तरह की भी धर्म निरपेक्षता की आप की परिभाषा हो उसको कायम रखना या उस आधार पर आगे बढ़ना नितांत अनिवार्य है और मेरे मत में कोई विकल्प इसके लिए नहीं है। अगर विकल्प ढूँढना हम तलाश करेंगे तो हम और बड़े भारी दलदल में जाकर फँस जाएँगे जब कि प्रजातंत्र का भी स्वरूप विकृत हो जाएगा और धर्म का भी स्वरूप विकृत हो जाएगा। ऐसी परिस्थिति हमारे देश के लिए बड़ी ही भयावह होगी, यह मेरा मत है इसलिए हरेक प्रबुद्ध नागरिक को जो देश के प्रजातंत्र में विश्वास करता है जो उसके अस्तित्व को स्वीकार करता है उसको बना कर रखना चाहता है उसको धर्म निरपेक्षता के मामले में और विचार-विमर्श हो सकता है कि उसकी क्या परिभाषा हो लेकिन मूल रूप से धर्म निरपेक्षता को कायम रख कर ही हम इस देश में प्रजातंत्र की कल्पना कर सकते हैं, इसके बिना नहीं कर सकते हैं, ऐसा मेरा मत है। आप सब लोग अपने-अपने तरीके से इस विषय पर विचार करते होंगे। अब आज तो मौका नहीं है क्योंकि दूसरा लाउड्स्पीकर भी मुझे सुनाई पड़ रहा है, जहाँ मुझे पहुँचना है लेकिन आज न तो आपके साथ न्याय हुआ है और न मेरे साथ न्याय हुआ है। इसलिए मैं यह प्रार्थना करूँगा कि आगे किसी समय मुझे आप मौका दें, क्योंकि मेरी बात तो हो गई, आपकी बात तो मैंने सुनी ही नहीं, आपकी बात सुनना मेरे लिए उतना ही आवश्यक है शायद ज्यादा आवश्यक है, मेरी बात आपके सुनने से। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ इस आयोजन में आने का आपने अवसर दिया। इन्दौर का कोई भी आयोजन अपनी महिमा, अपनी गरिमा विशिष्ट रूप से रखता है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

गरीब का कोई धर्म नहीं होता

19 मई 1993 डबरा काँग्रेस की एकता सम्मेलन में दिये गये भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

यह आम सभा मध्यप्रदेश में इस बात को रेखांकित करने के लिए बुलाई गई है कि इस प्रदेश के सभी काँग्रेसजन, जो ब्लाक स्तर पर काम करते हैं, जिले में काम करते हैं, प्रदेश स्तर पर काम करते हैं वे इस बात को महसूस करते हैं कि अब जो संघर्ष सारे भारत में और मध्यप्रदेश में राजनीतिक रूप से होने वाला है उस संघर्ष के लिये व्यक्तियों को सुस्ताने का समय नहीं है। वो काँग्रेस पार्टी के अस्तित्व का संघर्ष है, और वो संघर्ष हैं हमारे देश के आदर्शों और मूल्यों के लिए जिनके सहारे हमारा हजारों साल का इतिहास हैं और उसके सहारे हम भविष्य में भी नया इतिहास बना सकते है। इसलिए यहाँ उपस्थित अपने सभी साथियों से विनम्रता के साथ यह कहना चाहूँगा कि हम यहाँ पर बहनों और भाइयों को केवल संबोधित न करें वरन् अपनी प्रतिबद्धता उनके सामने अभिव्यक्त करें, कि जो आशा और आकांक्षाएँ मध्यप्रदेश के काँग्रेसजनों की है। उसे पूरा किया जाएगा, हमेशा आपसे और इस प्रदेश के सर्वहारा वर्ग, गरीब, हरिजन, आदिवासी और पिछड़े वर्ग और अलग-अलग सम्प्रदाय के लोगों से है, उन आशाओं और अभिलाषाओं को हम भलीभाँति पहचानते हैं, उनके हितों के प्रति हम प्रतिबद्ध हैं और इन्हीं परिस्थितियों में हमसे ऐसा कोई काम नहीं हो जिससे किसी के भी हितों पर कुठाराघात करने का मौका मिले और इसके लिए सिर्फ यह जरूरी है और उन्हें सार्वजनिक रूप से यहाँ पर कहना मैं इसलिए आवश्यक समझता हूँ ताकि आप सब लोग भी जागरूक रहें। लेकिन नजर छुपाकर कोई काम न हो। ऐसी मेरी मान्यता है और यह जरूरी है और इस प्रदेश के अन्दर समस्त काँग्रेसजनों के बीच समानता का सहयोग का और परस्पर विश्वास का आधार है जो अपने को आगे बढ़ा सकें। वर्चस्व की राजनीति और डेमोक्रेसी साथ-साथ नहीं हो सकती है। ये हमको समझना पड़ेगा।

हम लोगों की तरफ देखते हैं तो हमको स्वीकार करना चाहिए कि वह केवल इसलिए है कि हमारी चट्टान तो

काँग्रेस के सिपाही की चट्टान है और इस संघर्ष में आज यह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें प्रदेश के भौगोलिक आकार से मतलब नहीं है, हमें ये देखना होगा, हमें ये समझना होगा कि प्रदेश में रहनेवाले जो लोग हैं वो कौन हैं। हमारी तमाम नीतियाँ और कार्यक्रम आदिवासी, हरिजन, पिछड़े वर्ग और मजदूर काँग्रेस के संरक्षण और उनके विकास के लिए हैं। अगर सांप्रदायिक शक्तियों से लड़ने का अगर कोई माध्यम हो सकता है न केवल मध्यप्रदेश में बल्कि हर प्रदेश में तो वह ये ही लोग हैं। प्रदेश में अगर हमने इस बात को स्वीकृत कर दिया तो मुझे तनिक भी संदेह नही है, कि आज भारतीय जनता पार्टी या और कोई पार्टी क्यों न आए वह काँग्रेस को चुनौती नहीं दे सकती और न किसी तरह का कोई नुकसान पहुँचा सकती है। लेकिन किन्हीं कारणों से इन वर्गों के बीच में संदेह पैदा हो जाता है और उस संदेह को हम किसी तरीके से दूर नहीं कर पाते हैं तो एक आंतरिक कमजोरी आ जाती है और उस कमजोरी से हमारी पार्टी को नुकसान हो सकता है।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया था। गरीब कौन हैं, गरीब की परिभाषा न जात से होती है, न धर्म से होती है, गरीब-गरीब है। चाहे वह किसी भी धर्म का हो, मंदिर में जाता हो, मस्जिद में जाता हो, गुरूद्वारे में जाता हो, गिरजाघर में जाता हो, गरीब का कोई धर्म नही है। वह अपने दैनिक कार्यक्रम को चलाने की कोशिश करता है। हम सबको मिलकर बिना किसी हिचक के जब भी जैसे हो हम सबको एक साथ मिलकर चलना चाहिए, ये अपने आप में स्पष्ट उपलब्धि है। इसकी चेतना एक नई भावना इन वर्गों के बीच जन्म ले रही है और काफी साफ तौर से नजर आ रही है। बौद्धिक कार्यकर्ता और राजनीतिक दल इसमें लगे हैं और हमें इसे समेटने की जरूरत है। और हमें जनाधार बढ़ाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि जो राज उनके ऊपर जुर्म और आतंक का हैं, उस छाया को दूर करने के लिए काँग्रेस को आगे बढ़कर काम करना चाहिए। हमारी पार्टी के अन्दर, पार्टी के बाहर जाकर हम उनके विश्वास को मजबूत करें। वह विश्वास ही आधार है काँग्रेस का, राजनीतिक अस्तित्व का।

मैं समझता हूँ कि ये सभा ऐतिहासिक भी है और मध्यप्रदेश के राजनीतिक भविष्य को रखने के लिए ये दूरगामी और प्रभावशाली तारीख होगी ऐसी मेरी मान्यता है। अपनी ओर से मैं अपने सभी साथियों के समक्ष हजारों उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष यह वचन देना चाहता हूँ अपनी ओर से कभी भी ऐसी बात नहीं होने दूँगा कि एकता को जरा भी धक्का लगे। हमारा यह विश्वास ही नहीं मेरा यह संकल्प है कि मध्यप्रदेश में काँग्रेस की एकता न केवल प्रदेश में सांप्रदायिक शक्तियों को अपने स्थानों पर कायम नहीं रहने दे सकती, बल्कि एक प्रकार से समूचे भारत वर्ष में एक नई मिसाल होगी। इस संकल्प को टटोलने का अपने दिल की गहराइयों में जाकर अपने विश्वास को बनाये रखने का आधार है। हम अपने राजनैतिक कर्तव्य इस प्रदेश की गरिमा को और उस महान संस्था के प्रति हम सहायता से जुड़े हैं। हम वो कर सकते हैं इसी आशा और विश्वास के साथ यहाँ पर आए हुए सभी भाइयों और बहनों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ और माधवराव जी सिंधिया को विशेष रूप से इस बात के लिये बधाई देना चाहता हूँ कि आज सही समय पर उन्होंने सही कदम उठाया है।

शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं

13 जून 1993 केन्द्रीय विद्यालय, सीहोर में सम्बोधन के प्रमुख अंश —

समागेह के अध्यक्ष माननीय दिग्विजय सिंह जी, केन्द्रीय विद्यालय परिवार के सभी बंधुओं, सीहोर के आदरणीय नागरिक बंधुओं आज हम सब को बड़ी प्रसन्नता है कि तथा सीहोर में केन्द्रीय विद्यालय का भवन बन कर तैयार हुआ है और उसे यहाँ के छात्र और छात्राओं को उनके उपयोग के लिए समर्पित किया जा रहा है। केन्द्रीय

विद्यालय संस्थान एक ऐसा संस्थान है जिसकी कल्पना एक बहुत सीमित दायरे में की गई थी। जहाँ-जहाँ केन्द्रीय कर्मचारी सरकार के हों वहाँ पर उनकी शिक्षा के लिए कुछ स्कूल होने चाहिए क्योंकि उनका स्थानान्तरण एक स्थान से दूसरे स्थान पर होते रहते हैं और फिर बालक और बालिकाओं को कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। यह तो इस संस्थान के लिए एक गौरव की बात है और एक सीमित दायरे में स्थापित किया गया यह संस्थान आज भारतवर्ष में एक विशाल संस्थान बनने जा रहा है और इसके लिए और कोई जिम्मेदार नहीं है, इस संस्थान के विद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती है वह इसके लिए जिम्मेदार है। और इसकी लोकप्रियता बढ़ी है, आवश्यकता बढ़ी है और अब यह परिवार ७०० से ज्यादा स्कूलों का परिवार हो गया है। कुछ दिक्कतें भी इनसे पैदा हुई हैं साधनों की कमी बढ़ी है लेकिन इसके बावजूद अब यह संस्थान और संस्थान के द्वारा संचालित स्कूल केवल केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों तक ही अपनी सेवा सीमित नहीं रख रहे हैं। हर स्थान पर नागरिकों के बच्चों को एक अच्छी शिक्षा देने का एक अनुपम प्रयास हो रहा है जिसके लिए इस संस्थान के शिक्षक और संचालक बधाई के पात्र है। ऐसी ही एक शाला सीहोर में स्थापित की गई और अब इस भवन के बनने के पश्चात् वह शाला पूरी सम्पूर्णता के साथ सीहोर के नागरिकों को और बच्चों की सेवा करेगी, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं। शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करके उसका उपयोग करना नहीं है। जरूरी है वह भी, लेकिन शिक्षा की पूर्णता तभी होती है शिक्षित व्यक्ति अपने विवेक का इस्तेमाल करना शरू कर दे। और केवल कहने, सुनने के आधार पर किसी प्रभाव में आकर किसी दबाव में आकर कोई आचरण न करे, जब अपना विवेक वह इस्तेमाल करेगा तो व्यक्ति निश्चितरूप से सही दिशा की ओर बढ़ने की कोशिश करेगा। खासतौर से ऐसे समय में जब इस विशाल देश की, इस पुरातन देश की अनेक मूल्यों और मान्यताओं को नये संदर्भ में समझना और समझकर उस पर अमल करना नितांत जरूरी हो गया है तब हमें शिक्षा के प्रसार को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना जरूरी है ताकि भारत के सभी नागरिक अपने विवेक से फैसला करने के लिए सक्षम बनें।

इस दिशा में जो कुछ कदम उठ रहे हैं उनकी शुरूआत हमारे देश की राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्धारण के साथ हुई थी। यह शिक्षा नीति सन् 1986 में स्वर्गीय नेता आदरणीय राजीव गाँधी ने अपने ही देखरेख में बनाई थी और आज हमें यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि उनकी बनाई हुई शिक्षा नीति सारे विश्व में एक मार्गदर्शक नीति के रूप में जानी जाने लगी है। यह उनकी सूझबूझ और दूरदर्शिता का ही परिणाम है। इसी साल दिसम्बर में प्रधान मंत्री के निमन्त्रण पर दुनिया के 9 सबसे बड़ी आबादी वाले देश जिनकी आबादी मिलाकर सारी दुनिया की 75 प्रतिशत आबादी होती है, वहाँ पर शिक्षा के प्रचार-प्रसार को क्या स्वरूप और दिशा दी जाए इस पर उन देशों के प्रधान मंत्री या प्रेजीडेंट जहाँ जैसे स्थिति होगी उनका सम्मेलन दिसम्बर में भारत में आयोजित किया गया है और उस सम्मेलन में जो आधारभूत विचार के लिए मुद्दे उठाए गए हैं वे सब के सब राजीव जी की इस शिक्षा नीति से निकले हैं। यह हमारे लिए बहुत बड़े गौरव की बात है।

साक्षरता का अभियान हो, या प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता का सवाल हो, तकनीकी शिक्षा का सवाल हो, उच्च शिक्षा का सवाल हो, अपने राष्ट्र की आवश्यकताओं के संदर्भ में ही हमें इन सब पर विचार करके अमल करना होगा। इसमें शिक्षकों का शिक्षा के क्षेत्र में वैसा ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों का और माता-पिताओं का बहुत बड़ा सम्मिलित योगदान होने की जरूरत है। आपने शायद सुना होगा कि किन्हीं-किन्हीं स्कूलों में बच्चों के इम्तहान होने के पहले माता-पिताओं का इम्तहान लिया जाता है। मुझे भी थोड़ा अटपटा लगा है कि बच्चे पढ़ने जाते है तो माता-पिताओं का इम्तहान लेने की क्या जरूरत है। हो सकता है हम लोगों के पढ़ने-लिखने के जमाने में यह प्रस्ताव होता तो हम लोगों को स्कूल में जाने की इजाजत ही नहीं मिलती। लेकिन मुझे बात समझ में आई, क्योंकि स्कूल में जो कुछ पढ़ाया लिखाया जाता है उसका आधार तो घर है। अगर घर में हमें ऐसा वातावरण मिले जो स्कूल में हम को

पढ़ाया जाता है, उससे कहीं उनका तालमेल न हो तो जो कुछ हम स्कूल में सीखेंगे, वह घर आते-आते या तो स्वयं भूल जाएँगे या नहीं भूल जाएंगें तो घर में जो बात होती है वह हम को भूल जाएगा। इसलिए माता-पिताओं का सामंजस्य बालक और बालिका की शिक्षा से जोड़ना बहुत जरूरी है। और शुरू में थोड़ी बहुत हिचकिचाहट दिखाई लेकिन जब अभिभावकों को मालूम पड़ा कि उनका इम्तहान लेना उनके बच्चे के लिए सुन्दर भविष्य को अच्छा बनाना है, तो बड़ी खुशी से आज हजारों की संख्या में माता-पिता उस तरह का टेस्ट देते हैं, इम्तहान देते हैं और फिर उसी के आधार पर अपने घर पर बच्चों को भी प्रेरित और प्रोत्साहित करते हैं। यह नए-नए प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में सारी दुनिया में हो रहे हैं। इन सब को हमें भारत में अपने तरीके से अमल में लाना होगा। अभी कुरेशी जी मुझे बता रहे थे कि लार्ड मैकाले के जमाने में जिन्हें अँग्रेजो के समय से शिक्षा के प्रचार-प्रसार का प्रवक्ता माना जाता है, उन्होंने भारत में जो चार स्कूल बनाए थे उनमें से एक बड़ा स्कूल सीहोर में भी था। और हमारे देश के बड़े-बड़े लोग, उपराष्ट्रपति तक के पदों पर सुशोभित करने वाले लोग, जस्टिस हिदायत उल्ला जैसे महान व्यक्ति सुप्रीम कोर्ट के जज, यह सब सीहोर में शिक्षा पा चुके थे और जीवन में इतना ऊँचा दर्जा उन्होंने पाया था। लार्ड मैकाले ने जो कुछ भी किया वह अपने जमाने में एक विदेशी हुकूमत के हितों को ध्यान में रख कर किया लेकिन उस शिक्षा को ग्रहण करके जो भारत के लोगों ने उसका इस्तेमाल किया, वह उसी विदेशी हुकूमत की जड़ें उखाड़ने के लिए किया। यह देश के देशभक्तों का अपना अंदाज था। आज वह स्थिति नहीं है। आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा की पृष्ठभूमि और परम्परा हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं से और समय के तकाजे को देखते हुए बने। हमारी मातृभाषा हिन्दी है, हिन्दुस्तान के और प्रदेशों में अलग-अलग मातृभाषाएँ हैं। हमें कोशिश करना चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा हमारे देश में भाषा के आधार पर शिक्षा को चलाया जाए। मैं विदेशी भाषाओं के जानने और सीखने के खिलाफ नहीं हूँ। ये अगर आज हम विदेशी भाषाओं को नहीं सीखेंगे तो हम दुनिया से कट जाएँगें। लेकिन वह अलग एक विषय होना चाहिए स्वाभाविक रूप से जो हमारा उद्‌बोधन हो, जो हमारा कार्यक्रम चले जो हमारी बात निकले, जिस प्रदेश में जो भाषा वहाँ की मातृ भाषा के शब्दों में उसके उद्‌गार निकलने चाहिएँ। मैं बहुत आभारी हूँ संस्थान का, जिन्होंने इस शुभ कार्य के लिए मुझे यहाँ आने का अवसर दिया। कुछ कमियाँ यहाँ के नागरिकों की अभी भी इस विद्यालय के संदर्भ में बताई हैं - बाउंडरी की, आवासीय समस्या और अन्य जो आवश्यकताएँ हैं, मैं इतना ही कह सकता हूँ कि आपके सहयोग से अगर इतनी सुन्दर इमारत बन गई है, तो ये समस्याएँ भी आपके सहयोग से दूर हो जाएँगी। मुझे पूरा भरोसा है यह विद्यालय केवल सीहोर में नहीं सारे मध्यप्रदेश में, एक अद्वितीय और निश्चितरूप से प्रमुख स्थान बनेगा और यहाँ से निकले हुए छात्र और छात्राएँ भारत के इतिहास को नया मोड़ देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। मैं उन सब बच्चों को बधाई देता हूँ जो यहाँ पढ़ रहे हैं और उनसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि जो कुछ यहाँ से पढ़ कर निकलें, भारतमाता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उस ज्ञान का उपयोग भारतमाता की रक्षा के लिए, भारतमाता की तरक्की के लिए और भविष्य को सुधारने के लिए इस्तेमाल करें। यही मेरी उनसे अभिलाषा और आशा है। इन शब्दों में मैं उन्हें अपना आशीर्वाद देना चाहता हूँ। जयहिन्द।

भारत माता को याद करो

13 जून 1993 सीहोर की आम सभा में दिये गये भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकर है–

आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री दिग्विजय सिंह जी, आदरणीय नागरिक बंधुओं, हमारे साथियों ने आपके सामने वे सब मुद्दे रखे हैं, जिन मुद्दों को आज हमें देखना भी है और उनके बारे में सोच समझ कर कुछ कदम उठाने भी

हैं। आज यह समय उन सब लोगों से जो देश की भलाई चाहते हैं, चाहते हैं, भारत की एकता चाहते हैं, भारत की अखंडता चाहते हैं और इस देश में रहने वाले उन करोड़ों इंसानों की जिन्दगी में एक नया सबेरा लाने की कोशिश करना चाहते हैं, हर चंद चीजों से मरहूम हैं जिनकी जुबान खुलती नहीं है जिनके हाथ उठते नहीं है और जिनके पैर सहम जाते है, आतंक शोषण से लड़ते समय, आज जरूरत है उन सब के पीछे खड़े होने की, आज जरूरत है इस बात की जो लोग भारत की एकता को एक खिलौना समझ कर अपने स्वयं के हितों के लिए खिलवाड़ करना चाहते हैं उनके चेहरों को भारत की जनता के सामने रखना जरूरी है और भारत की विशाल जनता से यह प्रार्थना करना जरूरी है कि आप हर पक्ष को सुनिए, चाहे वह राजनीतिक पक्ष हो और चाहे वह धार्मिक पक्ष हो और चाहे वह आर्थिक पक्ष हो, लेकिन मेहरबानी करके अपने दिल पर हाथ रख कर थोड़ी देर के लिए भारत माता के पक्ष को भी देखने की कोशिश करिए। आज इसका मुझे सर्वथा अभाव दिखता है। अभी मारीशस गया था। वहाँ जो एक घटना घटी मुझे यह अंदाज हुआ कि भारत के प्रति कितनी श्रद्धा और कितना स्नेह भारत से गए हुए उन लोगों के मन में है, जो सैकड़ों वर्ष पहले जबर्दस्ती इस देश से ले जाए गए थे। एक छोटा सा देश है शायद मध्यप्रदेश के 5 जिलों से ज्यादा बड़ा नहीं होगा। 16 वीं, 17 वीं शताब्दी में यहाँ से मजदूरी करने के लिए जबर्दस्ती सैकड़ों, हजारों लोगों को वहाँ ले जाया गया । अँग्रेजों के द्वारा वहाँ गन्ने की खेती करने के लिए, जंगल साफ करके गन्ना लगाने के लिए। हजारों हजार एकड़ में जिधर निगाह फेरिए आपको गन्ने के लहलहाते खेत दिखेंगे। आज मारीशस सम्पन्नता की ऊंचाइयों को छू रहा है। उसके पीछे वही भारत के मजदूर हैं - कोई बिहार से गया था, कोई महाराष्ट्र से गया था, कोई गुजरात से गया था, उत्तर प्रदेश से और वहाँ जाकर उन्होंने अनेक यातनाएँ सही थीं, और उस देश को खुशहाल बना दिया। मैं वहाँ एक जगह से दूसरी जगह जा रहा था। मैंने सोचा रास्ते में किसी ऐसे घर में जाकर अचानक हम बात-चीत करें जो भारत से गए हुए लोग हैं, वहाँ जा बसे हैं। मैंने अचानक एक जगह पर घर देखा, गाड़ी को रुकवाया और एक छोटे से पक्के मकान में हम लोग गए। वहाँ बुजुर्ग बैठे थे, पहले तो वह थोड़ा सकपकाएँ कि यह 8-10 गाड़ियाँ अचानक हमारे घर के समाने क्यों रूक गई। लेकिन जब हमने अपना परिचय दिया और वह भी हिन्दी में तो हमसे लिपट गए। बातचीत होती रही 10-15 मिनट। मैं कोशिश करता रहा जानने की कि अब कैसा जीवन है। जब मैं चलने लगा तो उन्होंने पूछा आप यहाँ से कहाँ जाएँगे? किसी और देश में जाएँगे? मैंने कहा मैं यहाँ से सीधा भारत जाऊँगा। उन्होंने कहा पता नहीं मैं वहाँ जा पाऊँ या नहीं, भारतमाता को मेरा नमस्कार जरूर देना। 300 साल पहले यहाँ से गए हुए लोग, अनेक यातनाओं को सह कर आज अपना स्थान बनाने वाले लोग भारत माता को याद करते हैं और इस देश में रहने वाले लोग जिन्होंने सब कुछ पाया इस देश के अंदर, सत्ता भी पाई और सुख भी पाया, अधिकार भी पाए आज वे भारत माता को याद नहीं करते हैं, उसके प्रति उनकी वफादारी नहीं है, उनकी वफादारी केवल कुर्सी के प्रति है कि फिर से कैसे कुर्सी प्राप्त हो जाए, यही एक नक्शा इन साम्प्रदायिक ताकतों के दिल और दिमाग पर छाया हुआ है। फिर क्या फर्क हमारा और आपका। कम से कम उन लोगों से तो बेहतर हमें काम करना चाहिए जिन को आज भारत माता कुछ नहीं दे रही है, जिनके मन में एक प्रकार से दुख होना चाहिए कि जब उन्हें अपने घर से उजाड़ कर हजारों मील दूर ले जाकर पटका गया तब देश में इस ज्यादती के खिलाफ छोटी मोटी आवाजें उठीं लेकिन किसी ने उसको रोकने की कोशिश नहीं की, उनके मन में तो नाराजगी होनी चाहिए, क्रोध होना चाहिए, दुख होना चाहिए तो वह तो भारत माता को प्रणाम के संदेश भिजवाते हैं और ये साम्प्रदायिक लोग भारत माता के पैरों पर, हाथों में फिर से आतंक और हिंसा की बेड़ियाँ डालना चाहते हैं। इसलिए जरूरी है कॉंग्रेस के लोग नौजवान और सामान्य नागरिक इस संकट के समय पर अपना दिल और दिमाग ठंडा रखें, भाईचारा और सद्भाव को बना कर रखें, किसी

भी हालत में भारत के अंदर हिंसा, आतंक को फैलने में सहायता न करें। सीहोर हर दम अग्रणी रहा है राष्ट्रीय विचारधारा में। मुझे विश्वास है आज भी सीहोर अग्रणी रहेगा, भारत में एक सामाजिक न्याय पर आधारित व्यवस्था को कायम करके उस को सुरक्षित रखने में, भारत की एकता और अखंडता को बना कर रखने में। यही मैं आप से निवेदन करने के लिए आया हूँ। आपके जिले की जो समस्याओं का जिक्र आपने किया है, जो शैक्षणिक हैं जिनका संबंध केन्द्रीय शासन से है, उस पर जो कुछ संभव होगा मैं अमल करूँगा और जो प्रदेश शासन की हैं उनके बारे में मैं प्रदेश के राज्यपाल महोदय को उस संबंध में लिखूँगा और आशा करता हूँ वह जरूर इस पर अमल करेंगे। इन शब्दों के साथ मैं आप सब माताओं, बहनों को बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ आपका यह स्नेह और आशीर्वाद हम सब को अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए प्रेरणा दे। यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। धन्यवाद। जयहिन्द।

देश की आजादी में कुर्बानी देने में सिंधी आगे रहे

13 जून 1993 भोपाल में सिंधी सम्मेलन में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

यहाँ पर पधारे हुए वर्ल्ड सिंधी कान्फ्रेंस के अतिथिगण, अन्य प्रदेशों के माननीय सदस्यगण, मध्यप्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों से आए हुए माननीय उपस्थितगण, अन्य सभी सम्मानित साथियों, मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आपने इस प्रकार का आयोजन करके उसमें ऐसे विषयों को रखकर जो मैंने अभी देखा, यह अत्यंत सराहनीय प्रयास किया है कि आज जो सबसे बड़ी आवश्यकता है हमारे देश के लिए उन मुद्‌दों को तलाशना, उन पर विचार विनिमय करना, बैठकें करना, ये मुद्दें हमारे देश की भलाई के लिए भविष्य से जुड़े जुए हैं। वैसे तो सभी लोग इस बात के हक में हैं कि देश हमारा मजबूत हो और इस देश में रहने वाले जितने भी लोग हों, जिस धर्म के भी मानने वाले लोग हों उनको अपना अधिकार मिले, अपने विकास के लिए अवसर मिले। यह इच्छा सबकी रहती है और उचित भी है।

सिंधी भाइयों और बहनों का अगर सबसे कोई मजबूत पहलू है तो यही है कि आजादी की लड़ाई में जो उन्होंने कुर्बानी दी उस कुर्बानी की कीमत आँकने का। क्योंकि वह कुर्बानी उन्होंने अपने लिए नहीं दी, भारत की आजादी के लिए दी और आज भारत में वे अल्प संख्यकों के रूप में रह रहे हैं। ऐसी अवस्था में भी कम से कम मैंने तो अभी तक नहीं सुना और न मुझे ऐसी जानकारी है कि कभी भी इस समाज के लोगों ने कोई ऐसा रास्ता अपनाया हो जिससे इस बात की झलक आती हो कि वे केवल अपने स्वार्थ तक ही सीमित हैं और देश हित को दूसरे नम्बर पर रखते हों। यह कोई मामूली बात नहीं है। हम में से बहुत लोगों ने इन 45 वर्षों में अपने हितों को सर्वोपरि मान कर कभी-कभी गलतियाँ की हैं। मैं किसी व्यक्ति या समूह या आस-पड़ोस की बात नहीं कहना चाहता, मैं सब के लिए कहना चाहता हूँ। आज इसलिए यह आवश्यक है कि सिंधी समाज के भाई और बहनों के लिए हम सब को मिलकर सोचना चाहिए कि जिस समाज ने भारत की आजादी में बलिदान किया, त्याग किया। हेमू कालानी से लेकर दौलतराम तक और न जाने कितने बड़े-बड़े नेताओं ने आज उनकी विरासत को जो भारतवर्ष में है उसको हमें सुरक्षित भी रखना है। उसको और सम्पन्न बनाने के लिए जो इनकी कोशिश है उसमें पूरा-पूरा सहयोग भी देना है। एक छोटा सा उदाहरण ले लीजिए। गाँव में बहुत बड़ी चीज तो नहीं है जो हम लोगों के शहरों में, घरों में मामूली सी चीज होती - रस्सी। इससे और मामूली चीज क्या हो सकती है। बिस्तर बाँधते हैं और न जाने उसका क्या-क्या इस्तेमाल करते हैं। गाँव में उस तरह की गस्सियाँ नहीं हैं। गाँव वाले क्या करते हैं कि घास की रस्सी बनाते हैं। घास का एक-एक तिनका जोड़

कर, उस को मरोड़ कर रस्सी बनाते हैं और उस रस्सी की मजबूती शहरों में मिलने वाली रस्सी से कहीं कम नहीं होती, लेकिन है वह घास की रस्सी। अगर उसी घास के एक-एक तिनके को अलग कर दें तो हवा में उड़ जाएगी, लेकिन है वह घास जब एक साथ बँध जाती है फिर वह बड़ी से बड़ी मजबूत चीजों को एक साथ बाँध सकती है। ऐसे ही हमारे लिए एक-एक तिनका अपनी जगह महत्वपूर्ण है लेकिन जबतक वह तिनका जुड़कर एक रस्सी नहीं बनती है तब तक उसका देश के लिए कोई महत्व नहीं रह जाता है। यही है भारत के भविष्य को सुरक्षित रखने का एक मात्र रास्ता। यह आज इसलिए कहना जरूरी है कि हम में से कुछ लोग इस बात को करने पर उतारू है कि जो घास का तिनका हमारे हाथ में है वह रस्सी है। और हमें यह समझना चाहिए कि सत्ता में बैठकर अगर सबसे ज्यादा खतरा किसी चीज से हो सकता है, किसी लेखक ने कहा है अंग्रेजी में कहा है मैं हिन्दी में अनुवाद करके बताना चाहता हूँ ..... असहिष्णुता, एरोगेंट और इनसेंसिटीविटी, सत्ता में बैठे लोगों के लिए सबसे बड़ा खतरा है। जो अहंकार से और असहिष्णुता से प्रभावित होकर किसी बात को देखने की कोशिश करेगा, किसी काम को करने की कोशिश करेगा उसमें सफलता होगी ही नहीं लेकिन साथ ही साथ उस समूचे ढाँचे को भी नुकसान पहुँचेगा। यहाँ पर सिंधी समाज की बहुत सी समस्याएँ हैं, उसमें से कुछ हल हुई हैं और कुछ अभी होनी शेष है। मध्यप्रदेश के संदर्भ में मुझे यहाँ पर बताया गया, मुझे यह सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ कि जिस समिति को मध्य प्रदेश के सिंधी भाइयों की समस्याओं के अध्ययन के लिए बनाया गया था, उस की रिपोर्ट आने के बाद भी उस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया। मैं किसी पर दोषारोपण नहीं करना चाहता और न करने का कोई फायदा है। लेकिन यह शासन की जिम्मेदारी है कि जब एक समिति बनाई जाए वह समिति उस समुदाय की समस्याओं को एकत्रित करके उन को सुझावों के रुप में प्रस्तुत कर दे तो उन पर भी विचार होना चाहिए और जहाँ तक संभव हो सके उस पर अमल भी होना चाहिए। मै आज इतना ही कह सकता हूँ कि राज्यपाल महोदय का ध्यान आकर्षित करके उनसे निवेदन करूँगा कि अंधेरी कोठरी में किसी कोने में यदि रिपोर्ट पड़ी है तो मेहरबानी करके उसे बाहर निकलवा कर उसका अध्ययन कराए और जो कुछ भी सम्भव हो सके वह देश के सिंधी भाइयों के हित में निर्णय लेने का कष्ट करें। जहाँ तक शैक्षणिक समस्याएँ हैं, खेल का विकास बोर्ड बनने की बात है, बोर्ड की स्थापना तो हो गई है उससे सम्बन्धित और कई मुद्दे हैं जिन पर अभी तक फैसला होना शेष है। यह प्रयास रहेगा मेरा कि आप सब लोगों के सहयोग से जो मुद्दे बाकी रह गए हैं विकास बोर्ड से जुड़े हुए उन पर भी अंतिम फैसला करके जुलाई में होने वाला लोक सभा का हमारा जो सत्र है एक व्यापक पत्र लोक सभा के पटल पर रख दूँगा। भारत के सिंधी भाइयों को यह स्पष्ट हो जाए कि जिस दिशा में आगे बढ़ने का उनका आग्रह था, हम कुछ हद तक आगे बढ़ाएँगे।

जहाँ तक यूनिवर्सिटी का सवाल है अपनी जगह यह माँग औचित्यपूर्ण हो सकती है, लेकिन मैं इस बारे में आज यह कहने की स्थिति में नहीं हूँ। यूनिवर्सिटी अमुक समय तक कायम हो जाएगी। अगर मैं होता तो वह भी मुझे कहने में दिक्कत नहीं होती। लेकिन कोरी बात कहने का मैं आदि नहीं हूँ इसलिए आप थोड़ा सा इसमें संयम रखिए यह बात होकर रहेगी। केवल इतना ही कहना चाहता हूँ। इस समय जिस दौर से हमारा देश गुजर रहा है खासतौर से मैं सिंधी भाई और बहनों को सम्बोधित करके कह रहा हूँ उन्होंने भारतवर्ष के कोने-कोने में अनेक तूफानों और झंझटों को झेलते हुए आजादी के बाद अपना एक स्थान बना लिया है, अपना एक अस्तित्व बना लिया है। मैने कहीं नहीं देखा, शायद आप लोगों ने भी नहीं देखा होगा भारतवर्ष के किसी शहर में या कस्बे में कोई सिंधी भाई या बहन भीख माँगते हुए मिले। यह मामूली बात नहीं है। यह समाज के असली चरित्र को उजागर करता है। उसके अंदर उस दृढ़ता को उजागर करता है जो समाज के अंदर है। बाकी आप को सब लोग मिल जाएँगे, कुछ लोग पेशेवर दिखाई

देंगे। उनका कहना है हमारा भीख माँगना ही धर्म है। लेकिन जिस आत्मसम्मान से और जिस हिम्मत से आपने अपना स्थान इस देश के अंदर बनाया है, उसका यह तकाजा है जहाँ भी आप हैं जिस नगर में, जिस शहर में, जिस गाँव में, वहाँ आप अपने परिवार को पालते हुए रोजगार करते हुए गरीबों का खयाल रखे पहली बात यह है। और दूसरी बात यह है कि वहाँ एक तरह से केन्द्र बिन्दु बन जाए लोगों को जोड़ने का, इकट्ठा करने का, लोगों के मन में भावना को मजबूत करने का, सब के बीच में सामंजस्य और सहमति, सद्भावना रखने की, आपने जिम्मेदारी ली है और कई जगह मैंने देखा भी है आपस में जब कोई बात बिगड़ती है तो किसी ऐसे ही परिवार के पास लोग जाते हैं इस वजह से कि उनको किसी से कोई सीधा लेना देना नहीं है। उनका अपना स्वार्थ इसमें कुछ नहीं है तो लोगों को परस्पर विश्वास है अगर यह हमारा पर्सनल कुछ नहीं करेगा तो हमारे खिलाफ भी नहीं कर सकता। यह विश्वास जो आपको मिला है, उसका उपयोग और फायदा दोनों समाजों को मिले। यह आप लोगों की विशेष जिम्मेदारी है। इस ओर मैं आप लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ आपने मुझे यहाँ आने का मौका दिया, ऐसा आयोजन किया इसमें जो आप विचार व्यक्त करेंगे, जो आपका निष्कर्ष निकलेगा वह हमारे देश और समाज को मजबूत करने की दिशा में एक ठोस कदम होगा। यह मेरा विश्वास है। इस शब्दों के साथ मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। जयहिन्द।

हाकी टूर्नामेन्ट

13 जून 1993 को भोपाल में हाकी टूर्नामेन्ट के अवसर पर दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

बड़े-बड़े अफसर और बड़े-बड़े ओहदेदार लोग मंजूरियों के लिए सालों भटकते रहेंगे और काम नहीं होगा। अब भोपाल के हर कोने में तो स्टेडियम नहीं बन सकता लेकिन इस ग्राउंड को पूरी तरह से अच्छे रूप में परिणति करने का जो आपका इरादा है उसमें पूरी-पूरी मदद स्पोर्ट मिनिस्टरी की ओर से दी जाएगी। यह सही है हाकी के खेल में जो भोपाल का योगदान हरदम रहा है उसमें बीच में कुछ कमी आई है। एक तरह से हॉकी की टीम का नक्शा भोपाल से बनना शुरू हुआ करता था। बहुत से खिलाड़ी आल इंडिया में यहाँ से खेले हैं, औलम्पिक में खेले हैं, असलम भाई खेले हैं। उनसे पहले भी खेले थे इसलिए भोपाल में हाकी को पूरी तरह से तरजीह देकर और नए-नए नौजवानों को उस खेल की ओर आकर्षित करना ही नहीं, मौका देना बहुत जरूरी है और जो योजना अगले ओलम्पिक में और उसके पहले एशियन गेम्स में देश के अंदर कुछ ऐसे लोगों को तैयार करना है, उसमें भोपाल को भी शामिल किया जाएगा। यह संयोग है कि फाइनल का मुकाबला भोपाल और झांसी के बीच में है। यह आज का संयोग नहीं है, हाकी के इतिहास में यह पुराना संयोग है। इस संयोग से कोई अच्छी बात निकलेगी इसमें मुझे पूरा भरोसा है। टीमें खड़ी है, आप लोग भी मैच देखने के इच्छुक हैं तो उसमें देरी मेरी वजह से हो यह सही नहीं है। मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आरिफ जी को, भोपाल के सब नौजवानों को, यहाँ के मेहनतकश लोगों को जिन्होंने, कैसे अपने नौजवानों के लिए मैदान तैयार किया जाता है, उसका एक बहुत अच्छा नमूना सारे हिन्दुस्तान के लिए यहाँ पर पेश किया है। टूर्नामेंट एक ऐसी सीढ़ी बने, एक ऐसा जरिया बने जिससे हम फिर से औलम्पिक में हाकी के खेल में भारत का झंडा लहरा सकें यही हमारी शुभकामना है। धन्यवाद जयहिन्द।

Young men and women should shoulder the Responsibilities of the nation

13 जनवरी 1993 बंगलोर, साउथ इंडियन रीजनल कॉंफ्रेंस ऑफ मेथोलाजिकल चर्च के सम्मेलन में उद्‌बोधन

Hon'ble Chief Minister of Karnataka and my esteemed friend, Shri Veerappa Moilyji, Hon'ble Education Minister, Shri Ayyaji, His Grace the Bishop, Dr. Kariappa Samuel, respected Mrs. Tara Samuel and Mrs. Lila Thomas, distinguished participants to this seminar organised by the South India Regional Conference of the Methodologist Church in India.

The keynote address which I was supposed to deliver this morning is already in your hands in its printed form and I would not take your time by reading it out again before you. With the permission of His Grace, I would like to make use of this seminar to share some disquieting thoughts about the quality, content and goal of education in our country.

There is no doubt that in the last few decades, especially after our country achieved Independence, we have made significant strides to provide education to a large number of children who till 1947 were beyond the pale of the educational process. There is no doubt that we have made significant strides in creating a large pool of trained manpower in this country which perhaps compares with many other countries of the world. There is no doubt that the percentage of literacy has gone up to a very significant level and we have set our goal to achieve complete literacy in India by the end of this century.

In the field of science and technology, the products of our higher centres of learning, be they the engineering colleges, the institutes of technology, the institutes of higher science and mathematics, are today not only acquiring for themselves the skill but also are contributing to the advancement of this country and if I may say, the advancement of the world in the realm of science, technology and higher mathematics.

These are achievements to be proud of and there is need to pursue further with vigour and determination these paths so that the challenges that face our country and the world as we enter into the 21st century are well taken care of by our own people.

There is at the same time a deep sense of disquiet because in spite of these achievements we witness a certain disarray amongst the ranks of the learned, the educated and the better endowed citizens and certainly a hiatus that is visible very clearly between them and the broad mass of the people in our country. It can be very convenient to shrug off this as an inevitable manifestation of what we are going through, but it would be very wrong to do so and in my humble opinion, very suicidal to do so because all the progress that we may achieve can be upset not only momentarily but

perhaps permanently if this hiatus is not addressed with great vision and commitment to goals which are before the broad mass of the people of this country, who are beyond the pale of many of the forces which are in sharp focus today as being pertinent and inevitable.

While we are talking of global integration, while we are talking of the effects of the market forces and how we in India should restructure ourselves to be come the recipients of the benefits of these forces, we have only to look around to see that out attempt to wipe our the grinding poverty of this country has not yet fully succeeded. Are we going to take the stand that we shall go ahead unmindful of everything else, end the devil may take the hindmost? If this is going to be our approach, it will be an un-Indian approach, an approach which cannot leave us in peace and tranquillity. How do we go about it? This is one of the things or subjects which this seminar must address itself to and come up with certain specific suggestions so that this total picture of the Indian scene does not become distorted.

The second point which I would like to stress here is about the kind of people, or the kind of citizens that our system is producing today. It is not a manufacturing unit. Therefore, we cannot say that putting the mark of the ISI is going to solve our problem. We are bringing forward on the Indian scene men and women, young boys and girls who are going to shoulder the responsibilities and the awesome responsibilities of running this nation tomorrow. How are we equipping them? Apart from the skills that we are imparting to them, are we able to instil in them a sense of education, a sense of propriety and a sense of purpose which alone can benefit the nation? You look around in India itself -- I am not talking about the world -- even while we were not free, we were slaves and a colonial power sat on our chests, the students that came out of our educational institutions at the first instance run for the gallows to sacrifice themselves for the cause of liberty. And today witness these very young people trying to reach out for an AK-47 rifle. These are symptoms which we cannot afford to ignore and the burden of attending to these rests on the shoulders not only of political leaders, yes, it does rest on their shoulders, but much before it comes to rest on their shoulders, it rests on the shoulders of the educationists in this country. The sense of values which alone can forge a nation into a modern State, those values not only heave to be defined and refined, but they have to be imbibed in full measure by the future citizens of this country.

The Methodist Church in South India, we are all glad to learn, is doing its bit in this regard. But a few institutions here and there cannot serve the great purpose, otherwise knowledge can be come a dangerous instrument in the hands of those who are bereft of sagacity, tolerance and wisdom. I am reminded of the medieval ages where Galileo was condemned to the gallows for speaking out the truth that the earth is not flat, it is round. Nothing like that, I hope, will happen in India of today. But that the danger exists, we can ignore only at our peril.

His Grace the Bishop has been very kind to give me what in his words was a small present, but in the view of everyone else is perhaps the biggest present that one can hope for -- an elephant. But I am sure this present is not only the product of the remarkable craftsmanship of Karnataka, it also has a message. And while I was humble receiving this present, my mind went to the qualities of this symbol-the elephant. Slow in gait, sharp in perception, amenable to the prod of discipline and the capacity to maintain poise and proportion in spite of the weight it carries. I think these are the qualities that the citizens of today who will be the harbingers of tomorrow that is going to come will have to imbibe and the educational system will have to give it to them. So that in the words of Dylan Thomas, we do not become a vegatative growth on the nation but have the capacity to say: "Don't go gently into that night, but rage, rage against the dying of the light" Thank you very much.

मीडिया और प्रजातत्र का संबंध

27 जनवरी 1993 को गुड़गाँव में मीडिया सेन्टर के उद्घाटन अवसर पर दिया गया भाषण

आज के इस समारोह की अध्यक्ष महोदय डा.गिरिजा व्यास जी, कर्नल राम सिंह जी, यहाँ पधारे हुए सभी आदरणीय देवियों, सज्जनों, वाजपेयी साहब स्वयं मीडिया के प्रतीक हैं और लगभग 12-13 वर्षों से इनके साथ सानिध्य होने का मुझे सौभाग्य मिला और सदैव मैंने एक निष्ठावान, केवल पत्रकार नहीं, समूचे पत्रकारिता के संदर्भों से ओत-प्रोत व्यक्तित्व के रूप में पहचाना है। अब मीडिया सेन्टर के शुरुआत करने की जो इन्होंने संकल्प किया है मैं समझता हूँ यह संकल्प पूरा तो होगा ही लेकिन पूरा होने के बाद अपने आप में अद्वितीय संस्था के रूप में भारतवर्ष में प्रतिष्ठित होगा। हम लोग तो मीडिया के शिकार हुए लोग हैं इसलिए मैं ज्यादा मीडिया के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि एक प्रजातंत्र को जीवन्त रहने के लिए मीडिया का न केवल सहारा लेना पड़ता है, बल्कि कुछ हदों तक उससे प्रभावित होना पड़ता है। इतना ही कहना शायद पर्याप्त होगा जो शक्ति मीडिया ने अर्जित की है वह बहुत बड़ी है। लेकिन शक्ति अगर संयमित ढ़ग से इस्तेमाल की जाए तो उसका बहुत बड़ा असर होता है और अगर संयम और शक्ति में भेद हो जाए तो वह शक्ति किसी भी प्रकार से न समाज के लिए और न देश के लिए लाभदाई रह जाती है। इसलिए एक तो मुझे यह कहना है और दूसरे राजनीतिक संदर्भ में कुछ बातें है, उनको बार-बार दोहराने से कोई फायदा नही है। अभी डा. गिरिजा व्यास ने धर्म निरपेक्षता की बात की। मैं तो समझता हूँ अगर हम धर्म ठीक से समझ लें तो धर्म निरपेक्षता अपने आप समझ में आ जाएगी। परेशानी यह है धर्म के नाम लेने वाले बहुत हैं, अलग-अलग धर्म के लेकिन उनका वह धर्म है क्या? इसको वह देखना नहीं चाहते, जानना नहीं चाहते। इस धर्म का उपयोग जैसे अंधे की लाठी होती है, उस रूप से भी नहीं वह करना चाहते है, केवल लाठी के रूप में करना चाहते है। आज भारत को जरूरत इस बात की है कि हम लाठी के युग को फिर से देश में न ला सके। अगर इस देश के प्रबुद्ध लोगों ने, वर्ग ने सतर्कता नहीं दिखाई तो हमारे देश के प्रजातंत्र को बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा। अभी परसों रात को जो हमारे राष्ट्रपति महोदय ने संदेश प्रसारित किया, न केवल वह उनके दिल से निकली हुई भावनाएँ है लेकिन एक राष्ट्रपति के नाते जो उनका कर्तव्य है इस देश के प्रति शायद इससे बड़ा कोई उदाहरण हमें देखने को नहीं मिलेगा। उनकी व्यथा, उनकी वाणी कार्यरूप में परिणित हो यह आज देश के लिए जरूरी है। अगर हमने उसे केवल प्रवचन मान लिया और प्रवचन सुनने के बाद जैसे अपने-अपने घर में जाकर अपने

और कामों में व्यस्त हो जाते हैं, अगर उस रूप में लिया तो जो खतरे उनहोंने गणतंत्र के लिए इंगित किए हैं, उन खतरों से यह देश बच नहीं सकता है।

यह मीडिया सेन्टर केवल एक प्रशिक्षण केन्द्र नहीं है, एक ऐसे केन्द्र के रूप में विकसित होकर सामने आए जिसे फोर्थ स्टेट कहते है। यह फोर्थ स्टेट बाकी तीन स्टेट्स को मार्गदर्शन दे सके। यहाँ पर ऐसा प्रशिक्षण हो वही प्रजातंत्र के मूल्यों को जीवित रखने के लिए और आगे देश में उसकी जड़ों को और गहरा करने के लिए सक्षम होगा। मुझे विश्वास है वाजपेयी जी और उनके सहयोगी जिस संकल्प की भावना से इसमें लगे हैं निश्चित रूप से यह सेन्टर उस रूप मे देश के सामने प्रकट होगा। मेरी स्वयं की कोई बहुत बड़ी औकात नहीं है लेकिन जो कुछ भी वाजपेयी जी इस मीडिया सेन्टर के लिए मुझ जैसे व्यक्ति से संभव है, मैं सदैव आपके लिए तत्पर हूँ। जयहिन्द।

मीडिया पर किसी प्रकार का दबाव उचित नहीं

28 जनवरी 1993 अखिल भारतीय मीडियम और लघु समाचार पत्रों के 31वें वार्षिक समारोह में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

आदरणीय जस्टिस सरकारिया जी, सम्मानित सहयोगी हरभजन सिंह जी, इस सभा में पधारे हुए सभी सम्मानित बंधु, मेरे लिए केवल 5-7 मिनट बचे हैं इसलिए मैं संक्षेप में जो बात कह सकता हूँ कहने का प्रयास करूँगा।

हरभजन सिंह जी को व्यक्तिगत स्तर पर तो हम बधाई देते ही हैं लेकिन धीरे-धीरे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि मीडिया, स्माल और मीडियम न्यूजपेपर के स्तर पर जो व्यवस्था है, और जो होनी चाहिए उन दोनों के प्रतीक हरभजन सिंह जी बन गए हैं इसके लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ। इस समय औपचारिकताएँ निभाना मेरी समझ में आवश्यक नहीं है। मैं केवल दो बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँगा। जो खतरे हैं जो चुनौतियाँ हैं उनसे सब अवगत हैं, सब जानते हैं। स्माल और मीडिया न्यूजपेपर की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए जो कुछ भी किया जाना जरूरी है वह किया जाना चाहिए। और जो सुझाव डेवलपमेंट कारपोरेशन के हैं यह बहुत अच्छे सुझाव हैं और इस सुझाव को मैं अपनी ओर से प्रधाम मंत्री के पास विचार के लिए पेश करूँगा। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि दुर्भाग्य से आज मीडिया के ऊपर केवल उनका दबाव नहीं है, जिनके बारे में यहाँ हम लोग बात कर रहे हैं। आज मीडिया के ऊपर दबाव देश के वेस्टेड इंटरेस्ट का सबसे ज्यादा है। जबतक उस दबाव का मुकाबला करने के लिए आप सक्षम नहीं बनेंगे तो बाकी सब भाषणबाजी का कोई मतलब नहीं, अच्छी बातें सुनेंगे लेकिन छापेंगे वही जो उस नगर का सेठ कहेगा, जो वहाँ पर प्रभावशाली व्यक्ति कहेगा, राजनीतिक हो, सामाजिक हो, कोई भी हो या धार्मिक हो, इसलिए जरूरी है कि 'इंडिपेंडेंस आफ द प्रेस' जिसको कहते हैं केवल एक नारा न रहे, कम से कम छोटे और मझौले स्तर पर अखबारों में सही माने में पेश हो। क्योंकि जैसा हम कहते हैं डेमोक्रेसी में ग्रास रूट वर्कर का महत्व होता है वैसे ही मीडिया, ग्रास रूट मीडिया है, जबतक ग्रास रूट मीडिय स्वस्थ, सक्षम और प्रभावशाली नहीं होगा तो बड़े-बड़े अखबार अपना स्थान रखते है, उनके खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहते इससे डेमोक्रेसी मजबूत नहीं होगी। अखबार मजबूत हो सकते है, उनका प्रचार प्रसार बढ़ सकता है, कुछ लोगों को आमदनी हो सकती है लेकिन फोर्थ स्टेट जिसको कहते है डेमोक्रेसी में, वह फोर्थ स्टेट जबतक मजबूत नहीं करेगा डोमोक्रेटिक सिस्टम को तबतक उसकी कोई सार्थकता नहीं है फिर तो वह केवल मनी मेकिंग मशीन है। क्या हम देश के अंदर कुछ लोगों को यह आजादी देना चाहते है, या अवसर देना चाहते है कि एक गणतंत्र में जो मर्यादाएँ हैं, जो कानून हैं, कायदे हैं चाहे चुनाव के हों या अन्य क्षेत्रों

में काम करने के हों उनको नजर अंदाज करके जो करना चाहते हैं करते रहें और इस व्यवस्था को संभालने वाले लोग हैं जो इस व्यवस्था को सुरक्षित करने वाले लोग हैं जिसमें मीडिया सबसे ज्यादा रोल प्ले करता है वह केवल मूक दर्शक बना रहे यह असली व्यवस्था है? क्षमा करिए मैं आलोचक ढंग से नहीं कह रहा हूँ लेकिन अभी कुछ ऐसा विश्वास नहीं जग रहा है कि इस प्रकार की चुनौती का सचमुच सामना करने की अभी मानसिकता इस देश में बनी हुई है? अभी नहीं बनी है। जबतक यह मानसिकता नहीं बनेगी तबतक वे ही सफल होंगे जो सफल नहीं होना चाहते क्योंकि उनके सामने कोई न संयम है, न कोई मर्यादा है, प्रजातंत्र तो मर्यादाओं से बना रहता है। जो मर्यादाओं को भंग करके प्रजातंत्र का उपयोग करना चाहता है उसके सामने आप क्या कर सकते हैं। यह जरूरी इसलिए है कि अगर हम इस बात को समझ सकें तो आगे जो कुछ होने जा रहा है उसके लिए अपने विवेक से, सामूहिक विवेक से और सामूहिक साहस और व्यक्तिगत साहस से उसमें हम खड़े हो सकते हैं। मेरा इस संबंध में एक सुझाव है और मैंने उसे सरकार के सामने भी लिखित रूप से रखा इसलिए उसको आपके सामने रखना चाहता हूँ कि उस पर डिबेट होनी चाहिए। और डिबेट आपके ही माध्यम से होगी। जो हमारे प्रजातंत्र की प्रक्रियाएँ हैं चुनाव की या अन्य जितनी भी प्रक्रियाएँ है हमारे प्रजातंत्र की हैं यह अनुभव से हमने देख लिया उनका दुरुपयोग करने का जो तौर तरीका है उसके लिए पर्याप्त बचाव के हमारे पास साधन नहीं है अभी तक। यह जरूरी है इस पर गहराई से विचार हो। सब लोगों से सलाह मश्विरा हो, राजनीतिक पार्टियों से सलाह हो, मीडिया से सलाह हो और ऐसे उपाय किए जाए कानूनी तौर से जिनसे शुरू में ही इस प्रक्रिया के दुरुपयोग करने का रास्ता बंद हो जाए। भले ही संविधान को अमेंड करना पड़े। न जाने कितनी दफा कंस्टीट्यूशन अमेंड हुआ एक दफा और हो जाए लेकिन अगर हम इसको रोकने के लिए शुरू में ही जिसको कहते हैं 'एट द थ्रैस होल्ड' हम इसको नहीं रोक पाए तो हमारी संस्थाएँ बच नहीं सकती और संसद जो सर्वोच्च सार्वभौमिक संस्था है हमारे गणतंत्र की उसका अवमूल्यन कर दोगे तो वहाँ जो बात कही जाती है उसका कोई महत्व नहीं रहता। अगर आज कुछ भी देश में बचा है इन लाखों, करोड़ो लोग जो गाँव में रहते हैं जिनके सामने आज भी सूरज निकलता है, वह सब के लिए निकलता है, चाँदनी आती है, सब के लिए आती है, अभी भी वे मिल बैठकर एक सामाजिक व्यवहार को कायम रखे हुए हैं। उनके पास पहुँचने तक आप ही माध्यम हैं। इसलिए आपका महत्व है। इसलिए नहीं कि आप कोई समाचार छापते हैं, क्योंकि उस स्तर तक पहुँचने में अन्य लोग सक्षम नहीं हैं, आप वहाँ तक पहुँच सकते हैं और पहुँच रहे हैं इसलिए आपकी स्थिति को आर्थिक रूप से हर तरीके से मजबूत करने के लिए प्रयास होने चाहिए और आप फिर जो कुछ कहें, जो बातें कहें, इस बात को ध्यान में रखें तो मैं समझता हूँ शायद गणतंत्र की रक्षा हो सकती है। मैं तो हरदम आशावादी हूँ दिल में क्योंकि आदमी निराश हो जाए तो आगे कुछ करने का सवाल ही नहीं उठता। लेकिन केवल आशावाद से काम नहीं चलेगा कुछ ठोस काम भी करना पडेगा। उसमें मैं आह्वान करता हूँ आप लोगों का। आपकी लेखनी को तलवार बनने की जरूरत नहीं है लेकिन लेखनी तलवार से ज्यादा देश की रक्षा कर सकती है ऐसी मेरी कामना है।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

Teachings of Religion is useful

5 फरवरी 1993 इन्टर रीलीजियस हारमनी के सम्मेलन में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं -

Your Excellencies, Venerable and Reverend leaders from all the religious faiths in the world, Presidents and members of the Presiding Council of the Inter-religious Federation for World Peace,

Brothers and Sisters : At the outset, kindly permit me to remove a misconception about me. This is the latest in the disinformation campaign that I am a prince or I come from a princely family. Heredity is not of one's own choosing. But I would like to tell you humbly that even the basic premise is not entirely correct. As a very humble and common public worker, being proud of the fact that this service and all that it entails in this country or in any other country, I did have a unique, and for myself a very very personal satisfaction that I was initiated into this by no less a person than one of the greatest humanist, nation-builder, patriot, free thinker, a man dedicated to world peace -- Pandit Jawaharlal Nehru. That you have thought it fit to let me be present here this morning is of me a moment of solemn affirmation.

While we go along in life, there is so much that happens and there are numerous occasions when you have to decide not only in speech but often in action whether the flame of faith that flickers in every human heart, is worth keeping burning bright. Because we are so mocked by the failure of our hopes that very often we are on the verge of giving up hope. I do not agree entirely with what was written in Prometheus Unbound that hope till hope created out of its wreck the thing that it contemplates. That was a desperate hope - I would even say it was a pathetic hope. The flame of hope that we need to keep alive and flickering in our hearts is the hope born out of faith in God, of a higher calling which he has in his benevolence given to each one of us who is born. That is the only hope which keeps us going and therefore this morning at this conference, I consider it a moment of solemn affirmation that you have decided to keep this flame alive and you are celebrating this event when one of our great sons, Swami Vivekanand, took part in the Parliament of Religions in Chicago in 1893 and we are once again around the globe trying to pledge ourselves to the basic unity of all religious faiths, the basic precepts that they preach and the basic calling which all of them proclaim.

Swamiji is, in fact, in my perception, each one of us in his wisdom, in his compassion and above all in his firm determination. When I lit the lamp at his feet, I was a little hesitant whether I am equipped to do that. Lighting a lamp in any meeting or function or conference is normally the order of the day, but lighting a lamp at the feet of Swami Vivekanand is something one must do very very carefully and one must attempt that is all in one's hands to make an honest effort to walk in the light of that lamp to do our duty. I am very grateful to you that you have given me this rare opportunity.

This is the first conference that is being held here to commemorate the Parliament of Religions in 1893 and we are thereby proclaiming that the teachings of Swami Vivekanand which are not only very relevant to our country are even today, 100 years later, as relevant to the world community as they are to this country. I have seen one of the posters which described Swami Vivekanand at the time of his attending the World Conference. I saw this poster at the Belur Math in the house where he

lived. It described him as the "wandering monk of India". It is a very common word which has been used -- "wandering monk" -- and usually all monks do wander because that is their way of life. If they were to get ensconced in one pace, immune to what is happening around them, then they may still seek enlightenment and achieve it, but that will be for one's own personal enlightenment. Only a seeker and a wanderer like Swami Vivekanand can seek not only enlightenment for his own self but can allow the world to share that enlightenment.

Conditions are very different today than they were in 1893, both in India and the world. But I still perceive a basic similarity. While the marvels of modern technology have made life much easier, much less challenging, much more comfortable, but the mind today is afflicted perhaps much more by the vicissitudes of the modern world, by what we are being subjected to as human beings -- our dilemmas, our bewilderment, our total lack of cohesion in projecting our own self and in conceiving our duty to our family, to our community and to our country. Therefore while the body need not wander, the wandering of the mind has not ceased. And if that wandering has to be directed towards public upliftment, to the common values that all humanity shares, if that endless wandering is to be chiselled into a programme of action which can serve the community, serve world and mankind, only then will that wandering stop. In this we again have the beacon light from Swamiji's words which I need not quote in this gathering for each one of you knows much more about him than I do. This basic need is what this conference will focus on and venerable leadership religious faiths will help us gain the insights on how each faith preaches, practises everything to make life worth living and how we all fail because of our own inhibitions, because of our own egos, our own prides and prejudices to make this world a peaceful world. Don't expect me to go into the intricacies and the finer points of any religion. Even about my own religion I know only this much that I am proud to be born as a Hindu, I will give everything to keep my faith, but I am fully aware that as a Hindu I can be true to my faith and beliefs only if I honour every other religion as much as I honour my own.

Unfortunately there has been much more violence in the name of religion and faiths down the centuries. Actually I remember reading in a book that if one were to calculate the number of people killed over a period of, say, 1500 years in the world, in various big and small wars that have been fought, the numbers that were killed in these wars which were for domination and political ascendancy and the number of people killed in the name of religion, the numbers killed in the name of religion will far far outnumber those who were killed in these wars.

You must be aware of one incident when Gautam, the Buddha, was sitting by the river meditating. He saw a wood-cutter coming along. When he reached the bank, he saw that the river had swollen considerably from the time that he had crossed it on foot seven or eight hours before. Dusk was falling. He had a bundle of wood on his shoulder and he was really perplexed as to how he was

going to cross this flooded river, get back to his family, sell the wood and make it possible for them to have the only meal of the day.

Gautam Buddha looked up to him and in his benevolence asked him: "Why are you so perplexed?" He did not know who Gautam the Buddha was. He told him: "What can you know why I am perplexed? The garb in which you are sitting is that of a sadhu, and sadhus are given the meals once or twice or three times a day by people who take pity on them, who (sadhus) do not work for a living, who do not labour for their families. You can't understand my difficulty". And then he told him that this was the thing which was perplexing him.

So Gautam the Buddha told him: "This is not your own perplexity; this is the perplexity of the entire human race. But I can tell you that in your very hands you have the means to overcome it". So he said: "Yes, I have an exe. Do you think this axe will make come or enable me to overcome it?" He said: "No, the axe you have you used to cut the wood. You should not have denote it. But anyway that appears to be the only method that you can use to feed your family and survival of human being is a basic need. So it is done. But the wood you have cut and the rope that is tieing this bundle of wood, this is also yours". He said: "Yes, what can I do?" He said: "You just put the wood side by side, tie it by the rope, on that raft you cross the river and when you go on the other side, you again put them into pieces, tie it with the rope and put it on your head and go to your home". Then this man realised that he had everything in his power but he did not know how to use it. Then he thought that this man was someone much more than a sadhu who comes for alms in the morning. And he asked him: "How did you know that I could do this?" He said: "This is not very difficult to know. This is what religion is called".

"Religion teaches you a way of life, how to overcome difficulties, how to carry out your responsibility to your family, to your neighbour and if you can use it and understand it, there is no problem. But your hand first went to the axe. You thought axe would help you. The axe never helps a human being to achieve anything." Therefore even as the Bible has said, blessing the peacemakers: Let swords be beaten into plough shares. This is a fond hope of humanity. I don't know when it will be realised. All we can do at this moment of time as human beings is to do whatever is in our capacity not to allow plough shares to be beaten into swords. Thank you.

शिक्षक दीपक की लौ के समान

21 मार्च 1993 वहरोड (राजस्थान) में शिक्षक संघ के सम्मेलन का उद्‌बोधन इस प्रकार है —

शिक्षक संघ के सम्मानित अध्यक्ष श्री सुभाष देव शास्त्री जी, इस समारोह के अध्यक्ष माननीय गोटेवाला जी, यहाँ पर उपस्थित सभी आदरणीय शिक्षकगण और नागरिक बंधुओं। मैं बहुत अनुगृहीत हूँ कि आपने मुझे यहाँ आकर

आपसे कुछ कहने का अवसर प्रदान किया, जो अवसर पाने के लिए मैं सदैव प्रयत्नशील रहता हूँ, क्योंकि प्रजातंत्र में केवल संवाद ही एक ऐसा आधार है, जिसके द्वारा हम प्रजातंत्र को गतिशील बना सकते हैं और यदि संवाद के अवसर न मिलें, रुकावटें आएँ तो अन्ततः उससे नुकसान हमारे प्रजातांत्रिक ढांचे को होता है और जब यह संवाद करने का मौका देश के उस प्रबुद्ध वर्ग से जिनके हाथों में बालकों के चक्षु-ज्ञान को खोलने की जिम्मेदारी है, क्योंकि एक आँख तो खुलती है माता-पिता की गोद में, लेकिन ज्ञान की आँखें खुलती हैं शिक्षक के संरक्षण में और इसीलिए भारत में यह हमारी बहुत ही प्राचीन मान्यता और परंपरा रही है कि गुरू ही ईश्वर है, ब्रह्म है। इतना ऊँचा दर्जा हमारी संस्कृति ने गुरू को दिया है। आज इसी चक्षु-ज्ञान का, ज्ञान चक्षु को खोलने का जो दायित्व है, वह दायित्व समझना और उस दायित्व को पूरी तरह से निभाना, मेरी समझ में केन्द्रीय विषय है, इस देश में शिक्षक, शिक्षण और शिक्षा पद्धति के बीच में समन्वय कायम करने का। बहुत से लोग शिक्षा पद्धति के बारे में अलग-अलग विचार प्रस्तुत करते हैं और होना भी चाहिए क्योंकि यह ऐसा विषय है, जिसमें देश का प्रत्येक नागरिक, चाहे वह इस देश के किसी कोने में भी रहता हो, किसी धर्म का मानने वाला हो, किसी जाति का हो, किसी भी संप्रदाय का हो, शिक्षा से उसका जीवन्त संबंध है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के घर के लड़के-लड़कियाँ शिक्षा ग्रहण करने की दिशा में अग्रशील रहते हैं और इसलिए अगर उसके बारे में अलग-अलग लोगों के सुझाव हों, उनका स्वागत होना चाहिए, आलोचना होने की जरूरत नहीं है। लेकिन, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके बारे में हमारा मतैक्य भी होना चाहिए। सबसे पहली बात यह है कि शिक्षा देने के मूल तत्व क्या होने चाहिए। मनुष्य जो है, परिभाषा एक दी गई है कि वह एक सामाजिक व्यक्तित्व है, अँग्रेजी ने फिर उसको 'एनीमल' कह दिया है, लेकिन वैसे व्यक्तित्व है, अपने समाज से अगर जुड़ने के लिए, समझने के लिए, उस दायित्व को निर्वहन करने के लिए और समाज को किसी भी प्रकार से गलत रास्ते में ले जाने वाली बातों से संघर्ष करने के लिए यदि हमारी शिक्षा हमें नहीं पूरी तरह से समृद्ध करती है तो उस शिक्षा का भारत के उत्थान से कोई लेना-देना नहीं हो सकता है।

वह कौनसी चीजें हैं, जो भारत के उत्थान के लिए आवश्यक हैं? सबसे पहली बात है भारत के स्वरूप को समझने की। हम भारत माता की जय बोलने के लिए उद्यत रहते हैं, काफी जोर से बोलते हैं, लेकिन भारतमाता की कौनसी तस्वीर है, जिसकी हम जय बोलते हैं। अगर हम इसको ही समझने में हिचकिचाएँगे या भ्रमित होंगे तो वह जय-जयकार एक थोथी जय-जयकार होगी। भारतमाता का स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति की माता के स्वरूप से मिलता है, प्रत्येक परिवार में जो माता का स्थान होता है वही देश में भारतमाता का स्थान जब माना जाएगा तो ही हम भारतमाता के सच्चे सपूत कहलाएँगे। हर परिवार में माँ की क्या जिम्मेदारी है, उसका क्या स्थान है, उसका क्या कर्त्तव्य है, यह किसी दूसरे को आकर हमको बताने की जरूरत नहीं है। हम सबके परिवार में सम्मानीय माताएँ हैं और हम जानते है कि हमारी उनसे क्या अपेक्षा है और किस प्रकार का व्यवहार परिवार में माता का होता है और अगर उस व्यवहार में कहीं भी कमी आती है कोई, और तरह की बात होती है, वह परिवार बिखर जाता है। आज वही स्थिति देश की है। अगर हम भारतमाता को अपनी माता मानते हैं तो इस विशाल देश में जितने भी लोग हैं, किसी भी विचारधारा के हों, किसी भी वेशभूषा के हों, किसी भी धर्म के हों, अगर वे सब भारतमाता के सपूत हैं तो हमारा उनसे रिश्ता भाई या बहन का ही हो सकता है, कभी प्रतिद्वंदिता का नहीं हो सकता है। यह बात कौन बताएगा हमें? यह बात हमारे शिक्षक ही बताएँगे।

दूसरी बात है, सामाजिक व्यवहार की। समाज सबको स्थान देता है, सबको अवसर देता है और इसको हमारे

संविधान ने संवैधानिक अधिकार की श्रेणी में लाकर लिपिबद्ध भी किया है और वह है समानता का। अगर भारतीय समाज समानता के सिद्धांत को स्वीकार नहीं कर सकता तो इस देश का भविष्य अंधकारमय ही होगा क्योंकि इतनी अलग-अलग प्रकार की स्थितियाँ हैं और असामान्य स्थितियाँ हैं, जिन स्थितियों को समन्वय के द्वारा ही उनको हम समझ सकते है और उनमें अमल कर सकते है। गरीबी है, जलालत है, अशिक्षा है, निरक्षरता है, इन सबको अगर हमें सारे देश के संदर्भ में देखकर उन पर अमल करने की जरूरत है तो केवल समानता का सिद्धांत ही हमारे लिए लाजिम है। और, यह भी कौन बताएगा? यह हमारे शिक्षक बताएँगे।

फिर राष्ट्रीय संकल्प का संदर्भ है। हर राष्ट्र अपने मूल सिद्धांतों को, तत्वों को संरक्षण देता है और उसके अनुसार राष्ट्र प्रगति की ओर बढ़ता है। अगर मैं इन्हें इन शब्दों में कहूँ तो शायद गलत नहीं होगा कि हर राष्ट्र का एक राष्ट्र धर्म होता है, जो सब धर्मों के ऊपर है और माना जाना चाहिए। हम अपने व्यक्तिगत आचार - विचार में, व्यवहार मे, जो हमारा धर्म है उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित रहें, विश्वास रखें, जो धर्म की हमारी मान्यताएँ हैं, जो आवश्यकताएँ हैं उनको पूरा करें। लेकिन, जब तक हम राष्ट्र धर्म के बारे में भिज्ञ नहीं होंगे तब तक केवल धर्मों की सीमाओं में बँधकर हम राष्ट्र का चिन्तन नहीं कर सकते। और, यह भी कौन बताएगा? यह हमारे शिक्षक ही बताएँगे।

आप देख सकते हैं कि आज के संदर्भ में ही नहीं, सदैव शिक्षकों का क्या दायित्व और क्या स्थान हमारे देश में रहा है। आज के समय में शिक्षकों के सामने यही सबसे बड़ी चुनौती है, एक ओर जहाँ उनके व्यक्तिगत प्रश्नों को सहानुभूति के साथ उनके हितों का संरक्षण करते हुए ज्यादा से ज्यादा उनको सहायता और साधन पहुँचाते हुए हमें देखना है वहीं शिक्षकों को इस देश की वर्तमान परिस्थितियों में जो चुनौतियाँ हैं उन चुनौतियों से भी कैसे वे अपने बालकों को जूझने के लिए तैयार कर सकते हैं उनके लिए भी यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है और इसलिए मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि राजस्थान में हमारे शिक्षकों ने इन पहलुओं को भी उतना ही महत्व दिया है जितना अपने स्वयं की सेवा शर्तों और अपने स्वयं के उन विषयों को, जिनसे उनका सीधा दैनिक संबंध है। यह सही मायने में भारतीय शिक्षकों या गुरुओं का एक वह दर्शन है, जो दर्शन कभी-कभी आजकल धूमिल होता जाता है। हम इतने उलझ जाते हैं अपनी स्वयं की परिस्थितियों में, प्रश्नों में, कि यह जिम्मेदारी दूसरे नंबर की हो जाती है या तीसरे नंबर पर हो जाती है, लेकिन राजस्थान के प्रगतिशील शिक्षक संघ ने इस जिम्मेदारी को सर्वप्रथम स्थान दिया है। यह केवल आपके लिए बधाई का पात्र नहीं है, मैं तो यह कहूँगा कि सारे भारत के शिक्षकों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।

हम आपसे इतना ही कहना चाहते हैं कि जो ऐसी बातें हैं, जिनका संबंध आपके उन कार्यकलापों से है, जो आपकी जिम्मेदारी है शिक्षा क्षेत्र में, उन सभी परिस्थितियों में शिक्षकों का, इस प्रकार से हमें उनके हितों के बारे में ध्यान रखना जरूरी है क्योंकि न्यूनतम आवश्यकताएँ उनकी पूरी हों, किसी प्रकार का उनके साथ अन्याय न हो, भेदभाव न हो और बिल्कुल खुले दिल और दिमाग से वह अपनी उस जिम्मेदारी को निभाने के तत्पर हों, अग्रसर हों, जो जिम्मेदारी देश ने उनको सौंपी है। साथ ही साथ हमें यह भी स्वीकार करना है कि आज के युग में ज्ञान का विस्फोट हुआ है। आज से 15-20 साल पहले जिस ज्ञान को प्राप्त करके आप शिक्षण का कार्य कर सकते थे, आज उस ज्ञान को प्राप्त करके आधुनिक संदर्भ में आप शिक्षा देने के कार्य को सफलता-पूर्वक नहीं कर सकते और इसलिए शिक्षकों का प्रशिक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना बालकों के लिए शिक्षा पाना महत्वपूर्ण है और इस दिशा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने, जो हमारी 1986 की नई शिक्षा नीति है जिसे देश को स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी ने दिया था उसके अंतर्गत

सतत् प्रशिक्षण का कार्यक्रम शिक्षकों का सारे भारत में चले उसके ठोस प्रयास करने का, एक कार्यक्रम बनाया गया है, तो उससे लाभान्वित हों, लाभ लें। यह मेरी आपसे प्रार्थना है।

यहाँ पर इस प्रदेश के कोने-कोने से शिक्षकों के प्रतिनिधि आए हैं। मैं आपके माध्यम से इतना ही कहना चाहता हूँ कि जहाँ भी आप है, आप उस ज्योति के प्रतीक हैं, जो अंधकार को हटाता है, मिटाता है। यदि दीपक की लौ प्रकाश देना बंद कर दे तो दीपक का कोई महत्व नहीं बच पाएगा। जब तक लौ वह प्रकाश देती है तभी तक दीपक के स्वरूप को लोग देख सकते हैं। इसका कोई मतलब नहीं, न इसकी कोई चिंता है कि वह प्रकाश किस सीमा तक फैलता है, लेकिन वह प्रकाश फैलना चाहिए अंधकार के खिलाफ उस दीपक की लौ की जो लड़ाई है, जो संघर्ष है वह हमारे देश में शिक्षक की आत्मा का सच्चा प्रतीक माना जाता है और वह प्रतीक आप सबके दिलों में है। ऐसा मैं विश्वास करता हूँ। आज गिरते हुए सांप्रदायिक, जाति व अन्य प्रकार की संकीर्ण भावनाओं का अंधकार राष्ट्र को घेरता चला जा रहा है। उसके खिलाफ आपका सतत् संघर्ष उसी दीपक की लौ की भाँति होना चाहिए, जो सब कुछ सहकर जलता है, लेकिन प्रकाश फैलाने में कभी पीछे नहीं हटता है। यह मेरी आपसे प्रार्थना है।

एक बार पुन: हम आपका बहुत आभार व्यक्त करना चाहते हैं कि इस सम्मेलन में आपने मुझे आने का अवसर दिया। आप सबको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। जय हिन्द।

देश की अखण्डता के लिए ज़म्हूरियत ज़रूरी

15 मई 1993 जलालपुर (उत्तर प्रदेश) की आम सभा में सम्बोधन के प्रमुखं अंश इस प्रकार है —

माननीय श्री सिंह जी, इस आयोजन के सम्मानित अध्यक्ष, माननीय मदन सिंह जी और हमारे सभी आदरणीय साथियों, अगर आप सबका मैं अलग-अलग नाम नहीं ले रहा हूँ तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैं सबके प्रति सम्मान व्यक्त नहीं कर रहा हूँ, समय के पिटारे को देखकर ऐसा कर रहा हूँ, आज आपके बीच में उपस्थित होने के लिए सुमन जी ने और उनके साथियों ने मुझे मौका दिया, मैं उन सब साथियों को बहुत-बहुत अपनी ओर से धन्यवाद देना चाहता हूँ।

यह फैजाबाद जिला हिन्दुस्तान का एक वह जिला है, जहाँ मेहनतकश वह भाई-बहन हैं, जो सूत का तानाबाना बुनते है। यहीं पर हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्मस्थान भी है, जो हम सब लोगों की मान्यता के मुताबिक एक आदर्श पुरुष थे और वह हमारे, आप सब के, हिन्दुस्तान के करोड़ों करोड़ों लोगों के आस्था केन्द्र हैं, जो हम सब के जीवन के अन्दर तानाबाना बुनते है। आज यह कहते हुए बेहद दु:ख है कि मजदूर का तानाबाना उसकी जिन्दगी को बेहतर बनाता है, जीने लायक बनाता है उस गरीब को, मगर भगवान राम के नाम पर ऐसे लोगों ने हमारे सब तारों को झकझोर कर उसको तोड़ा है, जिसको शायद हिन्दुस्तान कभी माफ नहीं कर सकता।

यदि हिन्दुस्तान की कोई मजबूती का कारण है, यदि हिन्दुस्तान को अपने पैरों पर खड़े होने लायक बनाने में कोई कारण रहा है और आगे इस देश की एकता और अखंडता को कायम करने के लिए कोई कारण रहेगा तो वह इस देश की जम्हूरियत है। अगर जम्हूरियत नहीं है, प्रजातंत्र नहीं तो हिन्दुस्तान जिन्दा नहीं रह सकता और यह मैं इसलिए कहना चाहता हूँ क्योंकि जम्हूरियत ही एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें हिन्दुस्तान में रहने वाले अलग अलग धर्म, जात और भाषा के बोलने वाले लोग एक दूसरे से मिलते है और परस्पर विश्वास के साथ इस देश ---- को चलाते है।

आज यहाँ के बुनकर, जो अभी उनकी बात कही गई, उनके लिए तो सबसे ज्यादा जरूरी यही है कि सूत

मिले और ठीक दाम पर मिले। लंबी चौड़ी बातों से उनको क्या मतलब। लेकिन, यह करने के लिए कि उनको सूत समय पर और सही दाम पर मिले, कुछ यत्न करने की जरूरत है और उस यत्न को करने के लिए ही यदि हमारे पास समय नहीं रहेगा, हमारे पास धन नहीं रहेगा, साधन नहीं रहेंगे तो कितनी ही उनकी परेशानी हो उसमें कुछ भी करना मुश्किल होगा। हमारे खेतिहर मजदूर है, खेत में काम करने वाला किसान है, उसे बिजली और पानी चाहिए, अच्छे बीज चाहिए। मजदूर को मजदूरी चाहिए। अगर यह सब चीजें मुहैया होती हैं तो वह एक ओर अपने जीवन को बिताने के साधन जुटाएगा, अपने परिवार को अच्छा बनाकर चलेगा और वहीं साथ ही साथ इस देश की जम्हूरियत पर उसका विश्वास रहेगा, लेकिन देश का गरीब हरिजन जो अत्याचारों से दबा है, जो अनेक परेशानियों से घिरा है अगर उसको राहत की साँस लेने का मौका नहीं मिलेगा तो उसके मन में जो नाराजगी पैदा होगी उससे खतरा पैदा होगा, जम्हूरियत मजबूत नहीं होगी। इसलिए मैं बार-बार कह रहा हूँ कि देश की एकता और अखण्डता के लिए अगर कोई सबसे बड़ी चीज की जरूरत है तो वह है जम्हूरियत। आखिर, इस प्रदेश के मुख्यमंत्री दो साल तक रहे कल्याण सिंह जी, क्या बुनकरों के लिए कोई कार्यक्रम उन्होंने सामने रखा? क्या खेतिहर मजदूरों के लिए कोई कार्यक्रम सामने रखा? क्या हरिजनों के उत्थान के लिए कोई कार्यक्रम उन्होंने सामने रखा? कोई भी ले लो, जो कार्यक्रम चल रहे थे पहले से उनको भी बंद करके उनको समाप्त करने की साजिश हुई और हुए भी। इनका काम क्या-क्या था? लोगों के बीच में अविश्वास पैदा करना, नफरत पैदा करना, हिंसा करवाना और देश के माहौल में एक ऐसे नफरत का बीज बो देना ताकि हम एक दूसरे से दूर हो जाएँ, हम एक दूसरे पर विश्वास करना बंद कर दें और इस माहौल में यह थे। हम लोगों को भड़का कर और अपना-अपना काम लेना शुरू कर दिया।

यहाँ पर किसानों के बीच में दो बातें भी मैं कहना चाहता हूँ। काफी इस वक्त चर्चा है सब डंकल प्रस्ताव की। और, एक साहब ने मुझसे कहा कि डंकल पर जरूर बोलिए। मैं यह नहीं समझ पाया कि यह डंकल कहाँ से चलकर कहाँ पहुँच गया। एक बात पर आप भरोसा रखिए कि चाहे डंकल का प्रस्ताव हो, चाहे अंकल का प्रस्ताव हो, भारत के किसानों के हित को नजरअंदाज करके, बलाए ताक रखकर किसी बात को काँग्रेस नहीं मानेगी। इतना भरोसा आप रखें। क्योंकि हम जानते हैं कि काँग्रेस ही नहीं, हिन्दुस्तान की रीढ़ किसान हैं।

दूसरी बात है बुनकर भाईयों की। मैं जानता हूँ, क्योंकि हमारे मध्यप्रदेश में दो एक स्थान ऐसे हैं - बुरहानपुर है, खंडवा है, जहाँ हजारों की संख्या में बुनकर भाई रहते हैं। उनका जो आर्थिक ढाँचा है वह बहुत ही नाजुक हो गया है, इसके बावजूद कि जो कुछ वह अपने हाथों से बुनकर पैदा करते हैं वह बहुत ही नफीस चीज होती है और उसकी चारों तरफ माँग है। लेकिन, आर्थिक ढाँचा इस प्रकार से बन गया है कि उसकी वजह से उनको परेशानी हो रही है। इस मामले में केन्द्रीय सरकार ने एक योजना अभी घोषित की है, मुश्किल से दस-पन्द्रह दिन पहले। मैं इस विभाग के मंत्री महोदय से स्वयं जाकर इस बारे में बात करूँगा और उनसे निवेदन करूँगा कि इस अंचल के बुनकर भाइयों की जो परेशानियाँ हैं, या तो वह खुद आकर यहाँ देखें या किसी भी बड़े अधिकारी को भेज कर इसको पता करवाएँ और जो काँग्रेस का इस बारे में फैसला है उसका पूरा-पूरा लाभ यहाँ के बुनकर भाईयों को मिले, इसको सुनिश्चित करें।

आप लोगों ने जो मुझे यहाँ स्नेह और आशीर्वाद दिया, उसके लिए मैं बहुत-बहुत आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ और जिन मुद्दों की ओर आपने ध्यान आकर्षित किया है, चाहे वह मिल के हो, चाहे बुनकरों की समस्या हो, वह आपके साथियों के साथ मिल-बैठकर हल करने की जो मुझसे जितनी भी कोशिश हो सकती है वह कोशिश मैं करने की पूरा-पूरा प्रयास करूँगा ताकि आपके इस आदेश का पालन भी मैं कर सकूँ जो आपने अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से मुझे आज दिया है। धन्यवाद। जय हिन्द।

साक्षरता अभियान

15 मई 1993 गाँधी आश्रम अकबरपुर (उत्तर प्रदेश) में सम्बोधनके प्रमुख अंश इस प्रकार है —

माननीय अध्यक्ष श्री थत्ते जी, मंच पर विराजे हुए सभी आदरणीय बंधुओं, आदरणीय भाइयों, उपस्थित माताओं और बहनों, मैंने बहुत उत्सुकता से जो कुछ भी यहाँ कहा गया, उसे सुनने की कोशिश की और इसका जो सबसे बड़ा प्रभाव मुझ पर पड़ा है, वह यह कि सचमुच में साक्षरता अब एक जन-अभियान बन गया है। भारत में निरक्षरता का प्रतिशत कितना था, यह केवल आँकड़ों से व्यक्त नहीं होता। जो भी व्यक्ति सामान्य जन से इस पक्ष में आते है उनको इस बात का पूरा अहसास है कि साक्षरता और निरक्षरता के बीच में जो विभाजन रेखा है उसमें कितने लोग एक तरफ हैं और कितने लोग दूसरी तरफ हैं क्योंकि साक्षर होना किसी भी एक स्तर में रहकर एक स्तर को पार करना मात्र नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में, चाहे पारिवारिक हो, सामाजिक हो, राष्ट्रीय हो, ऐसे अवसर आते है जबकि उसे स्वयं कुछ निर्णय लेने होते हैं। वह निर्णय किस संदर्भ में है, निर्णय लेने के लिए वह व्यक्ति किन बातो को आधार मानता है, किस हद तक उसमें अपने विवेक का इस्तेमाल करता है और किस हद तक वह निर्णय उसके पारिवारिक या सामाजिक या राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, यही साक्षरता और निरक्षरता के बीच में विभाजन रेखा है और इसलिए स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी जी ने 01 मई, 1988 को, जो प्रयास हो रहे थे देश में साक्षरता को बढ़ाने के, उन प्रयासों को एक नया आयाम दिया। इसका एकमात्र उद्देश्य यही था कि साक्षरता का अभियान सरकारी तत्वों से निकलकर, जन-जन का अभियान बने, और वह राष्ट्रीय चेतना का अभियान बने।

एक बात मैं यहाँ कहना उचित समझता हूँ कि जन-अभियान अर्थात् राष्ट्रीय-अभियान ही है। वह किसी पार्टी का अभियान नहीं है। अगर हम विवेकशील नागरिक देश में बनाएँगे और वे अपने विवेक से फैसले करेंगे सार्वजनिक मुद्दों पर, व्यक्तिगत मुद्दों पर और उससे जो राष्ट्र का निर्माण होगा, वह असली उद्देश्य है। किस पार्टी को उससे कितना फायदा मिलता है या नहीं मिलता है, उसका कोई मूल्य नहीं। यह कहते हुए मुझे सन्तोष है कि कम से कम अभी तक कभी कोई इस प्रकार का बहुत ध्यान देने लायक कोई उदाहरण नहीं मिला है, जहाँ किसी भी राजनैतिक पार्टी ने इस अभियान को राजनैतिक दृष्टिकोण से मोड़ा हो।

महाराष्ट्र के सिंध दुर्ग जिले में संपूर्ण जिले को साक्षर घोषित करने मैं गया था। मैंने पूछा कि इसका उद्घाटन कैसे हो? वहाँ के प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नाईक जी थे, उन्होंने कहा कि मुझे मालूम नहीं कि किस प्रकार से इन्होंने इसको रखा है, दीप जलाकर कर ही होगा, जैसी हमारी परंपरा है। न जाने किस ने मुझसे निवेदन किया कि दीप हम सभी जलाते हैं, सबसे गरीब परिवार की एक जो बहन यहाँ हो, जो बैठी हो, आप उनसे कहिए कि यह जो ब्लेकबोर्ड लगा है, मंच पर इस पर आकर वह जो कुछ उसने सीखा है, वह शब्दों में लिख दे और उसी को उद्घाटन मानें। आपको रोमांच होगा यह सुनकर, कि उस बहन ने आकर और कुछ नहीं लिखा, केवल इतना लिखा - "मैं लिख भी लेती हूँ, पढ़ भी लेती हूँ"। यह है उस अभियान के मूल में। एक अपढ़, गरीब, हरिजन परिवार की वह बहन, जिसका पूरा परिवार पत्थर तोड़ता हो, वहाँ पर हजारों लोगों के सामने आकर आत्म-विश्वास से लिख सकती है, यह चेतना देश के लिए आवश्यक है। अब उस बहन को कोई गलत बातों से बहला नहीं सकता, गलत बातों से फुसला नहीं सकता। यही वह भी चाहेगी और उसका परिवार भी यही चाहेगा।

इस प्रकार की भावना ही अब हिन्दुस्तान को इस खतरे से बचा सकती है, जो खतरा आज हमारे सामने है। इसलिए साक्षरता अभियान केवल अक्षर ज्ञान का प्रयास नहीं है, मेरे मत में साक्षरता अभियान राष्ट्र के धर्म को पहचानने

का अभियान है। आज मुझे इस बात का पूरा आभास है कि मैं भगवान राम की जन्म-भूमि पर खड़ा हूँ। भगवान राम लाखों, करोड़ों भारतीयों के प्रेरणा स्रोत हैं, आदर्श स्रोत हैं और आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं। वह किसी के कहने सुनने से नहीं, किसी के समझाने की वजह से नहीं, सदियों सदियों से एक आत्म-प्रेरणा है और जो आदर्श भगवान राम का जिन करोड़ों लोगों के दिलों पर है, इन भगवान राम को साधारण से साधारण व्यक्ति देखता है, किस रूप में देखता है और उनको क्यों प्रेरणा का स्रोत मानता है, शायद यह आज हम भूलते चले जा रहे हैं।

शायद हिन्दुस्तान के और किसी कोने में मैं इस बात को कहता तो लोग उसके संदर्भ को भलीभाँति नहीं पहचान पाते, लेकिन आज अयोध्या की भूमि पर यह बात कहकर, मैं केवल अपनी ओर से यह बात नहीं कह रहा हूँ, शायद यह लोगों को मालूम नहीं है कि यह क्षमता, यह चेतना आज भारत के करोड़ों लोगों के मन में है, लेकिन धर्म को धर्मांधता का आवरण पहना दिया जाता है तब सबसे पहला शिकार मनुष्य का विवेक होता है और अविवेकपूर्ण मनुष्य सब कुछ मानने के लिए तैयार हो जाता है। इसलिए साक्षरता का जो हमारा मन्तव्य है, जो मिशन है, यह मिशन केवल अक्षर-ज्ञान नहीं है, यह लोगों के बीच में दायित्वपूर्ण, आचरण-पूर्ण और आदर्शपूर्ण कार्य कराने का भी है। इसीलिए यहाँ पर जो कुछ कार्य हुआ है, उसकी सफलता को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि अब संपूर्ण फैजाबाद को इस अभियान से जोड़ दिया जाए। मैं जानता हूँ कि बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि जहाँ हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम का जन्म हुआ हो वहाँ विवेक का दीपक जलाकर ही हम सारे भारत और विश्व को आदर्श बना सकते हैं। मुझको आशाएँ हैं इस जिले के साक्षरता अभियान की सफलता से।

एक पहलू उसका यह है कि जो कुछ अविवेक की वजह से, लोगों के भड़काने की वजह से धर्म के गलत स्वरूप को प्रस्तुत करने की वजह से आज सारे मुल्क में लोग इस स्थान की गरिमाओं से आतंकित हैं, आशंकित हैं और एक तरह से भविष्य जिस तरह आशंकित होते जा रहे हैं, इस साक्षरता अभियान से यहाँ सारे जिले में विवेक का प्रकाश फैलेगा, सद्भावना फैलेगी, राष्ट्रीय धर्म को पालन करने की प्रेरणा मिलेगी। यही स्थान हिन्दुस्तान में एक नए प्रकाश को जन्म देगा, जिस प्रकाश के सहारे हम आज उन अंधकारमय रास्तों से निकलकर भारत के भविष्य की ओर निष्ठा से, आत्म-विश्वास से आगे बढ़ सकेंगे।

यहाँ की स्थानीय कुछ समस्याओं के बारे में बात कही गई है। मैं उत्तर प्रदेश सरकार से इस संबंध में जो-जो बिन्दु आपने कहे हैं, निश्चित रूप से आपकी तरफ से पैरवी करूँगा और मैं आशा करता हूँ कि उसमें से कुछ न कुछ जरूर ही आपकी समस्याएँ हल होंगी। जहाँ तक केन्द्रीय विद्यालय का सवाल है, मैं इस समय आपको गलतफहमी में नहीं रखूँगा। सरकार द्वारा निर्धारित केन्द्रीय विद्यालय स्थापना करने के आधार यहाँ पर अभी विद्यमान नहीं है, जिनके आधार पर केन्द्रीय विद्यालय स्थापित किए जाते हैं, लेकिन आपकी इच्छा और आपकी माँग को ध्यान में रखकर जैसे ही वह उपस्थित हो जाती है बातें यहाँ केन्द्रीय विद्यालय को खोलने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर गाँधी आश्रम और बापू के आदर्शों का जो प्रभाव सारे भारत पर आज है। गाँधी जी ने बहुत कुछ किया। देश को आजादी दिलाई। दरिद्र नारायण को राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र बिन्दु बना दिया, लेकिन जो सबसे बड़ी बात गाँधी जी की तरफ से हुई वह यह कि उन्होंने हर स्थान पर ऐसे लोगों को ही समर्पण की भावना से काम करने के लिए मार्ग बताया, जो राजनीति की आपाधापी से दूर रहना चाहते हैं, जिन्हें हम कार्यकर्ता कहते हैं। चाहे हरिजन को उठाने की बात हो, खादी की बात हो, भूमि के बँटवारे की बात हो, जिसको बिनोवा जी ने हाथ में लिया, यह उनकी अलौकिक दृष्टि थी गाँधी जी की कि भारत जैसे विशाल देश में जहाँ इतनी विविधता है, धर्म की, आचरण की, गति-रिवाजों की, भाषा की, सामान्य प्रकार की परिस्थितियों की, वहाँ केवल राजनैतिक मार्ग से इन सब चीजों को नहीं सुधारा जा सकता और इसीलिए उन्होंने एक तरफ तो सत्याग्रह करके जेल भरी और दूसरी तरफ एक लंबी

कतार खड़ी कर दी ऐसे कार्यकर्ताओं की, जिन्होंने अपने अस्तित्व को ही भुला दिया। उनमें से आज लाखों के नाम हम नहीं जानते हैं। जो लोग जेल गए उनके नाम तो जेल के दरवाजों पर कहीं कहीं अंकित हैं, लेकिन जिन्होंने चुपचाप साधना करके गाँव-गाँव जाकर अछूतों के हितों में काम किया, अछूतोद्धार किया, शिक्षा के क्षेत्र में काम किया, खादी के क्षेत्र में काम किया, आज उनकी सूची हम ढूँढने भी चलें तो बड़ी मुश्किल होगी सूची इनकी बनाने में। वह भी गाँधी जी की सेना थी, जिस सेना ने भारत को आज की परिस्थिति में लाकर खड़ा करने में कोई कम योगदान नहीं दिया और इसलिए यह जरूरी है कि हम इस श्रृंखला को टूटने न दें, और मजबूत करें और जिन साधनों की इनको कमी है उन साधनों को पूर्ण करके हम इस सेना की बढ़ौतरी करें ताकि यह सेना भी भारत के भविष्य की रचना में आज भी अपना योगदान पूरी तरह से दे सके।

मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ गाँधी आश्रम के प्रबंधकों के प्रति, जिन्होंने मुझे यहाँ आने का अवसर दिया और जो कार्य वे कर रहे है उससे परिचित होने का अवसर दिया। मैं इससे ज्यादा बात तो नहीं कर सकता हूँ, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूँ कि जो कुछ उन्होंने मुझे बताया है उसमें क्या हो सकता है, उस दिशा में कुछ भी करना मेरा परम कर्त्तव्य है। उसे मैं करने की कोशिश करूँगा। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

धर्म के आदर्श और मूल्य

17 मई 1993 कानपुर विश्वविद्यालय के समारोह में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय महामहिम राज्यपाल महोदय, आदरणीय उपकुलपति महोदय, यहाँ पर विराजे हुए सभी आदरणीय नागरिक बंधुओं: पत्रकार बंधुओं और अन्य सभी सम्मानित अधिकारीगण, मैं अत्यंत आभारी हूँ उपकुलपति महोदय का जिन्होंने मुझे इस विश्वविद्यालय में आने का अवसर दिया और मैं बहुत आभारी हूँ महामहिम राज्यपाल महोदय का कि इस अवसर पर यहाँ पधार कर उन्होंने इस समारोह की गरिमा को और भी बढ़ा दिया है। कानपुर नगर की कल्पनाओं से और इसके नाम से भारत के इतिहास के कई रोमांचक पृष्ठ जुड़े हुए हैं। 1857 में राष्ट्र को मुक्त करने की जो एक अविस्मरणीय लड़ाई हुई थी, उसे नाना साहब ने और उस समय के अनेकों ऐसे वीर योद्धाओं ने जिनके नाम अब हम लोगों के मानस पटल पर नहीं है, एक ऐसा इतिहास रचने का साहस दिखाया था, अकेले वे ही इस नगरी को, अंचल को अमर करने में पर्याप्त हैं। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के इस संघर्ष में गाँधी जी के नेतृत्व में, पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में, सरदार पटेल के नेतृत्व में, मौलाना अबुल कलाम आजाद के नेतृत्व में और अनेकों हमारे महान नेताओं के नेतृत्व में एक विदेशी हुकूमत को यहाँ से हटाने के लिए लड़ा गया। उस संघर्ष में भी कानपुर के नाम से कई अध्याय इतिहास में जुड़े। यह कहना मैं इसलिए उपयुक्त समझता हूँ कि कोई भी शून्य में अपना व्यक्तित्व नहीं बनाता है वह व्यक्तित्व उभरता है कर्मों से, वह व्यक्तित्व परिभाषित होता है उस योगदान से जो वहाँ के नागरिक और प्रबुद्धजन उस स्थान के विकास में देते है। नवीन जी, गणेश शंकर विद्यार्थी जी, एक प्रमुख व्यक्तित्व दूसरे सम्पूर्ण रूप से समर्पित व्यक्तित्व आस्थाओं के प्रति, विश्वासों के प्रति। यही सामंजस्य एक विशेष व्यक्तित्व बनाता है इस नगर का। आधुनिक युग में यदि आप देखें तो हम तभी आगे बढ़ सकते है जब उन्मुक्तता भी हो और समर्पण भी हो। अगर केवल उन्मुक्तता होगी तो वह कभी-कभी उच्छृंखलता की श्रेणी में पहुँच जाएगी, केवल समर्पण हो, उन्मुक्तता न हो तो भी हम अनुकूप में जाकर सिमट सकते है। आज की व्याख्यानमाला की अपनी परिधि बँधी है, मेरे मत में इन्हीं दोनों के बीच में सामंजस्य खोजने की परिकल्पना है। धर्मनिरपेक्ष भारत कोई आज की खोज नहीं है, न आज की उपलब्धि है। हजारों हजार साल पहले हमारे वेदों में जिस उदारता की विशालता का पूर्वाग्रह से परे चिंतन का समावेश है, वही भारत

की धरोहर है, विरासत है और इतना ही अगर हम समझ सकें तो हमें धर्मनिरपेक्ष की परिभाषा ढूँढने की जरूरत नहीं होगी। जिन ऋषियों ने भारत को एक घोंसले का स्वरूप दिया उस घोंसले में मनुष्य मात्र आकर एक साथ रहते हैं जिन्होंने दिल और दिमाग की खिड़कियों को खोलने का आग्रह किया ताकि दुनिया भर के आचार-विचार और सिद्धांतों का हम आत्मासत कर सकें और उसके माध्यम से अपने व्यक्तित्व को बना सकें, जिन्होंने यह उद्घोष किया कि धर्म कोई आवरण नहीं है। धर्म मनुष्य को केवल आचरण की शिक्षा देता है और वह आचरण जो समाज के अनुकूल हो, उसका और दूसरे व्यक्ति के परस्पर संबंधों को एक औचित्य और विवेक के आधार पर उसकी सीमाएँ बाँधे और अगर एक धर्म किसी एक सिद्धांत, आदर्श और मूल्य सही है तो दुनिया के हर धर्म के मूल्य और आदर्श सही है। यह परिभाषा जहाँ धर्म की की गई हो, जिस देश में अगर आज हम धर्मनिरपेक्षता की व्याख्या करने के लिए मजबूर है, यह अपने आप में एक विडम्बना है, ऐसा मेरा मत है। चाहे आप परमहंस रामकृष्ण जी, विवेकानन्द जी, दयानन्द सरस्वती, अरविंद जी और गाँधी जी अगर इन सब के चिंतन को समझने की कोशिश करें तो वही वेदों से उत्पन्न धारा आधुनिक समय तक बहती चली आई है। यह बात अलग है कि इस निरन्तर प्रवाह से हमने अपने को काट लिया हो, यह हमारी गलती है। वह प्रवाह कभी भारतवर्ष में रूकेगा नहीं। अगर आज इस प्रवाह से अपने को अलग करने की कोशिश है, यदि संकीर्ण दायरे की खोज कर उन दायरों को एक कपटी राष्ट्रीयता का स्वरूप देने की कोशिश है, यदि धर्म अभी एक बोझ की तरह सिर पर लाद कर चलने की होड़ हो, तो यह हमारी गलती है। हमारे देश की विरासत गलत नहीं है।

धर्म वही है जिसके सहारे नदी पार की जा सके। आज हम सब लोग अपने-अपने सिरों पर कितना बोझ लादकर हम चल सकते हैं यह धर्म की व्याख्या कराई जा रही है और इन विचारों के खिलाफ इस कानपुर विश्वविद्यालय में यह आवाज न उठे, जहाँ नवीन जी ने अपना जीवन बिताया हो, और जहाँ गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने जीवन को समाप्त किया हो और कहाँ हो सकता है, मैं समझ नहीं पाता हूँ। यह विशाल भारत की धरती जिसे सदियों से अनेकों बड़े-बड़े सम्राज्यों को चढ़ते-उतरते देखा है आज के युग में सबसे बड़े गणतंत्र के रूप में दुनिया के मंच पर उदय होकर यह आया है।

इस विश्वविद्यालय के विकास के बारे में जब आपके वाइस चांसलर मुझ से मिले थे तो मैंने उनसे यह निवेदन किया था, वैसे तो मेरी जिम्मेदारी हर विश्वविद्यालय की सहायता करने की है, लेकिन अपने देश में कुछ ऐसे विश्वविद्यालय भी हैं जिनकी उम्र अभी ज्यादा नहीं है, उनको आज की परिस्थितियों में आगे बढ़ने में काफी कठिनाइयाँ हो रही है। दुर्भाग्य से यह विश्वविद्यालय भी उन्हीं में से एक है। आपका आवासीय स्वरूप उभरकर सामने आया, इसके लिए मैं पूरी तरह से आपके साथ हूँ। सवाल यह है यह बात एकाएक नहीं हो सकती। आपको पहले कुछ प्राथमिकताएँ बाँध कर उन चीजों को पूरा करना पड़ेगा जिनकी वजह से आप यह पात्रता अपने आप बाँधते चले जाएगे। मैं समझता कि आज के समय सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बहनों की शिक्षा है, महिलाओं की शिक्षा है। इसलिए यह उचित होगा कि कानपुर की बहनों के पढ़ने के लिए सबसे पहले यहाँ एक छात्रावास बने और इस छात्रावास के लिए मैं उपकुलपति महोदय से यह निवेदन करूँगा कि आप प्रस्ताव भेजें। मैं आयोग से निवेदन करूँगा कि वह 35 लाख रुपये एकमुश्त सहायता आपको दे। जो आपके अन्य प्रस्ताव हैं चेयर के बारे में, अन्य विषयों के बारे में, अगले महीने आप दिल्ली आइए तो शिक्षा अनुदान आयोग के अध्यक्ष के साथ आपके नगर के अन्य प्रतिनिधि आना चाहें तो उनके साथ बैठ कर हम विचारविमर्श करें और धीरे-धीरे वह कदम उठाने शुरू हो जाएँ। जिससे थोड़े समय में ही कानपुर के सम्भ्रांत नागरिकों को यह कहने का अवसर न मिले कि उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। मैं बहुत आभारी हूँ इस अवसर

के लिए और यह विश्वविद्यालय उसी कल्पना को साकार करे जिस कल्पना से इसकी आधारशिला रखी गई थी और कानपुर के उन सब नागरिकों की अपेक्षाओं को पूरा कर जो शिक्षा के क्षेत्र में अपने-अपने योगदान से अपनी-अपनी आशाओं को पूरा करने की चेष्टा करना चाहते हैं। यहाँ बैठे हुए हमारे सभी सम्मानित साथियों का मैं बहुत-बहत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ और महामहिम राज्यपाल महोदय को अपनी ओर से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने कष्ट करके यहाँ आने की कृपा की और हम लोगों की बात, कोई अनुचित मैं नही कहूँगा लेकिन जिसको कहते हैं हठवादिता के आधार पर अगर उनका समय थोड़ा सा विलम्ब हो गया है, इसके लिए मैं आपकी ओर से माफी माँगना चाहता हूँ और इस विश्वविद्यालय के प्रति जो उनका भाव है वह इसी प्रकार बना रहेगा ऐसी मेरी आशा है। धन्यवाद, जयहिन्द।

नौजवान हिन्दी के विकास में सहयोग दें

17 मई 1993 पंडित दुर्गा प्रसाद दुबे पुरस्कार वितरण के अवसर पर सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

समारोह के अध्यक्ष आदरणीय सुमनजी, माननीय दिग्विजय सिंह जी, माननीय त्रिवेदी जी, उपस्थित आदरणीय देवियों और सज्जनों। स्पष्ट है कि यह समारोह उस संकल्प का प्रतीक है जो माँ भारती के चरणों में श्रद्धा समर्पण से सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहते हैं। हिन्दी राष्ट्र भाषा केवल सम्पर्क भाषा नहीं है, हिन्दी हमारी मातृभाषा है। मातृभाषा की परिभाषा की नहीं जा सकती है, जैसे कोई अपनी माँ की कभी कोई परिभाषा नहीं कर सकता। ऐसा कोई पहलू नहीं है कि माँ के दृष्टिकोण से माँ को परिभाषित किया जा सके। भारत का भविष्य तबतक अपने सही सर्वांगीण रूप से प्रतिष्ठित नहीं होगा, जबतक हिन्दी मातृभाषा के रूप से प्रतिष्ठित नहीं होती। इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा हिन्दी में और भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में है। क्योंकि साहित्य, भावनाएँ और विचार जिनके लिए भाषा सदैव माध्यम का काम करती है, उनको कभी किन्ही विशिष्ट दायरे में बाँधा नहीं जा सकता है, रोका नहीं जा सकता है। यह सर्वथा उपयुक्त होगा कि हिन्दी देश की अन्य सभी भाषाओं के बीच इस प्रकार से साहित्यिक आदन-प्रदान हो, जिससे कुछ समय के बाद हिन्दी भाषी को कन्नड़ समझने में दिक्कत न हो, और एक कन्नड़ भाषी को हिन्दी समझने में दिक्कत न हो। यह एक विडम्बना कहिए कि भाषा में भी राजनीति लाई जा रही है। इस समय सारे विश्व में हिन्दी को शायद बिना कुछ कहे बहुत ज्यादा बहुत बड़ा सम्मान दिया जा रहा है। इसलिए हम सब का कर्तव्य है कि केवल औपचारिक रूप में नही, व्यावहारिक रूप में हिन्दी का प्रयोग करें और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर इसका उपयोग निरन्तर बढ़ना चाहिए। लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि हिन्दी विश्व के एक बहुत बड़े भू-भाग के नागरिकों की मातृभाषा है। देश के अंदर हिन्दी के विकास की बात बेतुकी सी लगती है, लेकिन विकास की जरूरत है। और इसमें नौजवानों को जोड़ने का या यों कहिए इनके बीच में हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता को जागृत करने का यह प्रयास किया जाना चाहिए।

हिन्दी के छात्रों और हिन्दी के अध्यापकों को, दोनों को जोड़कर निश्चितरूप से एक अभिनव प्रयोग किया है, और उनको इस प्रयोग से प्रेरणा मिली है, छात्रों को और अध्यापकों को, मैं अपनी ओर से बधाई देना चाहता हूँ। प्राचीन परम्पराओं का बहुत बड़ा महत्व है। हम सब के लिए, देश के लिए हम इस रूप में देखना चाहते हैं परम्पराएँ हमें प्रेरित करें और उससे भी ऊँची परम्पराओं को धारण करें। अगर परम्पराओं को बिखेर दिया, देश को असहमत कर दिया या जो स्वाभाविक रूप से ऊर्जा होती है उसको कुंठित कर दिया, इस विचार से कि यह तो हमारी परम्परा के अनुकूल

नहीं है या हम उनसे आगे जा रहे हैं। हम उन्हीं प्राचीन परम्पराओं के संदर्भ में, वर्तमान में, उसकी प्रेरणा से हम भविष्य की नई परम्पराओं को कायम कर सकते हैं यह भारत के अपने वैशिष्ठ्य की बात है कि आदिकाल से ये परम्पराएँ हम को जीवित करती आई हैं। लेकिन उसमें भी परम्पराओं का कार्यक्षेत्र बनाए जाने की कोशिश हो रही है। ऐसे महानुभावों से यह प्रार्थना है कि भारत की प्राचीन परम्पराओं को हमारे भविष्य के आड़े खड़े रहने से इस देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा और कम से कम इस देश के जो विवेकशील नागरिक हैं वे इस खतरे को जरूर समझेंगे, ऐसी मेरी मान्यता है। हमारे वर्तमान को परिभाषित करके भविष्य के लिए परम्पराएँ दें यही हम आपके लिए कामना करते है। आपने इस पुरस्कार में मुझे सम्मिलित होने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। धन्यवाद। जयहिन्द।

Greatest soul of modern India— His Holiness Paramacharyaji

26 मई 1993 काँचीपुरम में जगद्गुरू शंकराचार्य श्री परमाचार्य के शताब्दी समारोह में उद्‌बोधन

His Holiness Shri Jayendra Saraswati Swamigal His Holiness Shri Shankar Vijayendra Saraswati Swamigal Hon'ble Speaker, Shri Shivraj Patil, respected ladies and gentlemen: It is a very unique privilege for me to be here on this auspicious day in connection with the Centenary celebrations of the only living saint of our Motherland. Sainthood is not something which can be conferred on an individual. In the Bharatiya parampara, sainthood is something which a person achieves through his own tapes, out of a commitment not to himself but a commitment to the poorest of the poor, to the samaj, to dharma and to the country. In this great tradition comes one of the greatest souls of modern India, His Holiness Paramacharyaji. His devotees cannot be counted. North, South, East, West, wherever his restless soul has taken him, he has been met by the poor, the needy, the forlorn, the despaired and he smilingly gave them every thing.

It was my unique privilege to have his darshan on one of his sojourns at Bidar. I could not believe my eye that person who is totally oblivious of his surroundings, who does not know who is following him -- perhaps he did not even know where he was going as I was told then that wherever dusk fell, that was his abode for that day. Sitting in a school building, it felt as if the entire circle around him radiated an aura of peace, happiness and love. These are the three things for which humanity has yearned through the centuries. Sometimes it has come to us and sometimes it has been snatched from us. That is the history of our civilisation. But to some people it has come not only as a personal achievement but it has come as a benediction which they can transfer, or given unto the others with equal ease.

His hundred years are not significant only because he is with us in flesh and blood. These hundred years are significant to us because he has addes one more century to the centuries of our history, of culture, of our mythology, of all that we have taken to be of Indian origin. This century will bear the stamp of his personality. I think generations after us may perhaps find it difficult to believe that such a man actullay walked on this earth.

It has been the traditon of all the great sages of our country form the Vedic times that wherever they live or have their abode, ultimately it becomes that focal point for knowledge, for learning, for enlightenment. So it is just natural that Kanchipuram which has the great fortune of having Paramacharyaji here, shall also become one of the great centres of learning, great centres of erudition, great centres of spread of real Indian thought throughout the country and throughout the world. Therefore, the institution that he has inspired here and which is coming up under the guidance of Swamiji is in that great tradition. By giving it the status of a deemed university, we are not conferring any distinction on it; the fact is that we are being honoured by this institution becoming a deemed university.

I have been very inspired by the whole concept of this institution. It is neither an orthodox centre, nor is it an extraordinarily modern institution. It is essentially a synthesis which is basically the Indian way both of life and learning. There are no rough edges, there are no strong extremes in the whole train of Indian thought. It is like the Ganges. Once it is born -- and birth is a turbulent time, a traumatic time, but as soon as it comes down in the plains from the high Himalayas, it flows serenely, it flows deeply blessing all those who care to touch it and yet going on through the centuries till eternity so that we can feel that we are one with our Maker and one with our thoughts. These are the qualities of the institution that is being sought to be built here. I think it would be a unique experiment in our country and I have no doubt whatsoever that not only will it succeed but it will be a shining precedent for many such institutions to come up in other parts of this country.

It don't think I need say anything about the legend and the lore that has come to be attached to our beloved Paramacharyaji. His whole outlook on life is one of love and there are no barriers; there are no divisions. And we human beings of whatever faith we may belong, to whatever persuasion we may belong, have the right to partake of his immense love and solicitude for all human beings.

This institution has conceived to build a library. And a library is always the soul of any educational institution. In India we have great precedents of Taxila, Nalanda, Ujjaini, great centres of learning where knowledge was preserved, protected and also projected. That is possible basically through the library, the wealth of books which are the repository of experience and knowledge. We would like this library to flourish into one of the best libraries in India and with that end in view, as a special case, Government of India, as a one-time grant, will give Rs. 1 crore for building this library.

The Hon'ble Speaker who has released these books is not only the Speaker to whom we look up in the Lok Sabha. He is a man who apart from doing the duties he performs in the chair in the House, is the repository of our trust and faith because he is upholding the dignity of the highest organ of our democracy, the parliament of India. I consider it very auspicious that I have been able to be here with him this day to seek the blessing of Parmacharyaji and also to be instrumental in enabling this institution to take the first steady steps to glorious future which will throw light over all of us and make India, as it has always been, a beacon of knowledge, learning and enlightenment. Thank you.

समाचार पत्र जनता में विवेक जागृत करें

18 अगस्त 1993 बम्बई सांध्य समाचार के विमोचन समारोह में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

समारोह के अध्यक्ष माननीय अधिकारी जी, महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष जी, समाचार पत्र के सम्मानित सम्पादक महोदय श्री नवाब जी,यहाँ पर उपस्थित आदरणीय देवियों और सज्जनों, श्री तोमर जी ने जो यहाँ इस वक्त शायद उपस्थित है लेकिन मंच पर आने से कतरा रहे हैं उन्होंने इस समाचार पत्र के बारे में हमें जानकारी दी और सम्पादक महोदय की ओर से आग्रह किया कि मैं यहाँ आकर इस पत्र का विमोचन करूँ। अभी यह बात कही गई शुरू शुरू में कि सांध्य समाचार क्यों? जब कि समाचार पत्र सुबह छपते हैं और शाम को समाचार है कि नहीं इसके बारे में जानकारी दी गई। दिल्ली में बहुत तेजी से इनका विकास हो रहा है। इसलिए सुबह के समाचार के बजाय साँध्य के समाचार नए होते हैं। उसमें इतनी तब्दीलियाँ हो जाती हैं कि अब साँध्य समाचार भी ताजा खबर देता है, बासी खबर नहीं देता है। आज कम्युनिकेशन जिसको कहते हैं, संवाद माध्यम आधुनिक संदर्भ में इतना बढ़ गया है कि सारी दुनिया सिमट कर बहुत छोटी हो गई है और यही कारण है कि दुनिया के किसी कोने में घटित होने वाली घटना न केवल कुछ ही क्षणों में दुनिया के हर कोने में उसकी जानकारी पहुँच जाती है बल्कि घटना के स्वरूप से जो सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक असर होते हैं वह भी उसमें होते हैं। ऐसे युग में समाचारपत्रों की भूमिका और उन्हें सम्पादित करने की जिम्मेदारी कोई मामूली जिम्मेदारी नहीं है। खुशी है कि इस पत्र के सम्पादक इस जिम्मेदारी को भलीभाँति समझते हैं जैसा कि उन्होंने अपने प्रारम्भिक भाषण में ही हम सब को बताया है। आज के संदर्भ में कई बातें लोगों ने कही। प्रजातंत्र क्या है? इसमें व्यक्ति का महत्व है, समानता का, अधिकारों का और अपेक्षाओं का महत्व है। अगर प्रजातंत्र में से आप ये सब चीजें निकाल लेते हैं तो फिर प्रजातंत्र का स्वरूप वैसे ही हो जाता है जैसे दुनिया के कई देशों में प्रजाताँत्रिक गणतंत्र की संज्ञा की जाती है। लेकिन प्रजातंत्र के महत्व का वहाँ कोई सवाल ही नहीं। आज हमें इस ओर विशेष ध्यान देना है। जब हम प्रजातंत्र का महत्व और उसमें भाग लेने की बात करते हैं तो उसका आधार हमारा विवेक है। अगर सही और गलत या उचित और अनुचित में फर्क नहीं कर सकते हैं, अपने दिमाग से नहीं सोच सकते हैं तो फिर हम प्रजाताँत्रिक प्रक्रिया से ठीक से बाहर नहीं निकल सकते। समाचार पत्रों का सबसे बड़ा दायित्व यह है कि वह प्रत्येक नागरिक के विवेक को जागृत करने के लिए कोशिश करे उसकी रक्षा करने की कोशिश करता रहे और यदि कहीं भी इस पर कुठाराघात होता है तो उसके खिलाफ संघर्ष करने की कोशिश करें। क्योंकि अब धीरे-धीरे कुछ शक्तियाँ केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं दुनिया में यह समझने लगी हैं कि प्रजातांत्रिक विवेक जब जागृत हो जाता है तब कई प्रकार के स्वार्थ और स्वार्थों पर आधारित सत्ता की लम्बी चौड़ी इमारत ढहने लगती है। यह दुर्भाग्य है हमारे देश का कि हमारे यहाँ कुछ ऐसे लोग हैं जो राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति के प्रजातंत्र की जड़ों में बजाय पानी डालने के तेजाब डालने की कोशिश करते हैं। यह हमारा और आप सब का कर्तव्य है यदि अपने देश में प्रजातंत्र को सुरक्षित रखना चाहते हैं अर्थात् व्यक्ति की स्वतंत्रता, व्यक्ति की आजादी और अपने भविष्य पर स्वयं का काबू रखने की बात, जीवित रखना चाहते हैं तो हमें इन शक्तियों को पहचान कर उनसे संघर्ष करने का हमें फैसला करना पड़ेगा अपने देश के लिए जिससे --- हमारे देश के मूल आदर्श जिनके सहारे हमारे हजारों सालों के इतिहास की रचना इस देश की हुई है, सुरक्षित कर सकें। रोज की उठापटक में रोजाना अपने-अपने तरीके से अपनी-अपनी परेशानियों से जूझते रहने में कभी-कभी ये बातें गौण हो जाती हैं, नजरअंदाज हो जाती हैं। तब हमारे बीच में हिंसा

जन्म लेती है। हिंसा का आधार ही है अविवेकपूर्ण कार्य। सोच समझ कर कोई हिंसा नहीं करता है। पहले से तय करके कोई हिंसा नहीं करता है। जब उसका विवेक या तो पूरी तरह से सुप्त हो जाता है या विचारों के या भावनाओं के उभारने की वजह से वह विवेक से काम नहीं ले सकता है तब हिंसा का सहारा व्यक्ति समाज के अंदर लेता है। आज जो खता है वह व्यक्तियों की हिंसा से नहीं है। कुछ ऐसी विचारधारा है, ऐसे कुछ लोग हैं जो विवेक को समाप्त करके भावनाओं को उभार कर हिंसा का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं ताकि वह अपना वर्चस्व हम पर, आप पर कायम कर सकें और उस वर्चस्व के सहारे अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति कर सके। देश के प्रजातंत्र को इन लोगों से खतरा है और उस खतरे से जितने भी लोग भारत को बनाने में लगे हैं उनमें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका इस देश के समाचारपत्रों की रही है। मेरा यह सौभाग्य है कि सांध्य समाचार पत्र उनकी ही वैचारिक शृंखला में जुड़े जो भारत को बचाना चाहते है। देश के मूल आदर्शों को सुरक्षित रखना चाहते हैं। निर्भीकता से उन शक्तियों से संघर्ष करना चाहते हैं जो भारतमाता को न केवल निस्सहाय बना देना चाहते हैं बल्कि पुनः शायद एक दफा माता के पैरों में बेड़ियाँ डालने की संभावना पैदा कर सकते हैं उनके खिलाफ संघर्ष अनवरत निर्भीकता से जारी रखिए। यह मेरी अपेक्षा है और मेरी शुभकामना है। जयहिन्द।

औद्योगिककरण का महत्व

26 अगस्त 1993 धोलपुर (राजस्थान) में चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के समारोह में भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

माननीय दलजीत सिंह जी, राजस्थान के चैम्बर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज के अन्य सभी सम्मानित पदाधिकारीगण, सम्मानित अतिथिगण, मुझे इस बात का बहुत भान है कि राजस्थान केवल शूरता में ही नहीं अपनी विशेषता रखता है, वरन इस माटी में जन्म लिए ऐसे अनेक व्यक्तियों ने, भारत के कोने-कोने में औद्योगिक इकाइयाँ, व्यापारिक इकाइयाँ स्थापित की हैं जिनकी पिछले 50 वर्षों में भारत के औद्योगिकीकरण में उनकी बहुत अहम भूमिका रही है। इस समय देश में एक नया औद्योगिक माहौल तैयार करने का प्रयास हो रहा है। यह माहौल जहाँ एक ओर अपने देश की वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है वहीं दूसरी ओर सारे विश्व में हम जिस तेजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं उसके साथ भारत भी समकक्ष होकर चल सके यह भी उसका एक उद्देश्य है। जब कोई तब्दीलियाँ होती हैं तो सम्पूर्ण रूप से संतुलन कायम करने में कठिनाइयाँ कुछ दिनों तक होती हैं। आज उसी कठिनाई के दौर से हम गुजर रहे हैं। ओद्योगिकीकरण आपने आप में कोई लक्ष्य नहीं हो सकता है। औद्योगिकीकरण उस सामाजिक परिवर्तन का ही अंग बनकर सार्थक हो सकता है जो उत्पादन और उत्पादित वस्तु के वितरण के बीच में एक न्यायसंगत संबंध स्थापित कर सके। इस दिशा में भी हमारे देश में बहुत कुछ करना शेष है। वह कैसे होगा यह हम को कहीं बाहर से, किसी दूसरे आदमी से पूछने की जरूरत नहीं है। हमें अपने ही भाइयों से, अपने ही प्रयासों से इसको अपने देश के औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने पड़ेंगे। कुछ विशेष कठिनाइयाँ यहाँ की बताई गई हैं, खासतौर से खनिज उद्योगों के बारे में। खनिज उद्योगों का जो क्षेत्र है निश्चित ही एक संवेदनशील क्षेत्र है क्योंकि जो हमारी सम्पत्ति है प्राकृतिक सम्पत्ति, उस सम्पत्ति के दोहन से सीधा संबंध है, उस दोहन की सीमा क्या हो, इसकी प्रक्रिया क्या हो और उस प्रक्रिया से प्रभावित होने वाले व्यक्ति या अन्य पर्यावरण जैसी चीजें हैं उनमें हम कैसे संतुलन बनाकर रखें यह नितांत आवश्यक है। मैंने यहाँ के खनिज उद्योगों के बारे में अभी जो कुछ जानकारी दी गई है वैसे तो यह विशेष मूलतः

राज्य शासन का विषय है लेकिन इस संबंध में जो कठिनाइयाँ और किन्हीं कारणों से, जहाँ पर कोई पहल केन्द्रीय स्थल पर हो सकती है, मैं आपके चैम्बर के प्रतिनिधियों के साथ इस विषय पर केन्द्रीय शासन के उन मंत्रालयों से सम्पर्क आपके साथ-साथ करने के लिए तत्पर हूँ और जो कुछ भी हम ज्यादा इसमें कर सकते हैं मैं करने की कोशिश करूँगा।

जहाँ तक शिक्षा का सवाल है अभी हमारे भाई ने शिक्षा के संबंध में बहुत सी बातें कह कर यह स्वाभाविक रूप से ही कहा यह सब आपके मंत्रालय से सम्बन्धित हैं और इन पर आपको यहाँ पर फैसला देना चाहिए। शिक्षा से सम्बन्धित जरूर है लेकिन कार्य क्षेत्र सब के अलग-अलग हैं। जहाँ तक प्राथमिक और कालेज एजुकेशन का सवाल है वहाँ तो आपके प्रदेश शासन की ही इस संबंध में पूरी जिम्मेदारी है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि इस दिशा में मैं अपनी ओर से कुछ पहल नहीं कर सकता हूँ। मेरा यह सुझाव है कि जो आपने बिन्दु यहाँ पर रखे हैं उन पर तो ध्यान जरूर दें लेकिन मूल रूप से हमें तकनीकी शिक्षा क्षेत्र में नए अवसर प्राप्त करने के लिए कोशिश करना चाहिए और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ भी यहाँ पर प्रयास हो सकते हैं, जो आवश्यकताएँ हैं उनके बारे में यहाँ के सभी सम्मानित जन प्रतिनिधियों से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि वे एक निश्चित प्रस्ताव बनाए और उस निश्चित प्रस्ताव में जो केन्द्रीय शासन का योगदान होना चाहिए, पूरी तरह से वह योगदान केन्द्रीय शासन का होगा, इतना मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ।

अगले शैक्षणिक सत्र से अर्थात् 1945-95 के सत्र में धौलपुर में भी नवोदय विद्यालय की स्थापना की जाएगी। आपके इस चैम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज की स्थापना तो हो गई है, उद्घाटन आज हो रहा है और उद्घाटन का समारोह या और चीजों में तो किसी और तरीके से मनाया जा सकता है लेकिन चैम्बर का उद्घाटन तो कोई ठोस उपलब्धि के आधार पर ही मनाया जा सकता है। इस दिशा में आपके प्रयास नए औद्योगिकीकरण के लिए, जो उद्योग लगे हैं उनके विसतार के लिए, क्योंकि अब इतने अवसर और इतने साधन इस दिशा में उपलब्ध कराए जा रहे हैं कि उनका उपयोग होना नितांत आवश्यक है। जो परम्परागत उद्योग हैं उनका महत्व है और उनको बनाकर रखना चाहिए लेकिन अब इतने नए अवसर खुले हैं उनका लाभ उठा कर प्रदेश के जो छोटे-छोटे शहर हैं, बहुत बड़े शहर नहीं हैं वहाँ पर केन्द्रित किया जाए तो बहुत ही अच्छा होगा। यह हमारा सौभाग्य है श्री शिवचरण जी माथुर साहब हमारे बीच में हैं जिन्होंने राजस्थान के विकास के लिए बहुत से नए कीर्तिमान स्थापित किए थे और एक पड़ौसी राज्य में रहने की वजह से मुझे जानकारी है कि उनके मुख्यमंत्रित्वकाल में उद्योगों के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ था। उनके मार्गदर्शन में, उनकी सलाह से इस दिशा में भी आप अग्रसर हों और यह आपका चैम्बर आफ कामर्स उस प्रयास में उद्योगपतियों का, नये उद्योगकर्मियों का पूरी तरह से सहायक बन सके, मार्ग प्रशस्त कर सके यही आज के अवसर पर मेरी शुभकामना है। जयहिन्द।

All religions are good

11 सितम्बर 1993 कलकत्ता, विश्व धर्म संसद में सम्बोधन —

Reverend Swami Deshanand Ji, His Excellency Rajyapal Shri Raghunath Reddyji, Swami Raghunathanandji, Swami Atmashivanand ji, Swami Lokehswanandji, Shrimati, Reddy, Hon. Shri Devearaja, Minister Shri Shivganga, Mr. Parthasarathy, distinguished delegates to this Parliament of Religions:

I feel deeply humbled as I rise to address this august gathering under the benign gaze of Swami Vivekanandji. in which such spiritual and intellectual luminaries from all over the world are present. It is more than symbolic that this parliament of religions is being held in Calcutta which, in my view, in a way represents the conscience of India.

A hundred years ago, in a similar assembly at Chicago a great son of India who was then known around the globe as the 'wandering monk of India,' Swami Vivekanand, articulated for the first time in a world assembly the spiritual vision of India. While I feel honoured to be here on this great occasion to greet you all and to wish you well, in the deliberations of this Parliament, I do feel a little sad that after a hundred years the world today is dominated by forces of fanaticism, carrying on persecution with the sword or with the pen. Swami Vivekanand had given a clarion call for the death knell of such fanaticism. Those unfortunate forces have appeared on this beautiful earth of ours again, creating great turmoil, dissensions, hatred and promoting conflicts and intolerance on very minor issues. It is sad that the world did not take the path which Parliament at Chicago had shown to us hundred years ago.

Although graeat progress and change have come about, many more nations and people are liberated, the world seems to be involved in a number of squabbles and agitations in many parts. It is, therefore, very appropriate that we should recall what Swamiji had said in that Parliament of Religions - and I quote:

> *If anyone and anybody craves for the total survival of his own religlon and destruction of the world, I pity... is solely written in spite of resistance by assimilation and not by destruction, harmony and peace and not dissension.*

I nave no doubt that all present here will endorse every single word that was uttered by Swamiji a century ago, and would also agree that even today they are as urgent and relevant as they were hundred years ago.

The spiritual vision of India, as Swamiji had outlined, both through his words and more by his deeds, was essentially a vision of harmony. In fact, if the essence of Indian culture has to be reduced to a single word, it would be harmony. It is harmony of religions, lifestyles, languages and beliefs. It is harmony between man and man, harmony with nature and harmony with the whole universe. Our art and culture, our classical traditions, our metaphysics and our philosophy are all endowed to obtain, vindicate and rediscover this essential harmony of the man. There have been unfortunately forces which have been attempting to disrupt this harmony. However, it has been our great fortune that it has survived all the vicissitudes, disruptions and suppressions down the centuries. It would be today unrealistic to suggest that India today presents a picture of disharmony. There is no gainsaying the fact that the forces of disharmony, dissensions and intolerance are operating furiously on the Indian scene and essentially pluralistic vision of India, its harmony is facing a forceful challenge. In many ways such assaults are taking place in many other parts of the world but it is particularly painful to see this happening in India on such a large scale when we have always been taking pride

in our being a home of harmony.

Harmony in India is threatened today not only by forces of commercialisation and communalism but it is more fundamentally threatened by the ways of... The place of religion in modern society has been often misunderstood. In the larger perspective religion represents that aspect in spiritual vision which could not be explained, or contained by rationale and reason alone. Man unlike the animal cannot do without this and sense of sacred and spiritual. He needs a world beyond mere physical, a world which is subject to rational analysis but does not stifle religion, a world beyond this world. It is this which evokes in him deep creativity and a desire to merge with the larger universe.

Material poverty is a great impediment to human dignity and freedom. So is spiritual deprivation. Material poverty may be due to forces beyond one's control sometimes, but spiritual poverty is very much our own doing.

Man needs to negotiate his relationship with nature, with other beings and with the universe at large. Religion provides an instrument for this negotiation, this inevitable dialogue. In fact, if one examines closely the terms of the dialogue, they are more or less the same whatever religion one chooses. The metaphor, the symbol and imagary may vary, as indeed the text and the rituals, modes of worship and contemplation, but the essential truth remains the same. Through various religions we seek route to God, to nature and to each other.

In India, disharmony has to be understood in this context and it has to be remembered that secularism has always been a positive and dynamic concept and movement. The most famous Indian rulers like Ashoka, Kanishka, Harsha and Akbar had respect for all religions without letting their respect hamper social and political action, and promotion of education and culture. It is entirely wrong to think that to be either a Hindu or a Muslim or a Christian is to be unsecular. Religion and seculrism are not oppositional terms in this sense.

Confusion is caused when we try to equate Dharma with religion. The word "Dharma" is derived from "Dhiri" which means support, to hold together. *Dharete iti Dharama.* Mahabharata explains that Dharama is called as it gives support to hold together because it holds the people or society together. Right from the time of Manu, Dharma consist of contentment, forgiveness, mental discipline, fillip to actual thought, curbing the sensory organs, cultivation of wisdom, acquisition of knowledge, truthfulness and control. Is there one government in this world which would not seek to promote these ideals? Is there a religion which will disown any of these ideals? If a government were to promote these ideals among all its citizens, will it not secuar? or will it cease to be secular because these very ideals are also espoused by all religions? Secularism does not mean being anti; it only means that we should adopt the rational, scientific approach through discussion to the solution of socio-economic political problems.

The World of Parliament in Calcutta is providing a platform for all religions to come together, gives hope and opportunity for all religions to accept the basic percept that all the religions flow like rivers into the ocean, and the ultimate truth that the teaching differs because the people to

be taught differ. This congregation would therefore help to re-assert the eternal truth of Swami Vivekanand's dream. It obviously cannot take recourse to spirituality ignoring reality, for reality of our time has to be redeemed. It is only possible if this parliament sends across a message of love, harmony and affection.

Ours is a multi-religious and multi-cultural society. We accept all the religions as valid. Truth is one; the wiseman speak various... of it. We need universal acceptance because Swami Vivekanand said, if one religion is true, all religions are true. We look forward to a new spirit, a transcendental spirit and we need solidarity and the call for this must come. We must save all beings from hatred, intolerance and dissension. This is the only way in which we can be true to our ancient and unique heritage which has been instrumental in spawning a truly culture based on respect for justice and peace.

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकार वार्त्ता

Use of religion in politics is dangerous

11 फरवरी 1993 इंडिया टूडे के श्री शेखर गुप्ता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: Are you satisfied by the way the party is facing communal forces and economic problems or you would rather like to say that the party would have done it in some other way?

A: Well, one can always find something wanting in whatever course you adopt. The basic thing is that whatever effort is made must be pointed and directed towards the objective that you want to achieve. It is not only a political confrontation, that we have to defeat BJP so that we remain in power and they do not come into power that is, of course, a political plank of the whole thing. The basic problem as I see it is that the thinking and the political syndrome is being vitiated in the country and that is a bigger danger because having decided ---- the decision being taken by the BJP ---- to use religion for the sake of achieving power, they are not putting any restrictions on it. But I do not consider only the BJP's attempt to use religion. It has become more or less and ordinary thing for the fundamentalist thinking to come to the centre of the political power, whether it is Hindu or Muslim is immaterial. Now that approach and that effort must be understood by all the democratic forces in which I count the Congress as the biggest one, and that is what we have to combat.

Q: Do you see adequate realisation of that in the congress (I)?

A: To some extent, yes because you look at it academically, whether it is an individual, whether it is a party or whether it is the country, the manner in which you look at things, the sequence and the ultimate effect determine what kind of approach you have for what you are supposed to be doing. Not if I commit a mistake, or supposedly a mistake, when I think I have to be very

candid in my reassessment or review of that. Now here we had a situation where in Tirupati in April '92, seeing all the dangers around, the party took a very, I must say, emphatic stand on the issue of communalism and how the Congress party has to become the instrument to fight that communal poison. Now if less than a year later, the forces that we were supposed to combat have come to the centre stage of Indian politics and we are in the process of being marginalised, then the Congress party has to think about it. And if we are not going to make a candid assessment or re-assessment of what went wrong, where we did not do what we should have done, then I don't think we can fight properly. Now this can be considered by some people as criticism. But criticism is the essence of democracy.

Q: So what you are saying is that the move you have made is a calculated one and you know what you are doing.

A: I did not stumble on it. This much I can tell you. And I think it is what the party needs and I have not seen anyone saying that the party does not need it. I don't think anybody has said it.

Q: These are not small people. These are senior people in the party.

A: I think you better ask them. I cannot answer that question. This much I have said publicly that if one-fourth of the energy and time that is being wasted on clipping, countering or marginalising me is used for the same purpose against the BJP or the communal forces, perhaps we could have done something more concrete. But anyway I cannot answer that question. That question must be answered by those who .....

Q: Are you still hoping that the Congress party can be a rellying force for secular elements because the Left parties are still very relucatant to take Congress into the front.

A: I won't answer this question in relation to anybody but for the Congress party I can say that I have full faith that the Congress party will be able to become a rallying point, almost it is still the rallying point. Of course people have started having doubts, but it will remain and will remain and come back as a rallying point.

Q: Coming back to what you said about introspection by Rajiv Gandhi of 1989 and all that, recently VP Singh came out with a suggestion that for establishing the secular credentials of the Congress party, especially after Ayodhya, they should begin by snapping their ties with the Muslim League in Kerala. What have you to say about that?

A: When I say fundamentalism of all kinds and hues, I am not keeping the Muslim fundamentalism out. But the Muslim League of Kerala has over the years ---- actually what happens is that we equate this Muslim League with the Muslim League prior to partition.

Q: I am not.

A: You are not doing it. But that is the mental thing that is connected. This Muslim League is not the Muslim League headed by Mr. Jinnah. Therefore, I see no harm. If they were to adopt the same posture and policies, I would say we should not only snap ties but should also start opposing it.

Q: you don't think it is a communal party ---- Muslim League as it is in Kerala?

A: That is my perception.

Q: Okay, you have not taken a dissident position but you have taken a position where you are articulating certain thoughts. Do you sometimes find yourself in a minority within the party or the party forums?

A: I think minority and majority perceptions in these matters, in my view, do not count.

Q: It is only the BJP.

A: No, no, it is not the BJP. It is a matter of conviction and I am also quite sure that ultimately within even the party forums, this is the view that will be the final view. The same thing was being said at Tirupati, if you recollect.

Q: What makes you so optimistic now after the Working Committee meeting than you were earlier?

A: Because I have great faith in the Congress party and the Congressmen. I won't be here if I did not have that. It is not what you get or what you don't get and where you are and you are not. It is certain basic beliefs that carry you forward.

Save Indian Democracy

14 फरवरी 1993 द संडे के निर्मल मित्रा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: The first question is: How do you view the future of the Congress party in the present political scenario that obtains in the country?

A: Well, I think the Congress is going through a very rough patch. But this organisation has great resilience and it is the only organisation which has a spread all over the country. I am quite confident that if we make very concerted and sincere efforts, we can overcome this situation because basically the confusion and the disarray that have been caused by the communal forces in the body politic can be overcome and in that only the Congress party can play a major role. Of course, others also will be there.

Q: But in a more specific context, do you see a threat emerging because of the withdrawal of Jayalalitha's support in Parliament and other such factors that might come in the way of a majority?

A: I don't think that kind of threat exists.

Q: Do you think the party will be able to get Ajit Singh to replace Jayalalitha?

A: I don't know how the things will happen because it is very difficult to say anything in this respect, but I see no difficulty in getting a majority.

Q: Even considering that the Congress has been isolated in the political scenario (a) in terms of how to fight the BJP and (b) in terms of its performance in office. Even considering these two factors, do you think it would not face any problems in obtaining a majority?

A: I don't think so. Taking everything into consideration there will be no problem, or there will be no occasion when the Government will be defeated, if I may put it more precisely.

Q: In the emerging political scenario, do you see the forces of Hindutva posing a challenge to the Congrees in the long term ---- not in the short term? Do you think they are actually pulling the carpet from under the Congress feet?

A: You see, this whole Hindutva campaign is an emotional outburst. It does not have a solid foundation, or a sustained thing to go; because passions have been roused and now the Babri Masjid has been demolished, this is a kind of hysteria which is developing. But as we go along and the fallout of all this becomes more and more visible and when the choice comes between anarchy and order in this country and people come to realise that these Hindutava forces, or whoever are behind that, are even prepared to lead the country into anarchy, if it can help to achieve political power, that is what they will all turn out to be and this is what the Congress has to educate the people about and again bring back the sanity so to say in public life. Of course that means a lot; it is not easily done; but that is the only task which can actually save Indian democracy.

Q: But in terms of the caste and communal composition of the Congress support base and the BJP support base, one notices a very perceptible shift of the upper caste Hindu vote towards the BJP. Do you think that is actually retrievable in the North?

A: I don't know whether you remember, after our elections, both in 1989 and again in 1991, I went to the Doordarshan on behalf of the party to reply to the emerging scenario. Pranoy Roy was the moderator. He put me almost the same question.

Q: I was not in the country at that time.

A: What I said then is valid today and that is the best and only way by which you can defeat the communal forces. I had said that ultimately in India, it is the coalition of the poor which will have to emerge and the Congress party will have to back up that coalition with all the strength it commands, and that will be the bulwark against all these fissiparous and communal thinking and action. I did not go into the caste orientation of it but if you just look around, you note what the coalition of the poor means. It means the tribes, it means the Harijans, it means the minorities, it means the backwards and it means the poor even among the forward communities. Now also it is the same. I think this coalition of the poor ---- it is not to be formed; it is already there must be brought together because basically if yoy look closely at the forces that are identified as the Hindutva forces, you will see prominently people who are better off who are not only that upper crust of caste society but even the economically creamy layer, and their interest can never coincide with the interests of the broad masses of the people, or the toiling masses of the people. That is what we have to consolidate. If you don't do that and just try to tinker with the whole thing, or just do it for the sake of form, then there are serious problems.

Q: But even today why is Congress completely alienated from the backward classes? Today

when we talk of backward classes, we talk about Mulayam Singh Yadav or Laloo Prasad Yadav.

A: That is what we have to correct. After all, we are not in default on what the Congress has done for the backward classes and if in spite of that we are not getting what support we should, then there is something which needs to be looked into, which needs to be done.

Q: The Congress has not done much.

A: No, it has always done a lot for them. In the South it is the Congress which got reservations for the backward. In the North also, steps were taken. In Madhya Pradesh it was taken; in Rajasthan also. I mean it is not as if we have a blank slate so far as our efforts for the backward classes are concerned. The focus has not been made for some reason or the other.

Q: Now the BJP has said that it is going to disrupt even the parliamentary proceedings and it will conduct an all-out campaign against the Congress Government. Do you think it is time for the Government to sit down with other secular opposition parties and evolve some kind of a strategy?

A: One thing you must understand clearly. It is still not too late. I am not talking of the BJP now because I think there is something much more wider than the BJP. The BJP, VHP and RSS may be, sort of, motivating forces. There is a clearly discernible coming together of all disparate elements who want to act beyond the confines of the Constitution, the laws of the land, the propriety, everything, for the sole reason - to capture power. And that power is not going to be captured through a democratic process, let us be very clear. If through democracy, yes, if not through democracy, no, other means will be adopted. And all these symptoms, what all has been said, are a clear indication of that line of action. Now those who want to go by the Constitution, those who want to go by the laws of the land, want to protect the institutions and make this Republic viable, will have to think. This is not a question of this party or that party. They have almost ridiculed Parliament; they have a Sansad of their own. The courts, they say, they will accept the decision of the courts only when it is in their favour. They have said that nothing can deflect them from what they have decided to do. Ayodhya, okay, a stage has been reached. They say, Mathura, Varanasi or so many other places are not on their agenda yet. The emphasis is on the word "yet". So that scenario is very clear.
Now from the other side, the Congress dithers the Left front dithers the Janata Dal dithers and were not able to put ourselves together at least on this one single issue, I think the future for this country and democratic polity is very very grave.

Q: But it seems the whole thrust of the liberalisation policy or whatever it is called, the emphasis was foreign investments and loans.

A: I don't think it is proper to mix the two. Liberalisations as a way to achieve greater economic growth, we should not confuse it with what I am saying. I think that is the correct road now. If you want to itegrate with global economy, you can't do it just by sitting pretty, as they say.

You will have to take all these steps. But still it does not mean that you have to abandon the poor of this country, and even while doing this, I think it is imperative that we keep the interests of the poor people of this country very much in front of us. I see no contradiction between them. There is a lot of area in which the poor people of this country can be empowered, can be given economic status, can be given economic benefits. Yes, we will have to get out of this syndrome that somehow has gripped us that only certain people can have the benefits of this.

Q: But as of now, is the Congress organisationally geared for such a struggle?

A: Well, struggle is a struggle. If you are not equipped for a struggle and are going into the struggle, then there is only one result: you are defeated. And the defeat of the Congress party at this juncture will spell doom for the future of this country.

Q: What would you suggest in terms of organisational revival?

A: All these things must be clearly thought out and projected and the Congress put into the task of making this clear to the people who matter. I mean there should be a campaign where we go to the people and tell them, if these people get the upper hand, it is the weak and the poor who are gointg to suffer in this manner. Therefore, apart from the question of the country, in your own personal interests, the poor must come together and fight these people. You have seen in all the BJP ruled States. You have an experience of 2-1/2 years. Who were the worst sufferers? The farmer, the Harijan, the tribal, the backward and the minority. There are visible examples which can be quoted. Now they all have to be marshalled, those facts have to be marshalled. That is how the campaign will have to be launched.

BJP creating communal atmosphere

21 फरवरी 1993 को एन.के.एच. जापान के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Q: First of all I would like to know how do you assess the situation regarding the BJP rally, how do you react to the BJP's call for a rally on the 25th?

A: I think their decision to hold a rally is unmindful of the consequence that might follow and it is a political exercise totally unmindful of all the other factors involved, especially the law and order and peace of the capital. It was because of that the Government had to take every thing into consideration and take a decision to ban the rally. That is where the matter stands today.

Q: Do you think that the Government is soft against the BJP in its stand?

A: Well, there is no reason to be soft. If there is any perception like that, that will have to be removed. But I don't think government is soft.

Q: How many persons do you expect will assemble on the 25th?

A: Now it is very difficult to assess that. I don't think it will be a very large gathering. It can't be.

Q: Roughly?

A: I can't say. Speculative things are not proper.

Q: Are you a BJP rival?

A: I am not a BJP rival. I am only articulating what the Congress party has always stood for and stands for today also.

Q: Is it because of the fact that you belong to Madhya Pradesh where the Congress party failed against the BJP?

A: Well, that is not the only reason because against the BJP, the Congress party was defeated only once and that too, within 1-1/2 years we were able to correct the whole balance. In 1989, out of 40 parliament seats in Madhya Pradesh, the Congress got 12 and the BJP got 27; one went to an independent. In 1991, the Congress got 27, and the BJP got 12. So it is not because that they have a very great hold or anything like that; yes, it is true that we know their real nature very well because that is the only political party which has been fighting against the Congress, sometimes in alliance with someone, sometimes independently. So we are aware of what they are capable of doing.

Q: You are said to be very ambitious and want to be Prime Minister.

A: Well, these are things which people want to sort of bring up to dilute what really is the issue at the moment. The issue is not of somebody becoming the Prime Minister or not; the issue is whether we are serious and we can't stop this effort to undermine all the basic institutions of our democracy, whether it is the Parliament, whether it is the judiciary, whether it is the election process. Every single one of them has been vitiated by the activities of the BJP and some of their allies who are not political parties but still are helping them on, sometimes even egging them on. So that fight is the main. thing. It is immaterial who becomes, who does not become. It certainly is not something which actuates me to do what I am doing.

Q: Do you expect any communal riots in the near future?

A: We hope and pray not. But we must understand very clearly that one of the platforms on which this party depends is creating communal incidents whereby passions again are roused and then they are able to maintain that high pitch of what you will call unreasonable thoughts and unreasonable actions. That is their way of convincing people to help them. And by creating that divide, they would like to get into power. That is the real danger.

Q: What is the real problem, in these communal riots?

A: You see, in all big countries and in India this has been happening on and on, something sparks off on one incident or the other and there are some problems here and there. But there has never been a systematic attempt, except just before partition in 1945-46 which resulted in the partition of India, by Mr. Jinnah, to use the communal issue for a political end. He did the same thing: roused passions, made very incendiary speeches, provocative speeches, people became angry, rioting followed and then he said: "we can't live together, give us another country". The British thought this was a good opportunity and they divided India.

We could not also resist it beyond a certain point. Now in the present case also, the same tactics are being used and the attempt and objective is to get into power in India. Now that is something which is not desirable and that is not the process by which decisions can be made in a democracy. I could understand if there were certain issues of policy or programmes dealing with economic, social and political things, they can be debated, they can be projected and the people can decide, yes, this one is good, this one is not good, you get our support, form the government and carry out your programmes. Till now, the BJP has never projected any socioeconomic or political programme, or formulated any policy which they could say that this is a policy for the future development of the country. So in the absence of all that, still you want to get into power, then this is the only way ---- by making Hindus fight Muslims, Muslim fight Hindus and create this atmosphere where people feel, now you are the only thing that matters. The issue of a temple, or a mosque, or a church or a gurdwara becomes more prominent than the issues of employment-unemployment, economic progress, education and so many things which we have to attend to in our developing country.

Q: Regarding Ayodhya, when does the government construct the temple or the mosque?

A: Well, I can't tell you 'when' for that because we have decided on a certain procedure. And that procedure is that as soon as the Supreme Court answers the reference that has been made to it, then two trusts will be set up ---- one for the mosque and one for the temple. Those trust will then decide how they will go about it. Government itself will not be doing it directly.

Q: Because it is very difficult for the government to choose a site.

A: Well, everything will come out after this reference is answered. It is difficult, there is no doubt about it.

Q: Coming back to the BJP rally, don't you think to put a ban on a rally in a democratic republic is a kind of gain for the BJP politically?

A: Well, if you were to consider that in isolation, I would tend to agree with you, not only the BJP, no organisation of a political nature, of which in India every one has a right to do it ---- to assemble and to demonstrate ---- but there are times when you have to weigh against the overall public good. Now if you concede the right to hold a rally and that rally leads to large scale violence and arson in Delhi, today these very people who are saying that don't disallow the rally, they will start saying, "Why did you allow them when the whole city is burning?" So then the government has to balance these two things and come to a decision and act. This is the situation here. I am quite in agreement that normally no one should be prevented, much less a political party; no one, no citizen should be prevented from holding a rally, meeting or demonstration. But if that ultimately has to be weighed against the larger public interest, then after all any government that is there has to take a decision.

Q: In this case, during the course of your conversation you have said that there may be some gathering. In that case, how can the Government be sure there won't be any kind of law and

order situation.

A: No, that will be controlled. We have to control it. Whether there are ten people or ten thousand does not make any difference. They should not be allowed to do anything which is not good. But when that crowd comes to, say, five lakhs, then it becomes all the more difficult. Thank you very much.

Election laws were violated by BJP

एक मार्च 1993 न्यूजवीक के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: You have been a champion of secularism within the Congress party. Where does the Congress place secularism today?

A: I think the Congress party cannot but be committed to secularism because apart from the political realities, it has a great historical commitment which extends to nearly eight decades. As soon as the freedom movement became really intense after the 1930s or after 1925, for that freedom movement to become both credible and effective, the Congress party had to become an instrument of Indians as such for realising their urge for liberty. It could not have remained parochial or representing one section or half a section or half the country. So in that effort all these principles became living principles and though it is a fact that the colonial power tried its utmost to divide the freedom movement, and ultimately did success in dividing the country, but for the congress it remained an artical of faith. That is why we were able to win freedom under Gandhiji's leadership and Gandhiji represented the quintessential of that belief. That is one thing which could not be defeated even after his assassination. Rather it got santified after his assassination. So for the party there is no other anchor. The fact does remain however that sometimes here and there, some wrong signals did go .... Yes, I am talking since Independence. And those wrong signals caused a great deal of harm to the Congress party, and I think to the country also. So it is in this background that we have to think about what the Congress has to do and to make sure that those wrong signals do not go out again. For example, in 1989, when this Ayodhya issue had come to a boil, for some reason it was thought fit to have the foundation of the temple laid in Ayodhya even without any resolution of the dispute. That sent the wrong singals also. And it was a measure of the honesty of our late Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi, that after we lost in the 1989 elections, he publicly admitted that, that was a wrong signal to go and that affected the support base of the Congress party.

Q: You said that the anchor of the party was the principle of secularism. Does that principle hold an important position even now?

A: You see, this is not a more ideological stance. This springs from the pluralistic society of India. And a pluralistic and humanistic society like India cannot sustain itself except on the

anchor of secularism. That is why it is so vital to us. Suppose we did't have this pluralistic structure, then somebody have said, "All right, other factors become more important they should be at the centre of things". But we just cannot afford to do that. And there are so many religions so many faiths, so many languages, every thing. So it is only through that, that it can be sustained.

Q: You have made a distinction in that it is not a question of supporting secularism but it is an ideological principle. If this is important right now, then what has happened to politics. Politics has overwhelmed the principle all the way.

A: You see, this situation has developed because a certain political party, the BJP, of course with the backing of the RSS, have calculated that this religious factor can be blown up into a potent instrument to influence the minds of the majority of the people who are Hindus. I mean the itty gritty of this is this. And they think only by making such symbols like the temple at Ayodhya, or Lord Rama and may be tomorrow Lord Kishna at Mathura and the Shiva temple in Varanasi, these are their signposts to victory and they have gone about it meticulously, with out any scruples, trascending every single institution of the republic. For the Parliament of India which symoblises the power of the country, they have denigrated it by creating a 'धर्म संसद' the Holy Parliament as they call it. Now they would like this Holy Parliament of which members are nominated by them out of some of the Sadhus and Sants, should dictate the agenda for the nation. It is not in their interest that the Parliament elected on adult suffrage should be the deciding factor in determining national policies, programme. Then the electoral process which is the basis of a democratic system, they have totally vitiated it by using those methods which are specifically banned by the law as illegal. The Indian electoral law is very categorical that no one shall use any religious symbol or any religious issue to canvass for support politically. They have defied that; they have gone ahead with it. Therefore, the electoral process also lies debased.

Then the third important pillar of a democratic system is the judiciary. Now what they have done to the judicial system is one of the most pathetic and, I would say, the most lamentable exercises that we have seen in India after Independence. The basic theme that they have propounded is, one, the courts cannot decide on issues which we consider important. We will accept a decision only if it is in our favour; if it is not in our favour, we will defy it. They have presented assurances, affidavits, averments not only in some municipal court, but in the highest court of the country ---- the Supreme Court ---- and each one of those affidavits has proved to be false because it is not worth the paper on which they were sworn. So that takes care of the juidicial system.

And the fourth pillar, as it is said, is an alive and very alert media. They have taken good care of the media in Ayodhya, thereby tried to send the message that if you want to ask inconvenient questions or record something which does not suit our convenience, then you better be prepared for strong arm methods.

Q: Can you describe how you will marginalise the BJP?

A: We have first to have a massive programme of public education on this issue, because this much I can tell you it is not on the basis of any poll or any kind of special report, as a Hindu myself, I can say without any hesitation that bascially a Hindu is not communal, is not sectarian, because our religion itself is so catholic, so open and at the same time so individualistic.

Secondly, what the political fall out of such a sectarian approach can be to the development of this country is a part of the political eduction which the Congress party will have to do.

Then there is one other aspect which I believe to be very relevant: That ultimately this party (BJP) is a conglomeration of vested interests. If those vested interests are fought in small and big ways, this party itself will be exposed that they have a feet of clay. That is where our political attitude has to be refined.

Q: What is the basis of your saying that it is a party of vested interests?

A: You see, it is basically a party of traders. Now trading itself is not bad; it is very much a legitimate activity in which anyone in India can engage, but when it starts trading on the general economic interests of the people, which can easily be identified, and if you put up a fight at that stage, then it becomes something in which these people will be shown to be fighting a rearguard action for their basic economic interests and not for their political interests. There is not one, but so many avenues where this can be done.

Then the position in India today is that we have a very large number of people who are living below the poverty line. It has come down a lot in the last 15/20 years, but they are still, I may be slightly wrong on the exact figure, about 25% who still live below the poverty line. That is a rough estimate I am giving. Now for them, the harsh realities of life demand quite a different agenda of action, both political and economic, in which the BJP is not interested. It has never cared to give a moments thought to how that can be done. If you look at the manifesto of the BJP in the last 15 year at least, I have not been able to identify one policy statement, one programme which is oriented towards taking care of these people. If there a reference is given, it is made in the most general terms so that they can feel there is something, but no specifics are involved. Whereas the Congress party has been able to project what it wants to do for those sections of the people and that is how by implementing many of the programmes under Mrs. Gandhi, Rajivji, beginning with Pt. Jawaharlal Nehru, we have been able to bring down the level of those who live below the poverty line substantially. Now that has to be stepped up much more, not only because it is desirable on its own, but also because we have decided to embark on a liberlisation programme, or restructuring of our economy, interation with the global economy. All these decisions are correct decisions and they have to be implemented with full vigour.

It is necessary therefore that while we pursue this liberalisation programme, we take much

more care of the poorer sections of the society so that at no point of time does a situation arise where the interests of these people conflict with the basic approaches in the liberalisation programme.

Q: And in this, non-governmental organisations like the peace committees that have come up, can they play their role?

A: They can play a very decisive role. One of the very very heartening features I have witnessed both in Bombay and other areas which were affected is that basically the human face on these occasions was shown by these non-governmental organisations.

Q: Exactly. At least in Bombay and in Calcutta and even in Delhi it is they who went to the areas where there was trouble. I did not see any Congressman. I was out on the streets. The secular movements, the peace committees.

A: There are some other social organisations, social activists.

Q: Voluntary agencies. Now that is one area in which I did not see that much of coordination. Are you setting up some monitoring cell or somebody in the party who would like to coordinate these efforts. What I am trying to say is, still they have a lackadaisical approach, there is no response from the Congress party of a real threat, the responses are still slow, defensive and lacking in vigour that you are saying that we will have. Is there any reason behind that? Is the party not entirely united in playing this kind of a secular role?

A: No, I don't think there is any inhibition on the part of the party. If for some reason, anybody sees that we are not progressing as vigorously as we should, then it might be the failure of the local party organisation. But I don't think collectively the Congress party has any inhibitions on that.

Q: No party wants a vision somewhere that nothing will stand in the way including holding to power.

A: Well, some people may doubt it, but I don't I think it would be a very sad day for this country if that were to happen because no political party can become synonymous with any country. It is not the correct way to look at it democratically. At some moments of history what happens to a political party has a far-reaching effect on the country also. In India this is the situation and if for any reason Congress were to become what you have just expressed, I don't know what kind of repercussion there will be in the country.

Q: In a philosophical way you have described that you are also a Hindu, there is freedom to practise religion and the catholic nature of Hindu religion. Is that going to produce some change according to circumstances? Why has the BJP been able to grab communalism and other things in its support?

A: You see, all aberrations have a life span and therefore all that you see now is the result of that aberration which the BJP has very assiduously built up. An aberration is something which happens on its own. But when an aberration is planned for and projected, this is what has happened. And that is why I am saying this will remain an aberration. This cannot become

the real stance either of the Hindus collectively or the nation collectively. Because unless you have that kind of clearcut hope, how will you function? Then you can of course say, all right that is the end of it. I don't think that is the end of it.

Q: But why do you think the popular support 1st electoral support of Hindu revivalist groups and BJP has grown over the last three years?

A: Well, that revivalist spirit is certainly become much more widespread and that is precisely what people will have to be educated about, that, that revivalism in the Hindu should not mean sectarianism. I can become a much more active participant of the Hindu religion, but that does not mean that I have to stab my fellow citizen for becoming an active Hindu.

Q: I was at Bombay during riots. People were saying that Hindu groups like the RSS are taking a cue from the Islamic States like the Saudi Arabia and Iran. If they could be Muslims States, why can't they have a Hindu State. Do you think that kind of logic is correct? And what is their appeal and who would respond to a logic like that?

A: Well, that is the kind of logic they have been projecting for a long time and the fact remains that a majority of this country had not responded to it and they will not respond to it in the manner that it is understood democratically. But suppose they are able to gather 5000 people in one place and say, "We want this", that is possible. They can collect 5000 or 10,000 people at a given point of time but that it reflects the national mood on that, is not going to happen.

अयोध्या में मंदिर निर्माण के बारे मे भ्रम की स्थिति

11 मार्च 1993 जी.टी.वी. के साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: How do you assess the political mood prevailling in the country today as compare to what was ofter December 6?

Shri A.S.: -Well, I think it is little heartening that events that laid up to the incident on Dec. 6. There is lot of unrest and turmoil as everyone is aware and immediately after that a very broad section of the people in this country felt and realized that perhaps this was something, which was very harmful to a country. And gradually people started thinking that we should see that such a thing does not happen again, number one and the communal derive that sort to be created inspite of the very tragic incidence in many parts of the country. The general feeling is that we have to save the country from this.

Q: How do you think, how effective had been so far?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जो अलग अलग कदम उठाए, वह कदम इसी नजरिए से उठाए गए कि हमें इन सब चीजों पर बंदिश लगानी है। जिनकी की वजह से इस प्रकार की भावनाएँ भड़कती है और उन लोगों पर भी बंदिश लगानी है, जो देश के हित को नजरअंदाज करके और इस तरह की बातों मे संलग्न

होते है और इन कामों को बढ़ावा देते हैं। इसी के साथ 25 फरवरी को यहाँ रैली का आयोजन था। वह शुद्ध राजनीतिक कदम था, जिसमें भा.ज.पा. इस बात का फायदा उठाना चाहती थी कि जो कुछ साम्प्रदायिक भावनाएँ उभरी हैं, उनको राजनीतिक रूप से प्रोजेक्ट किया जा सके। इसीलिए यहाँ की रैली को रोकने का फैसला हुआ और मैं समझता हूँ दिल्ली में भी और सारे देश में भी इससे अच्छा संदेश लोगों को मिल गया।

प्रश्न : आपने कम्युनल फोर्सेज के बारे में बात की। इनसे लड़ाई की जब बात आती है तो एक तो जो गवर्नमेंट स्टेज पर जो स्टेप लिए जाते हैं एक जो आपने राजनीतिक कम्युनलिज्म की बात की। उस सिलसिले में आप क्या नहीं समझते कि एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी काँग्रेस पार्टी पर है कि जो कम्युनल पोलिटिकल पार्टियाँ हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई करेगी, उस सिलसिले में काँग्रेस ने जो अब तक किया है उसमें आपका क्या असेसमेंट है?

श्री अर्जुनसिंह: इसमें कोई शक नहीं है कि पोलिटिकल जो भी कदम उठाने हैं, उसमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी काँग्रेस पार्टी पर है और इसीलिए 2-3 बैठकें काँग्रेस वर्किंग कमेटी की हुई और उसमें कुछ एक्शन प्लान भी बनाए गए हैं उन पर अमल भी शुरू हुआ है। और यह कोई एक या दो दिन पूर्व की बात है भी नहीं। यह तो एक लंबा कम्पेन अभियान चलाना पड़ेगा, जिसमें लोगों के मन में जो भ्रान्तियाँ पैदा कर दी गई हैं जो भ्रम पैदा कर दिए गए हैं, उनको दूर करने की कोशिश करनी होगी। सबसे बड़ा भ्रम तो यह पैदा कर दिया गया है कि भगवान राम का मंदिर अयोध्या में बनाने के लिए भा.ज.पा. ही केवल फिकरमन्द है और कोशिश में लगी है और बाकी सब लोग इसके खिलाफ हैं, जबकि हकीकत यह है कि वहाँ पर मंदिर बनाने के खिलाफ कोई नहीं है, न पहले था और न आज है लेकिन यह सब चाहते हैं कि लड़ाई झगड़े से यह काम नहीं होना चाहिए। इनकी मंशा यह थी कि जब तक लड़ाई झगड़ा नहीं होता तब तक उसका यह राजनीतिक फायदा कैसे उठाएँगे? इसलिए इनका प्लान वह था और इसी प्लान के तहत ही इस बाबरी मस्जिद को गिराया गया। अब लोगों के बीच में इस बात को ले जाना जरूरी है कि इन दोनों चीजों को अलग से देखना चाहिए। मंदिर बनाने का काम धार्मिक लोगों का है, मुरली मनोहर जोशी जी, आडवाणी जी ये राजनीतिक पार्टी के प्रमुख हैं, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरूद्वारा ये राजनीतिक नेता नहीं बनाते हैं, ये काम तो अलग-अलग धर्म के लोग ही करते हैं, जिनका वह काम है और यह बात अभी-अभी काफी लोगों के समझ में आने लगी है कि आखिर क्या बात है कि हर तीसरे साल यह बात शुरू हो जाती है और अंत में 6-7 महीने के लिए सब चुप हो जाते हैं।

अगर इन सबके बारे में लोगों की यही भावना रहेगी कि हमारा भारतवर्ष में यह स्थान है, हमें कोई अड़चन नहीं है, हम अपने धर्म की बात भी कर रहे हैं और देश की भलाई के काम में भी जुट सकते हैं और तभी हम देश की अखण्डता को कायम रख सकते हैं। वरना अगर इन मामलों में मतभेद उस सीमा तक उठाकर ले जाए जाएँगे जैसा कि अभी यह हुआ है और जैसी की कोशिश हो रही है तो दुनिया के और हिस्सों में जो कुछ हो रहा है उसकी पुनरावृत्ति भारत में होने में कोई दिक्कत नहीं होगी और उसके कितने बुरे परिणाम होंगे ये आप दुनिया के इन स्थानों पर होने वाली घटनाओं पर नजर उठाकर देखें तो आपको साफ जाहिर होगा।

Q: Mr. Singh, You are member of the Congress Working Committe you just now talked about action plan. But are you satisfied with the pace of implementation of this action plan? Because there are quite a number of your Congress leaders from various states they have been saying that they are not happy?

Shri A.S.: Well, I think this plan basically is on correct lines but certainly it has to be implemented with a little more attention to detail and with greater involvement of Congress workers of the ground level also and I think that is exactly what we are trying to do.

प्रश्न : जैसे कि आपने बात की काँग्रेस पार्टी के कुछ लोगों की उसमें यह शिकायतें हैं कि ऊपर की जो लीडरशिप है, हाईकमाँड है, वहाँ थोड़ा-सा indecision है या sincerity नहीं है Implementation के बारे में आप क्या कहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जो भी थोड़ी बहुत बात थी वह अब सबके समझ में आ गई है कि कोई दूसरा विकल्प हिन्दुस्तान के लिए नहीं है सिवाय इसके कि हम मिलजुलकर रहें। मैं काँग्रेस पार्टी की ही बात कर रहा हूँ और यह अहसास काँग्रेस पार्टी में पूरा है तो अगर कहीं कोई थोड़ी सी ढिलाई रही भी होगी अब तो बहरहाल उसके बारे में किसी को शक नहीं होना चाहिए। लेकिन यह निश्चित है कि अगर हम इस प्लान को मुस्तैदी से तेजी से और सबको शामिल करके इस पर अमल करेंगे तो हमें परिणाम मिल सकते हैं और इस पर हर वक्त नजर रखनें की जरूरत है।

प्रश्न : अभी कुछ दिन पहले आपने एक चिट्ठी लिखी थी, जिससे एक माँग या सजेशन था कि जो कम्युनल पार्टी होती हैं, उनको इलेक्शन प्रोसेस में भाग लेने से रोका जाए। ऐसा कुछ बिल लाना चाहिए जिसमें उनको चुनाव ही न लड़ने दिया जाए। उस संबंध में आप बताएँ क्योंकि आप सरकार में हैं क्या कुछ प्रोसेस के बारे में बता सकते है?

श्री अर्जुनसिंह: इस संबंध में तो आज ही पार्लियामेंट में प्रेसिडेंट के एड्रेस पर जवाब देते हुए प्रधान मंत्री ने स्वयं कहा है। आज की सरकार का यह पक्का इरादा है कि हम इस प्रकार का कानून सबकी सलाह मशविरे के बाद लाएँगे जिसमें धर्म को राजनीतिक लाभ लेने के लिए इस्तेमाल न किया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि अभी तक जो कानून इस दिशा में है वे कुछ ही हैं, कानून अभी पर्याप्त नहीं है। इसको भी देखना पड़ेगा कि कैसे वह कानून इस तरह से बनाए जा सके जिससे सही ढंग से हम इस पर रोक को लगा सकें यह तो आज ही उन्होंने announce किया है।

प्रश्न : अभी काँग्रेस का सूरजकुण्ड में ए.आई.सी.सी. का जो सेशन होने जा रहा है, उस सेशन से बहुत से कार्यकर्ताओं और लोगों को बड़ी उम्मीदें, आशाएँ हैं लेकिन वहीं पर साथ ही साथ में कुछ और भी ऐसे मुद्दे चल रहे हैं जैसे कि एक मेमोरेंडम सबमिट किया गया है कि पार्टी मे "एक व्यक्ति, एक पद" हर स्तर पर लागू किया जाना चाहिए। आपकी अपनी राय इस बारे में क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस मामले में तो मैं अपनी राय साफ़ तौर से जाहिर कर चुका हूँ और उसको आपके सामने दोहराने में भी मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है इसमें सब सहमत हैं कि "एक व्यक्ति, एक पद" पार्टी के हर लेवल पर लागू होना चाहिए। जहाँ तक आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का सवाल है प्रधान मंत्री के पद का सवाल है। यह पहले हुआ था कि हम अभी इस प्रिंसिपल को लागू न करें। यह फैसला एक साल पहले लागू हुआ था। प्रधान मंत्री काँग्रेस के अध्यक्ष जब चुने गए उस वक्त

उन्होंने यह मंशा जाहिर की थी कि वे भी इस प्रिंसिपल को लागू करेंगे। इसलिए मेरी इस बारे में यह साफ़ राय है कि हमें उनके ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाहिए, इसके लिए, हमें उनकी ही मंशा पर, विवेक पर यह छोड़ देना चाहिए कि वे कब और कैसे इस पर अमल करना चाहते हैं। यह मेरी बात है।

प्रश्न : जो डिमांड आई है जो सजेशन आया है उस पर ए.आई.सी.सी. के मेम्बर्स ने ही साइन किया है? In light of that, what do you have to say?

Shri A.S.: Well, I don't have to say anything. Some members think that they should bring that so what can I say?

Q: But you consider, you know anti party activity or disciplinary action should be taken?

Shri A.S.: I don't think moving a resolution in the A.I.C.C. is a anti party activity....

Q: But it is giving for the party president?

Shri A.S.: Whatever it is, I mean the A.I.C.C. ultimately decides this is quite a different matter But any member has the right to demand something through a resolution whatever he wants to suggest that can't be taken as an anti-party line?

प्रश्न : पार्टी के डिसिप्लिन की जो बात होती है इसके ऊपर हमेशा से ही डिबेट चली आ रही है कि हमेशा जो पावर में लोग होते हैं वह उनके खिलाफ कोई बोलता है तो उनके खिलाफ disciplinary action लिया जाएगा तो क्या जिस पार्टी का democracy में interest हैं आपका क्या suggestion होगा कि किस तरीके से यह balance, maintain किया जाए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, Discipline किसी भी पार्टी के लिए और उससे भी ऊपर जाइए तो किसी भी देश के लिए लेकिन देश को भी अलग रखें तो पार्टी का सवाल है यह निहायत जरूरी है। लेकिन discipline को कायम रखने के लिए और लागू करने के लिए हम सबको दिमाग भी साफ रखने चाहिए। यदि कोई फ़ैसला काँग्रेस पार्टी का है किसी सेशन में तय हुआ है या किसी वर्किंग कमेटी ने कोई फ़ैसला किसी मामले पर लिया है, यह राजनीतिक हो, सामाजिक हो या आर्थिक हो या जो भी हो और पार्टी की मोहर उसमें लग गई है जिस लेवल पर भी लगती है तो ऐसी निश्चित नीति और कार्यक्रम के खिलाफ़ यदि कोई काँग्रेस का व्यक्ति बात करता है या प्रचार करता है निश्चित रूप से वह discipline को तोड़ता है और उसके खिलाफ disciplinary action होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि किसी मुद्दे पर विचारों में मतभेद हैं तो काँग्रेस के आंतरिक मामलों के बारे में सार्वजनिक रूप से बहस नहीं छेड़ना चाहिए। पार्टी का फोरम है उसमें अपनी बात को कहिए जैसे कि अभी आपने ए.आई.सी.सी. का पूछा। कभी ए.आई.सी.सी. में कोई कुछ भी प्रस्ताव रखें वह कभी भी indisciplined नहीं माना जा सकता।

तीसरा यह है कि डेमोक्रेटिक सिस्टम में मतभेद जो है, वह अपने आप में एक महत्व की चीज है और dissent को हम एकदम से indiscipline करार दे देंगे तो यह democratic function में नहीं हो सकता।

प्रश्न : चार राज्यों में जहाँ की भा.ज.पा. की सरकार डिसमिस हुई और आप अभी कह रहे थे जो communal frenzy, it is dieing down in that context do you see any possibility of election?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इलेक्शन तो होगा ही क्योंकि जो भी constitutional प्रावधान है उसके हिसाब से जो भी है चुनाव तो होंगे ही।

प्रश्न : कई लोग कह रहे हैं कि हालात ठीक नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, क्या है नहीं, लेकिन एक सीमा तो है।

Q: Are you confident of defeating the B.J.P. in your home state?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे ख्याल में तो मध्यप्रदेश में हम लोग बहुत अच्छी स्थिति में हैं।

Policy implementation is not charted

23 मार्च 1993 आई विटनेस के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Q: Mr. Arjun Singh, what does being in politics mean to you?

A: If you start looking at it from this angle that where I am today, you will not get the right answer to this. The right answer will come from why I came into politics and what at that time I felt getting into politics would be. Whether I was right in thinking about it in that way then, or I have been proved wrong by now, or proved right by now is something for someone else to judge. Myself I can only assess that, yes, I came into politics rather indirectly in the sense I had great interest in the affairs which ultimately shaped politics but to become a politician was not very much in my mind. This goes back to 1947, or 1946 to be exact. When the partition of India was almost on the anvil and there was a lot of civil commotion in 1946, Mr. Jinnah's direct action had already taken place leading to big massacre in Calcutta -- I mean all those events that ultimately shaped the partition of India---- I was a sixteen years old student then. Naturally all these things affected us, if not directly then at least communication was not as good as it is today, one thing I remember distinctly is that in 1942 when I was only 12 years old, one day I was tuning the radio to get some news of the war front which used to come at that time. Suddenly I heard a very ringing voice coming on the radio. I immediately did not know who was speaking, but the broadcast was interrupted and the announcer said: You have just been hearing and you will again start hearing Netaji Subash Chandra Bose talking to the Indians in Rangoon. That was after the fall of Rangoon and Japanese having occupied it and the Indian National Army being there. Then the broadcast started again. I had read about Netaji Subhash Chandra Bose. I mean I did not know him and I did not know the details of his exploits that he went through. That we came to know much later. But it was a very arresting and dominating voice that was coming over the radio. And the final sentence that he used -- -- that was, in Hindi ---- was: "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" Actually it is these words

which stirred something in my mind that what do you exchange blood for? Blood means your life. There must be something so important and so compelling which inspires people to give life for. And this is what this gentleman who is speaking on the radio is saying. So I had got the place and where I could tune in and subsequently I made it a point to hear that broadcast. I did not know that this was prohibited under the law. I did not even know it. But that stirred my first feelings if I may say so, thinking what liberty is and what one has to pay for it. Of course, I must confess that I could not get into the freedom movement since I was coming from a premier jagirdar family of that area and they were not inclined that way and in a princely State all the same there is a lot of .... though it is a fact that in that State my father was responsible for establishing the Congress party with some poor people. But to go out and actually have a compaign and join the movement as such ---- that was far away from the mind of anybody in the family. But that first exposure gradually built into me a very very strong emotion. The surroundings were totally antagonistic to this natural expression of this emotion, but there was that mental conflict. That gave rise to interest as to what all this is about and I had friends who were actually taking part in the 1942 movement who got jailed. All that happened; naturally one thing led to another that there is something that so many of my friends are actually involved in it.

Q: Did you feel left out?

A: I did feel a little left out; there is no doubt about it. I could not break out of the parental leash, if I may say so. Though it cost me a little, but anyway that is beside the point. Then after that came the 1946 and all this trouble started. People don't remember now but at that time the RSS was at its peak because the atmosphere was very congenial to their line of thinking, just as they feel they are now. So to combat this, the Congress party though I was not a member of the Congress party, it formed a National Volunteer Corps. In my area also some people formed it. I also joined it. So that was my first contact with activisim and it was directed against this communal approach of RSS. BJP was nowhere in existence then. That was the foundation on which my thoughts were rooted as to what is right and what is wrong. I can say with a little sense of satisfaction that from 1946 to 1993, on that I have not deviated.

Q: How do you respond to, perhaps, this cynical observations of the people who claim that even in the HRD Ministry, you are propagating your fight against the BJP? Is it a fact?

A: I am not propagating a fight against the BJP but I am certainly trying to see that since thoughts are the most powerful instrument and HRD Ministry has something to do with ideas and their projection, I am certainly doing it and I am not at all ashamed of it, that we should try and project the real, credible, secular credentials of this country. If you don't believe they are real, then of course you go on a different track. I believe they are real and they are very necessary; so I am definitely projecting them. But that is not a fight against a party. If some party or individual is hurt, that is his worry?

Q: Did you have any illusions when you joined the Congress? And do you still have them?

A: Well, I think a human being cannot but have illusions. Just as I was telling you, after this I had the good fortune my father was a member of the Constituent Assembly, so when India achieved freedom, on the midnight of 14th August, I was present in the Constituent Assembly as a visitor and I think it was one of the most moving moments of my life when you witness the birth of a nation. Any birth is a miracle, but the birth of a nation is a much greater miracle. So all those things went on, sort of, congealing my thoughts and my emotions and my attitudes about life in general and one's place in life.

The first political party I was attrated to was the Socialist party and I joined the Socialist party in 1951. Then at that time Acharya Narendra Dev was the Head of that party. I was in that party for five-six years right upto 1955-56 and once I had the occasion to attend the Socialist Asian Conference at Bombay where all these big leaders of Burma and all these neighbouring countries had come.

So naturally you can understand the contradiction in terms, coming from the premier feudal family of the area and going into a party of which people like Acharyaji and Lohiaji and these were the leading lights. Though there was some contradiction in my immediate surroundings, yet in my thoughts there was no contradiction.

After that, in between a certain personal family matter intervened. There was a complaint here in Delhi when my father was a Minister in the Vindhya Pradesh Government about certain episode that he had taken a bribe. He was arrested here. I was a student at Allahabad. I came here. Naturally when any parent gets involved in such a thing, you have deep emotions about it. But anyway what had happened had happened and in between there was an election ---- the first General Election in 1952, in which, since my father was a Congressman, he was given the ticket to contest from a constituency, that is my home constituency. But eventually just on the eve of the election, that ticket was withdrawn on the ground that he was involved in this case. Being involved in this case was not a new factor. The case had taken place in 1948 and 1948 to 1952 is four years. But anyway, he went through the election none the less. I campaigned for him. That was my first public exposure to what elections are about and what it means when you ask people to vote and what are the currents and cross currents of socio and economic and political life in the villages and all that.

Q: Was it difficult so campaign for him at that particular moment when this happened?

A: Obviously it was difficult, but I was compaigning because I was his son. And he lost and losing an election was quite something. Anyway that is what happened.

Then in 1956, I had some differences with the Socialist party people and I resigned. So the Congress people thought that now that I was no longer in the Socialist party, I was available for the 1956 election as a candidate. You must be knowing Dr. Sushila Nayyar. She is still alive. She was the observer for that area from the Congress party. She came there, called for me and offered me a Congress ticket form my home constituency where my father had lost. I said:

"I am very grateful that you have made this offer and all my thoughts and all my beliefs are with the Congress party and Pt. Jawharlal Nehru, but this election I cannot fight on the Congress ticket." And I told her the backgroud that his very constituency my father lost and if I switch on to a party and then try to stand, I would never be able to know my real position. So I said that subsequently I might think of becoming part of the Congress but this election I would have to fight as an independent. And then I fought the election as an independent in 1957. The Congress lost its deposit there.

Q: And you won the election?

A: Yes, I won the election.

Q: Are you proud of that moment?

A: I am not proud but I do feel that, that put in a sense of confidence in me that even as a person, the people whom I want to serve, accept me as their represenative.

Q: They did not see it as your distancing yourself from your father's role. It could have been interpreted that way.

A: It could have been and some people perhaps did, but my father was all with me. So it is not what others thought, but what he thought was more important. And understandably he had a very deep, sort of, feeling that all this had happened to him. Who would not have that feeling? But he never stood in the way for that.

Q: Was it a disadvantage to you at that point of time?

A: At that point of time, yes, because I was fighting a battle as an independent when you are going through the phase of elections in India where it is said it was a lamp post election, where even a lamp post with a Congress symbol won. So naturally there was a lot of disadvantage. But I do not regret any single moment of what I did at that time because that actually gave me two insights: one, of the real problems of the people. You see theoretically you may be convinced with ideology or political thought, but when that is tested on the ground with the realities, then the moles come up, the clear lines come up and you know what it is. Every one campaigns only for about 20 days in an election. I campaigned for nearly four months. And there was hardly a village in my constituency which I did not visit, spending nights there sitting around the fire with people talking about every thing. That is what I imbibed in that election. And I can say that, that gave me an opportunity to what you may call come to an understanding with the real ethos of the common man who may hold somebody in esteem publicly but need not have the same feelings privately. But when you sit around the fire with ten people in their home and talk late into the night, then there is no pretence. Things come naturally. So that is where I got the lesson that realities in our country are far removed from the perceptions at the capital of the State or the country and under what great burdens and handicaps people live there, victims of age-old prejudices and also of present-day prejudices, and I saw that everything else will become secondary. Whatever is possible, you must first try to fight these prejudices.

Q: What are the modern-day prejudices?

A: For example, untouchability is now an old prejudice. Modern-day prejudices are that you speak in the name of some people that you are trying to do this, ultimately that is not done, only the image of a benefactor emerges, by that image of a benefactor you make political capital. That is what I mean in very simple terms.

So when I came to the Assembly, I was the youngest member of the Assembly at that time in Madhya Pradesh and for about 1-1/2 to 2 years approximately, in my first stint they elected me as the leader of the Independent group. Twenty independents had been elected to the Assembly. So I got my education in what it means to be a leader of a group also. But ultimately my heart and mind and total commitment were with Pt. Jawaharlal Nehru. I wrote a letter to him in March 1960, a rather longish letter spelling out all my feeling and everything. Within a week, I got a reply from him and he asked me to come and see him in Delhi. So I came here alongwith my wife. We had about 20 minutes audience with him. Getting 20 minutes wih Panditji in 1960, I was in the clouds only by that. Of course, what he had to say was very simple and very candid. He never asked me to join the Congress party. He only said that young people with a little sense of commitment who want to do something should work together for the real things that we are trying to do in the country, which was a sufficient hint from him. After that I was enrolled as a member of the Congress party. Dr. Kailash Nath Katju was the then Chief Minister of my State. And since 1960 I have been where I am.

Q: Looking back to the last so many years, what has gone wrong with the Indian politics?

A: I don't think anything has gone wrong with the Indian politics and it will be very presuptuous of me to say anything in this vein because I feel that I am basically a common worker and if something has gone wrong, then all of us are equally responsible for it. It is no use saying that this has gone wrong because of so and so. What I think we could have done and perhaps did not do ---- I could put it this way ---- is, you see whenever any policy or programme was charted or enunciated, the implementation of that programme and policy was not that carefully charted as the policy itself. And time and again when this went on happening, a certain sense of distrust developed amongst those for whom all this was meant. And it is from the ground level that cynicism was born. I don't say that this applied to every thing, but in many things it did apply and once people feel that what is being said is not being done, then a hiatus develops. In many cases, we have been able to take care of that hiatus; in many cases perhaps we have not.

Q: Do you think that is what the Congress is suffering from at the moment ---- lack of confidence on the part of the people?

A: Well, I think it is not only the Congress. It will be very wrong to suggest that only Congress went throught this and no others. Perhaps the others went through it more acutely, not being aware. For example, many parties who were in the opposition, for them opposition itself became an obsession leading to blind anti-Congressism and committing themselves to

a plank or a plan of action which had the single point objective of somehow destroying the Congress party, or unseating it from power. Well, in a democratic set-up, unseating a government or a party in power is legitimate exercise of democracy. But when you are not prepared to think of the means that you are going to adopt for it and not prepared to think of the ideological liberties you are going to take for that, then it leads to something which is totally contrary to even their hope. Now take the present instance. The ideological stand of the RSS, Jana Sangh, BJP ---- the whole combine ---- was never in doubt. Everyone knew about it. Why did the opposition parties have no hesitation to giving respectability to these thoughts, to these ideologies when it suited them. The BJP would not be what it is today but for the 1967 SVD governments, which was the first stage when the Jana Sangh became partners in the Governments in the North, Then in 1977 when they were a component of the Janta Party and many of the State Governments were actually BJP governments, only in name the Janata Party's label was there, then again in 1989. I do not want to take any names, but the political parties that allowed this to happen today find themselves in a corner and now seem to be very worried about the march of the communal forces. That is the result of a blind attitude in political thinking and action.

Q: Don't you think Congress has also been in some way responsible for this by taking a soft approach to the BJP?

A: I am not trying to compare what the Congress did. I am only taking the point as to how political activity beyond any other cosideration itself leads one to this. I am not denying that sometimes even the Congress may have done it. But at least there is no tangible thing to say. But here are people who shared power and it is they who lent respectability to this. Now I am very happy that today they realise that they are a real danger to the country and they are out to fight them. That is all right I don't doubt their bonafides at this moment. But the process also cannot be forgotten.

Q: Tell me, you are known as a great benefactor of the Muslims and the weaker sections of the society. But apart from that, what else is important to be successful and to bring meaning to political life?

A: I literally hate the word "benefactor". I just mentioned it in a very different context. One of the major, what you may call, perversions of political thinking is that politicians take themselves to be benefactors of sombody. The maximum that we can think of ourselves is whether we are projecting or helping a cause in going ahead. And that cause has torelate in India, if politics has to have any meaning for public good, to the cause of the weaker sections, minorities and tribes and harijans. This is not a cliche; it is a reality. Suppose the minorities, the harijans, the tribals, the backward classes, the weaker sections get totally irrelated from the Indian State, can you imagine the consequences of that? The Indian State will cease to exist. Because where is the base? After all, all these people put together constitute 80% of the population of India. Now if they were to suffer under a feeling of alienation and were to ultimately doubt the

very premises that the political parties are putting across for their benefit and would come to the conclusion that these peoploe are posing to be our benefactors and want our support only in lieu of that, I think there will be real destabilisation in this country. So the Congress party's commitment to this and my own commitment is not born out of only political expediency; it is born out of a reality which we cannot ignore if we want to keep the Indian polity together, and keeping them together and then trying to go ahead, you have to of necessity look for their interests first, whether it is an economic programme, whether it is a political programme. And this is not a question of trying to placate somebody or trying to do, what they call nowadays a lot, appeasement. It is not question of appeasemet. Many people say that you are appeasing the Muslims. We are not appeasing the Muslims. We understand and accept the reality of India. Muslims are a certain section of the population in the country who have as legitimate demand on this country's resources and everything as anybody else, and for them to have a place under the sun is as important as it is for a Hindu, or a Christian, or a Buddhist or a Parsee, whoever it may be. And this is actually the concept of Indian Republic. If you want to pick all these part and divide them into separate sections, you are free to do it, but then the Indian polity will not remain.

Q: I have discovered a book in your library by a chap called Eric John and it is called "Games people play". How closely have you followed its assumptions in your own life?

A: Well, I read it long time ago. So I do not remember what actually it contains. If you could just remind me of one ....

Q: It is about transaction analysis and iteraction between people. There is parent-child relationship, adul-adult relationship and child-parent relationship.

A: You see the title is very evocative. Perhaps I bought the book only by the title. I have read it. Now I recollect. Well, "games" is not perhaps the correct way to describe it. It is a book about social, political and personal relationships and how they transform themselves in not only your personal life but how they, sort of, project themselves on your activities in the social field or whether it is the political field. I think that is a basic understaning of this interaciton and inter-relationship and the effect one has on the other and does not have. I think it is very crucial to development of any kind of personality. Some people do not understand it correctly and go on a tangent, as many of us can go on a tangent.

Q: You are known as a very astute politician. What did you learn from politics?

A: I won't call it "astute" but since I have come up right from the bottom with help and inspiration from some very great people in this country, I know what it means to fight your way in this game. And some of my experiences may have given me a little more insight because when you are ....born with a silver or golden spoon in your mouth, then you don't get through those experiences which can help you in life, because a golden spoon or a silver spoon and it, sort of, shields you from many of the vicissitudes which ordinary life has for you and which

actually ultimately helps you to either build yourself or destroy yourself.

Q: It can be to your disadvantage.

A: Yes.

Q: What was the disadvantage to you?

A: No, politically I was not born with a silver or gold or even a bronze spoon in my mouth. I came ---- you can understand ---- coming from a family or being the son of a person who was actually sent to prison for a crime which I do not know whether he committed or not. Of course, whatever the court has said has said, that is the end of the matter. But suffering from that kind of trauma to enter politics at that stage, I did not have any advantage in my favour. On the contrary, I had tons of advice from all my well-wishers that this is the last thing you should do because it would be very difficult for you to overcome these obstacles. I said, well, let us see.

Q: Tell me, in your own life, will you be able to ride the constant attempts by your opponents to whip up the Churhat lottery issue?

A: I think that issue is a non-issue. If some people feel that they can go on flogging it, I think even that stage is over.

Q: Going back to the other part of the profile, what do you think has been the best moment in your political life? Or even in your personal life?

A: Well, politically speaking I was leader of the opposition in Madhya Pradesh from 1977 to 1980. That was a real exciting time politically for me because I was able to update all my experiences of the past. The party being in the opposition and the government being that of the BJP practically ---- in Madhya Pradesh it was the BJP ---- the kinds of personalised assaults and the kind of personalised politics these people played, I was able to establish a very close affinity with the common workers of my party. If today in Madhya Pradesh I can go to any corner and at least state my case ---- I don't say they will accept whatever I say ---- and be listened to, it is only because of those three years.

Q: What was your best moment?

A: Well, in life moments come and go. One cannot put a finger somewhere, but some of the things which I felt I had done with a great sense of dedication and which seemed to be acceptable to the section of people for whom it was done were ---- when I took the decision to give the leasehold rights to lakhs of jhuggi dwellers in the State; and secondly, the tendu patta scheme where nearly 2 million people stood to benefit from the programme which was basically envisaged by the late Smt. Indira Gandhi. She actually laid out the ground work for that programme in a letter to all the State Governments when she became the Prime Minister again in 1980. I felt what was close to her heart, I was able to implement at least to a very large extent. If you look at from that point of view, these were the two things that I would think I should be identified with.

Q: And what was the worst moment in your life?

A: Well, in politics worst moments come by the dozen every day. So you don't recollect which is the worst because you are maligned, you are attacked, you are taken for granted, or you are jeered at. Those are things one has to take in one's stride.

Q: I believe in your free time when you have it, you are watching films. What films do enjoy watching the most?

A: I don't get time even to look at the TV these days. What to say of films. But when I had the opportunity to see films, of course most of the Indian films that are popular or were popular, I am now in the vintage of say eighty, it is a long time, so I think all the films specially with a social content and some of the Western things also like classics.

Q: Like?

A: "Gone with the wind" was one of the earliest ones to come around, then Devdas with Saigal as the leading star, and then Shaheed which was made in the 40's.

Q: You were a great fan of Mukesh. What songs did you like the most?

A: The next thing is, you might ask me to sing some of his songs which I can't. I like all his songs and Saigal. I perhaps will not be able to recollect a single song but, yes, I am a great fan of Saigal and Mukesh and then next Lata which is, of course, a common thing with so many people.

Q: People say about you that still waters run deep. Do you agree with that?

A: Why do you have to get into these sayings. I think anybody who sees that these metaphors become applicable to individuals, I think it is basically a wrong way to approach it. Still waters may run so deep that there is nothing but depth.

Q: You may drown even.

A: Well, you need not drown but nothing may surface.

Q: Perhaps nothing much surfaces from you anyway.

A: No, that is not the case. If something surfaces, it must be substantial and of some sense and value. That is why I say why apply these to individuals. They are good metaphors as they are.

Q: They are interesting metaphors.

A: Yes.

Q: And it is a nice and intriguing way of describing someone because you do come across enigmatic.

A: Well, I am not loud; I am not very articulate about my own self and I am also not a very, what they call, go-getter for the sake of it. That is perhaps perceived as a very important quality these days. But I have my commitments and to them I am totally laid down and whenever an occasion arises to work or do something in the light of those commitments, well I might have failed many times but at least I can say that I have not failed without making an attempt.

Q: I will have last one or two questions.

A: You have stirred lot of deep waters today.

Q: Yes, it is very intersting talking to you. There is a Committee which has been appointed by the HRD Ministry in trying to reduce the burden on the children. What inspired you to do this?

A: My own grand children, apart from the public because I see them practically weighed down, their backs bent and when they come back home, they are totally at sea; poor children, they don't know how many bouts of home work they have to do. And perhaps it takes away much of their impishness. If a child loses his or her impishness, I think it calls for a serious thought. But of course this personal factor apart, one of the reason which prompted this Committee was that a lot of parents felt concerned about the situation. I hope the person who has been put incharge, Prof. Yash Pal, is one of our eminent educationists in the country and I look forward to his final recommendations which should be in a couple of months.

Q: Right now, you don't know what recommendations he has made.

A: No, I have not even talked to him because I do not want to give any impression that I have something to tell him and he has to tailor whatever he has to say on what I have to say. In any case that is not my way of functioning in the Department.

Q: One last question. What is yur greatest asset as a person?

A: Capacity to bear and not to boil.

Q: Do you have a sense of humour?

A: Well, I like people who laugh at me. I do not know whether that comes under this description. And practically all the cartoons that come out about me, till sometime ago I used to keep a regular record which is in my library at Bhopal. But I make sure that all my children see it so that they do not have any false ideas about me. I also draw the attention of lot of friends to it. I think the cartoonists in India play a very very constructive role to keep public and other eminent people in the society at least, if not on their toes, with their feet on the ground. And one of the greatest people for whom I have very great regard personally is Laxman. I have had the good fortune, and I have the good fortune of being acquainted with him. I can't claim to be his friend, but he has been very kind to me and I think he is one of the best that one can come across. Of course, cartoonists all the world over have their own style and in India I think he is the best. And the capacity he creates in us to both laugh at ourselves and seriously contemplate and the themes that he brings out ---- that is basically the qualification and asset of a cartoonist.

Q: When people laugh at you, it is easy to deal with them because sometimes it can be burdensome if people take you too seriously, especially in the family and among close friends.

A: Well, you see, my best and worst critic is my wife. And once she said this to Mrs. Gandhi in one of our get togethers. And Mrs. Gandhi looked up at her and then looked at me. There were only three people. And she asked me: Is this correct? You see, Mrs. Gandhi had a very neat way

of putting across her own views. And I said: Yes, Madam, this is correct. Then she said: Are you unhappy about it? I said: perhaps if I were asked this question by somebody else, I would have kept quiet. But to you I must say that I am happy about it. She gave a broad smile and a nod. So I think it is good. Of course if somebody starts making contemptuous remarks, then it also comes through clearly. You can easily distinguish the motivation. But criticism and suggestion or something which may not be in tune with what I may be thinking about those things, I think, is a very good thing.

Q: You married when you were very young. You were fifteen when you married her. Obviously you had great ambitions. It is very fortunate that you have a wife who is your best friend and best critic. But how did you come to that kind of understanding?

A: Well, that is what happens when you grow up together in a marriage. It is something which is not available to many people because it is fairly late in life that you are married either of your own volition or on the initiative of your parents. But at that age when you are yorself coming into touch with the realities, adjusting yourself to the world, if two people do the same exercise together it lays the foundation of an enduring personal relationship also, and that is I think the reason. We will be celebrating our, I think ---- we were married in 1948 ---- 45 years.

Q: Are you going to have a big celebration?

A: No, I don't think so. We will call you if we have it.

Q: Thank you very much.

Swadeshi movement is matured

3 अप्रैल 1993 वाइस आफ मिलीयन टी.वी. के श्री भीमसिंह के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Prof. Bhim singh: We are in Delhi, the Indian capital and with us is Mr. Arjun Singh, who is a Minister in the Government of India in the Cabinet of Mr. Narasimha Rao. He is looking after the Ministry called the Human Resource Development Ministry. This Ministry was once looked after - in fact the first Minister in this Ministry, if I remember correctly, was the prime Minister of today himself.

Mr. Arjun Singh has been known as an able administrator, politically effective within the country and a person who accepted the challenge in Punjab when Punjab was burning and bleeding. It was he who brought the hostile Akalis to the negotiating table and ultimately it resulted into signing of an agreement between the religious leader, Sant Longowal and Mr. Rajiv Gandhi.

When the whole Congress was facing a disaster in the country in parliamentary elections, he as the President of the Congress party in Madhya Pradesh led the party to a victory

in the parliamentary election.

Sir, we would like to know from you a few questions we have got which people in the country and abroad would like to know.

Number one, the philosophy of the Congress party, the economic philosophy of the Congress party was based on the concept of socialism, and that continued from Jawaharlal Nehru till Rajiv Gandhi. Are you satisfied today with the policies which have been adopted by the Congress party regarding the economic programmes or the economic policies?

Shri Arjun Singh: You see, the Congress party has never been formulating policies in a vacuum, never purely on rhetoric or ideological stance. In a country like ours where the mass of the people live below subsistence level, any policy for economic regeneration has to take into account that there is much less to go around and producing things which are needed for people at the minimum level has to be the first priority.

When we achieved Independence, we were totally down and under economically. The colonial powers had almost fleeced the country of everything. At that point of time, it was decided that if India had to come to its own, it would have to adopt policies which made selfreliance an essential thing. And in that respect, a certain policy was initiated which had the interests of the common man at heart. There was shortage of capital, there was shortage of everything. Therefore, the State had to intervene and provide the capital for investment. That is projected as socialism.

Now it is definitely on the socialist lines but it was not a doctrinaire approach. It was a practical approach because all the captains of Industry in India did not have the means to invest either in heavy industries or later in power industry or oil. All this required a great amount of capital. Therefore, that capital had to be provided by the State.

Now over the years, as the Indian industry became more and more capable of bearing the burdens, there has been a diffusion of this structure. The responsibilities are being shared by the private sector. Now a stage has come when the Indian industrial community is very much able to sustain its own investment procedure and also the expertise that they have now is of a much more, what I may call, general nature. That means in all spheres of activity, they have acquired proficiency. Therefore now we are unwinding the whole thing, giving more responsibility to the private sector and trying to integrate our economy with the global economy. This is what we are trying to work out.

Q. The critics of this policy, which include some factions of the Congress also, some sections of the Congress party also are saying that inviting the products from outside, the machinery from outside, the things which are being manufactured in India have also been allowed to be imported into this country. Is it not contradictory to the very concept of the moment that Mahatma Gandhi led ---- the movement called Swadeshi movement?

A: Well, the swadeshi movement, I think, has matured to this extent that even liberalised imports

of certain machinery or components thereof is not going to basically weaken our industrial structure and base here. But the competitiveness that has become inevitable, we cannot, sort of, sidetrack that.

One thing we have to take into account ---- and we are very careful in monitoring that aspect ---- that the fall out of this liberalisation should not be borne by the weaker section of the society beyond a certain limit. Everyone will have to bear it for some time. But at least the burden on the weaker sections should be the least. Apart from that, I think gradually this is the way in which we have to do.

Q: So you are satisfied that will lead us towards development.

A: Well, if we don't mix up our priorities and perform as we want to perform, I see no reason why it should not.

Q: Now I would like to go towards political side. If I remember correctly, it was at the session in Tirupati that you piloted a resolution called the political resolution in which you were very critical of the activities of the BJP. Don't you feel that literally in this Surajkund session the Prime Minister exactly, I won't say followed but he stood up to the same ideas and same views which you had projected earlier?

A: I don't think one should look at these things on the basis of victory or defeat. You see, the Congress approach has always been to strengthen the forces of secularism, democracy and egalitarianism and always combat the forces of sectarianism, communalism and obscurantism. Now this is not something which has come into existence two years before or five years before. This is the basic philosophy of the Congress party right from its incepetion and certainly much more pronounced during the freedom struggle itself. And when we became free, our journey for national reconstruction started on this premise.

This year, in Surajkund, the party, in spite of all that had happened in the last one year, have reiterated the same and we have demonstrated that the Congress has the capacity to combat these combined forces.

So it is not a victory or defeat but it is a reiteration of the basic premise and policy which the party has always adhered to in its long history.

Q: As a seniormost leader of the Congress party, do you feel today that the Congress has today the capability of fighting, or rather defeating the communal forces led by the Sangh parivar?

A: Well, I am not saying this because I belong to this party but I am confident that the Congress Party can do this. But merely making statements will not help. There is no doubt that there has been some disarray in our ranks, there is no doubt that, that in the past one year there has been a lot of examples where we have not done the right thing at the right moment. We must take all this into account and after a very frank and can did introspection, I am sure the Congress party has the inherent capacity to fight these forces. And that is precisely what we are trying to force at this moment.

Q: There is some criticism that the youth wing of the party, the student wing of the party is feeling neglected. Do you have any particular plans to rejuvenate and rehabilitate the young wing of the party?

A: I entirely agree that there has been some disappointment in our youth on this account and the sooner this disappointment is taken care of and a strong youth movement is built, the better it would be not only for the Congress party but for the country as well.

Q: Since 1935 when Mahatma Gandhi for the first time came out on the Palestinian issue and said that Palestine belonged to the Palestinians the same way as France belongs to the French and England to the English, it was perhaps for the first time in the history of the Congress session that the Middle East was not mentioned, that Palestine was not seriously mentioned, when the resolution on international affairs did not candidly and expressly express the solidarity with the people in Africa, in the Middle East and other parts of the world who are still fighting against colonialism and domination. How can you justify that?

A: Well, our commitment to these causes is so clear and transparent that if it is not mentioned in one session that does not mean that we have realised from our stand. Our stand remains and will remain that all freedom movements in the world against any kind of domination have instinctive support of the Indian people. Mahatma Gandhi had said, as long as there is a single nation or single nationality which is not free, the freedom struggle of India will continue. I think you remember that. So this is something very basic to our approach and I don't think the mere non-mention of this in a resolution in any way resiles from our basic stand on the Palestinian issue and also on the issues that the people of Africa are trying to combat.

Q: I think you are the only leader in the Congress party and the only senior Minister who has been writing letters openly speaking on certain issues and writing to the President of the party and Prime Minister of the country. How would you describe them? Would you describe them, should I say, as a rebellious approach, a protest or conscientiousness.

A: Well, I think trying to caution and warn our own partymen and thereby our countrymen can hardly be labelled as rebellion. That is the basic conscientious duty I am performing. Yes, I should not be saying something which creates ill-will against the party. If that were to be done, I think that would be wrong.

Q: I saw in the press, some body - I think Karanjia - writing in the Blitz a long article saying he is accusing the Prime Minister of having some understanding with the BJP or such some thing!

A: Well, I have the highest respect and regard for Mr. Karnajia and the Blitz, and I would only say that he is entitled to his views, but those are not my views.

Q: Finally, at this moment when the whole country is burning, when the country is under threat

of communal forces whether in Bombay or Ayodhya or elsewhere, you have taken a very serious stand. You dissociated yourself from the White Paper on Ayodhya also. In the National Integration Council, I think your stand was categorically clear when you yourself initiated a debate for the dismissal of the government. This was not done. But today, as the seniormost leader, as the unquestioned leader of all the secular forces in the country, what would you like to say to our countrymen and our Indian brothers and sisters who are living outside India who are feeling insecure? What is your proposition to save this country and who are the enemies of this country?

A: You see, one should not try to see an enemy behind every bush. Life is neither that simple nor that complicated. There are basic things which we have to take note of all the time. All the issues that divide us should be addressed to with caution. This is not only meant for any single manager, but all of us in our working, in our day to day functioning, in our activities, to whatever field we may belong, have to constantly keep this in mind that a divisive spark can be the cause of conflagration which will destroy the country, because for many years this had happened in India. Now after centuries we have a national identity, but this identity is not a unilateral identity; it is an identity which has been created by all the various pluralistic elements in the country ---- in religion, in culture, language and in social relations. It is all that together which now means India. So we should be careful that we do nothing to fracture this.

Secondly, a matter which must always be kept in view is, in whatever we decide to do, we must take into account as to what will be the impact of that action, the effect of that action on a vast number of people who live below the poverty line. For example, you talk of the market forces. I concede market forces mean a lot in the modern world. But what about people for whom market forces have no relevance? They are not affected by the market forces at all because they have to make both ends meet, a square meal a day is their basic objective. Now for them, you cannot leave them to the mercies of the market forces. You have to provide some kind of social security for them; you have to have some different programmes and policies which not only give them the basic needs of life, but also protect them from some of the vagaries that come with development.

Q: Just one question, are you satisfied today with the performance of the Government vis-a-vis Punjab and Jammu and Kashmir? Because these are national problems.

A Well, in Punjab things have taken a right turn and I think we should congratulate basically the people of Punjab for it, because it is they who have turned their back on blind terrorism and they want to live a peaceful life and make Punjab as prosperous or more prosperous than it was before. I know there are a lot of things which can still be improved there, but basically

the direction is correct.

In Jammu and Kashmir I think we have yet to come to that stage where we can say that, yes, we have turned the corner and we are now on the path which will lead us both to peace and prosperity in that area and also be in tune with the larger national interest. I don't think we have reached that point as yet but our efforts are in that direction.

Social disparities creating problems

12 अप्रेल 1993 हारेट्ज डेली, इजरायल के श्री सेगर के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: Before I came here to see you. I am very glad that we are having this occasion. In the meantime I have seen a little bit of India and I have been on the plane that was hijacked yesterday.

A: Oh, I see.

Q: It actually gave something which I thought I must ask you because they were students who were protesting against the conditions in the universities.

A: They were form Lucknow?

Q: They were from Lucknow Art College. For me the strangest thing was that the passengers started to argue among themselves and many of them said, "Yes, the students are right to do this thing because the conditions in the universities are appalling and very bad". So I thought I would ask you if that is right.

A: Well, in some of the universities the position is not good, especially in one or two States, and the financial position of the universities leaves much to be desired, especially in the States, because they are all run by the State Governments. We don't have any direct responsibility except that we give some aid to different Faculties for equipping them. But that it should lead to this kind of attempt, I don't think that is justified.

Q: No, I don't think so either. But I was interested how the people immediately reacted, they reacted as if India has such a problem, Of course, I ask myself ever since I came here a more serious question: Is India in deep crisis now?

A: Well, India is not in a deep crisis, but we are going through fairly difficult times. Of course, I am also very confident that India will be able to overcome all these difficulties because apart from economic situation which is very obvious, we are making very great efforts to overcome the economic difficulties, and I think our beginning has not been bad ....

Q: You mean in the last 20 months or so.

A: Yes, on the socio-political level, I think there are factors which have to be monitored and taken into account on a permanent basis if we want to avoid the kind of situation which could be created. In the social equations in the country where still great social inequalities exist, it has to be handled with care and determination because social inequalities lead to economic disparities and that creates a mix which is a fairly dangerous mix.

Q: Would you say that over the last 40 years, the social gap has widened or narrowed?

A: It has narrowed and disparities also have narrowed, but what still remains is fairly extensive. And therefore we have to attend to that.

Then on the political level, this religious fundamentalism which has suddenly become very strident.

Q: Of course, I was going to ask you about that.

A: Yes, that is something which is ultimately going to lead, if not checked in time, to the fragmentation of the Indian polity.

Q: Now would you say that the religious fundamentalism is a real social development that is coming up, or is it only politics?

A: It is not a social development in so far as it has not sprung voluntarily or spontaneously from the feelings that are shared very widely. The focus has been brought upon it by political elements with a view to seeking political mileage out of it and all such emotive issues, once a focus is bought on them, do assume a certain dimension.

Q: So the ground must have been there.

A: The ground is something like this. There are always differences among the communities and religions. But the atmosphere in India, by and large, has been one of coexistence with all the communities and all the various religious faiths. It is not as if every day people are, sort of, going at somebody else's throat. But these feelings can always be exploited.

Q: So even though there was no violence, the situation was delicate.

A: Yes, it has to be delicate. You see the differences that exist, exist in the normal manner because Christianity is different from Islam, Islam is different from Hinduism even in Hinduism have Buddhism and Jainism which are different from Hinduism.

Q: So the whole situation is fragile even without the BJP.

A: Yes, but the BJP has mode a political campaign even at the cost of disturbing the polity, of fragmenting the polity, they feel they can take political advantage out of it. That is a dangerous thing and which must be combated.

Q: Is this the first time that anyone is using this fragile ....

A: No, no, they have been at it.

Q: It has happened before?

A: They have been at it for a very long time, but as I told you the basic instinct of the Indian, whatever community he may belong to, has been to live together, and not allow these things to go beyond a certain level.

Q: Then how would you explain the fact that it works so well for the BJP?

Q: The Ayodhya thing, the other thing and not they are talking of immigrants from Bangladesh. Obviously they are able to locate real issues.

A: You see, the problems are there and they have to be taken care of in the normal democratic process. But if you try to define a problem with religious connotations, I think that is very

dangerous. Who is supporting the illegal entrants? Nobody will say that people from foreign countries should be allowed to come here without any let and hindrance. Nobody will support it and efforts have been made to stop it. But when you focus on it from a communal angle and make use of that for other purposes, that is wrong.

Q: You give me advice now. Do I go home and tell my readers that the Indian system is in danger?

A: I would not put it that severely. The Indian system is under strain, but the democratic roots have been struck fairly deep in this country. A very redeeming feature is that the people who are not so well off, the poor people you may call them, and the lower middle class form the majority of Indians and amongst them the feeling is very, very strong that if the democratic system is not able to cope with these problems and the democratic system is weakened or disrupted, they will be the first to lose.

Q: Why?

A: I mean what else is the....

Q: The poor ones will lose?

A: Yes, because that is the only lever they have.

Q: That is to say you have a strong dictator.

A: No, I think democracy and dictatorship don't go togather.

Q: You say, democracy is good for the poor people?

A: Yes, why not? At least they have one final lever in their hands. That is precisely the choice they don't want to make. That they are prepared to abandon that lever that they have in their hands as democratic citizens and give it to a person or a group of persons who would like to exercise it on their behalf. This is what I am saying.

Q: So what is your way - everybody is talking about it now - of fighting the BJP and this danger?

A: I think the party has, it is not a question of my way.

Q: Because everybody says that you have your own ideas about how to do it.

A: Well, one of the things is that we must have a very vigorous campaign of informing the people of what the dangers are. It is not a question of a party getting a vote or not getting a vote. But the danger is to democracy. And the choice is between a democratic system and a system which is beyond the pale of democracy. That could be the ultimate situation.

Q: So it is a way of explaining it.

A: Explaining it.

Q: An explanation rather than taking straight action.

A: No, action also. Political action will be taken. You cannot suppress any party by force of the State. That is something which is very, very counter productive. But politically it has to be put across wherever these government were in office.

Q: Can you outlaw the BJP?

A: No.

Q: Only these organisations.

A: BJP should not be outlawed legally. But suppose they want to make use of religious symbols or religious factors for gaining electoral advantage, the electoral law should be amended in a manner, which is already prohibiting it, even today nearly 13 members of the State legislature in Maharashtra have been debarred by the courts because they used such religious sentiments in their elections last time. Their appeals are pending in the Supreme Court. So the law is already there. So there should be, after full consultation amongst all the political parties, a review of the electoral law made and it should be so amended that anyone, whatever kind of fundamentalist or religious party it is, Hindu, Muslim, Sikh or whatever it is, they should not be in a position to make use of the electoral system in a way to gain electoral advantage.

Q: Do you agree that the Congress party is to blame at least in part for the rise of the BJP? It has been too lenient on both sides, trying to appease both Hindus and Muslims.

A: Well, I don't think it was appeasing either, but being in power whatever happens, to the advantage or disadvantage of anyone, how can the party in power disclaim total responsibility? We cannot disclaim total responsibility, but to say that any of our action led to growth of BJP, I don't think that premise would be correct.

Q: Because there are so many examples of things which were done in order to please everybody and so the contention would be that this led....

A: Well, that is one of the things that has been said and as I said when we are in power, we cannot say we are not responsible for everything. But there was no conscious effort to do that.

Q: When the Ayodhya thing started, the day it happened, do you feel that this is just an incident or do you feel that it has a deeper meaning?

A: You see, Ayodhya incident was not something which happened by chance. Now it is more than clear that this communal combination of the BJP and other organisations had set this as their target and they were able to do it. And the theory behind it was that, once this irreversible event takes place, the aftermath would be so severe and two widespread, one, it would lead to chaotic conditions; number two, there will be a deep communal divide; and number three, they perceived that this is the atmosphere in which they would be able to take full advantage - political advantage. So the two things have happened.

Q: Will they succeed?

A: I don't think so. On this account they will not be able to take political advantage as they seem they are going to. And that is precisely where the effort of all the other democratic and secular forces is called for.

Q: Have you ever encountered that kind of problem in your political career? You have been in politics for how many years?

A: For about 34 years in the Congress party and 38 years in politics.

Q: That is really your profession.

A: Well, you may call it a profession, but one comes to politics actuated by certain things. I also

came that way.

Q: What made you become a politician?

A: I come from an area which was part of a old princely State. We had a number of princely States. And the kind of socio-economic-political atmosphere was something which was very galling to me. I joined the socialist party. I was a socialist to begin with. Just like you have in Israel also.

Q: That is why you have a Lenin bust in front of you?

A: That was something given to me.

Q: Why do you have a Lenin bust in front of you?

A: Well, that was given to me by someone and I do not believe in breaking idols just for the fun of it.

Q: Really! But it is surprising to see it when one comes into your room.

A: No, I don't think it is surprising. I have one of Washington in my inner drawing room.

Q: This is the house you live in? Is this your residence?

A: Yes. I have in my library at my farm a photograph of Kennedy.

Q: Probably autographed?

A: No, I could not got an autograph from him. And I am a great admirer of BenGurion.

Q: What?

A: Yes.

Q: Did you meet him?

A: No, I have never met him.

Q: You have come in contact with him?

A: No, I have never. I have read about him, the way he fought for a cause. Of course, as a Congress party member and as an Indian I have great sympathy for the Palestinian cause also and that is a part of our very clear cut policy. But I admire everyone who can summon up the courage to do what he thinks is right.

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
26927

Q: You know my very, very first interview as a journalist was with Mr. David Bengusion. 3 hours.

A: Must have been.

Q: It was a great experience. I think he was a great admirer of Nehru also.

A: Yes.

Q: He was very much interested in India and in China also. And he regretted that no relationship had developed.

A: You see, the basic soil of this country is so congenial to the growth of plural humanism. You name one religion in the world which has not thrived on the fertile soil of India. There has been no victimisation; there has been no persecution. Yes, some religions have gone beyond a certain limit. But that was not because of any support or opposition; it was on its own. So that is the kind of thing which we would like to be the common denominator for all Indians

in India of all communities. That is what we mean by secularism. It is not a question of....

Q: You are probably the strongest spokesman for secularism.

A: Well, I won't say that. I am a very humble political worker. Yes, I have seen a lot and I have experienced a lot and I had the privilege to work under great leaders. So certainly it has some effect on me.

Q: Did you know Nehru?

A: Oh, yes, he brought me to the Congress party.

Q: Oh, he brought you to the Congress party. It was an extraordinary phenomenon how Nehru family had been in power in this country - Nehru, Gandhis. They had a royal kind of magic.

A: And I worked very closely with Mrs. Gandhi, then with her two sons - Sanjay and Rajiv.

Q: Were those good times for India? Mrs. Gandhi....

A: Yes.

Q: ... emergency time.

A: The emergency was not the normal time. It was something which just happened under certain set of circumstances. And some people around her took advantage of it and she had to bear the brunt. I mean candidly this is the situation.

Q: Because walking around and talking to people and telling everybody I am interested in politics, I find politics in India has a very bad reputation. It is considered to be more corrupt than in other countries. And I met some lecturer for political science who gave me the whole theory why this may be the case. Do you agree with that?

A: What was the theory?

Q: Well, one, that politicians are dependent on rich people for their career and they have to give something. Also there are so many labels of politics in this country. Obviously there are many politicians. And it is all concentrated in very small elitist group. So there is no real popular control in contrast to what you would think of when you say democracy.

A: Well, these are the dangers which democracy in a developing country has to face. What you have just said, I am not contesting it totally. But to say that India is now in that kind of trap where the political or the democratic system in hostage to an elitist set or moneyed (people), I don't think that is correct. Yes, we could have many reforms, especially in the election law which could decrease the influence of money.

Q: For example, finance campaigns.

A: Yes, that is what I am saying. That is under review.

Q: Why don't you have that? That is such a basic thing to have I would think.

A: Well, I think it is under active consideration at the moment.

Q: The other thing that come very much to mind is of course the social conditions. I was wondering whether you could tell me, do you have any idea when most Indians will be able to read and write?

A: Well, our literacy campaign is now in a very, very crucial and interesting phase. I am saying "crucial" because we were not making headway till about ten years ago. But in the last 5 years there has been what I would call a break through, not solely because of government effort -- -- government effort, of course, but the break through has been because the idea that people are illiterate and they should not remain illiterate has caught on with the people at large. So now it has transformed itself and is transforming itself into a people's movement, where everyone feels that he has to do something about it. That is why it has taken a very, very decisive shape. And our hope is that if this continues in the manner it is, I think by the end of this century we would have taken care of the illiterate problem in the country.

A: Thank you very much.

Q: Thank you.

Pakistan not reciprocating the peace efforts

16 अप्रैल 1993 वाल स्ट्रीट जरनल के श्री मार्कीज ब्राचुली और बोस्टन ग्लोब के श्री मेगी फारलो के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Q: In your statements, sometimes you say that you favour keeping the Congress together and yet you seem to be developing as an alternative power base in the Congress. The basic question is, what are you doing?

A: I don't think there is any attempt to make any alternative power base, but the Congress party is not only a political party in the common sense of the term, in India it has been both a movement, a vehicle of change and also an instrument for integration. Now these are all the roles which the Congress party had to play in the past 107 years, or at least after 1920, to be precise. So that is why when people talk about one thing and also of the other thing, the impression generally goes that there is something self-contradictory. But that is not so. If the Congress has to remain what it has been, then all these things will have to be attended to and this is all I am doing. It is neither against anyone, nor is it an action calculated to harm the party.

Q: Do you think the party has lost the confidence of the people?

A: No, I don't think that is the case. The party is very much in the minds of the people and here is no other party which could replace the Congress party. But as happens in all democracies, certain events, certain developments have shaped public opinion and every political party has to be alive to there changing nuances and I am sure the Congress party will be able to address those issues and will be able to retain the confidence of the people.

Q: Have disturbances in the past several months undermined economic reforms?

A: Well, not the reforms, but they have certainly hampered economic activity. That one cannot deny, more so in a place like Bombay. But the reforms have not been hampered.

Q: Has the Government been able to focus on reforms in the mist of all those problems?

A: Well, that is what has to be done. We are trying to do it. Every event has a spin off, but I don't think events of the last few months have distorted in any way the basic policy frame of the economic reforms. As I said, economic activity was affected. When there is a riot and there is curfew, then naturally those things do not happen. We have production losses and all those things.

Q: Inside the political system, there is a confrontation persisting ---- the BJP - Congress confrontation. The BJP says that supports reforms, but I get the sense that they the are starting to waver and might be the economic reforms might be another lever ....

A: Well, you see, political parties will always use all levers and one should not grudge it. The only reason for the sense of confrontation that you perceive is because there are certain things like secularism, like tolerance, like sense of the democratic process which the Congress party is deeply involved with because that has been our ethos for the last so many decades and we cannot under any circumstances make any compromises on that. So that is how you perceive there is a confrontation. But those are areas where I think there is no choice.

Q: Do you think these principles of secularism and tolerance on which India seems to be firm as being essence of democratic process, have perhaps been challenged?

A: Obviously, that is what I mean to say - that because they are being challenged, therefore the response of the Congress has to be quite clear, and that gives the perception of confrontation. It is not confrontation against the BJP or the leaders of the BJP, not by any chance. We have nothing personal against them. But if they want to alter the total basis of our national polity, the basic premises on which our republic is founded, on which the electoral system is based, then naturally you have to resist it.

Q: What do you think the congress will have to do in future?

A: One, we will have to be making every effort to inform and educate public opinion and then also take certain steps which will highlight the incongruity of the communal campaign vis-a-vis the basic interests of the country and if necessary, as it seems to be, to make some amendments to the election laws which could prevent anyone from using religious symbols for political purposes.

Q: One of the things that one gets sense of, reading the newspapers, is that whether you have the intention of doing it or not, there are certain cadres of people circling around you as power in the Congress party and I wonder whether in the longer term, you would like to be the Prime Minister, or you have the aspirations to lead the country and try and forge this more unified and secular state.

A: Well, all talk of this nature, I personally believe, is not relevant and in any kind of political system some people will come together to say something and to believe in something and act

together also, but there is no intention on anybody's part to challenge anything and there is no ambition motivation as such. It is unfortunate that, that is being projected like that, but that is life; you have to put up with it.

Q: Do you think that troubles with Pakistan, with Bangaldesh, like the on-going series of disputes with Pakistan in recent months are a reflection and a consequence of the policies or behaviour of the BJP and the people who oppose secularism in India?

A: Well, I think while talking of any other country, I would not like to make generalisations. It is not the correct thing to do and the only regret a lot of people in this country feel is, why is Pakistan not reciprocating the feelings of India to have a very close, friendly relationship? We went through the trauma of partition. We did not like India to be partitioned. But we accepted the political fact once it happened. And we have been trying, since then, that we should take the route of friendship and mutual relations which led to mutual benefits and economic cooperation. But somehow it has not happened. On the contrary, I don't under what kind of influence or what kind of perception, the help to the terrorist movement in India in Punjab and Kashmir, naturally leads to a lot of strained feelings because no country can allow its sovereignty to be ermined. These are the unfortunate things. I wish they could realise that this is not leading us anywhere.

Q: Is there any connection between this and the rise of anti-secular behaviour in India, starting with December 6 whereafter it has become fairly strong.

A: No, but the relationship with Pakistan does not start from 6th December. This has been going on for many years.

Q: The worsening perhaps you could see after that.

A: It has been worsening off and on. Look at the past 45 years. We fought three wars for what purpose, to what purpose?

Q: Right. You don't see any prospect of the current disagreement escalating into a conflict?

A: I hope not.

Q: You have been following reports in the American Press. There was one in New York Magazine which said Pakistan and India were on the brink of a nuclear war. Another said that the Americans all but prevented India from attacking Pakistan after the bombing raids in Bombay.

A: I have read. That is all.

Q: Have you a view on that?

A: I don't think so.

Q: A quick question. There was a story in the paper about something called tendu leaves. What is a tendu leaf?

A: Well, you could never comprehend what it is.

Q: That is why I am asking it.

A: There is a natural leaf which grows on bushes in the forests of Madhya Pradesh and many other States, which is used for making indigenous cigarette which is called a Beedi. I do not know whether you have seen a Beedi. It is rolled up ....

Q: Small brown thing.

A: Yes, small brown thing. The trade in that commodity runs into crores and crores, many hundreds of crores. Now the total economy of that trade is based on workers or you may call labourers who come from the lowest strata of society ---- very poor people, tribes, harijans, backward classes who live in villages around forests. They go to pluck those leaves and they come back with those leaves and sell it to the people who ware selling those things to the agents of contractors. And those contractors then when they bought say for one rupee any quantity, the same leaf was sold in the market for Rs. 150/-. Such was the margin of the profit. Now in 1981, Mrs. Gandhi said that we should alter this thing and we should try to see that these poor people who are real labourers in this gain economic benefit and not a handful of contractors who exploit them. So that was the scheme which was started. And I was the Chief Minister of Madhya Pradesh and on her guidance, we implemented that policy there. We totally altered the basis. Of course, there was a lot of hue and cry because when you touch vested interests and that too running into hundreds of crores of rupees, it means something. But we pushed it through and we were able to gain profit of Rs. 150/- crores in 1988-89. And we decided that those will be distributed as bonus to those very labourers. We were able to distribute Rs. 37 crores. 113 crores could not be distributed. By that time, BJP Government came in 1990 and they stopped the whole thing, the reason being that most of these contractors were their partymen. That is what we have been agitating that, that is an amount which is owed by the State to these poor people, whose total number in Madhya Pradesh is about two million. So that is what we are trying to say should be done.

Q: So you are going to wage a war on their behalf.

A: I am not going to wage a war on their behalf, but I am certainly trying to articulate their right.

Q: Thank you very much, for seeing us.

Fight against Communal forces

16 अप्रैल 1993 मेविसकन टी.वी. के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: Mr. Arjun singh, there has been in the press lot of reports about some sort of conflict between the Prime Minsiter and yourself. Is there anything to this?

A: I think the whole thing has gone off at a very big tangent and speculation. There is no

conflict between me and the Prime Minister and in the implementation of certain policies, especially the fight against the communal and sectarian forces, there is a difference of emphasis here and there. Otherwise here is nothing that one can cell as a conflict, not at all.

Q: In fight against communal forces which have taken such a rise in the country lately, what do you think should be the major emphasis?

A: First, we have to understand the nature of this force that has now emerged. It is not emergence of a political party as such because political parties in the strict sense of the term in a political environment in a democracy, there is nothing wrong in the party trying to achieve supremacy, achieve power; that is legitimate political activity. But here what has happened is that certain people who have come together under the banner of the BJP are acting beyond all parameters of political activity, using emotive religious sentiments to gain political advantage. And it is against the law, it is against the Constitution, but they think that so long as they can gain what they want to gain, it is immaterial whether they are violating the law or anything else. Now when this kind of situation arises and those who are involved in this kind of activity, they pose a much more serious threat to a democratic polity because the danger that arises is that they will undermine the democratic system and once a democratic system is undermined, the only thing that takes the place of the democratic system is the fascist system. This is the danger which we have to realise faces us and I think the Congress party will be able to with the help of the people combat that.

Q: There are also some reports and there has been accusation from India of Pakistan being involved in the Bombay blasts and some other things. What is the status of that relation? Have you got the fear of escalation, for instance?

A: Well, you see, unfortunately, Pakistan has never been able to reconcile itself to certain basic facts. We in India never wanted the country to be partitioned. But once it became inevitable, we accepted it as a political fact and pledged there after to live as good neighbours. There has been no real reciprocation from Pakistan to this. And this is not of recent origin. It goes back to 45 years. There have been three actual wars that were fought against us and we were forced to get into a conflict. Then there was this proxy war that was going on by exporting terror, terrorist activity in Kashmir and Punjab. All these things naturally have an impact on the minds of the people of this country and the Government also cannot be totally immune to the feelings of the people. The latest incidents about bomb blasts and what has emerged till now of course in a very general way is that there was some linkage. I think that has created a very unfortunate situation here. We would not like to go into a conflict with Pakistan. It is not in our interest and it is not our policy by any chance. But if somebody wants to play with the internal affairs of this country and poses such serious problems to our polity, well, we have to take appropriate action to defend ourselves. At this moment, this is the stage where matters rest.

Q: But is there a basis at this stage to accuse Pakistan or not?

A: Well, there is no need for accusation. Facts are so clear.

Q: So you would say they are responsible.

A: Yes.

Q: Mr. Minister, going to another subject, can you describe the situation Kashmir? This is one of the main issues. What is there to it now? In other countries and in other places sometimes it is reminded that there were some resolutions on self-determination about Kashmir and they have not ben applied. What do you think should be done?

A: Well, that kind of perception is one-sided perception. Those resolutions that you are referring to had two sides of the issue. One was the total withdrawal of Pakistan forces from the area which they had occupied in the conflict of 1947. They have not done that yet. So they have no moral right to ask for self- determination.

So far as the people of Kashmir are concerned, they have exercised their democratic right both on the issue of joining India, being in India, and every time elections were held, they have voted in the democratic system of India, enjoyed rights under the system in the country and they are as good citizens of India as I am. Now this is what is sought to be unsettled by terrorism. Not I don't think any State can succumb to that kind of attack. And in the present world, this gaining into more prominence everywhere, why only in India? But that is what the State has to fight and it has not to be fought merely by bullets, we have to put across to the people that their well being, their rights and every thing else are not only well protected in India but they have every opportunity to grow and better their own conditions and this has been happening there. Now for the last few years, this thing has been disturbed and therefore we are very careful that in our effort on the one hand we have to put down with a strong hand all terrorist activity which is against State, against the people, at the same time open up more avenues for expression of views, for activities of political nature so that the political process may start again in the Valley and it may become as normal as it was sometime ago.

Q: Mr. Minister, beyond this point, maybe you would like to go back to what the main issue facing India today?

A: I think the main issues are economic. In the fast changing scene in the world, there is need of our country also to integrate itself in the global economy. There is also need to liberalise and bring more relaxed activity in the industrial sector. We have removed many controls. We have adopted policies which I suppose you are aware of; I don't have to repeat them. Given another two years of sustained activity, we should be able to turn the corner on the economic front.

The second big point is about population. Growth of population in the country has to be checked. Now we have tried many methods and we are still trying many methods, but the fact remains that we have not yet been able to overcome this problem in the manner it has to

be overcome. Efforts are on and I hope we will.

And the third is about illiteracy. There was a time when hardly 30% of the people in India were literate. Now with sustained effort and more so because of the campaign that was launched by our late Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi in 1984, we have now a people's movement for literacy. Now we have come to a 50:50 figures in the country and the way the things are going, we do hope by the end of this century, we will be taking care of our illiteracy problem.

India being so large and big, there are many problems, but I think these are the three on which I can focus.

Q: Mr. Minister, would you say that this problem of communalism would be sorted out soon and in general in the near future you may expect to see a different India?

A: Certainly so. And I am not only voicing an optimistic view, I have a firm belief that India is capable of surmounting these problems and even the communal assault on our polity will be met successfully. We will turn the corner on the economic front and India will soon take its very rightful place in the committee of nations.

Q: Thank you very much, Mr. Minister. Do you think there is something we could add to it?

A: No, you have covered every thing.

Q: Thank you very much.

A: Is yours a national network?

Q: This is a private television network. We have two networks in Mexico. This is the private one. But we happen to be one of the largest network in broadcasting. We broadcast over 40 countries ---- whole of American continent, Europe and Spain. We broadcast in Spanish, which is not very well known in your part of the world. But it is very important.

A: But you have asked me to speak in English. How will your Spanish-knowing people ....

Q: We will supply sub-titles, unless you speak Spanish.

A: No, I don't know that.

Q: We broadcast also in the USA, and some of our US viewers do understand English. What we do is, either translate it leaving in the background of course the original voice of the people, the original words, or follow the original idea and supply the sub-titles.

A: Why did you choose to interview me?

Q: Because I think you are a very important personality.

A: I don't think so.

Q: You don't think so? Well, that is my perception from the press and in general. I interviewed of course many other people. I had a chance to interview the Prime Minister the day he became the Prime Minister of India. It was a great opportunity. In the near future I wanted to request you, if possible, to get an interview with him.

A: You are permanently staioned here?

Q: I am permanently stationed here. I just come back. For three years I was here but I had special assignment in the Middle East so I could not cover India as much as I would have liked to.

Make literacy mission a people's campaign

11 जून 1993 दिल्ली में पी.आई.बी. द्वारा आयोजित पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है

PIB Official: Friends, welcome. We have indicated the topics of the Press Conference. They are - basic education project in U.P. Educational Summit which New Delhi proposes to host and Indo-Mauritius bilateral cooperation. The minister will make opening remarks. After that you are free to ask questions. I shall be grateful -- it is already crowded -- if you can indicate to me, those of you who want to ask questions.

Mr. Arjun Singh: But there is no censorship. This much is clear.

I would like to share with you the purpose of my visit to this conference at Paris on 3rd and 4th of June. Last year at the UNESCO educational conference which was held at Geneva, a suggestion was made by the Director General of UNESCO that it would be worth while to explore the possibility of focusing attention of the nine most populous countries of the world on the project Education for all. These nine countries together constitute nearly 75% of the population of the world. These countries are - India, China, Egypt, Mexico, Brazil, Indonesia, Nigeria, Bangladesh and Pakistan. The Ministers of these countries appreciated the idea and it was left at that for conciliating with their own governments and then a concrete step was to be taken. A preparatory meeting was held in China in February this year and there a firm decision was taken that this conference will be held and the Prime Minister of India offered to host the conference which will be attended by the Heads of State or Governments, as the case may be, of all these nine countries. It will be a summit Conference.

The main objectives of the conference would be that what each country has been doing separately and on its own will get a much sharper focus as part of a joint concern at the highest level to facilitate mobilisation of resources, both nationally and internationally, and to enhance the quality of the total effort and as far as possible give a time frame to this effort. These are the three main parameters under which this conference will be held. The tentative date which has been indicated as of today is the week beginning 13th of December' 93. The exact date will be announced in another two or three weeks.

Q: December this year?

A: This year, in the week beginning the 13th December. In that week, I need not go into details of that conference because the papers are being worked out. We on our part have appointed a core group which will work out the entire details in consultation with the UNESCO and the first meeting of this group is taking place on 12th July. India look

forward to this Summit meeting because in a way this Summit will underline many of the aspects of our national policy on education which we formulated in 1986 and therefore it is not only of special interest to us, but we also feel a little heartened that the objectives set forth in our educational policy may become the objectives of this Summit also.

On my way back I paid a visit to Mauritius at the invitation of the Hon'ble Education Minister and I got the opportunity to meet the leaders of Mauritius, the Hon'ble President of Mauritius, the Prime Minister and other Ministers. We were also able to sign a cultural exchange programme for the years 1993-95 which takes into account our support to many of the initiatives of the Mauritian Government in the sphere of culture and education. One of the specific outcomes of the visit was the Government of Mauritius was keen to establish a Science Centre and they had indicated that they would like to name this Centre after our late Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi. After discussion, the Government of India pledged support of Rs. 5 crores to the Centre towards the next two to 2½ years. Our support will be in the shape of technical support and other expenses, equipment; but the building part will be that of the Government of Mauritius. It will be in Port Louis. They have selected the site and now we will be asking the Director of the Science Museum to visit Mauritius and draw up the final plans. I know many of you have already visited Mauritius, so I need not explain how beautiful the country is. I was particularly impressed by the spirit of mutual cordiality and tolerance that exists between different communities in Mauritius. It is a multi-racial community and may be we should learn something from them.

Another matter which I wanted to inform you about is the basic education project in the State of Uttar Pradesh which, as you are aware, got unfortunately involved in some controversy in the last two years which was not necessary but which, with the co-operation of the government of Uttar Pradesh, we were able to overcome and now the project has been cleared by the World Bank. It envisages an outlay of Rs. 728 crores to be spent over a period of 7 years. At the moment it will cover ten district of Uttar Pradesh. The Govrnment of Uttar Pradesh will also be sharing in this. They will be spending approximately 13% of the outlay which comes to approximately 90 crores. It is a World Bank project. The World Bank loans to the Central Government and then the Central Government gives it to Uttar Pradesh. So out of this 728 corers 90 crore will be the States share and the rest will be the Government of India's share.

The main features of the project will be activities to strengthen the primary schools, non-formal education, teachers training and women education. 2,052 new primary schools and 1077 upper primary schools will be opened. The access to basic education for additional 6 lakh students would be provided. The drop-out and repetition rates at Primary and upper primary level would be reduced by 50% during the project period. The project envisage an active role for the Village Education Committee which will be formed to implement and supervise the activities. The NCERT and NIEPA will have the nodal roles on our behalf in the

implementation of this project. The project will be implemented through a registered autonomous society which shall be called the Uttar Pradesh Sabhi ke liye Shiksha Pariyojan Parishad (उत्तर प्रदेश सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद) in which the Government of India, the U.P. Government, NGOs, women, teachers and educationists would be represented.

Then a similar major programme entitled District Primary Education Programme is being developed to operationalise the programme of action which we had submitted to Parliament in July of 1992. These are the districts where the female literacy rate is less than national average, or where the TLC campaigns are pretty successful. These districts are spread over Assam, Haryana, Maharashtra, Karanataka, Tamil Nadu, Madhya Pradesh and Orissa. The World Bank has indicated its interest to support this programme. The idea is to cover 20-25 districts each year through such projects. The European Community has also shown interest and would co-finance this programme. The final approval of the EC we hope of get by the end of next week.

These are the two important programmes which I wanted to tell you. The ten districts of the UP project in the first phase are: Allahabad, Aligarh, Banda, Etawah, Gorakhpur, Nainital, Pauri, Saharnpur, Sitapur and Varanasi. So this is all.

Q: When will this project be taken up?

A: This project will be implemented now from this year onwards. I would myself, after finding out the convenience of the governor of Uttar Pradesh, like to go there sometime in July so that we can start.

Q: It is Central Government sponsored or State Government?

A: I just told you it is financed by the World Bank.

Q: Just now you have mentioned about the cordial relations between the different communities in Mauritius. Do you expect that such a kind of situation would be there after the Babri Tribunal Judgement. And there was a news item about the letter you had written. But despite that, how is it that Government.....

A: Well, I think you should understand what is the general wish and desire. That was a reference I made to what exists in Mauritius.

Q: If the government is not serious about providing sufficient backing to that desire, how can that desire be translated into reality? Is that why Government's case fell in the court?

A: Well, I have not read the judgement of the Commission, but newspapers have reported that they have not found it sufficient to uphold it. That is where it stands.

Q: My question was, you wrote this kind of letter before the demolition of the Babri Mosque that there was a political design. And you again warned the Cabinet Secretary about this and immediately it happened. Does this mean that there was a link-up at some level between the RSS and the Government?

A: No, no, I think that is too far-fetched an idea. That can't be the case. Well, I would expect that the administration would have followed up what I had suggested because that was based

on my own information which may or may not have been true.

Q: What was the input for that? Ultimately that information of yours came out to be true. The cabinet Secretary was officially told about it, yet he had not taken sufficient steps to prevent it. What else can it mean?

A: Well, I don't think we can jump to that conclusion. I would not like to jump to that conclusion.

Q: Before the Babri Masjid fell, it was reported, I don't know how accurately that you had suggested in a meeting of the Cabinet and you had written a note that according to your information certain attempt would be made and yet we saw what happened. Again you had written a similar note forewarning what might or might not happen. Do you see any coincidence of things?

A: Well, as I said, I don't think we should jump to that conclusion. You can attribute it to my bad luck.

Q: Your bad luck, or nation's bad luck?

A: Well, let us go to something much more pertinent.

Q: About withdrawing books having communal writings. Will you assure us that all such text books will be withdrawn?

A: Well, that is the objective -- to see that such books are not circulated in the educational institutions. The ones that came to our notice, we drew pointed attention to that. But I think it may not be correct to say that each and every book that may be existing has been withdrawn. As and when notice is given to us and we come to know about it, there is a machinery which has already been set up under the NCERT and a Review Committee is doing it and that is how we have to deal with it.

Q: What is communalism?

A: Now you don't want a discussion on communalism and definition of communalism here. The fact is that if certain text books have certain lessons which are seen by experts and also in common perception to have certain portions which are not in consonance with the general approach to national integrity and our secular values, attention was drawn to those text books. They have been published in the press over the last 20 months. It is those text books which we took up, and they have been withdrawn. If there are any more there we will have to find out. So far the ones which have been withdrawn, we will circulate a list.

Q: A list has already been circulated.

A: Do you want something more than that? That is what I am saying.

Q: Mr. Sharad Pawar has come out with a statement on Harshad Mehta that he should be given political protection. Do you share his view?

A: Now I can understand the reason for this large presence today. Thank you, Madam, for enlightening me.

Q: We wanted to be educated on that.

A: Can I make a very simple appeal? Don't misunderstand it. Of course, I will be educated by you and I don't know whether I can educate you. I would solicit your, which you must as a parent already be giving, total support to the campaigns that we are engaged in - for total literacy, education for all and other subjects which are of direct interest to me.

Q: That support is overwhelming.

A: Having secured this assurance from you, since you have raised the matter, I would rather be precise and therefore I have brought my views on the matter, reduced them to writing and I will read it out to you. We could even circulate it.

"The Rs. 5000 crore scam is the biggest scandal to have surfaced in the post-Independence history of our country."

Well, if you want I can read it out, because after having read it out there is nothing else to answer.

"While simple farmers have to run from pillar to post..."

Q: It is better you circulate it.

A: I will circulate it. Let me read it out.

".....to get a loan of a few thousand rupees, certain people with access and connections have been able, according to public perception, to corner thousands of crores of rupees at the cost of the nation. Realising the gravity of the matter, the Government ordered a CBI enquiry and according to the wishes of Parliament constituted a Joint Parliamentary Committee. All the political parties are represented in this Committee and the terms of reference were drawn up by common consent. So we all have faith in this Committee which represents the will of Parliament and is headed by one of the seniormost and able Member of Parliament, Shri Ram Niwas Mirdha. We have no doubt that the JPC will get at the truth and unravel the nexus between corrupt elements who are involved in this scam.

It is in this background that on 3rd August `92, the Prime Minister said in the Lok Sabha and I quote:

"I had clearly stated earlier and should like to repeat once again that nothing would be allowed to come in the way of a complete investigation and full enquiry. The guilty shall be punished. There is no question of any attempt to protect the guilty, no matter who the individual or what his position in government or society".

Again speaking from the ramparts of the Red Fort on 15th August, 1992, as quoted by the Hindustan Times and the Hindu dailies on 16th August, 1992, the Prime Minister said:

'On corruption in high places and the Rs. 4000 crore securities scam there will be no compromise in meting out punishment the guilty.'

The next paper said :

"He said :- quoting the Prime Minister - Not only did the government act with speed after the scandal came to light and ordered a CBI enquiry, it also opted for a probe by a Joint Parliamentary Committee. I would like to declare that the law will take its course

and Justice will be done."

"This commitment has been made by the Prime Minister in all seriousness and I see no reason to doubt his intentions to implement it fully and this commitment has to be implemented in all seriousness to unravel the truth the scam has created." That is the end. Harshad Mehta wants political protection.

Q:
A: Well, I think whatever is legally permissible should be done, because this is a matter in which we should not try to rush in only about what we feel should or should not be done. Whatever is legally permissible to fulfil the commitment that has been made by the Prime Minister must be done.

Q: But considering the Prime Minister's commitment, the actions did not come out clearly.

A: I think the English language is very clear.

Q: The leader of the opposition wanted to work with the prime Minister. Do you think in that case, the Prime Minister will stand by what he had said earlier?

A: I was never in doubt that he would do what is required.

Q: Coming to education, the UP education project provides for appointment of 1000 odd more teachers. As it is 95% of the budget on education is going to the salaries of the teachers in U.P. With the appointment of more teachers, will you not be over-stretching the budget? Can't you re-deploy the same people in other schools?

A: Whether those already existing could also be utilized, that is what you mean to say. I am sure that can be looked into.

Q: But the project has already been prepared envisaging appointment of more teachers.

A: That does not mean that under any circumstances there could be no deviation. That is not the point.

Q: That must have been looked into.

A: Yes, but at this moment this is the parameter. But what you are saying can certainly be looked into.

Q: What is needed is greater use of audio-visual media to provide education.

A: That is why training is a very important ingredient of the entire thing. I mean teachers training.

Q: In Bhopal, the Working Committee meeting is taking place. All these matters, whether the Scam, the question of protection to Harsahd Mehta, the judicial pronouncement of Babri Tribunal have political implications. Don't you think all these should be discussed in the working Committe meeting? The tendency is to take all these key issues and push them under the carpet.

A: Well, I don't perceive any such effort. Naturally the Working Committee will have to address itself to all the things. Of course, the key issue and the primary issue will be Panchayat Raj, because that is what we have to project in the correct manner, but I can quite see your point how can we, sort of, totally refuse to look at anything else?

Q: The Prime Minister had supported the idea of Prof. Yashpal that in order to carry out the objective of mass education the students and teachers of colleges etc. Should work in this field during vacations. That idea was later modified by the planning Commission to have an extended summer vacation. What exactly is the position now? And secondly, now we are talking of Panchayati Raj. How do you intend to take the primary education programme to the Panchayati Raj institutions?

A: What you just mentioned as the first stage in the conception of literacy mission is entirely correct and that was the format on which this campaign was started. Subsequently it was found that perhaps it had too narrow a base and therefore to make the literacy mission not merely a mission for the government but a peoples campaign, it was necessary to widen the base and make it much more wide. I think this decision also was taken by the Council, under the advice of the Prime Minister, and at least we can say now that this decision was a very wholesome and apt decision because experience has shown that in all the States where this Mission is on now, it has really become a peoples' movement. There has been not a single State - there may be complaints about the implementation or the lack of it that way, but there is no controversy whatsoever in any State arises from differing perceptions, political or otherwise. So that means we have crossed the threshould of the basic problem that arises in all our campaigns that we might have a different thing and then we give it a political outlook and then we say, "this is right and this is not right. So we don't like that." Now this is peoples' campaign. The shortcomings are to the extent we can do what we want to do. So I think there is nothing contradictory between those two.

Q: No, no, what I want to know is what is Government's stand now on the initial idea mooted?

A: I think you could not get at what I was saying. Actually the format has gone beyond only the vacation. Now only the student are not involved; thousands and thousands of people are involved who have nothing to do with ....

Q: That was the original idea, but it was found that it was not helpful. That is how it was then decided to have extended vacation.

A: You see, the point is that what you are saying gives the idea that a certain set of people who are in school format, teachers or students, are to be entrusted with this effort primarily and to enable them to do it effectively, it should be taken beyond the vacations. That is what I am saying that this is a thing which is supplementary; it is not the only basis on which it has to be done. Therefore, there is no contradiction between the two.

Q: No contradiction, but what actually happened?

A: Yes, many people are there already from the schools. No, not for vacation.

Q: You belong to a Hindi State, I belong to another State and we know that the Hindi States have not been very keen.

A: It is a fact that in many of the Hindi-speaking States, the mission has not taken off as well as it has taken off somewhere else. But that does not necessitate any change in the strategy. Yes,

more motivation is required, perhaps a little more effort is required, but the strategy is quite correct because if it is succeeding elsewhere there is no reason why it should not succeed in Hindi speaking States and I am heartened by the fact that lately even in the Hindi-speaking States, the whole campaign has picked up.

Q: What is your response to other governments removing the literacy primer? You have talked about removing text-books with communal things. But what about the Andhra Pradesh Government removing the literacy primer. How do you feel about it?

A: Well, I am being told that, that chapter has not been removed. If I have more proof on that, we will try to go into that.

Q: You just talked about motivation. But the problem is of lack of motivation in certain quarters of government.

A: Well, I did not know you had come with such a wide ambience to frame your questions. At the moment I was answering questions on literacy and there the motivation is a very vital factor as it is in everything else. But there shall be another occasion when I shall answer those questions. Have our own perceptions. That is another thing. But we cannot look at judicial pronouncements in this light. I would certainly not like to comment on it. It is a legal matter and if there is a legal way out, we should try to search for it.

Q: Do you think the Law Ministry responded properly by providing the right information?

A: Now you want me to sit in judgement over the Law Ministry. I am very sorry, I don't know.

Q: Coming back to education, some of the text-books have been withdrawn in Uttar Pradesh. But they are charging that same were prescribed in the schools in some of the President's ruled States. What is your reaction to that?

A: I think this question does not relate only to Uttar Pradesh; it concerns other States also.

Q: But are you taking corrective steps there?

Q: As and when matters come to our notice, we have been doing it. Previously there was some sort of reluctance but now even that is not there and specific decisions have been taken. That is what I am saying.

Q: Actually, in Madhya Pradesh ....

A: Well, I can't tell you the exact thing, but even in Madhya Pradesh there is no reluctance to any kind of change.

Q: You are already involved in political controversies and so on. How many more times you want to get involved in these?

A: I think at the end of this press conference you can compute the timing factor.

प्र. कॉंग्रेस के अंदर आप जैसे कुछ नेता जब साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बजाए होते हैं, दूसरी तरफ कॉंगेस के दूसरे वरिष्ठ नेता अपनी मौन स्वीकृति से प्रख्यात ब्यूरोक्रेसी की मदद से सोम-यज्ञ जैसे कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इस तरह का डबल स्टेण्डर्ड पार्टी में चल रहा है। इसके बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

उ. क्या कर रहे है?

प्र. सोमयज्ञ जैसा आयोजन कर रहे है जिसे पूरी ब्यूरोक्रेसी और आपकी ही पार्टी के नेताओं का पूरा समर्थन है। इस तरह के डबल स्टेण्डर्ड पार्टी में चल रहे है। इस बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

उ. मुझे नही मालूम इस यज्ञ में किस की आहुति हुई। लेकिन एक बात तो स्पष्ट है चाहे कोई भी पार्टी हो या कोई भी हो, प्रत्येक व्यक्ति को इस बात की स्वतंत्रता है कि वह धार्मिक मामलों में जो करना चाहे वह कर सकता है इसमें एकरूपता कभी लाई नहीं जा सकती है।

प्र. आप व्यक्ति की बात कह रहे है वह पार्टी की बात कह रहे है?

उ. मै इससे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। काँग्रेस पार्टी ने किसी भी स्तर पर पार्टी का फैसला करके इस यज्ञ में शामिल होने को नहीं कहा। इतना मै कह सकता हूँ। हाँ, पार्टी के बहुत से लोग गए है, व्यक्तिगत रूप से गए है।

प्र. जो चेंज हुआ इस यज्ञ को लेकर?

उ. जिस चीज की हम को पूरी जानकारी नहीं है मैं उसमें कैसे टिप्पणी कर सकता हूँ।

प्र. महाराष्ट्र गवर्नमेंट ने प्राइवेट इंजीनियरिंग कालिजेज में एडमिशन के लिए इस साल से 30 हजार रुपये केपिटीशन फी रखी है। क्या आप वह फीस लेने की अनुमति देंगे?

उ. मेरी अनुमति की जरुरत नहीं है क्योंकि यह विषय तो मुख्यतः प्रदेशों का ही है। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट से उद्भूत बहुत सी समस्याएँ हैं इसलिए जिस हद तक भी एक युनिफार्मिटी रह सकती है उस पर विचार करने के लिए और कोई सर्वमान्य रास्ता निकालने के लिए 17 तारीख को मैंने प्रदेश के सभी माननीय शिक्षामंत्रियों को, सचिवों को यहाँ बुलाया है। हम लोग बैठकर देखेंगे कि किस प्रकार से इस पर हम आगे कदम उठाएँ। क्योंकि एक तरफ सुप्रीम कोर्ट का फैसला है, सभी लोग उससे सहमत हैं। उसके कुछ परिणाम हुए हैं जिससे लोग प्रभावित हुए हैं। इस दोनों के बीच में सामंजस्य निकालना होगा। उस सामंजस्य को निकालने में हम सब लोग मिलकर प्रयास करेंगे। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि 17 के बाद अगर कोई ऐसी चीज सामने आएगी तो हम करेंगे।

Q: I will ask you a question about which you are quite sure.

A: Yes.

Q: About the Bihar Education Project, it was to be completed by 1995-96. Already two years have passed. We are nowhere near achieving even 40% or 50% of the target. Can you motivate the Bihar govt. to expedite this project?

A: Well, I think it will be a very tall order for anyone to motivate Bihar government ---- Laloo Yadavji at least. I plead total inability to motivate him. But I can tell you, let us be fair also, there was no doubt some difficulties in the beginning and Bihar Government was a little hesitant, for whatever reason it may be, I can't pass judgement over a State government, to get into the act, as they say, to implement this programme, so much so that it took fairly long time to divest an officer who was made incharge of this programme of all his additional liabilities. Ultimately that was done. I got the occasion to talk to the Chief Minister. He has redressed many of the other shortcomings and I can tell you that now the Bihar Education Project is poised to take off. Yes, there has been delay; therefore there will be delay in meeting the targets. You cannot make time stand still. But the project in Bihar now will go in the right direction, of this I am quite sure.

Q: How is the Charwaha vidyalaya project going on?

A: Well, that is another project which has been talked about sometimes ---- I am sorry to learn and sorry to say ---- in a derisive manner, as if the word "Charwaha" is something which denotes an entity which does not desorve to be noticed by us. Contrary to what others may have said, I feel that the very concept of this Charwaha vidyalaya is, in my view, a very correct and a very apt concept. I have said that in the meeting that we have had, publicly also when I visited Bihar and I have requested the chief minister of Bihar to give us a total project profile of the Charwaha Vidyalayas and I think it will be desirable and fruitful to integrate that profile into whatever we are trying to do for rural education.

Q: Have you got this information?

A: Not yet.

Q: When did you ask for it?

A: I think more than 7 months.

Q: मानिटरिंग उसकी हो रही कि नहीं?

A: मानिटरिंग तो राज्य सरकार करेगी। हम उसके क्या मानिटरिंग करेगें।

Q: University education in Bihar is also in bad shape. Is the Central Government doing something in that direction? Teachers are going without salary also.

A: Well, there was some agitation also there.

Q: It is still going on.

A: Still going on? Naturally I can't be passing judgement on the issues that are involved in that agitation. I tried to help out the State government with the release of certain grants which were help up. I think to the tune of approximately Rs. 20 crores about the teacheers' salaries and all those things. But basically it is the responsibility of the State Government to resolve those issues.

Split in Congress will weaken the country

2 सितम्बर 1993 खलीज टाइम्स के श्री विक्रम वोरा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है:-

Q: At this moment how do you see it? You see it as an entity coming together or still some desperate elements trying to find ....

A: No, I don't see any desperate elements. There may be slight difference in perception as to how we should gear up and how we should moblise. That is very understandable in a good party like ours. But so far as the central objective of fighting the communal and divisive forces is concerned, I think there is absolutely no discordant note on that.

Q: The press plays you up sometimes as one of the desperate elements. Do you accept that image that is being prepared by the papers, including the ones this morning.

A: I am certainly no desperate element, neither am I a dissident. I am basically a Congressman

and I have had the privilege to be in this organisation for 33 years now and I do and say what I think is in the best interests of the party.

Q: But do you think what you are saying and doing now is helping in bringing it together, or do you think it is creating more tension?

A: Well, if it is something for the good of the party, I am sure it will have the effect that it is desired to have.

Q: Do you think the press plays a positive role at the moment, or do you think it is selling the stories ....

A: I think I would not like to comment on what the press does. They have a right to do what they want to do.

Q: Coming to another point, especially from our point of view in Dubai, there has been a certain amount of communal tension in the last six months, definitely. We are living in the Middle East and Gulf countries do feel that there is strain in relationship. When we talk to the other press people and the diplomatic corps, in some fashion you are being propelled as a person that the Muslim community ---- Indian or the one living in the Gulf ---- seem to think as more likely to protect their interests than anybody else in the Congress party. How do you feel this has come about Do you think you have contributed to it by your actions, or it is just an ambience that has been created?

A: Well, I have not done anything to create this ambience. I have only been stating and re-stating time and again the basic Congress ethos on this issue, which is not something which has been acquired recently; it is very much there. The interests of the minorities has always been treated by the Congress party as a matter of trust and the Congress party has beliefs in the pluralistic and secular identity of this country and to protect and project that identity is the basic political philosophy of the Congress party. And that is what I have been saying.

Q: Do you think it lost sight of that?

A: No, it has not lost sight of it, but the actions of some of these communal parties are trying to create an impression as if these things don't matter. But I think they do matter and as far as Congress is concerned, we cannot ever deviate from that.

Q: In the event of Congress having a hard time against the BJP in the November elections in the four States, will it be seen, do you think, as a danger signal by the people in the Middle East and the Gulf Muslim world and as a defeat for secularism in India?

A: Well, it is never appropriate to speculate, but I am not speculating, and naturally what the electorate has in mind it is very difficult to fathom also, but I personally think and firmly believe that such an eventuality will not arise in India where sectarian and communal parties come to the centre stage of Indian politics.

Q: Do you see yourself at the moment as verbal vigilant for the Congress party?

A: Well, I am not a vigilant by any description. But I only see my role as the role of any committed Congressman.

Q: If you recall about two months ago there was a feeling that there is a deliberate shift in the Congress party to split into two different groups, thereby perhaps it would be able to fight the BJP in November elections. Has that idea died away by now?

A: You see, the idea of a split in the Congress party is not an idea which should even be thought of, what to say of implementing it, because a split in the Congress would weaken the secular forces in this country and therefore if anybody has those kinds of ideas, at least I would be the last person to in any way support such a suggestion. Whatever further needs to be done to reinforce the confidence of all sections of the people in India, that you can do. But to split the party is something which cannot be entertained at all.

Q: Is there an underlying sensation when you speak that you are still not too happy the way the things are, that there is still a lacuna in gaining the confidence of the people and there is still fragmentation within the party?

A: I think the ground realities in the country, how so ever much we may like to wish them away, cannot be wished away. There has been a crisis of confidence which was created after demolition of the Babri Masjid. Now a lot of grand has been regained since then. But to say that nothing more needs to be done, I don't think is the right thing. And therefore as a practical and pragamatic approach to the political scene in India, we should continue doing things which would further reinforce, and it is not only a question of regaining the confidence of the Muslims because there is no Muslim or Hindu card. The Congress has always been playing the Indian card and to that extent whatever needs to be done has to be done.

Q: It is actually a very good point you have made because one of the charges made by a leasser paper here against the Congress party is that they talk of fighting the communal and divisive forces, but then when it comes to Muslim psyche, they don't take appropriate measures. For instance there was a statement by Imam Bukhari which was published, though rightly or wrongly I don't know, that millions and millions of Muslims are kept .... in India. When there are these kinds of statement ....

A: I think we should not also attach more than necessary importance to statements like these because it is totally irresponsible to say anything like that.

Q: I think our image has been bettered. Sometimes when yo come back home for four or five days, everyone is so sanguine about it, *chalta hey* kind of thing. Outside it is hurting.

A: No, I don't think anybody here who is at all serious about one's own country can say: Chalta hai (चलता है)

Q: But generally in public when you meet people, we are hurting more than necessary when it comes to assessment of our country. Our calculation problably has been too sanguine, definitely in the Gulf.

A: No, these thing should not be taken lightly.

Q: There is no doubt about it. Do you think the government has now made a foreign policy update on these countries? Are we giving them a little more importance than we used to? Or are we to turn from Pakistan to London, so to speak, as they say?

A: Well, I think only in the Gulf and Middle East but also in Central Asia where a number of new Republics have emerged out of the Russian system, we are giving adequate attention to all these new countries and the Gulf countries.

Q: What are your priorities as a senoir member of the Congress party between now and November? Do you have some kind of platform for anything specific? Or let us say, from the public point of view, you are a very sound critic and people look forward to your criticism. They feel that you are angling well and you will not let things go out of hand and that you will pull the line when you have to. Do you have anything concrete that you would put forward as performance for the future in this trial in November in these four States?

A: Yes, I think it is not a question of what I am going to put forth; it is the party which will have to put forth. You will have to, first and foremost, give the impression, which is already there but you will have to further strengthen that impression that we are not prepared to make any compromise whatsoever on the issue of a secular and democratic policy, from whatever quarter it may come. Number two, the economic policies that have been followed, are in the right direction ---- the liberalisation programme and all that ---- and at the same time we will have to re-assure those sections of the people in India who live below the poverty line ---- their number has now come down a great deal, but there are still 20-25% people who live below the poverty line ---- they have to be assured that in this liberalisation effort their basic interests would not be jeopardised.

And number three, self-reliance, all the way, in every sphere of activity is the cenral point of our approach to all the policies and programmes.

And number four, protection to the life and liberty of citizens irrespective of their denomination ---- religious or otherwise ---- their security is an article of faith which you cannot in any way violate.

Q: They are just carrying on. But you are hopeful about November elections?

A: I don't think the BJP is going to sweep the polls ---- not by any chance.

Q: Are you travelling a lot?

A: Oh, yes.

Q: Are you going to be making a trip to our side of the world?

A: I am travelling in the country at the moment.

Q: I won't keep you longer. We might like to come down again ....

A: Most welcome.

Q: .... and meet you. It won't be a problem?

A: Absolutely not.

Q: You have been to Gulf earlier?

A: Yes. I went to Farjah for telecommunication. That is when I went to Dubai.

Q: We would like to hear you clearly vis-a-vis those people. There is a little tension we feel at the moment.

A: May be, in one of my trips. I am going sometime in October.

Q: It will be very wonderful. It will be good if you dropped in for a day or so.

A: I am going to UNESCO. So I can come one day earlier and from Dubai I can catch the plane.

Q: Why don't you do that? I think that will be wonderfull. They are very keen to meet you. You are still an enigmatic person. They have not been able to put you in a slot.

A: Perhaps you will resolve that enigma to some extent.

Q: It will be fun to have you. I think it will be nice. People will get another perspective.

A: The reason being, these days everyone wants to talk about issues and matters which are transitory.

Q: True. And exciting to sell the paper.

A: And exciting. The fundamental issues that every nation and every citizen has address himself in the context of his own country and in the context of international community normally do not attract that much of attention.

Q: They have to see how to work the dollar, in that sense. They are more academic. That is all. Thank you very much.

निन्दक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय

2 सितम्बर 1993 हिन्दुस्तान के कार्टूनिस्ट श्री सुधीर तेलंग के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार

प्र: अखबार उठाते ही आप सबसे पहले क्या देखते हैं?

उ: कार्टून देखता हूँ।

प्र: कार्टून क्यों देखते है?

उ: क्योंकि दो कॉलम पढ़ने के बजाय कार्टून से ज्यादा समझ में आता है। विभिन्न विषयों पर कार्टूनिस्ट की क्या नजर है, उससे उसका नजरिया, उससे अंदाज पड़ जाता है, पब्लिक मूड किस विषय पर क्या है।

प्र: क्या आपको लगता है कार्टून देखते ही इस बात का पूरा निचोड़ मिल जाता है?

उ: समूचे अखबार से तो नहीं लेकिन तात्कालिक महत्व के विषय होते है उनके बारे में।

प्र: आजादी के पहले और बाद में माहोल में काफी फर्क आया है। एक जमाना था सरदार पटेल, नेहरू जी, राजगोपालाचार्य जी जैसे लीडर हुआ करते थे। उनके प्रति पूरे देश में काफी श्रद्धा होती थी और आपने वह वक्त भी देखा था और आजादी के बाद भी। उस समय के कार्टून और आज के कार्टून जो हैं उसमें आपको क्या डिफरेंस लगता है?

उ: जो समय में फर्क है वह उसमें भी प्रतिबिम्बित होता है। कार्टूनिस्ट कोई कोरी कल्पना तो नहीं करता, व्यावहारिक जीवन का ही प्रतिबिम्ब होता है। इस हिसाब से जो दृष्टिकोण है जो प्रतिक्रिया है किसी घटना के बारे में किसी विषय पर, जो फर्क उस समय से इस समय आया है वही कार्टूनों पर भी दिखता है।

प्र: आपको लगता है कार्टूनों के स्तर में गिरावट आई है?

उ: नहीं गिरावट तो नहीं कह सकता लेकिन एक तरीके से जो देखने, सुनने और कहने में जो फर्क आया है वही है। कोई गिरावट का सवाल नहीं है लेकिन अंतर तो जो है, है ही।

प्र: लेकिन आजकल के कार्टूनिस्ट शायद ज्यादा हार्श हैं, पहले शायद डेलीगेट हुआ करते थे, थोड़ा मुलायम किस्म के होते थे?

उ: हाँ, कहीं-कहीं ऐसी भी बात है।

प्र: शंकर और नेहरू जी की स्पेशल रिलेशनशिप हुआ करती थी। शंकर खुद नेहरू जी को एन्क्रेज भी करते थे। बल्कि शंकर वीकली के उद्घाटन के बाद उन्होंने यह भी कहा डोंट स्पेयर भी शंकर। शंकर ने उनको कभी स्पेयर किया भी नहीं। कार्टूनिस्ट और राजनीति के बीच में जो रिश्ता उस वक्त डेवलप हुआ था क्या अब वह रिश्ता बरकरार रहा या नहीं रहा?

उ: बहुत कम रहा। बहुत से लोग तो रिश्ता बनाना तो दूर रहा अवायड ही करते हैं जो कि सही बात नहीं है।

प्र: ऐसा क्यों होता है?

उ: मैं इसका कारण तो नहीं बता सकता। लेकिन शायद कुछ लोग यह समझते हैं कार्टून बनाना हमारा मजाक उड़ाना है। बिल्कुल संकीर्ण दृष्टिकोण है लेकिन कुछ हद तक सही है।

प्र: आप क्या समझते हैं?

उ: मैं कतई नहीं समझता। आजकल जो सबसे प्रतिष्ठित कार्टूनिस्ट हैं आर.के. लक्ष्मण बहुत अच्छा बना रहे हैं। बम्बई कभी जाता हूँ तो कोशिश करता हूँ उनके घर जाकर उनसे मिलूँ। मेरी समझ में अगर सही माना जाए तो भारतीय दृष्टिकोण रहा है कि अपने आलोचक को अपने दरवाजे पर बसाना चाहिए। अगर यह आलोचना है कार्टून का माध्यम तो इनसे नाराजगी का कोई अर्थ नहीं है। यह हमारा दृष्टिकोण है। मैं चाहता हूँ सब का यही हो।

प्र: सवेरे उठते ही अखबार में अपनी सूरत बिगड़ी हुई देखते हैं और आपकी पालिसी जो है उस पर कार्टूनिस्ट ने डट कर अटैक कर दिया है तो आपकी क्या प्रतिक्रिया है खुद के अपने कार्टून पर?

उ: मैं तो ऐसा समझता हूँ खुद का कार्टून इसका क्या मजबूत है वह अलग चीज है लेकिन एक दूसरा पहलू है वह समझना चाहिए। जो पहलू हमारी गय से खुद नहीं मिलता, जो दृष्टिकोण है उसको नजरअंदाज पब्लिक लाइफ में नहीं करना चाहिए।

प्र: आपको कैसा लगता है जब आप खुद की छवि देखते हैं?

उ: इसमें कार्टून में बना देने से हमारी शक्ल नहीं बिगड़ जाती है। इसमें ऐसा तो नहीं है लेकिन शक्ल जो है

वह तो है।

प्र: आपको बुरा लगता है या आप एंजाय करते हैं?

उ: कई हमारे साथियों ने कुछ कार्टून प्रेजेन्ट किए है मैं तो उनको फ्रेम करके रखता हूँ।

प्र: मैं आपको दूँगा कुछ कार्टून। आपके मनभाव बनाएँ। जैसी आपकी प्रतिक्रिया है, आपके परिवार और दूसरे लोगों की क्या प्रतिक्रिया है आपका कार्टून देखकर?

उ: मेरे यहाँ हमारी पत्नी है, बच्चे कभी-कभी आते हैं, प्रतिक्रिया उनकी पोजिटिव ही है।

प्र: सब लोग एंजाय करते है?

उ: जी हाँ।

प्र: हर कार्टूनिस्ट का अपना स्टाइल होता है। सब लोग पालिटिशंस को अलग-अलग तरीके से बनाते हैं। जैसे आपका ही कार्टून है, लक्ष्मण अलग तरीके से बनाते हैं, आबू का बनाने का दूसरा तरीका है, मैं बनाऊँगा तो और तरीके से बनाऊँगा तो आपको कौन सा कार्टूनिस्ट सबसे ज्यादा पसन्द है, आपको सबसे करीब लगता है?

उ: सार्वजनिक रूप से क्या ऐसा कहना चाहिए?

प्र: कहना चाहिए।

उ: सार्वजनिक रूप से इस पर क्या राय जाहिर करनी चाहिए?

प्र: कोई एतराज नहीं।

उ: आपको नहीं है लेकिन मैं समझता हूँ नहीं करनी चाहिए।

प्र: कभी-कभी अपने कार्टूनों को देखकर तिलमिलाने भी लगते हैं कि यह क्या बना दिया?

उ: अभी तक तो ऐसा अनुभव नहीं हुआ। यह सोचना अलग है कि कितना यह सही प्रतिबिम्ब है परिस्थिति का। यह बात हो सकती है हम उसके आशय से सहमत न हों। मगर तिलमिलनाने का कोई कारण तो नहीं है।

प्र: कहते हैं आजकल राजनीतिज्ञ जनता के बजाय कार्टूनिस्टों की सेवा में ज्यादा लगे हुए हैं। आपको कैसा लगता है?

उ: आपकी मैंने क्या सेवा की है।

प्र: मुझे आइडिया देकर।

उ: जिस संदर्भ में आपने पूछा उसी संदर्भ में पूछ रहा हूँ। मैंने तो कोई इस तरह की सेवा नहीं की।

प्र: राजनीतिक कार्टूनिस्टों की सेवा करें...

उ. अगर सेवा का मतलब यह है क्योंकि राजनीतिज्ञ हैं इसलिए कार्टून बनते हैं उस हद तक तो सेवा करते हैं हम लोग, चाहे आप मानें चाहे न मानें। हम न रहेंगे तो किस का कार्टून बनाएँगे। लेकिन किसी का बनाया इसके लिए सेवा करना मैं नहीं समझता कोई करता है।

प्र: कई कार्टूनिस्टों को देखकर ऐसा नहीं लगता चौबीस घंटे उनका काम सिर्फ यह है कि किस तरह का कार्टून हम बनाएँ?

उ: यह तो आपका अपना अनुभव है।

प्र: राजनेताओं और कार्टूनों के बीच जो डिवाइडिंग लाइन है क्या वह धीरे-धीरे कम हो रही है? पालिटिक्स खुद में ज्यादा हास्यजनक चल रही है कि कार्टूनिस्ट इसको हास्यजनक रूप से प्रस्तुत करे इसकी शायद जरूरत नहीं पड़ती?

उ: सामान्य रूप से ऐसा है यह तो कहना अनुचित होगा लेकिन कई अपवाद हो सकते है इसमें।

प्र: जब कार्टूनिस्ट आपके विरोधियों का माखोल उड़ाते हैं तब आपको कैसा लगता है?

उ: माखोल उड़ाने की प्रक्रिया तो मैं समझता हूँ सही नहीं है। कितना वास्तविकता के नजदीक है जो पेश किया जा रहा है यह महत्वपूर्ण है न कि कार्टून..... जो है वह कोई ..... निभाने के लिए तो ठीक है।

प्र: आपके विरोधियों की पालिसीज पर अटैक करते हैं कार्टूनिस्ट, यह आपके.... तरीके से, जैसे रिलीजन को ले लीजिए, रिलीजन पर कोई आदमी कामेंट करता है....?

उ: जिस हद तक अपने दृष्टिकोण से व्यक्ति को संतोष होता है, चाहे वह लेख हो या कार्टून हो उस हद तक तो होता है।

प्र: लोकतंत्र में कार्टूनिस्ट की क्या भूमिका होती है?

उ: मैं समझता हूँ एक बहुत बड़ी आवश्यकता है हर दम लोकतंत्र में ही नहीं आजकल के जीवन में है लोग अपने को और दूसरे को जो सामान्य प्रसंग आदमी का होता है उससे हटकर देख सके, दिखाने की कोशिश हो उससे तो अच्छा ही है।

प्र: जहाँ-जहाँ जिस देश में लोकतंत्र है वहाँ कार्टूनिस्ट पनपा है। हमारे देश में लोकतंत्र में प्रेस की फ्रीडम काफी रही है। यही वजह रही है कि नए कार्टूनिस्ट उभरे हैं इस देश में।

उ: मैं समझता हूँ आपका कहना सही है क्योंकि चाहे शब्द हों, चाहे चित्र हों, रेखाचित्र हों, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित होगी। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सबसे ज्यादा प्रजातंत्र में होती है, दोनों का सीधा संबंध है।

प्र: किसी कार्टून की वजह से कभी आपने अपनी किसी नीति में परिवर्तन किया है किसी समय? या कभी ऐसा लगा कि कार्टून सही बात कर रहा है?

उ: मुझे स्मरण तो नहीं लेकिन मैं समझता हूँ ऐसा हो सकता है हुआ हो।

प्र: आपके चेहरे पर कौन से फीचर सबसे ज्यादा पसन्द है कार्टून के लिहाज से?

उ: अपना चेहरा पसन्द करना कोई अच्छी बात थोड़े ही है।

प्र: जब हम फीचर्स को बिगाड़ देते हैं तो कैसा लगता है?

उ: मैं समझता हूँ जितना आप समूचे विषय पर स्वस्थ दृष्टिकोण रख सकें उस पर निर्भर करता है। कभी-कभी किसी को एक छोटी सी बात भी लगती है। मैं एकदफा बम्बई गया था तो वहाँ लक्ष्मण जी के यहाँ, मैंने एक सवाल पूछा था उनसे। आप इधर मेरे कार्टून बनाते हैं, अचकन पहने हुए बनाते हैं जो कि मैं पहनता ही नहीं हूँ। दूसरे मेरे फोरहैड पर कुछ बाल उड़ रहे हैं छोटे से, इसका क्या कारण है? जबकि ये दोनों चीजें नहीं हैं। वह हँसने लगे। उन्होंने कहा आपको सब ठाकुर-ठाकुर लिखते हैं उसमें, हो सकता है उसकी वजह से मैंने चूड़ीदार पायजामा और अचकन आपको पहना दी हो। मैंने कहा ठीक है। लेकिन बाल का? उन्होंने कहा ऐसा है कोई न कोई डिस्टिंक्टिव फीचर तो कार्टूनिस्ट को देना ही पड़ता है जिससे आइडेंटीफिकेशन हो सके। मैंने यह आइडेंटीफिकेशन बना दी। ठीक है।

प्र: अखबार में जब कार्टून न हो तो कैसा लगता है?

उ: रूखा हो जाता है थोड़ा सा? वैसे और भी चीजें होती हैं।

प्र: अखबार में कार्टूनिस्ट की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण लगती है?

उ: मैं समझता हूँ जैसा मैंने कहा दो कॉलम का लेख या आलेख जो भी हो एक कार्टून जो सभी परिस्थितियों

को निचोड़ कर अपना हास्य संदेश देता है काफी प्रभावशाली हो सकता है।

प्र: आप कार्टूनों को गम्भीरता से लेते हैं या मसखरी समझ कर हँसी में उड़ा देते हैं?

उ: ऐसी गलती मैं नहीं करता हूँ। कार्टूनिस्ट कोई हमारे दुश्मन तो हैं नहीं कि उनको नजरअंदाज किया जाए और कुदृष्टि से देखा जाए। दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, स्वस्थ उदार मन से उसको देखते हैं।

प्र: कहते है भारतीयों में सेंस आफ ह्यूमर की कमी है। आपको क्या लगता है ऐसा है?

उ: कुछ हद तक तो बात सही है खासतौर से राजनीतिज्ञों में।

प्र: हमारे देश में कार्टूनों का क्या भविष्य है?

उ: मेरे ख्याल से भविष्य तो अच्छा है क्योंकि जो नए कार्टूनिस्ट आए हैं हम देख रहे हैं उनमें रिफाइंड सेंस आफ ह्यूमर है। यह नहीं कि सब शंकर और लक्ष्मण का मुकाबला कर सकते हैं। अभी मैंने पूरे कार्टूनिस्ट नहीं देखे।

प्र: आपकी निगाह में बेहतरीन कार्टून कैसा होना चाहिए?

उ: बेहतरीन कार्टून तो वह होते हैं जिनमें कुछ लिखने की जरूरत न हो। कुछ छोटे-छोटे अक्षर लिखे जाते हैं कार्टून में। जिस कार्टून में कुछ लिखने की जरूरत नहीं है अपने आप सेंस कन्वे कर दें वही अच्छे कार्टून है।

प्र: जहाँ तक मुझे याद है आपके चेहरे को हर 4-5 दिन के बाद बनाना होता है?

उ: आप तो हिन्दुस्तान टाइम्स में ही बनाते हैं।

प्र: एक अभी मैंने बनाया था। रीसेन्टली। जब डिनर पार्टी चल रही थी काँग्रेस की, नरसिंह राव जी के सामने काँग्रेसजन खड़े हैं। उसमें काँग्रेस के मिस्टर सिंह भी हैं। आप को जरा हैवी बना दिया, मोटा सा। प्राइम मिनिस्टर की तरफ देख रहे हैं..... मेन पालिटिशयंस के सब के चेहरे हमें याद हैं लेकिन सबसे ज्यादा मजा आता है देवी लाल के बनाने में और वी.पी. सिंह में। इनका अलग होता है।

उ: रवि शंकर.....

प्र: आप से पहले.....

उ: जो आब्जर्वर में थे।

प्र: कुछ साल तक लोग कहते थे लक्ष्मण के बारे में, आबू तो केरल चले गए, मैं भी जाऊँगा त्रिवेन्द्रम में। कुछ साल पहले कहते थे यह जब चले जाएंगे तब फिर कौन होगा....

उ: मैं नहीं कह सकता।

प्र: हम नहीं कह सकते। 10-15 साल पहले सब चीजें....

उ: लेडी कार्टूनिस्ट तो हैं नहीं।

प्र: हाँ, कोई नहीं लेडी कार्टूनिस्ट है।

उ: क्यों?

प्र: शायद मुझे लगता है महिलाओं को काफी दबा कर रखा गया है। उनको हँसने की इजाजत नहीं मिलती।

उ: आप (श्रीमती सिंह) तो हँस रही हैं। आपका इन्होंने कार्टून कभी नहीं बनाया?

प्र: हमारी बेटी बनाने लगी है। समाज में इनको दबा कर रखा गया है शायद यही वजह है। एक-दो महिला आई है। यू.एस.आई.एस. वालों ने आर्टीकल भेजा था, एक कोई बूत्त - ब्लैक लेडी है कार्टूनिस्ट, हमारे देश में नहीं है। शायद महिलाओं में सेंस आफ ह्यूमर कम है।

उ: यह बात नहीं है। दे हैव एक्यूट सेंस आफ ह्यूमर। यह बात अलग है कि आपके सामने कहें न। आफेंस न हो जाए कहीं। थैंक यू वैरी मच।

BJP has no policy as such

16 सितम्बर 1993 फायनांसियल टाइम्स के संवाददाता श्री स्टीफन वागस्टाइल के साथ साक्षात्कार से प्रमुख अंश इस प्रकार है :—

Q: The election date has been set. How do you see the prospects of fighting the polls in the four States and how will you campaign?

A: Well, the fight will be fairly tough; there is no doubt about that. But I don't think there are insurmountable problems. The party will come out well in these elections.

Q: BJP have had a majority, they were the governing party. So they started with a position of strength. Many commentators say that their support has not fallen but has increased. Do you think Congress has a chance of winning in these States?

A: You see, that is fiction which BJP is trying to build. The fact is that in all these States they were in power for nearly 2 to 2-1/2 years and their performance in this period has not only been disappointing but in many cases very dismal and therefore, they have to face their record also. Especially in some of the States - e.g. Rajasthan, Madhya Pradesh and Himachal, their record has been totally anti-poor, anti-backward, anti-minorities and to some of basic democratic institutions like the panchayats -- the village panchayat, the district panhchyat -- they countermanded the elections. The farming community was taken for a ride by their announcement of ticking off the loans which they announced with great fanfare in 1990. You must have heard about it.

Q: Yes, cancellation of loans.

A: Well, that is something in which their record is so poor that the farmers have come to know what their promises mean. So it is not as if they are beginning with a head start and they will therefore have an edge.

Secondly, even in these elections there is no issue which is being posed by them - an issue which relates to the realities on the ground or relates to problems and priorities which the different sections of people are concerned with. There is no labour programme, there is no farmer programme except for vague generalities. There is no specific for the cooperative sector, the farm labour, the factory labour. I mean, there is no focus on any programmatic approach to issues. All that Communal stress will be heightened and they fell that, that will give them the leverage.

Q: And what will the Congress offer to voters in return?

A: The Congress will offer what it has been its standard and very long standing commitment --

programmes and policies that we have pursued which have paid dividends to various sections of the people, especially the less privileged and the poorer sections. Then on the reservations for backwards, which is a potent issue, the BJP has always stalled and tried to be equivocal on these things.

Q: If the elections go against you very badly, one can imagine that the BJP would demand general elections. Do you think that the government would then be under pressure to hold general elections?

A: I don't think that situation will arise. The rest of course is hypothetical. But the necessity for a midterm poll, I don't think it is imperative.

Q: What the Congress now stood for the contrast to what it stood for in the `50s' and '60s', to my mind, at least could be more clearly defined in terms of nationalist and to some extent socialist policies and programmes. BJP, at least in communal terms, is clear what it stands for even though it is wayward in its economic policies. Now what does Congress stand for today?

A: Any effort to compare what the Congress has stood for and stands for today, I think, is basically fallacious because there is no comparison. The Congress party, when you talk of, say, the '50s' of '90s' it must be clearly understood, does not have a static mind. The imperatives of 1950s, that means immediately after Independence, were totally different from those of the 1990's. But the basic theme and the basic thread that runs through our approach in the 1950s to the 1990s has not changed much. The manner of doing it would definitely change.

Q: For advancing this message of economic success, do you think the Congress should be rather more aggressive than it has been so far towards the BJP. Certainly a lot of newspaper commentaries indicate that you think that the Congress should be more aggressive.

A: I think the Congress is and what more needs to be done will be done.

Q: Do you think Congress is aggressive enough?

A: It is already and whatever more needs to be done will be done.

Q: Do you think it was a good idea to suspend the State Governments and State Assemblies in those States?

A: I think the Cabinet took a correct decision.

Q: You supported it?

A: Yes, certainly. So did the Cabinet. It is not a question of my support.

Q: Newspapers would suggest that you are whiping at the Prime Minister. Is that true?

A: I have not even sniped at the Prime Minister. On the contrary, on every crucial occasion I have tried to strengthen the unity within the party.

Q: How significant do you think corruption is in Indian politics. We recently heard accusation by Harshad Mehta, followed by a no-confidence motion in Parliament. At that time there were

some suggestions. That you might lose that vote. But as it turned out, you won and the crisis is over. But to an outside observer like me, it appears that corruption is an issue.

A: Corruptions definitely an issue and has always been an issue. But there has to be some tangible proof of it. In the case of Mr. Harshad Mehta, he has made an accusation. The Prime Minister and the party have denied it. The matter is being looked into by the Joint Parliamentary Committees and the Prime Minister has volunteered to appear before the Committee if they call him.

Q: What do you think is the root cause of corruption in Indian politics. Everywhere in the world, politicians needs money to operate. Politics is an expensive business. Do you there is something which could be done to improve the fund raising.

A: I think the electoral reforms which are being suggested from time to time and have not been yet put on the statute book, we should have a close and comprehensive look at it. The people want a fair and clean polity and it is incumbent on the political parties to ensure that. This can only be done when everyone sits together and hammer out a plan or a proposal.

Q: But the responsibility of the Congress is great because it is the ruling party and has been the ruling party over the last 40 years or so.

A: I think the Congress cannot shirk that responsibility.

Q: You yourself have been accused of some involvement in the lottery scandal. How do you react to that?

A: Well, that is something which people keep throwing at me. But the fact is that I am nowhere in that matter. Even the Supreme Court has said that there is no evidence on which anything can be said. You know in politics whether there is something in favour of somebody or not, even court decisions are twisted and turned and utilised. The fact remains that a small set of people keep saying it. Since then I have won three elections in which this was made an issue. So in a democracy after all, it is the people's trust and faith and their judgement which is the final arbiter.

Q: I think the one problem is your courts. They take so long in appeal and the verdicts are not clear.

A: In some cases. That is what I am saying. In my case it is already clear and still it is being hammered. I have taken it to the people. The opposition has taken it to the people, made it an issue in the elections. Therefore, where do we take the final sanctions? In a democracy, it is either a Court of law which is one part of the Constitution, or it is the mandate of the people. There is no third forum where you can go.

Q: I wanted to ask you another question. I know it is difficult for you to say what you want to. If

you ever became a national leader, what would you want to do with that position?

A: For every Congressman, there is a clear cut plan of action and that is what has come down to us as a legacy. That legacy will have to be honoured and implemented by every one.

Q: Among your responsibilities as Minister of Education, India has lagged behind other nations to develop Primary level education. Why is it so?

A: There are a lot of reasons which have gone into it, some historical, some social, some economic, some political also. In the first two decades of our Independence, there were so many pressing problems that somehow or other literacy and education did not get the importance and priority that should have been accorded to them. No effort was made; a lot of effort was made. Now, of course, since many of those things are on fairly proper level, highest priority has now been accorded to get over the backlog and also get over the hump in the programme for Leiteracy and universal education. It is now in India a people's movement which is pushing everything forward and we have just crossed the halfway mark.

Q: 100% literacy.

A: Yes. In the international levels. You must have heard of this Summit being held in December --"Education for All". It is a very laudable initiative of the UNESCO AND UNICEF because the nine most populated countries of the world that are assembling for this Summit account for 75% of the world population and therefore sharing of experiences, the comparative results would be of great practical utility to all of us and over and above everything else, the commitment to" Education for All" at the highest level will import a new impetus to the entire effort.

Q: You talked of political obstacles. What do you mean?

A: Well, what I meant was that sometimes people with whom the responsibility rested at certain levels thought that building a road or hospital of a thing, this was much more important. The political commitment that goes with something was to that extent not there. That is what I meant. Not that anybody was against it.

Q: When you said social considerations, a number of people think that caste attitudes cover Indian's attitude to education; people neglect to send their children to schools.

A: That is what I said, social reasons. People don't consider education of girls -- used to, not now -- marry them off young, no time to have education. All those things are changing and changing very fast.

Q: So you think by seven years' time, India ...

A: Yes, because I told you it has already become a people's movement and there are no political shades in it. This is also very important. All political parties are totally committed to it.

Q: I have been to Kerala which is considered to be well known in the field of literacy. What was

interesting there was students going to Bihar to take this people's movement there which is probability the most backward area. I think my half an hour is over. So thank you very much.

A: Very kind of you. When will this be published?

Q: By 30th September. And UNESCO conference will have participation by Education Ministers or .....

A: No, by the Prime minister and Heads of State wherever it is .... Around 16th December.

Q: Whom are you expecting from China? Prime Minister?

A: Yes. We are expecting him.

Q: When did such a senior person from China last visited India?

A: 1992. In December I think he came.

Q: So you will also be having bilateral discussions.

A: Naturally when he is coming.

Q: Is it the first time that the Summit of nine countries is being held in India?

A: It is the first time that such a Summit is being held.

Q: Ever.

A: Ever. And we are very conscious of the fact that we have become the hosts for this Summit.

Q: It must be very interesting for journalists.

A: Yes, must be.

Q: Thank you. Good bye.

Mandal Commission recommendations implementation

29 सितम्बर 1993 स्वीडिश जर्नलिस्ट श्री गर्ट होल्मर्टस के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Q: The first question is about the programme to implement the Mandal Commission recommendations. Why does the Government want to implement these recommendations now? This very question brought down the V.P. Singh Government a few years back. As far as I know, the Congress did not really support these recommendations at that time. Has the Congress (I) thought over its position and realised that it is a good thing to do, or is it because of the forthcoming State elections that it is a way of obtaining votes from the low castes?

A: You see, you cannot approach this question without going into a little backgrounds the entire reservation policy in this country. After Independence and the promulgation of the Constitution in 1952, it was felt by the Constitution-makers and the Government of India then, which was presided over by Pt. Jawaharlal Nehru, that apart from the scheduled castes and tribes, for whom reservation had already been provided for under the Constitution, there was a necessity to provide for reservation to other backward classes. We can't call them "low castes"; what

we call them is "other backward classes". As a consequence of this assessment and this decision, Pt. Nehru himself moved the first constitutional amendment in India providing for reservation to the backward classes. It is not Vishwanth Pratap Singh's pipe dream which people are trying to suggest. And as a consequence of that amendment in the Constitution, many of the States in India implemented reservation for backward classes. What Mr. V.P. Singh did was that the Mandal Commission which had given a report providing for a scheme of reservations, without consulting anybody -- even his party he did not consult -- Mr. Devilal, who was the Deputy Prime Minister, held a big rally here in Delhi and Mr. V.P. Singh felt that he was upstaging him and the threat to the government had already become visible; so to checkmate him in his own way, he suddenly announced that the Government of India has accepted the Mandal Commission's recommendations. He was in his right to do that. I don't dispute that. But it was not a measure which was taken after deliberate discussion and deliberate efforts to arrive at a consensus on this action which in a big country like ours is very necessary. This is what the Congress pointed out in Parliament and outside Parliament then. We never said that we are against the reservation for the backward classes. We said, please discuss it, let everyone has his say and decide the line of approach which is acceptable to all the political parties.

Now what happened subsequently is history. Then the Supreme Court had stayed it. It went to the Supreme Court and got stayed there. When this Government came to power in 1991, we never said that we want to do away with the reservations provided by the Mandal Commission. As a matter of fact, we gave a scheme to the Supreme Court from our side that the Government wanted this matter to be taken up in this manner. Now the Supreme Court had handed down a decision. We said that we will accept that decision and implement it. But before implementing it, the Government has take care to have a wide ranging discussion with all political parties in the country and when we arrived at a certain consensus on at least the vital points, that was decided by the Cabinet and announced. This is the reason why the kind of reaction that took place when Mr. V.P. Singh announced the Mandal Commission recommendations is totally lacking now. There may be protests here and there. But there isn't that kind of reaction which took place then. It is not as if the Congress party has suddenly woken up to the issue of reservations. It was always the Congress party's policy. We have implemented it in many States. We introduced the constitutional amenment to make it possible and now we have implemented the Mandal Commission recommendations also. This is the true background of this whole thing.

Q: How is it possible to implement a scheme like this? To me as an outsider it seems extremely complicated, Thousands of groups have to be accommodated. Is this actually the way to run

an efficient government and State bureaucracy? You should get the right people for the right posts.

A: You cannot have a cut and dry line of demarcation in India where issues of social justice are concerned. If I were to consider only that I want to employ, say, 10 people, I will take the best out of 20 that are available, or 15 that are available, that would be one way of thinking on it. But in a country where social inequalities are fairly large and fairly sometimes even intense, to produce the social harmony which makes the situation amenable to reasonable governance, we have to take these things into account. And in taking that into account, we must not lose sight of certain basic things. But at the same time, the measure of acceptability of this kind of action cannot be judged purely by what a section of the people say who are not backward, or who are not tribes, who are not scheduled castes. The measure will have to be gauged by what the people who belong to those sections of the people feel about it, because if you have a large area of discontent, then it will be quite a different scene altogether. And therefore, reconciling all these things -- I quite agree to the complicated thing -- I think we have been able to cope with the complications so far as the scheduled castes, tribes are concerned and also about the backward classes in the States for about 30 years now. So I think this will also be overcome here.

Q: What time frame does it cover? How long do you think it will take?

A: Well, it has not been given a certain time frame in which it has to be done. It has to be done. As of now it should start. That is all.

Q: Are you ready to face this challenge? Already there is an impression that the Government now is rather weak and has barely survived a no-confidence motion. Are you strong enough to face these elections and win them against the BJP?

A: I think we are quite confident of facing these elections and I see no insurmountable difficulties in ultimately winning the confidence of the people. Yes, it is going to be a tough battle. I do not deny that.

Q: What about the alliances with other parties? A lot is being said in the newspapers.

A: I think there is a lot of speculation in the newspapers, but there has been no decision on alliances. In any case, these decision are taken at the highest forum of the party. I cannot be commenting only in my individual capacity. According to our experience these alliances also come about just on the eve of the elections.

Q: What about the reported dissatisfaction among sections of the Congress (I) with the leadership of Prime Minister Narasimha Rao?

A: Well, it is a big party. There are many differing perceptions and the Congress party has been a democratic institution. But all that ultimately contributes to the strength of the party.

Q: You don't think it will harm you.

A: Absolutely not. What can it harm me about? When I am not the subject matter of enquiry, there is no evidence against me, Why should I bother?

Q: Just because of the mere fact that someone is trying to pin you down.

A: I don't feel that I am being pinned down. And the people know very well what is what. Yes, for writing in the press and all that, somebody is happy about it, that is all.

Q: If you compare it with the acquisitions against Harshad Mehta ....

A: There is no comparison at all. Absolutely not.

Q: Someone says something ....

A: Now, someone has said something. It has gone thought a process of enquiry. Supreme court has said something. I mean if the law of the land is to be treated separately where I am concerned, then I have no defence. Yes, if what is accused, I am guilty of whether it has been enquired into or adjudicated upon, then it is a different scenario altogether. But if what has been said has been subjected to the scrutiny of the High Court, the Commission also, the High Court and the Supreme Court, well, then that is the end of it. How do you compare it with any other thing?

Q: That is a different matter, but whatever the Prime Minister says, some people will still believe ....

A: You see, the Prime Minister's position is very clear. An allegation has been made by Mr. Harshad Mehta. The matter has been referred to the Joint Parliamentary Committee. The Prime Minister has said that if the Committee asks me, I will come and appear. He has denied it that this is all false. Now if the Committee calls him, he will go and testify. And the Committee will decide. I am quite sure that nothing is going to come out of it. I think this kind of mud-slinging does not help.

Q: If the opposition tries....

A: The opposition will try to move इसमें क्या है?

Q: There can't be smoke without a fire, or something like that they have said.

A: Then I think we should say good-bye to courts, laws. If law determines something and the Courts determine it and you still go on saying that, no, there must be some fire because there is some smoke, why have courts? You go on making whatever you want to say.

Q: This was my last question.

A: But I hope you will certainly use what I have said.

Q: After all it is on the tape.

A: No, no, it is on the tape, but in your interview it must occur, otherwise if you just say, he said

this, unless you give the sequence and the full details of the matter. I would expect that one.

Q: I will try to do my best. Okay.

A: Thank you.

राजनीति में भ्रष्टाचार के आरोप हथियार है

11-12 अक्टूबर 1993 माया के लिए श्री राजीव सक्सेना एवं श्री रामशरण जोशी को दिए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्र: भोपाल की गेस त्रासदी के बाद सुना है आपने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देने की पेशकश प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के सामने की थी?

उ: श्री राजीव गाँधी ने 31 अक्टूबर 1992 को प्रधान मंत्री की शपथ ली रात को इन्दिरा गाँधी जी की हत्या के बाद। समझ लीजिए एक महीना ही गुजरा होगा। यह घटना हुई। वह कहीं साउथ में टूर पर थे। वहाँ से सीधे आए थे। अस्पताल से घुमा फिराकर जब वापस छोड़ने गया तो गाड़ी में मैंने उनसे पूछा कि मेरे मन में तो यह विचार है कि मैं आपके जाने के पहले यहाँ एयरपोर्ट पर इस बात की घोषणा कर दूँ कि मैं स्टैप डाउन करना चाहता हूँ। पूरी रिस्पोंसिबिलिटी ऑन करना चाहता हूँ। इससे चुनाव में कोई कम्पलेंट पालिटिकल अपोजिशन की तरफ से नहीं करेगा। आई.एम.क्लेमिंग रिस्पोंसिबिलिटी गैटिंग आउट। मेरी तरफ उन्होंने ऐसा देखा और कहा कि इससे काम बन जाएगा क्या? मैंने कहा पार्टी का काम बन जाएगा। कुछ लोग आपके सामने इस बात को लाएँगे, अपोजिशन भी लाएगा और अपने लोग भी लाएँगे। उनका एक दिमाग था। उन्होंने एटीट्यूट वर्ड यूज किया था, जो प्रक्रिया है उसमें तबदीली लानी होगी। कोई गलती हो तो उसके लिए तैयार रहना चाहिए। टु पे द प्राइस। लेकिन परिस्थिति ऐसी निर्मित हो जाए कि जिसमें गलती नहीं है और दूसरे लोगों को संतोष के लिए कुछ-कुछ करना मैं ठीक नहीं समझता। इफ आई एम कन्वीन्स्ड दैट यू आर रिस्पोंसिबल आई वुड हैव आस्क्ड यू। यू गैट एहैड सी द प्रोपर अरेंजमेंट आर डन। ठीक है कुछ ऐसा घटनाचक्र है कि कुछ ऐसी बातें हो गई के इतिहास ने दूसरा ही मोड़ ले लिया। वरना ही वुड हैव ग्रेजुअली कम टु बी ए लीडर इन हिज ऑन राइट।

प्र: यह भी था कि आपने स्वयं खड़े रह कर गैस राहत का कार्य देखा?

उ: वहाँ पर फेक्टरी में जो रिसना हो गया था, उसके बाद भी काफी गैस बच गई थी। उसको सब को बंद कर दिया था। उस वक्त यह बात थी कि जब तक इसको निकाला नहीं जाएगा तब तक यह परमानेंट खतरा बना रहेगा। निकाला जाएगा और निकालते हुए अगर गैस फैल गई तो फिर क्या होगा? यहाँ के साइंटिस्टों से काफी विचार विमर्श करने के बाद एक तरीका निकाला गया कि किस तरह से इसको निकाला जाएगा। वहाँ अपोजिशन वालों ने हो-हल्ला मचाया। फिर से गैस फैल जाएगी और दूसरा हादसा हो गया तो। मैंने कहा साइंटिस्टों ने हमें एश्योर किया है कि ऐसा कुछ नहीं होगा। उनका कहा मानना चाहिए। लेकिन आप जानते हैं, ऐसे मामलों में अफवाहें ज्यादा महत्वपूर्ण होती है, बजाय तथ्यों के। उसको समाप्त करने के लिए मैंने कहा जब तक यह प्रोसिजर वहाँ चलेगा, तब तक मैं वहाँ मौजूद रहूँगा। उनसे तो नहीं कहा लेकिन जब आप रहेंगे तो मैं भी रहूँगा। हम लोग वहाँ करीब 8 घंटे रुके और पूरी गैस निकाली गई। न्यूट्रलाइज कर दिया गया। शायद मैं न रहता तो लोगों को कांफिडेंस

नहीं होता।

प्र: आप यह बताइए जब आप को सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में अपने परिवारजनों के लिए संघर्ष का सामना करना पड़ता है तब क्या चिंतन प्रभावित नहीं होता है, क्या कभी आपको ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा? क्या यह सत्य है? कि आपने कुछ सबूत पुलिस के हवाले किए?

उ: ऐसी घटनाएँ हैं लोगों की जानकारी में न आए तो अच्छा है। क्योंकि आजकल के मापदण्ड कुछ ऐसे हैं, शायद यह किसी को बुरा लगे यह क्यों हुआ। लेकिन हकीकत यह है। 1972 में ऐसी एक घटना हो गई कि हमारे फार्म के पास गाड़ी चलाते समय बरसात का समय था एक व्यक्ति को धक्का लगा। हमारा दूसरा पुत्र गाड़ी चला रहा था। कम उम्र थी। उन्होंने सोचा कि हम लोग यहाँ से चले जाएँ, घटना स्थल से, नहीं तो यहाँ कोई घटना न होने लगे। वह चले आए छोड़ कर। मैं भोपाल में नहीं था, शिक्षा मंत्री था, दिल्ली में कोई मीटिंग थी उसमें आया हुआ था। मुझे तीसरे दिन मालूम हुआ। जब मैं वहाँ गया तब-तक ये लोग इधर-उधर घूम कर भोपाल पहुँच गये थे। मैंने बुलाकर पूछा क्या बात है। उसने कहा ऐसा-ऐसा है। एकदम से साइकल पर वह जा रहा था उसने वह टर्न ली। मैं कंट्रोल नहीं कर सका और धक्का लग गया। तुम वहाँ से भाग आए। ड्राइविंग के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है कि अगर कोई एक्सीडेंट हो तो एक्सीडेंट के सीन से जाना नहीं चाहिए। जब तक कोई अधिकारी न पहुँच जाए। उन्होंने कहा मैं डर गया था, नर्वस हो गया था इस वजह से वहाँ से चला आया। जो काम हुआ उसके लिए दूसरा कभी कोई जिम्मेदार नहीं होता, न कभी किसी दूसरे को भोगना पड़ता है। मेरे मत में यह तरीका है मैं चाहूँगा 'ला मस्ट टेक इट्स कोर्स।' उन्होंने पूछा क्या होगा। मैंने कहा तुम को अरेस्ट कराना होगा, बेल देंगे, मुकदमा चलेगा। फिर मुकदमे में हमारा वकील तुम्हारी पैरवी करेगा और क्या होगा। उन्होंने कहा अगर आप ठीक समझते हैं तो मेरे लिए भी ठीक है। मिस्टर नागू थे आई.जी. उस वक्त, थोड़ी बहुत अखबारबाजी भी शुरू हो गई थी कि एक्सीडेंट में कौन था, क्या था, नाम तो किसी को मालूम नहीं था। मैंने नागू साहब को बुलाया और कहा कि ऐसी-ऐसी बात है। मैं समझता हूँ कि जिन्दगी में कुछ सबक आदमी को लेना चाहिए। और इनको सबक लेने का यह समय है। नागू साहब दोस्त भी थे, परिवार के साथ दोस्ती थी। उन्होंने कहा ठीक है। मैंने कहा आप जो भी कानून के मुताबिक कार्रवाई कर सकते हैं करें उनको बुलाओ। उनको अरेस्ट किया गया, मुकदमा चला, डेढ़ साल तक मुकदमा चला। लेकिन जब उनको बरी किया तो मजिस्ट्रेट ने यह कहा था इस उम्र में उन्होंने अपने आप इस बात को कबूल किया। ठीक है घटना स्थल पर यह नर्वस हुआ या डर गया यह अलग चीज है, लेकिन क्योंकि स्वयं कबूल किया इसलिए इनकी इंटेशनल गलती नहीं है। इसलिए इनको बरी किया जाता है।

प्र: अर्जुन सिंह जी, सार्वजनिक जीवन में ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो जीवन्त पर्यन्त निरापद रहे और औसत सभी को आरोपों के कठघरे में खड़ा होना पड़ता है। आप इसमें अपवाद नहीं हैं। आप स्वयं डी.पी. मिश्रा की सरकार में कृषि मंत्री थे। तब भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया शायद विनय कुमार दीवान नाम के विधायक थे, जिन्होंने ट्रेक्टरों के मामले में आपके खिलाफ कार्रवाई की माँग की थी। साथ ही इस्तीफे की माँग भी की थी। आज फिर उसी ढंग की स्थिति का सामना आपको करना पड़ रहा है। आपको अपने जीवन का अध्याय विडम्बनापूर्ण नहीं लगता?

उ. आपने जो बात कही वह बिल्कुल सही है कि आजकल राजनीति में यह एक महत्वपूर्ण हथियार है, जिसका इस्तेमाल लोग समय-समय पर करते रहते है। और इसके बारे में शिकायत करने का कोई सवाल नहीं है।

प्रतिद्वंद्विता की राजनीति में संयम रखना कोई मामूली बात नहीं है। जो भी स्थिति हो उसका मुकाबला करना अनिवार्य होता है। आपने दीवान साहब का जो प्रकरण बताया वह बात सही है। हम कृषि मंत्री थे, मिश्रा जी की केबिनेट में। उन्होंने यह आरोप लगाया कि रशिया के कुछ ट्रेक्टर्स आयात हुए हैं। उसमें यह साझेदारी है। कुछ नाम उन्होंने दिए मुझे याद नहीं है। मैंने उनको सदन में ही उत्तर दे दिया था इसका। सदन के रिकार्ड में है। बजाय इस तरह का आरोप लगाने के यह आशा करना कि आरोप मात्र से ही आपका काम बन जाएगा ऐसा तो हो नहीं सकता। आपने आरोप लगाया है वही आरोप शपथ पत्र के आधार पर आप लगाए। जैसे ही आपका शपथ पत्र आ जाए, मैंने उनके पास अपना मंत्रिमंडल से इस्तीफा भी भेज दिया था, दीवान साहब के पास कि कि जब आप शपथ पत्र मुख्यमंत्री जी को पेश करें तो यह इस्तीफा भी मेरी तरफ से प्रेषित कर दें। उसमें इंक्वायरी हो जाएगी और मेरा इस्तीफा तो है ही। इसके बाद कुछ सुनने को मिला ही नहीं। न उन्होंने सदन में उठाया और न सदन के बाहर। ऐसा ही एक और प्रकरण आया जब मैं मुख्य मंत्री था। सुन्दर लाल पटवा थे या कैलाश जोशी थे इनमें से एक लीडर आफ द अपोजिशन थे। 82 की बात है। बाद में वे 1992 में यह प्रेजीडेंट के पास मेमोरेंडम लेकर आए। चार्जेज लगा रखे थे। उसकी कोई निश्चित प्रक्रिया होती है। प्रेजीडेंट उसको प्राइम मिनिस्टर के पास भेजते हैं। प्राइम मिनिस्टर जैसा ठीक समझते हैं वह करते हैं। उसको उन्होंने प्रेजीडेंट को देकर पत्रों में रिलीज भी कर दिया। सदन में भी वहाँ उठाया। फिर हाउस में मैंने उनको यह कहा जो आपने आरोप लगाए हैं इन आरोपों को आप या आपकी पार्टी की तरफ से एक शपथ पत्र के साथ भेज दें और मैं अपना रेजिगनेशन प्रधान मंत्री के पास आज ही भेज देता हूँ। आपका शपथ पत्र मिल जाए जिस विधि से चाहें इंक्वायरी कराएँ। मेरा इस्तीफा स्वीकार करके किसी दूसरे को नेता बनाइए। उसके बाद उसकी भी चर्चा दुबारा नहीं हुई। आज तक शपथ पत्र न हम को मिला और प्रेजीडेंट को मिला। यह जो तरीके हैं चरित्र हनन का लहजा है। यह हमारी राजनीति का अंग है।

प्र: सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक कदम के पीछे एक चिंतन और अनुभव की प्रतिक्रिया होती है?

मध्यप्रदेश में मुख्य मंत्री काल के दौरान आपने बंधक मजदूरों की मुक्ति, खेत श्रमिकों को मालिकाना हक, शहर के झुग्गी वासियों और, रिक्शा चालकों में स्वामित्व का बोध पैदा करना, मंडल आयोग से पहले पिछड़ा आयोग के लिए महाजन आयोग का गठन, तेंदू पत्ता व्यवसाय का सरकारीकरण जैसे कदम उठाए इसके पीछे कौन सी प्रेरक शक्ति थी?

उ: मैंने आप को शुरू में बताया किन परिस्थितियों में बहुत सी बातें हमारे बचपन में हुई। ये सभी जो कदम हैं उनका कहीं न कहीं छुआता उस अनुभव से है। जिन बंधक मजदूरों को मैंने अपने कृषि फार्म पर उनको पूरी तरह से मुक्त किया था। उसी की परिणति इस कानून में करने की कोशिश मैंने की। क्योंकि शहरी अंचल में भी लाखों लोग ऐसे रहते हैं जो किसी छत पर उनका अधिकार नहीं है और न धरातल पर अधिकार है, करीब-करीब उसी श्रेणी में आते हैं इसलिए यह एक कदम हुआ।

जहाँ तक तेंदू पत्ते का सवाल है यह सोच तो मूलत: श्रीमती इन्दिरा गाँधी की थी कि आदिवासी और पिछड़े वर्ग का, गरीबों का जो शोषण ठेकेदार लोग करते हैं उसको समाप्त होना चाहिए।

प्र: आपने स्लम क्लीयरेन्स अभियान से शहरी क्षेत्रों में एक तरह का तनाव पैदा हो गया।

उ: सवाल यह है जिस भूमि पर वे लोग काबिज थे वह भूमि किसी व्यक्तिगत आदमी की तो थी नहीं। उस पर यह कानून लागू भी नहीं होता था। यह केवल शासकीय भूमि पर लागू होता था। उसमें यह भी था। ऐसा नहीं है कि जो भूमि दी गई है इस पर इनका सदैव कब्जा रहेगा। एक दफा उनकी स्थिरता हो जाए उनके जीवन

में और स्थिरता के बाद अगर उनको वहाँ से हटाना है तो बिना वैकल्पिक प्रबन्ध किए वह नहीं हटाए जाएँगे तो कम से कम सुबह दोपहर शाम अपनी रहने वाली जगह से फैंक दिये जाने का भय होता है और जो भ्रष्टाचार को भी जन्म देता है उससे वह मुक्त रहेंगे। बाकी रीसैटलमैंट होगा। अगर ऐसी जगह पर बसे हैं, जिसका सार्वजनिक उपयोग के लिए इस्तेमाल होना ज्यादा जरूरी है तो उनको कहीं और बसाया जाएगा। कई ऐसे कदम उठाए भी।

प्र: मुझे लगता है 1982 में आपने एक रिपोर्ट रिलीज की थी, बँधुआ मजदूरों के ऊपर। जो आपके इलाके के खिलाफ थी, आपकी सरकार के खिलाफ थी।.... संसद में भी उस पर काफी हंगामा हुआ। उस समय आपको परेशानी नहीं हुई?

उ: ये परेशानियाँ तो होती रहती हैं।

प्र: सामंतों के खिलाफ थी।

उ: हाँ, सामंतों के खिलाफ थी। सामंतों को परेशानी तो होती ही है, जब सत्य सामने आता है। सत्य से केवल सामंतों को परेशानी नहीं होती, बहुतों को परेशानी होती है। लेकिन जो सामाजिक व्यवस्था से जुड़े हुए सत्य हैं उनका उजागर होना इसलिए जरूरी है क्योंकि यदि भारत को एक प्रजातांत्रिक देश के रूप में आगे बढ़ना है तो इन सत्यों से साक्षात्कार जरूरी है और उनका ईमानदारी से निदान होना जरूरी है।

प्र: आपने पिछड़ों के लिए महाजन आयोग का गठन किया जबकि मंडल आयोग से काफी पहले की बात है। उसमें आपको कितनी सफलता मिली?

उ: मध्य प्रदेश में मुझे इसका कोई पुराना अनुभव नहीं था इस तरह के कार्य का। इसलिए थोड़ा इसमें समय लगा और कठिनाइयाँ भी आई। लेकिन यथार्थ है मध्य प्रदेश की आबादी का जो ढाँचा है वह हरिजन आदिवासी और पिछड़ा वर्ग का है, अल्प संख्यक बहुत कम हैं, इन को मिलाकर करीब 85-87 प्रतिशत हैं। इसके पीछे सोच यह थी कि अगर 87 प्रतिशत आबादी से जुड़े हुए प्रश्नों को हमें हल करने की दिशा में बढ़ना था। चाहे वह रिजर्वेशन का हो, चाहे शिक्षा का हो, चाहे वह अधिकार का हो जमीन पर, जैसे आदिवासियों के जमीन पर बहुत दिनों से कब्जा हो गया था उसको हटाने के लिए एक कानून बनाया। अगर इस तरह का प्रमाण मिल जाए जिस समय वह जमीन पर काबिज था, उस समय उस आदिवासी की सहमति से नहीं हुआ था तो वह कब्जा बेजा कब्जा करार दे दिया जाए। यह सब इसीलिए था कि हम मध्य प्रदेश के 87 प्रतिशत आबादी को अगर हम एक बेहतर जिन्दगी की तरफ बढ़ने का रास्ता खोलते हैं तो उनके अधिकारों की सुरक्षा देने की बात करते हैं। आखिर मध्यप्रदेश की तरक्की का तो रास्ता वही है। इसमें और कोई बात नहीं है।

प्र: 1986 में आपने कहा था, मध्य प्रदेश में पिछड़ों की राजनीति का युग शुरू हो गया। उस समय आपके दिमाग में क्या था?

उ: ऐसा है जो वंचित वर्ग है, पिछड़ा हो या आदिवासी हो, हरिजन हो, प्रजातंत्र की जो एक गति होती है और दिशा होती है उस को रोका नहीं जा सकता। जब उसको रोका जाता है तो विपल्व होता है या कि पूरी दिशा बदल जाती है, फिर प्रजातंत्र नहीं रह सकता। उस संदर्भ में मैंने कहा था। जहाँ-जहाँ प्रजातंत्र में लोगों को अपने अधिकारों का आभास होता चला जाएगा, अपने वंचित होने का आभास होता जाएगा तो निश्चित रूप से उसकी प्रतिक्रिया होगी, सामाजिक स्तर पर होगी और उसके बाद राजनीतिक स्तर पर भी होगी। क्योंकि बहुमत उनका है देश में। तो क्या होगा भविष्य में इसके लिए कल्पना करने की जरूरत नहीं थी।

प्र: 1985 में आप पंजाब के राज्यपाल बने। उस दौरान आपने आतंकवादी क्षेत्रों में दौरा किया होगा। क्या कभी आतंकवादियों से आपका कोई रोमांचकारी अनुभव हुआ? आपको अपने जीवन में भय नहीं लगा?

उ: खैर ऐसा तो कुछ नहीं हुआ क्योंकि वहाँ पर विचार करने और चर्चा करने का एक तरह से विश्वास पैदा करने के लिए कोई एस्टेबलिश्ड मीडिया नहीं था, मान्यताएँ इस तरह की नहीं थी। पूरा अस्तव्यस्त था संवादहीनता थी। उस संवाद को रास्ते पर लाने के लिए कोई मानदण्ड नहीं थे तो स्वाभाविक था कुछ एरियाज में ऐसा करना पड़ता था। जैसे संत लोंगोवाल थे। मैं इनके पास सीधा जा नहीं सकता था और यह सब को स्पष्ट हो गया था कि कुंजी उनके पास है। अगर हमें एक मोड लाना है, शांति का तो इसमें संत लोंगोवाल के बिना वह मोड़ नहीं लाया जा सकता। मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मेरे बिहाफ पर जाकर उनसे कुछ कहे और कहे तो उस पर विश्वास कैसे करें वह। मैंने उनको सीधा पत्र लिखा। अमृतसर में आए हुए थे स्वर्ण मंदिर में, मैं भी उस दिन वहाँ था। मैंने उनको पत्र लिखा था कि आप जिस सेवा भाव से अपने प्रदेश के लोगों के लिए विचार करते हैं मुझे उसकी जिम्मेदारी दी गई है। आपकी स्वत: सेवा, स्वप्रेरणा से विचार और मेरी जिम्मेदारी, अगर दोनों एक साथ हो जाए तो हो सकता है कुछ काम बने। संत जी को यह पत्र बहुत बेतुका लगा क्योंकि गवर्नर कोई इस तरह का पत्र लिखे यह सामान्य तो था नहीं। बल्कि कुछ लोगों ने हमें क्रिटीसाइज भी किया कि आपको ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। मैंने कहा, वह तो मेरे ऊपर छोड़िए। वहीं से शुरूआत होगी। एक संवाद से। इसी तरह से ऐसा भी हुआ जब चुनाव का फैसला हुआ कि चुनाव होना है तो यह बात सामने आई और चुनाव तब तक शान्तिपूर्ण नहीं हो सकते जब तक कि जो मिलिटेंट हैं वे इसमें सहयोग न दें या कम से कम इसमें हस्तक्षेप न करें। यह बात अगर करनी थी तो उन्हीं लोगों से करनी थी। मुझे एक साहब ने बताया कि यह आदमी इम्पोर्टेन्ट है, एक्टिव मिलिटेंट नहीं है, और न इसने कोई जुर्म ही किया है। जहाँ तक किसी के कत्ल की बात है यह मैंने सुनिश्चित कर लिया था तो फिर जब मिलने के लिए उन्होंने समय माँगा तो मैंने उनको दे दिया। उनकी शर्त यह थी कि सम्मान के साथ मिलने का मौका मिले। जब मैंने पूछा तो उन्होंने सम्मान का क्या मतलब है, बताया कि हमारी तलाशी नहीं होनी चाहिए। राजभवन के लोगों ने कहा कि यह बहुत मुश्किल है। बिना तलाशी के हम कैसे अंदर जाने देंगे। मैंने कहा कि उन्हें अंदर आने देना चाहिए। अंदर आए। लेकिन मैंने यह सुनिश्चित कर लिया था यह स्वयं किसी केस में इन्वाल्व नहीं हैं। उनके सिम्पथाइजर हैं, उनके साथ हैं लेकिन कोई आफेंस नहीं किया। वह अंदर आ गए। मैंने उनसे कहा इस तरह अगर चुनाव नहीं होगा तो आप कभी रास्ते पर आएँगे? लड़ना है तो तुम लोग भी फाइल करो। अगर कोई तुम्हारे ऊपर बंधन नहीं है, तो सभी चुनाव लड़ सकते हैं। बातचीत होती रही। जब चलने लगे तो मैंने कहा आप को किसी तरह की कोई दिक्कत तो नहीं हुई। आपने कहा था सम्मान से बुलाया जाए। उन्होंने कहा नहीं, किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हुई। लेकिन मैं अंदर आया हूँ यह अपनी जेब में पिस्तौल लेकर आया हूँ। ठीक है लेकर आए हैं तो लेकर चले जाइए और क्या हो सकता है। उन्होंने कहा अब मुझे भरोसा हो गया कि आप पंजाब में शांतिपूर्ण तरीके से एक नई व्यवस्था पैदा करना चाहते है। ठीक है जितना सहयोग हो सके आप दीजिए। यह तथ्य है उस चुनाव में शायद एक-दो घटनाएँ ही हुईं, बाकी सब ठीक हुआ।

प्र: 1990 में आप जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे थे। हृदय के आपरेशन के लिए आपरेशन थियेटर में जाने से पहले आपने अयोध्या विवाद पर एक भावनात्मक लेख भी लिखा था। शायद उसका शीर्षक था - कहाँ

हो मेरे राम, कहाँ हो मेरे अल्लाह, कहाँ हो मेरे ईसा। जब मृत्यु से साक्षात्कार संभावित लग रहा हो तब व्यक्ति को अपने परिजनों की याद आती है। लेकिन आपने ईश्वर का चुनाव किया। यह कौन सा अर्जुन सिंह था जो ऐसे नितांत नाजुक क्षणों में फुट कर निकलना चाहता था?

उ: मै समझता था, बाहर निकलने की बात नहीं थी। एक नागरिक होने के नाते जो सबसे कड़े संक्रामक काल से देश गुजर रहा था, उसका दबाव दिमाग पर था ही। इसका शीर्षक जहाँ तक मुझे याद है- 'मेरे राम, रहीम और ईसा, तुम कहाँ हो'। उसमें मेरी जो भावनाएँ थी उनको मैंने व्यक्त किया। इसका केवल उद्देश्य यही था कि शायद लोग ऐसा समझें कि इसके बारे में मै सचमुच चिंतित हूँ। अगर मैं शायद न बचता तो उसका कोई महत्व ही नहीं रहता। एक ऐतिहासिक बात रह जाती। बच गया हूँ तो स्पष्ट है मेरे लिए वह एक मात्र उद्देश्य है। क्योंकि उसमें मैंने यह भी लिखा था कि मुझे अच्छी तरह याद है आखिरी की पाँच-छः लाइनें। मुझे जो कुछ भी करने को मिला, जो कुछ मैं कर सका चाहे उपलब्धियाँ हो चाहे वह नाकामियाँ हों, मैं पूरी तरह से उनसे संतुष्ट हूँ, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। यदि बच जाता हूँ तो इसका अर्थ यह होगा ईश्वर मुझ से और कुछ सेवा कराना चाहते हैं। इसलिए वैसे क्षणों में परिजन तो सब थे ही, जीवन भर उनके साथ होता हूँ लेकिन कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं जब उसकी परिधि से बाहर की चीजें भी अपने लिए महत्वपूर्ण होती हैं और उसका कोई कारण नहीं दे सकता हूँ।

प्र: पिछले दिनों आप धर्म को लेकर विवादास्पद रहे। वैसे धर्म के संबंध में आपकी क्या मान्यता है? जब धर्म के प्रश्न पर व्यक्ति और समाज से आज की आस्थाओं का टकराव हो तो आप किसे प्राथमिकता देना चाहेंगे?

उ: धर्म की व्याख्या करना तो इतना आसान नहीं है। धर्म तो हर व्यक्ति क्या समझता है वही उसकी व्याख्या है, खास तौर से हिन्दू धर्म की। क्योंकि हिन्दू धर्म जैसा उदार, जिसको आप कह सकते हैं कि व्यापक दृष्टिकोण वाला, कोई दूसरा धर्म दुनिया में नहीं है। जिस धर्म में आस्तिक के लिए भी उतना ही स्थान होगा और नास्तिक के लिए भी उतना ही स्थान हो ऐसा कौन सा धर्म है? मैं तो नहीं समझता कोई दूसरा धर्म है। ऐसे धर्म के अंदर पाखंड को लाना या धार्मिक व्यवस्था को इस प्रकार से तोड़ मरोड़ देना, वह अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति का केवल कारण बन जाए इससे बढ़कर हिन्दू धर्म के प्रति और कोई अन्याय नहीं हो सकता। यह तो मूल में मेरी मान्यता है। दूसरी बात यह है कि धर्म की हमारे सामाजिक जीवन से बिल्कुल अलग कल्पना नहीं की जा सकती। हमारे धर्म तो इस कमरे में हो और हमारा सामाजिक जीवन उस कमरे के बाहर हो ऐसी मान्यता धार्मिक नहीं हो सकती। स्वामी विवेकानन्द ने स्वयं कहा कि सामाजिक जिम्मेदारी से जो धर्म नहीं जुड़ सकता है वह धर्म अधर्म है। और सामाजिक जिम्मेदारी हर व्यक्ति की अपनी-अपनी होती है, किसी की छोटी होती है, किसी की बड़ी होती है। कोई किसी क्षेत्र में होता है, कोई बाहर होता है तो भारत के अंदर मैं ऐसा मानता हूँ यही व्याख्या यही रास्ता धर्म का है जो हमारे मन के अंदर विचार हों या कभी भ्रान्तियाँ हो या टकराव हो उनको अपने धार्मिक सिद्धांतों पर केन्द्रित करके विचार को हल करने का एक रास्ता निकले उसमें से। दूसरा यह है कि हमारी जो सामाजिक जिम्मेदारियाँ हो उनमें पूरा तालमेल हो। उनको पूरा करने के लिए धर्म बाधक न बने, सहायक बने। जहाँ तक टकराव की बात है टकराव वैसे तो उठेगा ही नहीं यदि आप इस दृष्टिकोण से चलें। लेकिन हमारा जो संविधान है, अगर ऐसा कोई टकराव का सवाल आता है तो उस हालत में मैं समझता हूँ अगर उस संविधान के अंतर्गत कोई संवैधानिक जिम्मेदारी किसी के ऊपर है, सामान्य नागरिक को छोड़ दीजिए, अगर संवैधानिक जिम्मेदारी किसी व्यक्ति के ऊपर है तो उस संवैधानिक जिम्मेदारी को ज्यादा महत्व देना होगा और राष्ट्रीय धर्म का पालन करना होगा, अपना अकेला धर्म उसमें नहीं चल सकता।

प्र: भाजपा के दृष्टिकोण में आप हिन्दू विरोधी हैं, राम विरोधी हैं और मुसलमान के पक्षधर हैं। स्वयं के दृष्टिकोण में आप क्या है?

उ: न मैं राम विरोधी हूँ न मुसलमान विरोधी हूँ और न किसी धर्म का विरोधी हूँ। धर्म को समझने की कोशिश करते हुए मानवता के मूल सिद्धांतों के अनुरूप काम करने का हिमायती हूँ। अब उसमें कौन क्या सोचता है, यह तो मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखता। हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई, जितने भी धर्म हैं, हिन्दुस्तान में इन सब धर्मों का मूलाधार एक ही है। यह बात अलग है कुछ लोग धर्म का नाम लेकर उसका लाभ उठाना चाहते हैं। यह व्यक्तिगत उनकी इच्छा है।

प्र: आपको अध्यक्षीय राजनीतिज्ञ माना जाता है। आपकी दृष्टि में आपके जीवन में किस चिंतक या राजनीतिक व्यक्ति का गहरा प्रभाव पड़ा है?

उ: उस हिसाब से देश के अंदर उस पीढ़ी के सभी लोगों पर, जिस पीढ़ी का मैं हूँ जो एक तरह से आजादी के संग्राम और आजादी के बीच उस थोड़े से समय में वयस्क हुआ हो, स्वाभाविक है स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जो बड़े-बड़े नेताओं ने देश में काम किया उनका सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा। गाँधी जी का, पंडित जी का, सुभाष चन्द्र बोस जी का, इनका बहुत सीधा प्रभाव था। मैं यह नहीं कह सकता मैं उनके विशाल और उच्चतम चिंतन के मुताबिक काम करता हूँ, यह बात नहीं है। लेकिन दिमाग पर जो छाप पड़ती है, आज जो रास्ता है उस के ऊपर कैसे चला जाए, क्या किया जाए और जब कभी कोई कठिनाई का समय आए तो उनके अनुभवों से लाभ लेकर उस कठिनाई का मुकाबला किया जाए। विदेश में हम लोगों को फिलासफी में पढ़ाया जाता था थोरो को। गाँधी जी कहते थे दुनिया का सबसे पहला सत्याग्रही थोरो था। उसने हमें टेक्स दिया, उसकी दूसरे संदर्भ में फिलोसफी थी। लेकिन समाज के सभी बंधनों से मुक्त होने की अभिलाषा। उसके बाद भी ऐसा मुक्त न हो जो समाज के लिए अभिशाप बन जाए। उस परिधि में काम करने की जो मनुष्य की आकाँक्षा है, यह थोरो ने कहा था। उनकी बात का भी मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा। उस समय तो मार्क्स और लेनिन ये दो व्यक्ति थे इनके विचार बहुत प्रभावशाली थे - समाजवाद का, समानता का, इनका भी काफी प्रभाव रहा। एक दफा राजनीतिक जीवन में जब आदमी आ जाता है तो समझिए दैनिक जीवन में ऐसी चीजें होती रहती हैं जिन को यह नहीं कह सकते।

प्र: आपके संबंध में प्रसिद्ध है आपकी सुबह राजनीति से आरम्भ होती है और अंत भी उसी के साथ होता है। आपके जीवन में राजनीति के पश्चात् दूसरा स्थान किस का होता है? क्या गैर राजनीतिक चीजों के लिए समय निकाल पाते हैं?

उ: अब तो बहुत कम निकाल पाता हूँ। लेकिन राजनीति अपनी जगह है। दो चीजों के लिए समय मिल जाए- एक तो पढ़ने के लिए और दूसरा कभी-कभी परिवारजनों के साथ कुछ समय बिताने का, बाकी होबीज तो हमारी कई थीं - फोटोग्राफी और शिकार, लेकिन वह सब समय के साथ खत्म हो गया।

प्र: कभी राजनीति से सन्यास लेने की इच्छा होती है? कभी दिल में उमंग होती है कि एक मुक्त पंछी की तरह जीऊँ?... अगर हुई तो क्या करेंगे?

उ: मैं किसी समाचार पत्र का सम्पादक बनना चाहूँगा। लेकिन वह भी मुक्ति थोड़े ही हुई। वह एक दूसरा पहलू हो जाएगा, वह दूसरा बंधन हो जाएगा। लेकिन यह हर व्यक्ति को कभी-कभी अहसास होता है कि बहुत हो गया। अब रोज की झंझावातों से अलग रहकर बात सोचने का, लिखने का, पढ़ने का रास्ता निकालना चाहिए। जब यह भावना काफी जोरदार हो जाती है तो ही एक फैसला होता है। स्पष्ट है अभी यह भावना इतनी जोरदार नहीं हुई है लेकिन किसी दिन हो जाए, कोई ताज्जुब की बात नहीं।

प्र: कभी आपकी प्रारब्ध से शिकायत रहती है? या होती है?

उ: प्रारब्ध से शिकायत तो, क्षमा करेंगे मुझे कहना नहीं चाहिए, कायर लोग ही करते हैं।

प्र: आपने एक दफा कहा था सैनिक मरता नहीं है वह लुप्त हो जाता है। क्या आज भी इस कथन की प्रासंगिकता है?

उ: इस कथन की प्रासंगिकता सदैव रहती है और अभी भी है। सैनिक से मेरा मतलब सेना के संदर्भ में नहीं है। सैनिक से मतलब यह है जीवन के संग्राम में जो किसी न किसी तरह से लगा होता है। लोप उसमें होने का मतलब यह है उस संग्राम में कभी ऐसा दिखता है अब आखिरी संग्राम था और उसकी परिणति पराजय में नहीं हो रही है। अब आगे कुछ बचा नहीं है। ऐसा नहीं मानना चाहिए। जय और पराजय या कठिनाइयों या किसी तरह का अवरोध आता है तो आता ही है। उसमें साथ जैसे निभाना चाहिए उस तरह से निभाना चाहिए। और फिर किसी तरह से कोई नया रूप आएगा। यह मतलब है।

प्र: वर्तमान सत्ता प्रतिष्ठान, नेहरू कालीन युग की विभिन्न नीतियाँ प्रासंगिक समझ कर बड़ी चतुराई से त्याग रहा है। इसमें कहाँ तक सच्चाई है?

उ: कुछ लोग ऐसा चाहते हैं यह किया जाए। मैं इससे सहमत हूँ ऐसी कोशिश है। लेकिन ऐसा होना सम्भव नहीं है। इसलिए नहीं कि हम किसी काल में बँधे हुए हैं। क्योंकि ऐसा कौन कह सकता है कि 40 साल पहले जो पूरी तरह से व्यावहारिक था, आवश्यक था वह 40 साल के बाद भी इसी हद तक व्यावहारिक और आवश्यक होगा। सवाल यह है कि हम अपने जो गट्स हैं उनसे जुड़े रहना चाहते हैं या सम्बन्ध विच्छेद करके एकदम नया रास्ता चुनना चाहते हैं। जैसा कि पिछले 40 वर्षों में अनुभव हुआ दुनिया के कई देशों में। रूस के स्टालिन का जो युग था, लेनिन का जो युग था उसके बाद वहाँ एक ख्रुश्चेव की जरूरत पड़ी। उसने बीसवीं काँग्रेस में सब अपने पूर्व कालिक चीजों को तिलांजिली देकर एक नया अध्याय शुरू कर दिया। उसके बाद गोर्बोचोव आए। उन्होंने उनको तिलांजलि देकर एक नया काम शुरू किया। अब येलसिन आए जिन्होंने सब को किनारे कर दिया। मैं समझता हूँ भारत में न ऐसा होना अनिवार्य है और न आवश्यक है। यह कोई आज के समय की सोच नहीं है। भारत में कुछ चीजों की, कुछ विचारों की एक निरन्तरता का इतिहास है। बहुत सी चीजें बदलती हैं लेकिन मूल में श्रृंखला जोड़ सकते हैं जिनका आप न जाने अपने देश के किस काल से श्रृंखला जोड़ सकते हैं। यह अपना चिंतन है, अपने भारत की सोच है। इसलिए वह पूरी तरह से विच्छेद करके अगर आज कोई यह कहे हम पंडित नेहरू के समय के जितने विचार थे उनको तिलाँजलि देकर अब हम अपने ये विचार शुरू करते हैं, मैं नहीं मानता कि ऐसा हो सकेगा। जो ऐसा करेगा उसकी प्रासंगिकता कितने दिन रह पाएगी यह भी बहुत बड़ा प्रश्न है। हाँ, कई मामलों में नए परिवेश में हमें इस बात को ध्यान में रखते हुए अब अपने विचारों को नया आवरण देना होगा। जैसे औद्योगिक क्षेत्र में सबसे बड़ी बात होती है। कुछ गुलाम देश जब आजाद हुए और एक आजाद देश के रूप में अपने अस्तित्व को कायम करने की छटपटाहट रही तो स्वाभाविक है वह अस्तित्व केवल राजनीतिक स्तर पर तो नहीं कायम हो सकते। आर्थिक स्तर पर, औद्योगिक स्तर पर वैज्ञानिक आविष्कारों के क्षेत्र में, यह सब उसके अंग है। पंडित जी ने यह नहीं कहा 47 के पहले हमारे सब वैज्ञानिक हिन्दुस्तान में रहकर काम करते थे और बाहर से हमारे पास कुछ नहीं आता था। इसलिए अभी भी हम अपने अस्तित्व को बनाने के लिए बाहर नहीं जाएँगे। पूरे देश को दुनिया से जो मिल सकता है, लेने की बात उन्होंने कही। अगर हम कहें तो साइंटिफिक सोच और अन्वेषण का दरवाजा ही उन्होंने खोला। जो नेशनल लेबोरटरीज हैं वह उन्होंने बनाई, वही तो सूत्र बना। हमारे आज के साइंटिफिक, चाहे एटोमिक हो या

कुछ भी हो, जो ऐसे उद्योग थे, जिनकी हम अपने देश में स्थापना नहीं कर सकते थे जैसे हैवी इंडस्ट्री है, मशीन टूल्स इंडस्ट्री है, पंडित जी ने इनको बाहर से लेने में कोई इन्कार नहीं किया। भिलाई है, बोकारो है, हैवी इलेक्ट्रीकल प्लांट्स हैं, पावर प्लांट्स हैं, इन सब को बाहर से लाए। यह विचार उसके साथ जोड़ा कि हमें लेना तो चाहिए लेकिन हमें अपने देश के अंदर उसका उत्पादन और उसको आगे बढ़ाने की क्षमता पैदा करने की जरूरत है। वह क्षमता केवल एक दिखावे की न हो। क्योंकि हमें अपने पैरों पर खड़ा होना है, सेल्फ रिलायंस का बेसिक था। आज कोई भी कुछ भी कहता रहे, किसी भी पार्टी का क्यों न हो, सेल्फ रिलायंस के प्रिंसिपल को ताक पर रख कर कोई भी नीति हिन्दुस्तान में कारगर नहीं हो सकती। अगर आज कोई यह कहे सब कुछ दूसरों पर निर्भर हो जाना चाहते हैं, क्या जरूरत है यहाँ कारखाने बनाने की। यह सब चल नहीं सकता। यह है इसका पहलू।

प्र: स्वतंत्रता संग्राम के नेतृत्व के अंदर की पीढ़ी समाप्ति की ओर अग्रसर है ओर दूसरी और नेतृत्व की नई पीढ़ी में नई चुनौतियों का सामना करने की क्षमता का अभाव दिखाई देता है। राजीव काल तक करिश्माई नेतृत्व का वर्चस्व रहा है। आज किसी भी पार्टी के पास वह करिश्माई व्यक्तित्व नहीं है। क्या वाकई नेतृत्व संकट के दौर से विश्व गुजर रहा है?

उ: नेतृत्व संकट नहीं कहेंगे। नेतृत्व की नई विधा, नई शैली, यह जरूर बनना अनिवार्य है। जैसा आपने कहा करिश्माई व्यक्तित्व तो नहीं है। नेतृत्व तो नहीं है इसका मतलब यह नहीं है कि देश में नेतृत्व होगा ही नहीं। देश में नेतृत्व तो रहेगा। हम बिल्कुल 'ऑरफन' नहीं हो सकते, अनाथ नहीं हो सकते। लेकिन उसका स्वरूप बदलेगा। धीरे-धीरे उसके अनुसार आगे प्रक्रियाएँ बनेंगी, आधार बनेंगे, परम्पराएँ बनेंगी, मैं इसकी तुलना करता हूँ जो मैंने एक इन्टरव्यू में कहा था लेकिन लोगों ने उसका एक अलग अर्थ निकाल लिया। जैसे परिवार बड़ा हो और उसमें एक प्रमुख हो, वह काफी सयाना भी हो तो करिश्मा वाली बात नहीं। लेकिन एक वर्चस्व वाली बात परिवार में हो जाती है और जब वह अचानक चला जाता है तो परिवार में पाँच भाई हैं तीन बहनें हैं, पुत्र वधुएँ हैं, सब तो हैं। जब तक वह व्यक्ति जीवित था सब मुखापेक्षी थे, उसकी बात अंतिम बात रही। हम न भी चाहें मन मार कर उस बात को स्वीकार करना पड़ता था। जो करिश्माई व्यक्तित्व में, राजनीतिक क्षेत्र में होता है। लेकिन जब वह व्यक्ति परिवार का बड़ा है, चला जाता है तो परिवार समाप्त तो नहीं होता। नये संबंध पुन: स्थापित हो जाते हैं। जो सबसे बड़ा भाई है उसके साथ अगर बाकी भाइयों में परस्पर सम्मान और विश्वास के साथ एक साथ चलने की कोशिश करेंगे, तो बड़ा भाई बड़ा भाई रहेगा, उसका स्थान रहेगा। लेकिन वर्चस्व वाली बात नहीं रहेगी। और इस तरह के नये संबंध बनने शुरू हो जाएँगे। वही स्थिति देश के अंदर आज है।

प्र: एक तरह से सामूहिक नेतृत्व की विधा को विकसित करने की आवश्यकता है?

उ: सामूहिक नेतृत्व का एक पहलू हो सकता है, सही बात है। लेकिन परस्पर विश्वास और सहयोग चाहिए।

प्र: एक ओर प्रखर राष्ट्रवाद और पुनरुत्थानवाद को मुख्य धारा बनाया जा रहा है। दूसरी ओर उपराष्ट्रीयताओं की धारा बहुत तेजी से आती जा रही है। इन दोनों ही प्रक्रियाओं से देश की एकता और अखंडता को खतरा पैदा हो गया है। इसके लिए कौन लोग जिम्मेदार है?

उ: जिम्मेदारी किसी व्यक्ति की ही अंगुली उठाना लाजिमी होता है। और जो जिम्मेदार हो उसको ठहराया ही जाता है। इस पर ज्यादा गहराई से सोचने की जरूरत है। और गहराई से सोचना यह चाहिए कि हमारे देश का स्वरूप

क्या है। अगर एक भाषा, एक संस्कृति और एक धर्म वाला देश हो तो प्रखर राष्ट्रवाद शक्ति का संचार कर सकता है। लेकिन अगर ऐसा न हो बहुआयामी उसका स्वरूप हो तो प्रखर राष्ट्रवाद अगर किसी एक धर्म एक भाषा को लेकर सामने चलेगा तो अवश्यम्भावी है टकराव और वह बिखरेगा। इसके एक नहीं न जाने कितने उदाहरण दुनिया के इतिहास में बिखरे पड़े हैं। सबसे हाल का उदाहरण सोवियत यूनियन का है। वहाँ जातीय अस्तित्व जो है, वह हावी हो गया है। राजनीतिक स्वरूप खत्म हो गया। युगोस्लाविया भी है। इसलिए भारत के अंदर हमें अपने बहुआयामी स्वरूप को सुरक्षित रखने की जरूरत है। और उसके लिए निश्चित रूप से हमें समझौते आपस में एक दूसरे से करने पड़ेंगे। यही हमारे संविधान में बताया गया है, दिया भी गया है। अगर उस संविधान की परिधि के बाहर जाकर कोई वर्चस्व कायम करने की कोशिश करेगा, निश्चितरूप से देश के हित के विपरीत होगा। ये मान्यताएँ अगर दृढ़ होती चली गई तो हमें फिर खतरा पैदा नहीं होगा और फिर शायद किसी के खिलाफ उंगली उठाने का मौका भी नहीं मिले। लेकिन जो लोग बाहर जाने को तैयार है केवल अपने स्वयं के अस्तित्व को सब के ऊपर लादना चाहते हैं यह सम्भव होगा भी नहीं, उससे देश में बहुत खतरा पैदा होगा।

प्र: एक आरोप आप पर यह भी है कि आप भाजपा विरोधी और प्रधान मंत्री के पद की दौड़ से जुड़े हुए हैं क्या ये आरोप निराधार हैं?

उ: भाजपा विरोधी तो मैं हूँ, मेरा कोई किसी के खिलाफ व्यक्तिगत विरोध नहीं है। यह सोच तो भाजपा की सोच है, आर.एस.एस. की सोच है। वह तीन साल पुरानी तो है नहीं। वह तो आजादी के समय से थी और आजादी मिलने के तुरन्त बाद प्रमुख रूप से सामने आई। मैं केवल आपको घटना का उल्लेख कर रहा हूँ ताकि जो लोग ऐसा कहते हैं, उन्हें पता लग सके। 1947 में जिस वर्ष देश आजाद हुआ, जो कुछ देश का बटवारा हुआ उसमें जो वातावरण बना विवाद का, दुर्भावना का, संयोग से मैंने दरबार कालिज रीवा में प्रेजीडेंटशिप के लिए चुनाव लड़ा उस साल। उस समय आर.एस.एस. का काफी वर्चस्व था। जब चुनाव का समय आया तो स्पष्ट हो गया कि लगभग 70 वोट यूनियन के आर.एस.एस. के थे। उन लोगों ने आकर यह कहा कि आप आर.एस.एस. के खिलाफ हैं, यह सब हम लोग जानते हैं और दूसरे जो प्रतिद्वंद्वी हैं वह सोशलिस्ट पार्टी के ओंकार प्रसाद खरे खड़े हैं। उनको वह जीतने देना नहीं चाहते थे। उन्होंने कहा आप केवल इतना स्वीकार कर लीजिए आप हमारे मतों को लेने में कोई एतराज नहीं होगा। सार्वजनिक रूप से। मैंने कहा देखिए, मैं कुछ भी करने को तैयार नहीं हूँ। मैंने सभी छात्रों से अपील की है कि आप हमें समर्थन दें। आपको समझ में आता है तो आप दीजिए, समझ में नहीं आता तो मत दीजिए। उन्हीं 70 वोटों से हम हार गए। 1947 की बात है। यह ठीक है जब जिसको जो सुविधा हो वह बात कह दे। तब से लगातार आज तक हर मेरे चुनाव में हर समय विधान सभा के अंदर और बाहर मैं जिस पद पर रहा, सबसे हमारी प्रमुख विरोधी भाजपा है। यह कहना कि केवल दो साल के अंदर मैंने इस उद्देश्य से इस बात को किया है, माखौल उड़ाना है।

प्र: आप अपनी लड़ाई को तार्किक निष्कर्ष तक नहीं पहुँचा पाते हैं, मंजिल पर पहुँचने से पहले आपकी वापसी यात्रा शुरू हो जाती है। आपके समर्थक और विरोधी दोनों में ही ऐसी धारणा है। क्या यह धारणा सही है?

उ: इसके लिए जरूरी पहले यह है कि हमारा तार्किक लक्ष्य है क्या। जैसा मैंने कहा राजीव जी की हत्या के बाद जो परिस्थितियाँ देश में निर्मित हुई उससे यह स्पष्ट हुआ कि काँग्रेस का अस्तित्व बना रहना, काँग्रेस का मजबूत रहना ये दो ऐसे लक्ष्य हैं, जिनकी पूर्ति करना हम सब का कर्तव्य है। तार्किक लक्ष्य तो हमारा यही है। इसलिए

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मैंने कभी पीछे हटने की बात नहीं की। जैसा मैंने पहले कहा लोगों ने बीच में जो यह जोड़ दिया कि मैं नेता बनना चाहता हूँ उसके बाद उनकी समझ में तो यही आएगा कि मैं नेता नहीं बन पाया इसलिए पीछे हट गया।

प्र: भाजपा के पास राम कमंडल है और जनता दल के पास मंडल। काँग्रेस के पास क्या है?

उ: काँग्रेस के पास भारत की सोच है। न कमंडल है और मंडल है। वैसे शब्दों की बात तो अलग है। मैं यह कह सकता हूँ कमंडल में ही मंडल है और मंडल में कमंडल है। इसलिए यह कोई नहीं है। कमंडल का मतलब क्या है। आज हम उसकी विकृत परिभाषा में पहुँच गए और उसको दूसरी दृष्टि से देखते हैं। कमंडल कौन लोग लेते है? ऋषि मुनि लोग लेते हैं न? ऋषि मुनि समन्वयक थे या विध्वंसक थे? ऋषि मुनि के कमंडल को कोई लेता है अगर वह समन्वयक होता है तो अच्छी बात है और अगर वह कमंडल विध्वंसक होता है तो वह कमंडल हमारे देश का कमंडल नहीं है। वह कोई और ही कमंडल है। मंडल जो है जहाँ तक मैं मतलब समझता हूँ, सब के साथ। मंडल एक व्यक्ति का नाम है और उसी के नाम पर मंडल आयोग बना था। वह व्यक्ति थे, शायद मंडल नहीं होते, श्रीवास्तव होते तो श्रीवास्तव आयोग उसका नाम होता। लेकिन उद्देश्य जो है वह तो यह है जिन लोगों को समाज ने अभी तक बहिष्कृत करके रखा या उनको पूरा का पूरा सामाजिक न्याय देने का बोध नहीं कराया जाएगा। उनको समूचे देश के समाज में लाकर उनको स्थान दिलाने की कोशिश करना है। काँग्रेस ने आज से नहीं आजादी की लड़ाई के समय से यह विचार, यह दिशा दी। आजादी मिलने के बाद यह तथ्यात्मक बात है कि पिछड़े वर्गों के लिए जिनके लिए मंडल आयोग की तरफ से बहुत सी बातें कही गई हैं उनको उनका स्थान देने के लिए, उनको रिजर्वेशन देने के लिए संविधान में जो सबसे पहले संशोधन पेश किया था वह पंडित जवाहर लाल नेहरू ने खुद किया था।

प्र: अगले महीने 6 प्रदेशों में चुनाव होने जा रहे हैं। काँग्रेस की दृष्टि से आप चुनाव के नतीजों का जो परिदृश्य है किस ढंग से देख रहे हैं?

उ: ऐसा प्रतीत होता है धीरे-धीरे यह जुनून जो बीजेपी ने शुरू कर दिया था उत्तेजना, द्वेष, घृणा, धार्मिक मुद्दों को उभारना, अब बहुत कम हो गया है। धीरे-धीरे जो मुद्दे किसी प्रजातंत्र के चुनाव के लिए मुद्दे होते हैं, जो बनने चाहिए उन मुद्दों की ओर ध्यान आम लोगों का केन्द्रित हो रहा है। मैं ऐसा मानता हूँ अगर इस चीज को उजागर करते चले गए और साम्प्रदायिकता के साथ किसी तरह का समझौता न करने का विश्वास पैदा करते चले, धर्म पगयणता का विरोध नहीं है इस बात को उजागर करते चले तो निश्चित रूप से चुनाव में काँग्रेस को सफलता मिलेगी।

प्र: आज देश में तीन किस्म की राजनीति की धाराएँ बह रही हैं। एक है धन की राजनीतिक, धार्मिक राजनीति और दूसरी है धर्म निरपेक्ष व समाजवाद की राजनीति और तीसरी पिछड़े हुए दलितों की राजनीति। इनमें से आप किस का भविष्य देखते है?

उ: मूक दर्शक बनकर बैठकर भविष्य देखने की बात तो मैं प्रासंगिक नहीं मानता हूँ। भविष्य निर्माण अपनी तरह से होता है। लेकिन हर देश में जो राजनीतिक पार्टियाँ है और व्यक्ति है वह भविष्य का निर्माण कैसे और किस दिशा में हो, इसमें सक्रिय योगदान करने के लिए तत्पर होने की जरूरत है। मैं ऐसा समझता हूँ जो तीन बातें आपने कही है एक दूसरे के विरोध में, हम इस निर्माण को नहीं देख सकते। हम तीनों के समन्वय की दिशा में ही भारत का भविष्य देख सकते है। जो दलित है। उनको दलित की संज्ञा देना निरर्थक हो जाए या जरूरी न हो, यह उद्देश्य

होने की जरूरत है। धर्म के मामले में अधार्मिक होने की जरूरत नहीं है। जैसा मैंने कहा धर्म पारायण बने रहने की जरूरत है, लेकिन धर्म को तो राजनीति की सीमाओं से उसके अंदर उसका प्रवेश अनिवार्य न हो इस बात को हमें स्थापित करने की जरूरत है। देश के नव निर्माण में मैंने जैसा शुरू में कहा हमें पूरी तरह से सब की भागीदारी का अवसर देकर जो भी निर्माण होगा उस में सब की भागीदारी बने रहना यह आधार हो सकता है भारत के भविष्य के निर्माण के लिए।

प्र: वर्तमान आर्थिक नीतियों के परिपेक्ष्य में ऐसा नजर आ रहा है भारत से समाजवाद की विदाई हो चुकी है क्या आप इससे सहमत है?

उ: समाजवाद, मेरी मान्यता है कि काल्पनिक बात नहीं है। समाजवाद सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया निश्चित रूप से सब दिन के लिए एक नहीं हो सकती। इसका यह मतलब नहीं है कि हम पूंजीवाद को अपना लक्ष्य बना लें। यह जरूरी नहीं है कि हम समाजवाद को तिलांजली दे दें। लेकिन अगर हम सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में उसको लेंगे, तो हम उसके सही संदर्भ में, सही समय पर उससे निकलने वाले सिद्धांतों को प्रयोग में लाकर देश के निर्माण में, जैसा मैंने पहले कहा, ऐसा जिसमें कि सामाजिक न्याय हो, सम्पन्नता कुछ थोड़ी सी जगह पर सिमट कर न रह जाए, भागीदारी व्यापक हो, यही समाजवाद है। इसको मैं नहीं समझता एक दूसरे में परस्पर विरोधी है।

प्र: पश्चिमोन्मुख आर्थिक सुधार और उदारीकरण के संदर्भ में बताइए। इसका अन्य देशों में कोई बहुत अच्छा अनुभव नहीं है। क्या भारत को इनसे सबक नहीं लेना चाहिए?

उ: निश्चित लेना चाहिए। सबक न लेने के अच्छे परिणाम नहीं हो सकते हैं।

प्र: लाख इन्कार करें लेकिन विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का दबदबा बढ़ता जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को एक प्रकार से खुली छूट मिल गई है। पूंजीपति वर्ग भी ऐसा महसूस कर रहे हैं। इस संबंध में आपका क्या कहना है?

उ: किसी का दबदबा उसी हद तक बढ़ने की बात होगी जब हम उसकी तरफ से उदासीन हो जाएंगे। या एक तरह से कहिए अपनी जिम्मेदारी को निभाने की तरफ सतर्क नहीं रहेंगे। मैं नहीं समझता ऐसी स्थिति बनेगी कि विश्व बैंक का यहाँ दबदबा हो जाए। क्योंकि विश्व बैंक से संबंध भारत के साथ कोई दो-चार साल पुराने तो है नहीं, बहुत पुराने हैं। कई ऐसे अवसर आए हैं जब भारत ने विश्व बैंक की कई बातें मानी हैं और कई बातें नहीं मानी हैं। यहाँ तक कि जो उनसे कर्ज लिया उसे वापस लौटाया भी है। मैं ऐसा नहीं मानता हम आज ऐसा कोई काम करेंगे जिससे देश की सार्वभौमिकता पर कोई प्रश्नचिह्न लग जाए। जहाँ तक व्यावहारिक सतह पर सतर्कता की जरूरत है जैसा आपने कहा, स्वदेशी औद्योगिक घरानों की बात की, अब अगर यह कहें कि औद्योगिक प्रतिस्पर्धा नहीं रहेगी, या कहें संरक्षण मिलता रहेगा चाहे वह सही ढंग से चलती हों या न चलती हों वह तो आज की दुनिया में संभव है नहीं। फिर हम संरक्षण देकर यथास्थितिवाद को बनाए रखेंगे। लेकिन जो प्रतिस्पर्धा हो वह निश्चित आधार पर हो और उसमें इस देश के जो उद्योग हैं, उनको एक घाटे की स्थिति में रख कर प्रतिस्पर्धा नहीं होना चाहिए। और जो बाहर से आयात होता है वह इन्फ्रास्ट्रक्चर की दिशा में हो तो वह आयातित टेक्नोलोजी का हो या मल्टीनेशनल का हो, जैसे ऑयल इंडस्ट्री है, पावर इंडस्ट्री है, एक बहुत केपिटल लगाने वाली इंडस्ट्रीज हैं, यहाँ प्रवेश तो ठीक है। लेकिन रोजाना उपयोग की वस्तुओं के निर्माण में कोई मल्टीनेशनल कम्पनी का प्रवेश होने का कोई मतलब नहीं है। कोशिश कर रहे हैं। पूरी तरह से इसमें लाइन नहीं खींची जा सकती लेकिन इस बात को ध्यान में रखना चाहिए।

प्र: डंकल प्रस्तावों को स्वीकार करे या स्वीकार न करे अभी इस मामले में सरकार स्पष्ट नहीं है। संसद में भी इस पर कोई बहस नहीं कराई गई है। विरोधी दल जितने थे, डंकल प्रस्ताव को मुद्दा बनाने जा रहे हैं। आपकी पार्टी के पास इसका कोई जवाब नहीं है। प्रतिभूति घोटाले जैसे भ्रष्टाचार के मुद्दों से आपकी पार्टी कैसे निपटेगी?

उ: डंकल प्रस्ताव एक निश्चित रूप से काफी सेंसेटिव बात है। उसमें पार्टी की तरफ से, मैं कन्वीनर था, कमेटी में सब लोगों के साक्ष्य सुने। वहाँ पर यह हुआ यह सुझाव आया कि इसमें पार्लियामेंट में डिबेट होनी चाहिए। एक हाउस में डिबेट हो चुकी है। राज्य सभा में हुई है, लोक सभा में नहीं हुई। इसके बारे में मैं समझता हूँ एकदम से कोई राय बना लेना उचित नहीं होगा। डंकल के जो मुद्दे हैं उन मुद्दों पर हमें दो-तीन बातें जिनका मैंने उल्लेख किया ध्यान में रखने की जरूरत है। हमारे जो हित हैं, जो व्यापक किसानों के हितों से जुड़े हुए हैं उसमें ऐसा कोई फैसला नहीं होना चाहिए जो दूरगामी तरीके से उन हितों को खतरा पहुँच सके। मैं समझता हूँ इसका ध्यान रखा ही जाएगा। बाकी जो डंकल प्रस्ताव है वह यह है विश्व उद्योग का एकीकरण हो रहा है, मोबिलाइजेशन। उस एकीकरण से हम बिल्कुल अलग हो जाएँ उससे भी हमारा लेन देन न हो तो इससे आगे चल कर देश को नुकसान हो सकता है। इन दोनों के बीच में रहकर निगोसिएशन जारी है। मैं नहीं समझता कोई ऐसी बात की जाएगी जिससे हमारे किसानों को नुकसान पहुँचे।

प्र: राव सरकार निजीकरण के लिए संकल्पबद्ध दिखाई देती है। तब क्या यह मान लिया जाए कि आधुनिक क्षेत्र की भूमिका समाप्त होगी?

उ: कतई नहीं। सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका कतई समाप्त नहीं होगी। लेकिन जरूरत से ज्यादा जो घाटे की इकाइयाँ हैं उनको सुधार करके उनको सही स्थिति में लाने का प्रयास हुआ है, कई जगह सफल भी हुए हैं। लेकिन निरन्तर घाटे की व्यवस्था को कायम रखना यह संभव नहीं है।

प्र: पिछले दिनों विश्व के अनेक देशों की जनता ने खुले बाजार की अर्थव्यवस्था की समर्थक नीतियों को लगभग अस्वीकार कर दिया है। उन देशों की हालत भी बद से बदतर होती जा रही है। क्या हमारा नेतृत्व उन देशों के इन अनुभवों से कुछ सीखेगा? क्या वजह है राव सरकार की आर्थिक नीतियों को निर्धन विरोधी माना जा रहा है?

उ: निर्धन विरोधी नीति भारत में कोई भी सरकार चलाकर चल पाएगी यह तो बिल्कुल अकल्पनीय है और काँग्रेस पार्टी ऐसी नीति को अपनाएगी यह तो और भी अकल्पनीय है। जो भी अनुभव दुनिया के किसी भाग में होते हैं उन सभी अनुभवों से लाभ लेना और उनके अनुसार अपनी नीतियों का अवलोकन करना, यह प्रक्रिया सतत चलेगी। मैं नहीं समझता कि डा. मनमोहन सिंह पर कोई इस तरह का लाँछन लगाया जा सकता है। वह भारत की परिस्थितियों से पूर्णतया भिज्ञ है

प्र: यह माना जाए कि देश संक्रमण काल से गुजर रहा है? एकल... व्यवस्था की उदय की स्थिति में गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लग गया है। विकासशील व पिछड़े देशों की अस्मिता का संकट पैदा हो गया है इस बारे में आपका क्या कहना है?

उ: तीसरी दुनिया का जो संगठन बना था यह उस समय बना था जब कि बहुत प्रखर राजनीतिक दबाव का युग दुनिया में चल रहा था। उस राजनीतिक दबाव से प्रभुत्व का कायम होना और उस प्रभुत्व को कायम रखने के लिए फिर संघर्ष करना, बचाव करना, इसका बहुत महत्व है। इसलिए इस समय राजनीतिक स्तर पर इस गुट का महत्व बना दिया। अब उस प्रकार का राजनीतिक वर्चस्व बनाने की प्रतिस्पर्धा खत्म हो गई। या यों कहें जो ग्लोबल दुनिया थी वह खुद ही एकांकी हो गई है। इसलिए राजनीतिक संदर्भ तो इससे धीरे-धीरे गायब होते जाएँगे। क्योंकि हम

लोगों की निगाहों में वह राजनीतिक महत्व की बात जमी हुई है। जब दो बड़ी पावर लड़ते थे तो यह बीच में जो देश थे इनका राजनीतिक महत्व बना हुआ था। हमारी निगाहों में वह चीजें आज भी हैं। राजनीतिक महत्व तो अब जरूर कम होगा। यह हम को मानकर चलना चाहिए। यह यथार्थ की सच्चाई है। लेकिन उनकी उपयोगिता खत्म हो जाएगी ऐसी बात नहीं है। क्योंकि अब जो आर्थिक आधारों पर मजबूती का दौर चल रहा है। उसमें संयोग ही सही जितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती है, आर्थिक मजबूती लाने के लिए उनका बाहुल्य, रिसोर्सेज जिनको कहते हैं, उनका बाहुल्य इन्हीं देशों में है जिनको थर्ड वर्ल्ड कंटरी कहते हैं। रा-मेटीरियल है। अगर हमने अपने आर्थिक विकास को, आर्थिक स्रोत जो हैं, आर्थिक सम्पत्ति है, उसको ध्यान में रखकर उसके सही एक्सप्लेनेशन के लिए हमने आपस में कोई बना लिया तो हम दुनिया में इसी प्रकार का प्रभाव रख सकते हैं। जो हम उस समय राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच में रहने की व्यवस्था रखते थे। यह ज्यादा स्थाई होगा। यह मेरा मानना है।

प्र: सोवियत संघ के पतन के पश्चात् अमरीकी शिविर का वर्चस्व बढ़ा है। क्या आपको इसमें खतरा दिखाई नहीं देता?

उ: इसके बारे में कुछ ऐसे सवाल हैं जो हमें शुरू से जरा अटपटा देखते थे। भारत की आजादी की लड़ाई में अगर किसी दूसरी बड़ी ताकत ने सहानुभूति दिखाई तो केवल अमेरिका नहीं था। प्रजातांत्रिक मान्यताएँ जो भारत की हैं वही मान्यताएँ वहाँ की हैं। फिर क्या कारण है कि हम एक दूसरे के बजाय नजदीक आने के इतनी दूर जाकर बीच में पहुँच गए। उसका बहुत बारीकी से विश्लेषण करने की जरूरत है। जिस वजह से भी हो, आज अमेरिका दुनिया का एक मात्र शक्तिशाली राष्ट्र बना है तो हम उनके ऊपर निर्भर न हो, उनके दबाव में न आएँ, यहाँ तक तो बात सही है लेकिन जो हमारी संभावनाएँ हैं प्रजातंत्र के सोच की, विचार की, पुराने संबंधों की हम को उन्हें ऐसे स्तर पर जो कि स्वाभिमान के साथ हो और जो व्यावहारिकता के साथ हो उस सतह पर लाना है हमारे देश के हित में। और उस दिशा में काम करने की जरूरत है।

प्र: क्या भारत और चीन की समीपता विश्व में विशेष रूप से एशिया में संतुलन बनाए रखने की भूमिका निभा सकता है?

उ: निश्चितरूप से यही प्रयास आजादी के तुरन्त बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू ने किया। दुर्भाग्य से बीच में कुछ घटनाएँ हो गई। उनसे प्रक्रिया को धक्का लगा। उस प्रक्रिया को फिर से शुरू करने की कोशिश हो रही है। धीरे-धीरे उसमें सफलता मिलेगी, ऐसे आसार भी नजर आते हैं।

प्र: दक्षेस आंदोलन से बड़ी उम्मीद थी लेकिन इसके अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए। दक्षिण एशिया के बड़े देशों के बीच जो भी परस्पर गतिरोध बना हुआ है उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?

उ: यह तो समय के साथ दूर होगा। निरन्तर हमें इस में प्रयासरत रहने की जरूरत है। एक दूसरे देश के बीच में समस्याओं के समाधान की जो प्रक्रिया है उसे तेज करने की जरूरत है। आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत बनाने पर बल देने की जरूरत है। क्योंकि मूलत: कोई विरोधाभास नहीं है। यह किन्हीं परिस्थितियों की वजह से ऐतिहासिक हो या अन्य हो वह स्थिति निर्मित होती है, मैं समझता हूँ समय पर इन पर काबू पाया जा सकता है।

प्र: अंत में अभी-अभी 3-4 सालों में विश्व राजनीति की दृष्टि से भारत पृष्ठभूमि में चला गया। क्या आप समझते है एक बार फिर भारत विश्व मंच पर नेहरू इन्दिरा गांधी काल की प्रभावकारी भूमिका निभा सकेगा?

उ: मेरी तो यह निश्चित मान्यता है ऐसा दिन बहुत जल्दी आएगा। अब इसका विश्लेषण में जाएँगे तो बहुत टाइम लगेगा। लेकिन मैं समझता हूँ ऐसा होगा। धन्यवाद।

जो कहते हैं कि आपने नियंत्रण हटाया नहीं तो देश दिवालिया हो जाएगा। मेरी यह मान्यता कतई नहीं है। मैं समझता हूँ कि देश के उद्योगपति व्यापारी जिम्मेदार लोग है। देश को समझने वाले लोग है। लेकिन वह स्वयं के नियंत्रण से ही संभव है। अगर सरकार का नियंत्रण समाप्त करना है, तो समाज का नियंत्रण आना ही है।

— श्री अर्जुनसिंह

27 जून 1994

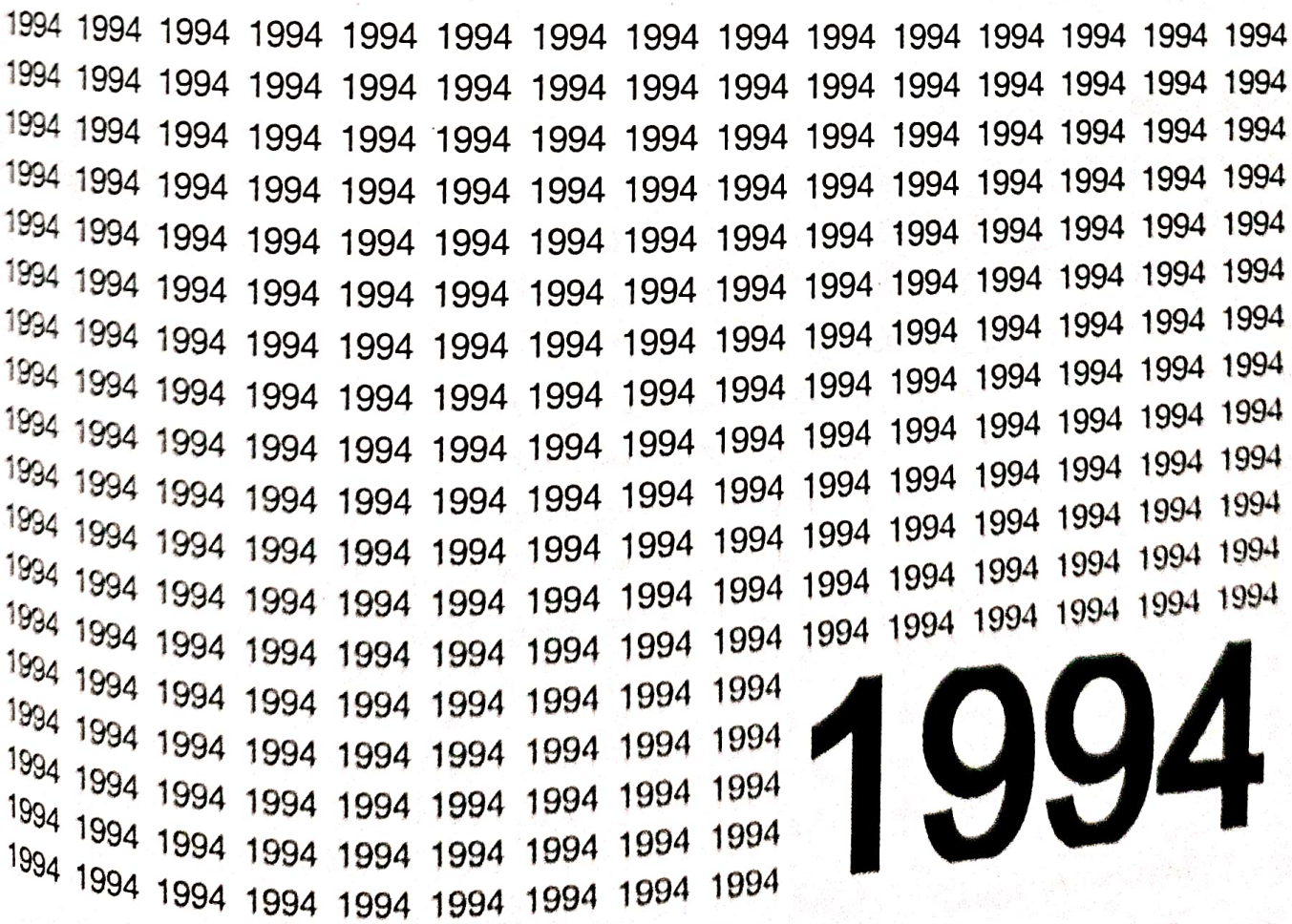

1994

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

गरीबों को अवसर प्रदान करो

24 फरवरी 1994 डबरा ग्वालियर के नवोदय विद्यालय के शिलान्यास समारोह में दिए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं :—

आदरणीय माधवराव सिंधिया जी, ग्रामीण जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रामाराव जी, क्षेत्र के सम्मानित विधायक श्री चौधरी जी, अन्य सभी सम्मानित विधायकगण, सम्मानित अतिथिगण, माताओं, बहनों और भाइयों हमारा यह आयोजन ग्वालियर जिले में नवोदय विद्यालय की स्थापना से संबंधित है। अभी आप को माधवराव जी ने जवाहरलाल जी की भारत के ग्रामीण अंचल की चिंता से लेकर और राजीव गांधी जी के दृष्टिकोण का यहाँ जिक्र किया। जब देश आजाद हुआ और जवाहर लाल जी देश के प्रथम प्रधान मंत्री बने तो उनका सबसे पहला ध्यान सारे भारत के ग्रामीण अंचलों में रह रहे किसानों की ओर गया जो मेहनत करते थे, धूप, पानी ठंडक सब सहते थे, पैदावार करते थे लेकिन उनको पर्याप्त अपनी मेहनत का हिस्सा नहीं मिलता था। पंडित जी ने इस देश के किसान को सही माने में अन्नदाता बनाया उसको जमीन के अधिकार मिले, जमीदारियाँ समाप्त की गई, इससे अंचलों में एक नया आत्मविश्वास जागृत हुआ, एक नया वातावरण बना समानता का और धीरे-धीरे आज यह स्थिति बन गई है कि भारतवर्ष खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कई प्रयोग किए गए। कई प्रकार से प्रयास किए गए। लेकिन यह सर्वविदित है कि उन सब प्रयासों को केन्द्रित करके, उनको एक नया स्वरूप प्रदान करके भारत की नई शिक्षा नीति का निर्धारण स्वर्गीय राजीव गांधी ने 1986 में किया था जिस शिक्षा नीति के तहत पुनः एक प्राथमिकता दी गई, भारत के ग्रामीण अंचलों में, क्योंकि देश तो गाँव में रहता है। 80 प्रतिशत आबादी गाँव में रहती है भारत की, और जबतक उस आबादी को इस स्थिति पर नहीं लाया जाएगा तो जबतक लोग शिक्षित न हो, निरक्षरता को दूर न किया जाए तबतक भारत का विकास संभव नहीं है। आज हमारे देश के बहुत बड़े-बड़े वैज्ञानिक रहे, बड़े-बड़े इंजीनियर रहे, बड़े-बड़े काम उन्होंने इस देश में, दुनिया में किए। लेकिन संख्या उनकी सीमित रही। कोई भी कौम या राष्ट्र तब तक उठ कर खड़ा नहीं हो सकता है जब तक व्यापक रूप से लोग शिक्षित न हों। आज हमें बड़ी खुशी है कि रास्ते में हमारे माधव राव जी ने हमारा का ध्यान भी आकर्षित किया। कई स्थानों पर, यहाँ पर निरक्षरता के खिलाफ, उसको समाप्त करने के लिए जो साक्षरता अभियान चल रहा है, उसकी झलक हम को देखने को मिली। नवोदय स्कूल की कल्पना भी राजीव गाँधी जी ने ग्रामीण अँचलों में वहाँ के बालक, बालिकाओं के लिए ही की थी। जैसा माधवराव जी ने कहा एक तरह से शासन को जिम्मेदारी विकास को, इस प्रकार की ओर इस स्तर पर शिक्षा देने की, जो किसी अच्छे से अच्छे स्कूल में हजारों रूपये फीस देकर बड़े-बड़े धनी लोग पाते हैं, ऐसी शिक्षा हर जिले में एक स्कूल बनाकर मुख्य रूप से ग्रामीण अँचल में, ग्रामीण जनों को, समाज के कमजोर वर्गों को दी जाए यह इस नवोदय विद्यालय की

परिकल्पना उन्होंने की थी। यह दुर्भाग्य की बात है लेकिन इस यथार्थ को सामने रखना चाहिए। सन् 1989 में जब जनता दल की सरकार बनी उस सरकार ने भारत में बिना यह सोचे समझे कि कौन सी अच्छी चीज है कौन सी चीज खराब है, जितने कदम राजीव जी ने उठाए थे उन सब को उलटने का दृष्टिकोण अपना लिया। आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि नवोदय विद्यालय की योजना भी खटाई में डाल दी गई, तरह-तरह के प्रश्न उठाकर। ढाई साल तक कोई काम नहीं हुआ, एक भी स्कूल नहीं खोला। 1991 में जब वर्तमान शासन, केन्द्र में नरसिंह राव जी के प्रधान मंत्रित्व मे आया तो शिक्षा के क्षेत्र में यह फैसला किया गया और वह काँग्रेस के घोषणा पत्र में भी था कि आठवीं पंचवर्षीय योजना अर्थात् 1995 तक सारे भारत के हर जिले में राजीव जी की योजना को लागू कर दिया जाएगा। इसी दिशा में प्रयास आज इस नवोदय विद्यालय का शिलान्यास का अंग है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यह कल्पना साकार हो रही है। इसके साकार होने में विलम्ब न हो यह हमारा विशेष प्रयास होगा। थोड़ा सा फर्क जरूर है। माधवराव जी जानते होंगे। रेल मंत्रालय में शिलान्यास और काम करने के दोनों बटन उनके हाथ में रहते हैं। लेकिन शिक्षा मंत्रालय में शिलान्यास तो हो सकता है, काम करने वाला बटन मेरे हाथ में नहीं है। वह काम या तो पी.डब्लू.डी. केन्द्र की करेगी या राज्य की करेगी या हाउसिंग बोर्ड करेगी या कोई और संस्था करेगी। लेकिन सामंजस्य एक तरह से बैठाने की कोशिश की गई है और बहुत ही कम समय शिलान्यास और कार्य के प्रारम्भ होने में रहे ताकि सचमुच में उस योजना को जल्दी से जल्दी पूरा करके उसका लाभ उठाया जा सके। यह स्कूल भी इसी के तहत इसी विचार से बनाया जाएगा मैं माधवराव जी को और आप को आश्वस्त करना चाहता हूँ।

यहाँ पर दो शब्द इस अंचल के विकास की बात करना चाहता हूँ। माधवराव जी के लिए यह न केवल स्वाभाविक है, प्राकृतिक है और उसके कर्तव्य से जुड़ा हुआ है कि इस अंचल का विकास तीव्र गति से हो। मध्य प्रदेश का विकास एकांगी विकास न हो और यदि इस प्रदेश का विकास होना है, सचमुच तो उत्तरी मध्य प्रदेश के लिए यह जिला, उनकी समस्याओं का समाधान और कई ऐसे साधन उपलब्ध कराएँ जाएँ जिनका उपयोग मध्य प्रदेश के उन अविकसित क्षेत्रों के विकास के लिए लाभदाई हों। यहाँ सिंचाई के लिए साधन भी है, किसान भी बहुत मेहनत करने वाले हैं, यहाँ की फसलें चाहे गेहूँ की हों, चाहे तिलहन की हों, उनकी पैदावार में बढ़ोतरी करने में आसानी है। उनके वितरण के लिए और सही कीमतें उनको मिल सके इसके प्रबन्ध हो। यह तो ग्रामीण अंचलों से जुड़ा हुआ है। और औद्योगिक विकास इस क्षेत्र के क्षितिज पर स्पष्ट दिखने लगा है जिसका बहुत कुछ श्रेय माननीय माधवराव जी को जाता है। यह एक समन्वित प्रयास होगा उसी से मध्यप्रदेश का विकास होगा मैं इतना ही कह सकता हूँ और जिसके लिए मैं भी निमित्त अपने को करता हूँ ग्वालियर अंचल के विकास से जुड़ने को न केवल मेरी हर वक्त अभिलाषा रहती है, बल्कि इससे जुड़पाना मैं अपने कर्तव्य को पूरा करने में, अपना कर्तव्य समझता हूँ। यहाँ पर मध्यप्रदेश का चित्र हर दम हमारे सामने रहना चाहिए क्योंकि वह चित्र जबतक हमें सही-सही दिखता रहेगा तब तक हम सब मिलकर उसमें नए-नए रंग भरने की कोशिश में सफल होते रहेंगे और यह चित्र है एक अविकसित प्रदेश का जिसकी आबादी 85 प्रतिशत हरिजन, आदिवासी, पिछड़े वर्ग और गरीब लोगों की है। जबतक उनके हाथों में साधन नहीं पहुँचाएँगे उनको अपनी किस्मत को सुधारने का अवसर नहीं मिलेगा, तबतक मध्यप्रदेश के विकास की बात करना और इस प्रदेश की किस्मत को सुधारने की बात करना मेरे मत में एक दिवास्वप्न है, गलतफहमी पैदा हो सकती है, कोई ठोस उपलब्धि नहीं। श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने बहुत सुविचारित एक योजना इस प्रदेश के विकास की हम सब को दी है। इसी पर चलते हुए आज मध्यप्रदेश आगे बढ़ सकता है। इसमें जन प्रतिनिधियों का, सामान्य जनों का जितना भी सहयोग होगा उतना ही इस प्रयास में हमें सफलता मिलेगी। माधवराव जी इस प्रदेश के एक राजनीतिक और सामाजिक

रूप से भी एक विशिष्ट व्यक्ति हैं, एक स्तम्भ हैं। उनकी रूचि इस प्रदेश के विकास में हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि काँग्रेस पार्टी को मजबूत करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान हरदम रहेगा इसको हमें स्वीकार करना चाहिए। इस दिशा में काँग्रेस पार्टी अपने दायित्व को पूरा कर सके यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। जनता ने काँग्रेस पर विश्वास करके मध्यप्रदेश में सामंतवादी और सम्प्रदायवादी शक्तियों को शिकस्त दी है। आज हमारे काँग्रेस में काँग्रेस की सरकार इसी शिकस्त का परिणाम है। प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह को हम सब का समर्थन मिलना चाहिए और उनकी ओर से इस बात का सतत् प्रयास होना चाहिए कि प्रदेश के हर भाग में पूर्ण समानता के साथ विकास की रेखाएँ खींची जाँए और खासतौर से उन लोगों को जो अपनी मदद् करने में सक्षम हैं, समाज के कमजोर वर्ग के लोग है उनके हितों का संरक्षण, उनके हितों को आगे बढ़ाने का प्रयास, यह उनका पहला कर्तव्य है जिसको वह निभाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सब को मिलकर मध्यप्रदेश की नई तस्वीर जो तस्वीर इस प्रदेश के करोड़ों लोग देखना चाहते है और काँग्रेस की नीति और कार्यक्रमों के अनुसार इस तस्वीर को बनाने में हमारी सबकी जिम्मेदारी है उसको हम पूरा कर सकेंगे इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। आपका सहयोग और आशीर्वाद इसमें होना चाहिए। उनको स्थापित करके हमारे मंत्रालय ने राजीव जी के सपनों को पूरा करने की कोशिश की है। मेरे लिए यह सबसे बड़े संतोष की बात है। धन्यवाद, जयहिन्द।

उद्योगपति स्व नियंत्रण करें

27 जून 1994 विन्ध्य चेम्बर्स आफ कॉमर्स, सतना में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

विन्ध्य चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष माननीय त्रिपाठी जी, तथा विन्ध्य चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स के सदस्यगण और सम्मानित अतिथिगण, समय का पालन कठोर होता है और हम उस का पालन नहीं कर पाते, तो अंततः किसी न किसी के ऊपर उस के पालन की जिम्मेदारी आती है। मैं आप से कहना चाहता हूँ कि अभी चेम्बर्स की ओर से जो प्रगति प्रतिवेदन दिया गया सविस्तार आप ने उस को सुना। मैं बहुत आभारी हूँ इस प्रतिवेदन के प्रभारी ने उसे इतना व्यापक बनाया है जिस से यह बात लक्षित होती है कि आप अपने दायित्वों को संकीर्ण दायरें में नहीं देखते। यह सर्वेक्षा उचित है, क्योंकि व्यापारी का केवल अपने व्यापार से, आज के युग में सरोकार नहीं रह गया है। वह समाज के जिम्मेदार नागरिक के रूप में भी व्यवहार करने के लिए तैयार हैं और यह समय का तकाजा भी है।

आप ने जो बातें मुझ से कही हैं, उनमें से कुछ पर तो पहल हुई है, कुछ पर नहीं हुई है और मैं उन सब पर विस्तार से यहाँ पर टिप्पणी भी करने में असमर्थ हूँ। लेकिन इतना आपको विश्वास होना चाहिए कि जिस समस्याओं का आप ने उल्लेख किया है, यह समस्याएँ जनहित से जुड़ी हैं और जनहित का, जनता का अनदेखा करना किसी भी जनप्रतिनिधि के लिए संभव नहीं है।

हमारे पाठक जी ने कई महत्वपूर्ण मुददे् उठाएँ हैं। पाठक जी के मुददों पर मैं जरूर बात करना चाहता हूँ, लेकिन इस के पहले कि इस पर सार्वजनिक रूप से चर्चा की जाय, ज्यादा उपयोगी और ज्यादा महत्वपूर्ण होगा कि हम पहले उनसे व्यक्तिगत स्तर पर विचार-विमर्श कर लें। हो सकता है, फिर सार्वजनिक रूप से कहने के लिए बहुत कम चीज रह जाय। देश की बदलती हुई परिस्थिति में बहुत से कानून बने, निरस्त हुए, फिर बने। हर समय के औचित्य को हर समय प्रतिपादित करना या उसका निराकरण करना यह संदर्भ से देखना होगा। अब जो नया वातावरण देश के अंदर आर्थिक और औद्योगिक विकास का, विकसित हो रहा है, उस में अपने आप ही बहुत - सी बातें गौण हो जाएगी। क्योंकि अब इस को डेलीबरेटली निषिद्ध कहते थे, उस का स्थान और महत्व बहुत कम कर दिया गया है

और उस के स्थान पर चूँकि यह बात भी अपनी जगह सही है कि या तो नियंत्रण और कोई करे और हम उस का पालन करें। या कि हम स्वयं नियंत्रण करें और स्वयं का नियंत्रण ज्यादा महत्वपूर्ण और प्रभावी हो सकता है, बशर्ते केवल सामूहिक हित को सर्वोपरि रख कर निर्णय हो/नियंत्रण हो। व्यक्तिगत हित को ध्यान में रख कर हम ही नियंत्रण करते चलेंगे, तो निश्चित ही उस का झुकाव हमारे हितों की तरफ होगा, सामूहिक, सामाजिक हित की तरफ नहीं होगा।

बहुत से नियम और कानून समाप्त कर दिए गए हैं। बहुत से धीरे-धीरे समाप्त किए जा रहे हैं। लेकिन विकृतियों को ध्यान में रखना पड़ेगा। मैं एक छोटा-सा उदाहरण देना चाहता हूँ। गत वर्ष बाहर से आयात करने पर छूट दी गई। छूट इस शर्त पर दी गई कि हम जो आयात करें, उस का उपयोग ऐसे काम में हों, जिससे हम निर्यात कर के देश के लिए विदेशी धन और कमा सकें। कुछ लोगों ने उस का नाजायज फायदा उठाया। यहाँ भी बिलकुल निम्न स्तर की वस्तुओं का तो निर्यात कर दिया और आयात के लिए छूट दी गई तो करोड़ों रुपये के आयात कर लिया। यह बात धीरे-धीरे सामने आई तो तब तक हजार करोड़ रुपया का वारा-न्यारा किया जा चुका था।

यह चीजें हैं, जो कि हमारे ढाँचे को कमजोर करती हैं और धीरे-धीरे उन लोगों की बात को मजबूत करती हैं, जो कहते हैं कि अपने नियंत्रण हटाया नहीं तो देश दिवालिया हो जाएगा। मेरी यह मान्यता कतई नहीं है। मैं समझता हूँ कि देश के उद्योगपति, व्यापारी जिम्मेदार लोग हैं। देश को समझने वाले लोग हैं। लेकिन यह स्वयं के नियंत्रण से ही संभव है। अगर सरकार का नियंत्रण समाप्त करना है, तो समाज का नियंत्रण आना ही है। अनियंत्रित हो जाए सब तो उस समय जिस की लाठी उस की भैंस हो जाएगी। ऐसा कोई देश नहीं चलता है।

विन्ध्य चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स ठोस पहल कर रहा है इसके लिए मैं उनको साधुवाद देना चाहता हूँ और आशा करना चाहता हूँ कि वे इस प्रदेश में एक नया वातावरण बनाएँ विकास का और ओद्योगिक विकास का जिस का जिक्र आप ने किया कि व्यापारियों को किस प्रकार से विश्वास में ले कर नई तकनीक का निर्धारण मुख्य मंत्री ने किया है। यह सब चीजें हैं, जिन को हमें समझ कर मजबूत करने की जरूरत है और कही कोई त्रुटि है, कमी है, तो उस को जरूर सामने ला कर उस को सुधारने की जरूरत है।

आपने मुझे यहाँ आने का अवसर दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद्।

आर्थिक रूप से पिछड़ों की सहायता जरूरी

27 जून 1994 सतना में अनुसूचित जाति के सम्मेलन में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

मध्य प्रदेश अनुसूचित जाति के अध्यक्ष, माननीय तीरथ जी, मंच पर बैठे हुए मेरे सहयोगियों आदरणीय साथियों, और इस सम्मेलन में भाग लेने आए हुए बहनों और भाइयों, अभी पूर्व वक्ताओं ने काफी विस्तार से बातें कही। उन्हीं बातों को मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ। लेकिन जो मुद्दे उन्होंने उठाए हैं, उन्हीं मुद्दों पर जरूर कुछ अपनी बात कहना चाहूँगा।

पहली बात यह है कि आजादी की लड़ाई के दौरान जब अँग्रेजी हुकुमत से हम लड़ रहे थे गाँधी जी के नेतृत्व में उस समय हमारा क्या नजरिया था, भारत के विकास में? बहुत लोग भी उस वक्त गाँधी जी से कहते थे कि आप पूरा समय अपना लगाइए अँग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए। आप ऐसे मुद्दे क्यों उठा रहे हैं, बीच-बीच में। कहीं अछूत उद्धार की बात कह रहे हैं कहीं सामाजिक न्याय की बात कर रहे हैं, कहीं मंदिर में प्रवेश की बात कर रहे हैं। इससे

तो आपस के लोगों में मतभेद पैदा हो गए हैं और सब का ध्यान जो अँग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने में लगना चाहिए, वह आपस में बँट जाएगा।

मंदिर में प्रवेश की बात करेंगे तो समाज का एक वर्ग इसका विरोध करेगा। गाँधी जी का जवाब, उन के शब्दों में मैं नहीं कह रहा हूँ, जो भावना थी, गाँधी जी ने यह कहा कि मैं समाज को बाँटने की बात नहीं कह रहा हूँ। लेकिन आजादी किस के लिए लाना है, यह तो हमें समझना पड़ेगा। बिरलाजी तो हमारी मदद करते हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि भारतवर्ष आजाद हो जाएगा तो जहाँ आज उन की पाँच फैक्टरियाँ हैं वहाँ दस लग जाएँगी। बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग इसलिए हमारे साथ रहते हैं क्योंकि जब देश आजाद होगा, तो उनको और मौका मिलेगा। उनके बच्चों को मौका मिलेगा। लेकिन अगर देश के जो करोड़ों गरीब हैं, हरिजन हैं, आदिवासी हैं, जब तक उनको कुछ समझ में नहीं आएगा कि देश की आजादी में भी इनका भी कुछ हक छिपा हुआ है, जो भारत के आजाद होने के बाद मिलेगा, तब तक ये अँग्रेजों के खिलाफ क्यों लड़ें?

इसीलिए गाँधी जी ने हरिजनों की बात की। अछूत समस्या के खिलाफ़ बात की। मंदिरों में प्रवेश की बात की। ताकि वो देश के करोड़ों गरीबों को यह अहसास करा दिया जाय कि भारत की आजादी में उनका भी भविष्य छिपा हुआ है। और जब वह शक्ति पैदा हुई है। अकेले बिड़ला जी वह नहीं कर सकते थे। देश के पढ़े-लिखे लोग, वकील डाक्टर भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि अहिंसा का अस्त्र था। अहिंसा का अस्त्र तभी इस्तेमाल हो सकता है, जब लाखों, करोड़ों लोग उठ कर खड़े हो जायँ और तलवार चलाने वाले को यह मजबूरी नजर आ जाय कि उस की तलवार चलाने वाले को यह मार सकती है, पन्द्रह को मार सकती है, बीस को मार सकती है, एक लाख को तो नहीं मार सकती।

यह शक्ति गाँधी जी ने पैदा की और जिस की वजह से भारतवर्ष आजाद हुआ और इसलिए मकवानाजी का यह सवाल कि आजादी के बाद जो कुछ होना चाहिए था, वह हुआ कि नहीं। यह सवाल बिलकुल वाजिब है और इस का उत्तर इस पीढ़ी को देना है।

यह बात सही है कि ऐसे बहुत - से सवाल जिनको हल करने में दिक्कत नहीं पड़नी चाहिए। इसलिए दिक्कत पड़ती है क्योंकि आम लोग उसके महत्व को नहीं समझ पाते। मैं उन आम लोगों की बात कर रहा हूँ। पढ़े लिखे लोग, विधायक लोग, एम.पी. लोग भी नहीं समझ पाते, वो समझतें हैं कि जिस तरह से यह काम चल रहा है, उसी तरह से एक काम यह भी है। एक उदाहरण, मैं देना चाहता हूँ। मध्यप्रदेश में 1998 में जब एक सवाल आया कि जो रिजर्वेशन मिलता है, हरिजन-आदिवासियों को, यह पूरा क्यों नहीं हो पाता है। कहने के लिए तो सत्रह प्रतिशत हैं, बाइस प्रतिशत है, लेकिन मुश्किल से चार, प्रतिशत, पाँच प्रतिशत, दस प्रतिशत होगा।

तो कहा जाता था क्या करें? जिनका वाजिब हक है, वह सामने नहीं आ रहे हैं? और असलियत क्या थी कि नौकरशाही में बैठे लोग इस तरह का प्रपंच रचते थे, इस तरह से नियम, कायदे-कानून का विश्लेषण करते हैं, इंटरप्रिटेशन करते हैं, जिस की वजह से आप के सामने, मंत्रियों के सामने ऐसा नक्शा सामने आ जाएगा कि आप भी क्या करेंगे? संविधान में लिखा है। उसमें ऐसे प्रावधान हैं, नहीं हो सकता। इसके आगे नियम कायदे कानून नहीं है।

अभी जब दिग्विजय सिंह मुख्य मंत्री बने। मैंने कहा मैं आप पर पूरा भरोसा करता हूँ। आपकी जो कटिबद्धता है समाज के कमजोर लोगों के प्रति उससे मैं वाकिफ हूँ लेकिन मुझे आप एक वचन दीजिए, उन्होंने कहा-क्या? मैंने कहा-पहले अधिवेशन में पुराना रिकार्ड निकलवाइए। जो कानून पेश किया गया था, वह क्यों पास नहीं किया गया इस का कोई लेखा - जोखा देने की जरूरत नहीं है। लेकिन उस कानून को विधान सभा की बैठक में पास करवाइए। तो मैं समझूंगा कि आप ने न्याय किया। आज मुझे खुशी है यह कहते हुए कि विरोध के बावजूद आज वो कानून पास हो गया है। आज यदि रिजर्वेशन के मामले में कहीं भी कोई भी गड़बड़ी पैदा की गई तो उसका असर उस तरह से होगा।

तो यह अड़चने हैं। रोज लड़ाई लड़ते रहे तो हम लोग सामने कह नहीं सकते। लेकिन अब समय आ गया है कि अब मेहरबानी और कृपा पर भारत का आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन नहीं रूक सकता। जब तक आप आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को सशक्त नहीं करेंगे, उनके हाथों में ताकत नहीं देंगे तो यह कृपापात्रों की जो बड़ी और लम्बी कतार होती है, वही पाएगा जो आप के सब से नजदीक होगा बाकी लोगों को छीना-झपटी पर निर्भर रहना पड़ेगा और यही गाँधी जी कहते थे, कि इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हो।

मैं कहता हूँ गरीब के जो हकदार थे। गरीबों के हक दिलाने के लिए जो काम कर रहे थे। वे सब गरीबों के पक्षधर हैं, उन के बीच में किसी प्रकार के विभाजन की रेखा खींचना, एक को अच्छा और दूसरे को बुरा बताना, यह आज के गरीबों की एकता को मजबूत करने के बजाय कमजोर करना है और एकता कमजोर होगी तो गरीब की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती है।

अब पंचायतों के चुनाव हो गए हैं। जिला परिषदों तक के चुनाव हो गए हैं। पूरे अधिकार ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत के हो गए हैं। जितने कार्यक्रम हैं, इन सब पर आप को कड़ी नजर रखनी चाहिए। यदि आप के गाँव में कोई कार्यक्रम आता है जिस से गरीबों का फायदा होता है और आप के स्थानीय पंच, सरपंच ईमानदारी से काम नहीं करते हैं। आप को बढ़ कर उन का हाथ पकड़ लेना चाहिए और सही ढंग से उस कार्यक्रम का सफल संचालन आपको सुनिश्चित करना चाहिए।

तीसरी बात जो है, वह है आम तौर से जो हालात हैं, उस की बात। मैं जानता हूँ कि हम सब अपनी आत्म संतोष से या आत्म विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते हैं कि असमानता, शोषण और गरीबी को हटाने के लिए जो रास्ते खुले हैं, उस रास्ते पर जो अड़चनें हैं, जो रूकावटें हैं, हमने उन सब रूकावटों को दूर कर लिया है, लेकिन इससे घर बैठने से कोई फायदा है नहीं। हमें इसे करना है, यह संकल्प हम को लेना है। और यह संकल्प लेकर हमें उस दिशा में बढ़ने की जरूरत है।

राष्ट्र की एकता तभी कायम रह सकती है जब हम इस देश के अंदर जो असली दर्द है, जो असली परेशानी है उसको दूर करें गरीबों का, हरिजनों का, आदिवासियों का, अल्प संख्यकों का, पिछड़े वर्ग के लोगों का अगर विश्वास हमने उसको मजबूती से कायम रखा, प्रजातंत्र में कायम रखा और आर्थिक रूप से उसे मजबूत करने के कार्यक्रमों द्वारा कायम रखा, तो हिन्दुस्तान को कोई खतरा पैदा नहीं होगा। लेकिन हमने अगर इस तरफ ध्यान नहीं दिया, असंतोष को भड़कने दिया और तरह-तरह की बातें उठने दीं, तो जैसा मकवाना जी ने कहा काँग्रेस से कोई चला जाय हमें तो दुःख होगा उन्हें भी दुःख होगा। लेकिन अगर यह असंतोष देश के विघटन का कारण बन जाय तो भारत माता के टुकड़े-टुकड़े हो जायँ तो फिर किस पार्टी को फायदा होने वाला है? देश के दुश्मनों को इससे फायदा होगा।

एक प्रस्ताव आपने पास किया है यहाँ। स्वीकृति मेरी उसी समय हो गई जब मैंने हाथ उठाया उसके लिए, लेकिन औपचारिक रूप से कहना चाहूँगा। मैं आदेश तो नहीं दे सकता क्योंकि यह प्रदेश का सवाल है, लेकिन मुझे भरोसा है कि प्रदेश की सरकार मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेगी और सेमरिया में डॉ. अम्बेडकर की मूर्ति बनेगी।

आप सब को यहाँ काफी देर तक बैठना पड़ा। बहुत गरमी थी। मंच पर तो दो-चार पंखे भी लगे थे। वहाँ पंखे की हवा भी नहीं आ रही थी। मैं माफी चाहता हूँ आप सब से। खास तौर से यहाँ पर हमारे बहुत - से हरिजन आदिवासी पंच चुने हुए वो लोग आए हैं, मैं उनके चुनाव पर उन्हें बधाई देना चाहता हूँ और अब वो अपना पंचायतों के निर्माणों के कार्यों में जुटें। यही हमारी मंगल कामना है।

आप सब को बहुत-बहुत आभार, धन्यवाद। जय हिन्द।

साक्षरता से परिस्थितियाँ बदलती हैं

10 दिसम्बर 1994 बिलासपुर की आम सभा के भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष, हमारे अनन्य सहयोगी माननीय धृतलहरे जी, माननीय जगतपाल सिंह जी, माननीय मधुकर जी, चाँपा के पूर्व विधायक भाई महंत जी काँग्रेस पार्टी के सभी आदरणीय साथियों और इस गाँव के बुजुर्ग माताओं, बहिनों और भाइयों, यह जो पताकाएँ फहरा रही हैं, यह उठकर उदघोषण कर रही हैं, वे इस बात की गवाही दे रही है कि भारत के गाँव अब नई करवट लेना चाहते हैं और ये नई करवट किसी के भड़काने से नहीं लेना चाहते, किसी के भटका देने से नहीं लेना चाहते, ये करवट वे अपनी प्रेरणा से, अपने ज्ञान को और प्रखर करने के लिए, अपने ज्ञान से यह करवट लेना चाहते हैं।

यह बहुत ही शुभ लक्षण है, क्योंकि व्यक्ति जब तक शिक्षित नहीं होता, उसे अक्षर ज्ञान नहीं होता, तब तक वो किन परिस्थितियों में है और किन परिस्थितियों में रहना चाहता है। इसका कोई फर्क उस के सामने नहीं रहता है। एक दफे व्यक्ति को यह आभास हो जाए, ज्ञान हो जाए कि जो उसकी हालत है इस हालत को बेहतर बनाने के लिए उस को क्या करना है? और जिस प्रकार से अपनी मेहनत से, अपनी मशक्कत से, उसे एक नए जीवन की ओर बढ़ना है, तो फिर सारा देश उठ कर खड़ा हो जाता है।

राजीव जी ने इस महत्व को समझा है और जो बहुत से प्रयोग छोटे-मोटे चल रहे हैं, उन सब को एक कर के एक साक्षरता का अभियान सारे देश में पहली मई उन्नीस सौ चौरासी को शुरू किया था। आज वो अभियान शासकीय अभियान नहीं है, एक राष्ट्रीय अभियान का रूप उसने ग्रहण कर लिया है और उस का प्रमाण हमें सामने नजर आ रहा है। जो लोग इस काम में सहयोग दे रहे हैं, वे बधाई के पात्र हैं और इस कार्य को इसी लगन और निष्ठा से करते रहें, ये मेरी उन से अपील है।

आज अभी हमारे साथियों ने आप को आज के समय भारत में जो धर्म निरपेक्षता को खतरा है, उसकी जानकारी दी। कुछ पार्टियाँ, कुछ लोग भारत की धर्म परायण जनता को धर्मान्धता की आग में झोंकने की जो कोशिश कर रहे हैं, उससे आगाह किया और वैसे आप सब इन बातों को स्वयं भली भाँति अच्छी तरह जानते हैं। इस समय देश को जरूरत है, जो हमारी कमियाँ हैं, जिनकी वजह से अभी भी हम उस तेजी से आगे बढ़ पा रहे हैं। जैसा कि बढ़ना चाहिए, उनको दूर करने की कोशिश करने की जरूरत है। और हम उलझते जा रहे हैं, ऐसी बातों में जिन बातों को देश के उत्थान से कोई लेना देना नहीं है। किसी एक पार्टी की भलाई के लिए, उनकी तरक्की के लिए उस की जरूरत हो सकती है लेकिन देश की तरक्की के लिए उस की जरूरत नहीं है।

अक्सर धर्म निरपेक्षता की बात कही जाती है, लेकिन ग्रामीण अंचल में इस विषय पर कुछ सीधे-साधे तरीके से ही यह बात करना उचित होगा। भगवान राम ग्रामीण अंचल के भाइयों और बहनों के लिए आस्था के और विश्वास के केन्द्र है। धर्म निरपेक्षता का मतलब भगवान राम की खिलाफत करना नहीं है। यह तो भारतीय जनता पार्टी फैला रही है। क्योंकि भगवान राम को न तो किसी के सहारे की जरूरत है, न किसी के रक्षा करने की जरूरत है। वे तो साक्षात ईश्वर है और उन्हीं की छत्रछाया में हम सब बैठे हुए हैं। इसलिए यह जो प्रचार किया जा रहा है, यह प्रचार एक दम भ्रामक है।

आप यह जानते हैं कि आप एक प्रजातांत्रिक देश में रहते हैं। हर पाँचवें साल आप अपना विधायक चुनते है। अपना सांसद चुनते है और हर तीसरे साल अपने गाँव के पंच को और सरपंच को चुनते हैं। वह काहे के लिए चुनते है? इस के लिए चुनते है कि वो गाँव की बात करे। गाँव की तरक्की के लिए कोशिश करें। विधान सभा में इसलिए चुनते है

कि भोपाल में जा कर जो बड़ी-बड़ी योजनाएँ आपकी गाँव के लिए हैं, उनके बारे में पहल करे और जो संसद के लिए चुनते हैं, वो दिल्ली में जाकर आप की तरक्की की बात करे। यह है प्रजातांत्रिक आधार और इसी के आधार पर देश चालीस वर्षों से चल रहा है।

यह विषय है जो प्रजातंत्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और गाँव के अंदर जहाँ आज साक्षरता का प्रकाश फैल रहा है, वहाँ आँख मूँद कर फैसला करवाने की जो कोशिश है, अपने आप में व्यर्थ जाएगी, सफल नहीं होगी। ऐसा हम सब लोगों को विश्वास है और मैं समझता हूँ बिलासपुर की जागरूक जनता निश्चित रूप से देश के प्रजातंत्र के ऊपर आए इस खतरे से सतर्क है और उस खतरे से देश की रक्षा करने की क्षमता रखती है। अंततः विजय प्रजातंत्र की होगी। अंततः विजय इस गरीब की होगी, निःसहाय की होगी। उस गरीब और निःसहाय की, जिसकी सेवा करने का व्रत काँग्रेस ने आज से नहीं, एक सौ सात साल से ले रखा है। देश की आजादी की लड़ाई से लेकर आर्थिक लड़ाई के हर मोर्चे पर गरीबों के लिए कांग्रेस लड़ी है। आगे भी इसी प्रकार का कार्य जारी रहेगा ताकि भारतवर्ष में एक बार फिर अमन चैन, सुख समृद्धि और भविष्य के प्रति लोगों के मन में विश्वास जाग्रत हो और वही विश्वास हमको, आपको एक सूत्र में बाँध कर रख सकता है। उस विश्वास की कड़ी को कभी टूटने मत दीजिए।

यही मैं आज आपसे प्रार्थना करने आया हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

Is BJP creating confusion in Congress party?

अगस्त 1994 पत्रकार वार्त्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: What is your view about Ekta Yatra, Rath Yatra and Ram janm bhumi?

Shri A.S. : The question is that where it is the Ekta Yatra or the Rath Yatra or the issue of Ram Janm Bhoomi or Babri Masjid or article 370, I mean that are all symptoms of the same frame of mind what the Congress has always took for and still stands for is that issue like this or any issue for that matter, should be dealt with two objectives or two things constantly in view. Number one, that it should ultimately whatever is thought of and whatever solution is reached, should go to strengthen the national integration. Number two, that the appraoch to the solution or the effort for the solution should take into account, all sections of opinion across both it should not meet as if my opinion is being imposed against somebody else obviously finally one opinion will be accepted but at least the process should involve everyone and in a country like ours if we don't proceed on this, with these two presumptions then friction is bound to arise and where it will all lead to God alone can guess so, in this matter also when the Prime Minister said that he would like to take everyone along in the yatra. He was echoing this Congress thinking. It is unfortuante that Mr. Advani did not see any merit in that approach and I can understand why he did not want to even touch it. Because then it would have taken away the real age from his effort which is not

to strengthen the Unity of India but to garner votes in the name of the Unity of India, so that's why how could you see that tricolour or the hammer in settle of the CPM or any other flag. Many parties in the country who are committed to national intgration and would help any way. We would afford to see those flags and he could not even afford to remove all the flags of the parties and only have the national flag. Because the national flag does not carry the lotus symbol so we have to be very clear in our mind what is intended and what direction they are taking.

Q: But are you satisfied as a Congressman but the Congress response to the BJP....

Shri A.S. No. I am not at all satisfied but you see in big party like ours individual satisfaction or dissatisfaction, can not be deciding factor for any course of action. But one thing I am quite sure that the vast majority all the overwhelming majority of Congressman would stand up and would like to stand up and we counted for defending the forces of secularism, of nationalism as against all sectarian or factional ideas and because if we don't do that perhaps will be untrue to the rich heritage that we have inherited, the heritage of Gandhi, Nehru, Indraji and Rarjivji.

Q: Do you think that the grass route level Congres worker has lost the will to fight with the RSS and the BJP?

Shri A.S. I don't think so and the Congress worker has not lost the will but they certainly would like to be shown the way how to do it. People say that it is not a sapling, this is a regular charge level against the Congress, well may be there are some aberrations here and there. It is certainly not a cadre base party. But this I know from little experience I have gained in the last 35 years as a honorary member that the Congress worker rank and file always response to something which accuses own feeling and that responsibility to voice those feelings, in those plans, are naturally that of the ledership.

Q: Are you dissatisfied with leadership which initiatives have not been taken in this matter?

Shri A.S. I am not dissatisfied but I think the initiative that need to be taken, have not yet been taken. But that they will be taken of this also I am sure.

Q: What are initiative which have been taken?

Shri A.S. For example, take the case of the BJP rules States, we should sharply focus on the total lack of any social economic or political programme of the party for the upliftment of the States for which they are now responsible by popular vote to rule. The lack of any such thing coming forward is obviously because nothing exist, now it is for the congress party which has shaped all these States alongwith the country on very specific and very time bound programmes for social upliftment, social justice, helping the weaker sections of the society fighting against the vested interest, whether it is a land or in the forest in all the whole gamut of things, now that is where we should take up a pro-

gramme of action and educate the people that all these things which are of direct concern to the common man, are not the concern of the BJP.

Q: Other thing about the RSS in the statement has begun making over the last one month Mr. Thakur the Congress spokesman dismissed the RSS statement about the Unity in the congress coalition as mischievous what do you see behind, it is casul what is it?

Shri A.S. Make no mistake about taking anything which is said by RSS as casul. But that has very serious portents also need not be true. I think this of the cuff remark as seem to be now I heard that one of the remarks has been contradicted. Today's pioneer says that but the basic reason for all these seem to me to be the one. They are testing the will of the Congress party as to where and how deep we stand and what we have always stood for. Number two, they are trying to create confusion in the Congress party about certain very basic foundamental things which have not been subject matter of debate in the party as to their credibility or to their relevants. The debate has always gained to what extend the party has stood for them and if there has been shortcoming how that should be removed. But secularism was never under debate in the Congress party as to whether our concept of secularism is really correct. This has never been debated in the forum of the Congress party so they are trying to create a confusion in the minds of Congressman that perhaps what we have believed in so far may or may not be true and on this point I think in the various forum of the Congress party must try to enlighten our members that this is the game behind it and I think the Prime Minister has something to that effect.

Q: Can Congressman believe the wrong notions spreaded by RSS and allys?

Shri A.S. Well, all the Congressman with whom I have the good opportunity to begin touch from the congress President downwards none of them have the slightest doubt as to where the Congress party has stood so far and where it has to stand. Well, if they have some people who they feel that they are sympathatic to them. They must have count of them but generally I don't think this is anywhere the case in the Congree party.

Q: Please explain the intention of BJP and RSS in creating confusion amongst Congress workers?

Shri A.S. You see, I don't have one charter, one point charter because this one point charter betrays infact bankruptcy everywhere else but I am very clear in my mind that the basic philosophy under lying the policies programmes, whatever they are of BJP, one they are not inconsonance with the real interest of the country of our dimension and complex. Number two, I see an effort to take away the minds of the people from issues of much greater concern to the life of the society and much more to the existence of the vast majority of the poor in this country and diverted into issues which may be a important in their own way. Bhagwan Ram is important to every Hindu and now he is not only important to every Hindu but I think to vast majority

of the people of this country but Bhagwan Ram can not become the national issue, what can Bhagwan Ram give to the person who is even today deprived of the very basic essentious of life he may be taking his name from morniong to evening but he is not aware to materilize what he is asking for. For that you have to draft a programme, see that it is implemented if you have to trade on certain toes which are sensitive on this issue because when you try to do social justice. It is not going to be a Lala Bai all the way so these are the things which they want to divert the attention and it is, may be a share co-incidence that these who are doing this come from that very section of the people who have justiced interest to protect. Now this is not a theoritical thing. I have seen this happening with my own eyes over the last three decades or three and half a decades. Now how can I suddenly forget about it? If I said this 35 years ago. There must be some reason for me to speak this today and if I am still saying there is a reason why I am saying it.

On the other hand, though people, some people would like the Indian polity to believe that they have now given up the fact is just to reverse, look at this strident campaign that was carried on during the last four years. On the very-very emotive issue of Bhagwan Ram and the temple at Ayodhya I mean nothing was left to chance, everything was done and what is the reaction of the Indian democratic community. In 89 they got 30% of the vote, in 91 they got 20% of the vote which means 80% of whom at least 80% are Hindus did not think it proper to endorse Bhagwan Ram in the manner in which he was projected by the BJP. Now why is nobody taking notice of that I have never seen any analyst highlight this. After all in a democracy it is not what I and you sit in drawing room and think which is going to be decided factor whatever we think in our drawing room has to be projected to the people and what they feel about it in their vote, there is no other way to decide in democracy.

Q: Do you agree with the Prime Minsiter's view that the Ratha yatra should not be stoppeed forcefully?

Shri A.S.: I entirely agree with the Prime Minister. This Yatra should not be stopped physically but the other auspect of the whole thing must also be put across to the people of this country and they should be in a position to evaluate to take in view. हाँ, something untoward happens which I hope it doesn't happen and even the BJP wants it is not to happen at least they say, so what will happen in that contingency I don't know.

Q: What is your opinion about re-writing of history?

Shri A.S. The first thing is that excuse me saying so the analytic approach has not been adopted in this matter. Number one there is not re-writing it is not as if history narration exist and we are asking some people to revise it. The fact is there is no comprechensive and coherent historical narrative from 47 to 97 as we have projected there is none. But some

pieces may be, somebody might have written about the economic auspect from the one decay or some of round a political leader for example there are very good books on Sardar Patel which highlight the qualities of head and heart of Sardar Patel. They cover that canvass where he was active Panditji, other leaders that way there is there. But a critical approach which history always takes or even a factual nottation of A to Z does not exist.

The question therefore, first had to be decided whether a narration is needed at all or not or we should allow this blank to remain as it is. As if whatever happend between 47 to 97 is of no consequence so if our decision is that this should remain a blank and we left to historian 100 years later to write that is also one decision that could have been taken and we could just have said O.K. does not exist, need not exist.

We took the other view that for the generation that will come into its own after the golden jublee of indian Independence. Perhaps needs to be infromed and enlightened as to what went on in the 50 years. When it has to deal with nation building issues which it will have to, now if we have gone wrong on this decision. I am prepared to accept that this was something we should not have done. But I have not yet read anyone says that know this should not have been done. One is the fallacy of the re-writing because there is nothing in existence, which has to re-written. The second is the desirablity of the future generation to be informed of what happened. Now we come to the third thing whether it is proper or right to promote an official history this is the third concern of the point. The fact is that we are not promoting in history neither do we want history of this time to be wirtten by anyone in a certain context or certain slant not even remotely heavy suggested on the contrary. I have been saying from the very beginning that we want free, fair and absolutely impartial historical narrative. Now I am not capable of doing that because I am the political worker. A BJP worker is not capable of doing it because he is a political worker. No political worker can be interested with this task then who is going to do it, only the academician and historian who have the vision and who have the sort of, you may call, not the expertise but who have the vision to project these national things.

Now if we have gone to them with the request kindly help us. It is a big scene I have committed well, I am prepared to feel guilty they are saying but keeping quiet and lasting these 50 years go blank before the future generation and then open up the whole thing to, I don't know what kind of interpretion may be in the turn of century. Some people might ask the people of India to make a choice between Nathu Ram Godse and Mahatma Gandhi. How should our citizens at that point of time not to be informed or not to be aware of what Gandhiji stood for and what Nathu Ram Godse stood for then they take the decision. Suppose in 2010 they say that Gandhi was wrong and Godse was right when that time of the people entitle to say that so democratic

country but they should say so totally ingorant of the realities that existing when both these people lived and died I think that will be doing a great service to the future generation of the country.

Q: What sort of book .

Shri A.S. Well, I don't think there is any one book like that there is none. As far as I know, may be I am ignorant also, as far as I know there is no one single book which deals with the socio-economic political history of India from beginning from the morrow of the Independence to 52 years hence.

Q: Sir, would you be also going one set by the recommendation uniform books all over the country? I am asking this particularly the BJP ruling some States?

Shri A.S. That is one of the ironies they infact are trying to re-write history and no one seem to be taken notice of that it is, they who are trying to re-write because there is a history this they feel, is not according to their view therefore, some amedments have to be made and they give the pretext that distortions are being corrected. Well, I think distortions every generation has a right to correct distortions and basically there can't be any objection to that but in the process of correcting distortions, distortion should not be introduced.

Q: How would you do as a Education Minister, you will have to act?

Shri A.S. I think in this respect, the NCERT for sometime now since it was estblished has been trying to bring about the cetain basic uniformity in the academic content of book and lot of books are now being published by NCERT and being utilized by children all over the country. So basically NCERT will have to see as to how for these things are correct or not. I don't think I will directly come into the picture because not that I don't have views on that but I would like to proceed in the correct manner through a certain autonomous body which exist precisely for this purpose.

Q: I will agree with you but I am asking you the same kind there is different history being tought in the different States at the moment. Let's take an example, in U.P., total in M.P., Himachal Pradesh, you are getting listen because different people are writing books in different states in their own style, in their own perception?

Shri A.S. Well, I think that is a matter which certainly deserves.

Q: This re-writting in M.P. and in other states for example, what are you going to do about that?

Shri A.S. Well, I have not come across anything specific yet that there have been some articles and all that and we are trying to find out as to what precisely it is, once we come to know then we will see how to approach it.

Q: What is the effect of the statement made by Shri Bal Thakre about Godse?

Shri A.S. Well, the follow up to that statement by the Shiv Sena or you may say the fall out is very obvious in Maharashtra itself the BJP, Shiv Sena combine which hope to sweep the

polls in Maharashtra both in the last election and bye-election was thoroughly trounced so the people know as to what is and is not correct. That is why what I said just now little while ago has the relevance, may be today people are aware because we still are in that generation which we have seen the Gandhi and also felt the shock of Godse's bullets but 16-17 years after the event people may have no personal knowledge. Now in this matter I think even the BJP was forced to distance itself from Thakre's statement on Godse. Because they knew that the people of India are not prepared to equate Gandhi & Godse.

Permission to foreign print media is bad!

12 अक्टूबर 1994 आई. विटनेस के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: Do you favour entry of foreign media in India?

A: Well, this is an issue on which discussions are going on, on the government level and I am sure a decision will emerge after some time .... very much part of that process of dicussion. This issue is being discussed at various level in the government. A cabinet sub-committee has been formed to go into it and since I am also a member of this committee, I am afraid that I can not say as to what is going to be the decision and what is my view. But there are issues that are before this committee. It is on those issues on that a point of view will have to emerge.

Q: What are these issues?

A: Well the issues, that are there, for example, one issue is whether the question of entry of foreign print media could be treated on par with other intervention in which economically partition ... invesment and all that. Whether it is a part of the liberalisation process or not. There are different point of view on this because the country will feel that it is a natural coralry of liberalisation programme and there another point of view that it will not trade consumer item. It can not be trated at par with. The other issues has been posed is whether it will lead to some kind of security risk. This means whether anybody who want to come in, can come in and than can make use of that media opportunity may create some kind of problem for the country. The third point is about what should be the control that have to be maintained They say that if you give them 49% equity only and the editor in India in the board will have control. There could be no objection to the entry. The other point of view is that the percentage of equity have has any meaning, They why the control is concerned. Because if there are many institutions corporate institutions in India, where people, have acquired that is 15% of the equity and these are the kind of things that are being discussed and much wider debate is needed in this matter. And parliament must also have an opportunity to debate it. And these are the points which have been thrown up and I think this all have to be considered.

Q: But do you think that foreign media can perform the role which domestic media has been

performing. I am talking about particular news papers and magazine.

A: Well, I think some people may not agree with some of the views expressed by some of our mediamen ansd news papers, but I think no one can even remotely suggest that the media in India has not been performing well. They have been performing and they are proceeding all the obligations that are expected in a democratic set up so this is also one of the point which is, has been thrown up. But afterall for what pupose is this entry needed. To be let the technological sophistication or capital, so that it has become necessary to allow foreign print media to come in. These are all the issues that are involve.

Q: I think the question raised is can TV be allowed to come in? Foreign TV can be allowed to and broadcast their porgramme then why not print media?

A: Well, I think there is a lot of difference between a TV and and news print .... media.

Q: What will be the consequent implication of following foreign media.

A: You see the political implications as perceived by different political parties is quite one thing. Some party may feel that it will help them or not help them. I don't think any decision can be taken on the basis of this perception. The decision will have to be taken on the basis of what would be the over all impact, both political, cultural, social and to what extent it will influence the thinking inside the country on issues which perhaps may or may not be in the larger interest of the country. These are the issues. Political I don't think one should bother about that, how it will affect politically alone.

Q: No what I mean was, you talk about a press is consider to be like fourth state and it is suppose to be having a very important role in the democracy. So if you allow the foreign media to come in, will they be able to abide by the law and protect the national interest.

A: That is the tragedy, what I am saying. The issue for discussion is this and study in every matter some decision or other have to be taken. It will be the overall perception and the balance of perception, this will then be the final factor to decide.

Q: But what is the constitutional position on this? Because this question is raised in artical 19-A, of the Indian Constitution?

A: Right to information and speech. Well there is a legal view which is endorsed by some Supreme Court Judgement. That this fundamental right of speech and all that is available to citizen of this country. It is not available to every one, and that is a point of view has been articulated, so that also we will have to think what it means.

Q: No, what I am saying that whether the committee has considered this point, it is decided that we will allow the foreigners to come in and print their news paper from here, will the constituion be amended?

A: Well, I don't think that issue will arise.

Q: No, suppose if a foreigner own the news paper or they have a coloberation here so do they have a right to critcise the government.

A: No, as I have said, that is one of the point which has been mentioned that, that right from this article is available to the citizen of this country.

Q: I thought you talk about your personal report.

A: No, I have told Mr. Thakar very clerly.

Thank you

Literacy Programme for women

1994 द न्यूज मेक्सिको के वरिष्ठ संवाददाता श्री योरास मारगोटिस के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: What is the ratio between men and women in India?

A: I don't think that it would be correct to say that because whatever the slight imbalances is not much of an imbalance between men and women. It is because of factors that has been suggested dowry .... and all that, it is not correct. We have unfortunately still some instances that are happening but that is not a general situation that it is happening all around and it is leading to that kind of result.

A: Well you see that kind of attitude which did exist in the intervening period in this country, when I am saying the intervening period, it is mostly the middivial period of our country otherwise the status and the position of women has aready been very high in India.

Q: Then why this disparity?

A: No, I mean these are the decisions taken to prevent any misuse of that kind, that is quite obvious, for example the anti-dowry laws, and many other laws which have been introduced to prevent a kind of discrimination that come to socities in India's practice, then the question of equality. Now all these are a part of an effort to remove any equality that exist. As I said there was a time in which it has happened and whatever is left over, we have to tackle but so far, for example in the freedom movement that took place in India, that was one of the period when the entire women folk and society underwent a great change and that way atleast the legal position of women.

Q: What is the legal position of Indian women?

A: I am not saying that it does not exist, that is not my case, problems are there, those problems are being met, but the impression is given that there is nothing else but these problems which we are grapling, that is not correct. And as I said so far as the legal position of the Indian women is concerned, they enjoy all the rights that when do, and in fact there are many rights which the women of India got. Which, unfortunately women in many parts of the world had to struggle for, for example right to vote. Tell me whether it was given to them everywhere just like in India. There was a sufferight movement. So this is what I mean to say that the whole concept about the women and society is quite one different thing in India. There has been departures, unfortunate abberations in between which has been corrected to

large extent and which still remains are being tackled very vigourasly.

Q: What is the percentage of literacy in women?

A: One of the biggest thing that is locking illiteracy. Litercy is about 37% per cent.

Q: In women it is 37 per cent and in man?

A: In man it is now gone up to 51. These are the things which are engaging our total attention, because we realise and I think it is universal recognition that literacy itself is power. lilliteracy dimination and we are having a programme of literacy in India in which women themselves are playing a very major part and it is our effort that in the next ten years or perhaps less than that we will come to a level where literacy rate between men and women will come to at par, which will go some time somewhere up to 75 to 80%. In this our effort is being put in, then there other areas in which the economic empowerment of the women which is very basic to their day to day existance and their capacity to stand up on their own legs economically, for that we have number of programmes and they are getting very good response, there is the Mahila Smradhi Yojna, which you can call impower development programme. Where the state give them certain amount equivalent to the amount that they can save over period of one year.

Q: Matching grant?

A: Suppose a woman in the rural area where these women's majority and they are able to save say 500 or thousand rupees. I mean they earn more than that but saving is the main thing, so the state will give them the same amount.

Q: What is your annual budget for this purpose?

A: For this purpose our annual budget I think, this was started on last year this programme and the budget is about 50 crore.

Q: Is there any programme for child nutrition?

A: And we have some programmes about child nutrition. That goes into million and millions of dollar, we have also the aid for it and we are trying to cover all the districts of the country. We have social worker and they are entrusted with that and the NGOs also take part in it and this extends to the whole of India. Now practically all the districts which number is around 470 in the country. They are covered.

Q: Is there free education for the women?

A: Yes, some of the States not all over India, and I think majority of them have completly free education up to the unversity level for women.

Q: How many women there are included in this programme? Have you any general idea?

A: Well, I dont want to be quoted only on this statistical part, because I was given the impression that you are going to talk something about culture, now you started with the family planning and .... I should have been told that is the point. I would have had all the information about this.

Q: Do you have any programme on the dowry to eradicate it?

A: That is what I want to correct, the culture of five thousand years old is not dismissive about women, but women, but it is putting women on a very high and proper place all this happend during the middivial time. So to say that women were for five thousand years were treated like this would be a travesty of truth. And what has happened as an aberation during the middivial time is now being corrected, that is what I am saying. But when this impression goes that for five thousand years women in India have been slaves that is not the correct thing.

Q: Even in upper classes in urban areas it is prevelent Is it right?

A: You see, matters of social relationship, obviously can not be dealt by law alone, it is the change of social attitude which eventually removes these things. And it is my clear impression that there might be still cases where these things happen, but the general social attitude to these maters is under going a very fast change.

Q: When Indian women will be going to be on equally to man?

A: No, no that is not the question of trying to anyone. But I think by the turn of this century the short coming that are apparant even now would no longer be there.

Q: So your main focus is on education.....

A: Education, then child nutrition and I may tell you that this education a part formal, even the literacy campaign has changed the attitude of the women regarding so many in matters, including family planning, there has been a tremondus demand in all the areas where the literacy programme is going on for many of the facilities for the family planning which otherwise they would not be asking for or they were resisting in some places. That is the liverage that literacy gives them so....

Q: What is the obstacle in women's progress?

A: You see, as I have said previously the education has been a bad draw back for her progress. In fact the women have not been able to get that access to education. In my view is the biggest obstacle and once you get over that, many of the problems which perhaps are not understood by them because the lake of comprehensive will be comprehended and the facilities and the opportunities available to deal with them, they will also use more effectively.

Q: What is the impact of family planning?

A: Yes, I am telling you, this is a parctical fall out in the areas where our literacy campaign has picked up, there has been immediate impact on the family planning programme. Suppose in some hundred women were coming to take advantage of family planning information, in a place where literacy campaign is going on that figure of 100 has gone up to 250. In some places has become difficult to cope with it.

Q: Does the caste system affects women development?

A: No, I must again clear that these all castes again a factor of social relationship. It is born out of that. And in these matters laws alone can not help. But gradually the industrialisation is making a lot of impact on this and in most of the industrial areas. You would not find that much of caste hole.

मुल्क की आजादी का मतलब क्या होता है? मुल्क की आजादी ऐसी चीज नहीं है जो सरे आम सड़कों पर देखने को मिले। जो किसी दूकान में रखी हो। वहाँ से जो लोग चाहे जब जाँच करके ले आए। उसे खरीद कर ले आए। मुल्क की आजादी का मतलब है, कि देश के अन्दर जो कुछ भी होना है, उस काम को यहाँ बैठकर फैसला करें।

– श्री अर्जुनसिंह

11 मार्च 1995

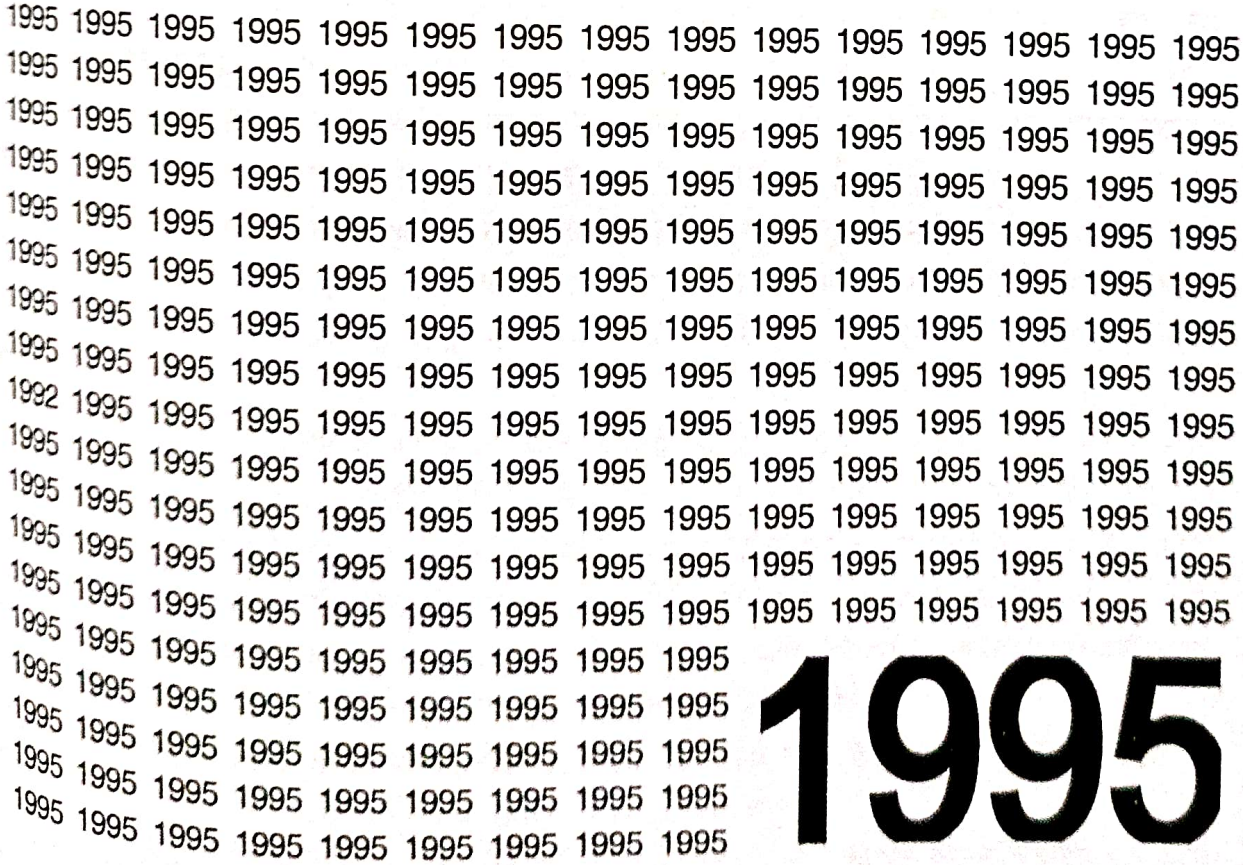

1995

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

अन्तर्राष्ट्रीय साजिश

24 जनवरी 1995 बिलासपुर की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

मध्यप्रदेश इंदिरा काँग्रेस के सम्मानित अध्यक्ष धृतलहरे जी, बहनें और सभी भाइयों जो काफी देर यहाँ इंतजार कर रहे हैं। मैं आपको ज्यादा देर तक और परेशान नहीं करूँगा। मुझे बिलासपुर आने में हर समय एक अनोखा अनुभव होता है। जो अनुभव किसी ऐसे लोगों के बीच में जाने से होता हैं, जो स्वभाविक तौर से और बहुत ही सहज तौर एक दूसरे से मिलते हैं, विश्वास में लेते हैं। तिकड़मबाजी मुझे बिलासपुर में नहीं दिखाई देती आम लोगों में, और शायद यही कारण है कि बहुत सी चीजों में आप पीछे रह गए। क्योंकि सियासी दाँव पेंच में कुछ लोग माहिर होते हैं, साधारण लोग धोखा खाते हैं। मुझे एक घटना याद आ रही है। यहाँ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। किसी बड़े नेता ने इसके बारे में कोई बात नहीं की। बिलासपुर के छात्र अध्यापक और कुछ जन प्रतिनिधियों ने अपनी राय जाहिर की कि बिलासपुर में विश्वविद्यालय होना चाहिए। अखबारों में छपा, जिस दिन से यह समाचार अखबारों में छपा उस दिन से इस बात की पैरवी शुरू हो गई कि क्यों बिलासपुर में विश्वविद्यालय नहीं होना चाहिए। जब ज्यादा पैरवी हो गई तो मैंने सोचा कि इसका अर्थ यह है कि बिलासपुर में विश्वविद्यालय जरूर होना चाहिए और यह हमारे उस महान संत गुरू घासीदास जी के नाम पर ही विश्वविद्यालय कायम हो, लेकिन मैं देख रहा हूँ उसकी प्रगति धीमी हैं। अगले दफे जो कार्यक्रम बनेगा, मैं विश्वविद्यालय जरूर जाऊँगा, देखूँगा जो इस प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालय हैं उनकी तुलना में किस प्रकार से गुरू घासीदास विश्वविद्यालय काम कर रहा हैं।

श्रीमति इंदिरा गाँधी का जो सपना था की तेंदू पत्ता के जो मजदूर, मजदूर से मालिक बने वो सपना हमने 1995-96 में पूरा करना है। जनवरी, 1996 तक हम इंतजार करेंगे क्योंकि हम लोगों ने मध्यप्रदेश शासन से निवेदन किया हैं। भेड़िया जी को रिपोर्ट देने को कहा गया। उन्होंने भी अपनी रिपोर्ट दे दी है और उन्होंने भी अपनी रिपोर्ट में इस बात की सिफारिश की है।

हमारे देश की आज यह स्थिति हो रही हैं कि बाहर से कोई एक हवाई जहाज आता हैं। चार दिन तक भ्रमण करता है सारे भारत में जगह-जगह पर आधुनिक हथियार फेंक दिए जाते हैं, और भारत सरकार को इसकी कानों कान खबर नहीं होती है। इसका क्या अंजाम होगा? हमें समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान को कमजोर करने के लिए भारत को तोड़ने के लिए एक सशक्त अर्न्तराष्ट्रीय साजिश है। अगर कोई हकीकत से मुँह मोड़ने की कोशिश करें किसी दबाव में किसी और लिहाज से तो वह देश के साथ न्याय नहीं कर रहा है। अब पूछे भी तो किस से पूछे इसी प्रकार से जो काँग्रेस पार्टी की हालत हुई हैं तो वह भी एक बहुत ही शोचनीय विषय है।

एक बात कहकर मैं अपनी बात समाप्त करूँगा वो है स्वर्गीय राजीव गाँधी की हत्या के पीछे जो षड़यंत्र है,

उसकी मुझे याद है। यही कहीं देश में करीब दो लाख, ढाई लाख लोगों की एक मीटिंग राजीव जी ने संबोधित की थी। हम सब लोग वहाँ थे। एक ऐसा युवक जो देश के लिए सोचता था। देश के लिए कुछ करना चाहता था। 21वीं सदी में ले जाने की बात वह किया करते थे।

मैं आप सभी बहनों, भाइयों को आज की इस सभा में पधारने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। कल क्रिसमस है। बिलासपुर में बहुत से हमारे क्रिश्चियन भाई और बहन रहते हैं। आज की मध्य रात्रि में भगवान ईसा मसीह का जन्म हुआ। विश्व की शांति के लिए सद्भाव के लिए, भाईचारे के लिए, दया के लिए मैं आप सभी क्रिश्चियन भाइयों और बहनों के साथ उनकी इस भावना में शामिल होना चाहता हूँ। आज क्रिसमस की इस पूर्व संध्या में और उन्हें एक बहुत सुखमय क्रिसमस के लिए अपनी बधाई और अपनी तरफ से उन्हें शुभकामना देना चाहता हूँ। आप सभी बहनों और भाईयों का बहुत-बहुत आभार और नये वर्ष की बहुत-बहुत बधाईयाँ,

शुभकामनाएँ, धन्यवाद।

उदारीकरण का लाभ गरीबों को भी मिले

9 मार्च 1995 भोपाल में आयोजित इंदिरा काँग्रेस की ऐतिहासिक रेली में किए गए उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं–

मध्यप्रदेश के कोने-कोने से यहाँ पधारे हुए आदरणीय माताओं, बहिनों और भाईयों, आदरणीय श्री नारायण दत्त तिवारी, आदरणीय श्री भागवत झा आजाद, आदरणीय श्री मण्डलोई, श्री सत्य नारायण राव जी, आदरणीय मोहसिना जी, आदरणीय फोतेदार जी, हमारे साथी के.एम. सिंह जी, बुराड़ जी, के. एस. राव जी, उत्तर प्रदेश की विधान सभा में काँग्रेस के सचेतक भाई जगदम्बिका पाल जी, अन्य वहाँ के सम्मानित विधायकगण, महाराष्ट्र के जुझारू नेता माननीय त्रिपुणे जी, अन्य प्रदेशों से आए हुए हमारे सम्मानित साथियों और इस विशाल सभा में उपस्थित मेरे जैसे साधारण काँग्रेस के कार्यकर्तागण, साथियों। साथियों लगातार नारा लगने पर अब जरा थोड़ा नारा कम करें, कृपा कर के नारा न लगाएँ ताकि मैं अपनी बात आप तक पहुँचा सकूँ, क्यों कि इस बात को आप तक और देश के करोड़ों लोगों तक पहुँचाने में बहुत-सी बाधाएँ डाली जा रही हैं। आप के नारे तो उस में बाधा न बने।

आज हम सब भोपाल की एक ऐतिहासिक नगरी में इकट्ठे हुए हैं। यहाँ तक पहुँचने में प्रेम का, स्नेह का, आशीर्वाद का और हर तरह से संघर्षरत् रहने का आश्वासनों की बौछार हम सब पर पड़ी और इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि ये जो प्राकृतिक बौछार हुई। आँधी और तूफान आया। इसके लिए मैं यही कहना चाहता हूँ-

फिर आई गर्दिशे आसमानी,
बड़ी मेहरबानी, बड़ी मेहरबानी।

क्योंकि जब तक गर्दिशों के बीच से कोई कौम, कोई इंसान, कोई मुल्क नहीं गुजरता है, दुनिया में नई तवारिख नहीं लिखी जाती। हम आज सब उस देश के निवासी हैं, नागरिक हैं, हिन्दुस्तान के किसी कोने में कोई रहता है, कोई मजहब मानता है, कोई भी भाषा बोलता है, इस देश के, भारत माता की हम संतान हैं।

अगर हम ने गफ़लत की। अगर हम ने छोटे-छोटे मामलों में फँस कर इस देश की उस तस्वीर को कायम नहीं रखा, जिसको गढ़ने के लिए इस देश के हजारों नौजवानों ने फाँसी के तख्ते चूमे, माताएँ विधवा हुई, बच्चे अनाथ हुए। भारत की आजादी संघर्ष की वो लम्बी कहानी आधुनिक दुनिया की वो कहानी है, जिस की न पहले कोई

मिसाल थी और न आगे कोई मिसाल बनेगी।

कुछ लोग समझते हैं कि आज कल और परसों के काम ही हमारे देश के काम है। आज कल और परसों के बाद भी दिन आते है और उस दिन जो सही निकले, जो सार्थक हो, जो जरूरत हो, नेताओं की जिम्मेदारी है कि वो आज कल परसों के बाद के दिनों को भी ध्यान में रख कर हमारा नेतृत्व करें।

आज ये साम्प्रादायिक शक्तियाँ फिर से संगठित हो रही हैं और हमारा, आपका यह फर्ज है कि हम उनके खिलाफ संघर्ष करें। हर हाल में उन को इस देश में न बैठने दें। उस खतरे से हमें जैसा कि तिवारी जी ने भी कहा सतर्क रहना चाहिए, आगाह रहना चाहिए। क्योंकि यह खतरा अगर एक सीमा से ज्यादा बढ़ जाएगा तो फिर हमारे लिए बहुत बड़ी मुश्किल आने वाले दिनों में पड़ सकती है।

जिस प्रकार से भी देश के राजनीतिक, आर्थिक ढाँचा को बनाना है, बनाने की जरूरत है, उसमें हमें लगना है, लेकिन सबसे पहले इस बात का ख्याल रखना है कि भारत के करोड़ो-करोड़ो जो सर्वहारा वर्ग है, जो गरीब है, हरिजन है, आदिवासी है, पिछड़ा वर्ग है, अख़लिया है, जब तक इन के हितों की रक्षा करके कोई काम करने की कोशिश नहीं करेंगे, तब तक भारत की भलाई उस काम से नहीं हो सकती है और ये काम करने में बहुत चुनौतियाँ आती है, बहुत-सी कठिनाइयाँ आती हैं।

क्या वजह है कि आज ये बातें राष्ट्रीय स्तर पर नहीं सोची जाती हैं। हम उदारीकरण नीति के खिलाफ नहीं है। हम किसी भी प्रकार से देश में विदेशी पूँजी आने के खिलाफ़ नहीं है, लेकिन उदारीकरण हमारा चंद लोगों तक सिमट कर नहीं रह जाना चाहिए। उसका फायदा उन करोड़ों लोगों को भी मिलना चाहिए, जो गरीबी रेखा के नीचे है और अगर उनको संदेह होता है कि उन को इंकलाब नहीं मिलेगा तो हमें उसमें तबदीली करनी चाहिए। जब लोग पूछते हैं कि आपकी क्या राय है। मैं एक सुझाव देना चाहता हूँ कि सारे हिन्दुस्तान में जितने ऐसे रोजगार और धंधे हैं, जिनमें देश के गरीब लोगों का श्रम लगता है और श्रम का शोषण होता है, ऐसे प्रत्येक रोजगार को को-आपरेटिव सोसायटीज के माध्यम से उन गरीबों के हाथ में देना चाहिए।

अभी पूरे आंकड़ों का पता नहीं लग पाया है, इसलिए कोई एक संख्या मैं नहीं कह सकता हूँ, लेकिन जितना अलग-अलग आँकड़े लगाकर जोड़ा जाता है, वो जरूर आपको बता सकता हूँ। लगभग 90 हजार करोड़ रुपये के घोटाले, पिछले तीन साल में इस देश में हो गए। अभी अकेले हर्षदमेहता के हिसाब में 71 हजार करोड़ रुपये के मामले निकले है। सिक्यूरिटी स्केम में 10 हजार करोड़ रुपये आपके डिस्इंवेस्टमेंट के मामले में 10 हजार करोड़, रुपये चीनी के मामले में अभी हिसाब नहीं है। आप अंदाज कर लीजिए मध्यप्रदेश के साथियों को मैं कहना चाहता हूँ, शायद इतने हजार करोड़ की संख्या हम लोग नहीं जोड़ पाते, लेकिन इतना तो हम समझ सकते हैं कि मध्यप्रदेश की वार्षिक योजना में तीन हजार करोड़ रुपये लगते है अर्थात पाँच वर्षों में पन्द्रह हजार करोड़ रुपये लगते है।

लेकिन मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है। मैं जानता हूँ। जगह-जगह लोग मुझसे पूछते हैं कि आपने इस्तीफा क्यों दिया। मेरी किसी से नाराजगी नहीं थी। किसी गम में इस्तीफा नहीं दिया, लेकिन जब यह अहसास होने लगा कि जो धरोहर हम सब को विरासत में पवित्र हाथों से मिली थी, जिनका मैंने जिक्र किया। पंडित जी, इंदिरा जी राजीव जी, शास्त्री जी, शायद उस धरोहर की रक्षा सरकार के अंदर कुर्सी पर बैठ कर मैं नहीं कर सकता था, इसलिए मैंने इस्तीफा दिया।

मैं उसके परिणामों को भी जानता हूँ। उनके खतरों को भी जानता हूँ। मुझे अच्छी तरह से इस बात का अहसास है कि यहाँ तो आज केवल हमारे साथियों को इस सभा में आने से रोका गया, ताकि हमारी बात उन के कानों पर

न पड़े। क्या पता कल अखबार को पढ़ने पर भी रोक लगा दी जाय। लेकिन ये बात यहाँ से कही जाएगी, जहाँ-जहाँ देश के अंदर जो एक छोटा-सा गठबंधन थोड़े लोगों के बीच में हुआ है। थोड़े तादात में भ्रष्ट नौकरशाली, थोड़ी तादाद में भ्रष्टराजनीतिज्ञ और भ्रष्ट थोड़ी सी तादाद में जो व्यापारी वर्ग है। इनका जो गठबंधन है। मैं आज देश को आगाह करना चाहता हूँ और इस मंच पर बैठे हुए वरिष्ठ साथियों के सामने कि अगर हमने समय रहते इस गठबंधन को तोड़ने की कोशिश नहीं की तो यह सारे देश के भविष्य को निगल जाएगा। गरीबों के भविष्य को निगल जाएगा और हमारा देश जिन लक्षयों की ओर बढ़ना चाहता है, कहीं उस के पीछे चला जाएगा।

मैं तो ऐसी आशा करता हूँ और मैं निवेदन करता हूँ कि इस गठबंधन को तोड़ने का हम प्रयास करेंगे। भारत के भविष्य पर काली छाया डाली जा रही है भ्रष्टाचार के रूप में इस काली छाया को हटाने की प्राथमिक और सब से पहली जिम्मेदारी भारत के प्रधान मंत्री की है और मैं उनसे निवेदन करना चाहता हूँ कि वे अपने सभी साथियों को विश्वास में लेकर इस कर्तव्य को पूरा करने का कष्ट करें। इससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है इसको बहलाया नहीं जा सकता है। पार्टी से लागों को निकाल कर यह मुद्दा समाप्त नहीं किया जा सकता हैं। यह मुद्दा तभी समाप्त होगा जब उन भ्रष्ट लोगों को बेनकाब करके जेल में बंद किया जाएगा। तब इस देश की जनता समझेगी कि हमारे ऊपर से वो काली छाया हटी।

आज हम सब काँग्रेस के सिपाही होने का गौरव अनुभव करते हैं। तिवारी जी से कल दिल्ली में पूछा गया कि आप किस के बुलावे पर जा रहे हैं, भोपाल। उनको किसी के बुलावे की वैसे भी जरूरत नहीं है, लेकिन इस समय उनके आने के पीछे बड़ी अड़चन लगाई जा रही थी और तो और क्या कहूँ। समाचार पत्रों में यह भी छपा कि आप डिप्टी प्राइम मिनिस्टर बन जाईए, भोपाल मत जाईए। अब आप सोचिए एक ऐसे व्यक्ति को जिसने अपने जीवन के पचास वर्ष भारत की सेवा करने में लगाया हो, तपा हो, समर्पित किया हो, उस व्यक्ति का मूल्य कुछ लोग डिप्टी प्राइम मिनिस्टर लगाना चाहते हैं।

ये बात केवल सतही तौर से कहने की बात नहीं है। ये इस बात की ओर इशारा करती है कि हमारे देश के जो मूल्य हैं। सार्वजनिक जीवन में जो मूल्य हैं। वो कितने नीचे गिरा दिए गए हैं। ये इसका प्रमाण है और यदि समय रहते जो लोग इस तरह का मोल तौल करते हैं, खरीद-फरोख्त करते हैं प्रजातंत्र के नुमाइंदों की। अगर इस पर रोक नहीं लगाई गई तो भारत का प्रजातंत्र एक दम समाप्त हो जाएगा और इस देश में भी अधिनायकवादी शक्तियाँ मजबूत हो जाएगी।

चुनाव होते हैं। लोग कहते हैं, चुनाव हो जाए, कुछ भी हो जाए, सरकार तो हमारी बनेगी। जनता का फैसला अपनी जगह है। सरकार हमारी बनेगी। क्या यही है प्रजातंत्र हमारे देश का। क्या इसी के लिए हमने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। क्या संविधान इसी के लिए बना था। मैं इनका जिक्र आपसे इसलिए कहना चाहता हूँ कि आप को खतरों का पूरा अंदाज होना चाहिए। अगर देश का प्रजातंत्र कमजोर हुआ। हमारी राजनीतिक सत्ता की लिप्सा की वजह से, लालच की वजह से, पैसे की वजह से तो आने वाला इतिहास हमारी पीढ़ी की ओर अँगुली उठा कर कहेगा कि वो निकम्मे लोग हैं, जो देश की आजादी भी नहीं सम्भाल सके, आने वाले दिनों की बात तो छोड़ दीजिए।

हमारे देश के एक बहुत प्यारे, हम सबके दुलारे रहनुमा राजीव जी आज हमारे बीच में नहीं है। भोपाल के लोग राजीव जी को प्रधाम मंत्री के रूप में तो याद रखते हैं। उनके कामों के बारे में भी सुनते हैं। फायदा मिलेगा हमको, लेकिन भोपाल में राजीव गाँधी की यदि आज याद ताजा है, तो सबसे बड़ी बात उसके पीछे यह है कि जब एक अप्रत्याशित घटना भोपाल में हुई गैस रिसन की। हजारो हमारे बहिन और भाई मौत के घाट उतर गए। उस वक्त

राजीव जी कहीं दक्षिण में चुनाव प्रचार में लगे हुए थे। प्रचार छोड़कर राजीव जी रातों रात यहाँ आए। हमारे आप के दुःखों को बाँटने के लिए, हमारी परेशानियों को कम करने के लिए, भोपाल के लोग उस राजीव गाँधी को ज्यादा याद रखते हैं। जिसने हमारे दिलों को उस अधियारे में टटोला, जब चारों तरफ हम को अँधेरा दिखता था।

हमारा आपका एक बहुत निकट का संबंध भी है। अपने जीवन के तीस वर्षों तक अलग-अलग परिस्थितियों में मैंने इस प्रदेश की सेवा करने की कोशिश की है। न जाने कितनी मुझसे गलतियाँ हुई होंगी। न जाने कितने हमारे ऐसे कदम होंगे, जिनकी वजह से कुछ लोगों को दर्द भी हुआ होगा और ज्यादा नुकसान भी हुआ हो, लेकिन मैं एक बात अपने दिल पर हाथ रख कर ईमानदारी से कह सकता हूँ कि इस प्रदेश के किसी गरीब, किसी बेसहारा और किसी ऐसे व्यक्ति को जो कहीं नहीं जा सकता है, जिसकी आँखों में भी उसका भविष्य नहीं तैरता है, उसको मैंने कभी भी तकलीफ या नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं की।

आने वाला रास्ता कठिन रास्ता है। दुःखों से भरा हुआ रास्ता है। चुनौतियों से भरा हुआ रास्ता है, क्योंकि जब कभी ऐसी बातें उठाई जाती हैं, जिनसे निहित स्वार्थों पर धक्का लगता है, खतरा आता है तो प्रतिक्रियाएँ बहुत तीव्र होती है और उन तीव्र प्रतिक्रियाओं के द्वारा कभी-कभी जघन्य काम भी हो जाते हैं। इन सबके लिए हम सब को तैयार रहना है। मैं तो कम से कम तैयार हूँ। आदमी इस दुनिया में एक मरता है। दोबारा नहीं मरता है और जिन्दा रह कर मरने के समान हो जाए तो ऐसे मरने से क्या फायदा? और फिर क्या दिक्कत है, जब नारायण दत्त जी तिवारी जैसे हमारे मार्ग प्रदर्शक हों। आजाद साहब जैसे बड़े भाई हों। जो यहाँ पर हैं अलग-अलग प्रदेशों से आए हुए, वो संघर्ष के साथी हों और मैं आपसे कह सकता हूँ कि मैं भारत के कई क्षेत्रों में इस बीच में, महीने छः महीने में गया हूँ। ऐसा मुझे कोई प्रदेश नहीं दिखा, जहाँ अधिकांश काँग्रेस जन और वहाँ की जनता अब इसके लिए लड़ने के लिए तैयार न हों, केवल अपनी निगाह हमें नहीं झुकानी चाहिए। हमारे मन में भ्रम पैदा नहीं होना चाहिए। अपने रास्ते के बारे में जो हमारा विश्वास है, उस विश्वास में कमी नहीं होना चाहिए। बहुत से लोग हैं जो समय का इंतजार कर रहे हैं, देख रहे हैं तो उनके लिए इतना ही मैं कहना चाहता हूँ अपनी ओर से नहीं, मैं कुछ कहूँगा तो शायद किसी को बुरा लग जाए। हर प्रदेश में ऐसे लोग हैं, उन के लिए मैं राष्ट्र कवि दिनकर जी की एक पंक्ति कहना चाहता हूँ-

समर शेष है, समर शेष है,
नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र।
जो तटस्थ हैं,
समय लिखेगा उनका भी इतिहास॥

और मैं आपसे, मैं तिवारी जी से आप सब लोगों की ओर से उनके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ और जो हमारे बुजुर्ग और साथी उत्तरप्रदेश से, राजस्थान से, आँध्र प्रदेश से, महाराष्ट्र से यहाँ पधारे हैं पंजाब से, असम से, उनसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप वैसे तो कष्ट उठा कर यहाँ आए हैं, लेकिन आप भारत के हृदय प्रदेश में आए हैं। यहाँ से ही इस देश के कोने-कोने में, देश की धमनियों में रक्त का संचार होता है। आप आए, आपने उस गति को तेज कर दिया। आपने उस संबंध को तेज कर दिया। आप सबके आशीर्वाद से, आप सबके संघर्ष के साथ जुड़ने से निश्चित रूप से जो आज हम सब का सामूहिक कर्तव्य है, उस कर्तव्य को पूरा करने में, हम सफल होंगे और आप सब लोगों के साथ मिल कर एक दफे काँग्रेस को फिर से शक्ति का संचार कर पाएँगे, जिससे जो ऐतिहासिक जिम्मेदारी काँग्रेस के कंधों पर पिछले सौ वर्षों से ज्यादा से है। इक्कीसवीं सदी में जब भारत प्रवेश करे, काँग्रेस पार्टी में उस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाने की अगुवाई करे और भारत की मजबूती,

खुशहाली को पूरीकर के हम भारत के गौरव को बढ़ाएँ। इस आशा और विश्वास के साथ हम आप का अभिनंदन करते है और आप जो सब लोग यहाँ पधारे हैं, आप को पुनः धन्यवाद् देता हूँ।

सत्ता के दलालों ने राजीव गाँधी की हत्या की साजिश की थी

26 मई 1995 रतलाम की एक आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है–

परम आदरणीय नारायणदत्त जी, प्रदेश काँग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष श्री धृतलहरे जी, रतलाम, जावरा, मंदसौर, जावरा, आलोट और अलग-अलग तहसीलों से, कस्बों से शहरों से यहाँ पर पधारे हुए हमारे जुझारू साथीगण, रतलाम की इस ऐतिहासिक सभा में तिवारी जी का हमने उद्‌बोधन सुना। उनका मार्गदर्शन मिला और आनेवाली चुनौतियों का दिग्दर्शन भी मिला। यह बात अपने आप में महत्व रखती हैं जो कुछ उन्होंने कहा कि आखिर वो कौन से कारण थे, जिनकी वजह से सारे देश के काँग्रेस के कार्यकर्ता दिल्ली में इकट्‌ठे होकर, उन्होंने एक फैसला लिया कि अब काँग्रेस पार्टी के पुनर्जीवन के लिए यह आवश्यक हैं कि काँग्रेस इंदिरा को जब एक नया स्वरूप दिया जाय, एक नई प्रेरणा दी जाय, एक नया संकल्प दिया जाय ताकि जो भटकाव हुआ हैं, जो आवाम से दूरी हुई हैं, संस्था की वो समाप्त की जा सकें और काँग्रेस पार्टी फिर से अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाने के लायक बन सकें।

स्वर्गीय राजीव जी जो हमें छोड़कर गए, एक सूत्र था हमारे बीच चुनाव के आखिरी दिन उनकी हत्या हुई और ये हत्या केवल हत्या करने के लिए नही हुई। मैं केवल आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आज जो कुछ हो रहा हैं उसके सूत्र वहाँ हैं। इंदिरा जी की शहादत के बाद राजीव जी के, देश ने युवा हाथों में अपनी मशाल दी, मशाल ही नहीं दी, एक विश्वास दिया। काँग्रेस के अध्यक्ष के नाते काँग्रेस के शताब्दी समारोह में बम्बई में राजीव जी ने इस बात का आभास दिलाया, दुनिया को, काँग्रेसनों को कि वे अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं, वो समझ रहे हैं काँग्रेस को अन्दर से घुन लग गया हैं और एक तेवर से काँग्रेस को काम करना पड़ेगा। आपको याद होगा बम्बई के एक समारोह में उन्होंने कहा था कि सत्ता के दलालों से काँग्रेस को मुक्ति दिलानी होगी। उस वक्त से सत्ता के दलाल चौंक गए, उनके कान खड़े हो गए क्योंकि दलाली में जो मजा हैं, वो मजा संघर्ष में तो नहीं है। और एक-एक कर के उन्होंने राजीव जी की छवि को खंडित करना शुरू किया। किसी बात को लेकर उनके खिलाफ आरोप लगाए। बहुत हल्ला गुल्ला सुना बोफोर्स का। विश्वनाथ प्रताप सिंह जी ने लंबे चौड़े बयान दिए। कहा कि मैं जिस दिन प्रधानमंत्री बनूँगा 11 दिन के अन्दर मैं सबके नाम बता दूँगा तो ठीक है 11 महीने हो गए एक नाम भी वो बता नही सकें। ये केवल चरित्रहनन करने की एक साजिश थी ताकि उस युवा व्यक्तित्व को धूमिल किया जा सकें। क्योंकि लोगों को ये खतरा था कि जो सत्ता के दलालों को सत्ता के गलियारे से निकालने का संकल्प जो देश के सामने व्यक्त कर चुका हैं, अगर वो सचमुच में जनता का बनकर और मजबूत हो जाएगा तो इन दलालों की नही चलेगी। और मैं बहुत साफ तौर से कहना चाहता हूँ कि उनके इस कुप्रचार से जरूर राजीव जी चुनाव हार गए। उसके बाद सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर काँग्रेस आई। लोगों ने कहना शुरू कियाा कि अब दावा करिएँ सरकार बनाने का। प्रधानमंत्री बनने का उन्होंने दावा नहीं किया, उन्होंने यह कहा कि जब तक जनता हमको बहुमत नहीं देगी हम इस जोड़ तोड़ सरकार नहीं बनाना चाहते। वो विश्वास जनता के बीच में जाकर पाना चाहते हैं और जब ये खिचड़ी सरकारें आपस में लड़ झगड़कर टूटने लगी और 91 का चुनाव नजदीक आने लगा। सारे मुल्क में राजीव जी ने दौरा करके, अपनी गलतियों को स्वीकार करके, राजीव जी ने वादा किया कि हम देश को बनाने के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देना चाहते हैं। आपका हमें सहयोग

चाहिए। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक नई फिजा बन गई। सत्ता के दलालों की और भी चिन्ता बढ़ गई। और राजीव जी की हत्या की साजिश उन्हीं सत्ता के दलालों के द्वारा हुई हैं। ये मैं खुले मंच से कहना चाहता हूँ। और अब जिन परिस्थितियों में भारतवर्ष फँसा हुआ है, काँग्रेस फँसी हुई है, यहाँ से निकलने का रास्ता ढूँढना ही आपका सबसे बड़ा कर्तव्य हैं। हमने बनाया, काँग्रेस ने बनाया श्री नरसिंहराव जी को अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, मैंने प्रस्ताव दिया ये सोचकर कि जो विरासत काँग्रेस की है, कम से कम उसको ये तो पहचानेंगे।

यहाँ के अखबारों में तो नहीं छपा, दिल्ली के कार्यालय से मुझे फोन आया कि वह आज के अखबारों में छपा है कि मुख्यमंत्री दिग्विजयसिंह जी ने कहा कि 1978 में अर्जुनसिंह ने हमसे भी हलफनामा भरवाया था, आज मैं भरवा रहा हूँ तो क्या बुरी बात है। जी हाँ मैंने हलफनामा 1978 में विरोधी दल के नेता की हैसियत से भरवाया था इंदिरा जी के नेतृत्व में उन उसूलों के लिए जिनके लिए वह संघर्ष कर रहे थे। और दिग्विजयसिंह जी यह न भूल जाय कि उसी आस्था पत्र को भरने की वजह से वह आज इस प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

8-9 महीने के बाद तो चुनाव होना ही है और ये 8-9 महीने की चाँदनी और फिर अँधेरी रात क्या काँग्रेस के लिए ऐसा भोगना जरूरी है, क्या इस देश के अन्दर उस अंधकारमय युग का प्रवेश होना जरूरी है, जहाँ मूल्यों को भूल जाय आदर्शों को भूल जायँ केवल कुर्सी पर बने रहने के लिए सब प्रकार के दाँव पेंच लगाकर हम बैठे रहें। हम लोगों ने तिवारी जी और हमने हम जैसे बहुत से लोग हैं कहा जाता है कि उन्होंने लक्ष्मण रेखा पार कर दी इसलिए इनके खिलाफ कार्रवाई हुई। अब लक्ष्मण रेखा को हम लोग भी थोड़ा बहुत जानते हैं। प्रसंगवश रामायण में कोई इस्तेमाल किया गया आज लक्ष्मण रेखा का सीता माता की रक्षा के लिए नहीं उल्लेख होता है। भ्रष्टाचारियों की रक्षा के लिए लक्ष्मण रेखा इस्तेमाल की जा रही है। लक्ष्मण को भी, रामायण को भी और हमारे सब मूल्यों और आदर्शों का भी इस्तेमाल करने में किसी को कोई हिचकिचाहट नहीं है। इसलिए काँग्रेस के कार्यक्रताओं ने ये फैसला लिया है कि नेता लोग जो करना चाहे करें, काँग्रेस कार्यकर्ता अब इस काँग्रेस की बर्बादी और नही देखेंगे और संघर्ष के माध्यम से हम मंजिल तक पहुँचेगे।

हम सब जैसा तिवारी जी ने कहा आप संघर्ष करेंगे, हम आपके साथ हैं। चाहे कुछ भी कुर्बानी देनी पड़े कोई भी तकलीफ क्यों न सहनी पड़े। इस संघर्ष में हम सफल इसलिए होंगे क्योंकि यह भारत की आत्मा के लिए संघर्ष है, भारत के भविष्य के लिए ये संघर्ष हैं, काँग्रेस के अस्तित्व के लिए ये संघर्ष हैं, किसी की प्रायवेट प्रापर्टी के लिए संघर्ष नहीं हैं न कोई किसी का पारिवारिक झगड़ा हैं, जिसके लिए संघर्ष हैं। भारत के भविष्य का संघर्ष निश्चित रूप से हमें सफलता के साथ इस संघर्ष को पूरा करने और आवाम का इसमें बराबर सहयोग और आशीर्वाद मिलें, वही आज मैं आपके बीच में प्रार्थना करने आया हूँ। सदैव की भाँति मुझे पूरा विश्वास है कि रतलाम जिला, मंदसौर जिले के जागरूक जनता का इस संघर्ष में हमें आशीर्वाद भी प्राप्त है और सहयोग भी प्राप्त हैं। धन्यवाद, जयहिन्द।

विश्वास का संकट गहरा रहा है

12 जून 1995 को शिवपुरी की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

परम आदरणीय तिवारी जी, मध्यप्रदेश काँग्रेस इंदिरा के अध्यक्ष माननीय धृतलहरे जी, यहाँ पर पधारे हुए सभी काँग्रेस के साथियों और शिवपुरी नगर के और समीप के ग्रामीण अँचलों के आए आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों। तिवारी जी ने सविस्तार आपसे सब बातें कही है। उनको मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ। मै आपसे आज

जो कुछ कहना चाहता हूँ वह कुछ एक संदर्भ में हैं, जो संदर्भ पुराना होते हुए भी नया है। यह पहली आम सभा है, मध्य प्रदेश की धरती पर अखिल भारतीय काँग्रेस इंदिरा की और यह हमारा सौभाग्य है कि इस सभा में आज हमारे अध्यक्ष महोदय तिवारीजी विद्यमान हैं।

इंदिरा जी ने मध्य प्रदेश में इनके नेतृत्व में काम करने वाले लोगों को बुलाया। मेरा सौभाग्य है कि उन भाइयों में मैं भी एक था और उन परिस्थितियों में हम सबको काम करने के निर्देश हुए। उस चुनाव में मध्य प्रदेश का बहुमत विधायकों का,इंदिरा जी के नेतृत्व में उन्होंने अपना मतदान किया और इंदिरा जी के उम्मीदवार गिरी साहब चुने गए। जबकि काँग्रेस के कई नेता उस समय श्रीमती इंदिरा गाँधी के खिलाफ थे।

दूसरा संदर्भ 1977 का है। जब श्रीमती इंदिरा गाँधी चुनाव हार गई, पार्टी चुनाव हार गई वो नजारा और आज के नजारे में भी वही समानता दिखती है। जिन लोगों ने इंदिरा जी से किनारा करके अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश की आज फिर से प्रदेश के रहनुमा काँग्रेस से अलग अपनी पहचान बना रहे हैं।

अभी ढिल्लन साहब ने रोमांचित क्षणों की याद दिलाई जब नेता जी सुभाषचंद बोस देश की आजादी के लड़ाई के लिये आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व कर रहे थे। हम लोगों ने उनके भाषण रेडियों पर सुनें। उस समय भाषण सुनना भी जुर्म था और अगर कोई पकड़ा जाय भाषण सुनते हुये तो उसे कम से कम एक साल की सजा थी। नेताजी ने रंगून में कहा था 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा,' ये उनकी कमाई हैं। जिसकी वजह से आज प्रजातंत्र इस देश में हैं।

अभी तिवारी जी ने कहा कि आर्थिक विकास की बात सही है। आर्थिक विकास होना चाहिए, आर्थिक नीति के खिलाफ हम नहीं है लेकिन जब शिवपुरी जैसे सथान पर आते हैं जब से आए तब से हमारे साथी कह रहे हैं कि आपने जो पीने के पानी का जो यहाँ पर प्रावधान करवाया था उसमें कुछ भी नहीं हुआ तो जब पीने को पानी नहीं मिल रहा हैं, तो कोका कोला की फैक्ट्री के लिए करोड़ों रुपये लगाने की जरूरत क्या हैं? जिस सरकार की ये प्राथमिकताएँ हों कि लोग शुद्ध पानी पीने के लिए तरसे वह कोका कोला की फैक्ट्री के लिए करोड़ों रुपये का पूंजी निवेश किया जाय आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं कि कितना जनहित से जुड़ा हुआ नजरिया हैं और दृष्टिकोण है।

सांप्रदायिक शक्तियों की बात हैं श्रीमती इंदिरा गाँधी और श्री राजीव गाँधी जी और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ये तीन बलिदान भारत में 50 वर्ष में हुए हैं। आजादी के बाद दुनिया के किसी देश का ऐसा कोई इतिहास नहीं है, प्रमाण नहीं है जहाँ तीन नेताओं को केवल उनके विश्वासों के लिए केवल उनके देश की समर्थन की भावना के लिए मौलिक एकता और सद्भावना को बनाए रखने के लिए जिनकी हत्या 50 वर्षों के अन्दर की गई हैं। हम सब उस विरासत को अपनी विरासत मानते हैं।

हमारे देश के गरीबों का जहाँ तक सवाल है। अभी तिवारी जी ने जो बात कही केवल उनकी इसी बात को दोहराना चाहूँगा कि हिन्दुस्तान की सियासत कभी भी देश हित में नहीं चलाई जा सकती है। जब तक इस देश के गरीबों को पूरी तरह से ख्याल करके सियासत को चलाने की कोशिश न की जाय। जिनको आपने नजरदाँज किया गरीबों के हितों को, बढ़ती हुई महँगाई, लोगों की दो वक्त की रोटी खाने का इंतजाम तो फिर क्या होगा?

अगर एक दफे साम्प्रदायिक शक्तियों को मजबूती मिल गई अगर एक दफे जनता का विश्वास हमारे ऊपर से उठ गया यदि भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगाया जा सका। सारा ढाँचा जो भारत वर्ष का जो प्रजातंत्र हैं, वह डगमगा जायगा और भारत जैसे देश में जब प्रजातंत्र का ढाँचा लड़खड़ा जायगा तो यह मानकर चलिए कि गरीब का विश्वास भारत सरकार से उठ जायगा और गरीब के विश्वास के बिना हिनदुस्तान की कोई भी सियासत नहीं चल सकती। इसको मंजूर करना चाहिए न मंजूर करने में हम अपने ही भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे है। यह मैं आपके सामने

कहना चाहता हूँ।

मुझे याद आता है कि 1990 में 22 अक्टूबर को मेरे हृदय का आपरेशन होने वाला था। बेहोशी देने के पहले लोग आपरेशन के बारे में चिंतित रहते है कि आपरेशन का नतीजा क्या निकलेगा। हम आपरेशन टेबल से जिन्दा लौटेंगे या कि दूसरी स्थिति मे लौटेगे। मैंने एक बात उस समय अपने परिजनों को लिखकर दी थी कि मुझे पूरा संतोष है कि आज तक एक सामान्य व्यक्ति की हैसियत से जो कुछ मैं कर सका, मुझे पूरा संतोष है। मुझे किसी तरह से ये नही है कि मै ये नहीं कर सका वो नहीं कर सका। अगर मैं जिन्दा लौटकर नहीं आया तो यह मेरी स्मृति होना चाहिए और यदि ईश्वर ने चाहा वही लौटा सकता हैं, तो मैं यह मानूँगा कि अभी कुछ और काम भगवान को लेना हैं और याद करके यह कहना चाहता हूँ कि मध्यप्रदेश के अन्दर काँग्रेस की, इंदिरा जी की, राजीव जी की, पंडित जी के सिद्धांतों की अवहेलना जो हो रही हैं, और जिस स्वार्थ में लिप्त होकर सभी सीमाओं को तोड़ा जा रहा हैं, कुछ लोगों ने तो यह कहा और एक बहुत बड़े नेता ने मध्यप्रदेश के कहा कि ये तो बायपास वाले लोग हैं। इसको बायपास करके चले जाना चाहिए, हूँ मैं बायपास वाला लेकिन बायपास करके कोई नहीं जाएगा। लेकिन मेरी लड़ाई किसी व्यक्ति से नही है। मेरी लड़ाई जनता के लिए हैं। उन उसूलों के लिए है, जिनसे काँग्रेस जानी जाती है। हमारा प्रजातंत्र जाना जाता है।

मध्यप्रदेश का आवाम हरिजन, आदिवासी, पिछड़े वर्ग, गरीब तबके के लोग हैं। अगर उनके अधिकारों की हम रखवाली नहीं कर सकें, यदि उनके सपनों को हम नहीं सँवार सकें, यदि इसके लिए हम बलिदान नहीं दे सकें, तो लानत है ऐसे जीवन पर। मैं नहीं चाहता कि आने वाली पीढ़ी यह कहे कि एक छोटे से आदमी को मौका मिला हमारे जैसे लोगों की सेवा करने का और वह सिमटकर रह गया। अपने स्वार्थ की परिधि में, अपने परिवार की परिधि में, अपने लोगों की परिधि में यदि आँख मुंदनी हैं, तो मध्यप्रदेश और भारत के अवाम की सेवा में मूँदना चाहिए केवल अपने लिए नहीं। यही मेरा संकल्प हैं, आज यही कहने की आवश्यकता है, क्योंकि तात्या टोपे की कर्म की नगरी है यह। आज हम सब मिलकर इन सब ऋषियों को सिलसिलेवार जनता के बीच में ले जाकर जनता का विश्वास लेना चाहते हैं। ताकि भारत का भविष्य इन सपनों के मुताबिक हो। जो शहीद भगतसिंह की आँखों में फाँसी के कुछ क्षण पहले घूम गया था असफाक के, चन्द्रशेखर आजाद के, गाँधी के, श्रीमती इंदिरा गाँधी के और श्री राजीव गाँधी के आँखों के सपनों के अनुरूप भारत बने, यह हमारा कर्तव्य है, यही हमारा संकल्प हैं और इसलिए हम आपका आशीर्वाद सहयोग और मार्गदर्शन चाहते हैं। जयहिन्द।

देश की पुरातन परम्पराओं का निर्वहन जरूरी

24 दिसम्बर 1995 कोरबा में क्षत्रिय समाज की सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है–

सम्मानित मध्यप्रदेश इंदिरा कॉग्रेस अध्यक्ष श्री धृतलहरे तथा समाज की सम्मानित बहनें और माताएँ व अन्य नागरिक बंधुओं। मुझे आज आपके बीच में आकर बहुत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा हैं। प्रसन्नता इस बात की है कि आप राष्ट्रीय संदर्भ में समाज के दायित्व की सही कल्पना करने के लिए प्रयासरत हैं। जाति और संप्रदाय के आधार पर भारत में कोई भी कार्य देश के हित में नहीं हो सकता है। कर्तव्यबोध और हमारी पुरातन जो परंपरा है, उनमें जो अलग-अलग नैतिक सिद्धांतों की परिभाषा हैं जिनको की धर्म की संज्ञा दी जाती है, उनको कौन कितना अमल कर सकता है। इसके आधार पर हम अपने विरासत को या तो उसके प्रति वफादारी दिखाते है या कि नहीं दिखाते हैं। महाराणा प्रताप एक क्षत्रिय राणा ही नहीं थे, न जाने कितने क्षत्रिय राणा इस देश में एक दो नही हजारों

की संख्या में हुए, लेकिन महाराणा प्रताप को हम क्यों याद करते हैं, उनको आज आदर्श क्यों मानते हैं? इसलिए कि उन्होंने राष्ट्रीय सम्मान के लिए संघर्ष किया। समान और बल के आधार पर यदि कोई किसी के ऊपर अपना वर्चस्व जाहिर करना चाहे, बनाना चाहे तो उसके खिलाफ इकट्ठे संघर्ष करने की उनमें संगठन की एक अद्‌भूत क्षमता थी। इसलिए आज महाराणा प्रताप को याद किया जाता हैं।

मैं आपको एक वाक्य का स्मरण दिलाना चाहता हूँ। जो स्वर्गीय राजीव गांधी ने काँग्रेस के शताब्दी समारोह में अपने विख्यात और महत्वपूर्ण भाषण में बम्बई में कहा था। वो काँग्रेस के संदर्भ में कहा था कि काँग्रेस पार्टी को ऐसा आचरण करना चाहिए कि वो गरीबों की तलवार भी बन सकें और ढाल भी बन सकें। अभी भारत में सबसे ज्यादा ढाल की जरूरत किसको हैं। कुर्सी पर बैठे नेताओं को नही हैं, वो तो ढाल खरीद लेते हैं, जरूरत हैं समाज के सच्चे कमजोर वर्ग के लोगों को और संघर्ष करने की आवश्यकता अनिवार्यता किसको हैं? वही उसी वर्ग को हैं वो आज के संदर्भ में तलवार और ढाल से दूसरे ही परिवेश में हमें देखना पड़ेगा और सचमुच में जो छात्र धर्म का पालन करने की चेष्टा, कोशिश करना चाहते हैं। उन्हें इस बात को अपने रोज के आचरण से साबित करना पड़ेगा कि वो शोषण के खिलाफ हैं और शोषित के पक्ष में हैं। अब समाज इन्हीं दो हिस्सों में बँट गया हैं। अब हल्दी घाटी किसी पहाड़ी पर या मेवाड़ की धरती पर नहीं। अब वो हल्दी घाटी नए-नए तरीके से देश के हर कोने में घटती चली जा रही हैं। कोरबा में हैं, बिलासपुर में हैं, दिल्ली में हैं, कलकत्ता में हैं, मद्रास में हैं, कहाँ नहीं वैसे हल्दी-घाटी में हमारा आचरण क्या है? हम किसके तरफ हैं, ये साबित करेगा कि हम क्षत्रिय होने के लायक हैं या नहीं। मैं अपने सभी बहनों और भाइयों से निवेदन करूँगा कि आप यहाँ एक ऐसे अँचल में निवास करते हैं, जो एक अत्यंत पिछड़ा हुआ अंचल था। हजारों-हजारों साल से यहाँ पर एक गरीबी की रूपरेखा बनती चली गई और वो गहरी होती गई। एकाएक यहाँ नैसर्गिक साधन निकल आए, कोयला निकल आया और एक नई संस्कृति ने जन्म लिया जो विकास की संस्कृति है जो समृद्धि की संस्कृति हैं और जो खुशहाली की संस्कृति भी बन सकती हैं, अभी बनी नहीं हैं। आप लोग यहाँ अपना जीवन निर्वाह करने के लिए आए हैं। अपने-अपने परिवारों की परवरिश करने आए हैं। आपको आगे बढ़ाने की चेष्टा सर्वथा उचित हैं लेकिन साथ ही साथ आपको अपनी ओर से अपने चारों ओर देखने की भी जरूरत हैं एक महवपूर्ण ढाँचा किस प्रकार से किस खुशहाली और समृद्धि के बीच में कुछ लोगों पर लादा जा रहा हैं? उसके खिलाफ भी आवाज उठाने की जिम्मेदारी आपको लेना पड़ेगी। यदि आप उस जिम्मेदारी से मुकरते हैं तो फिर स्वार्थ की बात होगी। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ को पूरा कर सकता हैं। किसी को कोई एतराज भी नहीं हो सकता। लेकिन इतनी लंबी-चौड़ी बातें भी नहीं करना चहिए। महाराणा प्रताप का स्मरण भी नहीं करना चाहिए।

आपने मुझे यहाँ आने का अवसर दिया। आप सब लोगों के दर्शन हुए आप सब लोगों को मेरी ओर से नव वर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। जयहिंद।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशो में

दुनिया के सारे धर्म सही हैं

10 जनवरी 1995 अमरावती (महाराष्ट्र) की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं –

आदरणीय माननीय अध्यक्ष श्री माथोर साहब, भारतीय युवा परिषद् के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री गणेश माथौर जी, महाराष्ट्र प्रदेश के अध्यक्ष महोदय, हनुमान व्यायाम शाला मंदिर के प्रमुख और सभी आदरणीय साथियों। यहाँ पर

बैठे हुए हमारे देश की आशाओं के प्रतीक प्रिय बच्चों। मैं बहुत अनुगृहीत हूँ श्री नरेन्द्र माथौर जी का जिन्होंने मुझे यहाँ पर आमंत्रित किया। अमरावती में महाराष्ट्र की पुण्यभूमि में जिस भूमि ने जन्म दिया, असीम धैर्य और शौर्य के प्रतीक महाराज शिवाजी को, जिसने जन्म दिया सामाजिक न्याय के और मानवता के महान पुजारी महात्मा फुले को, और जिसने जन्म दिया आधुनिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को, आज उस धरती पर हम सबको उनको नमन करने का मौका मिला सौभाग्य मिला। उसके लिए मैं आपका और आपकी संस्था का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। राष्ट्रीय युवक परिषद् 25 वर्ष पूरे कर रहा है। जिन स्थितियों में इसकी शुरूआत हुई मैं उससे भी भली-भाँति परिचित हूँ। और आज सारे भारत में जो इस परिषद् ने अपना विशिष्ठ स्थान स्थापित किया है, मैं उससे भी परिचित हूँ। मैं ये कह सकता हूँ कि इस परिषद् की स्थापना और उसकी 25 वर्षों की यात्रा इस बात की प्रतीक है कि जो कार्य निष्ठा से, समर्पण से, और बिना किसी लाभ लेने के उद्देश्य से किया जाता है वह इसी प्रकार से समाज में स्वीकार होता है। आप अपनी इसी निष्ठा से आगे बढ़ते रहे। 50 वर्ष पूरे हों, शताब्दी पूरी होगी, और आने वाली शताब्दी भी आपकी होगी। जैसा माथौर साहब ने भी कहा हम लोग जब इस व्यायाम मंडल की विभिन्न गति-विधियों को देख रहे थे,तो विस्मय के साथ-साथ सोच रहे थे कि अपने देश में ऐसा अच्छा काम हो सकता है, और किया जा रहा है। इसका कुछ थोड़ा-थोड़ा गौरव भी हम महसूस कर रहे थे। निश्चय ही ऐसी ही संस्थाएँ राष्ट्र में चरित्र निर्माण की ठीक ढंग से जिम्मेदारी निभा सकती है, जिसकी आज सबसे ज्यादा जरूरत है। युवक और युवतियाँ ही देश की धरोहर और सम्पत्ति है। उनके मन में अच्छे विचार, राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत उनके संस्कार, और शारीरिक रूप से स्वस्थ और बलशाली व्यक्तित्व विकसित हो यही आजकल देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है, और वह हनुमान व्यायाम मंदिर में कितनी खूबसूरती के साथ किया जा रहा है। ये देखकर मैं भी बहुत ही गद्‌गद हो गया हूँ। ये व्याख्यान माला भारत के उस सपूत के नाम से शुरू हो रही है, जिसने पिछली शताब्दी में दुनिया के रंगमंच पर जाकर शिकागों में ये उद्‌घोष किया कि भारत एक भूला भटका देश नहीं, एक असहाय देश नहीं है, एक समस्याओं से जूझता देश नहीं है, उसमें वो ताकत है, आत्म शक्ति है कि वह विश्व का नेतृत्व कर सके। व जिन लोगों ने स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा को समझने की कोशिश की है उसके मूल में यदि हम जाए तो दो बातें बहुत स्पष्ट रूप से सामने आती है। पहली बात यह कि स्वामी जी ने प्रत्येक भारतीय को अपने आप में एक आदर्श के रूप में ढालने की बात कही है। हम समाज में या दुनिया में, या देश में, किसी काम को सफलतापूर्वक नहीं कर सकते हैं। यदि हम अपने को कुछ ऐसे आधार भूत मूल्यों से न बाँध लेते है, जो मानवता को देश प्रेम को और समाज के अंदर सबके साथ मिलकर काम करने को और प्रेरित न करे। स्वामी जी की भारत परिक्रमा का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम यही निकला कि उन्होंने कहा की भारत उभरकर सामने आएगा, खेती और खलिहानों से, फौलादी काम करने वाले कठोर हाथों से, चमड़े का काम करने वाले हाथों से, और जब वो भारत उभर कर सामने आएगा तो वहाँ से लोगों की कतारें देश को मजबूत बनाने के लिए सामने बढ़ेगी, तभी भारत का उद्‌धार होगा। दूसरी बात ये स्वामी जी ने कही वो धर्म के बारे में थी। आज धर्मो को लेकर जिस प्रकार की चिल्लपुकार मची हुई है, कुछ स्पर्धा मची हुई है अपने-अपने धर्म को महान् और महत्वपूर्ण स्थापित करने का एक सिलसिला जारी है। इन सबको नकारते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि यदि एक धर्म भी सही है, उसके सिद्धांत सही है तो दुनिया के सारे धर्म सही है। आज भारत वर्ष में धर्म और धर्मान्धता की जो स्थिति है वह भयानक है। धर्मान्धता के वशीभूत होकर इस देश में जो काम करेंगे वो निश्चित रूप से भारत के खून में एक ऐसा विष उगल देंगे जो विष हमारी भारतीयता को सम्पूर्ण तरीके से नष्ट कर देगा। और धर्म के बताए हुए सिद्धांतों पर जो चलेगे, चाहे वो हिन्दू धर्म हो, इस्लाम हो, इसाई हो, बौद्ध हो, जैन हो, कोई भी हो, तो हम एक ही रास्ते पर चलेगें और एक ही गन्तव्य पर पहुँचेंगे। वह

है अपने आत्मा की शुद्धि, अपने आचरण की शुद्धि अपने कर्त्तव्य को करने की शक्ति और सारे देश को ऐसी मंजिल पर ले जाने में सफलता, जिस मंजिल पर जाने के लिए इस देश के हजारों लोगों ने फाँसी के तख्ते चूमे, बलिदान किया और सब कुछ निछावर किया।

पहले हुए अंधकार को चीरते हुए भारत पृथक् राष्ट्र धर्म की स्थापना करने के लिए आगे बढ़े। जो राष्ट्र धर्म प्रत्येक भारतीय को भारत माता के प्रति समर्पित कर सके और जो आज हमारे बीच में धर्म का, संदेश का, और आस्था का संकट पैदा हो गया है, इस संकट से देश को निकाल सके। यही आज भारत माता हमसे, आपसे और विशेष करके इस देश की तरूणाई से चाहती है। हम उसके कर्तव्य का पालन कर सके। इतनी शक्ति ईश्वर हमको दे, यही हम सबकी प्रार्थना होनी चाहिए। जैसा की वेदों में कहा गया है कि "जो व्यक्ति सोता है, उसका भाग्य भी उसके साथ सोता है, जो उठकर बैठ जाता है, उसका भाग्य भी उसके साथ उठकर बैठ जाता है, और जो उठकर चलने लगता है, तो परछाई के भाँति भाग्य भी उसके पीछे-पीछे चलने लगता है।" आज आप सब इस भारत माता के पुत्र और पुत्रियाँ हैं। जो हमारे भविष्य की आशाओं के केन्द्र है, तो सदैव इस देश को अवसर पर उपलब्ध होते रहे हैं। आज हम संकल्प करे, निर्णय करें और आगे बढ़ चलें तो आप कहीं भी जाएँ सारे देश का भाग्य परछाई की भाँति आपके पीछे-पीछे चलेगा इसमें कोई संदेह नही। धन्यवाद। जयहिन्द।

काँग्रेस नेतृत्व उद्देश्य से भटक गया है

19 फरवरी 1995 गुवाहाटी की एक आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

काँग्रेस पार्टी के हमारे सभी साथी और सभा में आए हुए सभी आदरणीय बहनों और भाइयों। आज असम की इस पवित्र भूमि में आपने मुझे आने का मौका दिया और इतनी बड़ी सँख्या में यहाँ आकर आपसे रूबरू होने का मौका दिया। उसके लिए मैं आपका बहुत तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ। अभी के.एन. सिंह जी ने वे सब बातें बताई जिसकी वजह से ऐसी परिस्थितियाँ बनी जिनकी जानकारी उन्होंने आपको दी। मैं आपसे केवल यह प्रार्थना करने आया हूँ कि जिस काँग्रेस ने देश की आजादी का संघर्ष करके, कुर्बानियाँ देकर और भारत को आजाद कराया था और इस देश में जमूरियत की नींव रखी थी, उसका एक ही मकसद था कि एक गुलाम देश अपने पैरों पर खड़ा हो। और इस देश में रहने वाले हर नागरिक को वह किसी धर्म को मानता रहता हो चाहे वह कोई भी भाषा बोलता हो, और देश के किसी कोने में रहता हो, समान रूप से बराबरी का हक मिलें। उसके हक और हकूक सुरक्षित रहे। उसके जीवन की सुरक्षा रहे और उसे आगे बढ़ने के लिए हर प्रकार से साधन और सहयोग जुटाए जाएँ।

स्वतंत्रता के पूर्व देश के अन्दर 500 से ज्यादा देशी राज्य थे। सरदार पटेल ने उन सब राजाओं को इस बात के लिए राजी किया कि जो अपना राजपाट छोड़े, पेंशन लें और भारत की एकता को मजबूत होने दें। ये ऐसे महत्वपूर्ण काम थे जिनकी वजह से आज हिन्दुस्तान का ये नक्शा बना है। जिसे हम देखते हैं और मै केवल उदाहरण के लिए आपको बताना चाहता हूँ। यही काम जो पुराना सोवियत यूनियन था वहाँ भी किया गया। वहाँ की क्रांति के बाद लेकिन इस काम को करने के लिए वहाँ, कहते है, लगभग 48 लाख लोगों को मौत के घाट उतरना पड़ा। लेकिन इसी काम के लिए हिन्दुस्तान में एक बूँद किसी का खून नहीं बहा और ये सब तबदीलियाँ हो गई। इसका जिक्र मै इसलिए करना चाहता हूँ कि जब एक मजबूत दल जनता के विश्वास को लेकर देश में तबदीलियाँ करता है। नई-नई बातें होती हैं, नए-नए रास्ते खोले जाते हैं तब सफलता मिलती है और तब हम आगे बढ़ते है।

जमूरियत में सब कुछ ठीक है, जिसकां जनता अपना समर्थन देगी वह अपना काम चलाएगा। लेकिन दो दफे ऐसा हुआ और तजुर्बे से हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि अपना-अपना हिस्सा, पार्टी भले ही बना लें, लेकिन देश को एक मजबूत शासन नहीं दे सकते हैं। चाहे वो मोरार जी भाई रहे हो, चाहे चौधरी चरणसिंह रहे हो, चाहे वो विश्वनाथ प्रताप सिंह रहे हो। लिहाज़ा यह जरूरी है कि हम अवाम से जुड़े रहने की बात पर जोर दे। और जिस वजह से भी जनता का विश्वास हम पर से कम हो रहा है, उनको खोजे, उन पर सही तरीके से कदम उठाएँ ताकि ये विश्वास न डिगे।

समाज के अन्दर जो गरीब और दबा तबका हैं, उसको आगे बढ़ने के लिए खास तौर से कुछ कदम उठाए जाना जरूरी हैं, दलितों के लिए, पिछड़े वर्गों के लिए, आदिवासियों के लिए, हरिजनों के लिए और ये कदम अगर नही उठाए जाएँगे और वे खुशहाल नहीं होंगे तो कुछ थोड़े से लोग खुशहाल हो जाय बड़ी-बड़ी इमारतें बना लें उससे कोई हिन्दुस्तान नही बढ़ सकता है, हिन्दुस्तान मजबूत नहीं हो सकता है। इस तरह के सुझाव भी नाराजगी के कारण हो जाते हैं।

मैं कोई सैकिया जी का दुश्मन नहीं हूँ वे काँग्रेस के हैं और मैं चाहता हूँ कि काँग्रेस की सरकार सफल हो। लेकिन काँग्रेस की सरकार तभी सफल होगी जब वह आम आदमी की भलाई को पहले लेगी, उनकी सुरक्षा की बात पहले लेगी, भ्रष्टाचार में डूबे लोगों के खिलाफ कार्रवाई करेगी और अमन चैन के रास्ते में जो बाधाएँ आ रही हैं उन बाधाओं को सख्ती से मिटाएगी, तब जिम्मेदारी पूरी की जा सकती है। अगर ऐसा नहीं होगा तो फिर एक साल बाद चुनाव होने हैं। जनता अपना फैसला करेगी। हम तो चाहेंगे कि किया जाय। ताकि जनता का फैसला एक आदमी की वजह से दो-चार आदमियों की वजह से इस महान संस्था के खिलाफ ये फैसला न हो जाय। ये हमारी चिंता है।

आप सब लोग जो यहाँ पधारे हैं, मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। अगले महीने में असम के और हिस्सों में भी मैं जाने की कोशिश करूँगा और उनसे प्रार्थना करूँगा और मुझे विश्वास है कि असम में जो सही काँग्रेस के लोग हैं, जो निष्ठा है, जो उनके मन में विश्वास भी है और हौंसला भी हैं, वे काँग्रेस की बागडोर इस देश में सम्हालेंगे और आपके बीच में आकर सेवा करेंगे। आपके हकों के लिए संघर्ष करेंगे और काँग्रेस की हुकुमत बनाकर यहाँ एक नई फिजा पैदा करेंगे। इस विश्वास के साथ आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। मेरी आप सबके मंगलमय भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

आजादी का महत्त्व समझें

11 मार्च 1995 नूह (पंजाब) की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

भाई खुर्शीद एहमद जी, माननीय सत्यनारायणराव जी, हमारे साथी श्री जगजीत सिंह जी बरार, काँग्रेस के हमारे साथियों और इस वीर भूमि के हजारों-हजार यहाँ पर मौजूद हमारे भाइयों। मेरी समझ में भाई से बढ़कर कोई दूसरा बड़ा रिश्ता नहीं होता है, क्योंकि भाई ही अपने दूसरे भाई के ख्यालों को जज्बातों को उसके दर्द को और उसकी तमन्ना की तस्वीर को समझ सकता है। यहाँ पर आने का जब मुझे खुर्शीद भाई साहब ने निमंत्रण दिया तो उनके इस निमंत्रण को तो मैंने विनम्रता से स्वीकार किया। लेकिन उसी समय से अपने देश के इतिहास के कई ऐसे सुनहरे पन्ने नजरों से गुजरने लगे जहाँ पर भारत के इस अँचल के लोगों ने अपने खून से तवारिख लिखी। और वो तवारिख

लिखी जो किसी मोलभाव के आधार पर नहीं, जो केवल पद और पैसे के लिए नहीं, वो तवारिख हैं देश की जिसका जिक्र यहाँ पर किया गया। जहाँ इंसान का दिल इंसान से मिलें, वहाँ इंसान को खड़ा रहना चाहिए। वरना बाबर का साथ राणा साँगा ने नहीं दिया होता। अगर कहीं उस समय भी भारतीय जनता पार्टी के कुछ लोग होते, तो वो तो यही कहते-राणा सांगा से कि आप भरोसा मत करिए, ये लोग अंत में आपको धोखा देंगे। शिवाजी महाराज को शरण देकर और सुरक्षित तरीके से उनके घर तक भेजकर मुगल सल्तनत की दुश्मनी लेने का साहस कैसे हो सकता था। यदि यहाँ के लोग जज्बाती नहीं होते। ये इंसानियत की कीमत नहीं समझते। और आज जब मैं यहाँ आया हूँ और आप सबके सामने मुझे बोलने का मौका मिला हैं, तो मैं आपसे सबसे पहले यही कहना चाहता हूँ कि आज फिर से हिन्दुस्तान में इंसानियत की कीमत को समझने की जरूरत है। उसकी बिरादरी को हमें प्रतिष्ठित करने की जरूरत है। जज्बातों के तोल और मोल करने की जरूरत नहीं है और यदि ऐसा दौर हिन्दुस्तान में आया हैं, तो ये जरूरी है कि इस देश का आम आदमी अवाम उठ खड़ा हो। ललकार के ये कहे कि हम हिन्दुस्तान को बेचना नहीं चाहते है। हम हिन्दुस्तान को सुरक्षित रखना चाहते हैं। क्योंकि ये हमारा मादरे वतन है। अगर अपने मादरे वतन की कीमत हम नहीं दे सकते हैं अपने खून से, रुपये पैसे से, तोलकर उसकी कीमत नहीं लगाई जा सकती है। आज वही हो रहा है।

आजादी पाना बहुत मुश्किल काम है और उससे भी ज्यादा मुश्किल काम उस आजादी को बरकरार रखना है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, Freedom in peril, I will defend it with all my might आजादी खतरे मे है, अब मैं पूरी ताकत से उसकी रक्षा करूँगा। मुल्क की आजादी का मतलब क्या होता है? मुल्क की आजादी का मतलब ये है, कि देश के अन्दर जो कुछ भी होना है, उस काम को हम यहाँ बैठकर फैसला करें। क्योंकि ये देश जमूरियत के आधार पर हैं।

अयोध्याकांड पर श्वेत पत्र निकला है, बहुत से बयान आ रहे हैं। इस बात का उत्तर अभी तक नहीं मिला कि जो ये मन बना लिया गया था। वह मन क्यों, कैसे और किसके द्वारा बदला गया? और इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह एक स्वतंत्र देश है, सार्वभौमिक देश है, यहाँ की जनता इस देश की मालिक है, हमने संविधान में ये कहा है कि हम अपने को ये संविधान देते है और उसी संविधान के तहत सरकारें बनती है, और उनको काम करना पड़ता है। क्या भारत के अवाम को यह अधिकार नहीं है, कि वो एक-एक दिन का हिसाब हमसे लें? कि क्यों ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित हुई, कि बाबरी मस्जिद को नुकसान पहुँचा? और ये हमारा फर्ज है, कि अगर हम मुल्क के प्रति वफादारी रखना चाहते है, तो उस फर्ज को हम अदा करें। केवल 4 दिसम्बर को गवर्नर की चिट्ठी का हवाला देकर हमारे इतिहास के अध्याय पर उस दुःखद अध्याय पर पर्दा नहीं डाला जा सकता है। क्योंकि इतिहास बहुत क्रूर होता है। उसका बदला कोई नही ले सकता है। हम भी नही चाहते। हम जैसे लाखों लोग नही चाहते जो इसके दुष्परिणाम देश को भुगतना पड़े और कॉंग्रेस पार्टी को भुगतना पड़े। मैंने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर अपने ये कुछ करने का मानदंड है, तो मेरे ऊपर मुकदमा चलाकर ये शुरू करें शायद लोगों को संतोष भी हो जाय कि अर्जुन सिंह जी पर जुर्म लागू कर दिया है। उसी काम के लिए खड़ा कर दिया जाय। सारा मुल्क समझ जाएगा कि केस चलेगा, सबूत सामने आएँगे, प्रमाण आएँगे, सारे हिन्दुस्तान को मालूम हो जाएगा कि क्या हुआ है, इन दिनों में पर्दे के पीछे?

अवाम का विश्वास कॉंग्रेस पार्टी से कम हो रहा है, उसमें भ्रष्टाचार भी बहुत बड़ा हिस्सा है। अभी राव साहब ने बताया, के.एन. सिंह जी ने भी बताया कि कॉंग्रेस के प्रवक्ता ने बताया 90 हजार करोड़ का भ्रष्टाचार नहीं हुआ

17 हजार करोड़ का हुआ हो या 3 हजार करोड़ का हो। मैं कहता हूँ कि जिस मुल्क में आम आदमी को अपने जीवन काल में एकमुश्त एक हजार रुपये देखने को नही मिलता है, उस मुल्क में 3 हजार करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार हुआ हो, 15 हजार करोड़ रुपये का हुआ हो या 80 हजार करोड़ रुपये का हुआ हो। इसका कोई मतलब नहीं है। जितना हुआ है, उसी का पता करिए।

इसमें केवल एक हर्षद मेहता ने (एक दलाल ने) 69,700 करोड रुपये का सौदा किया। एक मिनट में अभी तो उसमें न जाने कितने दलाल और हैं। शायद उन दलालों के ऊपर हाथ लगाने की हिम्मत नहीं पड़ रही है। क्योंकि वो पकड़े जाएँगे तो क्या कहेंगे। इसका अंदाज नही है और बड़े-बड़े सरकारी कारखानों के जो शेयर बेचे गए। पैसा कमाने के लिए उस पर स्वयं उद्योग विभाग की कमेटी जो पार्लियामेण्ट की है, उसने रिपोर्ट सदन को दी हैं। पार्लियामेण्ट को दी है दिसंबर 94 में जिसमें कहा है कि इसमें लगभग 10 लाख करोड़ का नुकसान हो रहा है। लेकिन प्रश्न ये है, कि इतनी संजीदगी से देश की संपत्ति के बारे में सोचते हैं। हमारी सोच क्या हैं? अगर हमारी सोच इस देश के हित में मौलिक रूप में हैं, तो चाहे वो 5 हजार करोड़ हो, चाहे 10 हजार करोड़ हो, या 15 हजार करोड़ हो, इससे मतलब नही है। हम करते क्या हैं? उसमें ये बात सामने आती हैं। आज इसलिए कि हमारी पार्लियामेण्ट पूरी तरह से बेसहारा हो गई है। इस मामले में दस तरह से पत्र व्यवहार मैंने किए, मैंने आपको बता ही दिया आखिर में इस तरह का विश्वास टलता चला जाएगा तो किसको नुकसान होगा, इसका नुकसान देश के गरीबों पर होगा। हमारी जमूरियत कमजोर होगी और फिर हमारे देश की आजादी भी कमजोर होगी।

हम जैसा समझते हैं कि ये लोगों के आश्वासन तो नहीं जो कि उन्होंने यहाँ आकर दिया है। समूचे हालात में हर धर्म मजहब, प्यार और भाषा के बोलने वाले लोगों का पूरा-पूरा विश्वास हिन्दुस्तान की सरजमी पर बना रहे। ये अपनी जमीं पर खड़े रहे मजबूती के साथ में, लड़ सकें ऐसा करना उसके लिए कोशिश करना हम सब लोगों की जमीं है। हम आप लोगों के सेवक हैं। उस जिम्मेदारी को निभाने के लिए आपके आशीर्वाद और स्नेह के बल पर कोशिश करता रहूँगा। जयहिन्द।

भ्रष्ट लोगों को राजनीति में नहीं आने दें

19 मई 1995 दिल्ली में इंदिरा काँग्रेस के कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

इनका आज हमारे आपके बीच में उपस्थित होना मैं समझता हूँ कि एक महत्व रखता है। ये हमारे देश के अत्यन्त आदरणीय और वरिष्ठ नेता स्वर्गीय जगजीवन राम की पोती हैं। ये कुछ दिन पूर्व मुझसे मिलने आई थी और इच्छा जाहिर की थी कि वे इस राष्ट्रीय अभियान में जुड़ना चाहती हैं। जिस पर अपने महत्वपूर्ण योगदान स्वर्गीय बाबू जगजीवन रामजी ने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई से लेकर और नए भारत के निर्माण तक दिए थे। मैं इनका स्वागत करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ये उसी निष्ठा और समर्पण की भावना से काँग्रेस की सेवा करेंगे।

आज सुबह से मैं ये भी नहीं समझ पा रहा था कि मैं किन शब्दों में आप सबको संबोधित करूँ। इसलिए नहीं समझ पा रहा था, क्योंकि जो लोग आगे विराजे हुए हैं, वे सुबह नौ साढ़े नौ बजे से अब छः सवा छः बज रहे है, ये मुझे कहने में थोड़ा संकोच जरूर है, लेकिन जो यथार्थ है, हकीकत है, उसको कहना भी चाहिए। हमने कई

जलसे कॉंग्रेस के अटेण्ड किए हैं। ए.आई.सी.सी. में भी दोपहर के बाद थोड़ी उपस्थिति पतली हो जाती है। फिर जब कॉंग्रेस अध्यक्ष के या और लोगों के बोलने का समय होता है, तब जरूर सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। आज सुबह से शाम तक आप सब लोग यहाँ विराजे रहे। पता नहीं, आप में से कितनों ने भोजन किया या नहीं। (नहीं किया, नहीं किया की आवाज आने पर) मैं भी उसी श्रेणी में हूँ और इतना ही नहीं, देखिए आपने ऐसी बात कह दी है, मैं टिप्पणी जरूर करूँगा।

ये बात मुझे इसलिए करनी पड़ रही है, मेरी समझ में ये इस बात का सबूत है, द्योतक है कि जो लोग आज यहाँ पधारे है, जो लोग यहाँ बैठे हैं, उनके मन में सच्ची जो तरीके से इस महान संस्था के प्रति लगाव और प्रेम है। इस संस्था के प्रति आदमी की मौलिक वफादारी है। आज कल वफादारियाँ भी कई तरह की होती हैं। एक वफादारी वो होती है, जो तुरन्त इस वफादारी की कीमत माँगती है। एक वफादारी वो होती है, जो राह चलते कंधे पर लाद दी जाती है और जहाँ आवश्यकता होती है या कहीं दिक्कत पड़ती है, बहुत धीरे से वो कंधे से उतार कर जमीन पर रख दी जाती है। लेकिन एक वफादारी वो होती है, जो एक दफे व्यक्ति स्वीकार करता है, और निरंतर जीवन भर उस वफादारी को निभाने की कोशिश करता है।

सबसे पहले तो मैं आप सब साथियों को, बहुत से के तो मैं नाम नहीं जानता हूँ, पहचानता भी नहीं हूँ, लेकिन जब आँख से आँख मिलती है, तो एक रोशनी बनती है, एक चिनगारी का आदान प्रदान होता है, वो पहचान हमारी आपकी है। मेरे सामने ये सवाल था? पूछा भी हमारे प्रेस के लोगों ने पूछा, स्वाभाविक है, उनको इस बात का कौतूहल बना कि आप तो निष्क्रासित हैं किस हैसियत से, एक तो सम्मेलन में बुलाने के निमंत्रण में आपने दस्तखत कर दिए। एक तो वो हिमाकत की और दूसरे आप इस सम्मेलन में भाग किस हैसियत से लेंगे। तो मैंने उन्हें अपना बैच दिखाया। कोई हैसियत मेरी नहीं है। कुछ लोगों की नजर में प्रमाणिक तरीके से, लेकिन एक चीज जो माननीय नरसिंहरावजी भी मुझ से नहीं छीन सकते हैं, वो है श्रीमती इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में 77 से 80 के बीच में जेल की यात्रा। मेरे पास वही बैच है, उस जेल यात्री का बैच है, जो एक छोटे से सिपाही के रूप में उस महान नेता के नेतृत्व में संघर्ष करके भारत के ऊपर जो राजनैतिक संकट एक अवसरवादी जनता पार्टी की सरकार ने लाकर पैदा कर दिया था, उस के खिलाफ संघर्ष किया।

चार पंक्तियाँ हमारे एक साथी ने मुझे लिख कर दी थी। मेरी नहीं है, लेकिन मौजूँ हैं, इसलिए आपको बता रहा हूँ —

चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी,
चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी।
यही इल्जाम मुझ पर लग रहा है बेवफाई का।
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने पाँवों से,
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने पाँवों से,
वही दावा करे है, इस चमन की रहनुमाई का॥

(एक बार और कहो, की आवाज आने पर) लेकिन भाई मै शायर नही अगर आप कहते है तो वो सुना देता फिर हूँ—

चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी,
यही इल्जाम मुझ पर लग रहा है बेवफाई का।

जलसे काँग्रेस के अटेण्ड किए है। ए.आई.सी.सी. में भी दोपहर के बाद थोड़ी उपस्थिति पतली हो जाती है। फिर जब काँग्रेस अध्यक्ष के या और लोगों के बोलने का समय होता है, तब जरूर सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। आज सुबह से शाम तक आप सब लोग यहाँ विराजे रहे। पता नहीं, आप में से कितनों ने भोजन किया या नहीं। (नहीं किया, नहीं किया की आवाज आने पर) मैं भी उसी श्रेणी में हूँ और इतना ही नहीं, देखिए आपने ऐसी बात कह दी है, मैं टिप्पणी जरूर करूँगा।

ये बात मुझे इसलिए करनी पड़ रही है, मेरी समझ में ये इस बात का सबूत है, द्योतक है कि जो लोग आज यहाँ पधारे है, जो लोग यहाँ बैठे हैं, उनके मन में सच्ची जो तरीके से इस महान संस्था के प्रति लगाव और प्रेम है। इस संस्था के प्रति आदमी की मौलिक वफादारी है। आज कल वफादारियाँ भी कई तरह की होती हैं। एक वफादारी वो होती है, जो तुरन्त इस वफादारी की कीमत माँगती है। एक वफादारी वो होती है, जो राह चलते कंधे पर लाद दी जाती है और जहाँ आवश्यकता होती है या कहीं दिक्कत पड़ती है, बहुत धीरे से वो कंधे से उतार कर जमीन पर रख दी जाती है। लेकिन एक वफादारी वो होती है, जो एक दफे व्यक्ति स्वीकार करता है, और निरंतर जीवन भर उस वफादारी को निभाने की कोशिश करता है।

सबसे पहले तो मैं आप सब साथियों को, बहुत से के तो मैं नाम नहीं जानता हूँ, पहचानता भी नहीं हूँ, लेकिन जब आँख से आँख मिलती है, तो एक रोशनी बनती है, एक चिनगारी का आदान प्रदान होता है, वो पहचान हमारी आपकी है। मेरे सामने ये सवाल था? पूछा भी हमारे प्रेस के लोगों ने पूछा, स्वाभाविक है, उनको इस बात का कौतूहल बना कि आप तो निष्कासित हैं किस हैसियत से, एक तो सम्मेलन में बुलाने के निमंत्रण में आपने दस्तखत कर दिए। एक तो वो हिमाकत की और दूसरे आप इस सम्मेलन में भाग किस हैसियत से लेंगे। तो मैंने उन्हें अपना बैच दिखाया। कोई हैसियत मेरी नहीं है। कुछ लोगों की नजर में प्रमाणिक तरीके से, लेकिन एक चीज जो माननीय नरसिंहरावजी भी मुझ से नहीं छीन सकते हैं, वो है श्रीमती इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में 77 से 80 के बीच में जेल की यात्रा। मेरे पास वही बैच है, उस जेल यात्री का बैच है, जो एक छोटे से सिपाही के रूप में उस महान नेता के नेतृत्व में संघर्ष करके भारत के ऊपर जो राजनैतिक संकट एक अवसरवादी जनता पार्टी की सरकार ने लाकर पैदा कर दिया था, उस के खिलाफ संघर्ष किया।

चार पंक्तियाँ हमारे एक साथी ने मुझे लिख कर दी थी। मेरी नहीं है, लेकिन मौजूँ है, इसलिए आपको बता रहा हूँ —

चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी,
चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी।
यही इल्जाम मुझ पर लग रहा है बेवफाई का।
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने पाँवों से,
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने पाँवों से,
वही दावा कर है, इस चमन की रहनुमाई का॥

(एक बार और कहो, की आवाज आने पर) लेकिन भाई मै शायर नही अगर आप कहते है तो वो सुना देता फिर हूँ—

चमन को सींचने में पत्तियाँ कुछ झड़ गई होंगी,
यही इल्जाम मुझ पर लग रहा है बेवफाई का।

मगर कलियों को जिस ने रौंद डाला अपने पाँवों से,
मगर कलियों को जिसने रौंद डाला अपने पावों से,
वही दावा करे हैं, इस चमन की रहनुमाई का॥

सवाल ये है कि जितने भी लोग ऐतिहासिक शक्तियों से जुड़ते हैं और मेरी ये मान्यता है कि काँग्रेस एक राजनैतिक पार्टी का स्वरूप केवल नहीं है, हम में से बहुत से लोग हैं, खैर जब पार्टी का जन्म हुआ, तब तो हम लोग थे, ही नहीं। स्वतंत्रता सँग्राम के दौरान भी बहुत से हम में से पैदा नहीं हुए थे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने बारे में लिखा है जो अँग्रेजी में है लेकिन मैं उसका हिन्दी अनुवाद कर रहा हूँ, कि हम जैसे साधारण सादे लोग जिनकी अपने आप में बहुत बड़ी वकत नहीं है, महत्व नहीं है, एक महान नेता गाँधी जी के नेतृत्व में एक महान कार्य करने में लगे हुए थे, उस महानता का कुछ अंश हम लोगों ने भी पा लिया। और यही बात है, यही बात है हम लोगों के बारे में। हम लोग अपने आप में बहुत सामान्य लोग है। हमारी पहचान केवल काँग्रेस की पहचान है। अगर हमने काँग्रेस की एक पहचान बनाने में गफलत की है, गलती की है, तो वह पहचान खोटी हो जाएगी। अगर पहचान बनाने में हमने ईमानदारी से काम किया है, तो वह पहचान सच्ची हो जाएगी। अब सच्ची और झूठी का फैसला खुद तो करता नहीं व्यक्ति। ये तो कोई और करता है। सेवा करने की कोशिश है और उस सेवा में जो कुछ भी आगे संघर्ष करने का सवाल आए, उस संघर्ष को हम झेलते हैं, जूझते हैं, साथियों से कंधा से कंधा मिला कर चलते हैं, यही इस संस्था की संस्कृति है और इसी संस्कृति के सहारे संस्था आगे बढ़ती है और काँग्रेस का इतिहास इसी सेवा और संघर्ष के इतिहास का प्रतीक है।

वर्ष 84 के 31 अक्टूबर को श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या हो गई। एक अंधकार छा गया समूचे भारत में। सभी स्तब्ध थे, गम में डूबे हुए लोग जल्दी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया। क्योंकि इंदिरा जी का व्यक्तित्व केवल राजनैतिक नेता का व्यक्तित्व नहीं था, उनका व्यक्तित्व समाज और समूचे देश का और उन मूल्यों और आदर्शो की प्रतिबिम्ब थीं इंदिरा गाँधी जी, जिनके सहारे भारत की पहचान होती थी। धीरज, शौर्य, साहस, सूझबूझ, सहिष्णुता, एक दूसरे को सही ढंग से सोचने के, समझने की कोशिश और जब कोई चुनौती आ जाए उस चुनौती का शेर की तरह मुकाबला करना। उस वक्त लिखा ही जाता था कि श्रीमती इंदिरा गाँधी के केबीनेट में एक ही पुरुष है और वो श्रीमती इंदिरा गाँधी हैं।

जब ऐसा नेतृत्व अचानक चला जाए और वो भी राष्ट्र की रक्षा के लिए, तो स्तब्ध होना स्वाभाविक है। उस स्तब्धता में भारत के एक युवक ने जो राजनीति में आना नहीं चाहता था, जिस की रुचि नहीं थी, केवल अपनी माँ की सहायता करने के लिए उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया था। हिचकते हुए, अचानक सारे राष्ट्र का बोझ उन जवान कंधों पर आ गया। एक तरह से देश में भारत की मशाल भारत की युवा पीढ़ी के हाथ आ गई। राजीव जी को सब लोग निकट से जानते हैं। आज भी वो हँसता हुआ चेहरा, वे निर्भीक और विश्वास में डूबी हुई आँखें और वही साहस माँ का। किसी भी परिस्थितियों से टक्कर लेने में राजीवजी का कोई ये कहे कि उनको हिचक थी, या पीछे देखते थे तो कभी नहीं और शायद क्रूरकाल ने उनके इसी साहस को देख कर ही अपना सहारा लिया। हम इन बातों का स्मरण भी कर सकते हैं, क्योंकि इतिहास का कारवाँ जब चलता है, बढ़ता है, तो उस कारवाँ के चलते जो चीजें होती है, हो जाती हैं, उन पर हमारा कोई वश नहीं होता है। लेकिन जो काम किए हैं, उन कार्यों का तो हमें मूल्याँकन करना पड़ेगा।

देश में जब अकाल पड़ा 1965 में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने दिल्ली में बैठक बुलाई। उस समय मैं

मध्यप्रदेश का कृषि मंत्री था। मैं भी गया वो वाक्य आज भी मेरे कानों में गूँजता है जो उन्होंने कहा था। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने मुश्किल से पाँच-दस मिनट महत्वपूर्ण बातें की। उन्होंने कहा कि आत्म सम्मान से बढ़ कर किसी व्यक्ति के लिए या किसी राष्ट्र के लिए या किसी देश के लिए कोई मूल्यवान चीज नहीं होती। उन्होंने कहा कि जब मैं बाहर विदेशों में जाती हूँ और मजबूरन मुझे वहाँ के देशों के राष्ट्राध्यक्षों से, प्रधानमंत्रियों से भारत के लिए खाना माँगने के लिए, अनाज माँगने के लिए विवश होना पड़ता है। तो कभी-कभी जो है, अपने मन में बहुत छोटापन महसूस होता है। मै चाहती हूँ कि अगामी पाँच साल के अन्दर हमें कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे हम खाद्यान्न के मामले में आत्म निर्भर हो सकें और यही हुआ। भारत का वो किसान जिसको सब अपढ़, अनाड़ी और अविश्वासी मानते थे, उसी किसान ने श्रीमती इंदिरा गाँधी के कार्यक्रम को कार्यरूप में परिणित करके भारत को खाद्यान्न के मामले में आत्म निर्भर बना दिया।

ये होता है नेतृत्व की कल्पना की शक्ति और उस कल्पना को साकार रूप में परिणित करने की क्षमता। उस पृष्ठ भूमि से राजीवजी हमारे बीच में आए और उन्होंने भी उसी प्रकार से भारत को आगे ले जाने की बात कही। पीछे की कटुता को, दुःख को, मजबूरियों को मद्देनजर रखते हुए, लेकिन निगाह उनकी इक्कीसवीं सदी पर थी। और सारे देश की निगाहें उन्होंने ले जाकर टिका दिया इक्कसवीं सदी पर। यही तो नेतृत्व का कमाल होता है, कि उनकी आँखों के जो सपने हों, वो करोड़ो-करोड़ों लोगों के सपने बन जाए वही नेता है।

91 में राजीवजी की हत्या के बाद देश में चुनाव सम्पन्न हुए और इस चुनाव में काँग्रेस पार्टी को स्पष्ट बहुमत तो नहीं मिला, लेकिन इतना बहुमत मिला, इतना स्थान मिला कि प्रेसीडेण्ट साहब ने इनको आमंत्रित किया था। सवाल था? किसको आमंत्रित किया जाए? काँग्रेस अध्यक्ष को बनाने की पहले बात हो गई तो सब लोगों ने बिना किसी हिचक के, जो हमारे बीच में सबसे सयाने नरसिंहराव थे, उन्हें काँग्रेस की अध्यक्षता की जिम्मेदारी सौंपी और जब एक महीने बाद जून में पार्लियामेण्ट पार्टी के नेता का चुनने का सवाल आया, जो नेता देश का प्रधान मंत्री बनता है। हम सबने मिल कर उन्हें पार्टी का नेता चुन लिया।

बहुत-सी बातें लोग करते हैं कि मैं प्रधान मंत्री बनने के लिए आतुर था। अगर मैं आतुर था तो जैसे हमारे एक दूसरे साथी ने अपना दाँव रख दिया था। मैं भी रख देता। होता, जो होता, लेकिन मैंने तो शुरू से ही ये सोचा था कि राजीव जी के निधन के बाद पार्टी के अंदर कोई ऐसी गतिविधि नहीं होना चाहिए, जिससे एकता कमजोर हो और भारत के अंदर किसी प्रकार की गड़बड़ी पैदा हो। स्वाभाविक है, जो व्यक्ति नेता बनता है, उसके कंधो पर बहुत सी जिम्मेदारी आती है। उन जिम्मेदारियों को अलग-अलग टुकड़ों में बाँट कर नहीं चल सकता। उन सभी जिम्मेदारियों को एक साथ लेकर चलने की क्षमता का ही नाम नेतृत्व है। अगर अलग-अलग समय पर हमें कोई चीज मिले और हम कहें कि हमने इस मामले मे अपनी राय जाहिर कर दी। इसमें काम कर दिया और जब सामूहिक रूप से कोई काम करने की बात आए तो हम या तो चुप हो जाएँ या गफलत में पड़ जाएँ। वो नेतृत्व तो नहीं हुआ।

देखिए, एक प्रजातांत्रिक पार्टी हर निर्णय में हम एक साथ बैठ कर निर्णय भले ही न कर सकें, कभी ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित हो जाएँ, लेकिन उस निर्णय के पीछे जो कारण होते है, उनसे तो अवगत कराया ही जाना चाहिए। यही तो कैबिनेट सिस्टम का मूल आधार है। यही पार्टी को चलाने का मुख्य आधार है। हम आपको विश्वास में नहीं लेंगे, अपनी कठिनाइयों से आपको अवगत नहीं कराएँगे और एक दिन मंच पर खड़े होकर लम्बा चौड़ा भाषण झाड़ देंगे और फिर आपसे अपेक्षा करेंगे कि जो मै कह रहा हूँ, उसको आप मान लें। मै आपको स्मरण दिलाना चाहता हूँ, एक छोटी-सी बात है, लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरू किस प्रकार से प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति सजग और

संवेदनशील थे। सारे हिन्दुस्तान मे उनके दौरे हुआ करते थे। एक आदिवासी अँचल में भी जाते थे और एक बड़े से बड़े शहरों में भी जाते थे। उनके भाषणों के कुछ अंश, बाकी चीजें तो जहाँ जाते थे, उस रूप में कही जाती थी, कुछ अंश, उनके एक समान हैं। पहले पन्द्रह मिनिट पंडितजी इसमें ही बिताते थे कि सारे हिन्दुस्तान की तस्वीर लेखा-जोखा क्या हो रहा है? नहीं हो रहा है? क्या करना चाहिए और उसके बाद अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के ऊपर वो आदिवासी अँचल में भी बोलते थे और दिल्ली में भी बोलते थे। उनको क्या जरूरत थी? आदिवासी अँचलों में जाते, तो जो लोगों का खाना दिया जाता है, केवल उसी पर बोलते। वो इसलिए बोलना चाहते थे, क्योंकि वो चाहते थे कि प्रजातंत्र में जो प्रजा के पास, अंतिम अधिकार प्रजातंत्र में होता है, उस अधिकार को बरतने का समय प्रत्येक व्यक्ति सजग रहे। उसको जनकारी रहे। क्या हो रहा है? क्या नहीं हो रहा है।

यही श्रीमती इंदिरा गाँधी का भी रूख था और इसलिए आपको मैं इस घटना का स्मरण दिलाना चाहता हूँ। जब पाकिस्तान के हमले के जवाब में बँगलादेश की आजादी के संघर्ष में भारत की फौजें उतरीं और अमेरिका का सातवाँ बेड़ा आकर बंगाल की खाड़ी में खड़ा हो गया, तो चूँकि सबको जानकारी थी, देश भर में कि इसका क्या मतलब है? ये क्यों हो रहा है? उस वजह से श्रीमती इंदिरा गाँधी ये कहने में सफल हुई और सक्षम महसूस किया उन्होंने कि एक नहीं सात बेड़े आ जाएँ जो हमारा काम है वो होगा। इस प्रकार से नेतृत्व को विश्वास में लेना चाहिए। सारे देश की जनता को, अपने सहयोगियों को, काँग्रेस के लोगों को, अगर सबसे बड़ी कमी इस समय है, तो यह विश्वास में लेने की कमी है और यही जन्म देती है कई विवादों को, कई गलत फहमियों को और जब इस ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है, तो ऐसा लगता है कि जैसे अधिकारों की छीना छपटी हो रही है।

ये तीनों चीजें काँग्रेस के लिए बहुत घातक हैं। आम आदमी में अगर ये बात फैल गई, जैसे कि जोरों से फैल रही है तो आप हजार योजनाएँ चला दीजिए, विश्वास की जो कमी है, वो और बढ़ती चली जाएगी और हमारी आपकी बातों पर कोई भरोसा नहीं करेगा।

जब तक एक नये समाज की ओर बढ़ने के लिए हम कुछ प्रेरणा लोगों को नहीं देंगे। तब तक ये घिसी पिटी लकीर पर चलने वाली चीजें और वो इतनी घिस पिट गई हैं कि लकीर ही समाप्त हो गई है और सब समझते हैं कि सब एक ही चट्टे-बट्टे के लोग हैं। काँग्रेस ये बर्दाश्त नहीं कर सकती। देश ये बर्दाश्त नहीं कर सकता।

कानून बनाए जा सकते हैं, जिनके द्वारा इस तरह की बात निर्मूल करने की कोशिश की जाए। बचने के बहाने ढूँढे जाएँ जैसा कि टाडा के साथ हुआ है।

इसी प्रकार से संस्था का सवाह है। काँग्रेस पार्टी जैसा कि आप सब जानते हैं, एक जिसको कहते हैं प्रवाह, धारा एक रेवोलुशन सब लोग उससे जुड़ते हैं, लेकिन कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर वफादारी का सवाल उठता है। धर्म निरपेक्षता, कमजोर वर्ग की सेवा, धर्म की रक्षा करने का सवाल, हरिजन, आदिवासी पिछड़े वर्ग के लोगों की की सुरक्षा का सवाल, ये ऐसे मुद्दे हैं जिनमें काँग्रेस को क्या सोचना है? क्या करना है? इस बारे में कभी कोई शंका नहीं हुई। आज जो रिजर्वेशन मिला हुआ है हरिजन आदिवासियों को। कुछ शंकाएँ पैदा हो गई है कि यह रिजर्वेशन आगे जाकर कहीं, इसके लिए कोई खतरा न हो जाए? मेरी राय में संविधान का संशोधन होना चाहिए ओर हरिजन आदिवासियों के आरक्षण के मामले में विषय को संदेह से परे कर के संविधान में प्रतिष्ठापित करें।

इसी प्रकार से पिछड़े वर्गों के आरक्षण का सवाल है। पिछड़े वर्गों के आरक्षण के बारे में जो भी संदेह पैदा हुए है, चाहे वो कोर्ट के दौरान हुए हों या और किसी तरह से संदेह पैदा हुए हैं, उस संबंध में वे सविधान का संशोधन करके और उसको संदेह के परे करना चाहिए।

शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण चीज है। हरिजन और आदिवासी बहनों और भाइयों को, बच्चों को वजीफा मिलता है। ये सर्वथा उपयुक्त होगा कि इसी प्रकार का वजीफा पिछड़े वर्ग के परिवारों को भी मिले, ताकि उनके बच्चे भी पढ़ने में कहीं पीछे न रहें। ये कुछ मुद्दे हैं, जिनकी तरफ हमारा आपका ध्यान जाना चाहिए।

यदि हम काँग्रेस के नाम को भारत के राजनैतिक भविष्य में कई-कई दशकों तक सार्थक बना कर रखना चाहते हैं। तो राजनैतिक रूप से हमें काँग्रेस को मजबूत करने की जरूरत है। आज काँग्रेस को मजबूत करने के लिए हम बैसाखियाँ ढूँढ़ते हैं। किसी की बैसाखी मिल जाए तो उत्तर प्रदेश में मजबूत हो जाएगी। किसी दूसरे की मिल जाए तो बिहार में मजबूत हो जाएँगे। किसी और की मिल जाए तो दक्षिण में कहीं मजबूत हो जाएँगे। काँग्रेस कभी बैसाखियों के सहारे नहीं चली है। काँग्रेस पार्टी तो भारत की जनता के बीच में विश्वास पैदा करके साख जमा कर चली है, उस विश्वास को जमा करके बैसाखियों के सहारे इस संस्था का भविष्य उज्जवल नहीं हो सकता।

बातें तो मुझे बहुत-सी कहनी थी, लेकिन समय बहुत हो गया है, लेकिन अभी बहुत से अवसर आएँगे और इसलिए आएँगे, क्योंकि मैं ये मान कर चलता हूँ कि आज हम यहाँ से, हम में से एक संकल्प लेकर बाहर खड़ा है। वह संकल्प किसी कुर्सी को बरकरार रखने के लिए या किसी कुर्सी की रक्षा करने के लिए नहीं है। वह संकल्प होगा ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। हर संस्था पर व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है, लेकिन व्यक्ति के अलावा भी कुछ चीजें होती हैं। जैसा कि एक शायर ने कहा है—

एक दुखताए तस्वीर, तस्वीर नहीं दुखता।
एक हलकाए जंजीर, जंजीर नहीं होता॥
तकदीर कौम की हुआ करती है।
एक इंसान की तकदीर, तकदीर नहीं होती॥
आज कौम की तकदीर क्या होगी।
उज्जवल, धूमिल ये हमें फैसला करना है?

आने वाले समय में जो राजनैतिक चुनौतियाँ देश में आएँगी काँग्रेस कैसा उनका मुकाबला करेगी। क्या भारतीय जनता पार्टी से गठबंधन करके करेगी? क्या सीटों का तालमेल करके करेगी? क्या पर्दे के पिछे फिर वैसी ही लम्बी चर्चा चलेगी? जैसे सन् 92 में चली थी। हो नहीं सकता। हमें साम्प्रदायिकता की विचारधारा वाले लोगों से समझौता तो दूर रहा, तालमेल तो दूर रहा, शिष्टता के नाते व्यक्तिगत चाहे जो भी संबंध हो, राजनैतिक संबंधों को दूर-दूर तक किसी भी प्रकार से स्थापित करने का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए। यदि ऐसा प्रश्न उठेगा तो भारत की एकता टूट जाएगी। हमारी अखण्डता नष्ट हो जाएगी। केवल सेकुलरिजम की वजह से ही भारत की एकता बनी है।

हमें इस बात को सुनिश्चित करना पड़ेगा कि जिन आधारों पर पंडित जवाहरलाल ने, श्रीमती इंदिरा गाँधी ने, शास्त्रीजी ने, और राजीवजी ने सारे दुनियाँ से संबंध बनाए थे भारत के, वे संबंध एक दूसरे के ऊपर पूरी तरह से निर्भर होकर नहीं बने थे, अपने सम्मान को स्वाभिमान को सुरक्षित रख कर बने थे। हम उन संबंधों को आगे बढ़ाना चाहते हैं। खास तौर से अपने पड़ोसी के साथ, पाकिस्तान के साथ बंगलादेश के साथ। एक ही उपमहाद्वीप के हम देश हैं।

अभी कुछ दिन पहले दिल्ली में एक सम्मेलन हुआ। पता नहीं आप लोगों ने उसके बारे में पढ़ा कि नहीं। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के कुछ बुद्धिजीवियों ने, कुछ विचारकों ने, दिल्ली आकर एक सम्मेलन किया कि अब राजनीतिज्ञों को तो दूर रखो। वो अपना काम करें। हम हैं जनता के असली नुमाइंदे। हमारी नजदीकी है, लोगों से। हम

आपस के संबंधो को प्रगाढ़ करें, ताकि राजनीतिज्ञों को विवश होकर दोनों देशों के बीच मैत्री करना पड़ेगी। इस बात की आवश्यकता है। बहुत बड़ी अड़चन है। इसमें पाकिस्तान जो आज काश्मीर में मिलीटेंटस् की मदद कर रहा है। उनके सहारे एक नई राजनैतिक स्थिति पैदा करने का कोशिश कर रहा है। उस पर हमें काबू पाना होगा और वहाँ पर लोगों के मन मे विश्वास पैदा करना होगा। अपनी भावनाओं के बारे में, अपने उद्देश्यों के बारे में।

ये सब आज भारत के सामने काम है, चुनौतियाँ है, उददेश्यों की पूर्ति का सवाल है। अब कैसे करें इसको? कैसे चले? ये फैसले इस देश के हजारो काँग्रेस के लोगों को अपने दिलों पर हाथ रख कर फैसले करने होंगे। आज इस सम्मेलन मे आपकी जो भावनाएँ उभर कर सामने आई वो स्पष्ट भावनाएँ उभरकर आई। मैं इसलिए आशा करता हूँ और मेरा विश्वास भी है कि जो कुछ भी फैसला इस संबंध में हो। आपकी इन भावनाओं को मद्देनजर रख कर ही हो। लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि हमें कटुता को जन्म देना है। सामान्य जीवन में और पब्लिक लाइफ में कटुता कभी लाभदायक नहीं है।

यहाँ दक्षिण से भी कुछ लोग आए हैं। अगर आपकी अनुमति हो तो मैं दस मिनट केवल अंग्रेजी में बोलकर उन्हे भी अपनी भावनाओं से अवगत करा दूँ।

अंत में, मैं आपको सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ और यह आशा करता हूँ कि आज का यह सम्मेलन हमारे आपके लिए व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण हो अथवा न हो, लेकिन इस देश के लिए और सत्ता के लिए आप (शोरगुल होने पर) जरा बैठिए और इस संबंध में जरा आप एक मिनट सुनेंगे तो मैंने आप जरा चुप रहिए। इस उतावलेपन से बात नहीं। मैंने स्पष्ट कहा कि जो भावनाएँ आपने व्यक्त की हैं, उसके आधार पर फैसला होगा।

जयहिन्द।

ताजमहल की रक्षा ज़रूरी

26 अगस्त 1995 आगरा की आम सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

परम आदरणीय तिवारी जी, आदरणीय बहन श्रीमती मोहसिना किदवई, माननीय श्री कुमार मंगलमजी, आगरा नगर के और आगरा ग्रामीण अँचल के यहाँ पधारे हुए आदरणीय माताओं, बहनों, आज यहाँ आते समय मैं यह सोच रहा था कि आखिर आगरा में ये आयोजन क्यों किया गया। इसका राजनैतिक पक्ष है कि मानवीय पक्ष है। यह देश के प्रदेशों के विकास का पक्ष है, और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि हमारे नेता श्री तिवारीजी ने इन तीनों पक्षों को समंवित करके जनहित को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण साहस जुटाया है। वैसे प्रशासनिक पक्ष हैं जानमाल की सुरक्षा होना चाहिए। मानवीय पक्ष हैं जो लोग बेरोजगार हैं, जिनके उद्योग धंधे बंद हो गए हैं, खर्च नहीं होने देना चाहिए और विकास का पक्ष यह है कि जो श्रम करके देश की संपत्ति को बढ़ाना चाहते हैं अपने परिवारों को आत्म निर्भर बनाना चाहते हैं, उनको काम मिलना चाहिए। ये बड़े दुख की बात है कि आज कुछ ऐसा माहौल बनता चला जा रहा है कि ताजमहल बनाम आम आदमी, और इसके लिए कौन जिम्मेदार है। मैं नहीं समझता कि बृज भूमि की विकास की यात्रा को रोककर और ताजमहल की रक्षा करने की बात कोई सोच भी सकता था। लेकिन लापरवाही की वजह से अपने प्रशासनिक ढीलेपन की वजह से आज ये स्थिति धीरे-धीरे लाई जा रही है कि लोगों को यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है कि या तो ताजमहल रहेगा या हमारा परिवार या हम रहेंगे। हमारी विरासत रहेगी ऐसी विरासत जिसका शायद ही कोई मुकाबला कर सकें दुनिया में ऐसी विरासत को हमने ऐसी विवादास्पद स्थिति में लाकर

खड़ा कर दिया। जब अदालत को हस्तक्षेप करके आदेश देना पड़ता है। तिवारीजी का यह प्रयास किसी चीज को रेखांकित करता है, कि जो हमारा काम है, उसकी गति ऐसी होनी चाहिए, उसका स्वरूप ऐसा होना चाहिए, कि जो भारत के अतीत की जो विरासत हैं, वह वर्तमान से और भविष्य से न टकराए अगर हमारा अतीत हमारे वर्तमान पर इस तरह से हावी हो जाय कि हमारा भविष्य अंधकारमय हो जाय तो एक न एक दिन उस अतीत को हमें नकारना होगा, और यह बहुत दुर्दिन होगा इस देश के लिए। यही बात हमारे धर्मो की है। हमारी विरासत में अनेकों धर्म हैं। ऊँचे-ऊँचे सिद्धांत हैं, मूल्य हैं, आदर्श हैं, लेकिन कुछ लोग उसे वर्तमान के अपने राजनीतिक चक्कर में डालकर लोगों के मन में भ्रम और भय दोनों पैदा करते हैं। और वही धर्म बजाय लोगों के बीच में प्रेम का सौहार्द्र का सही रास्ता दिखाने का माध्यम बनने के आपस के टकराव का माध्यम बन गया। इसलिए यह जरूरी है कि ताजमहल की रक्षा बृज अँचल के विकास के टकराव के रूप में सामने न आएँ। एक दूसरे के पूरक के रूप में सामने आएँ। यही तिवारीजी के इस आकलन का निष्कर्ष है और कौन इसे कर सकता है। जिसके हाथ में सत्ता है। जब वह मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने उस तरह की नीतियाँ बनाई, कार्यक्रम बनाए उसका लाभ भी मिला घोषणाएँ हुई। लेकिन उसके बाद जो लोग आए, उनको प्राथमिकताओं के बारे में कोई खबर नहीं, आवश्यकताओं के बारे में कोई खबर नहीं, बस किसी न किसी प्रकार से अपनी कुर्सी को बरकरार रखने की जरूरत हैं। उसका असर हैं जो आज की परिस्थिति निर्मित हुई।

अभी भी समय है उत्तर प्रदेश सरकार और केन्द्र सरकार इस प्रकार के कार्यक्रम बनाकर एक निश्चित अवधि में जो दो या तीन साल से ज्यादा की नहीं हो सकती हैं, ऐसे इंतजाम यहाँ होने चाहिए कि ऊर्जा की प्राप्ति हो। इस अँचल के रोजगार बरकरार रहे और आगे बढ़े और जान माल की रक्षा हो तथा मँहगाई कम हो।

उसे दोनों वक्त का भोजन जरूर खाना है। वो दोनों वक्त का भोजन ही आज इतना महँगा हो गया है जिसकी वजह से बेहद परेशानी आ खड़ी है। और ये उस समय हो रहा है जबकि देश में अनाज के भण्डार भरे हुए हैं। अनाज रखने के लिए जगह नहीं है। और दूसरी तरफ लोगों को अनाज नहीं मिल रहा है। आखिर इसका कोई कारण तो होगा। वो कारण अभी तक तो हम लोगों के सामने किसी ने बताया नहीं। कभी-कभी प्रधान मंत्री के भाषण हो जाते हैं कि हमने सस्ते गल्ले की दुकानें इतनी खोल दी। और सस्ते गल्ले की दुकानों में जो अनाज हैं उसके भाव में और बाजार के भाव में कोई फर्क ही नहीं है। तो वो सस्ते गल्ली की दुकान कहाँ हुई। सस्ते गल्ले की दुकान तो वो हैं, जो बाजार में अनाज मिलें तो सबके खरीदने के ऊपर हैं, उससे कुछ सस्ते दाम पर मिलें। तो सस्ते गल्ले की दुकान है और खरीदने के लिए काम मिलें। अभी ये विषय सारे भारत में एक ऐसा स्वरूप धारण करता चला जा रहा है जिससे सारे समाज के हमारे राजनैतिक ढाँचे की और अंततः हमारे देश की नींव हिल जाएगी। क्योंकि जिस दिन गरीब सचमुच कराह उठेगा फिर उसे कोई सह नही पाएगा। इस दिशा में जो भी करना संभव हो वो किया जाना चाहिए। अगर इस बारे में कोई जिम्मेदार है, तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। ये जमाखोरी हो रही है। ब्लेक मार्केटिंग हो रही है। जो कुछ भी हो रहा है ये जिम्मेदारी शासन को निभानी है। दुख की बात है कि उस तरफ सोचने का किसी के पास समय नहीं है।

अभी एक महीना भी नहीं हुआ लोक सभा के अन्दर एक बहस हुई और ये बहस हुई राजनीति के अन्दर समाज के अन्दर अपराधीकरण के मामले को लेकर एक कमेटी की रिपोर्ट जिसको वोरा कमेटी की रिपोर्ट कहते है, शायद आपने सुना होगा ये क्या है, वोरा कमेटी की रिपोर्ट। चार लोगों ने मिलकर एक रिपोर्ट बनाई। वोरा कमेटी में भारत

सरकार के गृह सचिव थे, सी.बी.आई. के जो सबसे बड़े अधिकारी हैं, रामाराव वे उस समिति के सदस्य थे, इंटलीजेंस ब्यूरो के जो डायरेक्टर है, श्री पाठक वो उसके सदस्य थे और इनकम टैक्स का जो इसका विभाग है भारत सरकार का जिसको कि राजस्व विभाग कहते हैं उसके सचिव उसके सदस्य है। इन चार लोगों ने देश के अन्दर आज क्या स्थिति है अपराधीकरण की उसकी समीक्षा की और उसकी रिपोर्ट लिखी। उस पर बहस हुई लोक सभा में। मैं केवल दो बातें आपको बताना चाहता हूँ कि जो रिपोर्ट लिखी हैं उससे हम सबके कान खड़े कर देने लायक है, चौंका देने वाली बात हैं।

हम आप सबका यह कर्तव्य है कि कंधे से कंधा मिलाकर भारत की रक्षा के लिए भारत में फिर से वो फिजा पैदा करने के लिए कि आप सब कुल मिलकर कर सकें। सब जात और धर्म के लोग एक दूसरे को भाई मानें। सब प्रकार से देश के अन्दर गरीबों की सुरक्षा हो सके। अपराधिक तत्वों पर कड़ाई से कदम उठाकर काबू पाया जा सके। ऐसा भारत, ऐसा मुल्क, ऐसा समाज हमें बनाना हैं उसमें आप सबके सहयोग की जरूरत है। आप सबकी सक्रिय भागीदारी की जरूरत है ये मेरी प्रार्थना है, आपने मुझे सुनने की कृपा की। धन्यवाद।

देश के अवाम में विद्रोह की चिनगारियाँ उभर रही हैं

नवम्बर 1995 दिल्ली विश्वविद्यालय में संबोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आज के इस समारोह के अध्यक्ष माननीय डा. सुभाष कश्यप जी, मंच पर विराजे हुए सम्मानीय डा.आर.पी. मिश्रा जी, डा. जे.पी. शर्मा जी, श्री जगदीश चन्द्र बरार, डा. जैन, के.के. सिंह जी, यहाँ के छात्र प्रतिनिधि और इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भाई श्री जोशी जी, श्री चौधरी जी और जगदीश चन्द्र जी, विश्व विद्यालय के सम्मानित गुरूजन, छात्र भाइयों और बहनों, मैं बहुत आभारी हूँ, अनुगृहित हूँ आपका कि आज आपने यहाँ पर आने का अवसर दिया और जो विषय आज के लिए रखा गया है उस पर आज कहने का कुछ मौका दिया जा रहा है।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि जब कभी ऐसे मुद्दे उठते हैं, जिनका सीधा संबंध भारत के आवाम से, हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था से और सब से बड़ी बात हमारे देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था से होता है, तब उसको दूसरे किसी रास्ते में ले जाया जाता है। कहीं व्यक्तियों की प्रस्पिर्द्धा के क्षेत्र में, कहीं किसी व्यक्ति की, उसकी अपनी सीमित महत्वाकांक्षा की परिधि मे और कभी ऐसे भुलावे के रास्ते से ले जाया जाता है, जो एक निरर्थक विवाद को जन्म देता है।

आखिर हमारा देश जब गुलाम था और कश्यप जी ने जिन महान विद्वानों का नाम लिया। जब उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई लड़ी, तो उन्हें क्या मिलेगा? यह उनके सामने नहीं था। हम बहुत छोटे लोग हैं। बौने लोग हैं उन लोगों के सामने। लेकिन उनकी लड़ाई आपके और हमारे आज के लिए उन्होंने आपको बलिदान किया, लेकिन हमारे आप के भविष्य को सुरक्षित किया और आज हम और आप एक प्रजातांत्रिक देश में साँस ले रहे हैं। एक नागरिक की हैसियत से अपने अधिकारों का उपयोग कर रहे हैं।

इसलिए यह जरूरी है कि हर पीढ़ी किसी-न-किसी समय आज नजर दौड़ाइए चारों तरफ शायद देश का कोई भी तबका ऐसा नहीं होगा, जो किसी न किसी विवाद से और असंतोष से ग्रसित न हो। देश का कोई ऐसा भाग नहीं होगा, जहाँ पर लोगों के मन में असंतोष, विग्रह और फिर आगे चल कर विद्रोह की चिनगारियाँ न सुलग रही हों। हमारा देश, हमारा जन तंत्र आज एक तरह से चारों तरफ से घिर गया है, उन परिस्थितियों से और उन परिस्थितियों

से निकली हुई व्यवस्था से, जो प्रजातंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा बन सकती है। हमारे लिए क्या खतरा होगा? आपके लिए क्या खतरा होगा? विश्व के लिए क्या होगा? वह महत्व रखता होगा किसी के लिए, लेकिन अगर भारतीय गणतंत्र मे प्रजातंत्र खतरों से घिर जाएगा और हम उन खतरों का आभास भी नहीं कर पाएँगे और जब आभास ही नही कर पाएँगे तो उनका मुकाबला कैसे कर पाएँगे?

इसलिए जरूरी है कि हम बिना किसी द्वेष के, बिना किसी नाराजगी के, बिना किसी के प्रति किसी प्रकार का अपने मन मे गलत भावना रखते हुए हम सब विचार करें कि आज भारत का प्रजातंत्र किन खतरों का सामना कर रहा है?

सब से पहला खतरा है आज की राजनीतिक व्यवस्था में जन तंत्र के जो आखिरी अधिकारी होते हैं। जिन से जनमत बनता है। सामान्य नागरिक, क्या उनके मन में कुछ अविश्वास की लहर नहीं उठ रही है। व्यवस्था के बारे मे, हमारे बारे में और इस व्यवस्था की शक्ति के बारे में। आज नव-जवान देश के अंदर यह नहीं देख पा रहा है कि एक सीमा के बाद या किसी समय जो कुछ भी वो शिक्षा-दीक्षा पा रहा है, कमियाँ हैं उसमें और कुछ होना चाहिए, लेकिन किसी न किसी वक्त वो अपने पैरों पर खड़े होकर अपने भविष्य को बनाने की चिंता तो रखता ही है। उस अवसर पर उसको क्या साधन, और सहयोग चाहिए? क्या आज का तमाम नागरिक ऐसा महसूस नहीं कर रहा है कि जिस व्यवस्था के अंदर प्रजातंत्र को चलाया जा रहा है, वह व्यवस्था प्रजातंत्र के मूलभूत आधारों पर ही कुठाराघात कर रही है?

वाणी की स्वतंत्रता, विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, वह तो मूलभूत अधिकार है। जिसके ऊपर प्रजातंत्र केवल इस देश में नहीं, सारी दुनिया में आधारित होता है। आज उस पर भी रोक और बंधन लगाए जा रहे हैं। और फिर जो कुछ ऐसे चारों ओर उदाहरण देखने को मिल रहे हैं, एक गहरी अनास्था पैदा हो रही है, देश के अन्दर समस्त राजनीतिक व्यवस्था के कारण कि यह व्यवस्था इतनी जर्जर और केवल स्वयं पर केन्द्रित हो गई है, कि चारों तरफ जो कोलाहल है, वह हमारे कानों तक नहीं पहुँच पा रहा है।

आप भ्रष्टाचार की बात ले लीजिए। बार-बार यह बात कही जा रही है और हम को चाँस दे रहे हैं, आखिर इसका असर किसके ऊपर पड़ेगा? क्या हम चाहते हैं कि भारत के आवाम पर इस बात से विश्वास उठ जाए कि जो हमारी राजनीतिक व्यवस्था है, जो हमारी प्रक्रियाएँ हैं। आज यहाँ पर बैठे हैं, सुभाष कश्यप जी, जिन्होंने भारत के संविधान के परिप्रेक्ष्य में भारतीय प्रजातंत्र को संचालित करने वाली सर्वोच्च संस्था संसद की जिम्मेदारियों और प्रक्रियाओं के बारे में गहरा अध्ययन किया है। आज उनके द्वारा बहुत-सी बातें जो कही गई हैं, वो प्रभावित करती है हमारे संसद की प्रक्रिया को। तो क्या हम चाहते हैं कि वह संसद पंगू बन जाए? कि वह संसद जो भारत की सर्वोच्च शक्ति है प्रजातांत्रिक, वह उन समस्याओं के समाधान के लिए और जो गलतियाँ हुई हैं, उनको ठीक करने के लिए असहाय बन जाए? अगर ऐसा होगा तो संसद से विश्वास हटेगा, उस प्रणाली से विश्वास हटेगा, जिसके तहत प्रजातंत्र चलता है।

फिर सवाल आता है कि इस बदलती हुई दुनिया में हम और आप जिन्दा हैं। जो कल की परिभाषाएँ थीं, विज्ञान की, अर्थशास्त्र की, राजनीति की, उनके जो क्षितिज थे, वो आज कहीं और जाकर पहुँच गए है। ज्ञान का विस्फोट इतनी तेजी से हो रहा है कि देश और कौमें अपने आप को संभाल नहीं पा रही है। आज इसी दुनिया मे भारत वर्ष भी रहता है। हम दुनिया के बाहर तो नहीं है और इसलिए हमें भी इन सब चीजों को देखना भी पड़ेगा और उसके अनुरूप हमें आचरण भी करना पड़ेगा।

आपको याद होगा, लेनिन का वह महत्वपूर्ण वाक्य कि 'स्टील प्लस इलेक्ट्रिसिटी इज पावर'। अब स्टील और इलेक्ट्रिसिटी जादुई लकड़ी से तो पैदा नहीं किया जा सकता है। इसके लिए करोड़ों-करोड़ों रुपयों का पूँजी निवेश करना पड़ता है। उस समय भारत का जो प्रायवेट सेक्टर था, जिनके पास यह पूँजी नहीं थी और इसलिए हमने देश के अंदर, पंडित जी ने एक व्यवस्था बनाई पब्लिक सेक्टर की, सरकार पूँजी लगाएगी, बाहर से विदेशों से जो देश बिना किसी प्रकार के बंधन लगाए हमको सहयोग दे सकते हैं, उनसे सहयोग लेकर और स्टील के बड़े-बड़े कारखाने, इस्पात के खुले। पावर, इलेक्ट्रीसिटी के लिए कारखाने बने, जहाँ इलेक्ट्रीसिटी बनाने के संयंत्र बने।

आत्मनिर्भरता का जो सिद्धांत है, जो किसी प्रकार से कमजोर उसको नहीं कर सकते। क्योंकि कोई भी स्वतंत्र देश यदि आत्मनिर्भर नहीं रहता, तो किसी न किसी स्थिति में उसकी स्वतंत्रता पर आँच आती है। और ऐसा हम कभी भी होने नहीं देना चाहते हैं।

हमें थोड़े-से वास्तविक स्तर पर भी सोचना पड़ेगा। आज हमारे देश के अंदर बहुत-से लोग, प्रतिशत में जाएँ तो लगभग चालीस प्रतिशत से पचास प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जो गरीबी की रेखा के तो नजदीक हैं, या उसके नीचे हैं। और वो भी इस देश के नागरिक हैं। उनका भी उतना ही अधिकार है, जितना किसी और का है इस देश की प्रगति में और जो प्रगति हमने देखी है उसके बँटवारे में। तो हम उनकी आशाओं, आकाँक्षाओं और उन की जरूरतों को नजरअँदाज तो नहीं कर सकते हैं।

आज परेशानी यह है कि एक ओर सारे देश में उठता हुआ यह झंझावात, एक तरफ प्रजातंत्रिक शक्तियों पर बढ़ता हुआ अविश्वास, एक तरफ लोगों तक पहुँचने की कोशिश में कमी और दिल और दिमाग को पूर्वाग्रह से रहित करके आपस में बैठ कर विचार-विमर्श की हिचकिचाहट, बहुत ही अजीबोगरीब परिस्थिति को जन्म दे रहा है और वहीं सीधा जुड़ता है, यह डिसेस्पशन की बात आज के उसमें कही गई है। राजनीतिक रूप से असंतोष बढ़ता है या तो वह असंतोष हमारी प्रक्रियाओं में मान्य है, जिनसे पार्टिया बँधी है। संसद बंधी है और वे सभी तंत्र बँधे हैं, जो प्रजातंत्र में होते हैं या तो उनके द्वारा, उस असंतोष को मिटाया जाता है, परिवर्तित किया जाता है और यदि ऐसा नहीं होता। किसी न किसी प्रकार की आनाकानी की जाती है, तब फिर अंतिम रूप में जनमत ही उस असंतोष का उत्तर देता है। जैसा कि भारत में पहले भी देखा जा चुका है।

अगर आज एक काँग्रेस के वर्कर की हैसियत से मेरी चिंता है तो केवल यही है कि इसके पहले कि भारत का जनमत हमारे इस अनिर्णय की स्थिति में, हमारे दल के खिलाफ अपना निर्णय दे, दल के अंदर हमें उसको सम्हालने की जरूरत है, क्योंकि मेरी यह मान्यता है कि आज हिन्दुस्तान में ऐसी कोई मुख्य केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति नहीं है, जो काँग्रेस का विकल्प बन सके। अगर ऐसी शक्ति होती तो जैसा कश्यप जी ने कहा-सर्वोपरि है, पार्टियों का कोई महत्व नहीं है।

आप जो भारत के भविष्य, जैसा मैंने कहा, मुकातिब हूँ आप से, मैं इतना ही निवेदन आपसे करता हूँ कि आप ही इस वक्त सोचें विचारें और एक नागरिक की हैसियत से, प्रबुद्ध वर्ग की भी बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, कि इन जनमत को सार्थक रास्ते पर चलने के लिए अपने विवेक का, अपनी शक्ति का उपयोग करें।

दिल्ली यूनीवर्सिटी भारत की यूनीवर्सिटियों की शीर्ष यूनीवर्सिटी है। जहाँ आपके सामने आकर मुझे इस बात को कह कर बहुत हलकापन महसूस हो रहा है कि मैंने भारत की तरूणाई के आगे ही नहीं, वरन् भारत के प्रबुद्ध वर्ग के आगे इस बात को रखा है। इस आशा और विश्वास के साथ कि भारत के भविष्य के बारे में हम सबको बराबर

चिन्ता है। यह चिन्ता हमारे भविष्य को बढ़ने के लिए एक नया रास्ता देगी।

इसी विश्वास और इसी आशा के साथ मैं आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद् देता हूँ। जय हिन्द।

अहंकार, क्रोध, लोभ का त्याग करें

3 नवम्बर 1995 को आगरा के गायत्री शक्ति पीठ में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

परम पूज्य गुरूदेव के चरणों में नमन, परम पूज्यनीय माताजी के चरणों में नमन। हमारे भाई आदरणीय डॉक्टर पाण्डे जी, माननीय सांसद महोदय और यहाँ पर पधारे हुए सभी आदरणीय देवियों व सज्जनों। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली आज मानता हूँ कि उस भूमि का नमन करने का मुझे अवसर मिला जिस भूमि ने इस महान विभूति को जन्म दिया। हजारों साल से, धर्म के प्रवक्ता और समाज के आदर्श पुरुषों की एक लम्बी श्रृंखला हमारे देश में रही है, जहाँ भगवान ने अवतार लिया है। इतनी समृद्ध और इतनी पुरानी विरासत को पाकर भी हम कहीं न कहीं भटकते रहे, घूमते रहे जिसकी वजह से आज महिमा और गरिमा में कमी आ गई है। देश गुलाम भी हुआ लेकिन ये अपूर्व एक प्रकार से संयोग देश में रहा कि हर युग में जहाँ हम किन्हीं कारणों से गए तो एकदम गिरने के पहले कोई न कोई महापुरुष इस देश में अवतरित हुआ और हम सबका हाथ थाम लिया। उन्हीं महापुरुषों की श्रृंखला में आचार्य जी से जीवन से आप सब भलीभाँति परिचित हैं। इसलिए मुझे कोई नई बात नहीं कहनी है। मुझे सौभाग्य मिला उनके चरणों में दो तीन बातें रखने का। हमारे मध्यप्रदेश के मंत्रिमण्डल में हमारे सहयोगी थे डॉक्टर रेवनाथ चौरे वो अक्सर हरिद्वार आया करते थे। और मुझसे पूछकर आया करते थे, कि मैं 7 दिन के लिए जा रहा हूँ। मुझे थोड़ी सी इस बात की उत्सुकता थी कि चौरे साहब 7-7 दिन हरिद्वार में रहकर क्या करते हैं? मुख्यमंत्री के नाते मेरा जानना वैसे भी उचित था। एक दिन मैंने उनको अलग बुलाकर पूछा। उन्होंने मुझसे एक ही जवाब दिया मुझे तो गुरूजी का आदेश कई दफे हुआ लेकिन मैं आपसे कहने की हिम्मत नहीं कर सका। मैंने कहा भाई ये तो आपने बहुत बड़ा अन्याय किया और एक महीने डेढ़ महीने के अन्दर मैं हरिद्वार गया। करीब डेढ़ घण्टे तक गुरूजी के चरणों में बैठने का मौका मिला और पूज्यनीय माताजी का वात्सल्य तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता। इतनी वात्सल्यमयी व्यक्तित्व मैंने कहीं नहीं देखा अब गुरू जी ने कोई बहुत लम्बा-चौड़ा व्याख्यान नहीं दिया। सामान्य रूप से जैसे चर्चा होती है। अपने बारें में उन्होंने कुछ नहीं बताया। वो तो प्रकाशित पुस्तकों में वैसे ही पढ़ने को मिल गया। दोबारा जब मैं गया, तब गुरूजी ने मुझसे कहा कि तुम यहाँ बार-बार क्यों आते हो? मैंने कहा मैं खुद नहीं जानता क्यों आता हूँ? लेकिन जब भी आता हूँ तो आपके सानिध्य में एक नई ताजगी मिलती है। अब आप ही बताईये ये क्यों होता है? गुरूजी ने मुझे जवाब दिया वो अब मेरे जीवन का अंग बन गया। बहुत ही सरल तरीके से उन्होंने कहा जिज्ञासा मनुष्य का अंत पैदा करती है उस जिज्ञासा को शांत करने के लिए व्यक्ति कोशिश करता है या नही? ये उसके स्वयं के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है और जिज्ञासा के शांत हो जाने के बाद जो व्यक्ति उस जानकारी से ज्ञान से औरों के लिए कुछ करने की कोशिश करना चाहता है। ये उसका संकल्प हो जाता है और ऐसे ही संकल्पों की बहुत लंबी कतार हमें चाहिए, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले और यही संकल्प भारत में नए नेता आते रहे। मैंने कहा गुरूजी एक साधारण व्यक्ति ये कैसे सब कुछ कर सकता है। तो उन्होंने वही बात कही जो कि आज डॉक्टर पंड्या ने कही। हम बदलेंगे युग बदलेगा। हमें स्वयं को बदलने के हौसले की जरूरत है। कुछ साहस की जरूरत है, प्यार की जरूरत है वह दूसरों का बदलने के लिए जरूरी नहीं है। हम दूसरों को लंबा-चौड़ा उपदेश दे सकते है लेकिन जब स्वयं विश्वास करने

की जरूरत आ पड़े, कोई निर्णय करने की, कोई कदम उठाने की तो न जाने कितने झंझाबात दिक्कतें बंधन नजर आते हैं। वही गुरूदेव की वाणी मार्ग प्रशस्त करती है, प्रेरणा देती हैं। अहंकार, क्रोध, लोभ का त्याग करें। अगर हम इस उपदेश का लेशमात्र भी इसको आत्मसात कर सकें तो फिर हम भारत के उत्थान में कुछ न कुछ योगदान करते ही रहेंगे। ये उत्थान उसी संकल्प लेने का क्षण है,ये क्षण परम पूज्य गुरूजी के चरणों में नमन करके एक नए साहस को बटोरने का क्षण है क्योंकि इस समय कवि दिनकर के शब्दों में- "जरा मशाल जलाओं बड़ा अंधेरा है" इस अंधेरे को दूर करने के लिए सबके हाथ में छोटी बड़ी मशाल की जरूरत है क्योंकि इस मशाल के प्रकाश से हमारा अपना भी मार्ग स्पष्ट होगा और साथ ही साथ सारा भारत आलोकित हो रहा है ताकि उस आलोक से इस राष्ट्र को जो इतिहास है वहाँ हम अपने देश को ले जा सकते हैं। यहाँ पर जो कार्यक्रम होंगे हममें वो शक्ति हमारे विवेक को जागृत कर सकें। हम सबको व्यक्तिगत रूप से प्रेरणा मिल सकें यही प्रभु से प्रार्थना है और यही गुरूदेव के चरणों से हम सबको आशीर्वाद मिले। हमारी आपकी सबकी यही प्रार्थना है। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार तथा पत्रकार वार्ता

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है

24 जनवरी 1995 कोरबा में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि एक दफे फिर यहाँ आने का शुभ अवसर मिला और यहाँ की प्रगति से अवगत होने का अवसर मिला और सुन्दर गुलाब देखने का अवसर मिला। ऐसे गुलाब तो हम लोगों को दिल्ली में देखने को नहीं मिलते। यह तो मध्यप्रदेश की ही नहीं सारे भारत की एक तरह से ऊर्जा राजधानी बनती जा रही है। यहाँ का विकास और यहाँ के ऊर्जा के उत्पादन से देश की प्रगति बहुत जुड़ी हुई है हम आशा करते हैं कि जो भी यहाँ हो रहा है वह अच्छी तरह से और सफलता से होगा।

प्रश्न : सिंह साहब, लोकसभा चुनाव के बाद यदि आपको नरसिम्हाराव या अटल बिहारी वाजपेयी को समर्थन देना पड़ा तो किसको देंगे आप?

श्री अर्जुनसिंह: यह आपने अपने मन से परिस्थिति को निर्मित कर दिया। मैं तो समझता हूँ कि ऐसी परिस्थिति बनेगी ही नहीं।

प्रश्न : क्या किसी एक दल को स्पष्ट बहुतम प्राप्त हो जाएगा क्या आपकी ऐसी मान्यता है?

श्री अर्जुनसिंह : पार्टियाँ शायद उसको सम्पादित करने में थोड़ी कठिनाई में पड़े, मेरा विश्वास है कि भारत के मतदाता उसमें गफलत नहीं करेंगे। अभी तो आशा ही की जा सकती है।

प्रश्न : महामहिम राष्ट्रपतिजी से आपके प्रतिनिधिमंडल की क्या बात हुई?

श्री अर्जुनसिंह : हम लोग कल गए थे, महामहिम राष्ट्रपति जी को अपने दल की ओर से एक मेमोरेंडम देने के लिए, जो हमारा सिटिज़न मार्च हुआ 21 तारीख को, उसमें पहला मुद्दा हम लोगों ने यही रखा है कि भारत की सुरक्षा, रक्षा के इंतजाम और जो उपकरण हैं आज ऐसा महसूस हो रहा है कि वे निष्प्रभावी होते जा रहे हैं। वरना कोई कारण नहीं है कि 17 दिसम्बर से 21 तारीख तक एक विदेशी

विमान भारत का भ्रमण करता रहे और हथियार फेंकता रहे और हमारे देश की सुरक्षा सिक्युरिटी एजेंसी को इसके बारे में कानों कान खबर न हो।

प्रश्न : प्रदेश में दिग्विजय सिंह की सरकार और केन्द्र में राव सरकार इन पर आपका कोई आरोप है?

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, मैं आरोप लगाने का आदी नहीं हूँ। कौन क्या करता है देश की जनता और प्रदेश की जनता देख रही है। मैं तो केवल यह जानता हूँ कि जो जिस प्रकार से जिसका आचरण होगा जनता की अदालत में उस प्रकार से प्रक्रिया होगी। जहाँ तक मध्यप्रदेश का सवाल है दिग्विजय सिंह भले कोशिश कुछ करते रहें, लेकिन वो आज की परिस्थिति में कुछ कर पाएँगे या किया है, इस पर बहुत बड़ा प्रश्नवाचक चिह्न है। बाकी खासतौर से इस प्रदेश में कमजोर वर्गों से जुड़े हुए सवाल हैं। आज मैं बोधराम जी से पूछ रहा था कोरबा की ये विस्तृत नगरी जिन भूमिहीनों की जमीन पर बसी है, एक ज्वलंत सवाल था कि उनको क्या मुआवजा उसके बारे में मिल रहा है, तो उन्होंने बताया कि वह समस्या वहीं की वहीं खड़ी है कोई हल नहीं है। तो अगर ऐसे समस्याओं से मुँह मोड़ा जाएगा या उन्हें दरकिनार किया जाएगा, तो सरकार कैसे जनप्रिय हो सकती है।

प्रश्न- राष्ट्रीय स्तर पर ईसाइयों को आरक्षण देने के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे ख्याल से केवल धर्म के आधार पर किसी को आरक्षण देने की समस्या नहीं मिलना चाहिए लेकिन अगर सामाजिक और आर्थिक और शैक्षणिक पिछड़ापन है, तो निश्चित मिलना चाहिए।

प्रश्न : कश्मीर की समस्या के बारे में आप कुछ बताएँगे?

श्री अर्जुनसिंह : कश्मीर की समस्या तो एक ऐसे दौर पर पहुँचा दी गई है जिसमें बहुत से अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे जुड़ गए हैं। यह बात हमें समझनी चाहिए कि आज से नहीं भारत जिस दिन से आजाद हुआ उस दिन से कुछ विदेशी ताकतों की मंशा औद दृष्टिकोण कश्मीर के बारे में एक विशेष प्रकार का था जिसके बारे में बहुत ज्यादा व्याख्या न भी करें तो एक बात स्पष्ट थी कि कश्मीर और भारत के संबंध जितने कमजोर हो सकें, ऐसा वे लोग देखना चाहते हैं। आज वहाँ एक ऐसी स्थिति बन गई है कि कई कारणों से सही, गलत वहाँ का आवाम भारत से नाखुश हो गया था और उसका फायदा उठाकर पाकिस्तान के द्वारा भेजे गए मिलिटिन्ट्स ने एक वहाँ हिंसा का, आतंक का वातावरण निर्मित कर दिया। इस उद्देश्य से कि किसी बहाने कश्मीर का संबंध भारत से तोड़ दिया जाए। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कश्मीर एक तरह से हमारी आजादी की लड़ाई का जो मूल आधार था, जिसको हम सर्वधर्मसमभाव कहें या कि और कोई नाम इस्तेमाल करें, उसका सबसे ज्वलंत उदाहरण था। एक मुस्लिम बहुल राज्य उस समय जब भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था, उस समय वहाँ के लोगों ने ये फैसला किया कि वे भारत के साथ रहेंगे क्योंकि उनको भरोसा था कि देश की एकता सेक्युलरिज्म के रास्ते से ही हो सकती है। आज अगर उसके ऊपर प्रश्न चिन्ह लगाने की बात खड़ी हो गई है, तो यह बहुत चिंता की बात है और इसको हल्के तरीके से नहीं देखा जा सकता। अब चाहे उसको न मानिए आप या है भी, कम से कम पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय से हम देश के प्रधानमंत्रियों के दृष्टिकोण को देखते हुए आए है, कश्मीर के बारे में प्रजातांत्रिक परिवेश में जब तक संपर्क न हो नेतृत्व का आवाम से, तब तक वह जो पहली सीढ़ी है, अन्डरस्टेंडिंग की वही नहीं पा सकते आप।

अब वहाँ जरूर कुछ आंतरिक बदलाव शुरू हुआ है, क्योंकि हिन्सा और आतंक आवाम, आम आदमी बहुत दिनों तक नहीं सह सकता। उसकी प्रतिक्रिया होती ही होती है। सार्वजनिक जीवन है अपना जीवन है, सब इतना प्रभावित हो जाए कि आदमी उठ बैठ नहीं सकें। परिवार को न चला सके, बच्चे स्कूल न जा सकें। इसका प्रभाव तो होता है, एक परिवर्तन की स्टेज तो आएगी। लेकिन फिर सवाल आ गया कि एक राजनीतिक दृष्टिकोण से चुनाव कराना अहम् हो गया, चुनाव उस समय होना चाहिए जब फ्री एंड फ्रेंक अर्थात निष्पक्ष चुनाव हो सकें। संगीनों की छाया में चुनाव तो होता नहीं। तो ये हैं नजरिए जो थोड़े से हमें सुधारनें होंगे। मैं समझता हूँ कि उस दिशा में राय बन रही है और कश्मीर जो कि प्रजातांत्रिक प्रक्रिया से कट गया है .....

प्रश्न : वहाँ धारा 370 के पक्ष में हैं क्या आप?

श्री अर्जुनसिंह : मैं तो नहीं हूँ जिस संदर्भ में वह धारा आई थी, उस संदर्भ में अभी समय नहीं है और दूसरा जो अब माँगें हो रही हैं अधिक स्वायत्तता की इसमें मेरा बहुत स्पष्ट मत है कि ये विषय नहीं है कि कोई माँगें और हम फैसला करें। इन विषयों से सारे देश के मामले जुड़े हैं, इन परकोई भी निर्णय लेने के पहले जितनी भी राजनीतिक पार्टियाँ हैं, लोग हैं, उनके बीच में विचार-विमर्श होना चाहिए। किसी एक पार्टी का मसला नहीं है यह राष्ट्र का मसला है। और एक सर्वसम्मति से कोई रास्ता निकले जो भी देना हो दीजिए।

CAREER COLLEGE H.E.L. BHOPAL
ACC.No.....
Book No.....
Date.....

प्रश्न : राजनीति के अपराधीकरण के बारे में आपके क्या विचार हैं?

श्री अर्जुनसिंह : अब अपराधीकरण को अपने ऊपर यहाँ पर क्यों लादते हैं।

प्रश्न : चन्द्रास्वामी के बारे में आपको क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, चन्द्रास्वामी की इस वक्त बहुत चर्चा है ना कि गठबंधन, राजनीतिक अपराधी और नौकरशाही अगर उसका सबसे ज्वलंत और प्रथम उदाहरण है तो वह चन्द्रास्वामी का प्रकरण है।

26927

प्रश्न : संसद में गतिरोध क्यों हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: भई, हम तो वैसे ही बड़े दुःखी रहे हमारे दो तीन मुख्य प्रस्ताव नहीं आ सके, एक आपका छत्तीसगढ़ बनाने का प्रस्ताव वह आ ही नहीं सका, तो व्यक्तिगत बात छोड़ दीजिए। सवाल यह है कि संसद को हम इस तरह का अखाड़ा नहीं बना सकते और मैं तो रोज देखता रहा।

प्रश्न : आप क्या मानते हैं?

श्री अर्जुनसिंह : यह अफसोस का विषय तो क्या, मैं तो मानता हूँ कि एक तरह से यह संसद की अवमानना है।

प्रश्न : संसद का गतिरोध क्या उचित है?

श्री अर्जुनसिंह: मेरा ख्याल है कि दो चार दिन की बात तो अलग है लेकिन इतने समय तक, मुझे एक घटना स्मरण है कि जब हम संसद में अपील कर रहे थे कि प्रधानमंत्री को पधारना चाहिए, और मैंने बताया भी वह घटना थी 58 या 59 की मुझे यह याद नहीं कि किस विषय पर चर्चा हो रही थी, लेकिन बड़ी गर्मा-गरम चर्चा सदन में थी, तो पंडित जी तो हरदम पार्लियामेंट में आते थे, प्रश्नकाल तो वे कभी चूकते ही नहीं थे और कभी इस तरह की डिबेट हो तो वे अपने आसन पर रहते थे। बड़े आरोप-प्रत्यारोप हुए, मैं विजिटर्स गेलरी में बैठा हुआ था, तो सब कुछ सुनने के बाद जब लोगों ने कहा कि आप बैठे हैं तो बोलते क्यों नहीं, वह तो बैठे थे और उनके सामने कह रहे थे कि आप बोलते क्यों नहीं, उन्होंने कहा कि मुझे क्या कहना है वह मैं आपसे नहीं सीखना चाहता। प्रधानमंत्री

होने के नाते मैं एक पार्टी का लीडर हूँ। उसके हितों को मुझे ध्यान में रखना है। लेकिन इस सदन का भी मैं नेता हूँ। यहाँ मैं सदन के नेता की हैसियत से पार्टी से ऊपर उठकर ही कुछ बोल सकता हूँ उसके बारे में उस संदर्भ में नहीं बोल सकता। उनका इतना कहने के बाद सब सवाल ही खत्म हो गए। कहीं उन्होंने कोई खास बात नहीं कहीं, कहा कि मैं इन सब चीजों को देखूँगा, इसमें कोई पोलिटिकल वो नहीं होना चाहिए, इस तरह से सब शांत हो गए। जैसा मैंने कहा कि पार्लियामेंट कोई अखाड़ा तो है नहीं, सब संबंध होते हैं।

प्रश्न : छत्तीसगढ़ में क्या आपको उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह : ऐसी मजबूरी क्या है, मैं पिछली दफे बस्तर आया था, रायपुर रुका, दुर्ग रुका, राजनांदगाँव रुका, कल से यहाँ घूम रहा हूँ मुझे तो कम से कम 6 उम्मीद्वार मिल गए जिन्होंने कहा है कि आप मुझे खड़ा कीजिए हम हरा देंगे विद्याचरण जी को।

Dis-investment of public sector companies is one of the objects of liberalisation policy

18 फरवरी 1995 गुवाहाटी में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Respected Shri Berva ji. esteemed Colleague K.N. Singh ji and shri Upadhaya ji, President of the Press club and distinguish friends for the meeting. I have a very few introductory remarks to make because I think the question and the answer would really bring out what you want. And what I also want the preface that I want to make it, there is the lot of information news in the Press about the recent happenings which culminated in my expulsion from the congress party. Since most of it has already been well documented in media. I will not waste your time on that. Only two things, I want to say in this regard is that this entire, a part from my part has been an effort to ensure that the great organisation to which Congress party is able to overcome effectively crisis of confidence which has surfaced.

Some of the signals that have emanated from the people has pointed to the fact that there are wave doubts about certain basic postulates on which the Congress party has always stood for example our commitment to the secular ideal, similarity the commitment of the Congress party for taking care, protecting and promoting the interest of the weaker section of the society, Backward classes, Schedule caste, Schedule Tribe, all these things have come under certain cloud.

Unfortunate that it is related with the new liberlised economic policy which we have adopted and the perception is sought to be created that because of this policy itself. That all these things are happening in my opinion this is something which must be taken note of, an effective action taken so that this linkage that is sought to be established is rectified.

The liberlisation policy has certain basic premises the removal regulatory control the opportunity for compitition all these parameters are well understood. But when alongwith this there

is an impression that weaker sections of the people and their interest were ignored for example, the effect of rising prices, now if rising prices are going to affect common man and that too in commodities of which we have bumper stocks in the country. Never before has the country had this kind of stocks of food grains that we have today. And therefore, this incongruity has developed is creating doubts among the people. As to how this has happened, who are responsible I think we have to go deep into it and if any block marketing, holding or anything of this kind is responsible for that. Where is stringent action needs to be taken.

Then alongwith that the issue of corruption. It may be a matter of co-incidence. But the fact remains that as the liberlisation policy got under way from July 1991, in April 1992 we witness, they are holding of the biggest security scam that this country has ever seen. Even now inspite of the unanimous report of the J.P.C. The precise figures involved have not been determined and it is certainly about five thousand corers. According to the current reckoning what has happened. These two have been aging interlinked as if the security scam was the direct result of the liberlisation policy.

Now this may not be true and I hope this is not true. But the fact that till now inspite of the J.P.C. Unanimous J.P.C. The dis-investment of the public sector undertakings, which again is one of the aspects of the liberlisation economy. That the public sector should become more self sustaining and investment made by State. It should be reduced. This is one of the precepts of the policy and in pursuance of that this investment of public sector undertaking stocks took place.

The Controller Auditor General in his report pointed out that the manner in which this has been done. Loss to the exchequer of the order three thousand crorers. Then standing committee of the Parliament on the department of the industries went into this matter and in their reports submitted to the Parliament on the 20th of Dec. 1994. The committe has observed that this loss is estimated at around ten thousand crores.

It is essential that the people don't come to believe that the Congress party or our Govt. Are anywhere responsible for it. Therefore, a very strong and transparent action is called for so that people who are to blame or identified and proper action taken similarly on the question of minorities. The minorities in this country and all the minorities whether they are Muslims, Sikhs or Christians or any other minorities have been recognized as special responsibilities of the State and they have certain guarantees in the constitution, certain rights in the constitution, which enable them to become equal partners in the entire national effort or in the entire national life of the community. Now for some reason, there is grave misgiving in the minds of minorities today. Some because of the demolition of Babri Masque and they feel that congress govt. Perhaps could not do what it should have done to prevent that event.

Then the misuse of certain laws like T.A.D.A. and others in various States then sometimes our incapacity to reach out in terms of succour and protection to them. All have combined to create grave doubts and misgivings in their minds and hearts.

Now, I feel that for the stability of this country, it is absolutely essential that these doubts, misgivings are removed and the primary responsibility to do something in this regard, rests on the shoulder of the Congress party, which is the pre-eminent political party in this country and perhaps only central political forces.

Now these are some of the things, which I tried to articulate inside consensus of the party and Govt. and ultimately I came to this conclusion as a Congress worker. That perhaps, I would be able to bring these things into much shape of focus if I went out of the Govt. and started articulating these among rank and file of the Congress party. These I mentioned on 20th of Dec. In a meeting of the Working Committee and on 24th Dec. I submitted my resignation.

It is very unfortunate this was taken to be as a revolt against the party or anybody in particular rest oppose you all know everything has appeared in the Press. All we can say, is that charges levied against me totally indecision.

There is not a single instance pointed out in the charge sheet which could say that this and this act committed by me on this and this state is constituted to be antiparty activities in this manner.

Yet, I have replied to it and as precise as I could be the expulsion order in my view is misconceived, arbitrary and to some extent also predetermined that as it may. I am a Congress worker because the Congress is my total political existence. I will remain a Congress worker. I will reach out to fellow Congressmen in the country. As I came here to same purpose tried to educate them about what stakes are in this country and what the Congress party and Congress workers have to do at this moment.

This is my exercise. There is no question of us causing any split in the party. There is no question of joining any other political party. This is in the short background.

Q: What is your suggestion to win the confidence of the minorities?

Shri A.S.: You see the party like the Congress is not built over night. Even as it is, it is hundred and ten years old and secondly the incident that you are referring to, It is a very lamentable event and there is no doubt that the sense of grievance and alienation that is entertain by the minorities on that account against the Congress party needs to be addressed and that is precisely what I am trying to say. That if this sense has come about it is our bounded duty to see that we are able to remove these doubts and try to instill same confidence that these people and how it is to be done, is a matter which has to be discussed and decided, then we proceed.

I had made a suggestion which did not find fever that is the end of it. That is what we have to do because the Congress can't exist unless it recaptures the faith and trust of the minorities of this country.

Q: Do you feel that your's is a gigantic effort to gain the confidence of the Muslim?

Shri A.S.: Well, I am not it any case trying to minimise or to sort of not see the gigantic nature of the effort that you are saying, there is no doubt. But I think Congressman can do that

and overcome that all we need is a sense of proportion and a sense of determination.

Q: What is the situation of North east.

Shri A.S.: I think, that phase is over, as far as I can see. But you see the problems of North-East should not be looked at only through the eyes of one or two or three Ministers. The problems here are very peculiar, sensitive and therefore, the effort has to be, to be discerning, sympathetic and also to keep in mind over all interest of the North-East and the country together.

Q: How will you deal with insurgency?

Shri A.S.: So far as the question of insurgency is concern. I think this is a phenomena which has to be looked at both from the view of point of law & order dimension and in my opinion more than that from the point of view of the routes that create this problem.

The alienation that fuels the anger and reaction that hardnes it all these things have to be taken into account and only then we can deal with insurgency so far as the other question you raised this concern. I think no one would agree that large number of corner should remain on Indian soil.

Q: People say that you are trouble shooter. How do you react?

Shri A. S.: Well, I must thank you for this play on words especially the word trouble shooter. You see sometimes you have to be the trouble shooter for somebody else now I am the trouble-shooter myself. I am quite confident.

Q: .....Changing leadership of Congress?

Shri A. S.: Well, that is something which Congress worker will decide. I am no one to decide that.

Q: Why Congress man did not listen to your arguments?

Shri A.S.: Whether they want to listen to me, is entirely their concern. I can't force myself on anyone locusstand I can certainly tell you about Congress organisation which does not consist only of the Congress party. I would rather put it does not consist only of office bearers and active and primary members of the party.

The Congress party consist beyond that thousand and thousand of Congress workers who are no less committed to the cause that the Congress pleads, Congress serves and their number is, I think much more far much more than the number of active and primary members of the Congress party. I happened to be standing in their ranks at the moment number one. Number two, I still continued to be a member of the Congress party in Parliament.

Q: Do you agree that elections in India has lost their validity?

Shri A. S.: Well, I never contest view voice by any member of the media. But I would beg your parden to contest your opinion that elections in India have lost their validity. I think the democratic systems that we have with all its false is a very well functioning system and the people of this country who actually matter in the ultimate analysis have shown time

and again that inspite of all odds. They can come out with clear-cut decision on issues far reaching importance to the entire country yes, whatever there may be shortcoming. Whatever aberration might have accepted. They need to be taken care off and think Mr. Seshan has done quite a lot in that regard.

Q: It is presumed that you are accruing Shri Rao for debacle of congress? In Northern part of the country congress had minimised following.

Shri A.S.: I think the question that you have raised is very pertinent. I would not like to point an accusing fingure at anyone. But the fact remains that this North-South syndrome has sought to be built up by some people. And that is why I have made pointed reference to that in my resignation letter.

That is very dangerous syndrome to be allowed to continue and this fill ultimately marginalised the Congress party also. Because the Congress party can't but think in all India context. Because It has always functioned in that matter. The second part of your question regarding the Congress situation in the Northern part of the Country. I think I have to admit all that required to be done to strengthen the Congress party in the North, unfortunately was not done. Now it is all more necessary that it is done and that is my emphasis.

Q: Do you force mid-term election?

Shri A.S.: I see there is no necessity for any mid-term election and that time we have when the next election are due next year in May should be used by the organisation to strengthen itself to consolidate itself and I have said in my opening remarks to remove the misgivings that have developed in the minds of certain sections of the people.

Q: What is your suggestions to the congress government?

Shri A.S.: You see, whether is the Saikia Government or any other Government, which is a Congress Government, we must be very clear in our minds that all Governments formed by the Congress party have to keep a few things very much in their minds one, that the administration that the head is seen to be transparently honest and fair to all sections of the people in the State and the instruments of State are not misused for purely political aims. Number three, probity has to be kept in mind in all actions are undertaken because it is essential by itself. Now there is special what I may call the people perception is sharpened on this matter that any effort to indulge in the activity, which they don't consider to be proper or they are not correct will have a bagess for the party and ultimately the party will suffer. We can't have a situation where certain people whatever be their position in the State where can take shelter behind the Congress party at the cost of Congress party.

Q: Can I have one or two question, one, there is the perception in the North-East that even the centre has begin to loose the distinction between the minority and the foreigner and

enable to see the foreigner as such why it is so? Second question, is related to double standards in your first letter to the Prime Minister after the debacle of the Congress in two certain States. You had raised drawing attention to two lapses one relating to the security scam and the other relating to allegations regarding the security aspect of Late Raji Gandhi but why you did not also ask for two other important issues one Bofors and the two, sugar scam.

Shri A.S.: So far as your first question is concerned. I have tried to answer it. Since it is very-very sensitive and delicate matter and this is also true that I am not as fully brief on it as you being here are only over riding thing. That I would like to state in this regard is that no lines of distinction should be blurred. But the whole exercise must be made and such a manner. As I said, which takes care of the basic question. But does not create of does not see and there is no fall out for people who are not directly involved and that is an exercise which has been done by Govt. here. The people on the spot and that exercise should go on, So far as the second is concern about the security scam having being mentioned and Bofors and Sugar not having being mentioned. So far as the Boros question is concern I think everyone is now aware that the process that certain motion in this matter are reaching a stage where some conclusion will come.

I did not see necessity for saying anything on that account. Because by and large consensus in the country that process must be concluded and who ever is found guilty. He should be prosecuted against according to the laws of the land. There is no dispute and there is no controversy on this account. Let that be done and let those who are found guilty be taken to account according to law of the land. I have made one mention and that I would like to say. You see, there are some people who are not prepared to wait for the final results who would very much like straight away to condemn or try to pin the blame on Shri Rajiv Gandhi and his family.

There I have certain differences of opinion unless you have proof, you can't accuse anyone. When you have proof then you see what you can do. Now that is where I say that there is no proof at the moment nothing has come forward which links in any manner Shri Rajiv Gandhi or the members of the family.

So far as the Sugar Scam is concerned, a judicial inquiry has been asked for by the person who was sort to be blamed for the entire thing, that is Shri Kalpanath ji. I think that judicial inquiry should take place. It will clearly show who ever is responsible and then he should be delt with.

राजनीति में मतभेद तो होते ही हैं

28 मई 1995 उर्दू राष्ट्रीय सहारा के दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

प्रश्नकर्ता : जनाब अर्जुन सिंह साहब, अभी कॉंग्रेस इस समय जो है और इसके बाद खबर आई कि आपकी पार्टी में भी कुछ लोग बगावत पर आमादा है। अकबर अहमद साहब, के.के. तिवारी जी, तो इस

सिल-सिले में आपका क्या कहना है। वो कि आपके फौरन बाद बगावत शुरू हुई हैं। इस सिलसिले में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कोई बगावत का सवाल नहीं है और न इस लहजे से किसी ने कोई बात की है। हो सकता है, किसी मामले में कोई किसी को कुछ कहना हो या कोई ऐसी बात हो, तो उसका इजहार कुछ लोगों ने दूसरे तरीके से कर दिया, लेकिन कोई बगावत इसलिए भी नहीं है, क्योंकि ये 19 तारीख का जो कंवेंशन था, वो वर्कर्स का कंवेंशन था कार्यकर्ताओं का और उन्होंने जो फैसले लिए हैं, उन फैसलों पर अमल करने का सवाल है।

यह पहली बार काँग्रेस के इतिहास में आम कार्यकर्त्ता ने एक इकट्ठे हो कर एक Conference करके, एक Convention करके, विचार-विमर्श करके एक राजनीतिक और एक आर्थिक प्रस्ताव को स्वीकार करके एक पार्टी को किसी रास्ते पर चलाने का फैसला किया और हम में से प्रत्येक इस बात से पूरी तरह से वाकिफ है कि उनकी मंशा क्या है? वो क्या चाहते हैं? अब अगर किसी बात पर थोड़ा बहुत मतभेद भी होता है। पार्टी में तो कभी सब की राय में इत्तफ़ाक होगा या कभी मतभेद होगा। इसको उस सीमा तक कोई नहीं ले जाएगा, जिससे कि वो उन की जो मंशा है कार्यकर्ताओं की, उस मंशा को कहीं धक्का लगे। यह मेरा मतलब है कहने का।

प्रश्कर्ता : नहीं, पार्टी जो तफसीस होती है तो उस की बुनियाद में ही मतभेद होते हैं और आपकी जो नई पार्टी बनी है, उसमें मतभेद भी वैसे हैं, जैसा आपने बताया था।

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, मतभेद क्या था? मतभेद व्यक्तिगत तो था नहीं, किसी से और तफसीस भी क्या हुई, हमने तो पार्टी को एक स्वरूप दिया है। काँग्रेस से तो पार्टी अलग हुई नहीं। आपने पूरा देख लिया। केवल उन्हीं चीजों को दोहराने से तो कोई मतलब नहीं। पूरा जो अभी पिछले चार महीने में हुआ, वह तो यही हुआ न कि पार्टी को स्पिल्ट नहीं कर रहे हैं, पार्टी को एक नई इमेज दे रहे हैं। क्योंकि पिछले तीन सालों में उन ऊसूलों से, उन कार्यक्रमों से पार्टी दूर हुई है और कुछ ऐसे जो सिद्धांत हैं, जिन पर काँग्रेस पार्टी हर दम उनसे जुड़ी रही, उन सिद्धांतों के बारे में लोगों के मन में शंका पैदा हुई कि अब काँग्रेस इनसे जुड़ी है कि नहीं।

इस तरह से जो बातें हुई। उनसे जो काँग्रेस से किनारे होती जा रही थी, उस चीज को रोककर सही दिशा में फिर काँग्रेस को ले चलने के लिए कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ। यह बगावत नहीं था और इसलिए मैं कह रहा हूँ कि पहले ऐसा कभी नहीं हुआ, क्योंकि इस तरह की स्थिति नहीं बनी। काँग्रेस के जितने भी नेता थे, उन्होंने कोशिश हमेशा सही रास्ते पर चलने की है। गलतियाँ हो सकती हैं। सब से होती है और गलतियों का भी असर होता है अवाम पर और उस अवाम का रिएक्शन होता है।

जैसे इमरजेंसी के समय कुछ गलतियाँ हुईं, जो कि इमरजेंसी के कार्यक्रम में नहीं थी और न श्रीमती इंदिरा गाँधी के कहने से हुई। लेकिन उनके ही कैबिनेट के लोगों ने ऐसी कुछ बातें की, जिसका असर हुआ और अवाम ने पार्टी को भी हरा दिया। श्रीमती इंदिरा गाँधी को भी हरा दिया। लेकिन श्रीमती इंदिरा गाँधी उसके बाद चुपचाप घर तो नहीं बैठ गई। उन्होंने लोगों से सम्पर्क कर के जो गलतफहमियाँ थी, उनको दूर करने की कोशिश की और नतीजा यह हुआ कि तीन साल बाद अवाम ने फिर उनको जिम्मेदारी दी, देश चलाने की।

आज तो स्थिति यह हो गई कि गलतियाँ भी हों, उसका असर भी हो, हम चुनाव भी हारें और जब कोशिश

की जाए शायद उसको सुधारने की तरफ बढ़ना चाहिए, स्वीकार करना चाहिए, कुछ कदम उठाना चाहिए तो बजाए उस पर ठण्डे दिल से विचार-विमर्श करने के चर्चा नहीं होती, कुछ नहीं होती और एक इसको सस्पेण्ड करों, उसको एक्सपेल करो। इस से क्या हुआ? काँग्रेस के कार्यकर्त्ता के मन में यह हुआ कि जो लोग इस रवैये को अख्तयार कर रहे है, वो पार्टी का हित नहीं देख रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : अच्छा एक प्रश्न और है इस सिलसिलें में, क्योंकि हमारा अखबार मायनार्टीज में बहुत ज्यादा पहुँचता है। उनके तक, वो यह है कि आपका जहाँ मायनार्टीज आपका सम्मान करती है, वहाँ मुलायम सिंह का भी सम्मान करती है, लेकिन जब मुलायम सिंह सरकार का विरोध हुआ तिवारी जी ने और आपने, दोनों तरफ से हुआ, इस पर उनके मन में कुछ आशंकाएँ आई कि आखिर टकराव इस तरह का होगा तो उसमें वोट बँट जाएगा मुलायम सिंह की तरफ, कुछ आप की तरफ?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, वोट का क्या होगा? देखिए वह तो वोटर ही बताएंगे। उसके बारे में कल्पना करना मेरे मत में एक तरह से वोटरों का अपमान होता है। आप अपना करिए जो आप को करना है। वो क्या करना चाहते हैं, उनको स्वयं अपना सब जायजा ले कर करेंगे।

मुलायम सिंह के बारे में जो बात सामने आई, वो कोई मायनार्टी के इशु को लेकर नहीं आई सियासत में कुछ बातें कहना और उसका असर होना अपनी जगह है, लेकिन जब किसी के हाथ में जिम्मेदारी आ जाती है स्टेट की, तो एडमिनिस्ट्रेशन में क्या हो रहा है, वह भी एक महत्वपूर्ण विषय होता है। उसके कार्यकलापों के, उसके जायजा लेने के उसके बारे में होता है। उस विषय पर उत्तर प्रदेश में जो हालत है। मैं उन सब घटनाओं का नाम लेते हुए जाना नहीं चाहता। आप भी अच्छी तरह से जानते हैं। ला एण्ड आर्डर का सवाल है। लोगों के साथ जो ज्यादती हुई, उनके बारे में है। इन सब से यह धारणा बनी है कि जैसे वहाँ का जो प्रशासन है, वो पूरी तरह से अक्षम है। वहाँ के आम नागरिक की रक्षा करने के लिए। इन चीजों से जो संदेह उठे हैं, उसकी वहज से हमने किया। कोई वो मायनार्टीज के लिए कुछ कर रहे हैं और हम उसका विरोध कर रहे हैं, यह सवाल ही नहीं उठता।

प्रश्नकर्ता : अच्छा एक और इस सिलसिले में कि चुनाव बिलकुल सिर पर हैं ही। कभी भी हो सकते है। तो नेशनल फ्रँण्ट और लेफ्ट फ्रॅण्ट और बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी तो इनमें किसी के साथ आपका क्या कोई समझौता है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, अभी इस विषय पर कोई विचार-विमर्श नहीं हुआ है। क्योंकि जैसा मैंने कहा हम लोगों का मुख्य उद्देश्य तो काँग्रेस को मजबूत करना है, जो हमारी कमजोरियाँ आई हैं। हम अपनी पार्टी को मजबूत करें, फिर ये बातें जो उठेंगी तो देखेंगे।

प्रश्नकर्ता : अच्छा, फिर इलेक्शन में आप कौन-सा मुख्य मुद्दा लेकर लोगों तक जाएँगे? सेकुलरिज्म का, गरीबी का?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आप मेहरबानी कर के जो हमारा पोलीटिकल डाकूमेण्ट है, उसका मैं ने उर्दू में भी तजुर्मा कर लिया है, मैं आपको वह भेज देता हूँ और उसी में पूरा हमारा जो एक प्रकार से मेनीफेस्टो होगा, वो उस में लिखा हुआ है। लेकिन उदाहरण के लिए मैं दो-तीन चीजें जरूर कह देना चाहता हूँ।

पहला तो है, हिन्दुस्तान में आज आम नागरिक की हालत क्या है? इसकी सुरक्षा, जान माल की रक्षा। आखिर संविधान हमारा नागरिक को ही केन्द्रित करके ही तो बना है। फण्डामेण्टल राइट्स् जो हैं, वो उसी पर आधारित हैं। आज वो राइट्स किस हद तक उसको मिलते हैं? ऐसे कानून बन गए हैं, जिन कानूनों का दुरूपयोग हो रहा है। फिर गवर्नमेंट एडमिनिस्ट्रेशन जो है, जिसकी जिम्मेदारी है कि वो सिटीजन की रक्षा करे, उसके अधिकारों की रक्षा करे। कई दफा दिखता है कि वही उनके अधिकारों पर आक्रमण करते हैं।

दूसरी बात है सेकुलरिज्म के बारे में। जितनी भी मायनार्टीज हैं मुस्लिम ही नहीं, जितनी भी मायनार्टीज हैं, देश में, उनकी कुछ स्पेशल प्राब्लम्स कुछ शुरू से थीं, कुछ बीच में हुई। कुछ नई एराइज होती हैं। यह तो बदलता हुआ परिवेश है। कोई चीज आज जो है, वह आज से दो साल बाद तो नहीं रहेगी। इस समय हमें सभी मायनार्टीज से बड़े खुले दिल से और बेबाक इन मुद्दों पर, जो जिस पर से उनके दिमाग में है, हमें चर्चा करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अच्छा, इस सिलसिले में एक तो चरारे शरीफ को जलाए जाने और काश्मीर पर शेषन साहब ने भी कहा है। इस बारे में आप क्या सोचते हैं? वहाँ चरारे शरीफ की घटना ....?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बात यह है कि यह दुःख की बात है कि सरकार के पास कश्मीर के पूरे मसले पर कोई सोची-समझी नीति है ही नहीं। मैंने पार्लियामेंट में भी यह बात कही थी कि पिछले चार सालों में एक दफे भी कैबीनेट में कश्मीर की पालिसी क्या है? इस पर बात नहीं हुई। अब इससे बढ़ कर और क्या चीज हो सकती है? इस पृष्ठभूमि में आज के हालातों में वहाँ क्या होना चाहिए? यह तो हमें सोचना होगा। तो अभी पिछली वर्किंग कमेटी हमारी जो हुई, उसमें यह बात हुई थी कि मैं कुछ और साथियों के साथ जम्मू काश्मीर जाऊँ और अगले 6 जून को तीन दिन के लिए हम लोग जा रहे हैं। चरारे शरीफ भी जाएँगे और भी लोगों से वहाँ बातचीत करेंगे और सब बातों का जायजा लेकर हम लोग कुछ कह सकते हैं। अभी मैं ऊपर ही ऊपर कुछ कह दूँ यह उचित नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : अच्छा साहब, बहुत-बहुत शुक्रिया। हमारे रीडर्स के लिए, जो रीडर्स हैं उन्हें आप संदेश देना चाहें वो और दे दीजिए।

श्री अर्जुनसिंह: मेरा संदेश तो और क्या हो सकता है। संदेश एक ही है कि देश के सामने जो इस समय चुनौतियाँ हैं, उन चुनौतियाँ का किसी एक पोलीटिकल पार्टी के द्वारा उनका मुकाबला नहीं हो सकता, जब तक कि अवाम उन चुनौतियों को न समझे और उन चुनौतियों का मुकाबला करने की अपने मन की इच्छा को न बना सके। हम लोगों का काम इतना ही कि हम उन बातों को रखें। उनको समझाने की कोशिश करें और अवाम जो सही समझे, उनको उस का समर्थन करना चाहिए।

मैं समझता हूँ कि आने वाला जो चुनाव है, वो एक निर्णायक चुनाव होगा भारतवर्ष के राजनीतिक भविष्य के संदर्भ में और मुझे भरोसा है भारत के अवाम पर कि वह सही फैसला करेगा।

प्रश्नकर्ता : अभी नेशनल लेवल पर आपका पार्टी सेल नहीं है या यह कहा जाय कि बहुत मजबूत नहीं है। तो ऐसी सूरत में आप कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि यह सवाल आप मुझसे जुलाई के अंत में पूछें।

बाबरी ढाँचा बनाम राम मंदिर

20 जून 1995 जी.टी.वी. के श्री मनोज रघुवंशी को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

प्रश्न : सबसे पहले तो आप ये बताइए कि आप जब भी कोई इंटरव्यू देते हैं किसी पत्रकार को तो अपना टेपरिकार्डर भी आन कर देते हैं? क्या आपको लोगों पर भरोसा नहीं है या धोखा खा चुके हैं और डरते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: भरोसा भी है और अभी तक धोखा नहीं खाया लेकिन अपना रिकार्ड रखने के लिए जरूरी है।

प्रश्न : अखबार में छपा था कि शायद किसी ने आपका स्टेटमेंट Distort करके लिखा था उसकी वजह से फिर आप?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो होता रहता है अब उसके लिए शिकवा-शिकायत से क्या फायदा। मैं सामान्य रूप से अपने स्टेटमेंट को Contradict नहीं करता हूँ जब तक की बहुत कोई ऐसी बात न हो, तो मैं अपने रिकार्ड के लिए रखता हूँ।

प्रश्न : हर एक आदमी के अंदर एक बच्चा होता है। जाहिर है आपके अंदर भी होगा और यह बच्चा कभी-कभी ऐसा करना चाहता है जिसको कि आप रोकते होंगे as Arjun Singh आप रोकते होंगे तो ऐसा क्या है जो यह बच्चा करना चाहता है और आप उसे रोकते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो हम लोगों ने बहुत पहले पढ़ा था कि child is the father of man. कोई नई बात तो नहीं है और बचपने की बात तो रोकने की उतनी नहीं है जितनी की भावना की। आप उसे रोके या ना रोके लेकिन किसी न किसी समय ऐसा अहसास होता है कि सब चीजें सबकी सुन ली, लिहाज हो गया, सबकी बात अपनी जगह हो गई लेकिन बाल हठ का भी कहीं स्थान है, वह हैं कभी कभी होता है।

प्रश्न : तो आपके अंदर का बालक हठी है?

श्री अर्जुनसिंह: हठी है।

प्रश्न : तो क्या हठ करता है? अर्जुन सिंह होने के नाते शायद आप न करें।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी बात भी नहीं है जो बचपन से कुछ चीजें हो जाती हैं, वह काफी सँभालने की कोशिश होती हैं, लेकिन हठ वाली बात जो मैंने आपको कही, मैं देखता हूँ कि मैं बहुत हद तक दूसरों के साथ अपने को अकोमडेट करता हूँ। लेकिन एक सीमा होती है, जहाँ लाइन खींच जाती है।

प्रश्न: और वह लाईन खींचने वाला आपके अंदर का बच्चा है, जो हठी है?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ।

प्रश्न : आपके आलोचकों का यह मानना हैं कि आप प्रो-मुस्लिम हैं और जो आप बात कहते है वह उससे हिन्दुओं को ठेस पहुँचती है मुसलमानों को वह बात अच्छी लगती है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसा वहीं लोग कहते हैं जो कि अपनी मानसिकता में इतने बँटे हुए हैं कि वह भारतीय की कल्पना न करके हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई की कल्पना कर पाते है। मैं मूलतः भारतीय हूँ। उसके बाद हिन्दू फिर मुसलमानों की बात है फिर और बात है। अब यह कोई नहीं समझे तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ।

प्रश्न : जिंदगी में आपने इतना कुछ पाया हैं, लेकिन मन में कोई ऐसा डिज़ाइर होगा अब भी जो आप हासिल करना चाहते हों ऐसा क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: वैसे तो यह बात आपकी एक तरह से सभी के लिए लागू होती है और मैं उससे परे हूँ। ऐसी भी नहीं हैं लेकिन ऐसे कई अवसर मेरे जीवन में आए जब ऐसा आभास हुआ कि शयाद इन क्षणों के बाद अब कोई बात आगे नहीं होगी। एक तो अभी बहुत हाल का है 1990 में जब मेरे हृदय की शल्य क्रिया हुई तो मैं एक लेख लिख रहा था, हास्पिटल में वहाँ आपरेशन चेंबर में जाने के पहले उन्होंने मुझे सुबह इंजेक्शन दे दिया था। जिससे धीरे-धीरे मेमोरी भी और हाथ भी धीमें पड़ते जा रहे थे तो बहुत सी चीजें जो मैंने लिखी वह छपी भी बाद में आपने पढ़ी भी होगी। लेकिन आखरी लाइन में मैंने यही लिखा कि मैं इस प्रक्रिया से बाहर अगर नहीं निकला जिसकी कि संभावना आपरेशन के वक्त रहती है, मुझे किसी प्रकार का मन में कोई असंतोष नहीं है जो कुछ भी मैं कर सका जिन परिस्थितियों में मैं उन्हें अपने लिए पर्याप्त मानता हूँ। लेकिन ईश्वर की अगर ऐसी कृपा होगी और उसके बाहर में निकलूँगा, स्पष्ट हैं कि उसकी कृपा से निकलूँगा तो वह जैसा चाहेगा वैसा होगा। इस लिए यह है जरा कहने की बात लेकिन उस तरह की भावना मेरे मन में नहीं है कि मुझे हर हालत में ऐसी चीज़ होनी चाहिए।

प्रश्न : लेकिन हो तो अच्छा लगे ऐसा क्या डिजाइर है जो बाकी है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, अब तो सबसे बड़ी बात जो लगती है, वह यह है कि अब कहीं पर जो शोर-शराबे से दूर हो, लिखने-पढ़ने की इच्छा लगती है लेकिन इतनी मामूली सी बात जो और लोग आसानी से कर सकते हैं हम लोगों के लिए बहुत दूभर है।

प्रश्न : आप तो फिर भी काफी पढ़ते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: पढ़ते हैं लेकिन चलते-फिरते पढ़ते हैं, हवाई जहाज में पढ़ते हैं, ट्रेन में पढ़ते हैं, घर में बैठकर पढ़ नहीं सकते, बहुत ही कम, बीमार पड़ जाए तो बात अलग है, वह भी पढ़ने नहीं दिया जाता।

प्रश्न : आपकी फेवरिट बुक कौन सी है?

श्री अर्जुनसिंह: वैसे एक किताब को तो मैं नहीं कह सकता लेकिन मेरी एक किताब फेवरिट है। मैं बायोग्राफीक्स बहुत पढ़ता था और जो याददास्त में सबसे पहली बायोग्राफिक्स थीं जिसने मुझे एकाएक इफेक्ट किया वह नेपोलियन की बायोग्राफिज थी। क्योंकि नेपोलियन एक ऐतिहासिक फीगर है ही। लेकिन उस व्यक्तित्व के पीछे जो चीजें थी। ऐसे उस स्टेज तक पहुँचने की बात आई और बाद में जो कुछ परिस्थितियाँ निर्मित हुई वह एक बहुत मार्मिक चित्रण है, किसी ऐसे व्यक्तित्व का।

प्रश्न : क्या आप नेपोलियन जैसे बनना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: कतई नहीं, नेपोलियन जैसे बनने की बात का सवाल नहीं है, लेकिन नेपोलियन के जीवन के ऐसे बहुत से पहलू हैं, जिनके बारे में बहुत अजीब और गरीब तरीके से मालूम हुआ।

प्रश्न : जैसे?

श्री अर्जुनसिंह: यह एक बात 1959 की है। काठमाँडू में पंडित जवाहरलाल नेहरू आपनी पहली नेपाल यात्रा में गए हुए थे। मैं भी भोपाल के एक समाचार पत्र के correspondant की हैसियत से वहाँ गया हुआ था तो जो अपने भारतीय राजदूत थे, पंडित जी के ऑनर में उन्होंने वहाँ पार्टी की, वहाँ सब लोग

आए तो उनकी वाइफ ने, वे भोपाल में एक कमिश्नर भी रहे, स्वाभाविक है उन्होंने बहुत सी चीजें बनाकर टेबल पर रखी तो घूमते घामते मैं ऐसा हो गया कि पंडित जी जिस कुर्सी पर बैठे थे उसके करीब-करीब एकदम पीछे पहुँच गया, उन्होंने जब नेपाल नरेश से कहा कि मुझे नेपोलियन की एक बात बहुत अच्छी लगती थी, वही नेपाल के किंग ने कहा कि In Nepolian what could you like in him?..... कहाँ नेपोलियन, कहाँ उनका ये That is kind of personality he was even in this very-very जो simple चीज़ है वह पंडित जी ने उनके लाइफ से 'कोट' करके अपने present context में उसको लगा दिया तो फिर उसके बाद की किताबोंने मुझे प्रभावित किया। दूसरी किताब जिसने मुझे प्रभावित किया वह थी "Profiles Encourage" वह थोड़ा बहुत कुछ मेरी समझ में जो राजनीति में है, जो जीवन में किसी न किसी स्टेज पर आदमी को स्टेप करना पड़ता है, अपनी भावनाओं के लिए अपने विचारों के लिए उसमें उन्होंने करीब 8-10 पात्रों को चुना था अमरीकन हिस्ट्री से और उनका प्रोफाइल दिया था, बाकी साइंस नावेल भी पढ़ता हूँ।

प्रश्न : आपको शिकार का बहुत शौक़ था कोई ऐसा क़िस्सा सुनाएँ कि आपने मौत को बहुत नज़दीक से देखा हो शिकार के वक्त?

श्री अर्जुनसिंह: शिकार के जमाने तो लद गए, अब कहाँ शिकार होता है, अब तो हम सभी लोग शिकार हो रहे हैं आपके।

प्रश्न : लेकिन जब आप शिकार करते थे, तब का कोई हिस्सा?

श्री अर्जुनसिंह: देखा जाए तो शिकार मानव जाति का सबसे पहला कार्यक्रम था जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से हिस्सा लिया जाता था आदिकाल से, ऐसा नहीं है कि अभी की बात है उस वक्त तो जीवन ही उस पर निर्भर करता था बाद में तो इसके स्वरुप अलग हुए। लेकिन वह खतरा या जोखिम जो शिकार करने वाले को उठाना पड़ता है। मैं समझता हूँ कि आधार बदला नहीं शुरू से लेकर अब तक क्योंकि जब आप शिकार करने जाते हैं तो शायद जो आधुनिक रूप से शिकार करता है उसके लिए खतरे बहुत कम हो गए हैं, सैकड़ों फीट की दूरी से वह शिकार कर सकता है। पहले तो एकदम हाथा पाई हुआ करती थी लेकिन कभी कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं जब सब चीजों के बावजूद परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं जब क्षणों का फर्क़ होता है, इस पार या उस पार।

प्रश्न : ऐसा आपके साथ हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ मेरे साथ तो दो दफे हुआ, एक दफे तो एक घायल शेर के हमले के वक्त मैं ज़मीन पर ही बैठा था। मैं था हमारे भाई साहब थे, हमारे दोस्त थे, हम लोग कोई उसमें नहीं बैठे थे, उस लाइन में जो शिकार करने वालों में थे, उसमें तो कुछ और लोग मंत्री वगैरह थे, हम लोग क़रीब-क़रीब उसके बाहर बैठे थे, लेकिन उन्होंने शेर को घायल कर दिया तो जब शेर घायल हो जाता है तो फिर तो वह कहाँ जाता है, उसको भी नहीं मालूम और रास्ते में फिर कौन पड़ता है फिर तो सवाल ही नहीं उठता, बजाय सीधे जाने के वह पहाड़ी चढ़कर और नाले से ऊपर आकर हम लोगों के सामने पहुँच गया और जैसे ही हम लोगों को देखा तो फिर 60 गज़ की दूरी से, 60 गज़ से ही कम रहा होगा, मैं तो बीच में बैठा था, मेरी दाहिनी तरफ़ मेरे भाई बैठे थे तो उन्होंने खड़े होकर उसको चार्ज किया और गोली चलाई। लेकिन वह मिस कर गई। पीछे उनकी कोई लकड़ी रखी थी, उनका पैर उसमें

फँस गया और वह गिर गए। तब तक 60 गज़ तो कुछ होता नहीं है शेर के लिए, वह तो पलक की बात थीं तो सामने हम लोगों के पत्थर था, उसी की आड़ में बैठे थे, उस पत्थर की उस तरफ़ से हमारी ओर उसने आखरी छलाँग मारी तो उसके आगे के दोनों पंजे ऊपर और पीछे के पंजे ज़मीन पर तो इसको रिफ्लेक्श कहिए या जो कुछ कहिए आदमी डरकर स्तब्ध भी हो सकता था, कुछ भी न कर सकते थे, लेकिन वह नहीं हुआ। हमने गोली चलाई उसको लगी, गिरा लेकिन उसके पूरे पंजे बगैरह उसी पत्थर पर आकर गिरे और वह जब वह गिर गया तो भाई साहब भी खड़े हो गए, मैं भी खड़ा हो गया, लेकिन अब ये चीजें पलक झपकते हो जाती है और जिदगी भर की स्मृति छोड़ जाती है। स्मृतियाँ ही स्मृतियाँ है, अच्छा है शिकार बंद है, मैं इसके बहुत पक्ष में हूँ।

प्रश्न : जो लोग राजनीति में होते हैं, उनकी जिंदगी में काफ़ी उतार-चढ़ाव आते हैं आपने बहुत देखे हैं, जब आप पावर में होते हैं तो लोग आपके पास आते हैं और आपके बहुत सगे हो जाते हैं आप, आप पावर में नहीं है तो आप क्या चेन्ज देख रहे हैं लोगों में?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो बड़ी क्लासिक चीज़ है इसमें नई चीज तो कुछ नहीं है, इससे प्रभावित नहीं होना चाहिए।

प्रश्न : लेकिन आपको कैसा लगता है ह्यूमन नेचर में कि एकदंम से फ़र्क़ हो जाता है?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, लेकिन उसकी वजह से किसकी किसी के बारे में कोई स्थाई मूल्याँकन करना मैं उचित नहीं मानता हूँ और भी कई बातें होती हैं, जिसकी वजह से वह खासतौर से आजकल तो और भी हैं किसी वजह से कोई दबा है, कोई किसी वजह से परेशान है, इस तरह से बातों का भी असर होता है तो किसी के बारे में कोई धारणा नहीं बननी चाहिए।

प्रश्न : लेकिन आप इस स्थिति की किस गाने में बयान करना चाहें तो किसी गाने में बयान करना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस स्थिति का गाना तो मैंने अभी तक सुना नहीं।

प्रश्न : स्टूडेंट एज में आपकी सबसे फेवरिट फ़िल्म कौन सी थी?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो सबसे फेवरिट फ़िल्म बहुत से लोगों की थी, मेरी भी थी "महल" दूसरी फ़िल्म थी "देवदास" ये तो बहुत पुरानी फ़िल्म हैं जिनका नाम भी लोगों को मालूम नहीं होगा।

प्रश्न : आपको दोंनों फ़िल्मों में से कौन सा गाना अच्छा लगा?

श्री अर्जुनसिंह: देवदास का कोई खास गाना तो मुझे याद नहीं है, सहगल के गाने थे, महल का तो फैमस गाना है ही, "आएगा आने वाला" फिर कई फ़िल्में है जैसे, बरसात।

प्रश्न : बरसात का कौन सा गाना है जो सबसे अच्छा लगा आपको?

श्री अर्जुनसिंह: "हवा में उड़ता जाए, मेरा लाल दुपट्टा मलमल का"।

प्रश्न : उन दिनों तो यह बहुत फैमस हुआ था?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ, आज के संदर्भ में तो कुछ नहीं है।

प्रश्न : आजकल की फ़िल्मों में कौन सी फ़िल्म पसंद है आपको?

श्री अर्जुनसिंह: मैं क्या बताऊँ, मैं तो फ़िल्म देख नही पाता हूँ सिनेमा हाल में गए मुझे क़रीब तीस साल से ज़्यादा हो गए। बच्चे वीडियो कैसेट लाते हैं वह भी कभी आधा अधूरा देख लेते हैं कोई फ़िल्म मैंने बैठकर पूरी 2-3 देखीं हो तो देखी।

प्रश्न : कौन-सी फ़िल्म है जिसने आपको इम्प्रेस किया हो?

श्री अर्जुनसिंह: अभी एक लेटेस्ट इंग्लिश की फ़िल्म आई थी। जो बाद में थोड़े दिन के लिए बेन हो गई थी। मैं बाहर गया था वहाँ से लाया था इसको लेकिन वह काफ़ी एक तरह से फैमस फ़िल्म थी।

प्रश्न : और हिंदी?

श्री अर्जुनसिंह: एक वो आई थी "रोजा" वह आधे से ज्यादा थोड़ी सी देखी थी।

प्रश्न : वह कैसी लगी?

श्री अर्जुनसिंह: वह अच्छी लगी और एक स्पेशल शो यहाँ हुआ था बाम्बे का। मैं जा ही नहीं पाया और अभी तक उसके वीडियो टेप भी मिले नहीं, वह जरूर देखना चाहता था क्योंकि उसके बारे में काफ़ी सोचा लेकिन देख नहीं पाया।

प्रश्न : रोज़ा का गाना कोई?

श्री अर्जुनसिंह: गाना तो मुझे याद नहीं नहीं।

प्रश्न : पूरी थीम?

श्री अर्जुनसिंह: काफ़ी रोचक और प्रभावी थी।

प्रश्न : लेकिन गाने अच्छे लगे आपको?

श्री अर्जुनसिंह: गाने अच्छे थे उसकी ट्यून अच्छी थी, लेकिन मेमोरी में कोई गाना नहीं जो मैं आपको बता दूँ।

प्रश्न : बचपन से लेकर अब तक आपकी सबसे फेवरेट ऐक्ट्रेस कौन सी रही?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, सबसे फेवरेट ऐक्ट्रेस कोई सी नहीं हो सकती, जो ऐसा कहता है शायद वह सही बात नहीं हो, कुछ एक्ट्रेसेस फेवरेट एक्ट्रेसेस हो सकती है।

प्रश्न : आपकी कौन-कौन सी फेवरेट एक्ट्रेसेस थी।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, शुरू-शुरु मैं तो मैं उस समय की बात कर रहा हूँ जब 40 में सबसे जो ओरिजनलटाइप आफ एक्टिंग वह थी काननवाला की थी और अक्सर सहगल के साथ उनकी एक्टिंग हुआ करती थी। फिर उसके बाद नया दौर शुरू हुआ उसमें सुरैया और मधुबाला, नरगिस।

प्रश्न : और सबसे फेवरेट एक्टर?

श्री अर्जुनसिंह: सबसे फेवरेट एक्टर तो मुझे सहगल की एक्टिंग लगी। शायद जो गाने के साथ उनका ओरिजनल परफार्मेंस रहता था वह ज़्यादा प्रभावी हो।

प्रश्न : कौन सी फ़िल्म में?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो देवदास में उनकी भूमिका बहुत अच्छी थी। बाद में दिलीप कुमार ने भी अच्छी भूमिका निभाई। लेकिन सहगल की भूमिका अलग थी और बाद में जो उस समय के हिसाब से नए राजकपूर, दिलीप कुमार, देवानंद ये थे जो आदमी को इम्प्रेस करते थे बाद में सुनील दत्त का भी। मैं मानता हूँ कि उनसे व्यक्तिगत जान पहचान का असर ज्यादा है।

प्रश्न : अच्छा इनमें कौन से ऐसे एक्टर थे जिनको की आपने स्टूडेंट एज में कापी करने की कोशिश की हो?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी कोशिश तो मैंने नहीं की। ये राजकपूर की शादी रीवा में हुई, उनके फादर इन ला उस वक्त रीवा के आई.जी. थे और उनके दो लड़के मेरे साथ रीवा मे पढ़ते थे। एक प्रेमनाथ और दूसरे राजेंद्र नाथ दोनों एक्टर हैं तो इनकी बारात वहाँ गई थी राजकपूर की, वह मुझे अच्छी तरह से याद है,

वर्ष 44-45 की बात है उस वक्त बाम्बे में लंबे-लंबे बाल रखना शुरू हो गया था। रीवा छोटी सी जगह क्योंकि वे आई.जी के दामाद थे तो थोड़ी सबकी उत्सुकता तो थी वहाँ एक नदी बहुत अच्छी हैं सुबह-सुबह वहाँ वे नहाने के लिए गए। तीन दिन बारात रूकी थी तो वे बाल खोलकर जाएँ तो रास्ते में लोग कहें कि ये ये कैसी शादी की है आई.जी. साहब ने की लड़की से शादी कर दी (हँसी) क्योंकि वे लंबे-लंबे बाल खोलकर जाया करते थे, राजकपूर और यह प्रेमनाथ और राजेंद्र नाथ दोनों साथ ही पढ़ते थे इन लोगों की जरूर थोड़े बहुत हम लोग कापी करते थे, लेकिन किसी एक्टर के बारे में तो नहीं है। राजेंद्र नाथ तो अभी भी कभी कभी आते है। प्रेमनाथ जी का तो स्वर्गवास हो गया लेकिन राजेंद्र नाथ आता रहता है।

प्रश्न : अच्छा जो लेटेस्ट फ़िल्म है इसमें जो थोड़ा बहुत देखने को आपको मिलता है कभी टेलीविजन पर, वीडियो पर बच्चों, के साथ चलते इसमें लेटेस्ट हिरोज़ और हीरोइन मे कोई पसंद है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं किसी के बारे में कुछ कहना नहीं चाहता लेकिन एक माइंड पर इमेज की छाप पड़ती है जो देखने के बाद भी रहती है, वह दिखता नहीं जितनी देर तक आप फ़िल्म देख रहे हों इतनी देर तक तो आपको स्वाभाविक है कौन एक्टिंग कर रहा है, मालूम है लेकिन लास्ट में जो इम्प्रेशन छोड़ जाए, मैं किसी का अनादर नहीं कर रहा हूँ। मैं एक बात है वह आपसे कह रहा हूँ। आजकल जी.टी.वी. न जाने कितने प्रोग्राम देती है और उसमें भी कुछ फ़िल्म भी आती हैं, कुछ डाक्यूमेंटरी भी आती है, कुछ सीरियल्स है, अब जैसे बुनियाद सीरियल था, अब बुनियाद सीरियल में स्टोरी इतनी रोचक थी कि कौन-सा एक्टर क्या प्ले कर रहा है वह नहीं रजिस्टर होता था लेकिन स्टोरी रजिस्टर होती थी। कैसे जनरेशन आफ्टर जनरेशन घटनाओं का असर पड़ता जाता है पीढ़ियों पर इस तरह से कुछ चीज़ें हैं जौ जैसे आप कह रहे हैं वैसा तो मैं उल्लेख नहीं कर पाऊँगा।

प्रश्न : लेटेस्ट फ़िल्मों में एक्टर या एक्ट्रेस में आपको सबसे ज्यादा अच्छे कौन से लगते हैं? यूथ में सभी रोमांटिक होते हैं जाहिर है आप भी रहे होंगे तो उस समय जिस स्त्री के प्रति आपका बहुत रोमांटिक रूझान रहा हो?

श्री अर्जुनसिंह: मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि जिस ऐज में रोमांटिक रूझान होती है उसी ऐज में मेरी रोमांटिक रुझान उसी के प्रति हुई जो मेरी अंततः पत्नी बनी और मेरी शादी 18 वर्ष की उम्र में हो गई थी तो एक तरह से 47 वर्ष हो गए हैं और वर्ष 98 में, 50 वर्ष हो जाएँगे तो हम लोग साथ-साथ बड़े हुए।

प्रश्न : लेकिन शादी से पहले आपका रोमांटिक इन्वाल्वमेंट था उनसे?

श्री अर्जुनसिंह: रोमांटिक इन्वाल्वमेंट इस सेन्स में नहीं कि वह समय था जबकि आज की तरह के रोमांटिक इनवाल्वमेंट नहीं होते थे, लेकिन देखा, दृष्टि पंसदगी इस हद तक जरूर था और फिर उस समय के जो पारिवारिक एरेंज मेरिज हुआ करती थी और उसमें कोई गुंजाइश नहीं रहती थी अपनी बात कहने की, उन सबसे हटकर मेरी शादी हुई तो उसको आप उस समय के हिसाब से रोमांटिक इन्वाल्वमेंट मान सकते है। आज के जमाने के मापदंड से तो कोसों दूर थी।

प्रश्न : अब आपको किस तरह की स्त्रियाँ ज्यादा आकर्षक लगती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, अलग-अलग प्रकार के लोग होते है। एक तो सेल्फ कांफिडेंस जिनमें हो, किसी बात पर

तुरंत प्रभावित होकर कुछ बात करने लगना। हमारा सौभाग्य रहा कुछ ऐसे देश की महान महिलाओं के साथ काम करने का मौका मिला जैसे श्रीमती गाँधी थी वह महिला जरूर थी लेकिन उनके बहुत से गुण महिलाओं के सामान्य गुण से बहुत भिन्न थे। लेकिन मूलतः श्रीमती इंदिरा गाँधी में जो एक ममता की कोर होती है हर महिला में वह कूट-कूट कर भरी थी। इस तरह का जो सम्मिश्रण होता है दृढ़ता का, ममता का और वात्स्ल्य का सहानुभूति का, यही सब ऐसे गुण हैं, जो किसी महिला को एक आदर का स्थान किसी की निगाहों में दिलाते हैं।

प्रश्न : श्रीमती इंदिरा गाँधी के साथ आपका बहुत इन्टरेस्टिंग इनसिडेंट रहा हो?

श्री अर्जुनसिंह: वे वाइल्ड लाइफ बहुत पसंद करती थी। लेकिन उनको मौक़ा मिलता नहीं था, खासतौर से जब से वे प्रधानमंत्री बनी। वो कान्हा नेशनल पार्क जो है, मध्यप्रदेश का मैंने उनको वहाँ आमंत्रित किया दो दिन के लिए, लेकिन वे रही एक ही दिन। वो वहाँ हाथियों पर चढ़कर शेर देखने के लिए जाना पड़ता था।

प्रश्न : आप मुख्यमंत्री थे?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ, मैं मुख्यमंत्री था, वर्ष 82 की यह बात है। वे गई वहाँ और एक शेरनी और उसके दो बच्चे सामने आए, जिस हाथी पर इंदिरा जी थी, उनके पीछे मैं बैठा हुआ था, जैसे वह एकदम से सामने आई तो जैसा होता है उत्सुकता उन्होंने कहा कि अब मैं क्या करूँ। मैंने कहा आप उसे देखिए मैं तस्वीर ले रहा हूँ वह फ़ोटोग्राफ मैंने ली जिसमें आगे टाइगर्स और उसके दोनों कब्ज़ थे इंदिरा जी एक ही फ्रेम में थे।

प्रश्न : जो भी फ़िल्म आपने अभी तक देखी हैं उसमें ऐसा कौन सा केरेक्टर है जो कि आपकी रीयल लाइफ से बहुत मिलता जुलता हो?

श्री अर्जुनसिंह: मेरा इतना complex character नहीं है जो किसी फ़िल्म से मिलता जुलता हो। मेरी यादगार तो नहीं है।

प्रश्न : इसी बीच में आपसे लोगों ने कहा होगा कि आप खुद भी एक्टिंग करें तो कितना अच्छा हो?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं कहने की क्या बात है? मैं तो करीब-करीब एक्टिंग करने चला ही गया था। 1948 में प्रेमनाथ और इन लोगों के सानिध्य में मुझे भी फ़ितूर सवार हुआ कि मैं भी जाऊँ और मेरी शादी को क़रीब तीन महीन हुए थे, तो मैंने पिताजी से पूछा कि मैं जाना चाहता हूँ बंबई उस समय के सियाने लोग बड़े सयाने होते थे, उन्होंने सोचा कि मैं एकदम कह दूँगा कि नहीं जाना है तो यह होगा कि नहीं जाना है। उन्होंने कह दिया कि ठीक है। उस समय हमारे परिवार में ऐसा था कि आमने-सामने पिताजी जी से कोई बात करके और तर्क वितर्क करके कहने का कुछ प्रश्न ही नहीं उठता था, या तो माताजी के माध्यम से कोई प्रश्न होता था बहुत ही आवश्यक हो तो लिखकर छोटे भाई के माध्यम से या किसी के माध्यम से, उनकी तरफ से तो यह हो गया कि ठीक है सोचेंगे और उसके बाद उन्होंने इस बात की जानकारी हमारी वाइफ को भिजवा दी, मदर के थ्रू कि ये ऐसा चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मेरी ओर से एतराज नहीं है, अगर ठीक समझते हैं तो कोई एतराज नहीं है अर्थात् उन्होंने वीटो पावर Indirectly पूरी तरह से इस्तेमाल कर लिया और इस तरह से मैं नहीं जा पाया।

प्रश्न : नहीं तो आज आप एक्टर होते?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ

प्रश्न : लेकिन अब आपसे किसी ने कहा इस बीच में जब आपने रोल किया नरसिम्हाराव के खिलाफ कि अब आप एक्टर बन जाइए और फ़िल्म करिए?

श्री अर्जुनसिंह: अब तो रीइल लाइफ फ़िल्म चल रही है तो कौन एक्टिंग में पड़ेगा।

पुश्न : वैसे पोलिटिक्स में भी काफी एक्टिंग का रोल होता है?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, क्यों नहीं होता? जरूर होता है।

प्रश्न : पोलिटिक्स में क्या-क्या एक्टिंग करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: पोलिटिक्स में एक्टिंग उस सेंस में नहीं है कि आप एक दूसरे केरेक्टर को पोरट्रेट करें जो कि हकीकत में नहीं है क्योंकि एक्टर तो खुद वह केरेक्टर होता नहीं है जो स्क्रीन पर जिसके रोल को अदा करता है। उस हद तक तो एक्टिंग नहीं चलती है, लेकिन यह बात जरूर है कि हर स्थिति में जो इमोशनल पीच है, वो भी एक्टिंग का एक अंग है उसका तो असर होता है।

प्रश्न : तो हरेक पोलिटिशियन एक्टर भी होता है?

श्री अर्जुनसिंह: Actor in this sense भी, अच्छा जो बिल्कुल इमोशन से परे होते हैं इतिहास तो यही बताता है कि वे dubious बड़े लोग होते हैं।

प्रश्न : जिंदगी में सबसे बड़ा लेड डाउन क्या हुआ आज तक?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, लेड डाउन एक्सपेक्टेशन से जुड़ी होती हैं, अगर आपका एक्सपेक्टेशन सामान्य सीमाओं से परे हो तो उतना ही बड़ा लेड डाउन होता है। संघर्ष के दौरान बहुत चीज़े होती हैं जो आप चाहते हैं कि ऐसा हो जाए, उसकी परिणति इस रूप में हो, नहीं होती तो उसकी वजह से थोड़े समय के लिए व्यक्ति को दुःख होता है। कभी पश्चाताप होता है जो कि सामान्य भावनाएँ हैं। मैंने कभी सीमाओं के परे जाकर कोई बात करने की कोशिश नहीं की तो मैं यह कह सकता हूँ कि मैं कई जगह, किन्हीं कामों में असफल हो गया हूँ या कुछ लोग ऐसा समझते हों कि उन्होंने मुझे एक तरह से असफल बना दिया है या जो मैं चाहता था वह नहीं करने दिया, लेकिन चूँकि मै उसमें उसी हद तक इनवाल्व था जिस हद तक मैं समझता हूँ इनवाल्व व्यक्ति को होना चाहिए। इसलिए उस तरह का लेड-डाउन मुझे नहीं हुआ, कोई चीज़ नहीं हुई कि उसको बैठकर हम जिंदगी भर रोते रहे और यही एक कारण है जो मैं समझता हूँ कि इतने उतार-चढ़ाव के बाद भी संघर्ष का एक जो मौलिक संतुलन होता है बिना संतुलन के संघर्ष नहीं है अगर अगर संतुलन न हो तो संघर्ष सीमाओं को पार कर जाता है और फिर ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ से फिर कोई दूसरी चीज़ बनना मुश्किल हो जाती है। वह संतुलन मैंने नहीं खोया। इसीलिए मैं समझता हूँ कि ऐसी कोई घटना मैं नहीं कह सकता कि जिसकी वजह से मैं chattered हो गया और फिर उसके बाद यह लगा कि अब तो जिंदगी बेकार है, ऐसा अनुभव मैंने नहीं किया।

प्रश्न : रात में सोने से पहले आखरी बात आप क्या सोचते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अब इतनी बातें होती है तो यह तो बताना बड़ा मुश्किल है क्योंकि रोज-रोज नए विचार होते है। लेकिन मैं अक्सर कोशिश करता हूँ कि आधा-आधा घंटा तो नहीं 15-20 मिनट कोई न कोई किताब पढ़ते हुए ही मैं सोता हूँ। जो किताब का उस समय का प्रसंग होगा स्वाभाविक है उसी को ध्यान

में रखकर....

प्रश्न : आप बहुत सारे जर्नलिस्ट को क्या कहें, जेब में रखते हैं कि पाल के रखते हैं, और उसके बावजूद आपको इतनी पब्लिसिटी मिलती है?

श्री अर्जुनसिंह: असल में यही बात गलत है। मैं न किसी को ज़ेब में रखता हूँ न पाल के रखता हूँ, जितना खुला और जिसको कहते हैं, स्वच्छंद संबंध है, मीडिया से मेरे हैं। मैं समझता हूँ, कम राजनीतिक रखते हैं और इसीलिए पब्लिसिटी चाहे जैसी हो वह आप जानते हैं कि किन-किन बातों पर निर्भर करता है उसमें जाने की जरूरत भी नहीं है, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर हमारे संबंध किसी से बिगड़ते नहीं है। जो मेरे खिलाफ़ बिना किसी आधार के किसी और चीज़ से प्रेरित होकर खराब से खराब चीज़ लिखता है, आज तक मैंने उससे घूमकर नहीं पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया? ऐसे लोग तो बहुत अति कर देते है तो फिर स्वयं कहते हैं कि क्या करें?

प्रश्न : जाहिर है पालिटिक्स में आदमी को करप्ट भी होना होता है, कम्प्रोमाइज़ भी करने पड़ते हैं झूठ भी बोलना पड़ता है तो आपने अपने पोलिटिकल कैरियर में सबसे बड़ा झूठ क्या बोला?

श्री अर्जुनसिंह: झूठ का शब्द नहीं है, परिस्थिति को किस रूप में प्रस्तुत किया जाए क्योंकि झूठ शब्द तो यह है कि मैं जान बूझकर किसी को भ्रम में रखने के लिए गलत बात कहूँ, ऐसा करना कोई अनिवार्य भी है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ और न भ्रष्ट होना अनिवार्य है।

Election in congress party is overdue

15 जुलाई 1995 तमिल साप्ताहिक आनन्द नेतन के कुमुदन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Q: How you react on corruption prevelnt in T.N.? Will you form coliation in Tamil Nadu?

Shri A.S.: You see there is no question of closing our eyes. You see corruption whether it is in Tamil Nadu, in Karnataka or Delhi or Madhya Pradesh. So there can't be a distinguishing feature, where ever it is in whatever form it is and at whatever level it is, it has to be opposed and tackled. So on that account there is no question of being anything else against the campaign. So far as political question is concerned, we have not taken any decision about the political issue in Tamil Nadu yet. As I have said in the press conference, the question of alliance or whatever it is, will be decided at the appropriate time and to pass any kind of judgement or comment at this stage is neither correct nor desirable. So we are not supporting any government from whatever wrongs are being done, that impression should not go.

Q: ..... Why don't you support Ram Moorti with full courage.....

Shri A.S.: On that we are fully with Ram Moorti ji, here and in any state where this fight is joined. There is no at all this impression that we are not supporting on these issues is not correct.

Q: What is the impact of Prabhoo's position?

Shri A.S.: Mr. Prabhoo's position was unnecessarily played in that manner that is not there, but one or two incidence that took place, yes it was a fact, it did have some effect but that as I said you that has overwhelmingly satisfied by the response. You see, suppose I have some difference of perception, alright I should not have said it or projected it in the manner, I did but that has no impact on the people. So that also is a special consequence now.

Q: I think they had .... in what way your congress differs from Narismha Rao's congress.

Shri A.S.: You see, the historical sequence is such that if the election had been held as was promised by Shri Narsimha Rao regularly, I think much of all the problems have arisen would not have arisen. Having held the elections once in 1992. Specially the working committee election in the AICC. I think he got frightened that his control will not be complete and a democratic set up will merge which certainly would have been for betterment of the party. But not for the absolute power which he wanted to be. So he stopped it and kept on continue after 1994 by resolution of the working committee for this and that. So the real question is that we have taken a decesion to hold the elections. This membership drive is on. The elections schedule will also be announced soon. Now once these elections takes place till then because we had to consolidate the party. A vacuum could not have been allowed. And it is only for this short duration that these appointments have been made and as the elections are over a full fledge organisation set up will be announced.

Criminalisation of Politics

3 अगस्त 1995 हिन्दुस्तान टाइम्स के श्री स्वरकुंज चाघ जी को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: What will be the effect of criminalisation of politics? What steps should taken to check this?

Shri A.S.: I think now the criminalisation of politics or public affairs to be more correct, has certainly shown a very wide dimensions and one can see. I personally feel that root cause of this is urged amongst individuals, sometimes in party, also to achieve what they want to achieve at any cost, Achieving is an objective, which has been there all the time but previously people recognize limitations in the effort to be that and accepted that as a norm those limitations, ones you feel that there is no limitation and achieving is the sole objective at any cost. Then you allow so many things to happen and this is true that not only a phenomena which one can pinpoint in any political party in particular it occurs knoll.

Some people are more prone to take advantage of it. Others tolerated and some ignored it. I think the time has come when none of these things should be allowed. Whether it is through a legislative process reforms to the specific reforms or in some other manner, which would help monitor or sort of check this on a continuing basis. To begin with on the basis of information that is now available with the Govt. which is reflected in some very pale manner in the vora Committee report.

I think a judicial commission should be set up under the chairmanship of a seating judge of the Supreme Court. All these relevant facts that the urgency have collected. Which are known to the Home Ministery or to any other State Govts. They should be all collected in one place, place before this commission. It should get a very powerful and independent investigation and complete freedom to anyone it feels appropriate, where the fine that there is something to be found out of investigation.

The terms of preference of this commission have to be carefully gone into and there should be consensus amongst all political parties on the terms of references so that it doesn't live with anyone to say subsequently that look this was the loophole thought which everything was manipulated by A.B. of C. Because the danger is not to individual or to group of individual that I think the danger now is of the very basic concept for republic.

It is a democratic republic where freedom of speech, freedom of action, freedom of vote are very crucial elements and these are being initiated and are not allowed to function in which constitution envisages then it is a danger to the republic. This is how wide the canvass of inquiry becomes only then one can hope for any kind of real thing to happen. Otherwise, like the committee that the Government has already set up without reference to anyone, which is the Vora Committee, on that set up a monitoring committee. That is not even a eye wash. I mean I don't know who has given this kind of advice, that kind of committee should not go into that committee is neither here or there.

Q: But you are suggesting a judicial commission, is it only this or is it over all for the issue of criminalisation?

Shri A.S.: Not only for the Vora Committee. Vora Committee may have thrown up some facts. I have not read it. Govt. Report in the Press is not much, even their editorials today are all very-very negative. So I am not saying that should be only for the Vora. It is a very subject itself and all the social, economic political factors that go into this kind of thing. We must be clearly delineated and at least the nationality was not the danger and then the corrective matters could be taken.

I think the NCO's public representatives from various organisations not only political who has special knowledge of this kind of thing for example, take the case of these corrective homes for girls and boys and other grown up ladies now they have lot

to the over all we keep on reading time and again how the kind of exploitation that goes on who is behind it, who protects it.

Q: You want to say that the politicians protects the criminals.

Shri A.S.: Well, why only politician I think all those who are involved in such kind of things not only the politician who are involved. The politicians case becomes more prominent because they are prominent. But as I said the public affairs the word I have used very deliberately in the beginning that 'public affairs' mean public affairs. All those who are including in it.

Q: How would you define public affairs with including of politics?

Shri A.S.: Public affairs mean that I think it should include people who are involved in making public opinion, involved in public activity, whether it is political, non-political public affair is not only public affair.

Q: We should say that it is combined?

Shri A.S.: Should not be because it is inter connected. Of course focus should be on politics because that is what has much more damaging consequences I can't concede that.

Q: Do you say that there are three kinds, one is a party which would ignore it, one which would encourage it, one should be depend when the Congress fit into this?

Shri A.S.: Well, I think every party has some part of that I don't think we can say in point the Congress party alone and it is the attitude that now people will have to this which I think would be the real measure of their concern.

Now that the approach will be to this issue and it is in this context that I find Shri Narsimha Rao's comments so far a little discouraging. This is not a matter in which we have to compare that all party are involved. If it may be true but what next. What to do with this now for mere fact, the simple fact that for this report to be lying since 5th Oct. 1993 with him or the Govt. and coming out in the open on 1st Aug. 1995 speech for itself that doesn't require anybody to say that the other parties are also there.

You had a report how did you look at it. He did take it seriously. I tell you it was mentioned many a times in the party, also in the House. This is not the first time of the Parliament has made reference to this.; It was in connection with the reference that Pilot had made a commitment that it will be placed. I think it was a few months back either in the last session or the other session before that so it is not, I think the whole approach to it, was either casual और वही हुआ either tolerating और indifferent that is the point.

You see, I will concede it to this extent that any party power anywhere at any point of time Congress, B.J.P., National Front, Communist, Marksist definitely they are much more responsible for that period of whatever happens. Then party which are not in power.

Q: Which party gained in booth capturing in election?

Shri A.S.: Well, I think it is not fair to speak against any political party but activity I can certainly pinpoint. Now when you have booth capturing who does it. Do you think voluntary organisation do the booth capturing?

It is not true and which ever party benefits by that booth capturing that is objectionable and these are the things which ultimately gives the criminal elements and upper hand in the affairs of that party and that party then gets into power, So that is why it is better to go on that instead of saying that some party yes, some party which is in power definitely has to share the blame more. But even the party is not in power and the use of criminals to get into power and to get seats in is equally responsible and the intimidation that is exercised on people who want to go on the polling day.

Many states you know what happened. So, I mean one should not. This is not what, we should take as this is an allegation against my party. So I must put up my hackles and try to defend myself. That is what is not needed the approach should be that this is a threat for the democratic polity. If we believe in the democratic polity which means a lot of things then over approach will have to be totally opened. Unreserved and any co-operation that is needed, must be forthcoming. Of course, unless there is a body which can collate all these things and project it powerfully before the people of this country. Only then these action will follow laws or whatever is done. If individuals are found out, they should be exposed and once they are exposed then people will know that these are the kind of people who are doing this the Congress exposes there also.

Q: What ways you suggest to defeat the use of musle power, money power in politics?

Shri A.S.: I think to draw lines and cross lines would defeat the very purpose of these kind of things. That is I am suggesting a wide ranging powerful approach to this. It is only then the small lines will become blurr and real mince will emerge, which is the threat to democratic polity whether it is economic offence, whether it is any crimnalisation effort which also destroys the democratic system or it is actual criminal activity all these come in the same range.

I don't make any distinction and that distinction can only be made the cost of being sincere to the real purpose. Which is to get of these things and cleans the political democratic system of the country.

Q: Mrs. Margaret Alva says that this focus on Sushil Sharma she takes, is compliment to the Congress party only being expectation, high expectations the people higher from the Congress party?

Shri A.S.: I can't understand about this logic.

Q: Will the commission submit its report before the parliament elections?

Shri A.S.: I think since we are to run up to the next general election for the Parliament other things will much take sometime. This commission can't sort of complete its four months. Five months it will take a year or a year and half. The first thing should be to focus

immediate attention on what are the correct things that we can immediately think of to make them part of the electoral law before parliament election whatever has to be amended in that act for this purpose. It should be done much before we have the election at least that will be first which will give some seriousness to the entire effort. Because after all election means politics and politician so if we really feel sincere about it doing something immediately for this purpose will I think send the correct message at least from the side of the politicians.

Rajiva Gandhi Assassination Case

7 अगस्त 1995 बिजनेस टी.वी. के श्री एन.एल. शर्मा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: What is the progress of the enquiry of Rajiva Gandhi assassination case?

Shri A.S.: The public anxiety above the speedy progress in the Jain Commission of inquiry which is going into the conspiracy behind the assassination of our leader Shri Rajiva Gandhi is something, which has to be seen in the background of what it set out to do.

The Verma Commission was set up to look at the lapses in the security set up. Whether adequate security was there whatever draw back and which ultimately this commission was set up to go into the conspiracy if any behind this and dramification of the scene. The third thing the trial that is going on the designated Court in Tamilnadu which deals directly with the incident an act of destination and the evidence that have taken for it, which was investigated by the S.I.T.

The Verma Commission has submitted his report and the matter is how for with the Govt. to take whatever follow up action. I will not say anything about it. Neither will I say anything on the trial that is proceeding in the designated Court. That is judicial proceeding no one should comment so far as the Jain Commission inquiry is concern. That two or three things which must be clearly brought out only then one can understand the perception that has been created that there is some delay or deliberate kind of attempt not to let facts connote.

Number one is that then this commission was set up the Govt. naturally is a party because they have to supply all materials. The Congress party also pleaded and became a party in this Commission of inquiry which is not a trial but an effort to trace out the facts and then the basis of those facts the commission comes to influences and confluences. Now every party has to file an affidavit.

The Congress party also filed an affidavit. This affidavits was drawn up, was seen was approved by Shri Rao as the President of the Congress party. It is his approved affidavit which is before the Commission on behalf of the Congress party. Now the documents that are listing in that affidavit for production before the Commission, which will throw light on any alleged conspiracy. Those very documents were not furnished by the Govt. This is one hiatus that developed.

There are matters in which Govt. of India would not like to make it. Clear in Public. This is granted this is accepted. Nobody wants to press for that but this is something which could easily have been achieved by the Govt. or the Attorney General making this plea first to the Commission and in the case the Commission was not agreed. The Govt. could have gone to the High Court or Supreme Court and got this direction. That the Commission will not look into 1987 before only post 87 facts in the examination. This was the very transparent way of going about it. Now what happened is something extra-ordinary after this suggestion to withdraw was not approved by the Cabinet. In the month later in April, one individual Shri Mushtaq Ahmed who has no locus stand by the entire thing files a writ petition in the Delhi High Court making the same prayer, seeking to get something done which precise in the Cabinet sort to achieve. Now the High Court issues notice to the Govt. advocate takes notice and in a very short time whole matter is decided and interim order comes out which says that the Commission will not go into the pre-87 issues.

Now who is this Mustaq Ahmed how he came up before the Court what is his locus stand by the entire thing. We are all grey area which have not been explained so far. The general belief here is that is a front, which has put up by the Govt. itself.

Now I don't want to go into the details of what it happening there but this is a fact which has been published in so many newspapers that for nearly two years the Commission could not function for one reason or the other and Justice Jain who is presiding officer of the Commission, he himself gave voice to this apprehension. It was published in the Press also.

I don't have to say anything on that because that is self-evident and now that the proceeding are going on. I do hope that the Govt. cooperate fully because many of the facts which perhaps are known to them, which have not yet been brought before the Commission if they are not brought by one or the other then it becomes obvious that there is something which is sought is to be hidden. Now whose interest has involved, why it is being done something on which we can't comment but this apprehension is very much there and that is why in my letter of resignation I raised this point. That the Prime Minister should himself order an inquiry into this cover up operation.

The Jain Commission is going into that aspect but the cover up is not part of Jain Commission's term of reference. That is happening out side the Commission within the real of the Govt. machinery. Now he has not to do it. But we hope justice Jain will bring out those facts.

Q: Who is interested in this Camera?

Shri A.S.: Well, I don't know on whom I can point finger at. But I said the fact is that, it is the Govt. which initiated these proceedings and if the Govt. itself is now hesitant about supplying the material to the Commission. Obviously people will have to say that the Govt. is interested.

The second issue that of the criminalisation of politics and the Vora Committee report, which has been placed on the table of the House. Now there was a lot of interest generated about this report on the subject to be an eye opener so on. But the report itself has come manuscript. Mr. Vora has done a good job to the extent it is evident from whatever has come. But the real nexus and the methodology by which that nexus gets established has not been focused properly because the actual gamuts person are missing without that.

This will be an academic exercise in this background the announcement by the Govt. of a noodle committee headed by again the Home Secretary. Mr. Vora was Home Secretary when gave this report. Another noodle Committee being set up means nothing. This will again become part of a bureaucratic exercise which will end up in nothing. Therefore, we went and submitted a memorandum to the President that this is not only a matter of political criminal nexus. In fact, this is a grave threat to our republic, security, threat to the country and which has to us very large instant already poison for our democratic system doesn't limit itself to certain persons to threat to the nation.

Therefore, it would appropriate that the seating judge of Supreme Court. He should be designated to have this Commission, Judicial commission and all the facts that are available with the Govt., with the intelligent agencies. They should be placed before him. The terms of reference should be fairly wide and precise and it should have the power to go into every aspect that deals with this matter and that report will become a credible report and perhaps the suggestions that will come out for guidance for the future would also have much more legitimate.

Q: You have also declared any tension of no-confidence motion. Do you think that sound proof by the opposition....?

Shri A.S.: Well, I think this is nothing directly to do with no confidence motion. But the fact that all the Opposition parties has chosen to identify themselves. This resolution very openly means that in certain areas which are important to the country. That can be a meeting of minds to that extent, I welcome it and all the political party they are fully forthcoming to get involve and sure the debate they should take place under rule 184 on which there will also be a voting and House will bring out how serious everyone is.

Q: Is Beladila issue what do you think about the Centre and State Govt.?

Shri A.S.: You see, the mineral wealth belongs to the State and of course, the Central Govt. can exploit those minerals in the larger national interest but that licence or lease has to come from the State. The Central Govt. can not straight away, pick up an area in the State. I say that now you are going to operate the mines here. In this case, the question is originally Central Govt. had a lease from the State Govt. to operate these mines of

Beladila. That can be no doubt because that is the procedure.

Now the Govt. of India wants to go into a joint venture somebody is a private party and giving them more or less control of that which means transferring some part of the lease of the interest in that lease to another party. My view is that this can be done unless the State Govt. also clears it.

Last year when this came to my notice for the first time. I sent a message for Chief Minister of Madhya Pradesh. I got back the message that State Govt. has got nothing to do with it. It is entirely Govt. of India exercise but then when I went into this matter in detail this is what I found to be disposition. Now, I have asked him whether any form the Govt. of India took the concurrence of the State Govt., to alter the nature of the lease granted to them but it more precisely.

Q: Any objection to this.

Shri A.S.: No, my basic objection is to the whole exercise itself. But if it was necessary to consult the State Govt. take the concurrence even that has not been done and the State Govt. on its own got what you may call, felt itself incapable of doing anything then new dimension to the whole thing. But the objection basically is to the winding up of the Beladila. It is one of the richest mines when giving it to a private party.

Politicalisation of religion is bad

8 अगस्त 1995 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: What are the point on which your tomorrow's demonstration is being held?

Shri A.S.: (interrupt).... because of the electrical problem, we are now waiting for the demonstration that is to be done on tomorrow. As I told you and told you last time the response from all the States, has been not only very encouraging, but very very enthusiastic and the presence tomorrow, will itself testify to this. The reports have come in from some places on the adjoining State borders or attempts to stop many of the transport vehicles and all that. We would appeal to all these State Govts that this is a peaceful demonstration, which is being staged and any attempt undemocratically to stop people, is not only undesirable but undemocratic also and in case this is not stopped our State units will have to take the decision of starting demonstration in those States also after tomorrow's demonstration.

The criminalisation of politics and politicalisation of religion which has seen and unprecedented growth in recent past. The utter non-challenge and lack of concern on the part of the Govt. to alleviate the lot of the poor under privilege and downtrodden whose ranks are swelling each day. The demonstration will be beginning of a frontal

assault to expose the forces of the right reaction and national sovereign who are hell-bent upon destroying very concept of "Bharat Mahan Hai"

Q: Who are joining your Party?

Shri A.S. : Mr. Mohammad Ashraf, the organising secretary of the Maharashtra Pradesh Congress Seva Dal alongwith a number of his friends and fellow organisers have announced their joining of Congress party let by Shri Narayan Datt Tiwari.

Q: What is the response in other State to your party?

Shri A.S. : The response is very enthusiastic from all over the country, I have said.

Q: What are the details of your resolution about Vora Commission?

Shri A.S. : You see, I would like to make one thing clear that according to the rules of Parliament, it is not open for me to tell you what are the contents and what kind of resolution. We are going to move what on the issue of the Vora Committee report. You might recollect we had submitted a memorandum to the President as a follow up action, that we have taken some initiatives and all the political parties are in agreement on that. Further details I can't tell you.

इंदिरा काँग्रेस का दिल्ली में प्रदर्शन

10 अगस्त 1995 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

श्री अर्जुनसिंह- हम लोग यहाँ करीब 10 मिनट देरी से आ सके, उसका कारण यह था कि पहले यह तय हुआ था कि तिवारीजी अस्पताल से रुखसत हो जाएँगे और वे भी इस प्रेस कांफ्रेस में आएँगे। हम लोग वहाँ गए थे और तिवारीजी के अंदाज के मुताबिक 5 बजे उन्होंने कल अपना मौन व्रत शुरू किया था, ठीक 5 बजे उन्होंने अनार का जूस पीकर अपना व्रत तोड़ा और यहाँ आने के लिए उन्हें डॉक्टरों ने मना किया है। अभी एक दिन और वे अस्पताल में रहेंगे, क्योंकि ब्लड प्रेशर उनका अभी भी नार्मल नहीं हुआ है। वैसे उनका स्वास्थ्य ठीक है और व्रत तोड़ने के बाद उन्होंने सबसे पहले उन हजारों हजारों साथियों को जो कल के प्रदर्शन में आए थे, उन्हें अपनी ओर से धन्यवाद दिया है जो उन पर अत्याचार हुआ उसके लिए खेद व्यक्त किया और यह संघर्ष जारी रहेगा यह संकल्प भी उन्होंने दोहराया। कुछ प्रेस फोटोग्राफरों को भी चोटें आई उनके लिए भी उन्होंने खेद व्यक्त किया और मैंने अपनी ओर से उनमें से प्रत्येक को व्यक्तिगत चिट्ठी लिखकर उसके लिए दुख प्रकट किया है। एक फैसला उन्होंने यह किया है, जिसकी सूचना आपके माध्यम से देश के सभी काँग्रेसजनों को हम देना चाहते हैं कि 9 अगस्त को यहाँ पर अनायास और बिना किसी कारण के दमन की कार्रवाई की गई। अगले महीने सितम्बर की 9 तारीख को सारे देश में काँग्रेस जन हर स्थान पर दमन विरोधी दिवस मनाएँगे, हर जिले पर एक दिवसीय यह कार्यक्रम होगा। बहुत से हमारे साथी जो घायल हुए उनकी सूची अलग से प्रसारित कर देंगे आप उसको देख सकते हैं। यह एक नितान्त शांतिपूर्ण था और यह प्रदर्शन एक प्रदर्शनों का जो फायनल स्टेज होता है, प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी करके इसे समाप्त किया जा सकता था। लेकिन गिरफ्तारी की बात न करके और पानी की तोप, लाठी और अश्रु गैस इनका प्रयोग किया जाना

बिल्कुल गैर वाजिब था और इसी की वजह से यह वातावरण इस प्रकार का बना। पुलिस के भी कुछ लोग घायल हुए हैं उसके लिए भी हम सबको खेद है। हम लोग उनको देखने हास्पिटल भी गए लेकिन तब तक वे सभी डिस्चार्ज हो चुके थे हमें वहाँ कोई मिला नहीं। आपके बहुत से समाचार पत्रों के प्रतिनिधि इस पूरी घटना में वहाँ पर मौजूद रहे, आपको भी जो असुविधा हुई हो हम उसके लिए खेद व्यक्त करना चाहते हैं और एक चीज बहुत साफ शब्दों में कहना चाहते है कि जैसा कि पहले कार्यक्रम तय हो चुका था, 19 अगस्त तक सभी जिलों में इसी प्रकार के प्रदर्शन, जुलूस और धरने होंगे और 20 अगस्त को स्वर्गीय राजीवजी की पुण्य तिथि पर, उनके वर्षगाँठ पर हम सब हर प्रदेशों के प्रमुख स्थानों पर शपथ लेंगे, उस भारत की रचना के लिए जो उनकी कल्पना का भारत था, जिस कल्पना से आज हम काफी दूर हट गए हैं।

एक माननीय सदस्या- हम आपके पास एक लिस्ट सर्क्युलेट करने जा रहे हैं। 517 के करीब लोग उसमें घायल हुए थे और जिसमें से 55 लोग राम मनोहर हास्पिटल में दाखिल हैं और अन्य लोग प्रायवेट हास्पिटल या नर्सिंग होम में चले गए हैं लेकिन 517 लोग बुरी तरह से घायल हुए हैं और उनमें से एक सेवाराम जी को आँखों में बहुत बुरी तरह से चोट है। पता नहीं उनकी आँख बचेगी या नहीं। जैसा कि अर्जुन सिंहजी ने कहा कि एक अनावश्यक प्रहार हम लोगों पर हुआ। वास्तव में यह बहुत गंभीर और अनावश्यक प्रहार हम लोागें पर हुआ और यह कोई आरोप लगाए कि हम लोगों के प्रोसेशन में से कुछ लोगों ने पथराव किया जो बिल्कुल गलत है, हाँ कुछ लड़के अपने बचाव के लिए बैंच पर जरूर चढ़ गए थे और कुछ पुलिस की लाठी से बचने के लिए उन्होंने अपनी रबर की चप्पलें जरूर इस्तेमाल की थी। लेकिन कोई यह कह दे कि पत्थर फेंके गए थे यह बिल्कुल असत्य बात है क्योंकि वहाँ पार्लियामेंट स्ट्रीट पर पत्थर या ईट मिलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता, आप सब लोग भी जानते हैं....

प्रश्न : क्या इस प्रकार के प्रदर्शन आपकी पार्टी हर प्रदेश में करेगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब वह तो हर प्रदेश के लोग, पूरी काँग्रेस कमेटियाँ उसको हर जिलें में आयोजित कर रही हैं। मैं समझता हूँ कि जो जहाँ जा सकते हैं वहाँ जरूर जाएँगे। लेकिन वह मुख्यतः प्रदेश काँग्रेस के स्तर की बात है।

प्रश्न : आप जब शासन में थे तो आपने भी विरोधी दलों के प्रदर्शन को रोकने के प्रयास किए, तथा दमन किया होगा?

श्री अर्जुनसिंह: अब आप पूरा 10 साल का हिसाब माँगेंगे तो नहीं दे सकता। लेकिन एक चीज़ मैं आपको कह सकता हूँ कि जहाँ तक मुझे याद है सबजेक्ट टू करेक्शन। आप उस घटना का जिक्र कर रहे हैं, जब यहाँ लोगों को आने से रोका गया था। नहीं यहाँ कोई प्रदर्शन तो अंदर हुआ नहीं, लेकिन यह एक सामान्य बात है चाहे 25 फरवरी हो या 21 मार्च हो या 7 अप्रैल हो या 5 दिसम्बर हो तारीख से मतलब नहीं है। अनायास दमनात्मक कार्रवाई होती है तो वह उचित नहीं है इसमें कौन सी बड़ी बात है।

प्रश्न : श्री नारायणदत्त तिवारी से मिलने शासन की ओर से कौन गए थे?

श्री अर्जुनसिंह: तिवारी जी से मिलने तीन लोग गए थे, मतलब मत्रिमंडल के तो दो ही लोग थे एक तो स्वास्थ्य मंत्री अंतुलेजी, और श्री राजेश पायलट जी मंत्रिमंडल से तो और कोई नहीं गया।

प्रश्न : इनके अतिरिक्त कौन गए थे?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो के.एल. भगत जी गए थे और बहुत से लोग गए वहाँ, कोई हमने लिस्ट तो बनाकर रखी नहीं।

Q: What will be the impact of next General Election?

Shri A.S.: Well, I think these are symbolic things. General election of course, has its own momentum. But I think if everyone, who can do this come to this conclusion, will be no problem, the problem that you are anticipating.

प्रश्न : आपके प्रदर्शन से क्या आपके मुद्दे देश के हर प्रदेश मे पहुँच गए?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे ख्याल से पहुँचे ही नहीं है, प्रभावी तरीके से पहुँचे हैं और अब यही मुद्दे सारे देश में पहुँचाए जाएँगे इसी माध्यम से क्योंकि जनमत का बनाना जन जागरण के माध्यम से ही होता है और कोई तरीका नहीं है।

The roots of democracy went very deep in India

22 अगस्त 1995 बी.बी.सी. लन्दन को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: Indian politics is based on personality cult. The Congress party totally depends on Nehru-Gandhi family. What is your view?

Shri A.S.: Well, I think in my view it is an error to mix the democratic aspiration and democratic set up in the country with that kind of the personality profile because one tries to project as if one is against the other, that is not forget the fact that democratic system was in this counrty was boon by Pandit Jawhar Lal Nehru, He was one of the founding father of the modern Indian nation and also of the democratic content of that nation. The roots of democracy went very deep in the 18 years that he was there as the Prime Minister of this country and nobody can have everything met to order for his own personal thing. But even the circumstances, I think the balance one has to concede in his favour. Mrs. Gandhi came on the scene after the tragic event when Shashtriji passed away and politically it was an uncertain period because she has not held any office till then, except for a small period as Minister for information and Broadcasting in the ministery of Mr. Lal Bahadur Shastri, but then she was elected by Parliament, when some people say that there is a dynastic succession the overlooked fact that Mrs. Gandhi became the leader of the Congress party in Parliament by a ballot not by succession and a years later she has to face the general election of 1967. She became Prime Minister in Januray 1966 and in Feb. 67 was general election. She did not get a majority it was a minority government that she had for three years and because of her minority status there was an attempt inside the party to over ah, I can not find any other word for it. Hopping that she will not be able to stand up and will chose the

essier way of compromising with all, chossee not to do that and there was a political battle inside the party and in that battle she won, it was not because of anything, because she struck the right call for the people, picked up the issue very carefully and all that was reflected ultimately in the land slide victory in the general election which followed, then she dissolved parliament in 1971. So the democratic mandate was not something which was assumed it was given in a very very democratic manner. The situation that arose Indo-Pak war which followed Pakistan's disadvantage in Bangladesh and also against India brought about a lot of new factor which cumilatively lead to the position of emergency in 1975. There are lot of conflicting opinons about the emergency, we also did not support for it, what happened should have not happened and I can tell you, there is some speaking from myself .... there was no point of time when Mrs. Gandhi .... listening to what people say even at that time, and when she realised that the thing was really not going as they should, she ordered the election. Now again one has to concede that the dicision to hold election was not imposed on all, but it was her own voluntary decision, many of the people I know advised against it, because there was still a year to go for parliament's life and that election resulted in her defeat personaly and the defeat of the party. She did not go into hiding or isolation.

Q: .... what do you say about the state of democracy when one's family dominates the politics of our country?

Shri A.S.: Well, I think if the test is democratic, process if you call it the democratic test, then that argument is available, but that is an anti-thesis of the democratic system. But if the test is democratic, then if one family has got through that test confidence of the people of this country, I don't think you can find fault with the family for it, and neither the democratic system. Which means that in the Indian psychology, there is lot of, what you may call good will for people, families who are pereceived to be serving the cause of the country. Now here is a family which for four generation has been serving the country. So the effect of that has to be there.... But as I said even inspite of all this the 1977 elections results proved when the people appreciate, they have regard, but they can also stay contrary view. That only goes to show that it is a democratic functioning which is a deciding factor. In 1980 she was again voted to power, so when even Rajiva Gandhi came into the office as a Prime Minister, again it was through a tragic situation, but within three months we went to the polls and it was a democratic endorsement of what ever had happened in the tragic circumstances.

In 89 he lost. Again he did not think that, that was the end of the world. And he started his democratic exercise as a leader of the opposition. So it is not fair to put that kind of lable, that they have been empowered or have have the best of time only because of faimaly or because of that. Yes, the familiy's contribution to the welfare of the country has given them special consideration.

Q: If the next generation of Nehru-Gandhi family joins politics would you support them?

Shri A.S.: Well, think if another generation of the family comes into politics, we clearly understand, it can only happen throught the democratic route. It can not happen through the autoratic route. Therefore, if it is open to any citizen of this country to seek the mandate of the people, then they are equally entitle to that effort. Now so far as the name is concerned, I just told you why that name has got that kind of response, what if happen is of course in the lap of the future, we can not be predictive in it.

Q: Now there are two congress parties, one lead by Mr. Tiwari and one by Mr. Narsimha Rao...

Shri A.S.: Well, I don't think the scenario is precisely what you have said, I certainly concede that there is at this moment a proess of identification which is on and it is my belief of course anybody else is entitle to differ from that, that by the elections come down, it is the congress party of which Mr. Tiwari is President, which will be identified by the people of this country as the real congress party and till then of course this process of political identification, campaign and all will go on. After all in a democratic system how else then we allow the people to decide .... how it is done.

Q: The battle is going on ....

Shri A.S.: Well I dont think anybody is trying to be a courtier but as I said it is ultimately the perception of the people as to which set of the people they consider to be as a true inheriters of the mental of the congress party and it will certainly add to the political weight, if any member of the family is in that side, but what is going to have on so far as they are concerned, I would not like to say anything on that. I hope, I did not duck anything.

राजनीति में अपराधियों का दखल राष्ट्र के लिए घातक

12 अक्टूबर 1995 इंदौर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

प्रश्न : एक चीज देखने में आ रही है कि मीडिया, गवर्नमेण्ट व जनता आपकी पार्टी को अवाईड करते हुए चल रहे है?

श्री अजुनसिंहः आप पूछ रहे हैं तो इसका उत्तर मैं क्या दूँ?

प्रश्न : नहीं आप क्या कहते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः अब आप पूछ रहे हैं तो मैं इसका उत्तर क्या दूँ कोई और पूछता तो मैं इसका उत्तर देता। आप ही तो मीडिया हैं बात तो सही है।

प्रश्न : चन्द्रास्वामी एपिसोड में आपको क्या कहना हैं?

श्री अर्जुनसिंहः अरे छोड़िए। चन्द्रास्वामी एपिसोड तो एक तरह से इस बात का बहुत जीता-जागता प्रमाण है कि किस प्रकार से, और किस लेवल पर क्रिमिनल एथारिटिज एक ऐक्सिस खींच तान कर रहा है। क्योंकि अब तो वो खुद अपने बयान में कहते हैं कि मुझे गिरफ्तार किया गया। सजा भी हुई थी। जेल भी गया मुकदमा अभी भी चल रहा है। ऐसा व्यक्ति अगर निर्भिक रूप से प्रधान मंत्री के घर पर कभी भी आ जा सकता है तो उसके बाद तो कहना फिर बाकी क्या रह गया है। ये जो अपराधीकरण का जो प्रश्न है, ये प्रश्न इतना सामान्य नहीं है। इसकी बहुत बड़ी-बड़ी जड़े हैं। वोरा कमेटी की रिपोर्ट को अगर आप पढ़े। अभी मैं यहाँ ला नहीं पाया। नहीं तो जहाँ कहीं भी जाता हूँ उसको साथ लेकर जाता हूँ मैं आपको उसी माध्यम से कहता हूँ। उसे यहाँ आप लोगों को देंगे। उन्होंने एक वाक्य में ही करीब-करीब सब चीजें कह दी है। जो छपा भी हैं कि माफिया, सिंडिकेट क्रीमिनल का जो गेंग है, आज वो भारत में समानांतर सरकार चला रहें हैं, जिसके आगे प्रशासनिक तंत्र करीब-करीब निष्प्रभावी हो रहा है। यह हैं एक वाक्य जो उसमें सबसे महत्वपूर्ण है और भी बहुत सी चीज़ें हैं उसमें। अब ये रिपोर्ट बनाई हैं उस कमेटी ने जिसके अध्यक्ष भारत के गृह सचिव थे। जिसके सदस्य डायरेक्टर सी.बी.आई. थे, डायरेक्टर इंटलिजेंस ब्यूरो थे और सेक्रेटरी रेवेन्यू थे, जो कि एकानामिक दृष्टि से हाय लेवल के आफीसर थे। ये इन चार लोगों की बनाई हुई रिपोर्ट हैं। ये किसी अपोजिशन का आरोप नही हैं और न किसी ऐसे व्यक्ति का बनाया है कि जो लोग कह दें कि यह तो लिखते रहते हैं। इस रिपोर्ट को इन्होंने 5 अक्टूबर, 93 को गृहमंत्री को सौंपा उसकी केवल तीन प्रतियाँ बनी थी एक श्री वोरा ने अपने पास रखी, एक गृहमंत्री को दिया और एक गृह राज्यमंत्री को दिया। उसमें रिपोर्ट में ही निवेदन किया उसमें छपा है, रिपोर्ट में जल्दी से जल्दी आप चर्चा के लिए प्रारंभिक चर्चा के लिए हम सबको बुलाए और प्रारंभिक चर्चा के बाद वो मुद्दे सामने उभरकर आए उनके लिए वित्तमंत्री से बात हो और फिर कोई एक कदम उठाने का रास्ता तय हो। इसको लेकर हमने प्रधान मंत्री से इस पर मार्गदर्शन चाहा 5 अक्टूबर 93 से 23 अगस्त 95 तक। पर उस रिपोर्ट पर कोई कार्रवाई नहीं हुई और 23 अगस्त, 95 को गृहमंत्री लोक सभा में स्वीकार करते हैं कि मैंने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की। अब इसी से आप अंदाज लगा सकते हैं कि इतनी संगीन और इतनी संवेदनशील रिपोर्ट जिसके इंटरनेशनल लींकेज हैं, जिसमें सिक्युरिटी की सब चीजें प्रभावित है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उनसे कभी भी किन्हीं भी परिस्थिति में गंभीर परिणाम निकल सकते हैं। मैं भेजूँगा रिपोर्ट किसके नाम भेजूँगा यहाँ आपका प्रेस क्लब होगा न। आप पता दे दीजिए मैं 30 कापी भेज दूँगा। आप लोग लिख पाएँगे कि नहीं यह मुझे संदेह है। अब तो सुप्रीम कोर्ट ने इसको टेकअप किया है वो किस अंजाम तक जायगा।

प्रश्न : जिस राजनीतिक अपराधीकरण पर आप बोल रहे हैं, आपकी पार्टी क्या अपराधियों को टिकट देगी?

श्री अर्जुनसिंहः कभी नहीं, कतई नहीं। सवाल ही नहीं उठता और अगर धोखे से कोई इस तरह का आदमी हो तो मैं आपको पर्सनली दरखास्त कर रहा हूँ कि आप मुझे बताइए ऐसे तत्वों को कोई भी प्रोत्साहन नहीं देना चाहते टिकट तो बाद का सवाल आएगा।

प्रश्न : ऐसा हो सकता है न कि ये पार्टी पावर में आ गई और चंदा इक्ट्ठा कर रही है, लोक सभा चुनाव के लिए सब तरफ से। इसलिए लोक सभा चुनाव में किसको सस्पेंड करना चाहते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः ऐसा कैसा कोई ये बनिए की दुकान है क्या जो सस्पेंड रहेगी। संवैधानिक वो हैं हर चीज़ की सीमा होती है।

प्रश्न : जैसा अभी गृहमंत्री के बड़े बयान आए इन्दौर में उन्होंने कहा ग्वालियर में रिपिट किया, दिल्ली में कहा कि कश्मीर में चुनाव कराएगी सरकार आप क्या समझते हैं कि वहाँ अनुकूल परिस्थितियाँ हैं चुनाव की।

श्री अर्जुनसिंहः हम लोगों ने इस बारे में तो अपनी बहुत स्पष्ट बात रखी है। हम देश के अन्दर प्रजातांत्रिक प्रक्रिया कहीं भी अगर रूकी है, या नहीं प्रभावशील हो पा रही है हमारा इंट्रेस्ट है और हम चाहते हैं कि वहाँ प्रजातांत्रिक प्रक्रिया प्रभावशील हो, चुनाव हो लेकिन चुनाव का मतलब निष्पक्ष और निडर चुनाव हो। संगीन के साए में चुनाव कितने निष्पक्ष और निडर हो सकेंगे। ये बात सोचने की हैं और कश्मीर एक बहुत ही सेंसेटिव एरिया है। वहाँ ये चार्ज नहीं लगना चाहिए कि चुनाव निष्पक्ष नहीं हुए वरन अभी जो कुछ हुआ हैं उसके पीछे ये भी एक बात है। वहाँ जो आतंक है, असंतोष फैलाया जो कुछ हुआ उसके बेकग्राउण्ड में ये सब भी हैं कि चुनाव सही नहीं होते, निष्पक्ष नहीं होते। अब अगर हम इतना सब भुगतने के बाद भी फिर उसको दोहरा देंगे, केवल यह हठधर्मी कर हम चुनाव करा रहे हैं, इसका क्या मतलब होता है। देश के हित में तो नहीं होगा। चुनाव होने चाहिए लेकिन जब ये निश्चित हो जाय कि निष्पक्षता से और लोग खुलकर वोट दे सकते हैं और पार्टियाँ अपना काम कर सकती हैं, जरूर चुनाव होना चाहिए।

प्रश्न : प्रधान मंत्री की न्यूयार्क में अमरिका के राष्ट्रपति से मुलाकात हुई थी उसमें अमेरिका ने पाकिस्तान को सैन्य सहायता नहीं देने की बात की थी?

श्री अर्जुनसिंहः भाषण देना तो सबसे सरल काम है। वो कर रहे थे, वो उस वक्त तो भारत की सुरक्षा का प्रश्न तो गम्भीर से गम्भीरतम होता जा रहा है। और कुछ ऐसा नहीं रहा जैसा हम मोहताज बनते चले जा रहे हैं, न पृथ्वी मिसाइल को लगाया जाएगा, अग्नि का परीक्षण रोक दिया जाएगा और प्रोटेक्ट भी किया जायगा तो जो अपने हाथ में है वो कहिए। उसमें प्रोटेस्ट करने का क्या सवाल है। भारत इतना कमजोर नहीं है कि पाकिस्तान के पास थोड़े से हथियार पहुँच जाएँगे तो इसके पीछे आप सहमकर अपने घर बैठ जाएँ। हमें अपनी तैयारी करना चाहिए। ठीक है एटम बम के बारे में सबकी राय है कि एटम बम का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। लेकिन आप्शन तो अपना खुला रहना चाहिए। लेकिन उसके अलावा जो हथियारों की श्रृखंला है जिन पर आत्मनिर्भरता लाने के बिल्कुल हम सक्षम बन गए है। उस दिशा में क्यों कदम रोक दिए गए और किसको खुश करने के लिए रोक दिए गए। इस कण्ट्री में डिबेट ही नहीं होता इन चीजों का?

Liberalisation means promoting cronic capitalism

6 नवम्बर 1995 बी.बी.सी. लन्दन को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Q: Arjun Singh you broke away from the congress party because you disagreed with the way they were carrying through economical policy you disagree with the message of liberalisation.

Shri A.S.- Well, I think we must first put the record straight, I did not break away, I simply registered my views, you may call it protest at the way many things were going to one of which was the economic liberalisation programme and so he get instead of meeting into a serious dialogue on all the issues Narsimha Raoji felt more at home by initiating a process by which he got me expelled from the party. So factual position is that. Now so far as economic liberalisation programme is concerned, it is not aginst the liberalisation policy as such. Actually I was one of those who drafted the new economic policy. The only point was that one-There should be total transparency in all the decisions taken in regard to liberalisation policy though it was foreign investment or any other decision .... The second point was that in view of the peculior situation that prevailed in this county were mainly 30 percent of the people are below the poverty line. We should frame our policy in such a manner so that these 30 per cent also feel that they are part of the concerns before which the liberalisation policy has been thought of.

Q: Do you feel that ..... action to hurt .... before....

Shri A.S. : In some respect yes. And whether it hurts or not, that is one thing but unless they feel involved how do they become part of it. And since this a functioning democracy the wrong kind of perception is getting abroad and being accepted as a political fall out as we have seen in many of the State elections.

Q: So, you feel the programme is basically wrong?

Shri A.S. : Well, It could be a .... and in some respect it has been a .... but I did not think that one has to abandoned that is not the point, one has to in our course lately the Prime Minister himself has been talking in the same language but any way, let us see how things so for continuously....

Q: With how would you do think differently because economic reforms programmes inevitably do hurt beyond the cost of the .... because the subsidy has to be end and unproductive industry have to close down.

Shri A.S. : Well, closing down an industry is not the beginning of a programme, if that is the

battering of a programme, I think somebody else made a totally unrealistic assessment of a programme. The point is that a programme must accelerate industrial activity. Number two, it should give scope for free enterprise in the sense that till the control, restriction that was there previously lines and so many other things, they should not be there. Now even there we have not done what use to be done, there are so many restrictions and the bureaurocratic hold in many areas is still quite effective, so I don't think that is inevitable, that people have to suffer yet, there is a cost but the point is that, that cost should not be met entirely by the section of the people. That cost has to be met equitably. And that I think it is for.

Q: So, how would you think differently .....

Shri A.S.: If it is to promote a certain movement in which everyone has an equal opportunity and also an equal share when the decision making process come in. Then things will have to be done that way. For example take the question of some of the major projects, infrastructure projects, whether they are power, whether they are road, whatever it is. Now there is something which obviously things have been done in a manner which has given India a very dubious reputation and I think nothing would have been lost would have been a fair international competitive bid. Till things would have happened but you could have .... all these things and similarly in the area of foreign investment, and absolutely for foreign investment in this country and in the issue repayment of profit and all that is okey. But there has to be some privatisation, you just can't have foreign investment in totally consumer industries which are fairly well advance in this country and I think that creates its own kind of impression of happiness. Somebody wanted to set up a manufacturing plant in my state, yesterday I was there. So I asked him how has your project progressed. ... said now it is out of the question..... all restriction or investment by multinational in this area has been removed. Now, even one or two plants that exist will go out of business, so they will directrly import it and where in the country where they have liberalisation, for example Indonesia to some extent and one to other country he told me. There they don't allow the foreign investor to come into these areas. They say you have partner here, let him manufacture for you. But atleast these are the areass where the local interprenures should be allowed to exist. Now that is the kind of thing which, I don't think there is any country in this world, as far as I know which allows total investment in any sphere whatsoever. What is the problem between Japan and America, if there had been no such a problem then by now most of the American business should be in

the hands of the Japanese. But they are resisting it. So these are the things which country like ours must keep in mind and it also gives a wrong impression to the common man who does not see his needs being attended to by a plant to manufacture choclate. So these are the kind of things which we have to avoid.

Q: You said the programme..... among the poors, 30% poor, 70% relying on agriculture .. 50% on industry, if all these .... you can have to go against to the will of the people for a while in order to push it..

Shri A.S.: Well, if you have a dictatorship you can go ahead and do it. But I don't think that is, nobody is going to accept the dictetorship in this country. Therefore, whoever is managing this whole thing will have to think that way. This will not give the whole thing to be reflected ..... that kind of perception persist and it becomes solidify into point of view and there are some people in the country who are aginst liberalisation. I don't want that .... to come out where in a national election on this liberalisation programme thrown out lost in barrel you should not, it is not in the interest of the country, therefore that kind of care has to be taken.

Thank you.

साम्प्रदायिकता सबसे बड़ा सवाल

9 नवम्बर 1995 जी.टी.वी. के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न: जब आप पहली बार मंत्री बने तो किसी भी राजनेता के जो पार्टी पोलीटिक्स में आगे बढ़ता है, तो उनके और आपके लक्ष्यों में आप किस तरह का फर्क देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: फर्क यह है कि उस समय मंत्री पद पाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया का अंग था। कुछ करने के बाद ऐसा लोग समझते थे कि मैं एकदम से मंत्री नहीं बन सकता, जब तक कि हम विशेष रूप से काम न करें। कोई ऐसी बात करने का मौका न मिले। कहीं न कहीं कोई Priority के रूप में से या activity के रूप से कहीं हमारा Identification होना चाहिए। तब लोग समझते थे कि ये हमारा हक है। मैं 1963 में पहली बार मंत्री बना था। इसलिए 6 साल बाद बना। आजकल फर्क इतना है कि आजकल तो जिस दिन चुनाव खत्म होता है, उसके दूसरे ही दिन लोग समझते हैं कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और बीच में कुछ करने की जरूरत नहीं है। केवल इसलिए कि मैं आ गया हूँ। इसलिए मुझे मंत्री बन जाना चाहिए।

प्रश्न: इस देश के प्रधान मंत्री के अन्दर, अगर मैं आपसे सवाल करूँ तो कौन सी तीन क्वालिटी होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: मेरी तरफ से मैं तो सबसे बड़ी बात उसकी ईमानदारी होनी चाहिए और ईमानदारी से मतलब व्यक्तिगत ईमानदारी से नहीं है। वो तो नितान्त आवश्यक है। आम लोगों को लगे कि जो कुछ भी आप कह रहे हैं वो स्पष्ट और निश्छल होना चाहिए। राजनीति में बहुत सी बातें होती हैं। जिन्हें

अलग-अलग प्रसंग में अलग-अलग तरीके से प्रस्तुत किया जाता है और उतना सब कुछ हममें है। लेकिन जब आवाम के साथ कोई बात हो तो उसमें फिर दोहरापन नहीं होना चाहिए। पहली बात तो ये है। दूसरी बात यह है कि अपने देश की कह रहा हूँ। हर देश की अलग-अलग बात होती है। यहाँ प्रतिबद्धता जो भी सर्वोच्च स्थान पर बैठे उसकी प्रतिबद्धता व्यक्तियों में उतनी नहीं है। आवाम के हितों से जुड़ना चाहिए। कोई वर्ग विशेष से नहीं, कोई जाति विशेष से नहीं, कोई धर्म विशेष से नहीं और तभी वे आम लोगों को इस बात का आभास दिला सकता है कि वह उनका सच्चा सेवक बनने के लायक है और तीसरी बात यह है कि जो प्रश्न सामने आए निर्णय के लिए उनके प्रति पूरी तरह पूर्वाग्रह नहीं हो। यह हमारा दृष्टिकोण है। हम अगर एक समाजवादी दृष्टिकोण से विचार करेंगे तो निश्चित है कि एक दृष्टिकोण पर पहुँचेंगे। पूँजीवादी दृष्टिकोण से सोचेंगे तो एक दूसरे निष्कर्ष पर पहुँचेगे। लेकिन वह पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए तो फिर जो फैसले होंगे वो सही हो या गलत हो। उन फैसलों को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जाएगी कि वह किसी वर्ग या विशेष तबके को मदद करने के लिए या किसी के खिलाफ कोई फैसला हुआ हो। ये दो-तीन बातें हैं। बाकी तो फिर मैं तो यह मानता हूँ कि राजनीतिक जीवन में जो आता है वह आँख, कान खोल कर चले और सदैव इस बात को ध्यान में रखे कि वो नौकर है, मालिक नहीं है तो ऐसी कोई बात नहीं होगी जिससे कि उसको बहुत बड़ा धक्का खाना पड़े। बाकी चुनाव होते हैं, कोई हारता है, कोई जीतता है। ये सब चीजें तो अलग हैं।

प्रश्न: आपने ये जो तीन क्वालीटिज़ बताई, आज देश की विभिन्न पार्टियों में जो सर्वोच्च पद पर बैठें है या प्रधान मंत्री बन सकते हैं। इन नेताओं में किस-किस में यह क्वालिटी पाते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ मेरे लिए किसी व्यक्ति विशेष के बारे में ऐसी बात कहना उचित नहीं है। ये तो आम लोग इस बात का फैसला करेंगे।

प्रश्न: क्या आप अपने बारे में कह सकते हैं? इन क्वालीटिज़ को लेकर के?

श्री अर्जुनसिंह: मै तो बहुत मामूली आदमी हूँ। मैं तो पता नहीं इसके लायक हूँ या नहीं। वो तो आपने प्रश्न किया तो उसका उत्तर मैंने इस रूप में दिया।

प्रश्न: सबसे बड़ी कौन सी समस्या इस समय देश के सामने ऐसी हैं, जिसे आप समझते है कि प्रधानमंत्री को, कोई भी प्रधानमंत्री को उसे एड्रेस करना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे दृष्टिकोण में इस वक्त वर्तमान संदर्भ में सबसे बड़ा प्रश्न है विश्वास का संकट। वो विश्वास का संकट काफी व्यापक हो गया है। वो चाहे प्रशासनिक क्षेत्र में हो, चाहे राजनैतिक क्षेत्र में हो, वो चाहे आर्थिक क्षेत्र में हों। अगर हम इस संकट को पहले स्वीकार करें। तभी तो उस पर कुछ अमल करने की बात है। आजकल वास्तविकता को स्वीकार करके फिर कुछ करने के लिए हिचकिचाहट है। ये हिचकिचाहट व्यक्ति के लिए तो नुकसानदेह हो सकती है।

प्रश्न: इस समय देश के सामने एक और बड़ी समस्या है, भ्रष्टाचार की? इस समस्या को दूर करने के लिये प्रधानमंत्री को क्या काम करना चाहिए? सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर होने के बाद?

श्री अर्जुनसिंह: सबसे पहले तो ये आवश्यक है कि अपने स्वयं के आचरण से यह साफ प्रमाणित करना चाहिए कि ये उसके ऊपर स्वयं इस प्रकार का कोई दोषारोपण न लगे और अगर राजनीति में लगता है

तो उसका इतना स्पष्ट तरीके से समाधान होना चाहिए ताकि लोगों को विश्वास हो जाए कि ये आरोप झूठा है या किसी और प्रकार से है। लेकिन नजर अंदाज नहीं करना चाहिए।

प्रश्न: आप इतने सालों से राजनीति में है और आपने केन्द्र में तीन प्रधान मंत्री तो कम से कम देखें ही हैं। जो इस समय की सत्ता में हैं और सत्ता की होड़ है उनमें से किस को आप प्रधानमंत्री पद के योग्य पाते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि मैं जो काँग्रेस पार्टी के प्रधानमंत्री की बात कर सकता हूँ। दूर्भाग्य से उन दो प्रधानमंत्रियों के साथ मुझे काम करने का अवसर मिला और आज वे दोनों इस दुनिया में नहीं हैं। तो उनके बारे में क्या कहूँ। बाकी और पार्टी के लोग हैं उनके बारे में टिप्पणी करना अच्छी बात नहीं होगी।

प्रश्न: विश्वनाथ प्रताप सिंह जी या चन्द्रशेखर जी का कार्यकाल जो प्रधान मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल था उससे क्या आप सन्तुष्ट हैं?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, मैं, सन्तुष्ट तो नहीं हूँ।

प्रश्न: एक और समस्या जो देश के सामने है, वो साम्प्रदायिकता की। जो खासकर बाबरी मस्जिद-राम जन्म भूमि के प्रकरण से सामने आई है। आप क्या चाहेंगे कि जो भी अगला प्रधानमंत्री हो वह चुनाव के फौरन बाद, तात्कालिक तौर पर ऐसे काम करे जिससे कि इस समस्या के समाधान करने में मदद मिले?

श्री अर्जुनसिंह: देखिये, साम्प्रदायिकता अपने आप में एक बहुत व्यापक शब्द है और उसकी परिभाषा से भी सब परिचित हैं। कोई बहुत मीन-मेक निकालने की जरूरत नहीं है। असली चीज यह है कि आवाम को, आम व्यक्ति को, यह विश्वास होना चाहिए कि जो भी व्यक्ति उस पद पर है। वो किसी भी धर्म को मानने वाला हो। उसके राजनीतिक आचरण में धर्म का प्रभाव उस रूप में नहीं होना चाहिए, जिससे उसके जो राजनैतिक कदम है वो प्रभावित दिखे। वो हिन्दु है, मुसलमान हों, सिख हों, ईसाई हों ये हमारा व्यक्तिगत प्रश्न है। हम कहाँ अपना सिर नवाने जाते हैं, कहाँ पूजा करते हैं, ये हमारा व्यक्तिगत प्रश्न है। लेकिन संविधान से प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते समय न मैं हिन्दू हूँ, न मुसलमान हूँ, न सिख हूँ, न ईसाई हूँ। ऐसा आभास उसके कर्मों से, आचरण से, निकलना चाहिए, तो ठोस आधार बनता है। हो क्या गया है कि हम उस लोभ का संचरण नहीं कर पाते कि हिन्दुओं के बीच में जाकर हम कोई ऐसी बात कहें जिससे हिन्दू लोग अट्रेक्ट हो जाए। मुसलमानों के बीच में जाकर ऐसी बात कहें जिससे मुस्लिम समझें कि ये तो हमारा सधर्म है। हम इसके साथ हैं। ये जो सीमाएँ है, हमारे संविधान के द्वारा दी गई है।

प्रश्न: आप एक सांसद भी हैं और सांसद होने के नाते अपनी Constituency के प्रति आपकी कुछ जिम्मेदारियाँ भी हैं। अब राष्ट्रीय नेता और सांसद, इनके बीच में तालमेल आप कैसे बैठा पाते है? अपनी Constituency के लिए आपने अब तक क्या किया?

श्री अर्जुनसिंह: ये आपने बड़ा बेदर्द सवाल पूछ लिया, क्योंकि हम लोगों को सबसे बड़ी परेशानी इसी से है, क्योंकि आजकल हर निर्वाचन क्षेत्र में हमारे कान्सलैंट्स है। उनकी आवश्यकताएँ और उनकी डिमाण्ड पहले से बहुत भिन्न है। जब 57 में मैं चुनकर पहली बार आया तो बहुत थोड़े ऐसे विषय थे जिन पर

लोग ये चाहते थे कि विधायक को आकर इस पर पहल करनी चाहिए। आज दुनिया में कोई ऐसा विषय नहीं है जिस पर लोग ये ना चाहें कि विधायक या सांसद को आकर पहल करना चाहिए। वह Physically Possible नहीं है। अब हमें ये देखना पड़ता है। मैं कोशिश करता हूँ कि कुछ मोटी-मोटी जो बाते हैं, जैसा शिक्षा के प्रचार और प्रसार में, सिंचाई के प्रचार और प्रसार में, आपके लॉ-एण्ड आर्डर के मामले में, एक पद होना चाहिए। जिसमें हमारे क्षेत्र में गतिविधियाँ रहे और उस स्तर को आगे बढ़ाने की कोशिश भी रहे। आजकल एक दूसरा पहलू आ गया है। व्यक्तिगत लोगों के काम होने के बारे में। अब इसकी तो कोई सीमा ही नहीं है। अब हमारे 10 लाख वोटर हैं। हम 10 लाख वोटर के लिए काम करवाने लगे तो ये जिन्दगी बीत जाए। उसमें तो यही है कि जो आपके पास आएगा। हम उससे ये जरूर कोशिश करेंगे कि जो हम कर सकते थे, उतनी कोशिश करें। नहीं हुआ वह अलग चीज है और अब थोड़ी सी दिक्कत यह है कि दौरे पूरे क्षेत्र में बढ़ गए हैं। जैसे आज 9 तारीख है, 12 तारीख को मैं अपने क्षेत्र में जा रहा हूँ। करीब 6 महीने बाद। जाने के बाद थोड़ी बहुत सुनने को भी मिलेगी। लेकिन अब लोगों की कृपा है तो वह सुनेंगे भी और जो कुछ हो सकेगा वह करेंगे।

प्रश्न: आपने वैसे अपनी कान्स्टीट्वेंसी के लिए पिछले पाँच सालों में क्या किया है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मेरी कान्स्टीट्वेंसी तो रूलर कान्स्टीट्वेंसी है। एक दो शहर हैं। सतना ही एक बड़ा शहर है। बाकी तो छोटे-छोटे शहर हैं। हमने तो शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया है और मध्यप्रदेश में केन्द्र की सहायता से जो शिक्षा मिशन चालू हुआ है। उसमें भी मेरा जिला आता है। तो प्रायमरी कम्पलसरी एजुकेशन के लिए जो आधार होना चाहिए। मेरा ख्याल है अगले साल तक वह पूरा हो जाएगा। पक्के प्रायमरी स्कूल और टीचर्स स्टाफ ये सब हो जाएगा। दूसरा है आवागमन की हमारे यहाँ काफी दिक्कत है। नदी-नाले सड़कें हैं भी, लेकिन नदी नालों पर पुल न होने से दिक्कतें आती हैं। इस पर मैंने ज्यादा कोशिश की है और मैं समझता हूँ कि जो प्रमुख मार्ग हैं हमारे क्षेत्र के वह कहीं रूकावट वाले क्षेत्र नहीं लगते हैं। तीसरी बात है चिकित्सा की। चिकित्सा के मामले भी ग्रामीण अंचल में और जो हेड क्वाटर का अस्पताल है सतना का उसका स्तर बढ़ाने का एक व्यापक कार्यक्रम हाथ में लेने की कोशिश रही है और उसमें कार्य हुआ है। जहाँ तक नहीं हो पाया है तो वह इन्डस्ट्रियलाईजेशन का। अब आजकल का जो Liberalised atmosphere फेयर है उसमें इन्डस्ट्री ले जाने के लिए जो पहले एक माप दण्ड होता था कि बेकवर्ड एरिया को प्रायरिटी मिलती थी। वह तो अब नहीं है, तो जिसको जहाँ ज्यादा सुविधाजनक लगेगा, वहाँ जाएगा। फिर भी एक दो इन्डस्ट्रीज आई हैं। सीमेंट का हमारे यहाँ बहुत स्कोप है। सीमेंट की फैक्ट्रीज़ आई हैं।

पृथ्वी मिसाइल प्रोग्राम को क्यों रोका?

नवम्बर 1995 भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रेस क्लब के सम्मानित अध्यक्ष व अन्य प्रतिनिधिगण, सम्मानित पदाधिकारीगण और आदरणीय पत्रकार बंधुओं मुझे शुरू में केवल दो बातें कहनी हैं। पहली बात तो यह है कि हमारे गणतंत्र को और हमारे प्रजातंत्र को इस

समय एक बहुत गहरी चुनौती के माध्यम से गुजरना पड़ रहा है। यहाँ पर विश्वास जिसको क्राईसेस आफ कांफीडेंश कहते है, विश्वास का खतरा जो है वह बहुत ऊपर उभरकर सामने आया है। अगर इस क्राईसेस आफ कांफीडेंश को हम ठीक से समझ नहीं सकें या जो आवश्यक है वह नहीं कर सकें तो भविष्य में व्यक्तियों और पार्टियों की बात तो अलग है, हमारे गणतंत्र को ही खतरा पैदा हो सकता है और इसलिए ये सबका दायित्व है कि हम इस विषय पर चर्चा करके और इस जिम्मेदारी को निभाने की कोशिश करें। इसका एक बहुत अहम पहलू है जो अब बहुत स्पष्ट रूप से सामने उभरकर आया है, वह है राजनीति का अपराधीकरण या अपराधियों का राजनीति में प्रवेश और इस पर उसका कब्जा? पहले तो ये बहुत छुटपुट घटनाएँ हुआ करती थी। लेकिन अब ये स्पष्ट हो रहा है कि ये खतरा केवल तदर्थ रूप से नहीं है, और बिखरा हुआ नहीं है, बल्कि वोरा कमेटी के रिपोर्ट के अनुसार जिस रिपोर्ट को भारत के केन्द्रीय सचिव की अध्यक्षता में डायरेक्टर सी.बी.आई और डायरेक्टर आई.बी. और गृह सचिव ने बनाया है। उनके मुताबिक माफिया अपराधी जगत उन्होंने करीब-करीब एक समानांतर सरकार जो उन्होंने संज्ञा दी है वह देश में चला रखी है और उसका सामना जो प्रशासनिक तंत्र हैं वह धीरे-धीरे गौण होता चला जा रहा है। यह उनका एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है।

इस रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार से अपराधियों ने अपना जाल बिछाया है। कैसे उसमें बड़े-बड़े अधिकारी, राजनीतिक लोग भी मदद करने में, ये लोग शामिल रहे हैं। अब चूँकि ये बात सामने आ गई है तो सबसे पहले तो यह जरूरी है कि जिस आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया वह आधार और वो तथ्य देश की जनता को बताया जाय, उसमें भी आनाकानी हो रही है। अभी स्पीकर साहब ने मीटिंग बुलाई है तो वहाँ पर गृहमंत्री ने कह दिया कि मेरे पास कोई डाक्यूमेंट नहीं है। और न मेरे पास इसके आधार हैं तो यह बात आई कि जब आधार ही नहीं हैं तो इतनी बड़ी रिपोर्ट कैसी बनी और रिपोर्ट की पहली ही दो लाईनों में यह स्पष्ट कहा गया कि कमेटी गठित की गई ताकि उन अपराधियों, सिंडीकेटों, माफियाओं की गतिविधियों के बारे में उपलब्ध जानकारी का जायजा लिया जा सके, अर्थात् जानकारी उपलब्ध थी। उसका ही जायजा लेकर ये सारी रिपोर्ट बनी और अब कहा जाता है कि हमारे पास कोई आधार ही नहीं है। कोई डाक्यूमेंट्स ही नहीं है। जिस प्रकार का व्यवहार इतनी गंभीर समस्या से निपटने का नहीं हो सकता।

दूसरी बात है जो आर्थिक, ये रिपोर्ट की एक कापी मैं इसलिए लाया हूँ ताकि आप लोग भी पढ़ें और जैसा उचित समझे लिखें जो भी करना हो करें। दूसरी बात जो आर्थिक परिस्थितियाँ निर्मित हुई है उदारीकरण आर्थिक ढाँचे का कोई उसके मूल उद्देश्यों या उसकी जो नीति हैं उससे खिलाफत किसी को नहीं है। यह हम सब जानते हैं कि आदमी को कुछ न कुछ तब्दीली अपनी सोच में अपने कार्यकलापों में करनी पड़ेगी और करने का यही फैसला दिया है। दुख की बात यह है कि उसके कार्यान्वयन में दो चीजें बिल्कुल नजरदांज कर दी गई। पहली ये कि भारत की लगभग 30 प्रतिशत जो आवादी हैं जो गरीबी रेखा के नीचे रहती है उनके लिए इस आर्थिक कार्यक्रम में किस प्रकार से उनको लाभ पहुँचाने का उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास होगा। यह कहीं बताने की कोशिश नहीं की। बार-बार कहने के बावजूद दूसरा परिवेश इसका जिसने समूची आर्थिक नीति को विकृत कर दिया, वो है उस नीति का कार्यान्वयन करीब-करीब ऐसा कोई भी कदम नहीं है, नए परिवेश में जो लिया गया हो जिसमें भ्रष्टाचार चरम सीमा पर न हुआ हो। चाहे वह बैंक की सिक्यूरिटी का हो, चाहे वो पब्लिक सेक्टर शेयरों को बेचने का सवाल हो, चाहे वो किसी भी क्षेत्र में नए उद्योगों को लाने का सवाल हो। मल्टी नेशनल देश में आएँ अपनी पूँजी लगाएँ। इसमें किसी को एतराज नहीं है। लेकिन वो पूँजी किस काम में लगे इसका फैसला तो देश के अन्दर होना चाहिए। इसका फैसला

बाहर से अगर हो, ये तो हमारी प्रभुसत्ता पर एक तरह से प्रश्नचिह्न लगाना है। प्राथमिकताएँ निर्धारित हो। ऐसे क्षेत्रों में पूँजी लगाई जाय, विदेशी जहाँ हमारे पास कमी हैं, टेक्नालाजी की कमी हो, या इतनी ज्यादा पूँजी लगनी है कि इतनी ज्यादा पूँजी देश के लोग नहीं लगा सकते।

हमारे देश की सुरक्षा की बात है। और ये नितांत आवश्यक है कि भारत की सुरक्षा का प्रश्न पर्दे के पीछे रहने की जरूरत नहीं है। क्या हो रहा है? कौन से खतरे हैं? जिनका मुकाबला करने की कोशिश की जा रही है। पाकिस्तान को सैन्य बल या सामग्री दी जा रही है। हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? कुछ चंद लोगों के बीच में छुपे रहने वाला भारत नहीं रह सकता। प्रजातंत्र में इसकी जानकारी देश की जनता को होना चाहिए। पृथ्वी जो मिसाइल प्रोग्राम था, उसे क्यों रोका गया। वो उधार लिया हुआ प्रोग्राम नहीं था। देश के वैज्ञानिकों ने अपनी दक्षता की वजह से कार्यक्रम चलाया जिससे बहुत बड़ी सैन्य शक्ति एक हुई। अब वह रोकी गई है। किसके कहने से रोकी है? क्यों रोकी है? अखबारों में पाकिस्तान को चेतावनी दे देना तो ठीक है। लेकिन उस चेतावनी को कार्यरूप में परिणित करना पड़े, उसके लिए तो नीति भी तो चाहिए चेतावनी से थोड़े युद्ध जीते जाते हैं। भारत ने कभी युद्ध करने की बात नहीं की। तीनों परिस्थितियों में देश पर आक्रमण हुआ। आज कुछ ऐसा महसूस हो रहा है कि देश के उन हितों को भी राजनीतिक लाभ और रंग देकर समझौते हो रहे हैं। यह बहुत खतरनाक प्रक्रिया है। जो हमारे देश के लिए भविष्य में खतरा पैदा कर सकती है। पहले तो इतना नहीं था। हमारी सरहदों में क्या हाल है वो तो सर्वविदित हैं। कश्मीर में, पंजाब में पहले से अपेक्षाकृत शांति है। लेकिन उत्तर पूर्वी राज्यों में शायद कश्मीर से भी ज्यादा विस्फोटक स्थिति है और वहाँ तीन अन्तर्राष्ट्रीय सरहदें मिलती हैं, बर्मा की, बंगलादेश की, चीन की वह एक ऐसा क्षेत्र बन गया है, जहाँ पर कि अगर यह कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, कि भारत सरकार का वहाँ पर शासन नहीं है। ये बात बहुत कटु लगती है, लेकिन यथार्थ है। वहाँ के जो आतंकवादी तत्व हैं, ऐसा शायद ही कोई व्यक्ति वहाँ पर हो, मैं गर्वनर की बात तो नहीं कह सकता, लेकिन जितने मंत्री हैं, अधिकारी हैं सब इनके सहारे जिन्दा हैं। इनको टैक्स देते हैं। मिलीटेन्स को अपनी सुरक्षा के लिए ऐसी स्थिति का निर्माण हो जाना और उसको तवज्जो न देना देश के हित के बहुत ही प्रतिकूल है। यह तीन-चार बातें हैं जो मुझे आपको कहनी थी, आगे सवाल जो आप करना चाहें करें।

प्रश्न: काँग्रेस का जो विभाजन हुआ, उससे आप क्या फर्क महसूस करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए विभाजन और आप जो इसे संज्ञा दें काँग्रेस के अन्दर ये पहली बार नहीं, छठी बार हो रहा है। ये हिन्दुस्तान में काँग्रेस की 20वीं शताब्दी के इतिहास को आप देखें। आप सबको मालूम है मैं उसका जिक्र करके आपका समय नहीं लेना चाहता। हम कोई वैचारिक आधार पर और कार्यक्रमों के दृष्टिकोण के आधार पर इस तरह का मूमेण्ट काँग्रेस के अन्दर चलाएगें। गाँधी जी के आने के समय से लेकर स्वराज पार्टी फिर सुभाष बाबू ने एक रास्ता अपनाया, उसके बाद 69 में फिर 77 में भी 77-78 में भी, और अब सवाल यह है कि काँग्रेस ने अपने लिए एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी स्वीकार की है, और वो भी किसी की मेहरबानी से नहीं। जिनके इतिहास का एक बहुत प्रमुख और मजबूत काँग्रेस पार्टी अस्त हो रही है, अंत हो रही है, इसलिए उसको जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ी है। जब भी कभी नेतृत्व पर बैठे हुए लोग इस ऐतिहासिक दायित्व को भुलाकर और अन्य चीजों में फँस जाते हैं। अपने-अपने स्वार्थ की बात हो या ऐसे विषय हो जिनका कि जिम्मेदारी से मतलब नहीं है, तो इस प्रकार का मूमेण्ट चले और वही मूमेण्ट अब है।

प्रश्नः आपने पार्टी के रूप में अपने राजनीतिक दल का रजिस्ट्रेशन नहीं कराया तो क्या वापसी की गुंजाईश है।

श्री अर्जुनसिंहः ये एक लीगल प्रोसेस है, जो लीगल प्रोसेस किया जा रहा है। इसके बारे में कोई सार्वजनिक डिवेट हम करना नहीं चाहते।

प्रश्नः क्या अन्य राजनैतिक दलों के साथ तालमेल करेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए तालमेल का जहाँ तक प्रश्न है इस विषय पर हम दिसम्बर के आखरी में या जनवरी में विचार करेंगे। जब एक दफे चुनाव का ये फैसला हो जाय कि कब होने वाला है। अभी तो कभी फरवरी में होता है तो कभी अप्रैल में होता है और जून भी हो सकता है, ये तय हो जाय।

प्रश्नः बेलाडीला 11बी की खदान के बारे में आपके बयान की आलोचना पटवाजी ने की है। आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः अब वो स्पष्टीकरण तो आप पटवा जी से माँगे जिन्होंने बयान दिया। मैं क्या स्पष्टीकरण दूँ मैंने ऐसा बयान कहीं नहीं दिया मैंने यह कहा है कि बेलाडीला 11बी की खदान के बारे में जो केन्द्र शासन का फैसला हुआ है वह औचित्य के आधार पर नहीं उसके पीछे और कारण दिखते हैं जिससे भ्रष्टाचार की भी शंका है और प्रदेश शासन से मैं यह अपेक्षा करता हूँ कि वह इस प्रदेश के हितों की अनदेखी नहीं करेगा। अगर खदानों को कानूनन दे सकते हैं। मेरी मान्यता है कि कानूनन दे ही नहीं सकते। लेकिन अगर दे सकते हैं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि 40 प्रतिशत उस बनने वाले नए संयंत्र में प्रदेश शासन का हिस्सा हो और जिसमें से 20 प्रतिशत इस अंचल के और खासकर के बस्तर के आदिवासियों को शेयर के रूप में दिया जाना चाहिए।

प्रश्नः प्रदेश शासन प्रदेश के हितों को अनदेखा कर रहा है। ऐसे आरोप लगते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः आपने बेलाडीला की बात की तो मैंने बेलाडीला का जवाब दिया और पूछते तो और जवाब देता।

प्रश्नः प्रदेश सरकार के कामकाज के बारे में कुछ बताएँगे?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए कामकाज वो तो रोजमर्रा का कामकाज है। वह तो हरदम चलता रहता है। कोई भी सरकार रहेगी लेकिन कुछ ऐसे कार्य जिससे कि प्रदेश निखरकर सामने आ सके, ऐसा कोई मुख्यमंत्री मुझे तो दिखा नहीं। अब जैसे आपके यहाँ डायमण्ड माइंस छत्तीसगढ़ में कौन सी जगह है देवभोग, अब ये बहुत बड़ी नैसर्गिक संपत्ति है। मैं नहीं समझता कि इसके प्रति जो रवैया अभी तक है वह प्रदेश के हितों को सामने रखकर हैं। वहाँ पर अवैधानिक रूप से खनन हो रहा है। बड़े-बड़े नेता बड़े-बड़े अफसर उसमें शामिल हैं। आए दिन आप ही लोग अपने-अपने अखबार में छापते हैं। क्या हुआ उसमें या तो इंटरनेशनल कंपनी की डीड मँगाकर जो सबसे ऊँचा डिल कर सकें, प्रदेश के हित में उसको दें, वो खनन करें। ठीक है अब ऐसे महत्वपूर्ण विषयों पर अगर अनमयस्कता दिखाई जाय और कुछ भ्रष्ट लोगों को उसका फायदा मिले या कोई प्रदेश का हित होता है इसमें।

प्रश्नः मध्यप्रदेश में राजनीति का अपराधीकरण क्या खतरनाक स्थिति पर पहुँच चुका है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए वोरा कमेटी की रिपोर्ट है उसने अलग-अलग राज्यों का उल्लेख किया है। वह रिपोर्ट आप पढ़ेंगे तो उन राज्यों में अभी मध्यप्रदेश का नाम नहीं है।

प्रश्नः आप पर एक आरोप लगाया जा रहा है कि आपने आदिवासियों को मुख्यमंत्री नहीं बनने दिया?

श्री अर्जुनसिंह: अब मैंने ऐसी कोई बड़ी रुकावट तो कभी नहीं डाली और मैं तो बनाने के पक्ष में हूँ। इस वक्त जो माँग उठी है, उस संबंध में मुझे इतना ही कहना है कि जितने विधायक हैं मध्यप्रदेश के सब लोगों ने शपथ-पत्र भर के और अपनी आस्था व्यक्त की है। काँग्रेस अध्यक्ष से। नरसिंहराव जी अगर ऐसा चाहते हैं कि ऐसा हो जाय तो बहुत सीधा सा तरीका है। विधायक दल की बैठक बुलाकर उस पर स्पष्ट निर्देश दें। दिग्विजय सिंह किसी अन्य को बनने दें और वो चुन लिया जाय।

प्रश्न: राजनीति के अपराधीकरण पर वोरा कमेटी की रपट सार्वजनिक क्यों नहीं की जा रही है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए इस वक्त यह मुद्दा किन्हीं घटनाओं को लेकर उठता है। अब उस पर कार्रवाई भी होती रही लेकिन यह रिपोर्ट कभी सरकार के सामने नहीं आई, अगर आती, वही तो मैं कह रहा हूँ कि गृहमंत्री ने उसकी कॉपीज़ बनाई थी। आप पढ़ेंगे मैंने यह रिपोर्ट की केवल तीन प्रतियाँ तैयार की। एक गृह राज्यमंत्री और एक गृह मंत्री को प्रस्तुत की जा रही है और तीसरी प्रति मैंने रखी है। गृहमंत्री द्वारा इस रिपोर्ट के अवलोकन के पश्चात् मैं उनसे अनुरोध करूँगा कि वे आगे की कार्रवाई के लिए वित्तमंत्री, राज्यमंत्री आंतरिक सुरक्षा और मेरे साथ विचार-विमर्श करने का कष्ट करें। इससे जो रास्ता निकलेगा हो सकता है उसे अमल में लाने से पूर्व प्रधानमंत्री जी की मंजूरी प्राप्त की जाय। वही मेरा कहना है। 5 अक्टूबर, 93 को ये उनको मिल गई थी और 23 अगस्त, 1995 तक उसमें कुछ नहीं हुआ। तीन प्रतियाँ थी तीनों उन्होंने अपने पास रख ली, हमें कैसे मालूम कि उस पर क्या कार्रवाई हुई।

Report on Criminalisation of politics

दिसम्बर 1995 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं :—

May I have your attention, please. At the outset I would like to express my apology for having this press conference on a holiday. Since this was special day for the task that we have undertaken I have given this trouble. The Statement has been distributed both in Hindi and English and the enclosure also. It is a matter of deep concern and anxiety to this country that a situation has been created which has been testified to by the report of Govt. of India itself. That the Mafia in this country is running a parallel Govt. and the State apparatus has been reduced irrelevantly. You are aware that this report was placed on the table of the Lock Sabha in the last session and a debate took place on it on 23rd August 95. The report itself since you have a copy in your hands I will not quote from it but only make reference to it. The very opening paragraph which gives the order under which this committee was formed. Says that it was scheduled to talk of the information that was available. All available information about the activities of crimes indicate mafia organisations which had developed links with and were being protected by Govt. functionaries and political personalities.

Now here is a question which has to be answered. We can all shrug our shoulder and say, well yes, report has come it has been debated in Parliament and that is the end of it. Yes, it could be the end of it like many things have ended up in this manner. But we believe and I think I am voicing the

opinion of cross-section of the people of this country that this thing can't be shut off, we can't shut over eyes to it, we can't under any circumstances ignore it.

The question is what can citizens do. In last week or say 10-15 days I have to talk some eminent people from different walks of life. They supplied and they feel that yes, it is a matter which should be taken up as people cause, behind the pale of politics.

It is for this reason that we have decided, to take this up as a campaign which will not be a political campaign it will be, as I said, a citizen's Campaign and to begin with we demand that the people of this country have a right to know as to what is the basis and what is the information on which this report has been written. Because the report has been written by very very important functionaries of the Govt. The Home Secretary is the Chairman, the Director of C.B.I. is the member, the Director of Intelligence Bureau is the member and the Secretary of the Revenue Department in the Govt. of India is also the member. They could not have been talking in the air and this is not a figment of the anybody imagination. But the people of this country want to know as to what is the basis on which this report has been written.

The right to know may not be a fundamental right in our constitution. But the right to know is a right under a democratic system which can not be ignored only at the cost of the system itself. Now awareness has to be created for this I have my colleague Mr. Kumar Mangalam who is much younger than me and therefore, much more active than me. We have decided to send a copy of this report, all over the country to eminent citizens of all work's of life specially Chairman of the Bar Association, Business Organisations, important people from other professional bodies, all members of the Legislative Assemblies of the Country because the MPs have already got a copy. We hope that this responsibility of the Govt. will be discharged by the 15th of Nov. 95 some how it is not done, then the second face of the campaign will have to begin which will be an agitational approach Parliament also will be coming into session and naturally we will try to see what we can do.

There one or two references are here. In this report which I only want to high light for your information, the kind of information that must had because reference has been made in Page-3. It concerns the para is 3-4 but towards the end of the paragraph, a deal with Mirchy, name is Iqbal Mirchy who was in the news recently in the London also with regard to his extradition or something like that. Now it says to elucidate this point the Director C.B.I. has given the example of Iqbal Mirchy of Bombay who till the late eightees was merely a visitor to passenger and carrierships to obtain liquor and cigaratte for selling the same at the profit. In the last three four years Mirchy acquired real state relieving crores of rupees he has many bank accounts and has been paying lakhs of rupees to his career. The growth of Mirchy is due to the fact that the concern enforcement agencies did not timely take action against him and later this perhaps became difficult on account of the

enormous patronage that he had developed. If Mirchy is investigated the entire patronage enjoyed by him and his linkages will come to light. Director C.B.I. has observed that there are many such cases as that of Mirchy where the initial failure has laid to the emergence of Mafia giants who have become too big to be taking. Now these are the specific example sighted. I see no reason why in one an half or two years that this report was with the Govt., this investigation could not take place obviously because as has been mentioned the patronage and the linkages are so powerful that will take, can't be done. This only gives you a peep into the whole thing. It goes into the electoral aspect which also will have to be looked into, there are places where people are not allowed to exercise their rights of vote freely and fealessly again under the influence of local, That means you are in a way poluting the democratic system at the very beginning. I mean it I am forced to vote for somebody for whom I don't want to vote obviously. The result of that exercise can't be called representative. This is the whole gammut that goes into this issue and I know such an effort can't be carry forward without the support and critical support of the media of this country and forgive me if I say little from what is classically a Press Conference to make a personal appeal to you that we want you to give us support on this issue for the interest of our polity and the nation, which I think is now being confronted with a situation, which could become unmanageable if these things are not brought within control. In this regard we are going to all places in the country have seminars, have interactions these people even with the State Govt. We will try to interact with all political parties whoever is interested so that a national concern becomes evident and we feel that could be the only pressure under which these things could be handled in the interest of the country. This is all I want to say then of course, open to question. I can't be answering on behalf of the mafia so don't put me any questions regarding any mafia, anything else that you would like to say.

Q: The Vora committee report was discussed in parliament that discussion had been repeated. Why other political parties not cooperating with you on this matter.

Shri A.S.: Well, I don't think tell me, any difficulty, any political party to extend co-operation this matter and so far as the question of having being debated and reported. Yes, the debate has been reported no doubt, to the extent that the Press came in its own way. But I don't think the Vora report has been publicised to the extent that perhaps it should have been and I don't it is let at all, it is being taken up in today.

Q: Is it true that you are playing politics in publicising this issue of criminalisation of politics?

Shri A.S.: You see, there is no doubt that this is a fairly daunting task but that does not mean that the task should not be taken up so far as the question of the political frame work in which this has to be done that will evolve. I mean I don't want to pressurize anything

when they will be interaction with lawyers, with other professionals naturally a format will emerge which will be capable of taking up this matter for example, I have just used the term right to informations, now right to information is a well understood term. But it remains the term if the people and people who are knowledgeable ultimately can bring about a draft on this issue they could ask for that to be passed. Now there are things which one can not say straight away that what is going to happen in the next month or the months thereafter but issue is such that it is bound to get the support of all people who want this to be all right thinking people who want this to be tackled.

Q: Are other political parties supporting you on this issue?

Shri A.S.- I think you have not perhaps understood the very basis on which I have started what I want to say enlightenment starts from the backward so you don't have to be a apoligetic about it. The point is I believe and I think I am not saying any thing which will be contradicted by any political party that every political party is concerned about it and would like to do the right thing about it. Now one is prepared to condone it this has come on record during the debate also and so many other occasions. So I don't see any difficulty that any political party is going to shy away from its responsibility in this regard. That is only the question of co-ordinating it acting together and that is how things will happen. If the issue is serious enough, if the matter is quite pertinent the interest of the country I see no difficulty.

Q: What is your opinion about right to information?

Shri A.S. : That may be one of the thing that I said that will emerge right information to something which the lawyers and these people they will have to bring about that format on which this can become a legislative instrument.

Q: क्या रिपोर्ट अधूरी है?

Shri A.S. : रिपोर्ट तो अधूरी नहीं है लेकिन जो आप कह रहे हैं, वह इस रिपोर्ट की पुष्टि करती है जो कुछ भी इसमें लिखा है और मैं समझता हूँ कि कानून किसी के लिए दो स्तर पर नहीं हो सकता है, चाहे वह कोई धर्म गुरू हो या चाहे कोई साधारण व्यक्ति हो, चाहे राजनीतिक नेता हो, तो अलग-अलग तो हो नहीं सकता मापदण्ड।

भारत में सबसे बड़ा हिन्दू धर्म है। यहाँ हिन्दू सबसे ज्यादा हैं। मुझे गर्व है कि मैं हिन्दू हूँ। पर हम हिन्दू धर्म के सच्चे अनुयाई तभी बन सकते है जब हम प्रत्येक अन्य धर्म का सम्मान करें। यह हमारी परम्परा है, यही हमारा मौलिक सिद्धान्त है।

— श्री अर्जुनसिंह

29 जून, 1996

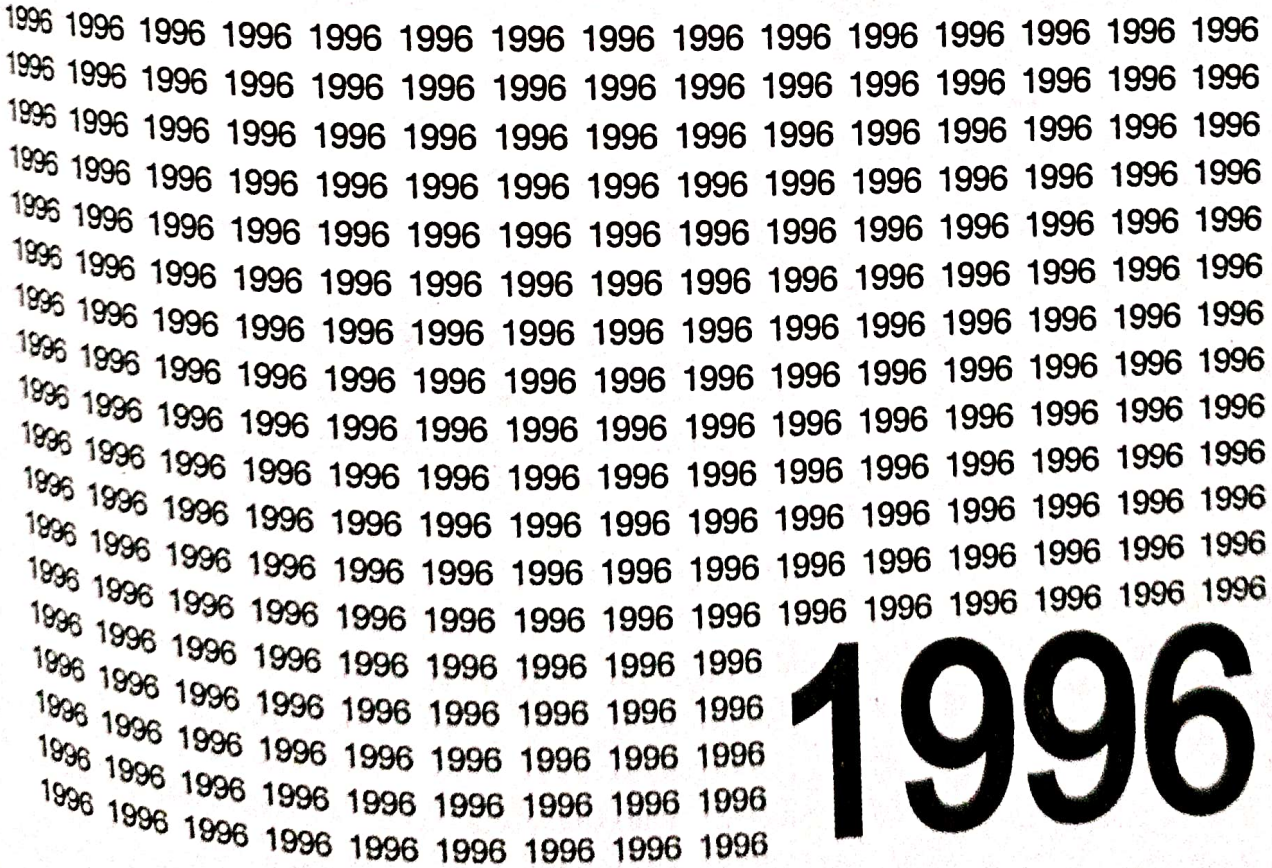

1996

श्री अर्जुनसिंह: मध्यप्रदेश में

देश में गठबंधन की सरकार का चलन शुरू

फरवरी 1996 सतना में इंदिरा कॉंग्रेस कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

उन बातों को, जिनको लेकर मैं आपके बीच में आया, चुनावों के दौरान और उसके पहले भी और देश के कोने-कोने में भटका, आज उन सब पर अमल करने का फैसला है। मैं कैसे कहूँ कि हम युद्ध जीत गए हैं। भ्रष्टाचार के मामले में, अपराधीकरण के मामले में साफ-साफ कहा गया कि भ्रष्टाचार और विशेषकर उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार के बारे में कानून के तहत जो भी कार्रवाई होगी, हम किसी व्यक्ति के खिलाफ नहीं हैं किसी के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहते, लेकिन कानून अपने रास्ते पर चलेगा। उसे रोकने की इजाजत किसी को नहीं दी जाएगी और जो भी कानून के तहत होगा, वो होगा।

जब इतिहास करवट बदलता है, तो उथल-पुथल थोड़ी होती है। आज अगर एक से बड़ी उपलब्धि कोई मानता है, जिसे कम से कम मैं मानता हूँ, वो यह है कि एक तरफ कम्युनिस्ट पार्टी के लोग, एक तरफ असम गणराज्य परिषद के लोग, एक तरफ जनता दल के लोग, सामाजवादी पार्टी के लोग, तेलगू देशम, डी.एम.के..सबके अलग-अलग मुद्दे हैं, सबने एक दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ा, लेकिन जब यह बात साफ उभर कर सामने आई कि देश के सामने साम्प्रदायिकता की चुनौती है, उस चुनौती का मुकाबला करने के लिए सब एक हो गए और यही नहीं, सबने बैठ कर एक न्यूनतम कार्यक्रम बनाया, जिसका सीधा मतलब किसी एक पार्टी के वर्चस्व से नहीं है कि जनता दल ने अपनी बात चला ली। कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी बात चला ली या और किसी ने चला ली। सबने अपने-अपने मेनिफेस्टो में जो कुछ भी लिखा हो, सभी घोषणा-पत्रों से देश के हित में नितान्त और प्राथमिक रूप से जरूरी थी, उन चीजों को एक साथ बैठ कर, फैसला कर के और एक कार्यक्रम बना लिया गया कि इस से बड़ी उपलब्धि पिछले पचास वर्ष के इस देश के राजनीतिक इतिहास में दूसरी नहीं हुई।

जो लोग समझते थे कि ये तो कार्यक्रम क्या बनेगा? इसके पीछे तो लट्ठ चल जाएँगे। एक दूसरे के सर फूट जाएँगे। तो फिर कल वह कार्यक्रम प्रधान मंत्री ने समाचार-पत्रों को दिया। आज सभी समाचार-पत्रों में देख लीजिए। क्या टिप्पणी हो रही है? राजनीतिक रूप से जो उसका विरोध करते हैं वे तो करेंगे, लेकिन अतंतः सबको विश्वास करना पड़ा कि समन्वय से, चूँकि जनमत से जैसा कि मैंने आपसे कहा कि जनमत का आदर करना चाहिए, इस चुनाव में जनमत ने किसी एक पार्टी को बहुमत नहीं दिया और हम चाहते हैं कि एक पार्टी की सरकार बने तो यह कैसे हो सकता है? जनमत का आदर करने का मतलब यह है कि देश के हित में जो सब ठीक समझते हैं, उस पर सहमति हो और उस पर अमल कर के देश को आगे बढ़ाने की कोशिश की जाए। और इस प्रयास में इंदिरा कॉंग्रेस की तरफ

से हम लोग भी शामिल हैं और हमें इस प्रयास में इंदिरा काँग्रेस की तरफ से हम लोग भी शामिल हैं और हमें इस बात का संदेश भी है और मैं अपना सौभाग्य भी मानता हूँ कि सारे मुल्क के राजनीतिक नेताओं के बीच में बैठ कर इस दिशा में बढ़ने के लिए जो कुछ थोड़ा-बहुत प्रोग्राम जो हम लोगों से हो सका, हम ने देने की कोशिश की है।

आज से पाँच - छः दिन पहले मैंने स्वयं श्री कुशवाहा जी को अपने घर बुलवाया था, जो यहाँ से चुनाव जीते हैं, सतना से। उनके साथ रीवा के भी सांसद आए। मैंने उनसे कहा कि अब जनता ने आपको सतना निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधि चुना है। जब चुनाव था तो तब हम एक-दूसरे के सामने थे। जनता ने फैसला किया। अब जनता के लिए हम एक-दूसरे के सामने नहीं। अब हम कंधे से कंधा मिला कर जनता का काम करेंगे।

मुझे बहुत दुःख हुआ, जब समाचार मत्रों में कुछ ऐसे समाचार छपे। कहीं जाति के नाम पर लड़े। कहीं हमारे समर्थक ओर उन के समर्थक लड़े। मैं आप से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि अगर हम प्रजातंत्र को चलाने का मिजाज पैदा नहीं कर सकेंगे, तो यह प्रजातंत्र नहीं चल सकता। प्रजातंत्र को चलाने का मिजाज दुश्मनी पैदा करना नहीं होता वरन् प्रतिद्वंदिता पर आधारित होता है। राजनीतिक प्रतिद्वंदिता व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता नहीं।

अभी भाई रामाश्रयजी ने जो बातें कहीं मैं उनका सम्मान करता हूँ और यह मानता हूँ कि निश्चित रूप से कुछ भूलें हुई हैं। यथार्थ का दर्शन न कर पाना इससे बढ़ कर कोई कमजोरी नहीं हो सकती। इतना तो आप विश्वास मानिए कि जिम्मेदारी तो मैंने अपने कंधों पर ले ली है, लेकिन यथार्थ का दर्शन नहीं हुआ है ऐसा मत समझिएगा पूरी तरह से मुझे यथार्थ का दर्शन हुआ है। यह जिंदगी किन्तु और परन्तु से नहीं चलती। किन्तु और परन्तु में वो लोग फँसते हैं, जो पूरी तरह से थके माँदे सुस्त होकर अब विश्राम करना चाहते हैं। वो विश्राम की मंशा मेरी नहीं है।

अब वह समय है कि दोगुने उत्साह से, दो गुने साहस से हम उन मौलिक संघर्षों के लिए तैयार हो जाएँ तो आने वाले समय में जो हमारे देश में होने वाले हैं। विकास का संघर्ष कोई बटन दबाने वाला संघर्ष नहीं होता और भारत जैसे देश में जहाँ गरीबी और अमीरी के बीच में कितना फासला है? एक जमीन के नीचे रह रहा है, एक आसमान पर बैठा हुआ है अगर हम इन दोनों को बराबरी पर लाना चाहतें हैं तो क्या वो आँख मूँद कर माला जपने से तो नहीं होगा। बड़ी मेहनत लगेगी। ऐसे ठोस और कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे, जिससे कुछ लोगों को तकलीफ हो सकती है। कुछ लोगों को उसका उलटा असर भी हो सकता है। कुछ लोग चुनाव भी हार सकते हैं।

हम सब मिल कर देश के अंदर उन आदर्शों और मूल्यों को जिनसे भारत सदैव जाना गया है, पहचाना गया है और जिसकी वजह से भारत की शान दुनिया में हजारों वर्ष तक कायम रही, वे मूल्य और आदर्श आज फिर से हमें स्थापित करने हैं। एक छोटे-से गाँव से लेकर और दिल्ली की राजधानी तक।

एक फैसला हुआ है, उसकी घोषणा कल हुई है कि संसद में चुने हुए प्रत्येक व्यक्ति को साल में एक दफे अपनी चल और अचल संपत्ति का लेखा-जोखा, लोकपाल के कार्यालय में देना होगा। यह ऐसे निर्णय हैं, जिन पर आगे चल कर हमारे राजनीतिक जीवन में आज जो बुराईयाँ आ गई हैं, जो भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है, हमें उस को दूर करना है।

और अंत में मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो लोग यहाँ आए हैं, बहुत से लोग नहीं आए है। जिन्होंने अपने श्रम से अपनी शक्ति का उपयोग पिछले चुनाव में इंदिरा काँग्रेस के सिद्धान्तों के लिए और मेरे लिए जो योगदान दिया है, उसके लिए मैं हृदय से आप सब को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। जय हिन्द।

चुनाव के पूर्व पन्द्रह हजार करोड़ रुपये का सौदा

मई 1996 भिण्ड की चुनावी सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

सभा के सम्मानित सभापति महोदय, मंच पर विराजे हुए सभी आदरणीय साथियों, इस सभा में पधारे हुए दूर-दूर अँचलों से और भिण्ड नगर के सम्मानित साथियों, आदरणीय बहनों और भिण्ड लोक सभा क्षेत्र के इंदिरा काँग्रेस के उम्मीदवार श्री राजेश सिंह भदौरिया। आज जब सुबह से भिण्ड जिले में प्रवेश किया है, मुझे तरह-तरह की भावनाएँ सामने आई हैं। भिण्ड का वो स्वरूप भी मैंने देखा है, जो हताशा का, निराशा का और उसके समकक्ष उग्रता और हीनता का। जहाँ बात बनती और बिगड़ती बंदूक की नोक पर थी। उस भिण्ड का भी मैंने दर्शन किया है। जहाँ की उर्वरा भूमि करोड़ों-करोड़ों टन अनाज किसानों और खेतीहर मजदूरों की मेहनत से हमारे देश को मिलती है और मैंने उस भिण्ड का भी दर्शन किया है, जो प्रतीक है साहस का, शौर्य का, धैर्य का और चुनौतियों से संघर्ष करने की असीम क्षमता है, उसी भिण्ड की पवित्र भूमि पर मुझे फिर से आने का सौभाग्य मिला। सबसे पहले मैं उस भिण्ड को नमस्कार करता हूँ।

यहाँ पर हजारों की संख्या में सैनिक जो फौज में काम कर रहे हैं और जो निवृतमान सैनिक हैं, जिन्होंने देश की सेवा कर के और अपने हर प्रकार के त्याग और बलिदान दिए हैं, उनको भी नमस्कार करता हूँ। यह सब कहना आज इसलिए लाजिमी हो गया है, क्योंकि भारत की जो पहचान है, वो इन्हीं चीजों से बनी हैं। मुझे बहुत दुःख है कि जिस भारत को सरदार भगत सिंहजी ने, चन्द्रशेखर आजादजी ने, असफाक उल्लाजी ने और अनेक काँतिकारियों ने फाँसी के तख्ते को चूम कर आजादी दिलाई, जिसे देश के लाखों स्वतंत्रता सँग्राम सेनानियों ने अपना जीवन वर्तमान देश के भविष्य के न्यौछावर किया और जहाँ गाँधी का खून बहा, इंदिराजी का खून बहा और राजीव गाँधी का खून बना, उस धरती पर आज अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार का ताण्डव नृत्व हो रहा है।

खास तौर से देश के और भिण्ड के नौजवान भाइयों और बहनों से कहना चाहता हूँ कि जो मशाल राजीव गाँधी के हाथों से हत्यारों ने छीनी और जमीन पर गिरी, उस मशाल को उठाओ। बहुत लम्बी-चौड़ी बातें लोग करते है। पोस्टरों में छपता है कि हम राजीव गाँधी के सपनों को साकार करेंगे।

ये विडम्बनाएँ हैं, जो आज के भारत को सता रही हैं। और यदि हम सब इनकी ओर नजर नहीं डालेंगे तो देश के वो दुश्मन, देशी और विदेशी जो हर दम इस ताक में रहते हैं कि कहाँ कोई कमजोरी दिखे और हम बिलकुल हावी हों और उसको विश्वास हो जाएगा कि सचमुच में भारत की आत्मा सो गई है, यहाँ के लागों की गैरत सो गई है, जहाँ के लोगों का स्वाभिमान समाप्त हो गया है।

भारतवर्ष काश्मीर से कन्याकुमारी तक और अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक एक विशाल भौगोलिक देश है, लेकिन उसकी यह विशालता केवल भौगोलिक नहीं है, इस सीमाओं के अंदर दुनिया का कोई ऐसा धर्म नहीं है, जिसे सम्मान और स्थान भारत में न मिला हो। चार हजार से ऊपर जातियाँ हैं। सोलह से ज़्यादा भाषाएँ हैं और रीति-रिवाज की कोई गिनती ही नहीं है। हर पन्द्रह मील, हर बीस मील, हर पचास मील पर रीति-रिवाज बदलते रहते हैं। ऐसे देश में अगर यह भावना कमजोर हो गई कि इस देश में सबको बराबर का हक है, न कोई बड़ा है, न कोई छोटा है, तो फिर उसी झंझट में ही हम एक - दूसरे का सर फोड़ कर और सबको किनारा लग जाना पड़ेगा। इसलिए यह जरूरी है कि धर्म - निरपेक्षता का सिद्धान्त स्वीकार हो।

भारत के हजारों कार्यकर्ताओं ने काँग्रेस के यह तय किया कि नेता हमें छोड़ कर चले जायँ। नेता संस्था को

डुबोने की बात करते रहें। कार्यकर्ता ऐसा नहीं करेगा। और इसलिए इंदिरा काँग्रेस का गठन हुआ। और इंदिरा काँग्रेस को मान्यता मिली सारे देश में। आज तीन सौ से ज्यादा उम्मीदवार इंदिरा काँग्रेस के चुनाव लोक सभा का लड़ रहे हैं। और चुनाव चिन्ह मिला है पुष्प चढ़ाती हुई महिला।

इसलिए मैं आज एक आपसे प्रार्थना करने आया हूँ भिण्ड के भाइयों और बहनों से कि इस मौके पर देश के हित को ध्यान में रख कर भारत के भविष्य को ध्यान में रख कर अपनी नई पीढ़ी का भविष्य ध्यान में रख कर आप इंदिरा काँग्रेस के उम्मीदवार को अपना सहयोग दें। श्री राजेश भदौरिया हमारे जो उम्मीदवार हैं चुनाव चिन्ह जैसा मैंने कहा पुष्प चढ़ाती हुई महिला, जिसे आप देखना चाहें तो माँ के रूप में देख सकते हैं। जिसे आप देखना चाहें तो बहन के रूप में देख सकते हैं और वो कर क्या रही हैं? भारत माता के चरणों में पुष्प चढ़ा रही हैं।

यह मेरी आपसे प्रार्थना है। आप मेरी बात इतनी कड़ी धूप में बैठ कर सुनी और यहाँ सब आने की आपने मेहरबानी की, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

उदारीकरण से आर्थिक ढाँचा चरमराया

मई 1996 मुरैना की चुनावी सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

परम आदरणीय जौहर सिंहजी, इंदिरा काँग्रेस के हमारी सम्मानित सभी साथियों, सी.पी.आई., सी.पी.एम. और जनता दल के सम्मानित प्रतिनिधिगण मुरैना के इस ऐतिहासिक नगरी के सम्मानित नागरिक बंधुओं, माताओं, बहनों और भाइयों, मैं कुछ विलम्ब से उपस्थित हो पाया आपके बीच में, जो असुविधा और कष्ट आपको हुआ, सर्वप्रथम मैं आपसे उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

आज मुरैना की इस सभा में अपने जाने-पहचाने मध्यप्रदेश के बहुत आदरणीय राजनीतिक हस्ती बाबू जौहर सिंह जी को मंच पर पाकर मुझे बहुत-बहुत खुशी है। बाबू जौहर सिंह एक प्रखर समाजवादी नेता हैं। और उनके चिन्तन का बहुत गहरा प्रभाव इस अँचल में है। और बहुत गहरा प्रभाव मुझ पर है। हमारी सी.पी.आई. के, सी.पी.एम. के और जनता दल के सम्मानित प्रतिनिधिगण भी मंच पर हैं। मैं उन सबका हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, सम्मान करता हूँ।

यह सब क्यों हुआ है? यह सवाल आज पूछने की जरूरत है इसके पहले कि मुरैना में इस तरह की सभा नहीं हुई। हम लोग आए। अपनी बात बोले। चले गए। आपने फैसला किया। आज देश के अंदर यह ध्रुवीकरण क्यों हो रहा है? विचारों की, शक्तियों की, ये आज यह महत्वपूर्ण विषय है। आपके सोचने के लिए। यह हम लोग केवल दोस्ती, रिश्तेदारी में यहाँ नहीं बैठे हैं। हम लोग इसलिए एक साथ हैं कि जब देश के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग जाए अर्थात् हमारे देश की आजादी पर प्रश्न चिन्ह लग जाए तो कम से कम उन लोगों को तो एक साथ बैठ कर सोचना पड़ेगा, जो भारत के भविष्य के बारे में, एक तरह से सोचते हैं और कम से कम जो मूल सिद्धान्त हैं, उनमें सब में मतैक्य है, एकता है।

सबसे बड़ा सिद्धान्त है धर्म निरपेक्षता का। अगर भारतवर्ष का स्वरूप यह रहना है जो आज है। खण्ड-खण्ड नहीं होना है तो दूसरा कोई विकल्प नहीं है सिवाय इसके हम धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त के बारे में अपने दिल और दिमाग को साफ रखें।

ईसा मसीह के लोग दो हजार साल पहले जब वहाँ उनके ऊपर अत्याचार हुआ तो भारत आए। यहुदियों अत्याचार हुआ तो वे भारत आए। पारसियों पर अत्याचार हुआ, उन्होंने भारत में शरण ली और आज सब सम्मान के साथ अपने देश में है। यह नहीं कि हम सब पारसी बन गए या क्रिश्चियन बन गए या यहूदी बन गए। लेकिन उनको अपने धर्म के रीति-रिवाज को पालन करने की पूरी आजादी है। इस प्रकृति को धक्का लगा।

इसके बाद उदारीकरण की नीति आई। हम सब जानते हैं कि बदलती हुई दुनिया में तब्दीलियाँ होंगी, आर्थिक नीतियों में, आज कोई भी देश दुनिया का इससे इंकार नहीं कर सकता। अपने देश के अंदर हर पार्टी उसको स्वीकार करती है। लेकिन कोई आधार तो बनना चाहिए। जिस देश में तीस प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे आज भी रहते हो। कोई भी आर्थिक ढाँचा नहीं बनाया जा सकता है, उनकी जरूरतों को हितों को ध्यान में रखे बिना प्रोजेक्ट की बात मै आप को बताऊँ।

जो काँग्रेस का संघर्ष है। इंदिरा गाँधी की नीतियों और कार्यक्रमों का संघर्ष है, उस संघर्ष को आगे ले जाने के लिए इस चुनाव में हमें आपसे प्रार्थना करने के लिए हाजिर होना पड़ा।

सारे मुल्क के लोगों को अधिकार उस कागज के मतपत्र के टुकड़े के माध्यम से मिला था। यही विश्वास है जनता का प्रजातंत्र का। आपने सल्तनतें बदलीं। आपने लोगों को बदला। आपने और तो छोड़ दीजिए श्रीमती इंदिरा गाँधी को चुनाव में हराया। उनकी पार्टी को हराया। क्योंकि आपका अधिकार है। अगर वो अधिकार आज खण्डित हो गया। वो अधिकार इन लोगों के खरीद-फ़रोख्त के अंदर आ गया, तो आपको कौन पूछेगा?

हम लोगों की बात तो छोड़िए। फिर तो इस देश में डिक्टेटरशिप होगी। एक डिक्टेटर होगा और सबको हुकुम चला कर कहेगा, जैसा मैं कहता हूँ करो और उम्मीद की जाएगी कि जितने बड़े-बड़े नेता और लीडर हैं, वो हाथ जोड़ कर कतार से खड़े हो जाएँ। क्या आप चाहते हैं कि भारत का यह हाल हो?

ऐसा न हो यह कारण है कि आज इस मंच पर हम अलग-अलग पार्टी के लोग, अलग-अलग विचारधारा के लोग, देश के मुद्दे पर एक साथ हैं और एक मंच पर बैठ कर आपसे बात कर रहे हैं। और आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि यह मौका है, जब .... आप सही निर्णय लेकर प्रजातंत्र को बचा सकते हैं।

धन्यवाद।

मजदूरों को हक की लड़ाई स्वयं लड़ना हैं

7 जून 1996 मोरवा (मध्यप्रदेश) की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं:—

आदरणीय श्री श्याम कार्तिकजी, तथा मोरवा-बेरहन से यहाँ आए हुए आदरणीय माताओं, बहिनों और भाइयों काफी देर से यहाँ आप लोग इंतजार कर रहे हैं। थोड़ी माईक की व्यवस्था बिगड़ने से आपको जो कष्ट हुआ, सबसे पहले तो मैं उसके लिए आप से माफी चाहता हूँ।

मैं शुरू से इस बात को कहता आया हूँ कि ऐसे अँचलों में जहाँ विकास की रफ्तार एकाएक तेज हो जाती है राष्ट्रीय संदर्भों में, वहाँ पर कई स्थानीय विरोधाभास पैदा हो जाते है और अगर उन विरोधाभासों को सही ढंग से नहीं देखा जाता तो समस्या और जटिल और भयावह होती चली जाती है। सबसे बड़ी बात तो रोज़गार की है और उन लोगों की है, जिनकी भूमि लेकर आज यह देश की ऊर्जा राजधानी इस अपने नए स्वरूप को ग्रहण कर रही है। मैं जानता हूँ, उस दिशा में काफी कुछ हुआ है, लेकिन बहुत कुछ होना बाकी है।

सिंगरौली में टेक्नीकल स्कूल इसीलिए कायम हुआ। पोलेटेक्निक इसीलिए कायम हुआ कि यहाँ के स्थानीय

लोगों को और फिर मध्यप्रदेश के लोगों को ट्रेनिंग लेकर और यहाँ पर नौजवानों को नौकरी मिले। अब इस प्रकार के आदेश भी हो गए हैं कि साठ प्रतिशत यहाँ के इम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज से लोगों को लिया जाए। लेकिन इस पर अमल हो रहा है कि नहीं हो रहा है, यह एक महत्त्वपूर्ण बात है, और मैं ऐसी उम्मीद करता हूँ, यहाँ के जो प्रबंधक लोग हैं, वे इस बात को सुनिश्चित करेंगे, ताकि इस मामले में शिकायतें न हों। साथ ही साथ जन प्रतिनिधियों की भी यह जिम्मेदारी है और खास तौर से मैं अपने इंदिरा काँग्रेस के साथियों से कहना चाहता हूँ कि ऐसे ही मसलों से नजदीक से जुड़ कर ही हम संस्था को भी, पार्टी को भी लोगों के नजदीक ले जा सकते हैं। केवल मीटिंग कर के, भाषण कर के उतने से काम नहीं चलेगा।

जहाँ भी इस प्रकार की कोई समस्या आए, उस समस्या के बारे में सबसे पहले जनमत तैयार करना, जिनकी जिम्मेदारी है, स्थानीय प्रशासन हो या एन.टी.पी.सी. या कोल इण्डिया हो, इनसे सतत् सम्पर्क बना कर उन समस्याओं का सुलझाना और सुलझाने की कोशिश और जब कभी ऐसी कोई आवश्यकता पड़े, जैसा अभी जनपद अध्यक्ष जी कह रहे थे कि अब सब्र से ऊपर बात चली गई है, तो मैं उनसे भी कहता हूँ और अपने इंदिरा काँग्रेस के साथियों से भी कहता हूँ कि जनता से जुड़ कर एक जोरदार संघर्ष छेड़ने की जरूरत है।

पिछले चुनाव में एक बात साबित कर दिया कि भारत की जनता ने इस मामले में बहुत साफ अपनी राय जाहिर की है। सभी धर्मनिरपेक्ष ताकतों ने मिल कर साम्प्रदायिकता के बढ़ते हुए कदमों को रोकने की कोशिश की और आज केन्द्र में जो संयुक्त मोर्चे की सरकार देवगौड़ा के प्रधान मंत्रित्व में बनी है, उसके पीछे यही सबसे पहली सोच है।

परसों संयुक्त मोर्चे का घोषण पत्र कहिए या न्यूनतम कार्यक्रम कहिए, वो घोषित हुआ है और ऐसी ही कोशिश की गई है कि इस कार्यक्रम के तहत भ्रष्टाचार के खिलाफ, राजनीति के अपराधीकरण के खिलाफ संघर्ष किया जाएगा। हम किसी के खिलाफ जान बूझ कर पड़ने के पक्ष में नहीं हैं। लेकिन यदि न्याय और कानून की नजर में किसी ने गलती की है, तो ऐसे किसी की रक्षा करने की भी जरूरत नहीं है।

दूसरी ओर कुछ जन कल्याणकारी निर्णय भी हुए हैं। उन निर्णयों को कार्यक्रम में परिणित करने की जरूरत है। इनमें से एक निर्णय केवल जो स्थिति आप यहाँ देख रहे हैं, वहाँ तक नहीं, सारे देश में जहाँ नैसर्गिक साधन हैं, कोयला है, लोहा है, ताम्बा है, अभरक है। यह सब जंगली हिस्सों में है। पहाड़ों में है और वहाँ के रहने वाले कौन हैं? आदिवासी हैं। अगर हम कोई विचार से काम करेंगे। कहीं कोई कारखाना लगेगा। कोई पावर हाउस लगेगा। कोयले की खदान शुरू की जाएगी। तो आखिर जमीन तो उन्हीं की है, जो ली जाएगी। और जब उनके द्वारा जो सदियों से जमीन के माध्यम से अपना उदर पोषण करते थे, जो उनके हाथ से छिन कर, यह कह कर कि राष्ट्र के हित में इसलिए लिया जा रहा है, अपनी जगह ठीक है। लेकिन जहाँ के जो मूल निवासी हैं, वे भी देश के नागरिक हैं। उनके अधिकारों को कुचल कर नजर अंदाज करके बड़े-बड़े कारखाने देश में नहीं लग सकते।

इसीलिए इस न्यूनतम कार्यक्रम में एक फैसला किया गया है कि ऐसी तमाम परिस्थितियों का पूरी तरह से सर्वेक्षण, समीक्षा, विवेचन करके एक कमीशन नियुक्त किया जाएगा, जो छः -सात महीने के अंदर ऐसे हर क्षेत्र में जो इस प्रकार की समस्याएँ उठी हैं, जहाँ गरीबों को विकास के नाम पर पीछे ढकेलने का एक सिलसिला शुरू हो जाता है, कैसे उसको रोका जाए? और उनके हितों की कैसी रक्षा की जाए? यह कमीशन को जिम्मेदारी देने का फैसला किया गया है।

एक फैसला यह हुआ है कि महिलाओं की शासकीय नौकरी में संविधान में सशोधन करके तीस प्रतिशत आरक्षण दिया जाए। पार्लियामेंट और विधान सभाओं को पंचायत के मुताबिक उसी के आधार पर सदस्यता के लिए भी उतना प्रतिशत देश की महिलाओं को दिया जाए।

जहाँ तक मजदूरों का सवाल है। मजदूरों के हक और हुकूक की लड़ाई केवल वे स्वयं लड़ें, यह जरूरी नहीं है। उनके हक और हुकूक सुनिश्चित रहें, सुरक्षित रहें, इस मामले में बहुत स्पष्ट रूपरेखा कार्यक्रम की दी गई है। और हमारे ऐसे अँचलों के लिए जैसा कि सिंगरौली है सीधी का करीब-करीब पूरा भाग ही है। मध्यप्रदेश का बहुत बड़ा हिस्सा है। जहाँ आदिवासी और हरिजन और पिछड़े वर्ग और गरीब लोग रह कर तेंदू-पत्ता तोड़ते है।

मै आप सब बहनों और भाइयों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। और पुनः माफी माँगता हूँ कि इस धूप में आपको यहाँ आना पड़ा। आपके प्रति हम सबका जो कर्तव्य है, वह पूरा होगा। आपका स्नेह और आशीर्वाद को कायम रखने के लिए पूरी तरह से संकल्पबद्ध हैं हम सब लोग।

बहुत-बहुत धन्यवाद्। जय हिन्द।

हिन्दू सब धर्मों का सम्मान करता है

29 जून 1996 भोपाल में प्रदेश इंदिरा काँग्रेस के पदाधिकारियों को दिए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

माननीय इंदिरा काँग्रेस के अध्यक्ष भाई धृतलहरेजी, साथियों, मैं बहुत आभारी हूँ कि आप सब लोगों ने समय निकाल कर यहाँ पधारने का कष्ट किया, एक दिन विलम्ब से आने की वजह से आपको जो असुविधा हुई, उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

यह बैठक इसलिए आवश्क थी, क्योंकि संघर्ष में जुड़े हुए लोगों को कभी गफलत में नहीं पड़ना चाहिए। जो संघर्ष नहीं करते, वो खुद भी गफलत में रहते हैं और दूसरों को भी गफलत में ही डाल कर रखना चाहते हैं। यह बात कही जाती है कि इंदिरा काँग्रेस ने चुनाव में बहुत बड़ी शिकस्त पाई। कल शपथ समारोह में एक बड़े सांसद जो हैं, अपने प्रदेश के, वहाँ पर भी उन्होंने मुझ से यह कहा कि इसके बावजूद आप के चार सांसदों में दो सांसद को मंत्री बना दिया गया। तो मैंने उनसे यही कहा कि यही तो आप लोग समझने में गलती करते हैं। चार हों या दो हों, ये मत भूलिए कि इस देश में परिवर्तन की लहर को चलाने वाली इंदिरा काँग्रेस ही है।

आज काँग्रेस के साथियों को अपने दिल पर हाथ रख कर सोचने की जरूरत है। हम काँग्रेस से बगावत करके नहीं निकले हैं। हमने काँग्रेस से इस्तीफा दे कर, काँग्रेस को पराजित करने का संकल्प नहीं उठाया था। कभी-कभी इतिहास को इतना जल्दी भुलाना भी नहीं चाहिए। चाटुकारों और खुदगर्ज लोगों के तालियों के बीच में सच छिपता नहीं है, थोड़ी देर के लिए धीमा हो सकता है।

मध्यप्रदेश में क्यों आदिवासियों का विश्वास काँग्रेस पर से उठा? पिछड़े वर्ग के लोगों का विश्वास क्यों कम हुआ? आदिवासी, हरिजन और पिछड़े वर्ग मिल कर लगभग 74 प्रतिशत आबादी हैं, इस प्रदेश की और वे आज नाखुश हैं या नाराज हैं या दुःखी हैं। कभी किसी ने मुड़ कर देखा कि क्यों ऐसा हो रहा है? मैं तो अपने लिए बहुत बड़ा सौभाग्य मानता हूँ और मैंने चुनाव के दूसरे दिन ही ये बात कही कि मैं तो अपने को बहुत ही सौभाग्यशाली मानता हूँ कि जिस समाज के पिछड़े वर्गों का, कमजोर लोगों की सेवा करने का मैंने व्रत लिया था, आज उन्हीं से

मुझे चुनाव में शिकस्त मिली, इससे बढ़ कर मेरे लिए कोई सौभाग्य की बात नहीं है। कहीं न कहीं कोई सेवा में कमी रही होगी। देखना क्या? लेकिन यहाँ सुधारने की जरूरत नहीं है। थाम लो किसी का हाथ, ताकि अगले चुनाव में अपने वोट ठीक हो जाएँ। अपनी सीट पक्की हो जाए। काँग्रेस ज़हन्नुम में जाए। देश ज़हन्नुम में जाए। कोई मतलब नहीं।

मैं किसी पार्टी का विरोधी नहीं हूँ और खास तौर से बहुजन समाज पार्टी का तो मैं आदर करता हूँ। कम से कम उन्होंने एक रास्ता तो लिया, लेकिन मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि बिना किसी ठोस कार्यक्रम के केवल लोगों की भावनाओं को उभार कर प्रजातंत्र में कोई काम नहीं किया जा सकता और कौन-सा कार्यक्रम सामने है? अभी तक तो हमको सुनने को नहीं मिला। आप लोगों को मालूम हो, तो मुझे मालूम नहीं। आदिवासियों की बात है मध्यप्रदेश में। इसलिए लोग नाराज हुए कि जितने भी कार्यक्रम श्रीमती इंदिरा गाँधी ने मध्यप्रदेश में आदिवासियों के लिए शुरू किए, उन में से एक-एक कार्यक्रम आज सिसक रहा है। मैं जब नाम गिनाने लगूँगा, बहुत टाइम लगेगा। वहाँ कोने में बैठी हमारी बस्तर की बहन गंगा ठाकुर, वे चुनाव हार गई हैं। मैं जानता हूँ। क्यों? बस्तर के मामले में इंदिरा जी ने विशेष रूप से ध्यान देने का फैसला किया था। हम सबको आदेश मिला था कि बस्तर हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा जिला है और पूर्णतः आदिवासी जिला है। वहाँ के प्रशासन तंत्र को, आदिवासियों के हितों को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। एक योजना बनी। कार्यक्रम बना था। नीतियाँ बनी थीं। कैसे अधिकारी वहाँ जाएँगे? उनके हितों की रक्षा कैसे होगी? वहाँ शोषण रोकने के लिए कौन-कौन से खास उपाय किए जाएँगे। आज क्या हो रहा है?

अब मैं देखता हूँ कि इस प्रदेश के यशस्वी कर्णधार लोग क्या करते हैं? इतना मैं जरूर कहना चाहता हूँ कि अभी तक तो मैं कहता था, अब ये संयुक्त मोर्चे का कार्यक्रम है, अगर पन्द्रह अगस्त तक इस प्रदेश के शासन ने मध्यप्रदेश के अंदर मालिकाना हक देने का अंतिम फैसला नहीं किया तो एक प्रबल आंदोलन इंदिरा काँग्रेस इस प्रदेश में करेगी और मजबूर करेगी। बहुत हो चुका है अब, लुका छिपी की बात। ये हैं कारण, जिनकी वजह से आज काँग्रेस का जनाधार हट रहा है।

इंदिरा काँग्रेस की कार्यकारणी समिति ने यह फैसला किया है 12 या 13 मई को, जो बैठक हुई थी, अखबारों में आपने पढ़ा या नहीं पढ़ा कि हम इंदिरा काँग्रेस के संगठन को मजबूत करेंगे। जो कमजोरियाँ हैं, उन को दूर करेंगे। जो हमारा अनुभव रहा है एक साल के अंदर, जिसका उल्लेख यहाँ कई साथियों ने अपने भाषणों में कहा है, उसको महत्व देंगे। जन हित के विषयों पर अपने काम से हम यह प्रमाणित करेंगे कि इंदिरा काँग्रेस इस देश की और इस प्रदेश की जनता के साथ जुड़ना चाहती है, नेताओं के साथ नहीं जुड़ना चाहती।

यह संयुक्त मोर्चा जो बना है, चुनाव के पहले नहीं था। तीन-चार पार्टियाँ थीं, जो एक के साथ मिली हुई थी, लेकिन जब देश के अंदर यह खतरा साफ उभर कर सामने आया तो सब लोग संगठित हुए और उन्होंने एक मोर्चा के रूप में संगठित कर के कार्यक्रम के बारे में भी आपस में बात की और सरकार भी बनाई। वाजपेयी जी कहते हैं, अडवाणी जी कहते हैं कि हमें तो जनादेश मिला है। अब जनादेश कैसे मिलता है? यह तो हमें कहीं बाहर से तो सीखना नहीं पड़ेगा। भाई संविधान में दिया हुआ है कि जनादेश कैसे मिलता है और किस जनादेश का सम्मान होता है। बहुमत है तो जनादेश है। बहुमत नहीं है तो जनादेश नहीं है। परिस्थिति ऐसी निर्मित हुई कि किसी एक पार्टी को बहुमत नहीं मिला। तो विकल्प यही था या तो तुरन्त लोक सभा को भंग कर के चुनाव किया जाता, जो संभव नहीं था। तो महामहिम राष्ट्रपति जी ने जो सही रास्ता था, उसे अपनाया, जो सबसे बड़ी पार्टी थी, उसको आमंत्रित किया। आइए, आप सरकार बनाइए भारत की। उन्होंने शपथ ली। हर तरह से आरजू, मिन्नत, हर सांसद से, हर पार्टी से की कि आप आइए हमको सहयोग दीजिए। अब अगर पार्टियों ने नहीं माना और जितने थे 160 या 165, जो भी थे, उसमें एक भी नहीं बढ़ा और अल्प मत में रह गए

तो इसमें हम लोगों का क्या दोष है और वो जनादेश कैसे हो गया?

अब रही कार्यक्रम की बात। अभी कुछ साथियों ने यहाँ पर कही कि हमारे मुद्दे ओझल नहीं होना चाहिए सवाल ही नहीं उठता है। मैं चाहूँगा कि कम से कम हमारे जो पदाधिकारी हैं और जो सक्रिय कार्यकर्ता हैं, वे संयुक्त मोर्चे का जो कार्यक्रम बना है, उसको पढ़ने की कृपा करें। सब लोगों ने उसमें सहयोग दिया है। किसी एक व्यक्ति या एक पार्टी का वो कार्यक्रम नहीं है। बहुत से ऐसे विचार थे, जिन पर लोग बहुत दृढ़ थे। थोड़ा बहुत उसमें लचीलापन भी लाए, ताकि अपनाया जा सके। सबको सम्मिलित किया जा सके, लेकिन कुछ मुद्दों पर बहुत साफ विचार है।

एक, तो देश के अन्दर धर्म निरपेक्षता का आधार मजबूत हो, इस पर किसी के बीच में कोई मतभेद नहीं है।

दूसरा, उच्च स्थानों पर भ्रष्टाचारों को रोकने के लिए हर प्रकार के कदम उठाए जाना चाहिए, ये संकल्प उसमें व्यक्त किया गया।

तीसरा, जो उदारीकरण का हमारा कार्यक्रम है, वो कार्यक्रम चलेगा इसमें मतैक्य था, लेकिन वो कार्यक्रम किस तरफ झुका होगा या उसका मूल आधार क्या होगा? वो भी स्पष्ट है कि समाज के कमजोर और गरीब वर्गों के हितों को, सर्वोपरि रख कर ही ये उदारीकरण का कार्यक्रम चलेगा।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बारे में यह साफ कहा गया है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को देश के अंदर आने की इजाजत दी जाएगी, लेकिन ऐसे क्षेत्रों में इजाजत नहीं दी जाएगी, जो देश के लिए महत्वपूर्ण और जरूरी हैं॥

फिर श्रमिकों के लिए, समाज के कमजोर वर्ग के लिए, हरिजन-आदिवासी लोगों के लिए, तेन्दू-पत्ते की बात तो मैंने कही। यह दूसरा कार्यक्रम अब संयुक्त मोर्चे की सरकार का कार्यक्रम बन गया है। वो हमारे झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले भाइयों-बहनों का, इस प्रकार कानून प्रदेश में आज बन कर लागू किया गया है। वैसा ही कानून सारे देश में बनाने के लिए प्रदेश की सरकारों से कहा गया है। यह सब कोशिशें हैं, जिनसे हम देश में एक प्रगतिशील, धर्मनिरपेक्ष और सामान्य जनता के हितों की रक्षा करने वाली सरकार चला सके और इसलिए मैंने एक जगह कहा कि हो सकता है कि हम लोगों ने कहीं कोई लड़ाई हार गई हो, लड़ाई हम हार सकते हैं, लेकिन इस लड़ाई में जो युद्ध हुआ देश के अन्दर वो युद्ध हमने जीता है, हारा नहीं है।

यह वो कि साधनों की कमी है। चुनाव में भी साधनों की कमी रही ओर रोजमर्रा के काम चलाने को भी साधनों की कमी रही। साधन मिलते कहाँ से हैं या तो हम सब इकट्ठा करें तो मिलेगा या किसी एक दुकान में जाकर हम कुछ गिरवी रख आएँ तो मिलेगा। आज कल गिरवी रखने के लिए लोग ईमान चाहते हैं। अब वो ईमान गिरवी रखने की मेरी तो हिम्मत नहीं है और न मैं कर सकता हूँ। तो साधनों के लिए भी हम आपको ही कोशिश करना पड़ेगा। एक रुपये, दो रुपये, पाँच रुपये, जो भी हम इकट्ठा कर सकें, बल्कि हर एक इकाई, जिला की हो, ब्लाक की हो, प्रदेश की भी हो। अपने खर्चे में कमी करे। जो न्यूनतम आवश्यकता है, उसको पूरा करे। लोगों से सीधे सहयोग लेकर अपने काम को चलाने की कोशिश करे। फिर भी कमी होती है तो बात फिर और है। कहीं से और फिर इन्तजाम करने की कोशिश की जाए, लेकिन बार-बार यहाँ से कहीं से कहा जाए कि साहब वहाँ से आप दीजिए, पाचँ हजार रुपये तो जिला काँग्रेस चलेगी। तो माफ करिए, जिला काँग्रेस चले या न चले, पाँच हजार रुपये मेरे पास भेजने को नहीं है। यह बात पहले से समझ में रहनी चाहिए। इसलिए जो लोग भी आगे बढ़ कर जिम्मेदारी उठाएँ उन्हें इस बात का ज्ञान रहे। अगर ये तीन-चार चीजें हम अगर ख्याल में रखेंगे तो एक नये संदर्भ में जो हमें संघर्ष करना है, उसमें हम सक्रिय रूप से कुछ कर सकते हैं।

मुझे खेद है कि हमारे सेवा दल के भाइयों को यहाँ बोलने का अवसर नहीं मिला। सेवा दल हमारी संस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। कुछ समय की कमी का, वो कर के, उनका नाम नहीं पुकारा जा सका। मैं तोमर साहब से माफी चाहता हूँ और उन्हें आश्वस्त करना चाहता हूँ इस प्रदेश के अंदर, हमारे सेवा दल के साथियों को सक्रिय रूप से इस संगठन को आगे ले चलने की महती जिम्मेदारी उनको सौंपी जाती है।

यह कुछ बातें थी, जो मैं आपसे कहना चाहता था। सफर लम्बा है, मार्ग कठिन है। अवरोध कई हैं दिक्कते बहुत हैं। लेकिन तभी पहचान होगी, हमारे संकल्प की। तभी पहचान होगी, हमारे विश्वास की। आप सबकी तरफ से मैं कहना चाहता हूँ और अपने लिए भी कहना चाहता हूँ। हम में से किसी को अपने मन में यह बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए। कवि डा. शिवमंगल सिंह सुमन जी की पंक्तियों के अनुरूप —

वरदान माँगूँगा नहीं,
वरदान माँगूँगा नहीं, क्या हार मैं क्या जीत में।
किंचित नहीं भयभीत मैं, संघर्ष पथ पर जो मिले।
ये भी सही, वह भी सही, वरदान माँगूँगा नहीं॥

यह हमारा हौसला होना चाहिए। यह हमारा संकल्प होना चाहिए। यह हमारा उद्देश्य होना चाहिए। कोई ताकत नहीं है, जो जन मत को इन आदर्शों के अनुरूप मोड़ने में सफल न हो। अगर गफलत होगी, फिर कोई आगे बढ़ने का सवाल ही नहीं। जय हिन्द।

प्रजातंत्र पर आज प्रश्नवाचक चिन्ह लगा है

14 दिसम्बर 1996 ग्वालियर में श्री श्यामलाल पाण्डेय व्याख्यान माला के भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं :—

आदरणीय डाक्टर जैन साहब, सम्मानीय चतुर्वेदीजी, मंच पर पधारे हुए सभी आदरणीय साथियों, आदरणीय देवियों और सज्जनो, अपने को मैं बहुत ही सौभाग्यशाली मानता हूँ कि आज आपने एक महान् व्यक्तित्व के शताब्दी समारोह में मुझे भी जुड़ने का एक अवसर दिया। आप सब यहाँ के लोग तो पाण्डेय जी को निकट से जानते रहे हैं। मैं इतना निकट से उनको नहीं जानता, दर्शन जरूर पहले हुए हैं और उस दर्शन के दौरान मुझे एक अनुभूति हुई कि भारत की आजादी की जंग में जो एक नेतृत्व श्रृखंला बनी, उस श्रृंखला के वे एक यशस्वी अंग थे। निश्छल और आत्म-सम्मान से परिपूर्ण जन-जीवन के लिए समर्पित होने की जो अपनी अलग छबि होती है, वो उसको धारण करते थे। ऐसे लोगों की याद आज करना हम सब के लिए गौरव की बात है। लेकिन इस गौरव के साथ-साथ इस बात का अहसास भी होना जरूरी है कि हम कितने दूर चले गए हैं, ऐसे लोगों के विचारों से, उनके कृतित्व से और उनके उदाहरण से।

प्रजातंत्र केवल, और केवल विश्वास के सहारे चलता है। जनता के मन में इस बात का विश्वास हो कि प्रजातंत्र में जो उनका अधिकार है, वह सुरक्षित है, प्रभावी है, जिन लोगों के लिए प्रजातंत्र संचालित होता है। उसी को कहते हैं — Government by the people for the people उस साधारण व्यक्ति को इस बात का विश्वास बना रहे कि जो कुछ हो रहा है, उसको केन्द्र बिन्दु वही है जो मान्यताएँ, जो आदर्श प्रजातंत्र में बने, वे आदर्श सर्वव्यापी हैं। सभी के लिए बराबर रूप से प्रभावी हो रहे हैं। ये विश्वास बना रहे तो प्रजातंत्र फल-फूल सकता है।

आज दुःख की बात है कि इन सभी विश्वासों पर प्रश्नवाचक चिन्ह लग गया है और यदि ये कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि जो ये विश्वास का व्यापक संकट पैदा हुआ है, ये बहुत बड़ा खतरा हमारे देश के प्रजातंत्र के लिए बन सकता है। केवल चुनाव हो जाना और चुने हुए लोगों की सरकार बन जाना, वो उसका एक बाह्य रूप है और अनिवार्य रूप है, लेकिन यह बाह्य रूप जो है, यह प्रजातंत्र के सही रूप से पोषण के लिए पर्याप्त नहीं है।

अगर आदरणीय पाण्डेय जी जैसे महान व्यक्तियों के जीवन को हम देखें। अभी जो यहाँ पर उनके समूचे जीवन की तस्वीर बताई गई है। ऐसे ही लोगों के विश्वास के जनतंत्र मजबूत होता है। वे सभी बातें जो इस जनतंत्र को मजबूत करने के लिए लाज़िमी है, वो उनके जीवन से झलकती हैं। आज यदि इस प्रकार का संकट पैदा हुआ है, तो हम लोगों का भी कर्तव्य इस मामले में कुछ है। ये हमें आदरणीय पाण्डेयजी के जीवन से सीखना चाहिए। संविधान बनाते समय हमारे देश के महान नेताओं ने प्रजातंत्र को किस प्रकार से हम सामान्य हितों से जोड़ सकें, इसकी बहुत सुंदर और सोची-समझी एक तदबीर बनाई थी, जिसको कहते हैं कि Harmonious Construction । चाहे वो executive हो, न्यायपालिका हो, पार्लियामेण्ट हो। इन सभी के अधिकार और जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रूप से अंकित हैं इस संविधान में और जब तक इनका समन्वयकारी स्वरूप बना रहेगा, तब तक हमारा संविधान एक जीवंत संविधान बना रहेगा और जब इसमें कमी आएगी, उत्तरदायित्व के सिद्धांत को कमजोर किया जाएगा तो खतरा पैदा होगा।

बहुत से लोग आज कल कहते हैं कि साहब हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ही सब आदेश दे रहा है, सरकार चला रहा है। शहर की सफाई से लेकर और ऊँचे से ऊँचे जो प्रश्न है, उन सब पर हाई कोर्ट को निर्देश देना पड़ता है और वह निर्देश दे रहा है। इसलिए न्यायपालिका अपनी परिधि को विस्तारित कर रही है और ये गलत बात है। ये कोई नहीं सोचता कि जिसकी जिम्मेदारी सार्वजनिक कार्यो को करने की है, अगर वो जिम्मेदारी सही ढंग से निभाए। तो शहर की सफाई के लिए हाई कोर्ट को निर्देश देने की जरूरत ही नहीं है। चूँकि उस बात का अभाव होता जा रहा है और जो मौलिक कर्त्तव्य हैं, उनसे लोग विमुख होते जा रहे हैं। अनावश्यक बातों में फँसकर इसलिए मजबूरी है न्यायपालिका के सामने, लेकिन यह बात सही है कि यह कार्य अनन्तकाल तक नहीं चल सकता और न चलने देना चाहिए। क्योंकि अंततः इससे न्यायपालिका की ही गरिमा में कमी आई है। लेकिन इसकी भी जिम्मेदारी किस पर है? इसकी भी जिम्मेदारी जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों पर है, जिनका प्राथमिक कर्त्तव्य है, इस काम को करने का। चुनाव जीतने के बाद उनकी जिम्मेदारी सार्वजनिक हित को देखने की है। यदि वे केवल अपने हितों को देखने में जुट जाएँगे तो सार्वजनिक हित का नुकसान तो होगा ही और उससे आज यह विश्वास का संकट है, वह और गहराएगा। इसलिए इस वक्त जो Judicial activism की बात है, जिसको लेकर कुछ लोग परेशान हैं और उसको सीमित करने के नए-नए उपाय ढूँढ़े जा रहे हैं। मेरा स्पष्ट मत है कि यदि आप Judicial activism को सचमुच में एक सीमा के अंदर में बाँधना चाहते हैं तो जिनके कर्त्तव्य और अधिकार दूसरे कामों के करने के लिए हैं, वे अपने उत्तरदायित्व को सही ढंग से निभाने की बात सोचें और वो सोचेंगे तो अपने आप इन सब बातों में न्यायपालिका को कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

दूसरी बात जो महत्वपूर्ण है मेरी नज़र में, वो हमारे संविधान की ही नहीं, समूचे आजादी की लड़ाई का जो निचोड़ है, इसे गाँधी जी ने बहुत ही सुंदर शब्दों में और एक तरह से बहुत ही भावुक शब्दों में जिसकी कल्पना दरिद्र नारायण के रूप में की थी। दरिद्र नारायण किसी एक व्यक्ति का मुखौटा नहीं है। दरिद्र नारायण की कल्पना मानव अधिकार और मानव के सम्मान को लेकर के है, क्योंकि मनुष्य समाज का केन्द्र बिन्दु है और यदि वह ऐसी नजरों से देखा जाएगा, जहाँ उसके बारे में विभाजित सोच हो जाएगी, चाहे वो जाति के आधार पर हो जाय, चाहे वो धर्म के आधार पर हो जाए, चाहे वो

भाषा और क्षेत्रीयता के आधार पर हो तो फिर आप भारत के संविधान और भारत के समूचे प्रजातंत्र के मूल बिन्दु से दूर हो जाएँगे। संविधान का जो पहला वाक्य है — We the people of India give to ourselves this Constitution "अंग्रेजों ने नहीं दिया, चन्द नेताओं ने नहीं दिया। भारत की जनता ने अपने लिए एक संविधान दिया और यदि उस जनता के बारे में हमारी सोच खण्डित हो जाए, विकृत हो जाए तो फिर निश्चय ही न देश में शांति रह सकती है, न व्यवस्था रह सकती है। तब तो देश का भविष्य खतरे में पड़ेगा ही पड़ेगा।

आज आवश्यकता है आम जनों के लिए इन विषयों पर सोचने की। मैं मानता हूँ कि आज जीवन इतना कठिन हो गया है और रोज की आपा-धापी में इन सब बातों पर विचार करने का अवसर नहीं मिलता या शायद जरूरत नहीं समझते हम। लेकिन कम से कम ऐसे महापुरुषों के स्मरण में यदि कोई समारोह हो तो वहाँ एक मिनिट रुक कर हमको देखने की जरूरत है कि हम केवल औपचारिकता निभाने आए हैं या उन मौलिक विषयों पर दो मिनिट का विचार करने का समय देना चाहते हैं जिन्होंने ऐसे महान व्यक्तियों को प्रेरित किया अपने समूचे जीवन में और साथ ही साथ जिनका आज भी महत्व है भारत के प्रजातंत्र को सुदृढ़ करने के लिए, हमारे देश के भविष्य को सुदृढ़ करने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना आदरणीय पाण्डेयजी के जीवन-काल में था।

यह व्याख्यानमाला इन मूल्यों, आदर्शों और सिद्धांतो को मुखर कर के सामने ला सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है और उसमें भाग लेकर मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्यप्रदेशों में

देश की स्थिति बिगड़ रही है

19 जनवरी 1996 विक्रमगंज (बिहार) की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

बिहार कॉंग्रेस कमेटी के सम्मानित अध्यक्ष श्री नसरूद्दीन हैदर साहब, अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी के कार्यकारणी के सम्मानित सदस्य आदरणीय साहीजी, और यहाँ पर पधारे हुए सभी आदरणीय बहनों और भाइयों।

मैं बहुत आभारी हूँ, प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी बिहार के इस निमन्त्रण के लिए कि यहाँ विक्रम गंज में आज सबके दर्शन करूँ और एक सामान्य सेवक के रूप में कुछ बातें आपसे कर सकूँ। आपका ध्यान आकर्षित कर सकूँ, इस उम्मीद के साथ कि जागरूक अँचल देश का मगध का नाम इतिहास के उन पन्नों से जुड़ा है जो भारत की पुनरुत्थान की गाथा के स्वर्णिम पृष्ट है। यह अंचल वीर कुँवरसिंह जी की उन गाथाओं से जुड़ा है, जिन्होंने देश भक्ति और बलिदान किए, अपने जीवन से नई परिभाषा अंकित की है। आज इस पवित्र शौर्य और बलिदान की भूमिका को मैं बहुत विनम्रता से सबसे पहले नमन करना चाहता हूँ।

देश की आजादी किन बलिदानों, त्यागों और संघर्ष के बाद प्राप्त की गई वह बताने की जरूरत नहीं है। बिहार के चप्पे चप्पे की भूमि उस त्याग और बलिदान की अमर कहानी स्वयं लिख चुकी है। सेक्रेट्रीएट के सामने छात्रों का बलिदान, इस अँचल से देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी, बाबू जयप्रकाश नारायणजी, श्रीकृष्ण बाबू, ये वे नाम हैं जिन्होंने बिहार के इतिहास के साथ-साथ भारत के इतिहास को भी लिखा है, सवाल आज जो उठ खड़े हुए है। वह यही सवाल है कि वह इतिहास जो बलिदान से लिखा गया। क्या वह इतिहास अब रेगिस्तान से सूखेपन में बदल जाएगा? आज चारों तरफ आप नजर उठाकर देखें क्या नजर आता है? हमारे नौजवान भाई करोड़ों की संख्या में

आज बेरोजगार हैं, देश के अंदर सामान्य वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं। साधारण परिवार को दोनों वक्त का गुजारा करना कठिन हो रहा है और दूसरी तरफ इस प्रकार से आचरण हो रहा है, जिससे लगता है कि भारतवर्ष का कोई पूछने वाला नहीं है। हम जैसे बहने लगे हैं पतवार भी नहीं है, नाव भी नहीं है और मझधार में भी हैं।

आर्थिक ढाँचा जहाँ आत्म निर्भरता के आधार पर मज़बूत बनाने की बात शुरू हुई थी और सब बना था आज वह आर्थिक ढाँचा विदेशी कपनियों के मोहताज होकर बढ़ाने की बात हो रही है। मैं विदेशी कंपनियों के भारत में आने के खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन वे यहाँ आकर क्या करें इसका फैसला हमें आपको करना चाहिए, देश को करना चाहिए, उसका फैसला औरों के माथे नहीं छोड़ा जा सकता है। फिर समाज के अंदर जो अलग-अलग धर्म, मानने वाले लोगों का तबका है। आज वह बहुत असंतोष और अविश्वास के गिरफ्त में है।

आज अपराधीकरण की जो स्थिति है। अब मैं बिहार में जब अपराधीकरण की बात करता हूँ तो कुछ लोगों ने तो बिहार की हालत यह बना दी है कि शायद अपराधीकरण स्वाभाविक है, अपराधियों का न रहना अस्वाभाविक है। आज बिहार का कोई जिला नहीं है ऐसा जहाँ जान और माल दोनों जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें है इंसान के लिए, उनके लिए खतरा न हो, अगर इन सब चीज़ों को हम इसी प्रकार से चलने देंगे तो आखिर हम सबको नुकसान होगा, आम आदमी को ही नुकसान होगा। इस मामले पर बहुत गंभीरता से विचार करके कठोर से कठोर कदम उठने चाहिए ताकि देश में आम आदमी की सुरक्षा खतरे में न हो। प्रजातंत्र किसी की मेहरबानी से इस देश में नहीं आया, प्रजातंत्र के लिए हमारे देशवासियों ने संघर्ष किया है। गाँधी जी के नेतृत्व में बलिदान किया है और उसी बलिदान की वजह से हम आजाद हैं इसलिए प्रजातंत्र के महत्व को समझना भी जरूरी है। प्रजातंत्र का पहला मूल आधार मतदान है। स्वतंत्र और निष्पक्ष मतदान। आज मुझे कहते हुए बेहद दुःख हो रहा है कि बिहार के अंदर स्वतंत्र और निष्पक्ष मतदान केवल एक कहानी है, एक कल्पना है। यथार्थ में यह देखने को नहीं मिलती। अभी साह जी बोले इन्होंने मुझे कल बताया कि किसी बड़े अधिकारी ने उनसे ये कहा कि आप जनता से वोट माँगने आए हैं, आपकी लड़ाई तो बी.डी.ओ. से है, कलेक्टर से है, एस.पी.से है, जनता क्या करेगी।

मैं समझता हूँ कि बिहार के अंदर निष्पक्ष और स्वतंत्र मतदान का उतना ही महत्व है जितना जम्मू और कश्मीर में है या भारत के किसी और कोने में है यदि निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराने की क्षमता यहाँ कि सरकार में नहीं है और निष्पक्ष चुनाव होने देने में असक्षम है तो फिर उनको देश प्रदेश में प्रजातंत्रिक तरीके से शासन करने का कोई अधिकार नहीं है। (तालियों की आवाज....) और हम मिलकर सब अपनी ओर से इलेक्शन कमीशन से सबसे बड़ी माँग यही रखेंगे कि आप सारे देश की बात करिए वहाँ तक ठीक है। लेकिन कम से कम बिहार में यहाँ के लोगों को बिना पेटी चोरी के ले जाने के, बिना वोट देने से, एक-दूसरे के वोट दूसरे को दिला देने की कहानी, अगर समाप्त नहीं होगी तो फिर यहाँ पर प्रजातंत्रिक तरीके से सरकार नहीं चल सकती, यह आपको समझना चाहिए और मुझे भरोसा है कि इलेक्शन कमीशन इस मामले पर जरूर गौर करेगा।

कश्मीर का जिक्र आया, आज कश्मीर में सबसे बड़ी बात यही है, जो भी परिस्थितियाँ वहाँ निर्मित हुई, लोगों का असंतोष बढ़ा, नौजवानों का असंतोष बढ़ा। ऐसे लोगों का असंतोष बढ़ा जो समझते थे कि हमारे हक और हकूक जिस तरह से मिलने चाहिए, वह नहीं मिल रहे हैं। इन सबको मिल बैठकर बात करके हमें सुलझाने की जरूरत है और यह राजनीतिक मामला नहीं बनना चाहिए, ये विषय राष्ट्रीय विषय है, सभी पार्टियों ने एक साथ मिल जुलकर कोई ऐसा रास्ता कश्मीर में निकालना चाहिए।

मुझे पूरी उम्मीद है कि बिहार की जागरूक जनता आने वाले दिनों में अपने प्रदेश को एक मज़बूत और एक

प्रजातांत्रिक तरीके से चलने वाले प्रदेश के रूप में बनाएगी और सारे देश में एक ऐसे माहौल को बनाने में सहायता देगी, जिस माहौल से भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सके, अपराधीकरण पर अंकुश पाया जा सके और हमारे आर्थिक ढाँचे में जो कमजोरी आ गई है, उन कमजोरियों को दूर करके देश फिर से मजबूती से सदे कदमों से आगे बढ़ सके, यही समय का तकाजा है और यही प्रार्थना मैं आपसे विनम्र शब्दों में करना चाहता हूँ। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरी इन बातों पर गौर करेंगे और जो आपका अधिकार है, उस अधिकार का उपयोग इस तरह से करेंगे कि सबका हित हो, देश की एकता मजबूत हो, भारतवर्ष के ऊपर जो आज खतरे मँडरा रहे हैं, वे खतरे दूर हों, यही आपसे मेरी प्रार्थना है और आपने मेरी बातें सुनी इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

कश्मीरी ब्राम्हण बे-घर-बार हो गए

25 जनवरी 1996 उधमपुर (जम्मू कश्मीर) की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

कुछ और कहने के पहले मैं आप सब आदरणीय बहिनों और भाइयों को इस बात के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद् देना चाहता हूँ कि इस मौसम में और इतने समय तक आपने यहाँ बैठ कर इंतजार किया। इससे केवल हमारा हौसला ही नहीं, सारे मुल्क के उन लोगों की हौसला अफ़जाई आपने की है, जो भारत की एकता की राह में विश्वास करते है। हमारे सम्मानित भाई जम्मू कश्मीर के वर्किंग प्रेसीडेण्ट इंदिरा काँग्रेस के गुरूचरण सिंह चरनजी, और ऊधमपुर से यहाँ पर आए हुए सम्मानित बहनों और भाइयों, जम्मू काश्मीर के जो सर जमीन पर जिनके हाथ के अनेकों थपेड़ों के बावजूद अपनी अस्मत को बना कर बचाएँ रखे हुए हैं। हम उस जमीन को सबसे पहले सलाम करते हैं।

जम्मू कश्मीर भारत का वह अंग है, जिसमें हिन्दुस्थान के प्राचीन इतिहास में एक ऐसे नाजुक मोड़ पर जब नया हिन्दुस्थान बन रहा था, एक ऐसा फैसला देकर जिससे हिन्दुस्थान के उन साथियों को मजबूती मिली, जो साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ रही थी, जो देश के खतरे से जूझने के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार थी।

हिन्दुस्थान के निर्माण का वह सिलसिला शुरू हुआ, जिससे भारत के अंदर रहने वाले हर धर्म, हर जाति, हर प्रकार के वेष-भूषा पहनने वाले और भाषा बोलने वाले लोगों को बराबर का हक देकर आगे बढ़ने की कोशिश शुरू हुई। आज उसी सिलसिलें में हमें नए-नए पड़ावों पर पहुँचना है। लेकिन अपनी निगाहें और अपना जेहन साफ रखना है कि हम अपनी पहचान अपने अलग-अलग मज़हब, अपनी अलग-अलग भाषा, अलग-अलग वेश-भूषा के साथ तो जुड़ेंगे, लेकिन, हमारी असली पहचान एक हिन्दुस्थानी की होगी। वही हिन्दुस्थानी जो सारी दुनिया में सर ऊँचा करके चलता है।

इस समय एक ऐसे ऐतिहासिक दौर से जम्मू-कश्मीर गुजर रहा है, जब एक अशांति लोगों के मन में व्यवस्था के खिलाफ,जो कुछ है उसके खिलाफ और जो कुछ करने की कोशिश की जा रही है, उसके खिलाफ एक जज़बा है। हमें इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए कि हिन्दुस्थान अगर एक प्रजातांत्रिक देश है, तो हमें इस देश के हर हिस्से में, चाहे जम्मू काश्मीर हो, पंजाब हो, बंगाल हो, गुजरात हो, तमिलनाडू हो, कोई भी हो, वहाँ के लोगों के हक और हुकूक की रक्षा करते हुए, उन्हें पूरी तरह से हिस्सेदार बनाते हुए प्रगति में, आगे बढ़ने की कोशिश में हम उसी रास्ते से हिन्दुस्थान को एक रख सकते है।

यह हमें कहने में जरा भी हिचक नहीं है कि काश्मीर में इस समय, पिछले तीन-चार सालों में जो हुआ है, उसकी वजह से कई लोगों के मन में ऐसे सवाल उठ खड़े हुए कि क्या हम देश को एक बना कर रख सकेंगे? यह

सवाल खड़े हों। आपने-आप में कोई अच्छी बात नहीं है, लेकिन सवाल खड़े हों, तो उनका जवाब किस प्रकार से दिया जाए, वो भी इतना कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसका जवाब केवल संगीन नहीं है, बंदूक नहीं है। इसका जवाब लोगों के जज़बातों से खिलवाड़ नहीं है। उनको समझने की जरूरत है उनकी बातों को देख कर, उनके साथ मिल कर काम करने की जरूरत है। नौजवानों के बीच में जो शंकाएँ है, उनको दूर करने की जरूरत है और जब ये परस्पर विश्वास की कड़ी मजबूत होगी, जब हिन्दुस्थान मजबूत होगा।

आज चुनाव की बात भी उसी लहजे में हो रही है। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो काश्मीर के अंदर चुनाव न चाहता हो? आखिर हिन्दुस्थान एक प्रजातांत्रिक देश है। सारे हिन्दुस्थान में अगर वोट के आधार पर सियासत चलती है, सरकार चलती है, तो जम्मू-कश्मीर में भी चलना चाहिए। लेकिन वह होने के लिए संगीन के साए की जरूरत नहीं है। उसके होने के लिए लोगों के मन में विश्वास पैदा करने की जरूरत है।

मै जब चरारे-शरीफ गया था पिछले वर्ष, इसी वर्ष शुरू में, तो जिस सड़क से हम लोग श्रीनगर से वहाँ तक गए, वो सड़क दो-चार पत्थर इधर उधर पड़े थे तो पता चलता था कि यह सड़क है। लोगों से पूछा तो कहा कि इस सड़क पर कम से कम बीस-बीस लाख रुपये तीन दफे खर्च हो चुके, लेकिन सड़क बनी नहीं। यही हाल करीब-करीब हर जगह है। भ्रष्टाचार किस सीमा तक जम्मू काश्मीर में है, इसकी कल्पना बाहर के लोग नहीं कर पा सके हैं। हमारे काश्मीरी पंडित भाई हालात बिगड़ने की वजह से जम्मू के पास कैम्पों में रहते हैं। हम उनसे मिलने गए, जो नजरा वहाँ देखा, तो ऐसा लगता है कि एक वहशियानापन है, उन लोगो में, जिनके ऊपर यह काम को करने की जिम्मेदारी है। कोई इंसान ऐसे वातावरण में नहीं रह सकता। माताएँ और बहनें नहीं रह सकती।

आज आप सब लोगों के बीच मैं उसी के लिए हम अपनी दरख्वास्त करने आए हैं। आज कोई चुनाव नहीं हो रहा है। आज हम आपसे वोट नहीं माँगना चाहते। हम आपका विश्वास किसी व्यक्ति में नहीं चाहते। हम आपका विश्वास भारत माता में हो, यह हम आपसे प्रार्थना करने आए हैं।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरी इस बात पर गौर करेंगे और मैं आपको इत्मिनान दिलाना चाहता हूँ कि चाहे कोई भी चुनौती हो, कोई भी कठिनाई हो, किसी भी प्रकार की परेशानी हो, जो हमारा फ़र्ज है, इंदिरा काँग्रेस का फ़र्ज है, हमारे नेता श्री नारायण दत्त तिवारी जिसके अध्यक्ष हैं, उस पार्टी का फर्ज है। हम उस फर्ज को अदा करेंगे। हर चुनौती का सामना करते हुए भारत के लिए, उसकी प्रगति के लिए हर समय जम्मू-काश्मीर अपनी अस्मिता की रक्षा करता हुआ आगे बढ़ता रहे।

इस प्रदेश के हर भाग से जम्मू, श्रीनगर और लेह ये सब एक हैं। इस सबकी तरक्की एक है। इस बात को हमें समझने की जरूरत है। सबका हक मिलना चाहिए। और सबको आगे बढ़ना चाहिए। वही हमारा रास्ता है। उसी रास्ते पर चलने के साथ-साथ हम आप सब के कंधे से कंधा मिला कर चलना चाहते हैं।

इसी विश्वास के साथ मैं आप सबको बहुत-बहु धन्यवाद् देता हूँ। जयहिन्द।

देश को आजादी अहिंसा के पथ से चलकर मिली

18 मार्च 1996 बलरामपुर में रात्रि डेढ़ बजे आम सभा में दिए गए भाषण के अंश इस प्रकार हैं —

साथियों, जिसका सीधा संबंध हिन्दुस्तान के करोड़ो-करोड़ों उन लोगों से था, जो पढ़े लिखे नहीं थे, धनी नहीं थे, साधन नहीं थे और सारे हिन्दुस्तान में फैले हुए थे, जिनके पास पहुँचने का कोई जरिया भी नही था 1920 में जब गाँधीजी पहली बार सार्वजनिक जीवन में उतरे हिन्दुस्तान में तो सबसे बड़ी समस्या उनके सामने यही थी। इतना

बड़ा देश है, कैसे सबके पास पहुँचा जाय? कैसे अपनी बात सबको कही जाए? तब टी.वी. नही थी। रेडियो का भी प्रसारण इतना ज़्यादा नहीं था। लाउडस्पीकर नही थे कि किसी एक जगह पर खड़े होकर बोले तो 5-10 हजार लोग सुन सकें लेकिन गाँधीजी ने यह सुनिश्चित कर दिया कि हिन्दुस्तान के कोने-कोने में किसान को, मजदूर को, व्यापारी को बड़े-बड़े लोगो, गरीबों को सबको इस बात की जानकारी हो गई कि हमारा देश गुलाम हैं, और गुलाम देश को आजाद कराना है। दूसरी बात हमारे पास कुछ हथियार नहीं थे। तोप और बंदूकें नहीं थी। और 1857 में यह देख भी लिया कि तोप-बंदूक, तलवार और भाले से हम देश की रक्षा नही कर पाए। इसलिए गाँधीजी ने एक ऐसे हथियार की रचना की जिसका जवाब दुश्मन के पास नहीं था। अगर बंदूक होती तो एक के बजाय 5 बंदूकें सामने तन जाती तोप होती तो उससे बड़ी तोप लगा दी जाती। लेकिन उन्होंने हर इंसान को हिन्दुस्तान में इस लायक बना दिया कि बिना हथियार के वो निडर होकर ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने के लिए खड़ा रहे। वो हिम्मत हैं, जिसने हिन्दुस्तान को 1947 में आजाद कराया। और इसलिए हमारी आजादी मामूली आजादी नहीं हैं। उस आजादी की रक्षा और एक आजाद मुल्क को और आगे ले जाने का काम हमारे रहनुमाओं ने 47 के बाद किया। पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने, मौलाना अबुल कलाम आजाद ने, शास्त्रीजी ने, सरदार पटेल ने बहुत से और हमारे उस समय के रहनुमा थे उन्होंने धीरे-धीरे हिन्दुस्तान को इस लायक बनाया कि अपने पैरों पर खड़े हो सकें। किसान को अधिकार दिए जमीन के अधिकार दिए, व्यापारियों को व्यापार करने के अवसर मिले। बैंक बने, फैक्ट्रियाँ बनी, बड़े-बड़े बिजली के कारखाने बने, बिजली का उत्पादन बढ़ा। और धीरे-धीरे एक माहौल देश में तरक्की का आगे बढ़ने का बना। ये सब काँग्रेस की देन हैं। और काँग्रेस के द्वारा ही किया गया। 3-3 हमले हुए देश के ऊपर। चायना का हुआ, पाकिस्तान का हुआ। आज कौन सी बात हो गई, जिससे कि हम लोगों को परेशानी पैदा हो गई। अगर हम यह सब पहले कर सकते थे, तो अब क्यों नही कर पा रहे हैं? ये समझने की बात हैं और इसी को समझकर ही हम आगे देश की रक्षा कर सकते हैं। आज ये सब इसलिए कठिन होता चला जा रहा है क्योंकि जिसके हाथ में ये जिम्मेदारी है, वह स्वार्थी है।

काँग्रेस की बात हैं, तिवारीजी और विस्तार से आपको बताएँगे। आज उत्तर प्रदेश जो काँग्रेस का गढ़ माना जाता था आज उस काँग्रेस के गढ़ में काँग्रेस की कितनी दयनीय स्थिति हो गई हैं। ये हमें यहाँ आकर बताने की जरूरत नहीं है। आप सब लोग हमसे ज़्यादा अच्छी तरह से जानते हैं। और उत्तर प्रदेश की बात तो छोड़ दीजिए कम से कम अपने घर की रक्षा करने की तो क्षमता होनी चाहिए।

इसी वजह से पिछले 19 मई को हिन्दुस्तान के हजारों हजार कार्यकर्ताओं ने तालकटोरा में इकट्ठे होकर ये संकल्प लिया कि हम काँग्रेस को बर्बाद नही होने देंगे। हम काँग्रेस के नामोनिशान को मिटने नही देंगे। क्योंकि काँग्रेस का नामोनिशान हिन्दुस्तान के नाम से जुड़ा हुआ हैं। हमारी तरक्की के नाम से जुड़ा हुआ हैं। विकास के नाम से जुड़ा हुआ है। हमारे आत्मसम्मान के साथ जुड़ा हुआ है। और इसलिए इंदिरा काँग्रेस को बनाने का फैसला हो गया। और हमारे देश के एक अत्यंत प्रभावशाली कर्मठ निष्ठावान नेता पंडित नारायणदत्त तिवारी को इसका नेतृत्व दिया। उनके नेतृत्व में काँग्रेस को फिर से एक ऐसे शिखर पर ले जा सके जहाँ कांग्रेस थी। जिस वजह से देश को आजादी मिली। देश का नव निर्माण हुआ। वो प्रयास अब शुरू हैं और अब वो प्रयास इंदिरा काँग्रेस को आपके सहयोग की, आपके संबल की जरूरत है। आज यहाँ पर इतने लोगों को रात के साढ़े बारह बजे बैठे देखकर मुझे तो कोई शंका नही है कि उत्तर प्रदेश में पुनः एक लहर दौड़ेगी और पुनः उत्तर प्रदेश इंदिरा काँग्रेस के माध्यम से काँग्रेस का गढ़ बनेगा। काँग्रेस के नए इतिहास की रचना उत्तर प्रदेश से प्रारंभ होगी। और वो इतिहास की रचना आप सब यहाँ बैठे भाई और बहनें करेंगे। इसी विश्वास के साथ मैं आपके सहयोग और इस तकलीफ के लिए धन्यवाद देता हूँ। आप सबको

मंगलमय शुभकामनाएँ देता हूँ ताकि भविष्य आपके हाथों से बने और ये भविष्य भारत का भविष्य बने, काँग्रेस का भविष्य बने। धन्यवाद। जयहिन्द।

बंदूक की गोली की नोक पर या संगीन के साए में देश नहीं चल सकता

24 मई 1996 जम्मू की एक सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

श्री हारून, आदरणीय माताओं, बहिनों और भाइयों। अभी हमारे साथी ने आप से बहुत-सी बातें कहीं। मैं उन सब बातों को दोहराना नहीं चाहता हूँ। और बहुत लम्बी-चौड़ी बात कहना भी नहीं चाहता हूँ। मै सीधे दो-चार बातें आप के सामने रख कर फैसला आप पर छोड़ना चाहता हूँ।

जम्मू काश्मीर की बदहाली का बयान लाल सिंह साहब ने किया, जिस की वजह से पिछले तीन-चार सालों में एक निहायत खूबसूरत प्रदेश भारत का किस प्रकार से खून खराबे के जाल में फँस गया? किस प्रकार से यहाँ की तरक्की रुक गई। कैसे यहाँ पर लोगों की समस्याएँ अनसुनी हो गई? और धीरे-धीरे यहाँ के आम लोगों का भरोसा यहाँ की हुकूमत से उठ गया, और दूसरी तरफ हुकूमत भी मनमानी ढंग से काम करने लगी। और उस का फायदा पाकिस्तान ने उठा कर एक ऐसा माहौल पैदा कर दिया कि हम सब को यह चिन्ता हो गई कि जम्मू काश्मीर में क्या हो रहा है?

अगर जरा-सा संजीदगी से उस पर ध्यान दिया जाता तो न जाने कब की यह समस्या हल हो गई होती। एक तरफ लोगों के मन शंकाओं का पैदा होना। शंकाओं की वजह से कुछ ऐसी हरकतें होना जिन से अमन-चैन खत्म हुआ और फिर अमन चैन को बहाल करने के लिए ऐसे उपाय करने की कोशिश करना कि अमन-चैन केवल संगीन के साए के नीचे ही कायम हो सकता हो, और किसी तरीके से नहीं।

किसी भी प्रजातांत्रिक देश में, मुल्क में बंदूक की गोली की नोक पर या संगीन के साए में देश नहीं चल सकता है। और यह बहुत अच्छी तरह से यहाँ साबित हुआ। काश्मीर भारत का अविभाजित अंग है और रहेगा। लेकिन इस के लिए समाज के लोगों को, नेताओं को अपने आचरण से यह साबित करना पड़ेगा कि समचुच में वे इन लोगों को अपना मानते हैं। अगर कहीं कोई भेदभाव है। अगर दो तरह के न्याय देने की बात है। तो कितने दिन तक लोग मानेंगे कि हम सब एक है?

इसलिए यह चुनाव जो अब हो रहा है यह एक मौका है, मुल्क के लिए भी और जम्मू काश्मीर में रहने वाले लोगों के लिए भी कि जो हमारे बीच के संबंध हैं। विश्वास की जो कड़िया हैं। हम उन कड़ियों को मजबूत बना सकें। जो हमारी गलतियाँ हैं, इस चुनाव का केवल मेरी नजर में यही महत्व है। यद्यपि काश्मीर में कुल छः लोक सभा की सीटें हैं। सारे हिन्दुस्तान के चुनाव हो चुके है। नतीजे आ गए हैं। एक नया राजनीतिक चित्र उभर कर देश के सामने आया है। किसी पार्टी को बहुमत नहीं है। यहाँ की जो छः सीटें हैं, यदि छः की छः किसी पार्टी को मिल भी जाएँ, तो भी दिल्ली में किसी एक पार्टी का बहुमत नहीं बनने वाला है।

यह तो हमारी पार्टी के लिए बहुत सुखद संयोग मैं मानता हूँ कि हम को एक ऐसे उम्मीदवार मिले, श्री गुरूचरणसिंह चरख के रूप में, जिन को हम कह सकते हैं कहीं पर खड़े हो कर, औरों को तो आप आजमाएँगे, इन को तो आप आजमा चुके है। और जिस साथी को आप ने अजमा लिया है। देखा है, ऐसे मौकों पर जब जरूरत होती है, वैसे तो पहले सब अच्छे होते हैं, कोई खराब नहीं है। लेकिन जब किसी बात की जद्दोजहद की जरूरत हो जब

कहीं पर कोई समस्या खड़ी हो। जब कहीं पर किसी ऐसे व्यक्ति को आगे बढ़ कर चार लोगों के लिए लड़ाई लड़ना हो। यही तो जनप्रतिनिधि का काम होता है।

यह तो उस समय की बात है जब श्री गुरूचरणसिंह जी चरख ने यहाँ आने का एक प्रोग्राम बनाया। उन्होंने कहा कि मैं जम्मू काश्मीर की सरकार से पूछूँ, चूँकि उस समय मैं इत्तफाक से मंत्री था, तो मेरा पूछना वाजिब भी था। तो जब मैं ने गवर्नर साहब से पता करवाया तो उन का एक बहुत सीधा जवाब मुझे मिला कि आप और कहीं जाइए। पर सीमा के इलाकों में आप कभी नहीं जाइए। मैंने पूछा-भाई, ऐसी क्या जगह है वो, जहाँ गवर्नर कहते हैं कि कहीं भी जाइए, वहाँ मत जाइए वहाँ क्या हो रहा है? उन्होंने कहा कि क्या हो रहा है? यह तो बिना गए पता चलेगा नहीं। श्रीनगर जम्मू में बैठ कर क्या राय बनेंगी? आप को चलना हो तो चलिए, न चलना होता नहीं चलिए। और ठीक ही कहा। और क्या जवाब देते। मैंने फैसला किया कि मैं चलूँगा।

जब मैं जम्मू आया, यहाँ गवर्नर साहब शायद कोई दूसरे थे, शायद ये राव साहब होते तो हम को यह हैलीकॉप्टर ही नहीं देते। लेकिन उस समय गवर्नर थे, सक्सेना जी थे। फिर उन्होंने मुझ से कहा कि मत जाइए। मैंने कहा, नहीं, मैंने तो वायदा किया है। मैं तो जाऊँगा। तो उन्होंने कहा कि मैं भी चलूँगा। मैंने कहा-बहुत खुशी की बात है। गवर्नर साहब भी मेरे साथ गए। जिस जगह मुझे जाने से रोक रहे थे, वहाँ वे स्वयं मेरे साथ गए और जब वहाँ पर नजारा देखा, तो उन को भरोसा हो गया कि कितनी बड़ी गलती हिन्दुस्तान की हुकूमत और वो नेता कर रहे है, जो काश्मीर की इस आग को बुझाने के लिए बजाए पानी और रेत डालने के, मिट्टी का तेल डाल रहे हैं। क्योंकि जब जजबात भड़के हों, किसी वजह से तो उन जजबातों को ठण्डा करने की जरूरत हैं। उन के ऊपर रौब दिखाने का समय नहीं होता है वहाँ जब पहाड़ियों से निकल कर हजारों लोग आए थे, जब मैं उन के बीच में गया तो मुझे ऐसी हैरत भरी बातें सुनने को मिली कि मेरे तो रौंगटे खड़े हो गए।

मैंने उन लोगों को वहीं पर गवर्नर और वहाँ के जो बड़े-बड़े अधिकारी थे, उन के सामने आमना-सामना करा दिया। ये ऐसा कह रह हैं। आप सुन लीजिए। इस तरह आपको क्या करना है? आप सोचिए। एक जगह की बात थी। इस के बाद कार्यक्रम हमारा वहाँ का बनने ही नहीं दिया गया। किसी न किसी बहाने कैंसल होता रहा। लेकिन मैं इस का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि उस समय न तो कोई चुनाव होने वाला था। न श्री गुरूचरणसिंह जी हमारी पार्टी के सदस्य थे। इनका हमारा केवल मुश्किल से छः महीने की जान पहचान थी। तब मैंने यह निश्चय किया कि जम्मू काश्मीर में हमें ऐसे ही लोगों की जरूरत है। जो जनता के बीच में जाने से न डरें।

जनता के बीच में जाने से कौन डरता है? एक तो वो डरता है, जिसने जनता के साथ धोखा-धड़ी कर के बेईमानी की हो, वह जनता के बीच में नहीं जा सकता। दूसरा वो डरता है, जो केवल अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए जाता है। सोचता है कि एक दफे तो जा कर अपना स्वार्थ पूरा कर लेता है, दुबारा जाने की उस की हिम्मत नहीं होती और जनता के बीच में वो लोग जा सकते हैं, जिन्हें केवल अपने ही नहीं, कुछ उन की फिक्र रहती है। और इसलिए मैं आज यहाँ आया हूँ।

इंदिरा कॉंग्रेस में बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना किसी कारण से ऐसे व्यक्ति को अपना नुमाइंदा चुना है, चुनाव में, जो हम लोगों की नजर में इन सब बातों को पूरा करने के लायक है। और वे हैं श्री गुरूचरण सिंह चरख उनका निशाना है पुष्प चढ़ाती हुई महिला। मेरी आप से गुजारिश है, प्रार्थना है, दरख्वास्त है कि तीस तारीख को इसी चुनाव चिन्ह पर मोहर लगा कर आप नए काश्मीर के इतिहास की शुरूआत करें, जो परस्पर विश्वास पर कायम हो। जो एक दूसरे के साथ भाई चारे पर कायम हो।

इन्हीं आशाओं और विश्वास के साथ मैं आप सब माताओं, बहनों और भाइयों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरी बात सुनने की कृपा की और फैसला सही करेंगे, इसका मुझे पूरा भरोसा है।

धन्यवाद। जय हिन्द।

देश में अभी भी मूल रूप से सामंतवादी दृष्टिकोण खत्म नहीं हुआ हैं

28 नवम्बर 1996 दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रजातंत्र और चुनौतियाँ विषय पर दिया गया उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

यह भी एक चुनौती है। हमारे सहयोगी और कई जगह साथ रहे भाई अग्रवाल जी, सम्मानीय खरे साहब, और इस संगोष्ठी के आयोजक डा. जे.पी. शर्मा, यह अच्छा हुआ कि आपने मुझे सबके बाद में बोलने का अवसर दिया और वो भी पूर्व में ऐसे वक्ताओं को सुनने का अवसर मिला जिन्होंने काफी बारीकी से और नजाकत से प्रजातंत्र और उसकी चुनौतियों की यहाँ पर व्याख्या की। वो बातें यहाँ दोहराना आवश्यक नहीं है, जो आपने सुनी है और निश्चित तौर से जो अलग-अलग वक्ताओं ने बात कही है उसका औचित्य भी है और प्रजातंत्र में चुनौतियों के लिए जो कुछ कहा गया है उसमें उनकी गिनती करना भी उचित है। आपकी अनुमति से मैं इससे थोड़ा हटकर कुछ शब्द आपसे कहना चाहता हूँ। प्रजातंत्र की कल्पना जो उसकी परिभाषा है, क्या है? जब हम यह समझ लेंगे तब पूरी तरह से यह समझ पाएँगे। कि कौन सी चुनौतियाँ हैं? और उनका मुकाबला कैसे किया जा सकता है? प्रजातंत्र जिस रूप में आज उसकी कल्पना होती है, उस प्रकार का प्रजातंत्र भारत में पहले था नहीं। यह तो महात्मा गाँधी की देन है कि आजादी की लड़ाई में ही उन्होंने भारतीय गणतंत्र की एक तरह से रूपरेखा भी बना दी और उसका फाउंडेशन भी रख दिया। गणतंत्र का जो संविधान है, अगर हम उसकी दो-चार मुख्य बातों को देखें तो एक तो यह है कि भारत के सब लोग आजाद हैं और उन्होंने संविधान बनाकर अपने को दिया है। किसी और को संविधान बनाकर नहीं दिया।

दूसरी बात यह है कि सभी व्यक्ति जो भारतीय नागरिक हैं वे बराबर हैं, इक्वीलिटी है। तीसरी बात यह है कि प्रत्येक नागरिक के कुछ मौलिक अधिकार हैं, जो अधिकार किसी व्यक्ति के दिए हुए नही हैं। हमारे गणतंत्र की परिकल्पना से ही उत्पन्न हुए हैं। और अगर चौथा कहना चाहूँ तो एक स्वतंत्र न्याय का हिस्सा हैं जो व्यक्तिगत आधारों की रक्षा के लिए भी और उनको अमल में लाने के लिए भी सक्षम है। और उस संविधान में (equality before) इक्वेलिटी बिफोर ये सिद्धांत भी निहित है। अब इस पृष्ठभूमि में जितने भी इंस्टीट्यूशन हैं, तंत्र हैं जो प्रजातंत्र के लिए उनके अपने-अपने अधिकार हैं, कार्य क्षेत्र हैं और उस कार्यक्षेत्र को अमल में लाने के लिए मार्ग दर्शक सिद्धांत थे। फिर बात कहाँ कैसे बिगड़ गई, जो आज हमें सोचना पड़ रहा है कि हम चुनौतियों को पहचानें, चुनौतियों को देखें। मेरे मत में गाँधी जी ने तो स्वतंत्रता संग्राम में एक पीढ़ी को परिपक्व कर दिया। जो प्रजातंत्र के आकार और उसके मूल्य को भलीभाँति समझती थी। क्योंकि उसके लिए संघर्ष किया और जब तक वह पीढ़ी सार्थक रूप से इस प्रजातंत्र के संचालन में भागीदार रही तब तक यदि आप पीछे नजर उठाकर देखें किसी प्रकार की चुनौतियाँ भी सामने नहीं थी। लेकिन कुछ व्यक्तियों से तो देश नहीं चल सकता। जब तक वो रहे उन्होंने अपना काम किया। फिर ये घटना कैसे हुई? पुनः मेरा इसमें यह मत है, गलत हो, सही हो, मैं नहीं जानता। वह यह है कि देश में अभी भी मूल रूप से सामंतवादी दृष्टिकोण खत्म नहीं हुआ है। सामंतवादी दृष्टिकोण होता है जो स्वयं के अधिकारों पर पहले केन्द्रित

होता है। दूसरे के अधिकारों या उनके हकों के बारे में दृष्टिकोण दूसरा रहता है। यही वजह है कि आजाद जब हम हुए हमने अपने सामने एक उदाहरण रखा, अपने देश के सामने एक कल्पना रखी उसको साकार करने के लिए उन्होंने उसको आगे बढ़ाया अब गतिरोध सा पैदा हो गया है, क्योंकि प्रजातंत्र में जो सबसे बड़ा सिद्धांत है। मेरे मत के मुताबिक वह सत्ता, सत्ता के अधिकारों की सीमा का डेमोक्रेसी में 'देयर आर लिमिट टू पावर' जब तक हमारे दिमाग में यह बात सदैव विद्यमान रहेगी कि 'देयर आर लिमिट टू पावर' हम एक सीमा से ज़्यादा बात नहीं कर सकते हैं, तो यह ढाँचा चलेगा, यह आगे मजबूत होगा जब हम लोगों के दिमाग में यह विषय जब गौण हो जाता है। एक प्रतिस्पर्धा की बात आ जाती है, तो लिमिट और पावर हम निर्धारित करते हैं। हमारे पावर की क्या लिमिट हो और उस प्रतिस्पर्धा में चाहे पार्टियाँ हों, चाहे वह व्यक्ति हो। एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, और जब वह लिमिट को आप क्रास करते हैं।

मैं किसी व्यक्ति की बात नहीं करना चाहता अब जितनी भी घटनाएँ पिछले कुछ समय में हुई हैं, अगर उन पर जरा सी संजीदगी से सोचेंगे तो आपको यही नज़र आएगा। डेमोक्रेसी के जितने भी अंग हैं कांस्टीट्यूशन के अन्दर आज ये एक दूसरे के सामने क्यों खड़े दिखते हैं। आज अगर कोई चुनौती है तो यह है कि हम सही मायने में प्रजातंत्र की जो परिकल्पना है जो उसकी आवश्यकता है जो उसके आधारभूत सिद्धांत है, जो उसके मूल्य और आदर्श हैं उनसे भटक गए हैं। वह चुनौती प्रजातंत्र की पैदा हुई है, बाहर से आकर कोई पैदा नहीं हुई है। पार्लियामेण्ट देश के लोगों का अधिकार और उनकी समस्त कल्पनाओं का एक तरह से रक्षक भी है। आज सोच सकते हैं कि एक डेमोक्रेसी में जो आर्गन्स (organs) सबसे सुप्रीम हैं। जिसको हाउस ऑफ प्यूपिल कहते हैं, सत्ता का केन्द्र, हाउस ऑफ द प्यूपिल है। अगर उसी प्रतिक्रियाएँ उसके आधारों में ऐसी बात आ जाय तो उसकी क्रेडिब्लिटी को डिस्ट्राय करती हैं। उसके इफेक्टिवनेस को डिस्ट्राय करती हैं। अब बात आ रही है पार्लियामेण्ट की दिशा में इस विषय में होने वाली जाँच और इस पर होने वाले अमल को रोकें क्योंकि पार्लियामेण्ट के प्रीविलेज के खिलाफ हैं। इस देश की जनता को यह मिलकर करना चाहिए। जिस दिन से यह घटना घटी है। उस दिन से पार्लियामेण्ट के अन्दर इस विषय को उठाया जाता रहा है। कभी स्पष्ट रूप से आरोप लगते हैं, और अंत में जाकर एक प्रीविलेज मोशन सदन में आया की इस विषय की जाँच की जाय। इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। तो आप पार्लियामेण्ट के लिए यह कहना थोड़ा सा मुश्किल होगा कि हम किसी की जाँच नहीं होने देंगे। इस जाँच को हम खत्म कर देंगे। ये चीज हैं और जब पार्लियामेण्ट की क्रेडिब्लिटी डिस्ट्राय हो जाय और जो भी कृत्य इस क्रेडिब्लिटी को डिस्ट्राय करने के लिए किया जाय, मेरे मत में तो वह क्राइम अगेन्सट द रिपब्लिक हैं। ये दृष्टिकोण हैं, जिनको हमें बहुत बारीकी से देखने की जरूरत है। डेमोक्रेसी ऐसा पर्दा नहीं है, जो हर परिस्थिति में पनपता है क्योंकि समन्वय उसका आधार है। आप समन्वय तोड़ दीजिए, अतिवादी दृष्टिकोण अपना लीजिए। सत्ता की सीमाओं को भूल जाइए प्रजातंत्र नहीं चल सकता। एक नहीं अनेकों उदाहरण दुनिया में हैं। जब-जब ऐसी परिस्थितियाँ आई हैं, तो डिक्टेटरशिप ने डेमोक्रेसी को समाप्त कर दिया और इसलिए यह चर्चा है कि यह विषय कभी भी हमारे यहाँ सोशल नहीं हुआ और फिर कारणों से यह समय-समय पर इस प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न होती रहती है। उनकी व्याख्या होने के लिए खास तौर से बुद्धिजीवियों के द्वारा हमारे खरे साहब बैठे हैं, जिस प्रोफेशन को वे यहाँ रिप्रजेण्ट कर रहे है। उसको तो केवल चौथा स्तम्भ ही नहीं डेमोक्रेसी को गार्ड करने वाली प्रोटेक्ट करने वाली एक विधा है। फ्रीडम ऑफ स्पिवेस्ट कितना फ्री है। यह तो आप लोगों के मूँह से सुन लिया। मैं उसमें क्या बोलूँ। ये चीजें है जो आज हमारे लिए विचारणीय है और दिल्ली युनिवर्सिटी के अन्दर प्रोफेसर, टीचर ने इस संगोष्ठी को आयोजित करके जो आपका दायित्व है समाज के प्रति, देश के प्रति आपने उसको निभाया है। हम ऐसी

आशा करते हैं कि अन्य लोगों के ऊपर भी जो जिम्मेदारी है प्रजातंत्र की वे भी अपनी जिम्मेदारी को इस तरह से निभाएँगे। जयहिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार और पत्रकार वार्ता

राष्ट्रीय सुरक्षा से बढ़कर कोई विषय नहीं

7 जनवरी 1996 जनसत्ता के श्री रामबहादुर राय को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न: 24 दिसम्बर, 94 को एक नई राजनीतिक यात्रा आपने शुरू की। तो अगर यात्रा के संदर्भ में देखें तो यह आपका फैसला था, या मजबूरी थी?

श्री अर्जुनसिंह: न मजबूरी थी, न यात्रा शुरू करने का पूर्व नियोजित निर्णय था। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी निर्मित होती चली गई कि 93 से जिसमें ये 93 के दिसम्बर में इन राज्यों के चुनाव हुए जो पहले भारतीय जनता पार्टी के प्रभाव क्षेत्र में थे, और वहाँ पर प्रत्येक राज्य में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत नहीं मिल सका था। वह एक तरह से बाबरी मस्जिद का जो हादसा हआ। जिसे की बी.जे.पी. यह समझती थी कि उससे उसकी छवि और उसका प्रभाव देश में अप्रत्याशित रूप से बढ़ जायगा जबकि हकीकत उसके विपरित निकली। और ये बात हम लोग सोचते भी थे। और इसलिए सरकारों को भंग करने के बारे में दबाव भी प्रधान मंत्री पर डाला। ताकि जनमत के सामने इस मुद्दे पर कुछ सफाई हो सकें। जैसी हम लोगों को आशा थी वैसा ही परिणाम भी आया। लेकिन उसके बाद में और तेजी से यह बात नजर आने लगी कि एक तरफ तो भ्रष्टाचार के प्रकरण बढ़ते गए। जिनका कोई भी निकाल करने का इरादा नहीं था। दूसरी ओर राजीव जी की हत्या की जाँच कर रहे जैन कमीशन को सस्पेंशन करने वाला विषय भी फरवरी, 94 में हुआ। 10 फरवरी को एक बात का स्पष्ट संकेत कम से कम हम लोगों को मिल ही गया जब केबीनेट में प्रस्ताव ही आ गया कि जैन कमीशन को वाइंडअप करना है। उसके बाद फिर इन लोगों ने एक कमेटी केबीनेट की बना दी थी। उसमें भी मैं मेम्बर था। उसमें जो कुछ चल रहा था। वह सब पत्रों में आलरेड्डी छपा है। धीरे-धीरे ये अपराधिक तत्वों के बारे में भी हम लोगों को वोरा रिपोर्ट की जानकारी तो नहीं थी, बल्कि वह तो बड़ा सीक्रेट था। लेकिन आम तौर से यह स्पष्ट नजर आ रहा था कि कई महत्वपूर्ण विषयों पर कई ऐसे प्रकरणों में जो ऐसे लोग लिप्त थे, या प्रभावित होते थे उनको बचाने की कोशिश हो रही थी। ये सब चीजें अपनी तरह से बढ़ती चली गई। और 94 के नवम्बर, दिसंबर में जो असेम्बली के चुनाव 10 असेम्बली के चुनाव शुरू हुए। कर्नाटक में और आंध्र में तो दिसम्बर के पहले हफ्ते में नतीजे आ गए। दोनों स्टेट्स में पार्टी हार गई वो तो ठीक है, लेकिन तीसरे नंबर पर पहुँच गई। और दोनों राज्यों में दूसरे नम्बर पर बी.जे.पी. आ गई। जबकि ऐसे कोई बहुत स्पष्ट संकेत नहीं थे। खास तौर से आँध्रप्रदेश में तो बिल्कुल ही नहीं था। कर्नाटक में चलिए, पहले भी थोड़ा बहुत फोकस बना था। ये बात साफ नजर आने लगी कि अब एक 93 का स्टेज था। जहाँ जनमत ने सांप्रदायिक शक्तियों के जो कारनामें थे, उनके विपरीत मत दिया। पोलिटिकली एनालाईज करने की बात है ये और एक साल बाद काँग्रेस की

सरकारें एक के बाद एक गिरने लगीं। क्योंकि हमने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया। जिनकी वजह से काँग्रेस की साख लगातार गिरती जा रही थी। मायनारिटी के बीच में, गरीबों के बीच में और जो कमजोर वर्ग समाज के थे। इन सबका सम्मिलित परिणाम असेम्बली के रिजल्ट्स में देखने में आया। हमने यह समझा कि यह जरूरी है कि हम इसका सही मतलब समझें। ये एक बहुत साफ संकेत भी है और एक बहुत बड़ी वार्निंग भी है। जब वर्किंग कमेटी में इस बात की चर्चा शुरू हुई तो वो तो काफी लोगों को जानकारी है, कि प्रधान मंत्री जी काँग्रेस अध्यक्ष का एक ही जवाब था कि काँग्रेस परास्त कर दी गई आंध्र प्रदेश में और उन्होंने कोई कारण नहीं बताया क्यों पराजित हुई। अब बताया भी उन्होंने, परास्त भी हो गई। इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए मैंने ये सीधा सा अपनी ओर से वर्किंग कमेटी की मीटिंग में प्रस्ताव दिया कि अच्छा है, मैं समझता हूँ कि उचित यह होगा कि पार्टी के फोरम में हम लोग काम करें और गवर्नमेण्ट से अलग होकर काम करें। तो पार्टी को मजबूत बनाया जा सके। वरना कमजोरी तो नजर आ रही है। आखिर यही चीज तो प्रधान मंत्री और मंत्रियों से कह रहे हैं कि आप जाइए वहाँ काम करिए। मैंने अपने से कह दिया ये चीज पता नहीं क्यों अच्छी नहीं लगी। और फिर प्रक्रिया जो शुरू हुई जो मैंने कहा तो एक कोरा तो कहना या नहीं। मैंने तो सही समझा कि अलग होकर पार्टी का काम करना चाहिए। इसलिए यह न कोई याचना थी, न मजबूरी थी। उन परिस्थितियों में हमारा क्या कर्तव्य बनता है। अपने विवेक से मैंने यह बात कही। अब बाकी तो फिर सब इतिहास है जो कुछ हुआ। सिवाय इसके कि उसको उस रूप में देखकर और उन बातों पर विचार करके सोचते कि पार्टी कमजोर हो रही थी। यह समझ लिया गया कि वो कोई चैलेंज है। और परिस्थितियाँ जानबूझकर ऐसी बनाई गई। मैं तो बिहार के और महाराष्ट्र के चुनाव तक कहता रहा कि मैं जाना चाहता हूँ वहाँ प्रचार करने वहाँ काँग्रेस चुनाव में खड़ी है।

प्रश्न: सन् 52 या 57 में जब आपको पार्टी का टिकट दिया जा रहा था और आपने निर्दलीय चुनाव लड़ने का फैसला किया था। वो एक फैसला और एक ये हैं। इन दोनों में सामंजस्य क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैं समझता हूँ कि न कोई समानता है न कोई सांजस्य है। 57 का फैसला बिल्कुल एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण से लिया गया था और उसके पीछे कुछ नहीं था। उसकी कांस्टीट्यूंशी से 1952 में हमारे पिताजी को काँग्रेस का टिकट दिया गया था। बाद में लोगों ने उनको जो भी होता है, और वो वहाँ से पराजित हो गए। तो मैंने ये फैसला किया था कि इंडिविजवली हम अपने क्षेत्र में जाएँगे कि वो हम पर विश्वास करते हैं कि नहीं? पार्टी के नाम पर ये सब तो उस वक्त तो काँग्रेस मतलब लेम्प पोस्ट इलेक्शन था। यह सही है कि वो तो लेम्प पोस्अ इलेक्शन है । लेम्प पोस्ट को भी खड़ा कर दें, काँग्रेस से तो जीत जाएगे। इसलिए मैंने इंडिपेंडेंट चुनाव लड़ा। वरना काँग्रेस के आइडोलाजी और पंडित जी के उससे हमारा कोई वो नहीं था। इसलिए मैंने जो पहला अवसर आया पंडित जी का निर्देश हुआ तो मैंने पार्टी ज्वाइन कर ली 60 में?

प्रश्न: 24 दिसम्बर, 94 का एक फैसला यह माना जाता है कि देर मे लिया गया फैसला है। दो साल पहले इस तरह का फैसला ले लेना था?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह तो अपने-अपने दृष्टिकोण से एसेस कर सकते हैं। मैं तो समझता हूँ कि दो साल पहले काँग्रेस को ही इस लायक बनाकर क्रिमिनल फोर्सेस से हम लड़ सकें और उस समय जबकि वो अपने

दृष्टिकोण से अपने चरम सीमा पर थी। बाबरी मस्जिद गिराने का मंतव्य तो यही था न कि देश का सारा हिन्दू उद्वेलित हो जाय और ये हो जाय कि चलिए ये तो बहुत बड़ी फतेह कर ली बी.जे.पी. ने। उस समय उस चुनौती का काँग्रेस के अन्दर से ही सामना किया जाना चाहिए था। और हमको विश्वास था कि काँग्रेस सामना कर सकती है। इसलिए मैंने बजाय इस्तीफा देने के वो काम किया जिससे कि वो चुनौती का हिसाब पूछे। गवर्नमेण्ट डिसमिस हो। और फिर चुनाव लड़े काँग्रेस को ही समाप्त करने की स्टेज आ गई। तो फिर ये मुझे सुझाव देना पड़ा और सुझाव के आधार पर कदम उठाना पड़ा।

प्रश्नः अभी भी लोगों के सामने ये सवाल हैं कि असली काँग्रेस कौन सी है? लेकिन अब जिस तरह से माना जाता है कि आपने फैसले लेने में देर की, जैसे नई पार्टी बनाने में देर की तो रजिस्ट्रेशन का भी मामला देर से ही चल रहा है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए ये जो कानूनी चीजें हैं। इनका तो अपना टाईम टेबल हैं उसमें थोड़ा बहुत आगे पीछे भले ही हो सकता है। काँग्रेस के अन्दर बहुत पहले की बात है, अगर हम छोड़ भी दें, पिछले तीन दशक में दो ऐसे अवसर आए जब काँग्रेस क्या है? यह प्रश्नवाचक चिन्ह देश भर में सामने आया। 69 में आया जब सिंडीकेट्स से लड़ाई हुई और 79-80 में आया।

प्रश्नः नहीं 78 में आया।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं 78 में तो बना, लेकिन ये हैं क्या ये तो 80 में टेस्ट हुआ न? 78 में तो काँग्रेस (आई) बनी। उस समय यही सवाल पूछे जाते थे कि कौन काँग्रेस है और आज के जो कई बड़े-बड़े नेता हैं। यही उस वक्त कहा करते थे कि जो काँग्रेस से चला गया उसका कोई वजूद नहीं रहता। और इसमें सबसे आगे नाम भी इंदिरा गाँधी का रखते थे। लेकिन ये भूल जाते हैं लोग कि काँग्रेस कोई आर्टिफिशएल बाडी नही है। जो दस लोगों ने गठबंधन करके बनाया हो। काँग्रेस हिन्दुस्तान के अवाम के साइड में चली गई है, मेन्टल मेकअप में चली गई हैं। जब कभी वो सोचते हैं कि काँग्रेस इस प्रकार का आचरण नहीं कर रही है, जैसी कि अपेक्षा करते हैं तो काँग्रेस को भी हरा देते हैं। इंदिरा जी को भी हरा दिया 77 में। लेकिन काँग्रेस लुप्त हो जाय भारतीय परिवेश से, ये कभी आज तक ऐसी भावना हमने आम लोगों के मन में नहीं देखी। वही स्थिति आज है। जिन चीज़ों पर काँग्रेस को खड़े होना था, वह मूल्य और आदर्श काँग्रेस के पर्यायवाची हैं, उनसे जब संस्था दूर होती चली गई, तो प्रदेशों में स्थिति बनती गई और वही स्थिति राष्ट्रीय स्तर पर बन गई। फर्क इतना ही रहेगा कि प्रदेशों में चूँकि काँग्रेस के अन्दर दूसरा विकल्प नहीं था, इसलिए अपोजिशन पार्टी ने स्थान ले लिया। हमारी कोशिश यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर जब यह सवाल आए तो यह विकल्प सामने रहे लोगों के कि काँग्रेस जिन चीजों के ऊपर आधारित थी, यह चलती रही उसको चलाने वाले अभी मर नहीं गए हैं।

प्रश्नः लोक सभा चुनाव में जैसा आपने कहा कि जल्दी ही औपचारिकताएँ पार्टी की जो औपचारिकताएँ हैं चुनाव लड़ने की पूरी हो जायगी। उसी तरह से एक विकल्प की जो औपचारिकता है, उस तरफ आप बढ़ रहे है।

श्री अर्जुनसिंहः अगर हम इस तरफ नहीं बढ़ेंगे तो फिर कोई काम करने का मतलब ही नहीं रहेगा। लेकिन हम केवल सत्ता में पहुँचने के मात्र विकल्प को अपना नहीं सकते। आज देश के सामने जो अहम सवाल है,

उन सवालों के बारे में जनता के सामने स्पष्ट रूप से बात कर आएँ और मतदाताओं को इस पर फैसला करने के लिए एक तरह से प्रेरित किया जा सके ये महत्वपूर्ण हैं। आप मुद्दे ले लें जैसे लिबरेलाइजेशन का, उदारीकरण का, अब ये तो बड़ा व्यापक और जनरल मुद्दा हैं। कोई भी यह नही कहता कि लिबरेलाईजेशन को समाप्त कर दें, कोई पार्टी नहीं कह रही हैं। सब उसके अलग-अलग तरीके से संशोधित करने की बात कर रहे हैं। अब ये संशोधित करने की बात जो कहेंगे बी.जे.पी. कुछ कहेगी, हम कुछ कहेंगे, कम्युनिस्ट कुछ कहेंगे। इन पर कोई न कोई अंतिम निर्णय इस चुनाव में आना चाहिए। इसका मतलब यह हैं कि हमें उतने स्पष्ट से कहना चाहिए। दूसरा आपका क्रिमलाईजेशन का सवाल है, अपराधीकरण का, अब अपराधीकरण के मामले में केवल भाषण दे देना तो ठीक है, लेकिन वो कौन से तंत्र हैं जिनके द्वारा इस प्रक्रिया पर रोक लगाई जा सकती है। वो प्रक्रिया वोरा समिति ने अपने इस वाक्य से एक अत्यंत खतरनाक स्वरूप दे दिया है, कि भारत में अपराधिक तत्वों की समानांतर सरकार चल रही है। तो इस तरह के मुद्दे हैं। इस वक्त जैसे सुरक्षा की बात है, राष्ट्रीय सुरक्षा इससे बढ़कर तो कोई महत्वपूर्ण विषय किसी देश के लिए होता नहीं है। जब अस्तित्व नहीं रहेगा तो बाकी सब चीज़ें क्या मतलब रखती हैं। आज खतरा तो पैदा हो गया है और कुछ घटनाओं ने तो और भी संदेह पैदा कर दिया है। इसके बारे में स्पष्ट होना चाहिए। अब इन सब चीज़ों को हम नजरअंदाज़ करके केवल सत्ता में पहुँचने के लिए कुछ लोगों को अच्छा लगे ऐसी बात कर-कर के जात पर, पात पर और धर्म पर वोट दिलाने में जुट जाय, मैं समझता हूँ भारतीय गणतंत्र के प्रति ये न्याय नहीं है।

प्रश्न: उन मुद्दों के आधार पर राजनीतिक तालमेल सीटों के तालमेल के लिए उपयुक्त किसे मानते हैं कितने लोगों को?

श्री अर्जुनसिंह: इस विषय पर मैं इस वक्त इसलिए कुछ नहीं बोलना चाहता हूँ कि अटकलबाजियाँ इतनी लगाई जा रही हैं। आप जिस संदर्भ में पूछ रहे हैं, वह संदर्भ तो एक बिल्कुल ऐकेडेमिक है। इसको ऐसा समझता हूँ। इसका मतलब यह नहीं कि हम लोग उन्हीं से करने जा रहे हैं। इसलिए हम लोगों में इस बारे में कोई बात किसी से नहीं की हैं और न अभी इसका डिस्कशन हुआ है। ज्यों ही चुनाव की तिथियाँ घोषित हो जायगी। हम चर्चा करके वर्किंग कमेटी में ये फैसला करेंगे। आप इसको अपने प्रति कोई अनादर न समझे। अच्छा जिनके साथ तालमेंल करने का सवाल उठता है। अभी तो वही सब स्थिर नही हैं। कौन कहाँ है? तो उधर भी तो चिंता है।

प्रश्न: आपका ध्यान एक बयान की ओर गया होगा जिसमें कहा गया है कि रामविलास पासवान जी के बारे में?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, देखा है। मेरी तो ऐसी कोई बात हुई नहीं है।

प्रश्न: कभी भी नहीं हुई?

श्री अर्जुनसिंह: वैसे रामविलास पासवान मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं। मैं उनका बहुत आदर करता हूँ। लेकिन इस विषय पर कोई बात अभी उनसे नही हुई है। न उनसे हुई है, और न किसी से हुई है, क्योंकि उन्होंने कोट किया था।

प्रश्न: देवगौड़ा जी से?

श्री अर्जुनसिंह: देवगौड़ा जी से भी मेरी कोई बात नहीं हुई।

प्रश्न: यही सवाल आप लोगों से बार-बार पूछा गया है। और अभी भी पूछा जा रहा है। यह सवाल क्यों पूछा जा रहा है कि काँग्रेस से समझौते की संभावना कितनी है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए यह सवाल अगर ईमानदारी से पूछा जाय तो ये सवाल रिलेवेंट हैं। मैं ये मानने को तैयार हूँ। लेकिन इसका उत्तर भी ईमानदारी से दिया जाना चाहिए। क्योंकि ये परिकल्पना के चार लोग एक तरफ हो गए हैं, और 7 लोग एक तरफ हो गए हैं, 7 और 4 मिलाकर 11 एक तरफ हो जाएँगे तो सारा राष्ट्रीय परिदृश्य बदल जाएगा और काँग्रेस पार्टी फिर अपनी पुरानी ताकत पर आ जायगी। मैं नही समझता कि ऐसा होने वाला हैं। तो उद्देश्य पहले पूरा होना चाहिए कि 7 और 4 करना है कि पहले पार्टी को मजबूत करना है। अगर मजबूत करना हैं तो हमें अनिवार्य रूप से उन कारणों पर जाना पड़ेगा, जिनकी वजह से पार्टी का पराभव हुआ। अगर हम उन कारणों को देखने की हिम्मत नही दिखाना चाहते हैं या जो सुधारने के लिए करना चाहिए उसका साहस नहीं बटोर सकते तो फिर एकता की बात तो फिर एक काल्पनिक होगी। अगर एकता की बात वो करने के लिए तैयार हैं तो एकता की बात भी आनेस्टली की जा सकती है। मैं इसी वजह से कहता हूँ कि इन चीजों पर ध्यान देकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर कदम उठाना वे अपने निज़ी हितों के विपरीत समझते हैं। काँग्रेस का हित तो एक तरफ है। आप भ्रष्टाचार के खिलाफ कमीशन आँफ इंक्वायरी बिठाएंगे तो शुगर स्केण्डल है, सिक्युरिटी स्केण्डल है, डिस इंवेस्टमेन्ट स्केण्डल हैं, अब जुड़ गया एक और टेलिकम्युनिशन स्केण्डल हैं वोरा कमेटी की रिपोर्ट है, मायनारिटिज़ का एलिशन है, राजीव जी के एसेसिनेशन की कांसप्रेसी के कव्हरअप का सवाल है। इन सब चीजों का मिला जुला असर तो हुआ हैं, पार्टी का जो आज हाल हुआ है, इनको दूर कीजिए युनिटी हो जायगी।

प्रश्न: तिवारी जी ने याने श्री नारायण्दत्त तिवारीजी ने कई बार इस समझौते पर सफाई दी है। करीब-करीब यह भ्रम दूर भी हुआ है लेकिन शिलान्यास में उनका जो रोल रहा है उसके कारण आपकी पार्टी को....?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि यह सवाल आपको उनसे ही पूछना चाहिए और इस सवाल का जवाब वो अच्छी तरह से दे सकते हैं, ऐसी मेरी मान्यता है।

प्रश्न: इस चुनाव में आपकी पार्टी कितनी सीटों पर लड़ने का इरादा रखती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ये तो नंबर्स का सवाल आज तो मैं कुछ कह नहीं सकता। क्योंकि हर प्रादेशिक यूनिट इसका मूल्याँकन कर रहे हैं और सबको कहा गया है कि इस माह के अंत तक उनकी तरफ से सुझाव आ जाने चाहिए इसके बाद ही उस पर कुछ किया जा सकता है।

प्रश्न: क्या अभी भी लगता है आपको कि कुछ लोग छोड़कर मंत्री और सांसद श्री नरसिंहराव को छोड़कर आपकी तरफ आएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: इस अटकलबाजी में पड़ने की मैं आवश्यकता नहीं समझता। सब अपने-अपने विवेक से फैसला करने के हक्दार हैं।

प्रश्न: पहले यह माना जाता था कि श्री दिग्विजयसिंह पूरी सरकार लेकर आपके साथ आएँगे और इसके कारण मध्यप्रदेश में एक भ्रम का जो वातावरण भी बना है।, आप क्या सोचते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: कुछ लोगों को भ्रम का वातावरण बने रहना रुचि कर है। मेरा तो पूर्ण ध्यान केन्द्रित है वहाँ की 40 लोक सभा सीट पर। मेरा प्रयास यह है कि मध्यप्रदेश का मतदाता काँग्रेस के आदर्शों और मूल्यों के बारे में किसी भ्रम में न रहें। जब वह अपना मतदान करें।

प्रश्न: अभी जैन आयोग के बारे में कुछ कहा गया। भारत सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दायर किया है। आप कहते रहे हैं कि जैन आयोग को काम करने से रोका जा रहा है या यह कहा कि जैन आयोग को पूरी जाँच की आजादी नहीं दी जा रही है। इसके बाद आपका आरोप उस प्रकार का है।

श्री अर्जुनसिंह: मैंने एक बयान दिया था तीन दिन पहले आपके यहाँ भी गया होगा। उसमें इस बात को मैंने स्पष्ट रूप से कहा था। क्योंकि चार ही बातों को ध्यान में रखें तो अपने आप बात स्पष्ट हो जाती है। एक तो सरकार द्वारा 10 फरवरी, 94 को विधिवत रूप से जैन कमीशन को भंग करने का औपचारिक प्रस्ताव केबीनेट में लाना, और उसे नकारा जाना। अप्रैल के महीने में मुश्ताक अहमद द्वारा दिल्ली हायकोर्ट में रिट पिटिशन दायर करके इसी माँग के लिए कोर्ट के आदेश के लिए प्रार्थना करना अर्थात् भंग करने का जैन आयोग को। मई के महीने में दिल्ली हायकोर्ट के अंतरिम फैसले में कुछ रेस्ट्रिक्शन लगाए गए जैन आयोग पर कि इन-इन क्षेत्रों में आप भी इंक्वायरी न करें। 16 नवम्बर, 95 को दिल्ली हायकोर्ट का जिस पर अंतरिम फैसला हुआ है और मुश्ताक अहमद जी की रिट पिटिशन को खारिज कर दी और जैन आयोग को हर प्रकार के बंधनों से मुक्त कर दिया और जैसा आप कह रहे हैं कि केन्द्रीय शासन का एस.एल.पी. फाईल करना। इस विषय पर जबकि केन्द्रीय शासन केवल रिस्पांडेन्ट था इसमें मुश्ताक अहमद पिटिशनर थे, अब केन्द्रीय शासन पिटिशनर बन गया है। हायकोर्ट के फैसले के खिलाफ तो अद्‌भूत मतैक्य हैं, केन्द्र शासन और मुश्ताक अहमद के बीच में, कैसे हैं? क्यों हैं? ये स्पष्ट करने के, की बात बार-बार कही गई लेकिन किया कभी नहीं। लेकिन घटनाचक्र ने अपने आप उसे स्पष्ट कर दिया है। मुश्ताक अहमद गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया के ही फ्रण्ट थे, जो निर्णय केबीनेट में नहीं करवाया जा सका वह निर्णय करवाने के लिए दूसरे व्यक्ति को अदालत में खड़ा कर दिया गया।

प्रश्न: जैन आयोग में जिस तरह की गवाहियाँ चल रही हैं उससे आयोग की विश्वसनियता पर सवाल खड़ा होता है? ऐसा क्यों?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए किसी भी ज्यूडिशियल बाडी की कार्य विधि पर टिप्पणी करना मैं उचित नहीं समझता। यह फैसला जस्टिस जैन को करना है, कि किस पर भरोसा करें, किसी गवाही पर नहीं करें, उसमें हम लोग क्या कुछ कर सकते हैं।

प्रश्न: व्यक्तिगत सवाल है। तो पुरूलिया के बारे में आपने उसे बीच में राष्ट्रीय सुरक्षा वाले सवाल पर उसकी ओर संकेत किया था?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं पुरूलिया पर तो मेरा अलग से भी बयान आया हैं।

प्रश्न: पुरूलिया की घटना को आप किस रूप में देख रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: पुरूलिया की घटना के मैं दो स्वरूप देख रहा हूँ। एक तो भारत सरकार का अपराधिक दायित्वों के ऊपर से निगाह ढीली हो जाना। बल्कि उनके प्रभाव में आकर बहुत से काम करना। जैसे कि समानांतर सरकार चलती है। एक तो उसका यह पहलू है। इसलिए लोगों का यह दुस्साहस हुआ कि ऐसी बात भी वो कर सकते है। आज से 10 साल पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। हवाई जहाज से बाहर से

कोई आकर हमारे देश में हथियार डाल जाय। उनको लगा कि जब सब चीजें फ्री हैं, तो हम भी कर सकते हैं। दूसरा यह है कि जो सामान्य सिक्युरिटी सेटअप होता है, सुरक्षा का जो ताना बाना होता है उसमें कहीं न कहीं कुछ गंभीर स्थिति रही हैं। सामान्य सी रही हो या अपने आप में और किसी वजह से रही हो। तो ये इसी दुर्घटना के बावजूद प्रकट होंगे। यह देश के लिए संतोषजनक बात नहीं है। इसका तो सतत् मूल्याँकन होते रहना चाहिए। जैसा कि दुनिया के हर देश में होता है कि कहीं भी कोई ऐसी खामी दिखें तो हम उसे दूर कर सकें। इंतजार न करें कि कोई आकर देखकर कोई जब हादसा कर दें तो फिर उसको ढूँढें कि भाई कहाँ गड़बड़ थी, कैसे गड़बड़ हो गई वो एक सिक्युरिटी कांस्टेट विजिलैंस जिसको कहते हैं सतत् उसका अभाव हैं, इससे साबित होता है।

प्रश्न: यह हथियार किसके लिए आ रहे थे?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह तो पता नहीं। अब रिपोर्ट आए तो पता चले। लेकिन साफ-साफ बातें देश के सामने आना चाहिए। इसमें कोई लुका छिपी करने की भी गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। बहुत स्पष्ट सारे देश के सामने आएगी।

प्रश्न: आम धारणा यह है कि कश्मीर के बारे में अमेरिकी दबाव में हमारी सरकार काम कर रही है। और अमेरिका की कोशिश कश्मीर को भारत से अलग करने की है। इस पर आप कुछ कहना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, ये कोई नई बात नहीं है। ये तो जिस दिन भारत आजाद हुआ और कशमीर ने भारत के साथ आने का अपना फैसला किया, उस दिन से ये कोशिश जारी है। ये तो इस देश का सौभाग्य है कि ये कोशिश इसलिए सफल नहीं हो पाई, क्योंकि कश्मीर मसला एक ऐसा था जिस पर कि बहुत व्यापक रूप से सहमति थी। और नेतृत्व भी ऐसा था कि दबाव में आकर किसी चीज़ को करने के लिए कभी राजी नहीं हो रहा था। आज ऐसा कुछ देश समझते हैं कि भारत कमजोर हैं। नेतृत्व कमजोर हैं। और दबाव डालकर अपनी बात को मनवालो। लेकिन आप यह निश्चित मानिए कि पार्टी और नेतृत्व कमजोर हो सकता है, लेकिन देश मज़बूत ही रहेगा और भारत किसी के दबाव में आकर ऐसा कोई भी काम करने के लिए राजी नहीं होगा जिससे देश के हितों पर कुठाराघात हो। वो कश्मीर हो या और कोई हो।

मैं तिकड़म में विश्वास नहीं करता

8 जनवरी 1996 रूबरु के श्री राजीव शुक्ला के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न: अर्जुन सिंहजी गोवा में आपकी अच्छी वकालत चल रही थी फिर आप पोलिटिक्स में क्यों आ गए वकालत छोड़कर?

श्री अर्जुनसिंह: ये किसने कहा कि मेरी वकालत बहुत अच्छी चल रही थी।

प्रश्न: खराब चल रही थी?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैंने तो मुश्किल से एक साल ही वकालत की और अच्छी बुरी की तो मुझे जानकारी नहीं हुई।

प्रश्न: कहते है कि जब संजय गाँधी काफी महत्त्वपूर्ण थे, जब काँग्रेस वापस लौटकर आई 1980 में तो उस दरम्यान आप उनके बहुत क्लोज थे। और कुछ बड़े लोग राजा, महाराजा, जमीदार जो लोग

चीफ मिनिस्टर बनाए गए उनमें आप भी थे और उसके बाद मध्यप्रदेश की राजनीति में, आपने अपना वर्चस्व पूरा कायम किया?

श्री अर्जुनसिंह: पहली बात तो ये कि मैं कोई राजा, महाराजा या जमींदार था भी नहीं। हकीकत में इस श्रेणी में जोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। ये जरूर है कि 77-80 के बीच में जो संघर्ष हुआ, राजनैतिक संघर्ष जनता पार्टी के साथ इंदिराजी का उसमें जो कुछ मुझसे बन पड़ा मैंने निभाने की कोशिश की उसकी वजह से अगर संजय जी ने या इंदिरा जी ने ऐसा सोचा हो, तो ये तो अच्छी बात है। और मैं क्या कह सकता हूँ।

प्रश्न: नहीं आप उन बहुत कम लोगों में से हैं, जो संजयजी के भी क्लोज थे और बाद में राजीव जी के भी क्लोज हो गए, उसकी क्या वजह थी?

श्री अर्जुनसिंह: अब वजह तो मैं कैसे बता सकता हूँ। ये तो वो ही दोनों ही लोग जिन्दा होते तो बताते। मैं तो सवाल ये है कि मैं तिकड़म में विश्वास नहीं करता कि इसकी बात उससे कहो उसकी बात इससे कहो और संजयजी जिस समय थे, उस समय राजीव जी तो थे नहीं। इनमें तो आपस में कोई कुछ ऐसा है नहीं इसमें कोई एक दूसरे से टकराव का भी सवाल नहीं कि आप इनके हैं या उनके हैं।

प्रश्न- राजीव जी ने भी आपको सी.एम. बनाया?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो उनकी कृपा है और इसमें मैं क्या कह सकता हूँ।

प्रश्न: आप कहते हैं कि आप तिकड़म में विश्वास नहीं करते हैं लेकिन आपने मध्यप्रदेश में राजनीतिक धाक पैदा कर दी थी किसी को भी, जो और भी कोई सी.एम. बनकर आया उसको बैठने नहीं दिया आपने?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो समझता हूँ कि मैंने किसी को भगाने की तो कोशिश नहीं कि है। और जब तक मैं रहा सबसे सहयोग लेता रहा।

प्रश्न: कुछ न कुछ ऐसा कर देते थे, कि लोग भाग जाते थे, हटा दिए जाते थे और आप पहुँच जाते थे?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैंने तो कोई ऐसा काम किसी वक्त नहीं किया जिससे कि किसी को खतरा पैदा हो।

प्रश्न: नहीं इसकी क्या वजह रही कि माधवराव सिंधिया आपके खिलाफ, वी.सी. शुक्ला आपके खिलाफ, श्यामाचरण शुक्ल आपके खिलाफ़ और मोती लाल वोरा भी आपके खिलाफ़ मध्यप्रदेश की पोलिटिक्स में थे?

श्री अर्जुनसिंह: इसका मैं खुद क्या जवाब दे सकता हूँ, जवाब तो वही देंगे।

प्रश्न: या आप उनके खिलाफ थे?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैं किसी के खिलाफ़ नहीं, यही तो मैं कह रहा हूँ कि वोरा जी को तो जब मैं पंजाब गया तो प्रधान मंत्री ने मुझसे पूछा कि आप मेरे कहने से मुख्यमंत्री चुने जाने और बनने के बाद जा रहे हैं तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि आप किसे उचित समझते हैं यहाँ पर मुख्यमंत्री बनाना अपना सुझाव दीजिए। एक ही नाम लिया मैंने वोरा जी का लिया अगर मैं उनके खिलाफ़ होता तो वोरा जी का नाम क्यों लेता? अब ये राजीवजी की महानता है कि उन्होंने मेरे सुझाव को ही मान लिया।

प्रश्न: लेकिन बाद की राजनीति तो बताती है कि वोरा जी के खिलाफ़ हो गए?

श्री अर्जुनसिंह: वो हो गए मैं तो नहीं हुआ। इतना आपसे कह रहा हूँ कि उन लोगों से पूछिए मैं तो नहीं हुआ खिलाफ़ उनके।

प्रश्न: बाद में जब ये हायकोर्ट वर्डिक्ट के बाद हायकमान ने हटाया तो माधवराव सिंधिया को अपने यहाँ से भेजा गया था कि सी.एम. बनाने लेकिन आपने माधवराव सिंधिया के नाम का विरोध किया और आखिर में मजबूरी में मोतीलाल वोरा को मुख्यमंत्री बनाना पड़ा।

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ इसमें किवदंतियाँ ज्यादा हैं। दिक्कत ये नहीं है। कुछ चीजें तो बहुत सी जोड़ दी जाती हैं। एक जनरल तरीके से माधवराव सिंधिया का समर्थन करने में असमर्थ थे, लेकिन मैंने कभी नहीं कहा कि मैं माधवरावजी के खिलाफ हूँ।

प्रश्न: विधायक तो सब आपके थे जो माधवराव जी का विरोध कर रहे थे?

श्री अर्जुनसिंह: किसी का कोई नहीं होता। ये गलतफहमी तो किसी को पालना नही चाहिए, सहयोगी होते हैं, लेकिन ऐसे मामलों में सब राय अपनी रखते हैं और उस राय का सम्मान होता है, होना चाहिए।

प्रश्न: आज भी दिग्विजय को लोग कहते हैं कि मुख्यमंत्री बनाने में आपका सबसे बड़ा रोल था लेकिन आज दिग्विजय आपके साथ क्यों नहीं रहे? वे कैसे नरसिम्हाराव के साथ चले गए?

श्री अर्जुनसिंह: यही तो मैं आपसे कह रहा हूँ। ये गलतफहमी कुछ लोग पालते हैं, मैं नहीं पालता। कोई सहयोग किसी स्टेज पर होता है। दूसरों की तरह कोई चीज़ होती है। लेकिन ये मानना कि उसकी वजह से वो बिल्कुल हमारा गुलाम हो गया है यह मानना नहीं चाहिए। जो मानते हैं वो गलत मानते हैं। इसलिए उसमें कोई ऐसी बात नहीं है। सब अपने-अपने विवेक से काम लेते हैं।

प्रश्न: दो तरह की बातें कही जाती हैं। एक तो ये कि दिग्विजय सिंह और अर्जुन सिंह दोनों नरसिम्हाराव के खिलाफ हैं। कुछ लोग जो मध्यप्रदेश की पोलिटिक्स में बिजी हैं, उनका कहना है कि ये इन दोनों की मिलीभगत है। और इतना बढ़िया ड्रामा चल रहा है कि नरसिम्हाराव धोखे में हैं। तीसरे लोग हैं वो कहते हैं कि दिग्विजयसिंह इतने बड़े कलाकार हैं, कि वो अर्जुन सिंह और नरसिम्हाराव दोनों को धोखे में रखे हुए हैं, असलियत क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: अब ये तो समय बताएगा बाकी मेरा तो इस कलाकारी में कोई योगदान नहीं है।

प्रश्न: नहीं लेकिन आपको भी छोड़कर गए?

श्री अर्जुनसिंह: उनका विवेक है। जो कुछ वो करना चाहते हैं करें। शिकायत तो कोई नहीं किसी से।

प्रश्न: इसका झटका नहीं लगा? लोग जिस तरह से उम्मीद कर रहे थे कि नई काँग्रेस बनने के बाद जिसमें आप वर्किंग प्रेसीडेण्ट थे, जिस काँग्रेस में मध्यप्रदेश में वह काफ़ी मजबूत है, काफ़ी लोग उसमें आएँगे, काफ़ी एम.एल.ए. आएँगे, काफ़ी मिनिस्टर्स आएँगे और ऐसा लगेगा कि वहाँ पर नरसिम्हाराव काँग्रेस एकदम खत्म होकर अर्जुनसिंह काँग्रेस हावी हो जाएगी। लेकिन ऐसा कुछ तो हुआ नहीं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए लोग कुछ संदर्भों को इससे मिला देते हैं। मेरा ऐसा मत हैं, मैं नहीं कहता कि कितने लोग सहमत हैं कौन किसके साथ कितने विधायक, कितने एम.पी. कौन हैं ये एक सीमित दायरे तक महत्वपूर्ण है। लेकिन जो राजनैतिक परिदृश्य अब उभरकर सामने आ रहा है और जिसकी परिणति चुनावों के नतीजों में होगी इसमें महत्वपूर्ण फैसला अवाम का होगा उस फैसले के बारे में मैं जरूर

आश्वस्त हूँ कि मध्यप्रदेश का फैसला मेरे खिलाफ नहीं होगा।

प्रश्न: आप मानते हैं कि तिवारी काँग्रेस इतनी मजबूत है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मानने का सवाल ही नहीं। ये तो नतीजे से, इसलिए तो मैंने कहा कि कुछ चीज़ें तो घटनाचक्र से ही यह प्रमाणित होगी।

प्रश्न: लोग ये भी कहते हैं कि अर्जुन सिंह को काँग्रेस से बाहर जाने की क्या जरूरत थी? नंबर दो थे। वहाँ जितनी इम्पार्टेण्ट बाडीज थी, सबमें थे। सारे डिसीजंस में उनकी एक राय रहती थी। और मंत्री बनकर घूम रहे थे। तो उनको क्या जरूरत पड़ी कि एक छोटी सी पार्टी में चले गए वो पार्टी बढ़ नही पा रही है। और परेशानी में धक्के खा रहे हैं, दौरे कर रहे हैं, इधर जा रहे हैं, उधर जा रहे हैं। कही घूम रहे हैं इसमें उन्हें क्या फायदा है?

श्री अर्जुनसिंह: ये वही लोग कहेंगे जो यथार्थ को नकार सकते हैं। मैं काँग्रेस के बाहर गया नहीं था। और ये कोई आदमी कह सकता है कि उन्होंने काँग्रेस से बाहर जाने का कोई फैसला लिया। जब कर्नाटक और आँध्र प्रदेश में काँग्रेस की सरकार थी, सरकार चली गई और काँग्रेस तीसरे नंबर पर आ गई और दूसरे नंबर पर बी.जे.पी. आ गई। जिसका कम से कम आँध्र प्रदेश में तो कोई वजूद ही नहीं था। कर्नाटक में तो फिर भी थोड़ी बहुत स्थिति थी। उन परिस्थितियों के संदर्भ में मैंने ही वर्किंग कमेटी में यह बात कही कि क्यों ऐसा हुआ। इसके बारे में सोचना चाहिए ये काँग्रेस का एक प्रकार से पराभाव होता रहेगा। तो अंततः एक बहुत बड़ा देश के लिए दुर्भाग्य होगा। काँग्रेस अध्यक्ष ने तो उस वक्त केवल एक ही एक्सप्लेशन दिया आँध्रप्रदेश के बारे में कि मैं कुछ नहीं जानता। काँग्रेस वहाँ चरमराकर बैठ गई। अब चरमराकर बैठ गई ये कोई राजनैतिक विश्लेषण तो है नहीं। उस पर जरूर मैंने कहा कि मैं समझता हूँ कि कुछ लोगों को और मैंने अपने लिए स्वतः ही कहा कि सरकार में रहने के बजाय कुछ लोगों को आर्गनाईजेशन में जाना चाहिए और मैं चाहता हूँ कि उनका वहाँ उपयोग हो। और मैं आर्गनाइजेशन जाना चाहता हूँ। बात केवल इतने से शुरू हुई। अपने इसी कथन को फालोअप करते हुए मैंने 24 तारीख को इस्तीफा दे दिया।

प्रश्न: अच्छा आपने पार्टी में जाने की बात रखी थी। प्रस्ताव रखा था?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ, मैं तो यही आपसे कह रहा हूँ कि जिनको यथार्थ का मालूम नहीं है, वो बातें सब सामने आएगी लेकिन लोग कन्वीनिएंटली इन चीजों को भुलाना चाहते हैं ताकि दोष मेरे ऊपर मढ़ा जा सके। और उसके बाद जो कुछ हुआ वो सब आप जानते हैं। मैं तो एक्सपेल किया गया। मैंने काँग्रेस छोड़ी नही। बल्कि एक्सपलसन की एक्शन की कार्रवाई जो हो रही थी आप समाचार-पत्रों को पढ़ें। मैं बार-बार कह रहा था कि अब महाराष्ट्र में चुनाव हो रहे हैं, बिहार में हो रहे हैं, गुजरात में हो रहे हैं, मैं वहाँ प्रचार में जाना चाहता हूँ, रिकवेस्ट की मैंने एक तरफ मेरे ऊपर आक्रमण हो रहा था। और मैं रिकवेस्ट कर रहा था। तो ये चीजें तो देखिए अब थोड़ा सा उस वक्त तो मैं अकेला ही बात कर रहा था। 94 के नवम्बर, दिसम्बर में तो सम्पूर्ण एकता थी। जब आँध्र प्रदेश और कर्नाटक अपने हाथ से गया और 95 के फरवरी और मार्च में गुजरात चला गया। आपका महाराष्ट्र चला गया, बिहार चला गया तब तो सम्पूर्ण एकता थी। न कुछ कारण थे, जिनकी वजह से ये परिस्थितियाँ बनी। अगर उन कारणों की वजह से मैंने ऐसा कोई प्रस्ताव रखा तो उस पर बजाय

विचार करने के कि भाई आप क्या करना चाहते है, आर्गनाईजेशन में आज प्रधानमंत्री कई लोगों को कह रहे हैं कि नहीं बड़े-बड़े मिनिस्टरों को कि आप आर्गनाईजेशन में आईए क्यों कह रहे है? और वो लोग जा नहीं रहे हैं। तो ये तो देखिए इन बातों को मिला जुलाकर और एक केस बनाने की कोशिश करना, वो एक अलग चीज है। व्यवहार तो अपनी जगह है।

प्रश्न: उन्हीं लोगों का कहना है कि आप भी बराबर तीन साल तक केस बनाने की कोशिश करते रहे। पत्र लिख-लिखकर के लगातार पत्र की तरह से जिसे लेटर पोलिटिक्स कहते हैं, उसमें आप जा रहे थे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए लेटर पोलिटिक्स तो ये मान्य एक प्रक्रिया है। सारी दुनिया की प्रजातांत्रिक सरकारों में कि किसी भी व्यक्ति को पार्टी के अन्दर अपनी बात को लिखकर कहने की, जबानी कहने की, आजादी है। और वह कहता है कोई मैंने ही पहली दफा चिट्ठी लिखी हो, दुनिया में किसी प्राइम मिनिस्टर को ऐसा तो हुआ नहीं।

प्रश्न: नहीं लेकिन वो कथित प्रेस को भी रिलिज कर देना चिट्ठी को?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने किसी प्रेस को नहीं दिया। जो चिट्ठियाँ रिलीज हुई प्रेस को वह अभी हुई हैं। जब मुझे डिसिप्लीन एक्शन के सिलसिले में एक सामूहिक आरोप लगाया गया, उसके उत्तर में मैंने रिलीज किया।

प्रश्न: राजीव गाँधी हत्याकाण्ड में जितना हंगामा मचा और सबसे ज्यादा आप इस मुद्दे को उठा रहे हैं। आपको क्या लगता है कि नरसिम्हाराव का इसमें क्या फायदा हो सकता है और क्या उद्देश्य हो सकता हैं। जाँच को डिले करने में प्रेस से छिपाकर रखने में या उस पर उतने चुस्त दुरूस्त होकर काम न करने से सरकार को क्या फायदा मिल सकता हैं।

श्री अर्जुनसिंह: इसका उत्तर मुझ से पूछा जाना तो एक बहुत ही अन्याय है। ऐसा हो रहा है कि नही, यह यथार्थ है कि नहीं इसको देखना चाहिए और यदि हो रहा है, तो जैसा कि सबको ज़ज करके जैन कमीशन महसूस करता है बाकी लोग भी महसूस करते हैं, तो ये प्रश्न तो प्रधान मंत्री से पूछा जाना चाहिए। क्योंकि आफटर आल ही वाज द प्राईम मिनिस्टर ऑफ दिस कण्ट्र ही इज द रिस्पान्सिबल मेन जो इसका उत्तर दें।, मैं केसे इसका उत्तर दूँ।

प्रश्न: उनके हिसाब से तो कुछ डिले नहीं हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: तो ठीक है ये उनकी इच्छा है। लेकिन अब अपने मुख से तो उन्होंने कोई ऐसी बात नहीं कही।

प्रश्न: वर्मा कमीशन की फालोअप कमेटी बनी थी। मिनिस्टर थे उसमें भी आप थे। तो उसमें आपको क्या महसूस हुआ कि सरकार इस तरह से फिसल रही है।

श्री अर्जुनसिंह: अगर आपने पत्रों की बात की है तो वो पत्र भी प्रकाशित हुए हैं, जो मैंने उस वक्त होम मिनिस्टर को दिए थे। मैंने स्पष्ट वहाँ कहा कि वर्मा कमीशन ऐसा महसूस करता है कि कव्हरअप हुआ है और पब्लिकली वर्मा साहब ने जस्टिस वर्मा ने एक इंटरव्यू में बात कही। देश ने पढ़ा उसको इसलिए इन चीजों को फिर से देखना चाहिए। स्पेशिफिक चीजें उदाहरण के लिए मुश्ताक अहमद। जब मुश्ताक अहमद ने पिटिशन दायर कर दी तो मैंने कहा कि इनका स्टेण्ड क्या है? ये कौन है? मुश्ताक अहमद जो जैन कमीशन को बाइंडअप करने की पिटिशन लगाई है। कोई जवाब नहीं दिया। उसी मुश्ताक अहमद की पिटिशन जब खारिज हो गई हायकोर्ट में तो गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया उसी

मामले पर अपील सुप्रीम कोर्ट में दायर कर रही है। मुश्ताक अहमद नहीं कर रहे हैं। तो ये चीजें ऐसी हैं, जिनको थोड़ा गंभीरता से लेने की जरूरत है।

प्रश्न: राव के सपोर्टर एक बात और कहते हैं कि जब राजीव जी प्रधान मंत्री थे, तब इंदिरा गाँधी की जाँच का काम पूरा होने में पाँच साल लगे तो अभी तो चार साढ़े चार साल हुआ है। इतनी जल्दबाजी क्यों की जा रही है?

श्री अर्जुनसिंह: जल्दबाजी का सवाल नहीं है। अगर मैं गलत नहीं हूँ और मेरी याददाश्त सही है तो जस्टिस ठक्कर ने कभी ये बात नहीं कही कि उनको जाँच करने में कोई दिक्कत पैदा हो रही है। या जाँच करने में सहयोग राजीव गाँधी ने किसी प्रकार से नहीं दिया। जस्टिस ठक्कर ने कभी ऐसी बात नहीं कही।

प्रश्न: आपने उसके बाद प्रधान मंत्री से पूछा नहीं। 6 तारीख के पहले कि ये सरकार जो भंग होने का फैसला सी.सी.पी.ए. ने किया था वह लागू नहीं हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: बात ये हो गई कि फिर तो वो फैसला हो गया उनको भरोसा हो गया कि विश्वासघात का इंतजार ही किया सकता था और क्या किया जा सकता था।

प्रश्न: भरोसा आपको भी था। आप सब 4 तारीख को वहाँ गए लखनऊ में तो कल्याणसिंह से आप मिले और उसके बाद आपने सर्टिफिकेट दिया कि मुझे पूरा भरोसा है कल्याणसिंह सरकार के नेतृत्व में मस्जिद पूरी तरह सुरक्षित है।

श्री अर्जुनसिंह: अगर ऐसा मैंने कभी कहा हो तो मुझे दिखाए।

आपराधिक तत्त्वों को चुनाव के लिए टिकिट नहीं

22 फरवरी 1996 अक्षर भारत की सुश्री रजनी को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न: अगले चुनाव में आपकी पार्टी का क्या मुख्य मुद्दा रहेगा?

श्री अर्जुनसिंह: अगले चुनाव का मेनिफेस्टो करीब-करीब तैयार हो गया है और जैसे ही चुनाव की घोषणा होती है, उसके पहले मेनिफेस्टो को कोई भी पार्टी रिलीज नहीं करती हम लोग भी रिलीज करेंगे। लेकिन जो हमारा राजनीतिक और आर्थिक दस्तावेज था, जो मई 1995 को स्वीकृत हुआ कार्यकर्ता सम्मेलन में वही मुख्य आधार है।

प्रश्न: आपको क्या लगता है कि इलेक्शन जो हैं वे टाइम पर ही होंगे, जुलाई में जो टर्म खत्म हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: सामान्यतः तो होने ही चाहिए।

प्रश्न: भारत और पाकिस्तान की जो स्थिति है.....

श्री अर्जुनसिंह: अब वह क्या स्थिति है, क्या कितनी स्वाभाविक है, कितनी अस्वाभाविक है यह तो मैं नहीं जानता लेकिन सामान्य रूप से तो यह मानकर चलना चाहिए कि समय पर होगा। संवैधानिक जो आवश्यकताएँ हैं उनका निर्वहन तो होगा। असाधारण परिस्थिति में जो होगा इसका पहले से कोई कैसे अँदाज कर सकता है।

प्रश्न: हवाला का मामला जो इतना उछाला जा रहा है क्या आपको लगता है इसमें राजनैतिक विद्वेष भी कारण है?

श्री अर्जुनसिंह: चूँकि यह मामला एक लेबल पर जाकर न्यायालय की परिधि में आ गया है इसलिए मैंने यह दृष्टिकोण पहले दिन ही रखा है कि जहाँ तक जो चीज़ न्यायालय की परिधि में भेज दी गई है उसका तो न्यायालय की परिधि में ही समाधान होना पड़ेगा। इस संबंध में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे पूरा विश्वास है कि न्यायालय में जो कुछ भी कार्रवाई होगी और जिसके बारे में मैं पूरा सम्मान रखता हूँ अतः जो आरोप मेरे ऊपर लाया गया है वह निराधार साबित होगा।

प्रश्न: आपके विरुद्ध न्यायालय में प्रकरण भेजने का कार्य क्या प्रधान मंत्री के इशारे पर हुआ? क्या इसके पीछे राजनीति है?

श्री अर्जुनसिंह: आपका जो प्रश्न है कि राजनैतिक इसका क्या? तो दो-तीन तथ्य है जो कुछ संकेत देते हैं यह आप सबको मालूम है कि जो कुछ भी साक्ष्य आज सी.बी.आई. के हाथ में आई है यह 1991 में आई। मैं तथ्यों की बात कह रहा हूँ। सच तो फिर निकलेगा। 1991 से लेकर 1993 तक इस पर विशेष कोई कार्रवाई नहीं हुई। तभी तो पब्लिक इन्टरेस्ट लिटिगेशन किसी को फाईल करना पड़ा और 1993 से फिर सुप्रीम कोर्ट ने इसको अहमियत दी और सी.बी.आई. से चाहा कि वे इस पर यह उनकी जिम्मेदारी है उस जिम्मेदारी का निर्वहन करें। सी.बी.आई. की 1993 से लेकर 1995 तक के बीच की गतिविधियाँ सबके सामने है। सुप्रीम कोर्ट ने कभी भी यह बात नहीं कही कि अमुक-अमुक व्यक्ति के खिलाफ़ आप चार्जशीट दायर करिएगा। यह बात स्वयं सुप्रीम कोर्ट ने अपने 30 जनवरी 1995 के आदेश में स्पष्ट, कर दी इसलिए बीच में जो वातावरण हवा बनाई जा रही थी क्योंकि उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के खिलाफ़ चार्जशीट लगाई है उसको कोर्ट ने स्वयं निराधार बता दिया। इस बीच में नवम्बर-दिसम्बर से समाचार पत्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा था कि स्वयं प्रधान मंत्री इस प्रकरण की मानीटरिंग कर रहे हैं। इसका खण्डन तो कहीं नहीं किया। मानीटर करने का उनको अधिकार है क्योंकि सी.बी.आई. जो एजेंसी है, डायरेक्ट ही उनके अंडर में है किसी और मंत्रालय के अंडर में नही है। इसलिए चार्जशीट फाईल करने की अनुमति या डिक्लेरेन्स या जो भी उसके लिए वर्ड युज करिए वह सुप्रीम कोर्ट से नहीं प्रधान मंत्री के कार्यालय से हुआ। यह स्पष्ट है उसकी जिम्मेदारी से प्रधान मंत्री और उनका कार्यालय इससे अपने को मुक्त नहीं कर सकता। अब किस आधार पर उन्होंने किसके बारे में एप्रुव किया यह तो अब अदालत में ही तय होगा। स्पष्ट है कि जिन लोगों का भी चयन हुआ वह आरोप की गंभीरता पर आधारित नहीं था उनके स्वयं के विवेक पर कहिए उस पर आधारित था और उस विवेक का किस रूप से प्रयोग हुआ यह सामने है।

प्रश्न: इसमें जग नैतिकता का भी सवाल उठता है कि क्या प्रधान मंत्री का मानिटर करना उचित है जो उनका बयान आ रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: अब सवाल यह है कि नैतिकता का प्रश्न ही नहीं है, वह संवैधानिक प्रश्न है। वह नैतिक तो है नहीं। 11 मार्च, 1995 को जैसा कि अब मालूम हुआ है, एस.के. जैन ने यह बयान दिया था कि उन्होंने प्रधान मंत्री को भी साढ़े तीन करोड़ रुपये दिए हैं। पहले तो किसी को नहीं मालूम था, अब यह इस देश की जनता के लिए और कानूनविदों के लिए एक आवश्यक जानकारी है। इस बयान के बाद सी.बी.आई. ने इस मामले पर क्या पहल की और बाकी लोगों को दिखावटी, ये तो कम

से कम सामने आना चाहिए। आज तक तो वह बात सामने आई नहीं। सुप्रीम कोर्ट के 30 जनवरी के आदेश के बाद यह स्पष्ट हो गया कि फिर किसी को इंगित किए बगैर व्यक्ति को सुप्रीम कोर्ट ने एक सिद्धान्त निर्धारित कर दिया कि जिसके भी खिलाफ़ कोर्ट का आरोप इस विषय पर हो चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो उसकी जाँच होनी चाहिए।

इसके पहले अगर सी.बी.आई. ने जाँच की होती एक तो इस आदेश की आवश्यकता नहीं थी या कि उस आदेश देने की तिथि पर वे बता देते कि साहब हमने तो सब के बारे में जाँच की है। अब सवाल यह उठता है कि जिसकी तरफ आप संकेत कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री के तहत जो एजेन्सी है यह कैसे सामान्य रूप से विश्वास किया जा सकता है कि वह निष्पक्ष एवं निर्भीकता से उनके बारें में ही जाँच कर सकेगी और मैं एक दफे यह मानता हूँ कि यदि वह जाँच करेगी तो यह नैतिक दायित्व है प्रधान मंत्री का कि वे देश के सामने यह बात निःसंदेह हो जाना चाहिए कि ऐसा कोई भी अवसर नहीं आएगा जहाँ अपने स्वयं के जाँच के बारे में कहीं भी हस्तक्षेप करने का सवाल आए या प्रभाव डालने का सवाल आए। यह तभी संभव है जब वे अपने पद से अलग होकर जाँच करने की अनुमति दे और नैतिक दायित्व है तो इस नैतिक दायित्व को निर्वहन करने का साहस जुटा पाएँगे यह तो समय बताएगा।

प्रश्नः यह जो जैन ड्रामा था यह तो एक ज़रिया है पैसा देने के पीछे कौन है, इसमें कुछ बता सकते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं, मैं बिना जानकारी के कोई बात कहना नहीं चाहता।

प्रश्नः जिन लोगों के पास पैसे जो हैं वह तो माध्यम है.....

श्री अर्जुनसिंहः अब वह जहाँ से भी है, जानकारी उनकी ली जाएगी और आनी चाहिए इतना तो मैं कह सकता हूँ लेकिन मेरे पास तो कोई ऐसी जानकारी नहीं है।

प्रश्नः क्या यह जानकारी भी सी.बी.आई. के पास होगी?

श्री अर्जुनसिंहः और कौन लेगा मैं तो नहीं ला सकता।

प्रश्नः पार्टी टिकट देने में प्राथमिकता क्या रखी हैं?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, एक तो यह है कि कहीं से भी आपराधिक तत्वों को कहीं लैश मात्र भी इंट्री देने का सवाल नहीं उठता।

प्रश्नः फूलन देवी को जो आपने सरण्डर करवाया था उसको बल्कि इंसान आप ही ने बनाया?

श्री अर्जुनसिंहः नहीं, नहीं इतनी बड़ी बात मैं स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ।

प्रश्नः क्योंकि हम लोग जानते हैं और देखा है और आपने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए हैं तो जैसे इस पर भी काफी ऊधम मचा है। फूलन देवी को लेकर और वह भी अपनी सेना बनाए हुए हैं और राजनीति में उसकी काफी चल रही है तो क्या उसके साथ आपकी कोई बातचीत या कोई डायलॉग?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, मेरा तो कोई डायलॉग नहीं है। जब भी वह मुझसे मिली हैं मैंने उनको सलाह यही दी है कि राजनीति से दूर रहें और जो कुछ भी उनके प्रभाव, साधन हैं, उनका उपयोग वे सामाजिक सेवा में और विशेषकर नारियों के उत्थान या इस तरह के कार्यों में समय दें अब यह उनकी मर्जी है कि वे क्या करना चाहती हैं।

प्रश्नः फिर भी एक सवाल बार-बार उठाया जा रहा है कि चुनाव में धन का प्रयोग कैसे हो, धन कैसे

आए? तो आपकी पार्टी की क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, हम लोगों ने तो अभी प्रस्ताव पारित किया है पिछली वर्किंग कमेटी में किसी एक पार्टी की राय की बात नहीं हो सकती ये निर्विवाद सत्य है कि राजनीति को संचालित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। संचालन और चुनाव दो अलग-अलग चीज़ें हैं दोनों के लिए धन किस प्रकार से आना चाहिए यह विषय महत्वपूर्ण है। पार्टियों के लिए नहीं, बल्कि देश के प्रजातांत्रिक ढाँचे को मज़बूत करने के लिए क्योंकि ढाँचे पर भी तो आक्रमण होते हैं और वे आक्रमण प्रायः उन्ही स्रोतों से होते हैं, जो धनिक स्रोत होते हैं और कभी-कभी पार्टियाँ बहुत असहाय सी हो जाती हैं तो हम लोगों का सुझाव यह है कि इलेक्शन कमीशन को यह जिम्मेदारी निभानी चाहिए कि अगले चुनाव के पहले सभी दलों की बैठक इस विषय पर बिल्कुल बेबाक बातचीत होनी चाहिए और कुछ ऐसे निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए, अब वह स्टेट फण्डिंग हो, या चंदा लेने की विधि हो, जो भी हो और फिर सब लोग उसको माने उसमें कोई violation तो उसे भी बनाना चाहिए यह जिम्मेदारी अगर नहीं निभाई जाएगी तो फिर सब लोग स्वतंत्र रहेंगे अपने-अपने तरीक़े से।

प्रश्न: आज सबसे बड़ी समस्या जो उभर कर आ रही है कि चुनाव में काले धन का उपयोग हो रहा है तो इसको रोकने के लिए कुछ सुझाव जनता के सामने रखे जाने चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, सुझाव जनता के सामने रख देने मात्र से तो जिम्मेदारी पूरी नहीं होती वह जिम्मेदारी पूरी करने के लिए यह प्रक्रिया जरूरी है जिसका मैंने उल्लेख किया है और वह चीज़ जब शुरू होगी तब ही हम इसके किसी ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचेंगे जिसका कुछ प्रभाव हो केवल हम कह दें कि हमारी पार्टी ऐसा चाहती है तो उसका क्या मतलब होगा कोई इसका मतलब ही नहीं हुआ।

इंदिरा काँग्रेस धर्म निरपेक्ष एवं समाजवादी शक्तियों को मजबूत करेगी

29 फरवरी 1996 ए.टी.एन. की सुश्री अग्निमा को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न: हवाला का इम्पेक्ट आने वाले चुनाव में क्या पड़ेगा आपकी दृष्टि से क्योंकि हवा पूरी हवाला की हो गई है?

श्री अर्जुनसिंह: ये आपने अच्छी बात कही एक तरह से अच्छा टर्म है। हवाला की हवा लेकिन एक कहावत भी है क्योंकि आपने यह शब्द इस्तेमाल किया है कि हवा पर कोई चीज़ लिखी नहीं जा सकती। आप समझ गई मैं क्या कह रहा हूँ। सवाल यह है कि यह तो खैर ठीक है कि यह तो कमेन्ट की बात है। विषय महत्वपूर्ण है और गंभीर है क्योंकि व्यक्तिगत लोगों के बारे में जो कुछ भी बातें कही जा रही हैं वह तो अपने आप साफ़ होंगी। लेकिन आपराधिक तत्वों का जो वर्चस्व धीरे-धीरे हमारे देश के तंत्रों पर बढ़ता जा रहा है वह executive हो चाहे वह Parliament हो। यदि हम अपने देश के प्रजातंत्र की रक्षा करना चाहते हैं। एक तो यह उससे बात निकलती है, इस वर्तमान हवाला प्रकरणों से। दूसरा है चुनाव की प्रक्रिया और चुनाव की पद्धति दोनों महत्वपूर्ण हैं। हमारे देश के प्रजातंत्र को संचालित करने के लिए। क्योंकि एक प्रजातंत्र तो मताधिकार के ऊपर ही आधारित होता है और कोई तो उसका आधार होता ही नहीं और वह मताधिकार निष्पक्ष और पारदर्शी नहीं हुआ तो निश्चित रूप से अंततः प्रजातंत्र प्रभावित होता है। उसमें फण्डिंग एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह

बात स्पष्ट है कि जो कुछ देश के कानून हैं वे ही अनुमति देते हैं, किसी उम्मीदवार को अमुक राशि खर्च करने के लिए, कानून के तहत अब वह बदलती रहती है, उसमें कई दफ़ा तब्दीलियाँ होना है लेकिन जो भी है एक अमुक राशि तो नियमित और कानून के तहत कैंडिडेट खर्च करने का अधिकारी है। वह राशि कहाँ से आए और किस प्रकार से आए उसको निर्धारित होना चाहिए और नियंत्रित होना चाहिए। यह दूसरी चीज उससे पूरी बाहर निकली है। अब यह दो एक व्यक्ति के कहने की बात नहीं है। इस पर आम सहमति होनी चाहिए सभी राजनीतिक दलों के साथ मिलकर किस प्रकार के कानून बने किस प्रकार के नियम बने और किस प्रकार की परंपराओं को स्थापित करने की बात हो यह तय होना नितांत आवश्यक है।

प्रश्न: हवाला कॉंड से कौन लोग प्रभावित होंगे? उसमें काफ़ी लोग फँस भी रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं व्यक्तिगत किसी के बारे में कहना बिल्कुल उचित नहीं समझता क्योंकि सबके अपने न्यायिक अधिकार हैं। अगर कोई आरोप लगाता है तो आरोप लगाने से तो कोई guilt नहीं हो जाता हैं। आरोप तो साबित होंगे तो ही कोई जब कोर्ट कन्विक्ट करेगी तो ही वे दोषी होंगे। केवल आरोप लगा देने से तो कोई दोषी नहीं होता। इसलिए वह तो सबके अपने अपने अधिकार हैं। अपने अपने अधिकारों का उपयोग करने अदालत के सामने जो कोई भी अपने बचाव में कहेंगे अदालत निर्णय करेगी।

प्रश्न: जैसे अब एक बार तो हवाला कॉंड में नेताओं का नाम आ ही गया है तो अब ये जनता के पास जाएँगे क्योंकि चुनाव आने वाला है तो क्या प्रभावित नहीं होगा, उनका राजनीतिक अस्तित्व। आपको क्या लगता है आने वाले चुनाव में किस तरह का प्रभाव होगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आने वाले चुनाव में थोड़ा बहुत प्रभाव तो उसका पड़ेगा ही, इसमें कोई दो मत नहीं। लेकिन अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र में जो लोग जाएँगे उनके बारे में वहाँ के मतदाताओं का क्या दृष्टिकोण बनता है यह यहाँ बैठकर कोई निर्धारित नहीं कर सकता और अपने-अपने क्षेत्र के मतदाताओं के निर्णय पर ही सब कुछ होगा जो कुछ होगा।

प्रश्न: हवाला में आपका भी नाम है आप उस वक्त मिनिस्टर भी थे, क्या आपको जानकारी थी इस तरह के कुछ हवाला कॉंड के बारे में?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, मैंने तो अपने बयानों में कहा कि यह पूर्णतया गलत है। मैंने न कभी किसी से कुछ लिया है और उल्टे यह जरूर है कि मि. व्ही.आर. जैन जिनके बारे में कहा गया है कि मेरा उनसे संबंध था वे यहाँ एच.आर.डी. मिनिस्ट्री के अंतर्गत ही एक टेक्नीकल टीचर्स इंस्टीट्यूट भोपाल में संचालित किया जाता है, उसके चैयरमेन थे। चैयरमेन उन्हें वर्ष 1989 में मंत्रालय की ओर से नियुक्त किया गया। जबकि मैं मंत्रालय में था नहीं। मैं तो वर्ष 1991 में, 22 जून को मंत्री बना तो उनकी नियुक्ति तो मेरे आने के पहले हुई थी। वर्ष 94 में उनके 5 साल पूरे हुए। जब उसकी वृद्धि करने का प्रश्न आया कि 5 साल के आगे उनकी नियुक्ति चलाई जाए तो मंत्री की हैसियत से मैंने उचित समझा कि वृद्धि नहीं देंगे अर्थात् उनकी चैयरमेनशिप खत्म हो गई तो मैंने उनको कोई फेवर तो किया ही नहीं। उल्टे वे नाराज हो सकते है, मुझसे कि मुझे आगे क्यों नही रहने दिया तो यह तो ऐसी बात है जिसमें न सिर है, न ही पैर।

प्रश्न: जैसा कि अभी हुआ है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा के जो लोग बी.जे.पी. में आ गए हैं, उन्होंने आरोप लगाया कि 40 लाख रु. दिए गए थे तो उस संबंध में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस संबंध में कोई कमेन्ट्स इसलिए नहीं करना चाहूँगा क्योंकि इस मामले पर मैंने एक विशेषाधिकार भंग का लोकसभा में नोटिस दे रखा है। और उचित नहीं होगा कि मैं उसके बारे में सार्वजनिक रूप से कुछ कहूँ।

प्रश्न: मध्यप्रदेश से काफ़ी नेता इस हवालाकाण्ड में हैं तो क्या मध्यप्रदेश की राजनीति उससे प्रभावित होगी इसमें काफ़ी सीनियर नेता हैं, जिनके नाम आए हैं?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, लोगों के नाम आए हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि सभी ने अपने बारे में बात कही है, मैं उस पर भरोसा करता हूँ कि जो उन्होंने कहा है वही सही निकलेगा।

प्रश्न: पंजाब और असम में कम्पेयरटीवली शांति है काँग्रेस को इसका क्या फ़ायदा होगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, शांति है तो यह हमारे देश के लिए अच्छी बात है। आपने केम्पेयरटीवली शब्द इस्तेमाल किया यह आपने ठीक किया क्योंकि शांति वैसी नहीं है जैसा कि लोग चाहते हैं। पंजाब में थोड़ा-सा शायद ज़्यादा होगा। असम में तो बिल्कुल नहीं है वहाँ तो इतनी अव्यवस्था और हिंसा सब चीज़ हो रही है कि मैं समझता हूँ कि अभी तो बहुत कुछ होना बाक़ी है।

प्रश्न: आर्थिक सुधार का काँग्रेस को सपोर्ट मिलेगा, वाह-वाही मिलेगी या नुकसान होगा, आप क्या समझते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आर्थिक सुधार के क्रियान्वयन की जो प्रक्रिया थी, वह गड़बड़ थी। मौटे तौर से आर्थिक सुधार के लिए जो दृष्टिकोण अपनाया गया, वह मूल रूप में सब खराब नहीं था। प्राथमिकताएँ गड़बड़ हो गई फिर निर्णय में पारदर्शिता नहीं रही। यहाँ तक कि स्वयं वित्तमंत्री को यहाँ तक कहना पड़ा कि हमें क्रोनि केपिटलिज़्म को प्रश्रय नहीं देना चाहिए अर्थात् मित्रों को प्रश्रय नहीं देना चाहिए। फिर उसमें जो भ्रष्टाचार हुआ एक एनरान का ही उदाहरण ले लें। बाम्बे की जो कंपनी है, 9 हजार करोड़ रुपये में एग्रीमेंट हुआ।

India needs efficient Government

6 अप्रैल 1996 पी.टी.आई. के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार: हैं—

Q: How do you think the post-poll scenario?

Shri A.S.: I think we should not jump, this is the poll scenario post-poll will come after the poll.

Q: What is your assessment for poll scenario?

Shri A.S.: Well, I think the position that is now seem to be shaping up that the Indira Congress will come to occupy crucial stage in the campaign itself. According to the report we are getting from different states.

Q: आपकी निश्चित सीट कितनी लगती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, 300 से ऊपर ही है, वह बात तो देखिए कल तो लिस्ट ही फाइनल हुई है। That assessment will take about a week or ten days, it is not something, which you can

count on your fingers about ten day's time. We shall be able to know.

प्रश्न: आपका मेन राइवल कौन है?

श्री अर्जुनसिंह: We consider the B.J.P. is a main rival everywhere. It may perhaps not suppose in Tamilnadu.

Q: Do you feel that the next Parliament will be hung?

Shri A. S.: Those things can not be visualized at this stage because any combination, permutation will occur on the basis of what comes out. I mean you can't speculate what is going to happen when nothing is there. So I mean that kind of thing will be a ideal speculation. So far as the hung Parliament part is concern I think the danger is, that it will be a hung parliament.

Q: Since B.J.P. is a main rival suppose B.J.P. gets fairly large number of seats but unable to make Govts. In that situation which party will you prefer to join hands with just a thought the possibility.

Shri A. S.: It is that arena or speculations which I don't want to enter this matter. It is no use for academic discussion. One thing is clear under no circumstances are we going to accommodate the B.J.P. in anyway on that I am categorical now what else happens we have to see.

Q: I mean will you go back to Rao Congress?

Shri A. S.: Well, I think it is what I would call futile question.

Q: What is your main issues, now that the final manifesto it must be given up, find out safe?

Shri A. S.: Yes, the thrust of the manifesto because I should not be saying what the manifesto has because the manifesto is going to be released by the President.

Q: What is in the high lights?

Shri A. S.: I think one that we had in our basic political document which I have already said that we want a Govt. to win. That is a clear and efficient Govt. totally intone with the real aspiration of the people, especially the weaker sections of the people and effective steps after we have taken to protect the polity from criminalisation. The apprehensions and the anxieties of the minorities must be effectively assuaged. The programme of economic empowerment of the weaker sections must be more clearly spelled out on the economic front. The liberlisation programme should be suitably amended number one, bring about total transparency in the decision-making apparatus. There should be privatization in the areas where equities allowed and there should be a level playing ground as to say between Indian and foreign industries and lastly the needs and the problems of the weaker sections and the farmers should be totally into account in the formulation of any economic policies under the liberalize regime.

The reservation policy should be implemented in effective manner and some more categories like Dalit, Christians, and economically weaker sections, other than backward classes should also be provided reservation.

तेंदूपत्ता संग्राहकों को उनका मेहनताना दिया जाए

1 जुलाई 1996 भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आप सबसे पुनः राजधानी में मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई और सबसे पहले तो मैं आप सबको मध्यप्रदेश के समूचे पत्रकार जगत को इस बात के लिए आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि पिछले चुनावों के दौरान आपने बहुत ही सहज और क्रिटिकल तो होना ही चाहिए, सहज ट्रीटमेण्ट इंदिरा काँग्रेस को समाचार पत्रों में दिया है, उसके लिए मैं आप का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

इंदिरा काँग्रेस के हमारे जो सांसद सीधी से चुने गए, उनका परिचय भी आपसे कराना है, श्री तिजकराज सिंह जी। इस पृष्ठ भूमि में एक दो बातें आपको बतानी है। इसके बाद फिर आप लोग जो भी प्रश्न पूछना चाहें। अभी परसों सारे प्रदेश के हमारे कार्यकर्ता साथी आए थे। सम्मेलन में जो बातें हुई और कल दिन भर सबसे व्यक्तिगत चर्चाएँ पूरी हुई और यह सबका दृढ़ निश्चय है, कि मध्यप्रदेश में इंदिरा काँग्रेस के संगठन को और मजबूत बनाने के हर उपाय किए जाएँगे और प्रदेश की राजनीतिक परिस्थितियों में इंदिरा काँग्रेस, काँग्रेस के मूल्यों, उसूलों और कार्यक्रमों को इस प्रेदश की जनता के पास तक ले जाने में सक्रिय भूमिका निभाने की कोशिश करेगा और इस प्रयास में कई इकाईयों का पुनर्गठन करने की जहाँ आवश्यकता होगी, पुनर्गठन होगा और हमारा यह प्रयास होगा। क्योंकि यह केवल मध्यप्रदेश के लिए निर्णय नहीं है। यह निर्णय सारे देश के लिए लिया गया है कि जुलाई महीने के अंदर जहाँ कहीं भी इस तरह के परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी, उसे पूरा कर लिया जाएगा?

यहाँ की विशिष्ट कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं, जिनका उल्लेख इसलिए करना जरूरी है, क्योंकि मध्यप्रदेश के भविष्य में राजनीतिक तस्वीर उभर कर जो सामने आएगी, उसमें एक हम सबका निश्चित मार्ग हमने तय किया है। साथियों से परामर्श के बाद और जितनी भी क्षमता हम सब में है, उस क्षमता के मुताबिक हम इस दिशा में बढ़ने की कोशिश करेंगे। यह प्रदेश सर्वहारा वर्गों का प्रदेश है। कमजोर वर्ग, पिछड़ा वर्ग, हरिजन, आदिवासी इन सबका ही बहुमत इस प्रदेश में है और जितनी भी नीतियाँ, कार्यक्रम पूर्व में काँग्रेस पार्टी के रहे हैं, वे सब समूचे प्रदेश की प्रगति के संदर्भ में जो कुछ कदम उठाने हैं, वो तो है ही, लेकिन विशेष रूप से जो बहुमत की अपेक्षा है इस प्रदेश में वो उस प्रगति में किस प्रकार से साझीदार बन सके और उनके समय में सहयोग करनेके लिए क्या रास्ता अपनाया जाए। यह प्रमुख रूप से रहा है।

यह दुःख की बात है कि उस दिशा में कुछ भ्रम पैदा हुआ है और यही वजह है कि काफी कड़ी मात्रा में जिनके लिए सब कुछ करने की आवश्यकता थी, और कोशिश हुई, आज वे विमुख हैं। हम इस प्रदेश को किसी निराशाजनक दृष्टिकोण से नहीं देखते, बल्कि यह मान कर चलना चाहिए कि जो कुछ कमियाँ आई हैं, उनको दूर करने में कोई कसर उठाने की जरूरत है और नई चुनौतियाँ इस संदर्भ में सामने आई हैं, उनका समाना करना भी आवश्यक है। इसी आधार पर इस प्रदेश में इंदिरा काँग्रेस ने भावी कार्यक्रम बनाया है। पुनर्गठन की बात पूरी होने के तुरन्त बाद जो नई इकाईयाँ बनेंगी, वे मैदानी कार्यक्रम तैयार करके और उस पर इस्तेमाल करने की दिशा में आगे बढ़ेंगी।

सदैव की भाँति आप सबकी ओर एक निष्पक्ष रूप से सहयोग की मैं अपेक्षा करता हूँ और मुझे विश्वास है कि ये हम सबको मिलेगा।

प्रश्न: घुमा फिरा कर आशय दार्शनिक लहजा हो गया उसका?

श्री अर्जुनसिंह: दार्शनिक लहजा इसलिए नहीं है, इसको हम एक दम से जिसको अंग्रेजी में हास्य है, कटुभाषा में लाना नहीं चाहते थे। इसलिए हमने उसको इस तरह से बात की। ये बात अपनी जगह याद दिलाने के लिए जितने भी ऐसे मसले हैं, जिनका सीधा संबंध इन वर्गों से है, उनके लिए एक निश्चित कार्यक्रम भी बना था, उस पर अमल भी हुआ और ये भी उतना ही सही है, वे कार्यक्रम ज्यादा कागजों में रह गए। यह वजह है, जिसकी वजह से लोगों का विश्वास बढ़ा है और जैसा होता है चाहे वो पालीटिक्स हो या और कोई कार्यक्षेत्र हो। कभी कोई वेक्यूम नहीं रहता है। वो वेक्यूम कोई न कोई फिल करता है। मैं समझता हूँ कि उस वेक्यूम को इंदिरा काँग्रेस को ही भरना चाहिए। यह हमारा सीधा-सीधा तात्पर्य है।

प्रश्न: मेरे दो प्रश्न हैं। पहला प्रश्न यह है कि इस तरह की चर्चाएँ हैं कि मध्यप्रदेश से जो प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है तिलक राज सिंह जी को, वो सिर्फ राव साहब की जिद के कारण नहीं दिया गया। दूसरा प्रश्न यह था कि कल एक पत्र दिग्विजय सिंह को दिया गया, उसमें कहा गया है कि श्री अर्जुन सिंह जी का, प्रभुत्व और प्रभाव का प्रादुर्भाव हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कहीं भी किसी को मध्यप्रदेश के मंत्रिमण्डल में शामिल करने पर श्री नरसिंह रावजी की तरफ से कोई रुकावट रही हो, यह बात गलत है। एक सिम्पल औपचारिक कमेण्ट था प्रधान मंत्री का, चूँकि उनके सामने लोगों ने बात उठाई। यह कोई सवाल नहीं उठता।

जहाँ तक मध्यप्रदेश का सवाल है काँग्रेस पार्टी के अंदर क्या लोग कह रहे हैं, नहीं कह रहे हैं। इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं और न मैं इस पर कोई कमेण्ट करना चाहता हूँ। जहाँ तक मेरे प्रभुत्व का सवाल है मैं अपनी ओर से कभी कोई किसी पर प्रभुत्व डालने की कोशिश नहीं करता हूँ और न ऐसा कोई उदाहरण भी कोई प्रस्तुत कर सकता है।

प्रश्न : आप पार्टी में फेरबदल किस स्तर पर करेंगे? प्रदेश स्तर पर करेंगे या जिला स्तर पर या किस तरह का?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, सभी स्तरों पर।

प्रश्न : बेलाडीला के मामले में यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट का स्टेण्ड क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: गवर्नमेण्ट का स्टेण्ड किसी एक इशु पर नहीं होगा, लेकिन जो घटक हैं, यूनाइटेड फ्रंट के, सी.पी.आई. है, हम लोग हैं, हम लोगों ने स्टेण्ड लिया है बेलाडिला पर और हमें पूरा विश्वास है कि उस विषय पर कोई फैसला इन सब दृष्टिकोणों को ध्यान में रख कर ही होगा?

प्रश्न : दिग्विजय सिंह जी ने कहा और जो कुछ अखबारों में छपा है, चुनावों में मंत्रियों ने मदद की। चार मंत्री सिंधिया के यहाँ चुनाव में गए। सिंधिया के अलावा आपका समर्थन भी दिखाया गया है। अगर वे आपके साथ आगम से आएँगे तो आप के पास आएंगे या कुछ वो प्रतिशोध लेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: कौन आना चाहेगा?

प्रश्न : जिन मंत्रियों ने आप को समर्थन किया है?

श्री अर्जुनसिंहः मुझे तो किसी, अब चार्ज का आंसर तो मंत्री देंगे, मैं तो नहीं दूँगा। मैंने किसी को कंवेस नहीं किया? किसी को अपने साथ रखने की बात नहीं की। जो लोगों की मर्जी है, वो उन्होंने कहा और मैं समझता हूँ कि दिग्विजय सिंहजी क्या करेंगे, यह तो किसी को नहीं मालूम। अगर आपको किसी को उसकी भनक हो तो अलग बात है।

प्रश्न : तेंदूपत्ता श्रमिकों का मसला हैं। अभी भी वही स्थिति बनी हुई है। तेंदूपत्ता से बीड़ी बनाने वाले जितने भी मजदूर हैं, उन सबके सामने एक छोटी सिगरेट के उत्पादन होने लगा है, तो उनके सामने संकट खड़ा हो गया है मजदूरी का और अल्टीमेटली, तेंदूपत्ता से बीड़ी बनाने वाले आदिवासी हैं, वे भी भारी संख्या में प्रभावित होने वाले हैं। इस संबंध में आपकी क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, शुरू से इस समूचे प्रश्न को एक दूसरे से जोड़ कर ही देखने का सवाल रहा है, चूँकि तेंदू पत्ता तोड़ने में ज्यादा लोग इंवाल्वड हैं, इसलिए उसको ज्यादा फोकस मिला है, लेकिन मैं बिल्कुल आपसे इस बात से सहमत हूँ कि बीड़ी मजदूरों की जो समस्याएँ हैं, वो चाहे छोटी सिगरेट की वजह से हो या उनके वर्किंग कण्डीशन की वजह से हो या उनके वेज़ेस के सिलसिले में हो, इनको हर दम दोनों को एक तरह से देख कर ही चलना होगा और अल्टीमेटली बीड़ी का उत्पादन, प्रोडक्सन तेंदू पत्ता का संग्रहण से जोड़ना पड़ेगा, तभी इस समस्या का हल हो सकता है।

असलियत का पता लगाएँ

5 अगस्त 1996 मोहम्मद उलय उल्ला खाँ के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्नः आपकी राय जानना चाहेंगे इससे मुताल्लिक कई सवाल हैं कि हुर्रियत कॉफ्रेंस के लीडरान्स के साथ बातचीत के बगैर कश्मीर एसेम्बली का क्या कोई फायदा निकलेगा और एक सवाल यह भी है इससे मुताल्लिक की कश्मीरियों पर जो मजालिम हो रहे हैं और मिडिया इस सिलसिले में काफी कुछ लिख रहा है और क्या ऐसे लोगों को सिर्फ कुछ माशी सहुलियतें देकर और इलेक्शन कराकर उनका मसला खत्म किया जा सकता है? और कश्मीरी आवाम का इन्तखाबाद से भरोसा उठ गया है। बहुत दफे वहाँ इलेक्शन हो चुके हैं। पार्लियामेंट्री इलेक्शन के मौके पर मिडिया ने ताकत के इस्तेमाल की रिपोर्टिंग की है क्या ऐसी हालत में एसेम्बली के इन्तखाबाद साफ-सुथरे हो सकते हैं? क्या इस पर भरोसा किया जा सकता है? एक सवाल इसी से मुतालिक है कि कश्मीर के मामले को समझकर सुलझाने की जरूरत है या इलेक्शन के जरिए ये मसला क्या हल हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए एक-एक कर के चलें तो ठीक है।

प्रश्नः पहला प्रश्न यह है कि कश्मीर के मुसलमानों पर फौज मजालिम ढा रही है। मिडिया इस सिलसिले में काफी लिख रहा है क्या ऐसे लोगों को सिर्फ इलेक्शन कराके ही मेन स्ट्रीम में लाया जा सकता है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, कश्मीर में चाहे वो जिसके द्वारा ज्यादती हो रही हो, उसके बारे में किसी भी प्रकार की नर्मी बरतने का सवाल नहीं उठना चाहिए और असलियत का पता लगाकर जो भी दोषी हैं उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए और साथ ही साथ जो कम्पनसेशन और ये सब चीजें है वो भी एक

प्रक्रिया का अंग है। लेकिन पहली बात तो यह है कि ऐसी कोई घटना होती है तो इसकी पूरी सही जाँच करके जो भी इसके जिम्मेदार हैं अनाधिकृत कार्रवाई करने के, उनके बारे में सख्ती से कार्रवाई होना चाहिए। जहाँ तक चुनाव का सवाल है, देखिये हिन्दुस्तान ने जम्हूरियत का रास्ता अख्तियार किया है। ये कैसे संभव होगा कि हिन्दुस्तान का कोई भी हिस्सा जम्हूरियत के सिलसिले से बाहर रहे। ये अंत में जाकर सारे देश की जम्हूरियत पर एक सवालिया सवाल खड़ा कर देगा... इसलिए जम्हूरियत के फिर से पूरी तरह एक्शन में आ जाना निहायत जरूरी है। क्योंकि उसके माध्यम से ही वह वातावरण ही बनता है और वो दरवाजे भी खुलते हैं जिनके द्वारा आवाम जो चाहती है वो सामने आएगा। कोई कदम उठाता है उसके आसार बनेंगे और अंततः जनता द्वारा चुनी गई सरकार फैसला करेगी। इन्तजामियात के बारे में, डेवलपमेंट के बारे में, ज्यादतियों के खिलाफ कार्रवाई के बारे में, हक और हकूक को सही ढंग से देने के बारे में, ये तो एक डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट ही करेगी। अब आपने एक सवाल जो उसी के साथ पूछा कि यह इलेक्शन फ्री एण्ड फेयर होंगे की नहीं। मैं इसको सबसे ज्यादा अहमियत देता हूँ। इलेक्शन होना तो डेमोक्रेटिक सिस्टम का अंग है ये कहना कि इलेक्शन से कुछ नहीं होता तो फिर तो आप डेमोक्रेसी को ही बलाये ताक रखना चाहते हैं। मैं नहीं समझता कि कोई इसमें इन्ट्रेस्टेट है। जहाँ तक फ्री और फेयर इलेक्शन का सवाल है निश्चित रूप से यह बहुत अहमियत रखता है। इसके लिए जितनी भी कोशिश हो सके पोलिटिकल पार्टिस के द्वारा, इलेक्शन कमीशन के द्वारा, सरकार के द्वारा वो सब चीजें होनी चाहिए और उसमें ओपन डिबेट के साथ होना चाहिए। हम अपने आप कुछ कर रहे हैं और कह दें कि इससे फ्री और फेयर इलेक्शन होगा, वो पर्याप्त नहीं होगा। जितने लोग हैं जो इसमें इन्ट्रेस्डेड हैं चुनाव में, डेमोक्रेसी को वापस लाने में, जो नहीं इन्ट्रेस्टेड हैं, इसमें, उनसे तो बात करने का सवाल ही नहीं। जो ये चाहते हैं कि कश्मीर में डेमोक्रेसी रेस्टोर हो और सही डेमोक्रेसी डीम्ड डेमोक्रेसी नहीं तो उनको सामने कॉफ्रेंस में लानी चाहिए, उनको भी सेटीस्फाई करके चुनाव की प्रक्रिया करना चाहिए ताकि किसी को गुंजाईश न रहे यह कहने की कि फ्री एण्ड फेयर चुनाव नहीं हुए। इसके अलावा मैं कोई रास्ता नहीं देखता। कश्मीर में एक नई करवट बदलने का क्योंकि ये तो कोई नहीं मान सकता है कि कश्मीर के लोग पाकिस्तान ज्वाईन कर लेंगे। ये च्वाईस कैसे किसी को दी जा सकती है और ऐसे कोई च्वाईस माँग भी नहीं रहा है।

प्रश्न: हुर्रियत कॉफ्रेंस वाले।

श्री अर्जुनसिंह: हुर्रियत भी पार्ट आफ इंडिया है। उन लोगों को भी आना चाहिए। उनसे पूरी बात होनी चाहिए।

प्रश्न: मुफ्ती सईद साहब कह रहे हैं कि उनसे बातचीत किए बगैर चुनाव कराना बेकार होगा।

श्री अर्जुनसिंह: उनको चुनाव के अन्दर शामिल करना चाहिए। इसमें कोई दो बात नहीं। हुर्रियत के लोगों को शामिल करना चाहिए।

प्रश्न: लेकिन कश्मीर के मसले की एक पार्टी पाकिस्तान को भी समझा जाता है, क्या उससे बातचीत के हक में आप हैं या नहीं हैं।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए कश्मीर के सेटलमेंट के सिलसिले में किसी भी बाहर के देश से बातचीत करने का कोई

इरादा नहीं है, चाहे वो पाकिस्तान हो, चाहे कोई दूसरा देश हो। कश्मीर भारत की समस्या है और हमें देश के अन्दर ही उसको हल करना पड़ेगा।

प्रश्नः मुल्क की सियासी हालत में तब्दीली आ रही है। कुछ इलाकाई पार्टियों ने काँग्रेस का साथ देना शुरू कर दिया है। आप इसमें क्या तबसरा करेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः इलाकाई पार्टी तो अभी कोई साथ नहीं दे रही है। उत्तरप्रदेश में, बी.एस.पी. दे रही है तो बी.एस.पी. कोई रिजनल पार्टी तो है नहीं।

प्रश्नः सेक्यूलर ताकतें बहुत मजबूत नहीं हैं, उनको जोड़ने के लिए आपका क्या प्रोग्राम है?

श्री अर्जुनसिंहः इसमें तो एक यूनाईटेड फ्रंट सरकार का बन जाना ही उस प्रोग्राम की सफलता है। वरना बी.जे.पी. तो सरकार बना ही रही थी। अब आगे तो ये सब पार्टिज़ को ध्यान में रखना पड़ेगा कि हमारा हर कदम ऐसा हो जिससे कि जो कुछ हम लोगों ने माहौल बनाया है, एक ताकत बनाई है उसमें इजाफा हो... कोई न हो, अपने आप में अगर वो सोलोडीफाई होता चला गया तो बी.जे.पी. को चेकमेट करने का वह बहुत बड़ा आगे चलकर कारण बन जायगा।

प्रश्नः यूनाईटेड फ्रन्ट की हुकुमत कब तक चल सकेगी?

श्री अर्जुनसिंहः अब वैसे अटकलबाजियाँ लोग लगाते हैं मेरे ख्याल से तो पाँच साल चलेगी।

प्रश्नः कुछ लोग आपको काँग्रेस में वापस लाने के लिए कोशिश कर रहे हैं। क्या आप दोबारा काँग्रेस में शामिल हो सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए काँग्रेस में शामिल होना न होना अपनी जगह है। सवाल यह है कि काँग्रेस में हो क्या रहा है। हम लोग अपनी राजी खुशी से तो बाहर आए नहीं थे, हमें तो निकाला गया था न, एक्सपेल किया गया था। अगर हमारे एक्सपेलशन से काँग्रेस ठीक हो जाती तो भी हमें दुख नहीं था। ठीक है। चलो हम खराब थे, निकाल दिए गए। काँग्रेस तो बच गई क्योंकि एक सेक्यूलर और इतनी पुरानी पार्टी है। लेकिन नतीजे में देखने में क्या मिला। जो हमारी शँकाएँ थीं। जिनसे मैं आगाह करता रहा, वही सच साबित हुई। और आज काँग्रेस करीब-करीब अपंग होने के कगार पर खड़ी हुई है। कोई साख नहीं बची।

प्रश्नः अभी कल्याण सिंह ने एक बयान दिया था वो कह...रहे हैं कि नेशनल फ्रन्ट की हुकुमत का बस एक मशतरह का नारा है कि बदगुमानी छुपाओ और बेईमानों को बचाओ।

श्री अर्जुनसिंहः मतलब करप्शन।

प्रश्नः जी करप्शन को छुपाओ और करप्शन करने वालों को बचाओ।

श्री अर्जुनसिंहः खैर अब ये कल्याण सिंह जी जो चाहें सो कह सकते हैं। और क्या-क्या उन्होंने किए और क्या-क्या उन्होंने छिपाए इसकी तो अलग दास्ताँ हैं।

प्रश्नः लेकिन यूनाईटेड फ्रन्ट की तरफ से बहुत स्पष्ट है कि गवर्नमेंट किसी को फँसाने के लिए इन्ट्रेस्टेड नहीं है कि जानबूझकर किसी के खिलाफ कार्रवाई हो और बेइंसाफी के साथ किसी को फँसाया जाये।

श्री अर्जुनसिंहः लेकिन जो भी कोई गिल्टी है, उसको बचाने का सवाल नहीं उठता। जो प्रक्रिया है कानून की आखिर उसी के अनुसार तो कार्रवाई होगी। आप किसी को यह कहकर की ये बदमाश है, सड़क पर ले जाकर गोली तो नहीं मार देंगे, उसमें कभी कोई दखलंदाजी गवर्नमेंट से नहीं होगी कि किसी भी

करप्ट आदमी को बचाने के लिए कोई भी कदम उठाया जाए। वो कानून के तहत कार्रवाई होनी चाहिए, वो कार्रवाई होगी उसको चलने दिया जाएगा। किसी भी प्रकार से बचाने का सवाल ही नहीं उठता। बचाने का और भी सवाल नहीं उठता।

प्रश्न: उर्दू न्यूज पढ़ने वालों के लिए कोई मैसेज।

श्री अर्जुनसिंह: उर्दू न्यूज पढ़ने वालों के लिए मेरा यही मैसेज है कि हिन्दुस्तान में जम्हूरियत को मजबूत करने में भाषाई अखबारों का बहुत ज्यादा रोल है जिसमें उर्दू जैसे अखबारों की बहुत ही ज्यादा अहमियत है। लोगों तक पहुँचने की बात पहुँचाने की और लोगों की बात आवाम तक फैलाने की। इसमें उर्दू न्यूज अच्छी तरह से अपने फर्ज को अदा कर रहा है। मैं उनकी इसके लिए बहुत-बहुत तारीफ करता हूँ। सबको मुबारकबाद देता हूँ।

आर्थिक नीतियाँ देश हित में हो

17 नवम्बर 1996 को मनीष श्रीवास्तव के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न: काँग्रेस (ई) और काँग्रेस (तिवारी) के विलय के बारे में आपकी क्या शर्तें हैं?

श्री अर्जुनसिंह: कोई शर्त तो रखी नहीं है। कोई प्रस्ताव अभी विलय का आया नहीं है। इसलिए फैसला नहीं हो पा रहा है। जैसे ही कोई विलय का प्रस्ताव आएगा हमारी पार्टी की वर्किंग कमेटी बैठेगी और निर्णय लेगी। न किसी ने कोई शर्त लगाई और न लगाने का सवाल है।

प्रश्न: 19 तारीख को इंदिरा गाँधी के जन्मदिन पर विलय की संभावना व्यक्त की गई है?

श्री अर्जुनसिंह: यह कुछ लोगों का अंदाज हो सकता है। ऐसा कोई कदम तो उठाया नहीं है।

प्रश्न: आपके जो समर्थक हैं काँग्रेस के तो कइयों की शर्तें हैं, काँग्रेस में वापस लेने के लिए?

श्री अर्जुनसिंह: मैं आपसे कह चुका हूँ और बहुत स्पष्ट होना चाहिए कि शर्तें व सौदेबाजी की तरफ हम लोगों का कतई ध्यान नहीं है। काँग्रेस की जो परिस्थिति थी और उसकी जो चिंता है, जो कि ऐतिहासिक शक्तियों के प्रति करती रही हैं और उसकी वजह से इतना लम्बा पार्टी का इतिहास बना। देश की आजादी से लेकर नवनिर्माण में इतना बड़ा योगदान रहा। उनसे पार्टी कुछ विमुख होने लगी और ये बात मैं नहीं कह रहा, ये बात पार्टी के अध्यक्ष सीताराम केसरी जी स्वयं कहते हैं। आपने पढ़ा होगा कल परसों जो उन्होंने कहा है, वह हम लोग आज से दो साल पहले कहते थे। और जब नेतृत्व उस समय इस तरफ कोई भी ध्यान देने के लिए तत्पर नहीं था और बजाय सुझाव के, सुझाव के रूप में लेना चर्चा करना और फैसला करने के बजाय लोगों के निष्कासन में लग गए तो यह स्थिति बनी। आप अगर फिर से काँग्रेस को मजबूत करना चाहते हैं, तो यथार्थ को स्वीकार करके सबका सहयोग और सबको सक्रिय करके ही हो सकता है। मैं तो एकता को यही मानता हूँ।

प्रश्न: ऐसी कोई स्थिति नहीं कि आप दोबारा जिस स्थिति में थे उसी में...

श्री अर्जुनसिंह: वो तो जब मैंने कह दिया कि न शर्त उधर से है न इधर से। इस तरह की बात कहने का आधार क्या है। स्वभाविक रूप से एकता होगी यह तो पता चलेगा।

प्रश्न: निकट भविष्य में विलय की संभावना है?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो मैं कह नहीं सकता जैसे ही कोई ठोस कदम इस दिशा में बढ़ेगा मैं उस पर विचार करूँगा।

प्रश्न: राव साहब अभी भी काँग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के लीडर बने रहे तो ऐसी स्थिति में आप काँग्रेस में वापस आना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए काँग्रेस अध्यक्ष केसरी जी का जो दृष्टिकोण है, वह सही और आगे चलकर पार्टी के लिए प्रभावशाली हो सकते हैं। हमें तो आज उसी पर चर्चा करना है। जब वह स्थिति आएगी विचार करने की और बाकी सब चीजों पर तो विचार-विमर्श और निर्णय हमारी कार्यकारिणी करेगी। मैं उस निर्णय को प्रिज्यूम कैसे कर सकता हूँ और करना भी नहीं चाहिए।

प्रश्न: आपको लगता है कि आपकी कार्यकारिणी राव की लीडरशिप को लेकर विलय के लिए राजी हो जाएगी।

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं तो कह रहा हूँ इसको प्रिज्यूम करना तो उचित नहीं है।

प्रश्न: बेसिकली ऐसा तो नहीं कि आप राव फेक्टर को ही एवाईड कर रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अब जब मैं कह रहा हूँ कि यह विषय कार्यकारिणी के निर्णय का है, तो मैं उसमें क्वालिफाय कैसे कर सकता हूँ।

प्रश्न: आपने काँग्रेस का बाबरी मस्जिद का मुद्दा रखा था।

श्री अर्जुनसिंह: एक गलतफहमी तो दूर कर लीजिए जो कि ख्यालों में हैं। स्मरण न रहने की वजह से कर लेता हूँ। मैंने काँग्रेस कभी छोड़ी नहीं यथार्थ ये हैं।

प्रश्न: ठीक है।

श्री अर्जुनसिंह: अगर बाबरी मस्जिद के बारे में मैंने कुछ कहा तो काँग्रेस छोड़ने की वजह से नहीं कहा। ऐसी गलती काँग्रेस न करे इसलिए पहले कहा, बाबरी मस्जिद के ध्वंस होने के पहले इसको लोगों ने गलत समझा। जब चुनाव में पार्टी की पराजय हुई तब मैंने कहा, मैंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा ही इसलिए दिया कि मैं पार्टी में काम करना चाहता हूँ। इसलिए पार्टी छोड़ने की तो मैंने पहल ही नहीं की और न कोई अपने विचार व्यक्त किए, पार्टी हित में कुछ करना ही गुनाह है, ऐसा मानकर एक्स्पल्शन आर्डर हुआ। उसके बाद स्थिति बनी।

प्रश्न: जब आप काँग्रेस के उपाध्यक्ष थे, तो आपने केसरी जी का राज्य सभा में चुनाव का विरोध किया था। इस संदर्भ में यह कहा जाता है कि केसरी जी का चुनाव ठीक नहीं है, आपको काँग्रेस में वापस लेने के लिए?

श्री अर्जुनसिंह: केसरी जी क्या चाहते हैं, यह सवाल तो आप उन्हीं से पूछिए लेकिन जिस संदर्भ का आपने उल्लेख किया वह फैसला मेरा नहीं था। न मैंने व्यक्तिगत रूप से इसमें कोई पहल की थी। वह फैसला पार्लियामेण्टरी बोर्ड का था, राजीव गाँधी के नेतृत्व में बैठक में हुआ था। मैं तो सदस्य था इसके अलावा उस फैसले में मेरी अलग से तो कोई रुचि नहीं थी। यह फैसला सामान्य रूप से हुआ।

प्रश्न: तो आप समझते हैं कि केसरी जी के नेतृत्व में काँग्रेस अपनी पुरानी जो स्थिति है, उसमें पहुँचेगी?

श्री अर्जुनसिंह: उनका प्रयास तो सिंसियर और डिटरमेण्ट लग रहा है और सिंसियरटी से और दृढ़ता से कोई प्रयास होगा तो उसका परिणाम तो अच्छा निकल सकता है।

प्रश्न: ये यूनाइटेड फ्रंट की गवर्नमेण्ट, काँग्रेस यूनाइटेड यदि होती है, तो आप क्या देखते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसे सवाल तो मैं समझता हूँ कि उपयुक्त नहीं है। और वैसे तो काँग्रेस पार्टी इस समय सरकार

का समर्थन कर रही है और समर्थन वापस लेने या न करने का एक तरह से फैसला है तो उसके विपरीत सवाल उठाने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

प्रश्न: यह जो आपके दो मंत्री हैं, केन्द्रीय मंत्रिमंडल में, सतपाल महाराज उन्होंने विरोध किया आपके एकता प्रयास का?

श्री अर्जुनसिंह: मुझे तो इसकी कोई सूचना नहीं है और मुझसे जब-जब कोई बात हुई उन्होंने मुझसे तो कुछ नहीं कहा, लेकिन हर आदमी को अपना मत रखने का अधिकार है लेकिन यह तो तभी सामने आयगी जब इस विषय पर चर्चा होगी। कोई चर्चा ही नहीं हुई तो विरोध प्रकट करने का तो अवसर ही नहीं है।

प्रश्न: यूनाइटेड काँग्रेस का फ्यूचर आप क्या देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने आपसे कहा है उसी बात को दोहराऊँगा कि अगर जिन ऐतिहासिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व काँग्रेस करती रही अगर उस प्रतिनिधित्व को फिर से करने की क्षमता पैदा काँग्रेस कर ले तो निश्चित रूप से देश में उसका राजनैतिक प्रभार बढ़ेगा क्योंकि ये बात तो अपनी जगह एक सर्वविदित तथ्य है कि एक निश्चित पर्सन्टेज काँग्रेस का प्रदर्शन तो सारे देश में है अन्य किन्हीं पार्टियों का नहीं है, किन्हीं का कही है लेकिन काँग्रेस (ई) है जो सारे देश में है, लेकिन वो निर्भर उसी पर करेगा जो मैंने पहली बात कही।

प्रश्न: केसरी जी ने सोनियाजी को रिप्रजेंटेशन दिया है, सी.डब्ल्यू.सी. की मेम्बरशिप के लिए जिसका आपने सपोर्ट किया है?

श्री अर्जुनसिंह: उनका ये निमंत्रण न केवल जायज है लेकिन उसका बहुत बड़ा हक भी है लेकिन फैसला तो ये सोनिया जी को ही करना है और ये मेरी बहुत दिनों से स्पष्ट राय थी कि इस मामले में किसी को कोई दबाव उन पर डालने का सवाल नहीं है। वो अपने विवेक से जब भी फैसला करेंगी ये एक सकारात्मक फैसला होगा। तो मेरे मत में वो देश के व काँग्रेस के हित में है।

प्रश्न: ये जो यू.पी. में जो स्थिति पैदा हुई है किसी भी सरकार, किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न आने पर, इसमें जो योजना जो प्ले कर रहे हैं, इसको आप कहाँ तक जस्टिफाई करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए किसी भी एक व्यक्ति के रोल का जस्टिफिकेशन का सवाल नहीं है, कण्डमनेशन का सवाल ये है कि स्थिति ऐसी बनकर सामने आई। चुनाव के परिणामों ने ऐसी स्थिति निर्मित कर दी कि किसी को बहुमत नहीं मिला, अब बहुमत नहीं है तो बहुमत बनाकर शासन में आना है इसकी एक प्रक्रिया होती है। अब उस प्रक्रिया में तो अभी तक कोई सफल नहीं हुआ। जिन दो दलों को जिन समूहों को मिलाकर ये स्थिति निर्मित करने में आसानी है। यू हेव फार काँग्रेस बी.एस.पी. एलायंस से वे सहमत नहीं हो सके। प्रक्रिया पर इसलिए ये स्थिति बनी हुई है यह कोई अच्छी स्थिति नहीं और मेरा मत है कि हाउस को डिजाल्व नहीं करना चाहिए कोशिश और करने की जरूरत है एक सेक्यूलर गवर्नमेण्ट ही बनाने के लिए।

प्रश्न: जिस तरीके से आर्टिकल 356 का मिसयूज हो रहा है गुजरात में भी हुआ। यहाँ पर भी हुआ और यही दो पार्टियाँ हैं जो इस आर्टिकल की काफी मुखर रही है तो आपको क्या लगता है।

श्री अर्जुनसिंह: वो तो जनता को कम्पेयर करना है। जहाँ तक दो विशेष परिस्थितियों का आपने जिक्र किया है।

यू.पी. का तो मैंने बताया क्या उसका चारा क्या है और गुजरात में तो जब एक संवैधानिक स्थिति बनाकर रखने में असमर्थ हो गए तो उस आर्टिकल के अलावा और तो कोई तरीका है नहीं। अब बाकी उसको ज्यूडिशियल में भी गया है। वो मामला अब तो ये ज्यूडिशियल रिव्यू में आ गया है। लास्ट सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट से तो प्रेसीडेंट के विवेक तक की वो समीक्षा करते हैं। तो अगर ऐसी कोई भूल हुई है, जानबूझकर कोई हुई है तो उस ज्यूडिशियल रिव्यू में बात सामने आ जाएगी।

प्रश्न: बस थोड़ा सा और जिस तरह से गवर्नर्स अपना रोल प्ले कर रहे हैं उससे आपको क्या लगता है, क्या सही है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिये गवर्नर का रोल अब तक काफी परिभाषित हो चुका है और जो कुछ इस तरह के पहलू हैं उन्हें स्पष्ट करने में हमें, मैं समझता हूँ सरकार का कमीशन के माध्यम से उन्हें और इनाग्रेट किया गया है। वैसे सबकी राय जानने के लिए जो पोलिटिकल लिगल इश्यू होते हैं उनमें कभी विराम नहीं लगाया जा सकता कि आज ये हो गया इसके बाद सभी इस पर चलेगा अलग-अलग परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं लेकिन मुख्य रूप से मैं उससे सहमत हूँ कि इस आर्टिकल का उपयोग करने के मापदंड जितने ज्यादा परिभाषित किए जा सकें करना चाहिए।

काँग्रेस विलय की चर्चाएँ

7 दिसम्बर 1996 इंदौर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न: क्या पार्टी का विलय होगा?

श्री अर्जुनसिंह: इंटीग्रेशन होगा। इंटीग्रेशन का हिन्दी अनुवाद आप बना लें।

प्रश्न: यह कब तक होगा?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो देखिए, वर्किंग कमेटी तय करेगी, उसके बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता।

प्रश्न: आपको काँग्रेस की तरफ से कोई प्रस्ताव आएगा, तभी तो आप विचार करेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: यह तो देखिए, फिर वही कण्डीशनवाली बात होगी न, तो जो फैसला होगा, उसमें स्पष्ट ही होगा।

प्रश्न: अखबारों में यह आ रहा है कि दो बातें आपकी तरफ से आ रही हैं। एक तो यह कि आपको किसी ने कहा नहीं है कि काँग्रेस में आईए व्यक्तिगत तौर पर और दूसरा यह भी आया है कि चूँकि आपको काँग्रेस से निकाला गया था, इसलिए आप तभी जाना पसंद करेंगे, जबकि वे ससम्मान वापस लें।

श्री अर्जुनसिंह: जो भी हम लोगों ने सूचना निकाली है मीटिंग की, उसमें दोनों बातें स्पष्ट हैं। करुणाकरणजी से जो कुछ बातें हुई, उसीके फलस्वरूप ये नोटिस भी है। 11 तारीख की बैठक आहूत की गई है। जहाँ तक और किसी कण्डीशन का है, उसमें ऐसी कहीं तो चर्चा नहीं हुई और न कहा गया। कौन कहाँ रहेगा, नहीं रहेगा।

प्रश्न: गुजनीति तो अपनी जगह पर, लेकिन आपको कैसा फील हो रहा है? काँग्रेस से पुन: जुड़ने में आपके मनोभाव किस रूप में प्रकट होंगे?

श्री अर्जुनसिंह: उसके लिए प्रगति होने दीजिए। अभी सब चीजों का पूर्वाभास थोड़े ही हो सकता है।

प्रश्न: आपको हो ही रहा होगा। हम तो सब आपके मनोभाव को जानने के लिए आए हैं। आपका मनोभाव क्या कह रहा है? व्यक्तिगत तौर से अर्जुन सिंह से यह प्रश्न पूछा जा रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: (हँसते हुए) देखिए, अगर मैं व्यक्तिगत उत्तर देने की पोजीसन में होता तो मैं जरूर आपको उत्तर देता, लेकिन क्योंकि हम सब एक साथ हैं, पार्टी के साथ हैं तो जो कुछ कहना चाहिए मुझे 11 तारीख को ही कहना चाहिए। औचित्य नहीं है उसके पहले कुछ बात कहने का।

प्रश्न: राव साहब के हटने के बाद और केसरी जी के अध्यक्ष बनने के बाद क्या आपको ऐसा लगता है कि आप जैसे वरिष्ठ नेता वापस काँग्रेस में जाएँगे और उनका सम्मान सुरक्षित रहेगा या फिर से वो नौबत नहीं आएगी?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, व्यक्तिगत तौर पर तो मैं कतई उत्तर नहीं दूँगा, लेकिन इतना तो कह सकता हूँ कि केसरी जी ने अध्यक्ष बनने के बाद जिस प्रकार से अलग-अलग विषयों पर कदम उठाए हैं, उनसे यह विश्वास बनता है कि काँग्रेस की और काँग्रेस जनों की खोई हुई प्रतिष्ठा और साख भी वापस आएगी और राष्ट्रीय स्तर पर काँग्रेस की सार्थकता भी उभर कर सामने आएगी। इतना मैं कह सकता हूँ। व्यक्तिगत का कोई सवाल ही नहीं है।

प्रश्न: जब पार्टी में थे, तो बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता था कि नरसिंह राव साहब के तुरन्त बाद आप नम्बर दो पर राष्ट्रीय नेता के रूप में उभर कर सामने आए हुए थे और वही पोजीशन रिस्टोर नहीं होती है तो आप का काँग्रेस में जाने का मतलब क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: आप उस रूप में कह रहे हैं, इसका यह मतलब है कि किसी एक स्थान पर बने रहने के लिए मैं काँग्रेस से अलग होकर आया?

प्रश्न: नहीं, यह अर्थ नहीं है। (हँसी)
जो पोजीशन थी, वो नेचुरल कोर्स में उभर कर आ गई थी, कोई आपने प्रयास किया होगा, ऐसा तो नहीं है। उभर कर के आ गई थी। क्या वही स्वरूप फिर से उभर कर के आएगा। क्योंकि आपके साथ जो लोग जुड़े हुए हैं, वे भी तो जीवन संघर्ष में उस स्थिति में देखना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: वो जो संघर्ष में हैं, हम उनके साथ में हैं, लेकिन ये किसी पद पर जाने या न जाने का मैं कोई मतलब नहीं रखता।

प्रश्न: आप 11 तारीख को विलय, एकीकरण की बात कर रहे हैं और दूसरी तरफ यह कहा जा रहा है कि चुन-चुन के लेंगे, जो रोकना चाह रहे हैं उनको, तो आपसे डर कर कह रहे हैं या कुछ और भावना है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो नहीं समझता कि वो खबर कोई सही है, लेकिन इस पर मैं कोई टिप्पणी भी नहीं करना चाहता। हमें जो करना है, हम फैसला करेंगे बाकी तो...।

प्रश्न: पूरी पार्टी का विलय होगा तो कुछ शर्तें तो नहीं रहेंगी?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने आपसे पहले ही कहा है कि कोई शर्त न उन्होंने रखी है, न हमने रखी है। फिर इन सब बातों का करने का सवाल ही क्या है? जो फैसला होगा, आप 11 तारीख को सुन लीजिए कोई छुप कर तो होगा नहीं। बराबर प्रस्ताव पास होगा कि देश के हमारे साथी आएँगे, बैठेंगे।

प्रश्न: राजनीतिक मूल्यों में जो गिरावट दिखाई दे रही है और देश की जनता को जो राजनीतिक दलों

से निराशा हो रही है, उसके बारे में कुछ कहेंगे आप?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो गंभीर बात है और इसमें केवल हमारे कहने का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि जितने भी लोग प्रजातांत्रिक पद्धति में कहीं न कहीं उनका रोल है, उन सबके लिए ये बहुत गंभीर बात है और जहाँ भी जिस तरह से भी है, इस धारणा को मजबूत करने की जरूरत है कि गिरते हुए मूल्यों से सचमुच में भारत में प्रजातंत्र को खतरा पैदा हो जाएगा और कैसे उसका मुकाबला किया जाय, उसको हटाया जाएगा और मूल्यों की रक्षा की जा सके, इस पर विचार विमर्श करने पर कुछ चीज उभर कर सामने नहीं आती और उस दिशा में जितनी पर्याप्त कोशिश हो सकती है वह अभी हुई नहीं।

प्रश्न: सबका रोल अपनी-अपनी जगह है। पत्रकारों का अपना रोल है, लेकिन पोलीटीशियन इसके लिए ज्यादा जवाबदार हैं मूल्यों को गिराने में या दूसरे लोग?

श्री अर्जुनसिंह: जो भी मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं, वो पोलीटिशियन हों, कोई भी हों, सब उसके लिए जिम्मेदार हैं। अगर पालीटिशियन ज्यादा करते हैं तो वो ज्यादा जिम्मेदार हैं।

प्रश्न: अच्छा इसी संदर्भ में यूनाईटेड फ्रँट के कुछ पार्लियामेंट मेम्बरों, काँग्रेस के, सभी मिल कर कोई ऐसा प्रयास हो रहा है कि इलेक्टेड मेम्बर को करप्सन के परिप्रेक्ष्य में कुछ सुधार करके बाहर लाने की कोशिश हो रही है, इस संबंध में आपको क्या कहना?

श्री अर्जुनसिंह: किसी के लिए भी जो देश की न्यायिक प्रक्रिया में जो देश की सर्वमान्य मान्यताएँ हैं, उसमें विशिष्टता देकर बाहर लाने के लिए तो मैं कतई सहमत नहीं हूँ और न इसको उचित मानता हूँ।

प्रश्न: आपको ऐसे कोई प्रयास की जानकारी है?

श्री अर्जुनसिंह: अखबारों में पढ़ता रहता हूँ। कोई ऐसे प्रयास तो नहीं। लोगों की, जैसे एम.पी., एम.एल.ए. की बात है जो प्रेस में आया है और जो उन लोगों ने कहा भी है कि वो तो ऐसा पाइंट है, मेम्बर पब्लिक सर्वेण्ट है कि नहीं? अगर पब्लिक सर्वेण्ट की हैसियत से उनका प्रासीक्यूसन होता है तो जो पब्लिक सर्वेण्ट की जो व्याख्या है, वो स्पष्ट होनी चाहिए। ये मेन चीज है। लेकिन ये मतलब नहीं कि कोई एम.पी. या एम.एल.ए. है, वो कोई अपराध करेंगे तो अपराध ही उससे निकाल दिया जाय। पर इससे ऐसा कोई मतलब नहीं है।

प्रश्न: ज्यादातर आर्थिक अपराधों के संदर्भ में प्रयास हो रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, वो चाहे आर्थिक हों या और किसी और तरह के हों तथा उस व्याख्या की बात है तो मैं समझता हूँ कि व्याख्याएँ हो जाने में तो कोई प्राबलम्ब ही नहीं होना चाहिए, व्याख्या हो जाना चाहिए। वैसे स्पीकर साहब ने आज कोई बयान ऐसा जरूर दिया है, मैंने सुबह के ही अखबार में पढ़ा। उन्होंने अटेंशन ड्रा किया है। उनसे भी लोगों ने पूछा कि साहब इसका क्या मतलब है, तो वो शायद प्रासीक्यूसन के लिए परमिशन ली जाय या नहीं ली जाय, इस मुद्दे पर उनका विचार है। इसमें उन्होंने यह कहा है कि एक क्लर्क होगा तो उसको प्रासीकूट करने के लिए तो गवर्नमेंट की परमीशन लेना पड़ेगी, उस पर मुकदमा चल सकता है और एक एम.पी. भी पब्लिक सर्वेण्ट की ही संज्ञा में रखा जाएगा, लेकिन उसके लिए किसी की परमिशन की जरूरत नहीं होगी। इन कुछ विरोधाभासों की ओर उनका कुछ संकेत है। इसलिए ये सब चीजों को तो हो जाना चाहिए,

जो कुछ होना है, लेकिन अगर उसका परिणाम यह हुआ कि कोई पालीटीशियन चाहे वो आफिस में हो, बाहर हो, वो उसे अपराध की परिधि से निकालने का यह बहाना है, यह तो मैं उचित नहीं मानता।

प्रश्न: मध्यप्रदेश की सरकार ने पिछले दिनों दो कारनामे किए हैं। एक तो पूरे प्रदेश के अंदर पट्टे की जमीनों पर बहुमंजिलें इमारतें बनी अधिकांश जगहों पर पट्टों का दुरुपयोग किया गया। दूसरा 1983 का आपके मुख्यमंत्रित्व के शासन काल में केबीनेट ने एक निर्णय लिया था साप्ताहिक अखबारों को एक पृष्ठ का विज्ञापन देने के बारे में, उस निर्णय को एक मंत्री द्वारा बदल दिया गया है। इन दोनों मामलों को लेकर आप मध्यप्रदेश सरकार के बारे में क्या सोचते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: जहाँ तक लघु समाचार पत्रों के विज्ञापन बंद करने का सवाल है, बिल्कुल औचित्यपूर्ण नहीं है और उस आदेश को तुरन्त निरस्त करना चाहिए अगर वित्तीय प्रश्न है तो और किसी तरह से उसका समाधान किया जा सकता है, लेकिन विज्ञापन बंद करना तो मैं कतई उचित नहीं समझता हूँ।

भारत की आत्मा को सुरक्षित रखें

11 दिसम्बर दिल्ली में अखिल भारतीय इंदिरा काँग्रेस और अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी (राव) के विलय का प्रस्ताव

अखिल भारतीय इंदिरा काँग्रेस तिवारी का अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी इण्डियन नेशनल काँग्रेस में एकीकरण के विषय पर विचार करने के लिए आप में से प्रायः बहुत से लोगों से यदि सब से नहीं तो अधिकाँश लोगों से इस विषय पर काँग्रेस अध्यक्ष माननीय तिवारी जी और मुझ से भी चर्चा हुई है। आज उसी के संदर्भ में एक प्रस्ताव बनाया गया है। और वो प्रस्ताव आपके द्वारा विचार और पारित करने के लिए रखा गया है।

तिवारी जी, इस सभा में आए हुए साथियों, तिवारी जी के सारगर्भित और सम्पूर्ण रूप से एक विहंगम नजरिए से जो उन्होंने समीक्षा की है और जो दिशा निर्देशन दिया है, हम सब उसके लिए उनके बहुत आभारी हैं। मैं कोई लम्बी चोड़ी तकरीर नहीं करना चाहता, क्योंकि निर्णय के समय तकरीर नहीं, जो कदम हैं, वो अपने भविष्य की रूपरेखा बताएँगे। मैंने एक जगह भाषण में ये कहा था। भोपाल में तिवारी जी के समक्ष कवि दिनकर की दो पंक्तियाँ, मैं उन्हीं का जिक्र कर के अपनी बात समाप्त कर दूँगा। दिनकर जी ने कहा था—

समर शेष है, समर शेष है,
नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र।
समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र।
जो तटस्थ हैं, जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी इतिहास॥

आज हमें सबसे ज़्यादा प्रसन्नता केवल एक ही है कि जो तटस्थों की लम्बी कतार बनी हुई थी, उस कतार को अखिल भारतीय काँग्रेस के सम्माननीय अध्यक्ष ने तोड़ दी है और वे स्वयं अगुवाई कर रहे हैं। बाकी जो समर है, उस समर में संघर्ष करने का, विजय पाने का, व्यक्तिगत नहीं, भारत की आत्मा को सुरक्षित रखने का और इसलिए तिवारी जी का यह प्रस्ताव मेरी समझ में, न केवल सामयिक है, ऐतिहासिक है, बल्कि उन सब लोगों के लिए जो

पहले ही उचित और अनुचित के बीच में तटस्थ रहने का सुविधाजनक रास्ता नहीं अपनाया था, आज उन्हें तिवारी जी के इस प्रस्ताव में वो रास्ता साफ दिख रहा है, जो संघर्ष का रास्ता है, विश्वास का रास्ता है, आस्था का रास्ता है। जो एक तरह से भारत की उस परम्परा का रास्ता है, जिसने सदैव उचित और अनुचित के बीच में फर्क रखा है और उचित न्याय के लिए संघर्ष किया है। आज वो संघर्ष एक नए रूप ग्रहण कर के शुरू होने वाला है। हम सब उस रास्ते पर चलने के लिए एकजुट होकर, कंधे से कंधे मिला कर, परस्पर विश्वास और परस्पर पूरी तरह से एक साथ जुट होकर, चल पड़े यही इस प्रस्ताव का अर्थ है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ और आप सब लोगों से निवेदन करता हूँ, इसलिए निवेदन करता हूँ कि जो लोग इस प्रस्ताव के पक्ष में हों, वो कृपया हाथ उठाएँ। अगर किसी को इस प्रस्ताव से विरोध है, तो विरोध करने वाले भी अब अपना हाथ उठाए। अर्थात् ये प्रस्ताव जो तिवारी जी ने रखा है, वो सर्वसम्मत से पारित हुआ।

CAREER COLLEGE
Invo.....
Book.....
Date.....
H.E.L., BHOPAL

एक दूसरा प्रस्ताव है, उसका हिन्दी अनुवाद जल्दी में नहीं हो सका-

"दिस मीटिंग आफ द जनरल बाडी प्लेसेज आन रिकार्ड इट्स डीप सेंस आप ग्रेचीट्यूट एण्ड एप्रीसिएशन आफ आल द वर्कर्स आफ आल इण्डिया इंदिरा काँग्रेस तिवारी हू हैज सेल्फलेसली स्ट्रगल फार द आब्जेक्टिव ऑफ द पार्टी फार द लास्ट टु इयर अगेन्स्ट आल आर्च। दिस आलसो रिगार्ड दिस ग्रेचीट्यूट एण्ड एप्रीसिएशन फार द पीपल हू गेव द पार्टी देयर असलेक्टेड सपोर्ट।"

26927

'This meeting of the General Body places on record deep sense of gratitude and aspiration of all the workers of all India Indira Congress Tiwari, who has selflessly struggle for the objective of the party for the last two years against all arch. This also regard this gratitude and appreciation for the people who gave the party their unselected support.'

इसको भी हम एक मत से पास करें।

अब हम आपसे निवेदन करेंगे कि आप सब लोग तिवारी जी के निवास तिलक मार्ग में पधारने का कष्ट करें। वहाँ पर और भी बहुत से कार्यकर्ता आए हुए हैं, जो यहाँ सबका समावेश नहीं हो सकता था, वहाँ सबके साथ मिल कर चाय होगी और वहाँ भी तिवारी जी दो शब्द कहेंगे। धन्यवाद।

राजनैतिक प्रश्न अपने तरीके से हल होते हैं

21 दिसम्बर 1996 रूड़की महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में किया गया सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

परम आदरणीय कुलपति प्रोफेसर के.सी. पाण्डेय जी, तथा सभी सम्मानित अध्यापकगण, इस दीक्षांत समारोह में पधारे हुए सम्मानित अतिथिगण और प्रिय छात्र और छात्राओं, इस महाविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बहुत बार मुझे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सब से पहले मैं उन बहनों और भाइयों को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी योग्यता का परिचय देकर पुरस्कार प्राप्त किए हैं और यह हम सबके लिए बहुत सुखद अनुभव है कि 99 प्रतिशत पुरस्कार हमारी बहनों को मिला है। मैं नहीं समझता कि मात्र संयोग है। यह भारत की बदलती हुई तस्वीर का एक प्रतीक है और अगर इसे हम इसी प्रकार से अवसर करते रहे तो देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक

तस्वीर भी बदल सकती है।

दीक्षांत समारोह में जो व्यक्ति डिग्री पाते हैं, उनके सामने सबसे बड़ा प्रश्न इसके पश्चात क्या करना है, वह उठ खड़ा होता है, जिसका उत्तर तो प्रत्येक व्यक्ति अपने ही विवेक और क्षमता के अनुसार देगा। लेकिन ये प्रश्न आज केवल उन लोगों के लिए नहीं, जो उपाधि प्राप्त कर रहे हैं, आज समूचे देश के सामने यह प्रश्न है कि आगे क्या? सहजता से इस सवाल का उत्तर हम सब दे सकते हैं, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि हम इस बात को समझने की कोशिश करें कि आज देश के सामने क्या प्रश्न खड़े हैं? आर्थिक प्रश्न हैं। सामाजिक प्रश्न हैं। राजनीतिक प्रश्न हैं। ये अपने तरीके से हल भी होते हैं, नहीं भी होते हैं। पुनः उठ खड़े होते हैं, लेकिन मेरे मत में आज जो सबसे बड़ा सवाल सारे राष्ट्र के सामने है, वह मूल्यों का, मान्यताओं का और विश्वास का संकट है।

यह मूल्य, मान्यताएँ और विश्वास, जो किसी भी राष्ट्र की धरोहर नहीं, धुरी होती है,उसके अस्तित्व के, उसके विकास के, उसकी उस क्षमता का परिचय का, जिस परिचय में प्रत्येक राष्ट्र अनेक चुनौतियों के सामने देता रहता है इतिहास, आज उसका संकट है। इसके पीछे और बहुत से कारण हो सकते हैं। मेरे मत में इसके पीछे जो सबसे बड़ा कारण है, वो यह है कि ये तीनों चीजें, जैसा मैंने कहा धुरी है। इनके बारे में हम सबका दृष्टिकोण बहुत ही व्यक्तिवादी होता है अर्थात् इच्छाओं के, अपने स्वार्थ के और अपनी ही आकांक्षाओं की परिधि में हम इनकी व्याख्या करने लगे हैं, जबकि इनका संदर्भ राष्ट्र के हितों से है। राष्ट्र के प्रतीक से है और सबसे बड़ी बात हमारे संविधान और प्रजातांत्रिक पद्धति की गरिमा से है।

सवाल यह है कि इसका हम किस प्रकार से सामना करें। मैं कोई हर बात का हल बताने नहीं आया हूँ। केवल यह आपके सामने रखना चाहता हूँ, ताकि इन विषयों पर भी विचार करने का आपको अवसर मिले। वरना जीवन की आपा-धापी में जिसको कहते हैं, ये सब चीज़ें गौण हो जाती हैं और धीरे-धीरे राष्ट्र उस बिंदू की ओर खिसकता है, जिसके बाद बिखराव और विघटन के अलावा और कुछ नहीं बचता है। अगर हम मूल्यों के बारे में जो मूल्य लाभप्रद नहीं है, जो समाज के लिए लाभप्रद हैं, जो देश के लिए लाभप्रद है, जो उन सिद्धांतों को मजबूत करने के लिए कारगर होते हैं, जो सिद्धांत सबको परिभाषित करते हैं विश्वास अपने काम के लिए नहीं, वह विश्वास जो आस्था को जन्म दे, वह विश्वास जो प्रजातंत्र जैसी संवेदनशील पद्धति को सही मायने में देश में लागू करने में सहायक हो।

हम प्रजातंत्र की बात तो करते हैं, लेकिन प्रजातंत्र कोई व्याख्यान नहीं है। कोई कोड आफ कंडक्ट नहीं है। प्रजातंत्र केवल विश्वास पर टिका हुआ है और वह विश्वास भौतिक भी है और आंतरिक भी है और अगर हम यह मान कर चलें कि देश के सभी लोग जो अपने प्रजातांत्रिक अधिकारों का उपयोग करते हैं मत डाल कर, उनका मत उस विश्वास का प्रतीक है। वो अधिकार जिसका वो उपयोग करते हैं, वह अक्षुण्ण है, उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है, लेकिन अगर वह अधिकार बरतते समय ये पूरी तरह से आजाद हो अपने विवेक का इस्तेमाल न कर सकें, जोर जबर्दस्ती के द्वारा उनकी गणना हो जाए और उससे फायदा उठा कर कोई भी व्यक्ति सत्ता की कुर्सी पर जाकर बैठ जाय तो फिर विश्वास कैसे कायम रह सकता है। और यह बात बीसवीं सदी समाप्त होते हुए इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारत के लिए बहुत बड़ा प्रश्न बन कर खड़े होंगे।

पचास वर्ष हम पूरा कर रहे हैं। हम इतना तो कह सकते हैं कि हमने इन पचास वर्षों में भौतिक प्रगति कुछ की है। हमने देश के प्रजातंत्र को सुरक्षित रख कर उसे आगे चलाने की कोशिश की है। लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि देश का प्रजातंत्र सचमुच में उन करोड़ों लोगों के लिए भी मायने रखता है, जो वोट डालने ही नहीं जाते। आपको शायद ज्ञात होगा कि मुश्किल से भी पचास प्रतिशत से कम लोग मतदान करते हैं। आखिर क्यों? उनको भी मालूम

है कि वो एक स्वतंत्र प्रजातांत्रिक देश के नागरिक हैं, लेकिन क्यों उनकी दिलचस्पी नहीं है। क्यों नहीं इतना प्रयास करते? इसका एक ही कारण है कि उनके मन में पूरी तरह से यह विश्वास नहीं है कि अपनी किस्मत को बनाने का उन्हें अधिकार मिला है।

ये प्रश्न हैं, जो आज भारत की नई पीढ़ी के सामने खड़े हैं। जो कुछ आपने इस महाविद्यालय के परिसर में अपने आदरणीय गुरूजनों से सीखा है, समझा है, वह आपको अपने जीवन को सफल बनाने में निश्चित सहायक होगा। मेरी आप से यही प्रार्थना है कि उनके उपदेशों को और अपने स्वयं के अनुभवों को राष्ट्र के हितों से भी जोड़ने का आप संकल्प लें। इस दीक्षांत समारोह के पश्चात् जो सामाजिक जिंदगी आपकी शुरू होती है, वो जिंदगी अपने लिए भी हो और देश के लिए भी हो। यही आज संकल्प लेने का दिन है।

मैं आप सबको पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। जय - हिन्द।

पद, पदवी और पैसे का दौर किसी के साथ समाप्त हो गया। अब नाम भी लेने की जरूरत नहीं है। अब दौर है आत्म विश्वास से सिध्दान्तों के लिए, समाज के लिए, गरीबों के लिए काँग्रेस की नीतियों और कार्यक्रमों के जरिए संघर्ष करने का। इस दौर में जो आकर खरा उतरेगा, वही काँग्रेस को पुनर्जीवित करेगा।

— श्री अर्जुनसिंह

2 फरवरी 1997



1997

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

काँग्रेस का नौजवानों को आगे आने का आव्हान

2 फरवरी 1997 रीवा में काँग्रेस रेली में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

विधान सभा के सम्मानित अध्यक्ष और इस सभा में पधारे हुए विन्ध्याचल के जाने - अनजाने, लेकिन एक ही तार में, एक ही डोरी में गुँथे हुए आदरणीय साथियों। मैं आदरणीय माताओं और बहिनों को विशेष रूप से संबोधित करना चाहता हूँ, क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में वे यहाँ पधारी हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अपने घर की ही तरह वे इस विशाल भारत की खोज खबर रखना चाहती हैं। जब-जब भारत में महिलाओं का स्थान समाज में ऊँचा हुआ है, तब-तब भारत का स्वर्णिम दिन का उदय हुआ है। हम आशा करते हैं कि आने वाले दिनों में हमारे देश की माताएँ और बहनें, जो कुछ भी हमारे आँगन में बिगड़ गया है, उसे ठीक करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

आज मैं उन भाइयों - बहिनों को भी याद करता हूँ, जिन्होंने एक राजनैतिक और वैचारिक संघर्ष में साथ चलने का संकल्प लिया था और अनेकों परेशानियों के बावजूद उनके कदम रुके नहीं। मैं उन लोगों को भी याद करना चाहता हूँ, जो कुछ दूर चले, विश्वास से चले, लेकिन आगे नहीं चल सके, वो जितनी दूर चले, उतने के लिए ही मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ। और मैं उन सबको भी बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने दृष्टिकोण से और स्वाभाविक है, अपने हितों को ध्यान में रख कर हम लोगों पर राजनैतिक प्रहार किए। मैं विनम्रता से उनसे कहना चाहता हूँ कि ये तो सही है कि मनुष्य होते हुए इन सब चीजों का असर हृदय में होता है और जो अपनों के घाव होते हैं, वो ज्यादा ही गहरे होते हैं, लेकिन मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि वो घाव हमारे हैं। हम सबको आज इस जमाने के घावों को देखना है, अपने घावों को नहीं। मेरे मन में कोई न दुर्भावना है, न नाराजगी है, न किसी भी प्रकार का जोश है।

मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि अब जमाने की रफ्तार को, जमाने के तेवर को पहचानने की कोशिश करें। आज काँग्रेस पार्टी एक संक्रमण काल से निकल कर आई है। श्री सीतारामजी केसरी को केवल उनकी उम्र की वजह से ही नहीं, केवल उनकी वरिष्ठता की ही वजह से नहीं, केवल इसलिए नहीं कि वे आज हमारे अध्यक्ष हो गए हैं, इसलिए मैं उनकी तारीफ करता हूँ। सीतारामजी केसरी को, तो मैं पैंतीस साल से जानता हूँ, लेकिन आज तारीफ करने की बात यह है कि उन्होंने उन तटस्थों की कतार को तोड़ कर, जिनके बारे में जिक्र मैंने भोपाल में किया था कि—

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ है, समय लिखेगा उनका भी इतिहास॥

सीताराम जी केसरी ने उन तटस्थों की कतार को तोड़ कर भारत के रंग मंच पर सामने आए हैं, काँग्रेस की

रक्षा करने के लिए, सही और गलत के बीच में फर्क को सामने बताने के लिए, न्याय और अन्याय के बीच में लोगों को सही रास्ता दिखाने के लिए और अपने कर्त्तव्य के बारे में प्रत्येक काँग्रेस जन को सही तरह से बोध कराने के लिए। इसलिए मै आज सीताराम केसरीजी का काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में सम्मान और आदर करता हूँ।

केवल अपने पद पर बने रहने के लिए या जो नई संस्कृति काँग्रेस में पनप गई है— पद, पदवी और पैसा। उस संस्कृति से वशीभूत होकर केवल अपने हितों को देखते रहने में सक्षम है तो फिर जनता उन पर विश्वास नहीं कर सकती। यदि काँग्रेस के प्रति जनता का विश्वास फिर से जगाना है, तो उस सेवा के माध्यम से जगाना पड़ेगा, जो सेवा गरीब से गरीब इंसान इस देश का समझ सके लम्बे - चौड़े भाषणों से यह काम नहीं होगा। यदि कहीं पर किसी गरीब पर अन्याय हो रहा है, उसकी जमीन छीनी जा रही है, जो उसका हक है, उसको नहीं मिल रहा है। वहाँ पर वहाँ का काँग्रेसी कहलाने वाला जो व्यक्ति है, किसके पास खड़ा है? वो उस गरीब के पास खड़ा है या जो शोषण करने वाला व्यक्ति है, उसके पास खड़ा है। वहाँ फैसला होगा कि काँग्रेस किसके साथ है और किसके साथ नहीं है?

इसलिए अब वे दौर कठिन दौर है। जब तक चापलूसी का दौर रहता है बहुत आसानी रहती है, केवल उच्चारण करने की जरूरत है। लेकिन जब बलिदानी दौर शुरू होता है, जब तक बलिदान नहीं होता है, तब तक आगे बढ़ने का सवाल ही नहीं होता है। काँग्रेस का ये बलिदानी दौर है और हम नहीं जानते कि कितने बलिदान होंगे? क्योंकि अब ये संघर्ष ऐसे दौर में जाने वाला है, जो आर-पार की लड़ाई का दौर होगा। विहित स्वार्थ शोषण के समर्थक, केवल इस देश के ही नहीं हैं, वरन बाहर के भी हैं। हिन्दुस्तान की आजादी उसकी आत्म निर्भरता, उसकी अपनी अस्मिता पर आज ग्रहण लगाने की नापाक कोशिशें हो रही हैं और अगर उन कोशिशों को असफल बनाना है, तो उसके लिए बलिदान के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

आज ये कठिन परिस्थितियाँ हैं और ये मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कम से कम कहने में मुझे कोई हिचक नहीं है, कि इन परिस्थितियों का मुकाबला केवल काँग्रेस पार्टी ही कर सकती है। क्योंकि वही एक देश के अंदर केन्द्रीय राजनैतिक शक्ति है, जो सारे देश में फैली है, जिसकी सब जगह पहचान है।

मैं काँग्रेस के बहनों और भाइयों से कहना चाहता हूँ कि अब एक-दूसरे का मुँह देखना बंद करें। अब मास पालीटिक्स होनी चाहिए, जनता की राजनीति। छोटे-छोटे टुकड़ों में गुट बना कर, अपना वर्चस्व बना कर, अधिकारियों पर दवाव डाल कर मंत्री और मुख्यमंत्री पर दवाब डाल कर अब राजनीति नहीं चलने वाली है।

खास तौर से विंध्याचल के विकास की बात, तो कुछ कहना ही मुश्किल है। कहीं भी आप चले जाइए, नाम मात्र की सड़क है, लेकिन उससे बढ़िया चलने का रास्ता तो खेत में है। कम से कम वहाँ खेत से चलेंगे तो गड्ढे तो नहीं मिलेंगे। किसान उसको हल चला कर बराबर कर देते हैं। यहाँ से जो पैसा जाता है, सड़क के लिए, वो पता नहीं किसकी जेब में जाता है और गड्ढे ऐसे होते हैं, कि आदमी चला जाए, पता न चले। सिंचाई की योजनाएँ अपना दुखड़ा रो रही हैं। नौजवान बेरोजगारों की कतार लम्बी बढ़ती चली जा रही है। बाण सागर की योजना, जो समूचे विन्ध्य को एक हरा भरा अंचल के रूप में बना देगा, आज सिसकियाँ ले रहा है। सबके लिए पैसा मिलता है। इसके लिए पैसा नहीं है और जहाँ पैसा लेने की बात आएगी। वहाँ चिट्ठियाँ लिख कर संतोष कर लिया जाएगा।

आप सब लोगों ने आज यहाँ आने की कृपा की। मैं रास्ते भर सोच रहा था कि सब लोग रास्ते में रोक रहे है, रोका जा रहे है और वहाँ मैं क्या कहूँ। मैं इसे महत्वपूर्ण नहीं मानता कि कोई संघर्ष कर रहा है। कोई अपनी बात कह रहा है। मेरा तो जीवन ही ऐसा हो गया। सुमन जी की पंक्तियों में—

संघर्ष पथ पर चल पड़ो,

विजय भी पराजय भी,
यह भी सही, वह भी सही॥

पहली बात तो यह है कि ये जमीन, ये पानी, ये हवा इस अंचल की, ये हम सबकी है, न ठाकुर की है, न ब्राह्मण की है, न कुर्मी की है, न हरिजन की है, न आदिवासी की है। इसके हम सब हकदार हैं और दूसरी बात ये कहना चाहता हूँ, यदि अपनी जन्म भूमि को सुंदर, सुखद और उन्नतशील बनाना है, तो ये जाति-पाँति की जो लकीरें हैं, इसको भूलने की कोशिश करिए। इसको कम करने की कोशिश करिए। गरीबी इन रेखाओं को नहीं पहचानती है। जलालत इन लकीरों से रुकती नहीं है। उनको हटाने के लिए तो कंधे से कंधा मिला कर संघर्ष करना, कोशिश करना, आगे बढ़ने के प्रयास करना, वही एक मात्र रास्ता है और यदि हम मिल कर ऐसा करेंगे तो विन्ध्य अँचल का वो हाल नहीं रहेगा, जो हम और आप देख रहे हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था— हे विधाता, मेरे भारत को ऐसे दुनिया में ले चल, जहाँ हमारा सिर ऊँचा हो। हम किसी गम से या शर्म से अपना सिर झुकाएँ नहीं। जहाँ सबको बराबर का हक मिले। जहाँ गरीब को राहत और साहस मिले। ऐसे भारत में, ऐसे विश्व में, ऐसी दुनिया में, हे विधाता मेरे भारत को ले चलो।

आज हम सब लोग उसी तरफ बढ़ें। ये संकल्प लेने का समय है। आपकी इस उपस्थिति ने आपके स्नेह और आशीर्वाद ने मुझ अकिंचन को वही प्रेरणा दी है, वही शक्ति दी है, वही साहस दिया है। इसके लिए मैं हृदय से आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। जय हिन्द।

काँग्रेस को मजबूत बनाने के लिए काम करें

4 फरवरी 1997 भोपाल में मुख्यमंत्री निवास पर काँग्रेस विधायक दल की बैठक में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

माननीय उप मुख्यमंत्री यादवजी और हमारे साथी सभी सम्मानीय मंत्रिगण और आदरणीय विधायक बंधु। काफी अर्से के बाद आपके बीच में मुझे आने का अवसर मिला है। और मैं पूरी तरह से इस बात से भिज्ञ हूँ कि यह अवसर आपके दल के नेता श्री दिग्विजय सिंहजी ने मुझे यहाँ आने का दिया है। ताकि आप लोगों से मैं अपनी बात कह सकूँ। जब मैं आपकी बात करता हूँ तो मेरी मान्यता यह है कि वह मेरी अपनी बात नहीं है, वह आप सबकी बात है। यह संभव है उसके कहने का ढँग और कुछ हद तक तो मैं कुछ कहने की कोशिश करूँगा, वह मेरे मत से प्रभावी हो, लेकिन मेरा यह भी मत है कि इतनी बड़ी मान्यता है कि यह बात मेरी नहीं, हम सबकी है। काँग्रेस पार्टी की ओर से इस प्रदेश के लाखों नागरिकों की है। इसी फरवरी माह में आज से 40 वर्ष पूर्व 12 फरवरी 1957 को मैं पहली बार विधायक चुनकर जो पहली विधान सभा नवनिर्मित मध्यप्रदेश में बनी थी उसमें चुनकर आया था। 40 वर्ष का अवसर बहुत लम्बा होता है। मेरे जीवन का तो दो तिहाई भाग है और वैसे भी सार्वजनिक जीवन में भी यह समय थोड़ा नहीं होता।

मध्यप्रदेश जो आज से 40 वर्ष पूर्व था, आज वह प्रदेश इस रूप में नहीं है। भौगोलिक रूप में तो है, लेकिन अन्य हर तरीके से इसकी काया में इसके राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वरूप में कितना मूर्त रूप में परिवर्तन हुआ है। कई ऐसी परिस्थितियाँ जो पहले सार्वजनिक जीवन को प्रभावित नहीं करती थीं, आज वे सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करती हैं। और जब सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करती हैं तो निश्चित ही उसका राजनीतिक फालोआउट

होता है। काँग्रेस पार्टी को उसका पूरी तरह से अंदाज होता है। मैं अपनी बात को बहुत संक्षेप में कहना चाहता हूँ क्योंकि लम्बी बात कभी-कभी हमें मूलधारा से भ्रमित भी कर सकती है। पिछले 40 वर्ष के राजनीतिक उतार-चढ़ाव को बहुत ही नजदीक से मैंने देखा है। केवल देखा ही नहीं है, कई महत्वपूर्ण मोड़ों पर उसमें कुछ न कुछ भाग लेने का अवसर भी मिला है। और इसलिए जो बात मैं आपसे कहूँगा वह मेरे अपने अनुभव और उन्हीं अनुभवों से उत्पन्न मान्यताओं की पृष्ठभूमि में अपनी गतिविधियों से जुड़ा हुआ होगा।

जिस समय इस प्रदेश का गठन हुआ था, स्टेट रिआर्गनाईजेशन कमीशन रिपोर्ट के बाद शायद अभी जो नए विधायक चुनकर आएँ है, उनको इस बात की कल्पना नहीं होगी, जो हमारे बीच में बैठे हैं उनको मालूम है, जब चारो तरफ से राज्यों के पुनर्गठन का काम पूरा हुआ और एक भारत का राजनीतिक मानचित्र स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू को पेश किया गया तो उन्होंने भारत के नक्शे पर देखा। उनकी यह टिप्पणी थी कि अरे यह कौन सा प्रदेश बन गया। और इस टिप्पणी के पीछे जो बात है, वह हमें समझने की जरूरत है क्योंकि वह टिप्पणी तो की गई थी 56 में, सार्थक वह आज भी है।

इस प्रदेश का गठन राजनीतिक रूप से तो एक कहानी कहता है। अलग-अलग जगह से जो भारत के कुछ ऐसे हिस्से थे और जो किसी प्रदेश में नहीं जुड़े उनको इस प्रदेश में जोड़ दिया गया। और इस प्रदेश का गठन हुआ। लेकिन यह भी पंडित जी ने कहा है कि यह तो बहुत बेतुका, बहुत बड़ा, लेकिन असीम सम्भावनाएँ हैं इस नए प्रदेश की। सम्भावनाएँ तो हैं उनके बारे में जिस गहराई से सोचने की जरूरत है, कभी-कभी वह नजरअंदाज हो जाती है कोई तालमेल नहीं है। मुरैना और भिण्ड की परिस्थितियों से संभावनाओं से वहाँ की भौगोलिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से और रायगढ़ और बस्तर में। शायद यही एक प्रदेश है, जहाँ 24 घण्टे लग सकते हैं एक छोर से दूसरे छोर जाने में। लेकिन आज ये परिस्थितियाँ हैं कि जिस चीज का ग्वालियर में अभाव है उस चीज की पूर्ति बस्तर से हो सकती है। कारखाना ग्वालियर में इस्पात का लगेगा लेकिन इस प्रदेश में इस्पात उस कारखाने में उपयोग के लिए आयगा बस्तर से। इन्दौर हमारे प्रदेश की सबसे बड़ी औद्योगिक नगरी है। यही सब चीजें हैं जो इस प्रदेश के भविष्य को बहुत ही उज्जवल बना सकती हैं। और हम में से प्रत्येक को जिस स्थिति में भी है, अपना पहले ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, एक सार्वजनिक सेवक होने के नाते, कि उन संभावनाओं को हम कैसा स्वरूप दे सकें कैसे उसको पूरा कर सकें। ताकि इस प्रदेश में रहने वाले उन लाखों करोड़ों लोगों को एक बेहतर जिन्दगी की ओर बढ़ाने में हम सफल हो सकें।

दूसरी बात है जिसको डेमोक्रेटिक चार्ट हम कहते हैं। डेमोक्रेटिक चार्ट है कि किस प्रकार का यहाँ का सामाजिक ढाँचा है। इस प्रदेश में 80 प्रतिशत लोग वो हैं, जिन्हें हम आदिवासी के रूप में जानते हैं, हरिजन के रूप में जानते हैं, पिछड़े वर्गों के रूप में जानते हैं, समाज के कमजोर वर्गों के रूप में जानते हैं। इस तरह इस प्रदेश में जो कुछ भी करने की कोशिश हुई, उसकी सफलता और असफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उन सभी वर्गों का किस हद तक समन्वय होता है। इस समन्वय को कायम रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी काँग्रेस पार्टी की है। लोग यह भूल जाते हैं कि इस देश के अन्दर उन वंचित वर्गों और पिछड़े वर्गों को सचमुच में उचित स्थान और उचित स्तर अगर दिलाने का प्रयास किसी ने किया है तो वह काँग्रेस पार्टी ने किया है।

पिछले संविधान संशोधन में जो बेकवर्ड क्लासेस को आरक्षण देने के लिए लाया गया इसको पंडित जवाहरलाल ने मूव किया और सारे देश में कई स्थानों पर कई प्रदेशों में इस पर अमल हुआ। यह अलग बात है

कि इस प्रदेश में उस पर अमल काफी देर से हुआ। मैं इसका जिक्र इसलिए करना चाहता हूँ कि अब जो राजनीतिक चुनौतियाँ हमारे आपके सामने हैं, उनके लिए यह जानकारी रखना निहायत जरूरी है। वरना ये चुनौतियाँ ऐसा स्वरूप ग्रहण कर लेगी कि उनका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

तीसरी बात मैं आपसे जो कहना चाहता हूँ, वह इस प्रदेश की आर्थिक स्थिति से संबंधित है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं। और उनमें से भी ज्यादा लोग कृषक मजदूर के रूप में कृषि में सहायक हैं। आँकड़ों की बात तो मैं नहीं कर सकूँगा। लेकिन मोटे तौर से यहाँ के किसानों को और खास तौर से जो बड़े किसान हैं, उनकी संख्या ऊँगलियों पर गिनी जा सकती हैं। लेकिन जो मार्जिनल फारमर हैं और जो भूमिहीन हैं और कृषक मजदूर हैं, जो कृषि के ऊपर चलने वाली हर गतिविधियों के संचालन में सचमुच में जिसका सीधा हाथ है, उनकी परिस्थितियाँ सदैव हमारे सामने रहना चाहिए। हम उनकी परिस्थितियों को अनुकूल बना सकेंगे, हम उनके हितों को मजबूत बना सकेंगे, हम उनके आर्थिक आधार को मजबूत कर सकेंगे तो इस प्रदेश का कृषि क्षेत्र ठीक से चल सकेगा और उनकी उन्नति से देश आगे बढ़ सकेगा।

चौथी बात है हमारे राजनीतिक समीकरण का जब यह प्रदेश बना था, तो मुख्य रूप से चार घटक थे। घटक ही कहते थे उनको और 57 से लेकर 67 तक एक महकमा ही था मध्यप्रदेश शासन का जो इंटीग्रेशन पर काम करता था। कानूनों का इंटीग्रेशन मध्य भारत में, महाकौशल में, छत्तीसगढ़ में और विंध्य प्रदेश में अलग-अलग कानून थे, छोटे-छोटे राज्यों के कानून उनका एकीकरण और उन क़ानूनों के तहत प्रदेश के समूचे ढाँचे को लाने का काम पूरा तो होगा और आज घटक की बात कोई नहीं करता लेकिन अलग-अलग प्रदेश के हिस्सों में जो परिस्थितियाँ हैं। वे आज भी एक अलगाव शब्द तो मैं इस्तेमाल नहीं करूँगा लेकिन आज भी पहचान रखते हैं और हम पार्टी के हैसियत से और प्रशासन के हिसाब से इनको बढ़ावा देने की जरूरत तो नहीं है और न इसको रिअर्गनाईजेशन करके कोई खास बात करने की जरूरत है। लेकिन पूरी तरह से ओझल करके भी हम इस प्रदेश के ढाँचे को मजबूत नहीं कर सकते। पहली बात तो यह है कि काँग्रेस संगठन के द्वारा जो कुछ भी राजनीतिक गतिविधियाँ होना चाहिए, वे राजनीतिक गतिविधियाँ बहुत ही क्षीण पड़ गई हैं। मुझे स्मरण नहीं है आप लोगों को शायद मालूम हो कि पिछले दो-तीन वर्षों में कितने राजनीतिक सम्मेलन इस प्रदेश में काँग्रेस के द्वारा आयोजित हुए मुझे नहीं मालूम, हुए होंगे लेकिन मुझे जानकारी नहीं है। राजनीतिक रूप से पार्टी की प्रक्रिया क्या है। विषयों पर, मुद्दों पर, घटनाओं पर ये सामने जोरदार तरीके से क्यों नहीं आ रही है? क्या पार्टी पूरी तरह से मौन हो गई है? क्या पार्टी के सामने कोई विषय ही नहीं है? कोई समस्या है ही नहीं कि हम दफ्तरों में जायँ और चले आएँ और फिर हम रुचि रखें कि किसको अध्यक्ष बनवा दें किसको उपाध्यक्ष बनवा दें, जिले में बनवा दें, बाहर बनवा दें इससे काँग्रेस नहीं उलझती। ये कैसे हो, यह कोई मेरे कहने की बात नहीं है। आप सब जानते होंगे वह तो हो जायगा। अभी सबको चिंता नहीं है ऐसा कहने की मैं धृष्टता नहीं करना चाहता हूँ।

तीसरी बात है कि ऐसे मुद्दे जो आम लोगों को प्रभावित करते हैं भ्रष्टाचार का हो, प्रशासन के अन्दर का हो, नीतियों के कार्यान्वयन के हो। ये मुद्दे हमें दबाने नहीं चाहिए, सड़क पर नहीं कहना चाहिए, लेकिन दबाना नहीं चाहिए इन पर खुलकर बहस हो, और यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो एक दिन हम उसके अंतिम परिणाम को भी देख लेंगे।

एक दो मुद्दों का जिक्र करता हूँ। पंचायती राज का सवाल है। राजीव जी की कल्पना थी, उनका सपना था।

हम सबको इस बात का गौरव है कि मध्यप्रदेश ने उनके सपने को साकार करने में बहुत सक्रिय भूमिका निभाई। जहाँ पंचायती राज लागू किया। लेकिन पंचायती राज को कानूनन लागू कर देना, एक बात है। और ये पंचायती राज कोई सामान्य कानून नहीं है। यदि आप जरा सी गहराई से देखें तो पता चलेगा कि यह सारी व्यवस्था को बदलने वाली प्रक्रिया थी। जब राजीवजी भाषण करते थे अपनी सभाओं में सब जगह वह गए हैं उन्होंने कहा कि हम दिल्ली से 100 पैसे भेजते हैं और 20 पैसे पहुँचते हैं, यह 80 पैसे कहाँ चले जाते हैं। वह केवल मजाक नहीं करते थे। वह उस व्यवस्था पर एक बहुत तीखी टिप्पणी थी जो व्यवस्था, इस 80 पैसे को खा जाती थी। मैं मुख्यमंत्री जी से विशेष आग्रह करूँगा कि एक इंटेंसिव डिस्कशन जिसे कहते हैं, हिन्दी का शब्द मुझे याद नहीं आ रहा है, गहन विचार विमर्श हो और केवल प्रचार के लिए न हो। आप विधायक दल में, अलग-अलग जिलों में, काँग्रेस के प्रतिनिधियों को, विधायकों को सांसदों को बिठाकर बात करें कि इसमें क्या हो सकता है। लक्ष्य में यह बात की गई है हम इससे इतने दूर कैसे होते चले गए? फिर प्रश्न है प्रशासनिक व्यवस्था का? प्रशासनिक व्यवस्था की अगर तुलना की जाय तो हम तुलना कर सकते हैं एक घोड़े से। अच्छे घोड़े में जो लंबी दौड़ कर सकता है। कई अवरोधों को कूद कर पार कर सकता है। लेकिन वह तभी करेगा जब उसको चलाने वाला ठीक उसी तरह से चलाए। महात्मा गाँधी जी ने कई सुधार किए। उन सुधारों के महत्व को मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन प्रशासन तंत्र आज प्रदेश का इन अंकुशों से परे होता जा रहा है तो प्रजातंत्र में बने रहना नितांत आवश्यक है। वरना स्वेच्छचारिता की सीमा तक अगर वह प्रशासन पहुँच जायगा तो बात उसी से बनती है और उसी से बिगड़ती है।

मेरा तात्पर्य है कि जिनके हाथ में अधिकार है, मंत्री हैं, मुख्यमंत्री हैं, अन्य जो चुने हुए लोग हैं, जिनके हाथ में अधिकार है, उनको सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उस अधिकार का किस तरह से उपयोग कर रहे हैं। यह कोई मामूली बात नहीं है। केवल इसलिए कि आप किसी ओहदे पर हैं, उस अधिकार को जिस तरह चाहे उस तरह से बरतें। ये जनता को कभी मंजूर नहीं होगा और जब इसके खिलाफ कोई प्रतिक्रिया होगी तो केवल आपके बारे में नहीं होगी, वह समूचे दल के बारे में होगी। समूचे ढाँचे के बारे में होगी। उस प्रतिक्रिया से नुकसान जो होगा। आप क्षमा करेंगे यदि मेरी बातों ने किसी की भावना को आहत किया हो, ठेस पहुँचाया हो तो मैं माफी चाहता हूँ। लेकिन अब मेरी उम्र भी और मेरी मन:स्थिति भी केवल लोगों को खुश करने के लिए बाध्य करने की खत्म हो गई। यह किसी को पसंद आए न पसंद आए। इसलिए मुझे कुछ और भुगतना पड़े जो कुछ होना होगा, होगा जो मेरा काम है वह मैं करने में पीछे नहीं रहूँगा। इसलिए मैंने वे सारी बातें आपसे कही। इसको सुधारने में इसको सही रास्ते पर लाने में, मैं तो साधारण व्यक्ति हूँ, लेकिन चाहे कुछ भी करने में मैं पीछे नहीं रहूँगा लेकिन इसको बरकरार रखकर इसको बर्दाशत करने की स्थिति में अब मैं बिल्कुल नहीं हूँ। और अपने लिए नहीं इस प्रदेश के लिए, काँग्रेस के लिए, समूचे देश के लिए आप सभी समझदार और बुद्धिमान लोग हैं। आज सारे देश में एक ही केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति है, वह काँग्रेस पार्टी है। आज हम कमजोर हुए हैं, लेकिन समाप्त नहीं हुए हैं और न समाप्त होंगे। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करेगा कि हममें से प्रत्येक जितने भी हैं, उसकी थोड़ी और बड़ी जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को निभाने में संकोच नहीं करें। यही आम रास्ता है और यही मेरी आपसे गुजारिश है। आप सभी लोगों के बीच में आकर स्मृतियाँ भी हैं, अनुभव भी है, भविष्य के लिए बहुत बड़ी आशाएँ भी हैं, इन्हीं शब्दों के साथ मैं मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने आप सबके बीच में मुझे दो शब्द कहने का अवसर दिया। जय हिन्द।

छोटे समाचार पत्र जन समस्याओं को मुखरित करते हैं

9 अक्टूबर 1997 भोपाल में हेराल्ड द्वारा आयोजित चर्चा में भाषण के अंश इस प्रकार हैं —

माननीय ललित श्रीवास्तवजी और माननीय राजेन्द्र मिश्राजी, हेराल्ड के संपादक महोदय और यहाँ पर आए हुए सभी अतिथिगण, एक अनुभवी पत्रकार की हैसियत से जो कुछ श्री रमेशशर्मा जी ने यहाँ बताया है उसमें मैं कोई नई चीज तो नहीं जोड़ सकता। इतना मैं जरूर मानता हूँ कि लघु पत्र जो होता है, उनका लगाव सामान्य रूप से जन समस्याओं से कहीं ज्यादा रहता है बजाय बड़े समाचार पत्रों के, बड़े समाचार-पत्रों के जो मालिक हैं, उनके व्यापक हितों को ध्यान में रखकर समाचार आते हैं, दृष्टिकोण बनते हैं और फिर कभी-कभी जब इस तरह की खबरों की बहुत ही कमी हो जाती है, तब कहीं स्थानीय जन समस्याओं की ओर नजर जाती हैं। प्रजातंत्र में पहली सीढ़ी है जन समस्याओं का आभास और दूसरी सीढ़ी है उन जन समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास। तीसरी सीढ़ी आप चाहें तो कह सकते हैं उन समस्याओं के समाधान की बात उत्पन्न हुई, परिस्थितियों का विश्लेषण, छोटे समाचार पत्र जो दूर-दूर तक फैले हुए अंचल हैं, किसी भी प्रदेश के वहाँ की जन समस्याओं का आभास दिलाने में वे कहीं ज्यादा सहायक, सार्थक सिद्ध होते हैं। बजाय किसी बड़े समाचार पत्र के और जब आभास होता है, और उन समस्याओं के समाधान के लिए जो प्रयास होते हैं। वही मूल रूप से प्रजातांत्रिक तरीके से, हम राजनीति के क्षेत्र में सही कदम या कार्रवाई या गतिविधि मान सकते हैं। इसलिए उन समाचार-पत्रों को प्रोत्साहन देना एक तरह से प्रजातंत्र की जड़ों में यदि उसकी तुलना की जा सके तो उनमें खाद डालने का काम होता है। वैसे शिकायत लोगों की रहती है, क्योंकि उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो संतुलन कायम रखने में असमर्थ हैं और जिन्हें जल्द से जल्द पैसे कमाने की रुचि हो जाती है। लेकिन सामान्य रूप से वही छोटे समाचार पत्र निरंतर छपते हैं, जो किसी न किसी तरीके से जनमानस की समस्याओं से जुड़े रहते हैं।

इसलिए मैं समझता हूँ कि आज के समाचार जगत में जो एक अद्वितीय विकास हुआ है, जिसको कहते हैं कि ज्ञान का क्षितिज इतना फैला दिया है, कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज उस विस्तृत क्षितिज में जो निरंतर विकसित ही होते चला जा रहा है, छोटे समाचार-पत्रों की भूमिका बनी रहे, इसकी कुछ न कुछ जिम्मेदारी प्रजातंत्र में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को उठानी पड़ेगी, चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग हों, चाहे वह प्रशासन में बैठे हुए लोग हों। इस दिशा में कुछ ठोस पहल होना चाहिए ताकि जो उनकी समस्याएँ हैं, जो उनकी आर्थिक तंगी है, उससे ये थोड़ी सी राहत महसूस कर सकें। और फिर अपनी जो जिम्मेदारी है प्रजातंत्र के हित में उस जिम्मेदारी को निभा सकें। मुझे विश्वास है कि इस दिशा में जो सोचने समझने वाले लोग हैं, वह सोचेंगे। क्रियान्वयन करने की भी कोशिश करेंगे। और खास तौर से जो शासन का दृष्टिकोण है वह दृष्टिकोण सहानुभूति का दृष्टिकोण होना चाहिए, प्रोत्साहन का दृष्टिकोण होना चाहिए न कि स्वेच्छाचारिता से उनके खिलाफ कार्रवाई करने का। मैं आशा करता हूँ कि ये परिचर्चा सही परिप्रेक्ष्य में लघु समाचार-पत्रों को प्रजातंत्र में उपयोग को रेखांकित करेगी और आगे चलकर उनको सहयोग देकर उन्हें अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए हम सब कुछ न कुछ उनकी सहायता कर सकेंगे। आयोजकों ने यह आयोजन करके एक महत्वपूर्ण पहलू पर लोगों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया, मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ और हेराल्ड पत्र जो निश्चित रूप से जैसी उनकी शुरू में परिकल्पना थी और संकल्प था, उसके अनुरूप इस पत्र को चला रहे हैं, मैं उन्हें बधाई देता हूँ और उनकी निरंतर प्रगति के लिए उन्हें शुभ कामना देता हूँ। जय हिन्द।

प्रदेश में सहकारिता आन्दोलन सशक्त

4 नवम्बर 1997 मध्यप्रदेश एपेक्स बैंक द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

आदरणीय मुख्यमंत्री जी, भाई सुभाष यादव जी सहकारिता आंदोलन से जुड़े हुए मंच पर विराजे हुए सभी आदरणीय बंधुओ और इस आयोजन में पधारे हुए सभी बंधुओं, सम्मानित वित्तमंत्री मुशरान साहब उनको अलग से इसलिए संबोधित कर रहा हूँ कि बगैर उनके इशारे के कुछ होगा नहीं। और चूँकि वे स्वयं सहकारिता आंदोलन से जुड़े है, काफी हद तक इस प्रदेश में सहकारिता की सफलता का श्रेय भी उनको जाता है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मुख्यमंत्री जी ने सही परिभाषा सहकारिता आंदोलन के संबंध में इस प्रदेश में की है। यह एक ऐसा परिवार है जो केवल अपने परिवार की फिक्र नहीं करता। इस परिवार की सदस्यता का मापदण्ड ही यही है कि जो समाज को परिवार के समान साथ में लेकर चलने की क्षमता रखता हो। वह सहकारिता के इस परिवार में शामिल होता है। और मध्यप्रदेश में इसकी जड़ें बहुत गहरी नहीं हैं, क्योंकि यहाँ इसका बहुत अभाव था। इस प्रकार के किसी संगठन का जो समाज के गरीब से गरीब व्यक्ति को भी, उसकी कठिनाइयों को, आवश्यकताओं को, आशाओं और निराशाओं को देख सकें और उसमें कुछ तब्दीली लाने की कोशिश कर सकें। ये है राज्य सहकारी आंदोलन की मध्यप्रदेश में सफलता? यह दुर्भाग्य की बात है कि इस सफलता को कुछ राजनैतिक पार्टियों ने अपने लिए खतरा महसूस किया, ऐसा होना नहीं चाहिए क्योंकि जो कुछ इसमें घटित हुआ, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सहकारिता के मूल उद्देश्य को न समझते हुए केवल इसका राजनीतिक दोहन होने की जो कोशिश हो रही है, उसकी वजह से इस आंदोलन को इस प्रदेश में पूरी ताकत लगाना पड़ी। लेकिन बधाई के पात्र हैं सुभाष भाई से लेकर प्रदेश के सब जितने सहकारिता के क्षेत्र में काम करने वाले कर्मठ लोग थे, कि अनेक झंझावतों के बीच में उन्होंने मशाल गिरने नहीं दी। और ये कारण है कि आज फिर उसी सशक्त स्वरूप से प्रदेश के अन्दर सहकारी आंदोलन खड़ा हो गया है। और मुख्यमंत्री जी ने इस आंदोलन को जन सेवा के क्षेत्र में जो नए अवसर दिए हैं, खासकर महिलाओं के लिए वह स्तुत्य हैं। और मुझे पूरी आशा है कि मध्यप्रदेश में आने वाली किन्हीं भी परिस्थितियों में सहकारी आंदोलन को कोई खतरा पैदा नहीं कर सकेगा। इस प्रकार से आपको इसकी संरचना करना चाहिए। एक और खतरे की ओर मैं संकेत जरूर करना चाहता हूँ क्योंकि यह खतरा किसी राजनैतिक दल की ओर से नहीं है। उसका पहला उदाहरण हमें देखने को मिला महाराष्ट्र में। हम सब जानते है कि महाराष्ट्र में सहकारी आंदोलन बहुत मजबूत आंदोलन है, पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय से जहाँ तक मुझे याद है 1957-58 से उसको ये स्वरूप दिया जाने लगा और आज पूरे महाराष्ट्र में, चाहे वह शक्कर के कारखाने हो, सूत मिल हो, आपके दुग्ध उत्पादन का क्षेत्र हो, एक बहुत मजबूत ढाँचा वहाँ खड़ा हो गया है। कुछ दिनों से ऐसे उदाहरण देखने को मिले हैं जहाँ पूंजी के निवेश को लेकर और चूँकि सहकारिता में ये पूँजी इकट्ठी होती है और करोड़ों में होती है। किसी संस्थागत फायनेंशियल इंस्टीट्यूशन से नहीं ली जाती है, एक-एक व्यक्ति उसमें कंट्रीब्यूट करता है, तो कुछ बड़ी-बड़ी कंपनियों ने ऐसा समझा कि इस पूँजी पर किसी प्रकार हमारा कब्जा हो जाय तो उस पूँजी का उपयोग, हम सहकारिता के बाहर जाकर अन्य उद्योगों में कर सकते हैं।

सहकारी क्षेत्र जो है वह तो आम आदमी का है, किसान का है, उपभोक्ता का है। इसमें उद्योगपति हस्तक्षेप करना चाहते थे पर उनको इस प्रयास को सरकार शायद नहीं रोक सकती थी। लेकिन इस प्रयास को सहकारिता आंदोलन के अन्दर काम करने वाले लोगों ने जरूर रोक दिया। और ऐसे जो प्रयास हुए उनको बिल्कुल नकारा नहीं, बल्कि सहकारी आंदोलन के अन्दर से जिन लोगों ने इसमें कोशिश की, मदद करने की वह चाहे जितने बड़े रहे हों, उनको सहकारी

आंदोलन में चुनाव में हरा दिया। क्योंकि यह तो प्रजातांत्रिक संस्था है। इस खतरे से हमें मध्यप्रदेश में भी सतर्क रहना चाहिए। यहाँ खतरा इसलिए पैदा नहीं होगा, मुझे पूरी आशा है क्योंकि सरकार भी शुद्ध रूप से सहकारिता के उद्देश्यों से सहमत है। लेकिन इस खतरे से अनभिज्ञ होना ही हमारे लिए नुकसानदेह हो सकता है। अब जो नया कहना चाहिए सहकारिता के लिए, क्षेत्र दिखता है, वह है समाज के उन लोगों के लिए जिनको इसके अन्दर जोड़ने का जिनके पास कुछ भी पूँजी लगाने के लिए नहीं है, क्योंकि जब तक कोई पूँजी लगाएगा नहीं, तब तक आपके इस आंदोलन का अंग बन नहीं सकता। अब कोई न कोई रास्ता निकालना चाहिए कि जो बिल्कुल ही निराश्रित है या गरीबी की रेखा से नीचे निर्वाह करते हैं या ऐसा समाज का अंग है जो किसी भी प्रकार से अपने पैरों पर खड़े होने में असमर्थ हैं, क्या हम कोई तरीका निकाल सकते हैं कि सहकारिता के आंदोलन में उनको भी किसी न किसी प्रकार की भागीदारी मिले। और धीरे-धीरे वे भी अपने पैरों पर खड़े हो सकें। मैं इसके लिए कोई सुझाव नहीं दे सकता हूँ केवल यह कह सकता हूँ कि इस दिशा में सोचने की जरूरत है। जिससे मध्यप्रदेश की सरकार और आप सब लोग इतने दिनों से इसमें लगे है, कोई न कोई विकल्प निकालकर इस दिशा में आगे बढें। आप सब साथियों को यहाँ इकट्ठा देखकर मेरा भी मनोबल बढ़ा है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि सहकारिता का आंदोलन जितना ही मजबूत मध्यप्रदेश में होगा, उतना ही निहित स्वार्थियों को इस प्रदेश में स्थान बनाने में दिक्कत हो जायगी। और इसलिए आप सब इस आंदोलन को मजबूत रखें, एकता बनाकर रखें और ज्यादा से ज्यादा आपसी परामर्श और आपसी सहयोग से काम लें। यही इसका मूल मंत्र है। सहकारिता और सहयोग केवल शब्द नहीं है। एक जीवन पद्धति है। वह पद्धति आपकी बने यही मेरी मंगल कामना है। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

हिन्दुस्तान एक गरीब देश है

जुलाई 1997 मेरठ में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय मौलाना असद नकवी साहब, आदरणीय बहन श्रीमती शीला दीक्षित, और यहाँ पर बिराजे हुए सभी आदरणीय भाइयों। अभी सियासत दामों में थी, और समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने भी आपके सामने बहुत सी बातें रखी हैं। मैं किसी को दोहराना नहीं चाहता और किसी भी ख्याल से हुज्जत भी नहीं करना चाहता। क्योंकि मैं समझता हूँ कि आज के सम्मेलन का मकसद बिल्कुल निराला है। मेरी नजर में और वह यह है कि हिन्दुस्तान के आज के हालात में हम किस प्रकार से लोगों के हक और हकूक जो एक शहरी की हैसियत से उनके हैं, इस देश में उनको कैसे बरकरार रखें? कैसे उनको आगे बढ़ाएँ? और कैसे उनकी रक्षा करें? लेकिन शहरी के हक और हकूक सियासत से शुरू नहीं होते। वह हक और हकूक उसको मिले हैं। इस विशाल देश के नागरिक होने की हैसियत से, हमारे संविधान के माध्यम से, वह कोई फर्क नहीं देखता। इन्सानों के बीच में चाहे वह किसी धर्म को मानने वाले हों, चाहे जो भाषा बोलने वाले लोग हों, हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में रहने वाले लोग हों, वह सब बराबर के नागरिक है। और शहरी भी है। देश के इस बुनियादी वसूल के लिए, बुनियाद के लिए हमारे देश के लिए और यदि हम उससे कहीं भटके हैं, या हम नहीं उससे दूर हुए हैं या कहीं गफलत में पड़ कर हमने कुछ और रास्ता अपनाया है। वही जड़ है हमारी सब परेशानियों की। आज न तो हिन्दुस्तान में इस्लाम खतरे में है, न हिन्दुत्व खतरे में है, न सिख धर्म खतरे में, न

क्रिश्चियन धर्म खतरे में है, अगर आज हिन्दुस्तान में खतरे में है, तो मेरी समझ में इन्सान खतरे में है। और उस इन्सान को ही अगर हम अपना केन्द्रीय बिन्दु बनाकर चलें तो बहुत से जो मिसायल आज अलग-अलग धर्मों में बाँटकर देखे जा रहे है, उनका असली नक्शा हमारे सामने आ जायेगा।

देश को बनाने के लिए हमें इन बुनियादी बातों को सोचना चाहिए। किसी कौम को आगे बढ़ाने के लिए तालीम की जरूरत है, कैसे इसको किया जाए, ये सवाल है, क्योंकि देखिए एक बात बहुत साफ है जो शोषण करते हैं, जो दूसरे की कमाई पर जिन्दा रहते है, उनका कोई न धर्म होता है, न उनकी कोई जाति होती, न उनका कोई उसूल होता है, वे तो जो चाहते है, वह करना किस तरह से ज्यादा अच्छी तरह से हो सकता है, वही तरीके से करते हैं। और जो परेशान होता है। जो केवल मेहनत करके मुफ्लिस बना रहता है उसकी भी कोई जात नहीं, उसका भी कोई धर्म नहीं, उसकी कोई भाषा नहीं। वह सब इन्सान है, जो उसके शिकार होते हैं, और इसलिए हमें हिन्दुस्तान के लिए इन मौलिक बातों पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिए और इस दिशा में एक जागृति पैदा करने की जरूरत है। लोगों के बीच में एक भावना पैदा करने की जरूरत है, ताकि हम उस दिशा में लोगों का सहयोग ले सकें। लोगों को प्रोत्साहित कर सकें और जहाँ जिस चीज की कमी है उस कमी को पूरा कर सकें। तालीम का सवाल है। मदरसे की बात यहाँ कही गई। मैं बिल्कुल इस बात से इत्तेफाक करता हूँ कि मदरसों में जो भी तालीम अभी दी जा रही है, वह निश्चित रूप से जारी रहनी चाहिए। लेकिन साथ ही साथ उसी मदरसे के माध्यम से और तालीम दी जानी चाहिए। हिन्दी की है, अंग्रेजी की है, तकनीकी चीजें हैं। मेथेमेटिक्स की है। जो की आज जरूरत है, जिसकी वजह से आदमी आगे बढ़ता है और उसके लिए एक योजना बनी थी उसको काफी लोगों ने पसंद भी किया। पहले तो थोड़ा इसका विरोध हुआ लोगों ने समझा, जैसे मदरसा सिस्टम को उखाड़ रहे हैं और दूसरी चीज शुरू कर रहे हैं, लेकिन लोगों को जब यह विश्वास हो गया कि मदरसे बने रहेंगे। उसमें कोई तब्दीली नहीं होगी, केवल उसी मौके का फायदा उठाकर और तरह की भी तालीम दी जाएगी। और उसको लोग मंजूर कर दें, काफी बड़े पैमाने पर तकनीकी सवाल है, शिक्षा के निश्चित रूप से इसमें जो अकलीयत है। देश की, उनकी शिक्षा के जितने भी सवाल हैं उन सवालों को बारीकी से देखकर और वह सब आधार पैदा किए जाने चाहिए, ताकि उनकी तालीम में जो अड़चनें हैं वह अडचनें दूर हो सकें। सुप्रीम कोर्ट में एक केस है, क्योंकि अदालत की बात है इसलिए मैं ज्यादा कुछ नहीं कह सकता। लेकिन मुझे याद है कि इस मामले में शिक्षा विभाग की तरफ से जो दलील पेश की गई है, उसकी बुनियाद ये है कि संविधान में अकलीयत को जो अधिकार दिए गए हैं, जो उनको सुविधाएँ दी गई हैं, उनमें किसी भी प्रकार कोई कमी नहीं आना चाहिए। तो यह बातें ऐसी है जिनके लिए तो हमें जद्दो-जहद करनी है। अब लोगों को खतरा केवल बदमाशों से, गुन्डों से हो, ऐसा नहीं है। कई जगह यह देखा गया है कि एडमिनिस्ट्रेशन का जो अंग है, पुलिस हो या और कोई हो उससे भी वह परेशान है। इसी प्रकार का उनके ऊपर आतंक है। जोर जबरदस्ती है। आखिर बम्बई में टाडा में क्या हुआ था। ठीक है, आज टाडा बन्द कर दिया गया है, लेकिन असली मुद्दा तो यह है कि जिन पुलिस के लोगों ने या हुक्मरानों ने जानबूझकर बिल्कुल इन्नोसेंट लोगों जो किसी प्रकार का कसूर उन्होंने नहीं किया, उनको बंद कर दिया टाडा में तथा उनको परेशान किया। उनको प्रताड़ित किया। उनके घरों को बर्बाद किया गया। उनके बारे में क्या हो रहा है? जाँच होकर उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। इस तरह के जो दबाव है उनको देखने की जरूरत है। ये भी सियासत का अंग है और सरकारों को चाहे वो जिसकी भी सरकार हो, इस तरह की चीजों पर ध्यान देकर व्यक्ति को, शहरी को अपनी इज्जत और उसकी सुरक्षा को बरकरार रखने के लिए कोशिश करनी चाहिए।

सेक्युलरिज्म की जहाँ तक बात है, मै ये कह सकता हूँ कि चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान हो, चाहे सिख हो,

चाहे ईसाई हो, या किसी धर्म के मानने वाला व्यक्ति क्यों न हो उनमें से 90 प्रतिशत लोग सैक्यूलर हैं। ये मेरी मान्यता है। अगर हम 90 प्रतिशत सेक्यूलर नहीं होते तो आज तक तो हिन्दुस्तान जलकर खाक हो गया होता। आखिर हिन्दुस्तान में जमूरियत है। जमूरियत किसी के सहारे नहीं चलती है। जमूरियत हर इन्सान के अपने दिल और दिमाग से चलती है। अगर उसका दिल और दिमाग सही है तो फैसला सही करेगा, चाहे जिसके पक्ष में करे और चाहे जिसके विपक्ष में करे बहुमत जिसके पक्ष में करेगा वो आपका फैसला उसके पक्ष में होगा। आज का समय देश उस नाजुक दौर से गुजर रहा है और इस नाजुक दौर से गुजरते हुए हम और आप जो आज इस पीढ़ी के हैं कुछ न कुछ जिम्मेदारी रखते है। हमको आपको अपने दिलों पर हाथ रखकर ये सोचना चाहिए कि हम अपनी जिम्मेदारी को किस तरह से निभाएँ। हम अपनी गिनती इतिहास में उस पीढ़ी में लगाएँ जिसने देश को बर्बाद किया कि उसमें लगाएँ कि जिसने देश के लिए कुर्बानी भले ही न दी हो लेकिन देश को बर्बाद होने नहीं दिया। आज ये तकाजा है हमसे आपसे सारे मुल्क से उस तकाजे को निभाने के लिए ये बैठक, आपकी ये सभा निश्चित रूप से एक दिशा देगी। इस आशा विश्वास के साथ मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकार वार्ता

Defeat of Congress in election

12 फरवरी 1997 ई.टी.वी. के विशेष संवाददाता श्री पी.वी. थामस को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : .... After a long way of ten years Bofors name are being disposed by the government what do you think, what are the implications of this humiliation, special when I take name of Qott rochi to Sonia Gandhi..

Shri Arjun Singh: As far as I know he has no relation with Sonia Gandhi except that he is an Italian and more important thing is that all this alabloo that was created in the last ten years was being focused on Rajiv Gandhi, his family members, and all the allegations that were made, after all they were targeting him. .... with the release of the names to day, it is absolutely clear .... not instead of focusing of the reality that has emerged it has cleared the names .... whatever else....

Question : Qott rochi was very much close to Mr. Gandhi.

Shri Arjun Singh: There are many people who are close to some people. I don't know how close he was. Even assuming that he was close, how does that led to the instance that Rajivji was hang in what ever Qot rochi did.

Question : You mean that Qot rochis, name was nothing to do with Rajiv Gandhi ....

Shri Arjun Singh: Absolutely, I mean unless they say that this is the proof on which they can allege anything against, but only just because he knew Qot rochi or Qot rochi knew him did not led to any imprince....

Question : What about the congress politics going to be effected by this?

Shri Arjun Singh: I think one of the great handicap that he thought the congress was facing because that the Bofors matters hanging by would no longer be there. So it will be, to be advantageous of the congress party.

Question : How do you look at this total out of context in Punjab election?

Shri Arjun Singh: Well I think, there is a back ground to it, defeat of this dimension is obviously something you can not be trifile and in the true spirit of accountability the congress President Kesriji has also taken up moral responsibility. Something which Mr. Narsimha Rao never did. Defeat after defeat somebody else was responsible, not he. even the latest debacle in the Parliament election, he did not utter one word that he will be responsible for this or he would not be responsible for it. Fact is that in last four years, since the last elections took place in Punjab, there was total neglect of the state everyone was so enthused just because of very very sander of votes we got a majority in the Assembly. Now the percentage of voting as known was very very small. There was a reason for it. But that did not give the new Assembly any representative character as such. O.K., technically it was alright. But after that all that was required to be done in Punjab, according to the promises time and again made by the Prime Minister, nothing was done. No economic package, the Rajiv Longowal accord was only referred, in one of the thing, and one of the thing that is desirable no concert step taken and unbided corruption has totally eroded the total base of the party. The real reason is what happened in the last four years. But it has happened to day.

Question : Do you agree with Shri Kesariji's stand for change in leadership?

Shri Arjun singh: You see, Kesriji came to very correct conclusion that there was a need for change of leadership. Now this was on the cards, since May or even earlier to that. But since May there has been scolds of MLAs from Punjab complaining him, days being fixed the decision will be taken after ten days, five days, ultimately no decision. Then all these things eventually have impact on the people.

Question: Bye election also caused... the impact.

Shri Arjun Singh: Bye election, by themselves I don't give them that relevance in the graph of a political party. But, yes bye elections they less, for example we, in the process of loosing Chhindwara, I don't know whether the final tally has come, that is a certain set back for the congress in Madhya Pradesh. And you will have to learn correct lesson of this. And you see that we unitedly strengthen the congress, so that the Assembly poll come next year, we are able to keep the congress in majority.

Question: What are the reasons for defeat in Chhindwara?

Shri Aujun Singh: See one was, which is a very common natural phenomena and incumbent for long time the Kamalnath was there for 17 years, he had very active participation in the development activities of this constituency, but as you know these things have a effect in the mind of people that we had somebody for very long let us see, for a change. And what I also felt was that the resignation of his wife so soon after she was elected to Parliament did not hold on well with the electorate, I felt so.

Question: The emerging political scenario seems to coalition of parties and regional parties are emerging as such powerful it is in differed states, Kerla, Tamil Nadu, Punjab, so what it indicates?

Shri Arjun Singh: Well, apprently this would indicate strengthening of the regional parties, and strengthening of the regional parties would also indirectly imply that there has to be a coalition of different parties. For some time perhaps this will be there, but there is also very distinct indications that these regional political forces are not increasing their vote bank. They are stable where ever they are and foresee, it may be right or wrong, that in the days to come atleast for the national level politics the people want the government which can make its return in the entire country, states is alright, and that is where the congress has an opportunity to reorder itself and take the correct steps in that direction and whenever the elections are held present that picture to the people.

Question: BJP seems to be emerging gain of force because in the current elections in Punjab also it has increased the strength and bye elections also. So do you think the BJP is instance to coming to power sooner?

Shri Arjun Singh: I don't think so, because BJP basically, bases its entire political philosophy on a compartmentalised view of the Indian politics. It can not become the comprehensive in your Indian politics. And therefore, it will go to a certain extent but I don't see the party becoming the majority party in Parliament.

Question: How do you evaluate the performance of previous government...

Shri Arjun Singh: Well I think, by and large the government has been functioning well and not been able to make any mark that way. But as a functional government it is going alone and Mr. Deogauda, I feel is trying to make a sincere bid, but there are some inherent contradictions there and I don't know how they will be resolved or sorted out.

Question: Mr. Singh, see this police seize the diary of Martin... which said since Quattrochi has very close relations with Rajiva Gandhi is becoming difficult to... the investigating agency feel that it is with regard R' which stands for Rajiva and for Quattrochi. Now that the name of Quattrochi is very much has been disclosed by the CBI don't you think the needle of suspicion if I correct say goes its face

to the 10-Janpath.

Shri Arjun Singh: You see, that is the preconceive notion which everyone wanted to prove. Any entry or whatever is being said or not said is not material, the charge was whether was a recipient of any... that is Shri Rajiva Gandhi, or any member of his family . It is now conclusively proved from the document that has been released that they were not. So that is where the matter stands? why try to bring something, which in facts denied.

Question: But 120-say, if he someway or other linked with another beneficiary.

Shri Arjun Singh: That will have to be on the proof, it can not be... if there is some proof than come forward.

Question: Quattrochi was a relation of Rajiva Gandhi...

Shri Arjun Singh: I have already answered that yes he was, many people are frequental but that does not mean that I am supporting what they are doing. Or I am guilty for what somebody else is doing.

Question: Don't you think, this will change public perfection about the Gandhi family?

Shri Arjun Singh: On the contrary all the ten years of hounding I can use more a word, first they hounded him in office, then some people who were not satisfied and they hounded into death. Literally assassinated. The conspiracy still to unwell. I think it will not give any kind of perception to harm the Gandhi family, and that is my view. O.K. thank you.

सिद्धान्तों के बिना काँग्रेस की पहचान नहीं

5 जून 1997 मुम्बई में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आज मेरा यहाँ पर आने का मकसद अखिल भारतीय काँग्रेस के अध्यक्ष के चुनाव के सिलसिले में है। मैं महाराष्ट्र से काँग्रेस के साथियों से जो डेलीगेट्स चुने गए हैं, उनसे और अपने नेताओं से बातचीत करने आया हूँ। उनसे अपनी तरफ से निवेदन करने आया हूँ और वह निवेदन यह है कि इस चुनाव में श्री सीतारामजी केसरी के पक्ष में अपना मतदान करें। ये मैंने उनसे निवेदन किया है। अभी बाद में उन सब लोगों से मुलाकातें होंगी। पहले मैं आपसे बात कर लूँ। दूसरी बात मैं बहुत साफ कहना चाहता हूँ कि सीतारामजी केसरी का यह विशेष निर्देश है, कि ये चुनाव पार्टी के संगठन का चुनाव है और इसमें किसी भी प्रकार से व्यक्तिगत कोई मुद्दा उठाकर किसी की आलोचना नहीं होनी चाहिए और मेरा ऐसा करने का कतई इरादा नहीं है। लेकिन ये बात भी अपनी जगह सही है कि ये चुनाव किसी इन्वेस्टमेंट कम्पनी के चेयरमेन का चुनाव नहीं है, जहाँ केवल इतना ही देखना पर्याप्त होता है कि कौन ज्यादा से ज्यादा पैसा इन्वेस्टमेंट के लिए ला सकता है और ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमा सकता है। पर ये चुनाव अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का हो रहा है। यह वह पद है जिस पर इस देश की महान विभूतियाँ बैठ चुकी हैं। इसलिए पिछले 110 साल के क्रांतिकारी और रोमांचकारी इतिहास... इससे जुड़ा हुआ है। और ये वही पद है जिस पद के साथ काँग्रेस की जो... देश की मूल जो मान्यताएँ और सिद्धांत जुड़े हुए है, जिनके लिए स्वतंत्रता संग्राम

के दौरान हजारों-हजारों लोगों ने बलिदान दिया तथा फाँसी के तख्ते पर गए और तो और उन्हीं मूल्यों और सिद्धांतों के लिये राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का शरीर मिट्टी में मिल गया और आजादी के बाद उसी पद को सुशोभित करने वाले दो महान नेताओं ने अपना बलिदान दिया। अध्यक्ष पद पर जो कोई बैठना चाहता है, वह स्वयं को समझता होगा कि वही इस पद के लिए वही उपयुक्त है। राजीव गाँधी की हत्या 21 मई को आम चुनाव में काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में प्रचार करते हुए की गई। वे साधारण नागरिक के रूप में वहाँ किसी सभा में नहीं गए थे। प्रधान मंत्री के रूप में नहीं पहुँचे थे। वे काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में प्रचार करने एक कन्स्टीट्यूएन्सी में, श्री पेरम्बदूर में गए थे। तो काँग्रेस अध्यक्ष की हत्या हो जाए और काँग्रेस प्रस्ताव पास करे तिरुपति में की इसके पीछे जो षड़यंत्र है उसको बेनकाब किया जाए उसको सजा दी जाए। इसके बावजूद पाँच साल के बाद लीपापोती करने की कोशिश हो रही है। कवर अप करने की कोशिश हो रही है। ये मैं नहीं कह रहा हूँ। केवल मेरे जो समझ में आता रहा कहता रहा। पहले भी आपके सामने कहा है और जब तक ये पूरी तरह से पर्दाफाश नहीं होगा कहता रहूँगा। ये उन लोगों ने कहा है जो आज ज्यूडिशरी के सर्वोच्च स्थान पर बैठे हैं।

तीसरा जो सवाल था वह क्रिमिनल पोलिटिशियन और ब्यूरोक्रेसी के बीच में जो बढ़ता हुआ अपवित्र गठबंधन है, बम्बई में आकर इसके बारे में मैं कुछ कहूँ अतिश्योक्ति होगी। प्रत्यक्षदर्शी लोग हैं आप सब खास तौर से यहाँ का जागरूक मीडिया हैं। हमारे देश के अंदर सुप्रीम कोर्ट ने अभी 23 मार्च के अपने जजमेंट में इस कमेटी की रिपोर्ट को बहुत संजीदगी से और बहुत गंभीरता से लिया है और कहा है कि इसके ऊपर इस प्रकार से अमल किया जाए कि जो सही चीजें हैं वो सामने आएँ, कोई भी उसमें शामिल क्यों नहीं हुआ। सब के सब पर कार्रवाई की जाए। ये किसी के ऊपर आरोप नहीं है। ये किसी की तरफ इशारा नहीं है।

प्रश्न: आपकी पालिसी क्या है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं इसमें कोई पालिसी का सवाल नहीं है। देखिए कुछ लोग इस मायने में भ्रम में हैं। इसलिए उसको साफ कर दूँ। सवाल यह है कि डिसीजन जो होगा वह फर्स्ट प्रिफरेंस से ही होगा। अगर फर्स्ट प्रिफरेंस में किसी भी उम्मीदवार को 91 प्रतिशत वोट नहीं मिलते लेकिन 100 में से 91 वोट किसी केंडिडेट को नहीं मिलेगा तो सवाल उठेगा सेकेण्ड प्रीफरेंस गिनने का, वो आटोमेटिक नहीं है कि आप सेकेण्ड प्रीफरेंस दीजिए तो उसकी गिनती अलग से शुरू हो जाएगी। हम स्पष्ट हैं, हमारे सामने नक्शा जैसा अभी देख रहे हैं कि 91 प्रतिशत का तो सवाल नहीं, बहुत बड़े बहुमत से केसरीजी जीतेंगे। अब रहा उस स्ट्रेट्रेजी वाली बात। चूँकि सेकेण्ड प्रीफरेंस न देने से वोट इनवेलेड होने की बात है तो हम आपस में बैठकर बात कर लेंगे कि किसी न किसी को दे देना। देट इज नाट मटेरियल फार द डिसीजन फार इलेक्शन।

काँग्रेस की रणनीति और वामपंथ की दुविधा

19 अगस्त 1997 अरुण पाण्डे के साथ साक्षात्कार के अंश इस प्रकार हैं —

श्री अरुण पांडे: हम लोगों का जो इशु है, वह है काँग्रेस की रणनीति और वामपंथ की दुविधा, इसके केन्द्र में है, इस तरह का हमारा विश्लेषण है। विखण्डन के बाद एक ऐसी स्थिति बन गई है कि भाजपा के खिलाफ एक ग्राण्ड एलायंस, उस बारे में दृढ़तापूर्वक आप लोगों का क्या सोच है?

श्री अर्जुनसिंह: इस पर अभी कोई विचार-विमर्श नहीं हुआ और यह बात भी अभी इतनी स्पष्ट नहीं है। यह तो अभी अनुमान के क्षेत्र में है कि ऐसा होगा, कि ऐसा होगा। एक बात तो काँग्रेस पार्टी की तरफ से स्पष्ट कही जा सकती है कि किन्हीं भी परिस्थितियों में कभी भी काँग्रेस साम्प्रदायिक शक्तियों से तालमेल में कोई दिलचस्पी नहीं रखती। यह इसलिए कहना जरूरी है कि बाकी जो शक्तियाँ हैं, चाहे वो लेफ्ट हो, चाहे सेण्ट्रल हो, चाहे जो भी हो, कभी न कभी इन लोगों ने रेखा पार की तथा बी.जे.पी. से समझौता किया है, सहयोग लिया है। शासन में बैठाया है। आज तो हम इतनी ही बात कह सकते हैं। बाकी जब परिस्थितियाँ बदलती हैं, उस पर जो विषय सामने आएँगे तो फिर ये चर्चा तो वर्किंग कमेटी करेगी। अपनी ओर से तो मैं इतनी बात बिना किसी हिचक के कह रहा हूँ।

श्री अरुण पांडे: नहीं, लेकिन आपको नहीं लगता कि कहीं न कहीं जैसे अभी वर्किंग कमेटी में जो प्रस्ताव भी पास हुआ है सिम्पल एक तरह से दु:ख व्यक्त किया गया है। बाबरी मस्जिद के मामले में तो मुझे नहीं लगता कि किसी को खुशी हुई होगी। सबने दु:ख व्यक्त किया है और उस समय भी राव साहब ने भी दु:ख व्यक्त किया था। अगर आज उसे रेक्टीफाय करना था या कुछ इस रूप में ले जाना था जनता के बीच में कि अब कोई नई बात, पास्ट की गलतियों को करेक्ट कर लें, उसी रूप में ले जाना था तो, ठीक नहीं लगता कि एक कदम आगे बढ़ कर कुछ चीजें करना चाहिए थी।

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि जो कुछ कहा गया है, वह तो वर्किंग कमेटी का फैसला है और उस फैसले के मुताबिक कहा गया है। यह बात जरूर है कि अब आने वाले हमारे पोलीटिकल एक्शन में जो भी रूप रेखा बनेगी, उसमें कुछ चीज बहुत साफ होनी चाहिए, ताकि समाज का वह वर्ग जो काँग्रेस से खफा होकर अपनी दूरी बना ली थी, हम उस वर्ग को फिर से काँग्रेस से जोड़ सकें और निश्चित रूप से इस दिशा में ठोस विचार होके कोई कदम सामने आएँगे, इसका कोई विकल्प नहीं है। लेकिन वो कदम क्या होंगे, ये तो अकेले नहीं कह सकता मैं, उस दिशा में विचार, सोच गहराई से जारी है और सब से बड़ी बात स्वयं काँग्रेस अध्यक्ष इस पर कंसन्ट्रेट कर रहे हैं।

श्री अरुण पांडे: आपको क्या लगता है कि आने वाले दिनों में चुनाव की कब संभावना होगी?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो अभी कहना मुश्किल है। यह सरकार तो चल रही है और काँग्रेस का पूरा समर्थन है सरकार को, तो काँग्रेस की तरफ से तो ऐसी कोई परिस्थिति निर्मित नहीं की जाएगी, जिससे कि चुनाव की बात आए। लेकिन जो उनकी ओर से घटक हैं, वहाँ तो कुछ भी कह पाना संभव नहीं है। कोई कैसे किस वक्त क्या करेंगे। लेकिन चूँकि एक बात सबकी निगाह में है कि अभी चुनाव नहीं होने चाहिए। हो सकता है कि उस सीमा तक बात को न ले जायँ।

श्री अरुण पांडे: आपको ऐसा नहीं लगता कि अब काँग्रेस को खुद चुनाव में जाना चाहिए, क्योंकि उसको चुनाव से ही फिर एक नई ताकत मिल सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, काँग्रेस को चुनाव से नई ताकत तो, मिलेगी ही साथ बहुत बहुत समर्थन मिलेगा। इसमें तो दो मत नहीं। सवाल यह है कि जो सरकार चल रही है, इसको अस्थिर करके गिराने की कोशिश करके फिर काँग्रेस चुनाव में जाएगी, एक तो वह रास्ता है। मैं समझता हूँ कि ऐसा करने का इरादा काँग्रेस का नहीं है, क्योंकि हमारा समर्थन तो बहुत स्पष्ट है। परिस्थितियाँ निर्मित हो जायँ जहाँ चुनाव

हो जाए हम लोगों के बावजूद तो फिर हम क्या करें। फिर तो चुनाव में जाएँगे।

श्री अरुण पांडे: चुनाव में किस-किस तरह की पोजीशन बन सकती है। क्या आपको अभी भी लगता है कि तीन खेमे रहेंगे, दो नहीं होंगे।

श्री अर्जुनसिंह: खेमे किसमें?

श्री अरुण पांडे: जो बी.जे.पी., काँग्रेस, थर्ड फ्रण्ट, तो थर्ड फ्रण्ट की कुल मिला कर क्या स्थिति लगती है आपको? क्या स्थिति रहेगी उसकी? मोटे तौर से हम लोगों को जो लग रहा है, मुलायम सिंह ने भी इसको कहा है, लालू ने भी कहा है, गैर काँग्रेसवाद की जो स्थिति थी, अब वो गैर बी.जे.पी.वाद की हो गई है और गैरभाजपावाद से लड़ना है तो काँग्रेस से मिलकर चलना होगा। तो इसमें सबसे बड़ी बाधा आपको क्या दिखती है। क्या डी.एम.के. या टी.एम.सी. के लोगों को लेकर लागू हो सकता है काँग्रेस को लेकर, या कहीं कोई गेप है। कौन-सी चीज की अड़चन आ सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, गैरकाँग्रेसवाद का आधार गैर राजनीतिक था मेरी समझ में और इसीलिए जब राजनीतिक परिस्थितियाँ अलग-अलग तरीके की सामने आने लगीं और वो जटिल होने लगीं तो गैर काँग्रेसवाद के जो बेसिक थे, या प्रवर्तक थे, उनको अब यह महसूस होने लगा कि कितना यह सतही सिद्धांत था। यह बात तो स्पष्ट है। यह आप ही कहते हैं। लोग कह रहे हैं। मुलायम सिंहजी कह रहे हैं और लोग कह रहे हैं। काँग्रेस पार्टी ने किसी गैर पार्टी का नजरिया लेकर अपनी राजनीति बिल्कुल नहीं संचालित की है। सिर्फ भारतीय जनता पार्टी को लेकर, जैसा मैंने कहा उनके साथ तो कोई समझौता होने का सवाल ही नहीं है, केवल सिद्धांत के आधार पर, यह नहीं कि हम बी.जे.पी. को और किसी कारण से उनके पास जाना नहीं चाहते। इसलिए वे परिस्थितियाँ निर्मित हो सकें, जहाँ सेकुलर फोर्सेस एक साथ मिल कर काम करने की दिशा में बढ़ना चाहिए तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। लेकिन आज वो परिस्थितियाँ निर्मित हो रही हैं या हो गई हैं और उसको मद्दे नजर रख कर पार्टियाँ निर्मित हो रही हैं या हो गई हैं.और उसको मद्दे नजर रख कर पार्टियाँ विचार करने के लिए तैयार हो गई हैं।

श्री अरुण पांडे: वामपंथियों से फिर काँग्रेस का क्यों विरोध है? अगर वामपंथी इस मोर्चे में आए तो क्या काँग्रेस तैयार होगी?

श्री अर्जुनसिंह: वामपंथी, आपको मैं केवल स्मरण दिलाना चाहता हूँ। 1967 से 69 तक तीन सालों तक श्रीमती इंदिरा गाँधी ने मायनार्टी सरकार चलाई और वामपंथियों का उसमें पूरा सहयोग था तो काँग्रेस वामपंथियों के खिलाफ अनटचेबिलिटी का, पोलीटिकल अनटचेबल तो मानती नहीं। अब पता नहीं फिर से वही गैर काँग्रेसवाद की बात आती रही है। अब जनता दल और मुलायम सिंह तो उस निरर्थकवाद से निकल आए हैं, लेकिन ऐसा दिख रहा है कि लेफ्ट पार्टी उससे नहीं निकली तो उसके लिए हम क्या कर सकते हैं।

श्री अरुण पांडे: कहीं ऐसा नहीं लगता कि 67, 69 और 72 वाला जो भी पीरियड हैं, उसमें कहीं सीधे काँग्रेस से टकराव नहीं था लेफ्ट का, अब वेस्ट बंगाल, केरल में जहाँ की सीधा काँग्रेस से टकराव है। एक तो यह भी सत्य है।

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, सत्य है।

श्री अरुण पांडे: लेकिन क्या आपको लगता है कि किसी भी को ले, जैसे वेस्ट बंगाल का अपना जो अमला है, वह वामपंथियों के खिलाफ है, तो आखिर यह किस सोच के तहत होगा?

श्री अर्जुनसिंह: सोच तो स्पष्ट है कि आप कॉंग्रेस का जब चाहें इस्तेमाल करें और बाकी फिर उसे अछूत मान लें। यह दृष्टिकोण कैसे कोई पार्टी निर्धारित करेगी। यह उसी की प्रक्रिया है। आज कॉंग्रेस के सहयोग से वो तो बैठे हुए हैं। कुछ लोग सरकार में हैं और कुछ लोग सरकार से बाहर रह कर पूरा फायदा उठा रहे हैं। वामपंथियों की बात मैं कह रहा हूँ और भाषण और आचरण विपरीत होता है। यह कैसे हो सकता है?

श्री अरुण पांडे: इस संदर्भ में वामपंथियों से कभी आपकी बातचीत हुई?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, अभी हाल के साल में नहीं हुई। दो-तीन महीने पहले, लेकिन एक एकेडेमिक रूप में हुई थी, कोई पोलीटिकल बात नहीं थी।

श्री अरुण पांडे: एकेडेमिक बात के हिसाब से जानना चाहते हैं दिक्कत क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: वह भी, पोलिटिकल कुछ नहीं है, हेंग ओवर है। पुराना चला आ रहा है।

श्री अरुण पांडे: प्रकाश से हम लोगों की बात हुई अभी। प्रकाश का यह कहना है कि हम तो शुरू से ही गैर कॉंग्रेसवाद के समर्थक नहीं रहे हैं। गैर कॉंग्रेसवाद एक्टिव हो वह नहीं मानते। वो लोग समझते थे और उससे हम अलग रहे। हम लोगों का जो मुख्य विरोध है, कॉंग्रेस से, वो नीतियों को लेकर हैं और वो नीतियाँ है उदारीकरण की। उदारीकरण के खिलाफ कॉंग्रेस के खिलाफ इस समय हम लोग हैं और दूसरा मुद्दा भ्रष्टाचार का है। उनका कहना है और इस पर हम आपकी राय भी जानना चाहेंगे। वैसे केसरीजी ने एक बयान दिया, अभी हाल में साम्प्रदायिकता का इस समय सबसे बड़ा खतरा है, उससे लड़ने के लिए लालू और भी जिनके ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप हैं, उनसे हाथ मिलाया जा सकता है। उनका सपोर्ट किया जा सकता है। क्या आप भी ऐसा ही सोचते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि केसरीजी ने यह तो नहीं कहा। उन्होंने एक सीधे तौर पर यह कहा कि साम्प्रदायिकता भ्रष्टाचार से भी बड़ा खतरा है। उनसे हाथ मिला कर ये किया जा सके, यह सब व्याख्या तो उन्होंने नहीं कही, जहाँ तक मैंने समझा।

श्री अरुण पांडे: किया, रिएक्ट किया। व्याख्या नहीं।

श्री अर्जुनसिंह: रिएक्ट नहीं, उन का वक्तव्य जो था वह यह था, कि देश में भ्रष्टाचार से भी बड़ा खतरा साम्प्रदायिकता से है। यह तो एक मत है। मैं समझता हूँ कि तुलनात्मक बात थी। भ्रष्टाचार से खतरा नहीं है, ये तो नहीं कहा। सही है, आप भ्रष्टाचार से जो खतरा है, उससे भी लड़ने की जरूरत है और उतने ही रूप से और साम्प्रदायिकता निश्चित रूप से ज्यादा व्यापक है और ज्यादा अलग-अलग तरीकों से हमारे पूरे समाज को कुण्ठित कर रही है। उससे लड़ना उससे भी ज्यादा जरूरी है। यह कोई तराजू में लेकर नहीं तौला जा रहा है कि यह अच्छा है कि वो अच्छा है। परिस्थितियाँ जो बनती हैं, उसमें सोचना पड़ता है।

श्री अरुण पांडे: दोनों में से यदि किसी को चुनना पड़े तो किसे चुनेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: चुनना यह नहीं है कि हम उसको बंद कर देंगे। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई थोड़े ही बंद हो जाएगी साम्प्रदायिकता के नाम पर। ऐसी बात थोड़ी ही है।

श्री अरुण पांडे: लालू का समर्थन जिस तरह से काँग्रेस ने किया बिहार में?

श्री अर्जुनसिंह: वो तो विशिष्ट परिस्थितियाँ थीं, बिहार की, उसमें किया।

श्री अरुण पांडे: इसमें नहीं लगता कि अगर भाजपा चार भ्रष्टाचारी लोगों का समर्थन करते या भ्रष्टाचार के बगैर लड़े, कोई भी सोच साम्प्रदायिकता से नहीं लड़ सकती। लालू ने बहुत कोशिश की, लगातार बी.जे.पी. तो बढ़ती रही। यह तथ्य तो सामने है, तो कहीं न कहीं केसरीजी के बयान में भ्रष्टाचार को एक सेलूट करने जैसे स्थिति दिखती है।

श्री अर्जुनसिंह: खैर, ये तो अपने तरीके से लोगों को देखने का है। मैंने तो उसे एक डालुसन की बात नहीं समझी। मैंने तो, फ्यूकेसेज की बात हो सकती है, लेकिन डालूसन का सवाल ही नहीं है।

श्री अरुण पांडे: अगर मान लीजिए, इस तरह से कोई एलायंस बनाता है उसमें विश्वनाथ प्रताप सिंह सरीखे लोग भी एक्टिव होते हैं, ऐसे में काँग्रेस में क्या एटीट्यूट रहेगा?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो काँग्रेस वर्किंग कमेटी तय करेगी, किसी व्यक्ति की राय से कोई काम नहीं होगा।

श्री अरुण पांडे: सोनिया गाँधी के बारे में अकसर हम लोग अखबार में पढ़ते हैं आज की तारीख में उन की क्या स्थिति है?

श्री अर्जुनसिंह: उसकी बात जो सदैव कहता आया हूँ, वही दोहराना चाहूँगा। सोनियाजी का सक्रिय न होने का फैसला तो वो स्वयं करेंगी। इसमें किसी का दबाव या सिफारिश की जरूरत है ही नहीं। वो आर्डीनरी मेम्बर बनीं और आर्डीनरी मेम्बर की हैसियत से कलकत्ता अधिवेशन में गईं। काँग्रेसजनों के बीच में उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई, वो अब सर्वविदित तथ्य है। इससे यह बात तो साफ होती है कि सोनियाजी के सक्रिय होंने से काँग्रेस के लिए लाभादाई होगा और काँग्रेस हिन्दुस्तान में और रिलेवेण्ट होगी। तो देश के लिए भी लाभदाई होगा। इतना मैं कह सकता हूँ और बाकी तो फैसला उनको करना है।

श्री अरुण पांडे: काँग्रेस में आप अपनी भूमिका किस तरह की सोच रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मेरी भूमिका बहुत सीधी-साधी स्पष्ट है कि अब हम पूरी तरह से काँग्रेस के वर्चस्व को कायम करने की दिशा में हैं। क्या-क्या होना चाहिए। एक तो वह सामने लाने की जरूरत है विचार-विमर्श, आपस की बहस से और उसके बाद उन पर किस प्रकार से कदम उठाए जाने हैं, ताकि उन पर अमल किया जा सके। यह भी एक मेरी नजर में अहम मुद्दा है। यहाँ भी सबकी बात, एक साथ होने से बात बनेगी। यह हमारे लिए व्यक्तिगत अपनी-अपनी आँकाक्षाओं की रेखाओं को खींचना और उनको गहरा करना और फिर उस गहराई से टकराव की स्थिति उत्पन्न करना, अटकलबाजी के लिए मौका देना, हमारी कतई कोई दिलचस्पी नहीं है। काँग्रेस अध्यक्ष को हम लोगों ने चुना है। उनकी अध्यक्षता में ये जो बातें कहीं, इनको करने का सतत् प्रयास करना, यही मेरी भूमिका है।

श्री अरुण पांडे: अभी तक आपको क्या लगता है? काँग्रेस के वर्चस्व को स्थापित करने में मुख्य चीज़ क्या होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: मुख्य चीज़ तो यही होनी चाहिए कि हम में से प्रत्येक जो जहाँ भी है, इस बात का अहसास कर ले और संकल्प भी ले ले कि अब हम अपने बारे में बाद में, पार्टी के बारे में पहले सोचेंगे। बहुत

छोटी बात है, लेकिन बहुत बड़ी बात है सबके लिए। तब यहाँ से शुरू होगा।

श्री अरुण पांडे: जैसे आप पिछली काँग्रेस के सीनियर हैं। एक तरह से काँग्रेस के भीतर नंबर वन बनने का कभी समय भी रहा और उसके बावजूद एक स्थिति बनी, आज की तारीख में आपको लगता है कि इस तरह की स्थिति में आप पर सब लोगों की नजर है या फिर एक बार फिर....?

श्री अर्जुनसिंह: अभी मैंने जो बात कही, उसका अर्थ तो यह नहीं है, जो आप कह रहे हैं, आपने संदर्भ का जिक्र किया है। इसलिए मैं कहना चाहूँगा, काँग्रेस और मेरा दोनों का दुर्भाग्य था कि नरसिंहरावजी सही संदर्भों में, सही अर्थों में, जो मैंने कभी लेने की कोशिश नहीं की। मेरा सतत् प्रयास उस समय यही था, सन् 92 में जब बाबरी मस्जिद की चर्चाएँ शुरू हुई, उस वक्त जब मैंने इस बात को कहा कि साम्प्रदायिक शक्तियों से किसी प्रकार का समझौता नहीं होना चाहिए, बातचीत नहीं होनी चाहिए। उनका अंततः लक्ष्य बाबरी मस्जिद को गिराना है। बड़ी आलोचना हुई। सब तरह से मुझे अलग-अलग प्रदेश के अध्यक्षों के बयान दिलवाए गए अगस्त में और 6 दिसम्बर को वह हादसा हो गया। मैंने उस वक्त नहीं कहा कि देखिए मैं कह रहा था और क्या हो गया। चूँकि वह मेरी निगत नहीं थी और यदि जब वो नंबर वन स्थान प्राप्त करना भर ही मेरा लक्ष्य होता, तो उसी दिन इस्तीफा दे देता और फिर कैसी परिस्थिति बनती, आप उसका अंदाज कर सकते हैं। बल्कि लोग उल्टा पूछते हैं कि उस वक्त क्यों नहीं इस्तीफा दिया। इसलिए नहीं दिया, मेरा लक्ष्य कुर्सी या नंबर वन पोजीशन नहीं था। मेरा लक्ष्य काँग्रेस की सेवा करना था। ऐसी परिस्थिति का निर्माण कर दें, जिससे कि देश में ऐसे नाजुक समय पर अस्थिरता आ जाय वह तो कभी देश के लिए तो नहीं हो सकता। आज भी मेरा कोई किसी पद पर जाने का इरादा नहीं है। ए.आई.सी.सी. के मेम्बर ने कृपाकर के मुझे लिया है। मैं समझता हूँ कि मेरी जिम्मेदारी यह है कि इस सालके बीच जो कुछ हम से हो सकता है, करें। केसरीजी हमारे प्रेसीडेण्ट हैं। किन्हीं भी परिस्थितियों में उनके प्रतिकूल वातावरण बनाने वाले लोग हो सकते हैं। मेरी गिनती उसमें नहीं है।

श्री अम्बा पांडे: आप करीब-करीब काँग्रेस की टीम में आ गए हैं, लेकिन नारायणदत्तजी तिवारी पिछले तिवारी काँग्रेस के अध्यक्ष थे, वे लगातार अपने तक ही रहे, उसकी क्या वजह है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तिवारीजी के बारे में कैसे कोई टिप्पणी कर सकता हूँ। कोई टिप्पणी करना अनुचित होगा मेरे लिए। वो मेरे वरिष्ठ साथी हैं।

श्री अम्बा पांडे: आपको नहीं लगता है कि उत्तर प्रदेश में उनकी भूमिका फिर से हो सकती है।

श्री अर्जुनसिंह: बहुत हो सकती है और उनकी भूमिका को महत्व देना चाहिए।

श्री अम्बा पांडे: अगर उत्तर प्रदेश में एक और चीज जानना चाह रहा हूँ, तब करना पड़ा काँग्रेस को, एक ऐसी स्थिति बन सकती है मुलायम सिंह की और कांशीरामजी की मुख्य उठापटक, एकता के लिए तो काँग्रेस को किसे चुनना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसे प्रश्नों पर मैं तो एकदम गया आखिर बिल्कुल नहीं करना चाहता। यह तो सामयिक विचार विमर्श और निर्णय के विषय हैं। मेरी व्यक्तिगत राय कुछ भी हो, उसको मुझे वहाँ व्यक्त करना पड़ेगा और जो निर्णय होगा, मानने होगा।

ज़म्हूरियत की नसीहत

24 अगस्त 1997 फ़िराक सेलीबरेशन के श्री अली सिद्दीकी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

श्री अली सिद्दीकी: आज हम फिराक जैसे महान कवि का जश्न मना रहे हैं तथा आजादी का जश्न-ए-पचास साल भी मना रहे हैं। आपको कैसा महसूस हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: फ़िराक साहब का मैं स्टूडेण्ट था, सन् 1948 से 50 तक। इन दो ढाई सालों में एक विद्यार्थी की हैसियत से हमने दो-तीन चीजें हमने बहुत नायाब देखीं। एक बात यह कि वो किसी भी विद्यार्थी को यह अहसास नहीं होने देते थे कि वो शासन के किसी बड़े ओहदे पर हैं। इतनी सरलता और इतना सादापन किसी भी इतने आलादर्जे के टीचर में नहीं होता। दूसरा उनका जब कभी भी कोई ऐसा मौका आता था, पढ़ाते थे या फिर ऐसा विषय आ जाय तो भी उनकी टिप्पणी होती थी, जो भी कहते थे, उनके हर लफ्ज में इस देश की गंगा-जमुनी संस्कृति प्रवाहित होती थी, और उसका सीधा असर हम लोगों के दिमाग में पड़ता था। हम भी महसूस करते थे कि ये जो कह रहे हैं, यही हिन्दुस्तानी है। जहाँ तक शायरी की बात है। मैं उस समय समझता भी नहीं था इतना इसलिए ये तो मैं उस समय की याददाश्त में शायरी का जो पहलू था, वो तो मेरे जहन में नहीं है, लेकिन उसके बाद उनसे वो संबंध कायम रहे। जब कभी भी हम लोग जाते थे, मैं जाता था, वो याद करते थे। हाँ मैंने तुमको पढ़ाया है और एक जो अपनापन सच्चे टीचर का अपने विद्यार्थियों के प्रति होता है, वह हर दम दिखता था। बाद में कई जगह गोष्ठियों में आमंत्रित किया। मैं किसी बहुत बड़ी समझदारी से तो नहीं कह सकता, लेकिन इंसान की हैसियत से उनकी शायरी में जहाँ एक तरफ इंसान की इच्छा, उनकी तमन्ना की झलक रहती थी, वहीं दूसरी ओर आम आदमी जिस प्रकार से जीवन में संघर्ष करके आगे बढ़ना चाहता है, उसका दर्द उनकी शायरी में देखने को मिलता था। ऐसी ही एक महफ़िल में उन्होंने एक शेर पढ़ा, जिसे मैं कभी नहीं भूलता। मैं कई दफ़े उनके नाम से कोट कर चुका हूँ। उन्होंने कहा था—

एक रात भारी है शमा की टिमटमाती।
मैंने तमाम उम्र गुजारी है॥

ये चीज़ दर्शाती है इंसान की जद्दो-जेहाद करने की हिम्मत को। जैसे इतनी अंधेरी रात में एक शमा टमटमाती रहे, बुझे नहीं, उसकी रोशनी दूर तक जाती है, शमा को परवाह नहीं। जितनी दूर ही जाती है, रोशनी ही जाती है तो कोई इंसान कहे कि मैंने तमाम उम्र ऐसे ही गुजारी तो उसके क्या हौसले होंगे। उसके क्या अंदर के जज़बात होंगे, यह झलकता है और फ़िराक साहब तो आधुनिक भारत में एक बुलन्द आवाज थी। आप उनकी यादगार में उत्सव मना रहे हैं, यह हम सब के लिए सौभाग्य की बात है।

श्री अली सिद्दीकी: हम यहाँ पचास साल आजादी-ए-जश्न भी मना रहे है। फ़िराक साहब मुजाहर-ए-आजादी में भी रहे हैं गाँधी जी से प्रभावित रहे हैं। नेहरू जी से बहुत अज़ीज संबंध रहा है। एक की हैसियत से काम करने का भी मौका मिला हैं इस तरह से सियासी जिंदगी का भी उनकी जिंदगी में एक पहलू मिलता है। आप उसको किस तरह से देखते हैं। किस तरह से महसूस करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, उनके जो सियासी जज़बात है और जिस तरह से उन्होंने काम किया, वह तो सबको मालूम है। सवाल यह है कि ऐसा व्यक्ति आम आदमी पर खास तौर से नौजवानों के ऊपर उसका क्या असर होता है। हम तो उसकी ही बात कह सकते हैं, उस समय तो भारतवर्ष को आजाद हुए मुश्किल से एक वर्ष हुए थे। सन् 48 की बात है। तो साफ लगता था कि जो देश की आजादी का संघर्ष था कैसे उनके कामों में और उनकी बातों में और उनके विचारों से झलकता था। जो हम लोगों को मालूम था कि पंडित जी के नजदीक हैं। गाँधी जी को मानते हैं, लेकिन ये तो सुनी-सुनाई बात थी। जो अपने ऊपर असर पड़ा, वो तो उनका खुद का कहा हुआ और किस प्रकार से वो साम्प्रदायिकता के खिलाफ जैसा मैंने कहा भारत की गंगा जमुनी के पथ में नौजवानों को किस तरफ अपनी निगाह रखने के लिए कैसा आचरण करना चाहिए। मुल्क की जरूरतें, मुल्क की जो बातें हैं, वे सबसे पहले आनी चाहिए। ये सब चीजें हैं, जो उनके विचारों से झलकती थीं।

श्री अली सिद्दीकी: हमने जहाँ तक उनको पढ़ा है, महसूस किया है कि उन्होंने जो कुछ सोचा, जो कुछ समझा, जो कुछ उनका नजरिया था, उस पर वो आखिर वक्त तक कायम रहे। खास तौर से हमारी मौलिक तहसीर के मामले में गंगा-जमुनी तहसीर है। उर्दू जवान को तो वो अपनी पढ़ी हुई जवान महसूस करते थे और यह कहते थे कि हिन्दुस्थान में गंगा जमुनी तहसीर होती है। हमें अदब को भी उसकी तामीर में लगा देना चाहिए। आप उसे देख चुके हैं। कवि की हैसियत से, संघर्ष करने वाले के लिहाज से भी। उनके अदब से हमारी आज की हिन्दुस्तान की तामीर जो तहजीब, जो कल्चर चाहिए गंगा जमुनी तहजीब हम मानते है, उसके राष्ट्र के हवाले से किस रास्ते को अख्तयार करना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, अगर हिन्दुस्तान को एक बनाकर रखना है तो इस मुल्क की तरक्की करना है तो इस देश में रहने वाले इंसान को उस हक को दिलाना है और भविष्य में भारत को उन लोगों की आँखों से देखना है, जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में सब कुछ अपना न्यौछावर कर दिया। रास्ता तो वही है, जो फिराक़ साहब का था।

श्री अली सिद्दीकी: आज कल हम महसूस कर रहे हैं कि जो एक जमाना था, जब कलमदार अपने आपको सम्राट कहते थे। मुल्क की जिंदगी बनाने में क्या वो साहित्यकारों का और साहित्यकारों का रोल मंद पड़ गया और सियासत का रोल ज़्यादा हो गया है। आपके ख्याल में क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो ऐसा नहीं मानता और उस पर इस लहजे से मैं टिप्पणी करना भी उचित नहीं समझता कि कौन ज्यादा महत्वपूर्ण है, लेकिन कलम हरदम तलवार से ज्यादा मजबूत रही है और रहेगी। मुझे तो इसमें कोई शिकायत नहीं।

श्री अली सिद्दीकी: आज के हिन्दुस्तान के नए जनरेशन को जो आपकी तरफ भी बड़ी उम्मीदों से देख रहा है तो आपका मेसेज़ क्या है कि हम पचास साला जश्ने आजादी मना रहे हैं और फिराक की याद भी मना रहे हैं। नए हिन्दुस्तानी जमूरियत के बारे में क्या नसीहत की तरह, मशवरे की तरह या मेसेज की तरह?

श्री अर्जुनसिंह: न मशवरे की जरूरत है, न नसीहत की जरूरत है। अपनी-अपनी जिंदगी में ही ढालने की जरूरत है। हम हिन्दुस्तानी हैं। हमारी विरादरी इंसानियत की विरादरी है। यही दो चीजें समझ जायँ तो बाकी चीजें अपने आप आ जाएँगी।

गाँधीजी के हत्यारों ने गाँधीजी के दर्शन को अपनाया

10 अक्टूबर 1997 यू.एन.आई. (वार्ता) के श्री गिरीश उपाध्याय के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

प्रश्न : मेरा सबसे पहले सवाल तो यह है कि आपकी दृष्टि में काँग्रेस में ऐसी कौन सी कमी या कमजोरी है, जिसको दूर न किए जाने पर आगामी विधान सभा और लोक सभा के चुनाव में उसकी सफलता संदिग्ध हो सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: सबसे पहली बात तो यह है कि काँग्रेस के अन्दर, जो पार्टी के बीच में, लोगों के बीच में आपस में जो रेखाएँ खींच जाती हैं, या खींची जाती हैं, जब तक वह पहले दूर नहीं होगी तब तक जनता के बीच में जाने वाली बात तो बाद में हैं। और जो लोग आज आगे की बात कर रहे हैं, मैंने जैसा कहा कि बहुत जल्दी पता चल जायगा। कौन कितनी इस मामले में ईमानदारी से बात कर रहे हैं। क्योंकि प्रत्येक काँग्रेस का नेता हो, वर्कर हो उसको सब तो मालूम हैं, कि उसने कितनी रेखाएँ खींची है। और किससे खींची हैं। किसको अपना मानता है? किसको पराया मानता है? वो उस दृष्टिकोण को बदलने के लिए तैयार है या नहीं और ऐसे लोगों को जिनको अभी काँग्रेस के अन्दर रहते हुए भी अपने से अलग मानते हैं, उनको साथ में लेने का प्रयास करने के लिए तैयार है कि नहीं। यह होगा तो फिर एकता की बात भी होगी। पार्टी की एकता एक इशु नहीं बनना चाहिए। यथार्थ बनना चाहिए। उसके यथार्थ का मेरी समझ में यही एक रास्ता है। कि सफलता भी मिलेगी। और अब तो ये काँग्रेस वर्किंग कमेटी ने जो एक्शन प्लान स्वीकार किया है, उसका ये एक अंग हैं यह तो आफिशियल अंग हैं, पार्टी का।

प्रश्न : आपके प्रस्ताव से इन्दौर सम्मेलन के फलितार्थ क्या रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे ख्याल से इन्दौर सम्मेलन इस मायने में सफल रहा है। एक तो चुनाव के बाद पी.सी.सी. का पहला सम्मेलन था। काफी उसमें व्यापक भागीदारी डलेगेट्स की भी रही थी। हम लोगों की भी रही। बोलने का भी अवसर मिला। काँग्रेस अध्यक्ष के आ जाने से उसका महत्व भी बढ़ गया। कम से कम आगे क्या किया जा सकता है, यह संभावनाएँ तो जरूर उजागर हो गई, नहीं तो वह भी छिपी रहती। अब वो उजागर हो गई, तो सबके लिए आगे व्यक्तिगत और सामूहिक चुनौती है। सभी लोग करें जो संभावनाएँ हैं, पार्टी को मजबूत करने की। अभी तक तो मैं इतनी हद तक ही इसकी सफलता मानता हूँ।

प्रश्न : आपने उस सम्मेलन में बहुत महत्वपूर्ण बात कही और पार्टी का ध्यान आकर्षित किया है, कि कुछ ताकतें परंपरागत रूप से काँग्रेस के जनाधार को तोड़ने का काम कर रही हैं। पहले दलित और हरिजन इसके बाद आदिवासी और आपने चेतावनी दी कि आने वाले दिनों में पिछड़ा वर्ग भी टूट सकता है। उसकी साजिश हो सकती है, तो आशंकाओं के पीछे क्या आधार हैं और आप क्या सोचते हैं कि काँग्रेस इसको जोड़ने में किस तरह से सफल होगी?

श्री अर्जुनसिंह: आधार इन सब चीजों का कोई कागजी सबूत तो मिलता नहीं। अगर आप बारीकी से जो डेवलेपमेण्ट

चालू हुए हैं। इस दिशा में देखें तो आपको स्पष्ट नजर आ जाएगा कि यह भी नियोजित ढंग से काम हो रहा है। अचानक सब नाराज थोड़े ना हो गए। ऐसा कौन सा काम कॉंग्रेस ने कर दिया जिससे कि हरिजनों को आघात पहुँचा है। लेकिन विश्वास तो काफी हटा। जो हर समय ऐसी बातों को उभारते रहना। यह समझाना कि अब कॉंग्रेस का विकल्प यह है जबकि मैं समझता हूँ कि देश के कमजोर वर्ग के लिए कोई भी योजना के रूप में विकल्प अब तक किसी पार्टी ने प्रस्तुत नहीं किया है। भाषण का विकल्प है, लेकिन योजना के अन्तर्गत उनके प्रगति के बारे में किसी भी पार्टी ने कोई विकल्प नहीं दिया। बी.एस.पी. ने बिल्कुल भी नहीं दिया। वह तो खैर गनीमत है, वह तो कहते भी हैं, हमसे किसी योजना से मतलब नहीं है हम तो सत्ता चाहते हैं। कोई प्रगति की जरूरत नहीं है। सत्ता मिल जाय अपने आप सब मिल जाय तो यह है।

प्रश्न : तो आपने यह प्रधान मंत्रीजी से कुछ चर्चा की। कल कुछ पत्रकारों से कुछ बात करते हुए या उससे पहले भी कहा है। कुल मिलाकर यह वर्ग अभी नेतृत्व करने लायक नहीं है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैंने यह कहा जो कॉंग्रेस के अन्तर्गत हरिजन नेतृत्व था, पर वो कमजोर हो गया है। और कई कारणों से सीनियर्स लोग जो थे, वे हैं ही नहीं तो उनको मजबूत करना चाहिए।

प्रश्न : तो आदिवासी और पिछड़े नेतृत्व के बारे में आप क्या कहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: आदिवासी और पिछड़े वर्ग में यह स्थिति नहीं है। वहाँ तो आज भी स्थापित नेता हैं और बिल्कुल साफ है लेकिन सवाल यह है कि अगर उनके बीच में भी इसी प्रकार का अन्तर्विरोध पैदा किया जाता रहेगा और उनको मौका मिल जायगा तो वहाँ भी यह हालत हो जायगी।

प्रश्न : सर बहुत पुराना सवाल है लेकिन मैं उसको नए तरीके से पूछना चाहूँगा कि क्या आदिवासी वर्ग का मुख्यमंत्री बना देना ही आदिवासियों की समस्याओं का हल है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं सवाल केवल वही पर्याप्त नहीं है। वह भी एक भावना का अंग है। यह कैसे कोई कह सकता है कि केवल मुख्यमंत्री बन जाय तो उसे सब चीजें मिल जाएगी ऐसा कैसे हो सकता है।

प्रश्न : पिछले दिनों इन्दौर सम्मेलन में खास तौर से केसरीजी ने अपने भाषण में इस चीज को एक मुद्दा बनाया। अफसोस तो यह कि आने वाले चुनाव में भा.ज.पा. के राम के मुकाबले कॉंग्रेस गाँधीजी को खड़ा करना चाहती है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कॉंग्रेस अब गाँधीजी को खड़ा करना चाहती है, ऐसी बात तो सोचना ही गलत है। क्योंकि कॉंग्रेस गाँधीजी के समूचे व्यक्तित्व के ही आवरण में हैं। इसलिए उनको हम नए सिरे से क्या खड़ा करेंगे ये बात जरूर है कि उनके कई ऐसे पहलू हैं जो कि नजरअँदाज होते रहे हैं। लेकिन अब चूँकि ये बात सपष्ट होने लगी हैं गाँधीजी का ये जो गाँधीजी के व्यक्तित्व की परिधि थी, जिसका कि अब सभी को अँदाज भी हो रहा है। स्वीकार भी कर रहे हैं, इन परिस्थितियों में कॉंग्रेस गाँधी जी की बात करती है तो मैं समझता हूँ कि वह एक तरह से स्वाभाविक भी है, और राजनैतिक रूप से आवश्यक भी है।

प्रश्न : ऐसा क्यों लगता है कॉंग्रेस को, यह भय है कि गाँधीजी उनसे छिन जाएँगें या कोई छीनने की कोशिश कर रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: कॉंग्रेस को भय हो या न हो, गाँधी को कोई एकाधिकार में नही ले सकता न कॉंग्रेस ले सकती है।

जब काँग्रेस ही नहीं ले सकती है तो और कौन ले सकता है। ये तो खैर ऐसी बात है लेकिन जो प्रयास होते हैं, वह तो अभी भी हैं। केसरीजी का जो मुख्य बिन्दु था वह मीडिया ने भी ठीक से पिकअप नहीं किया। मेरे ख्याल से उन्होंने ध्यान आकर्षित किया कि जिन लोगों के ऊपर गाँधी जी की हत्या करने का दोष है, आज वे तो गाँधी की सार्थकता को स्वीकार करके सार्वजनिक मंच पर उनके बारे में कहना चाहते हैं। एक तो यह पहलू है। इस पर विचार करना चाहिए। इस हद तक ईमानदारी से किया हुआ काम और दूसरा उसका ये भी पक्ष है कि वो लोग तो ऐसा कर रहे हैं, लेकिन जो गाँधी जी से जुड़े रहे, वे क्या कर रहे हैं। मेरी समझ में तो दोनों बातें उसमें हैं।

प्रश्न : लेकिन आजादी के 50 सालों में दो बहुत महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। खास तौर से इन 50 साल में कि क्या वजह है देश की आजादी की 50वीं सालगिरह सारा देश मना रहा है। तब एक गैर काँग्रेस सरकार के प्रधान मंत्री ने लाल किले से झंडा फहराया और दूसरा जिनको कि गाँधी का हत्यारा कहा जा रहा है और आरोपी कहा जा रहा है वो आजादी की स्वर्ण जयंती पर रथ यात्राएँ निकालते हैं। तो ऐसी कौन सी बात रह गई कि काँग्रेस जिसके पास कि आजादी के आँदोलन की इतनी समृद्ध विरासत थी, वो इन 50 सालों में ही इस दशा को पहुँच गई।

श्री अर्जुनसिंह: अब वह तो एक बहुत लम्बा विषय है। रह गया काँग्रेस और गैर काँग्रेसी प्रधान मंत्री। यह तो देश की प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का परिणाम है। उसमें किसी को इंगित करके कोई दोष नही दिया जा सकता है। यह पिछले लोक सभा चुनाव में काँग्रेस को बहुमत नहीं मिला। तो प्रधान मंत्री तो कोई बनेगा ही। बी.जे.पी. का नहीं बन पाया कम से कम इतना तो काँग्रेस ने किया उसके अलावा जो भी बन रहे हैं, सो बनेंगे। उसमें कौन क्या कह सकता है।

प्रश्न : आजादी के समय मैं नही कहता जरा सोचिए कि कोई भी कार्यकर्ता पहले पार्टी की विचारधारा और उसके उद्देश्य से वाकिफ होता था। फिर सोचता था आज लोग विपरीत रूप से पार्टी से जुड़ जाते हैं। लेकिन पार्टी विचारधारा से और उद्देश्य के प्रति उनका कोई लगाव या झुकाव दिखाई नहीं देता। इसके बारे में आपका क्या कहना है? कोई ट्रेनिंग केम्प या विचार-धारा काँग्रेस की ....

श्री अर्जुनसिंह: विचारधारा से शून्य होकर काँग्रेस पार्टी जिन्दा ही नहीं रह सकती। और जो बात आप कह रहे हैं कुछ हद तक वह सही है। और जो पार्टी के लिए कमजोरी आई है, उसके लिए ये भी कारण है कि हमने विचारधारा को गौण कर दिया और व्यक्तियों को बिना किसी उसके स्वीकार कर लिया। उन व्यक्तियों से जो विकृतियाँ हुई, उसका असर पार्टी पर हुआ। विचारधारा के बगैर तो काँग्रेस कुछ कर ही नहीं सकती।

प्रश्न : नहीं मेरा यह कहना था कि इसके लिए पार्टी के वर्कर्स की कोई ट्रेनिंग वगैरा ताकि वह उसको जान सकें?

श्री अर्जुनसिंह: होना चाहिए जो कार्य योजना बनी है वह उसका महत्वपूर्ण अंग है।

प्रश्न : दो मुद्दे और करेण्ट हैं। जैन कमीशन की रिपोर्ट पर काँग्रेस का रूख क्या है? किस तरह से हुआ है और संयुक्त मोर्चा सरकार का कोई रिस्पांस भी दिखाई नहीं दे रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जैन कमीशन की रिपोर्ट जो प्रस्तुत हुई है। उसको लोक सभा के पटल पर रखने की माँग

तो कॉंग्रेस वर्किंग कमेटी ने ही कर ली है। अब उसके बारे में और कुछ तो कहने की आवश्यकता है नहीं। निश्चित रूप से जब वो समय आएगा लोक सभा की बैठक होगी तो इस मुद्दे पर पार्टी जोरदार तरीके से हस्तक्षेप करेगी। अभी कुछ पहलू जाँच के लिए बचे हुए हैं। खास तौर से षडयंत्रकारी पहलू उस संबंध में बहुत से दस्तावेज जिनकी आवश्यकता थी, वो दस्तावेज कमीशन को दिए नहीं गए और इस विषय पर कॉंग्रेस अध्यक्ष केसरीजी ने 11 जनवरी 97 को तात्कालीक प्रधान मंत्री जी दैवगौड़ाजी को एक पत्र लिखा था। उसमें एक सूची शामिल की थी, कि अमुक-अमुक दस्तावेज जैन कमीशन को इस षडयंत्र की जाँच को सही निष्कर्ष तक ले जाने के लिए आवश्यक है और उनको दिया जाना चाहिए। मैं यह नहीं कह सकता कि उसमें से कितने दिए गए कितने नहीं दिए गए, कुछ शेष हैं, मैं ये जानता हूँ। तो ये दस्तावेज भी जैन कमीशन को उपलब्ध कराना आज के शासन की जिम्मेदारी है। क्योंकि तथ्यों को सामने न आने देना अपने आप में अलग एक मतलब रखता है। कवरअप की बात कही जाती है न, वह इस संदर्भ में कही जाती है। मैं तो नहीं समझता गुजरात सरकार की उस कवरअप में कहीं भी कोई उसकी दिलचस्पी है। लेकिन दिलचस्पी नहीं है, यह तो मैं मानता हूँ लेकिन उपलब्ध भी तो होना चाहिए। कमीशन को दें तब तो निष्कर्ष कमीशन निकालेगा हम थोड़ी माँग रहे हैं और किसी को देने की जरूरत नहीं है।

प्रश्न : आप क्या सोच रहे हैं कि इसको लेकर सँयुक्त मोर्चा सरकार किसी दबाव में है?

श्री अर्जुनसिंह: अब कल्पना वाली बात करने की जरूरत नहीं है। ये तो यथार्थ की बात है। इस मामले में जिसको जो कुछ कहना है कहें। आजकल यही प्रश्न सबसे ज्यादा हाईलाईट हुआ है, जो मैंने आपको बताया है।

प्रजातंत्र की मान्यताओं के लिए संघर्ष करना है

24 अक्टूबर 1997 शिखरवार्ता के श्री त्रिलोक दीप के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न : उत्तर प्रदेश की घटना को लेकर जिस तरह से कल्याण सिंह जी ने विश्वास मत लेने के लिए विधान सभा में जो कुछ हुआ और उसके जो परिणाम हुए। एक तो इसके बारे में किस तरह की दिशा की ओर ये चीजें इंगित करती हैं? दूसरे केन्द्र सरकार ने जो वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू करने की राष्ट्रपति से सिफारिश की थी और राष्ट्रपतिजी द्वारा वापस भेजा जाना और फिर केन्द्र सरकार द्वारा निर्णय लेना ये चीजें किस तरफ इशारा करती हैं? आपसे बढ़िया कोई विशेषज्ञ नहीं बता सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं खैर ऐसी बात नहीं है। असल में हम लोग हरदम अपने हित की बात को अपने तरीके से देखकर और समुचित परिस्थितियों को उसी में ढालने की कोशिश हरदम करते हैं। अगर हम प्रजातांत्रिक मान्यताओं और प्रक्रियाओं के संदर्भ में इन घटनाओं को देखें तो सही बात उभरकर सामने आएगी। अब यहाँ कहा जा रहा है कि भाजपा ने बहुत अच्छा किया और प्रजातंत्र की रक्षा हो गई, यही दर्शाया जा रहा है। लेकिन सही परिप्रेक्ष्य में तो यह बात है कि मान्य प्रजातांत्रिक परम्पराओं को और स्वयं अपने दिए हुए वचनों का उल्लंघन करके दूसरी पार्टियों में डिफेक्शन कराके कल्याण सिंह, मुख्यमंत्री बन गए। इसके बारे में कोई कुछ नहीं बोलता। इस प्रकार का रूख लोगों का जो अखबारों में छपता

है, बड़े-बड़े इन्टलेक्चुअल बात करते हैं। उसकी तरफ कोई ध्यान ही नहीं देता। अब रही बात सेकेण्ड स्टेज की जो गवर्नर ने रिकमेण्ड किया और पहले इन्होंने माना। मैं तो समझता हूँ कि अगर ऐसी बात थी, तो यू.एफ. को मानना ही नहीं था, इतना तो केबिनेट पर उससे हम अपेक्षा करते हैं कि यह जो बाद में ज्ञान हुआ, राष्ट्रपति के कहने पर। मैं समझता था कि ये ज्ञान पहले नहीं हो सकता था और राष्ट्रपति ने तो अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी निभाई है जो विवेक पर ही होगी उसमें किसी और के हस्तक्षेप का तो सवाल ही नहीं उठता।

प्रश्न : क्या यह अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: राष्ट्रपति की बात तो बिल्कुल अभूतपूर्व है। मैं समझता हूँ कि यही अपेक्षा राष्ट्रपति से सब करते हैं कि जहाँ कोई उनके नज़र में उनके विवेक से जो बात सही दिखे उसे वे करें।

प्रश्न : इसमें राष्ट्रपति का इतना प्रभाव है या दबदबा है कि एक स्वतंत्र भारत में पहली बार केबिनेट ने इस तरह का कोई फैसला बदला है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं कोई दबदबा या प्रभाव का सवाल नहीं है, सवाल प्रक्रिया का है। ये यूनाइटेड फ्रंट ने पहले ही सब बातें सोचकर अपनी राय बनाई होती तो दोबारा उसको फिर बदलने की नौबत ही नहीं आती। क्योंकि संविधान के मुताबिक दोबारा फिर वही सिफारिश करते तो राष्ट्रपति जी बाध्य थे, उसको मानने के लिए।

प्रश्न: यह जो प्रक्रिया शुरू हो रही है जिसकी तरफ आपने इशारा भी किया है यह हम लोगों को कहाँ ले जाएगी। कहीं कोई पार्टी रह भी पाएगी या इस तरीके से शुरू हुई जोड़-तोड़ की राजनीति ही चलती रहेगी?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए यह सब पार्टियों के सामूहिक विवेक पर निर्भर करता है। एक पार्टी कोई इसको दुरुस्त नहीं कर सकती। यदि सब पार्टी और उसके नेता चाहते हैं कि स्वस्थ राजनीतिक प्रक्रियाएँ स्थापित हों और उन पर अमल हो तो सबको इस बारे में सोचकर और फैसला करना पड़ेगा। हो क्या रहा है कि हर पार्टी प्रजातांत्रिक मूल्यों की दुहाई तब देती है, जब वह स्वयं उन मूल्यों का अवमूल्यन करके फायदा उठा लिया करती हैं। यह अब नहीं चलेगा और इस देश के लोग इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे यह मेरी अपील है।

प्रश्न: आपकी अपील बहुत अच्छी है और मौजूँ भी है। लेकिन आज की पार्टियों में भीतर तक जो गुटबाजी हो रही है, उसका असर भी कुछ पड़ रहा है। अभी काँग्रेस में जो उत्तरप्रदेश में हुआ है, बताया तो यह जाता है कि भीतरी गुटबाजी के कारण हुआ है। आप इस मामले में क्या कहते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए गुटबाजी तो हर पार्टी में हरदम रही है। काँग्रेस में भी रही है, आज से नहीं आजादी की लड़ाई के समय भी गुट थे और ये गुट अपना अँदाज भी रखते थे और उनकी वजह से परिस्थितियाँ भी निर्मित होती थीं और एक दिशा भी बदलती थी और बनती थी। कई ऐसे उदाहरण हैं, एक दो ही उदाहरण काफी हैं। गाँधीजी और सुभाष बोस में ही मतैक्य नहीं था, सुभाषजी चुनाव लड़ गए गाँधीजी की इच्छा के विरुद्ध, उस समय पट्टाभि सीतारमैया जी को हरा दिया। गाँधीजी ने कहा कि मैं इसको उचित नहीं मानता। मैं इस वर्किंग कमेटी में नहीं रहूँगा। ऐसी उन्होंने अप्रसन्नता व्यक्त की, तो सुभाष बोसजी ने इस्तीफा दे दिया, तो दोनों बातें हो गईं। इसी तरह से पुरुषोत्तमदास टण्डन

और पंडित जी का हुआ। पोस्ट इंडीपेन्डेंस में तो ऐसा नहीं है कि मतभेद नहीं हैं। क्या हो गया है कि आज लोग अपने व्यक्तिगत एजेंडा को पार्टी और देश के एजेंडा पर लादना चाहते हैं। ये दुर्भाग्यपूर्ण है। चाहे जिस पार्टी में हो, हमारी पार्टी में भी है। इसको किसी प्रकार से खत्म करना होगा। वरना देश का प्रजातंत्र खतरे में पड़ जाएगा।

प्रश्न: मैं आपसे बिल्कुल सहमत हूँ, जिस तरफ आपने इशारा किया है। तब मूल्य थे, स्वस्थ परम्पराएँ थीं, एक दूसरे को समझने समझाने की शक्ति थी और अब उसका निरन्तर ह्रास होता जा रहा है और ये शायद सभी पार्टियों में हो रहा है। अब आप अपनी पार्टी की ही बात लें। आप काँग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर भी हैं और आपका काफी दबदबा भी है। तो वो आप किस दृष्टिकोण से देखते हैं कि क्या आप समझते हैं कि नारायण दत्त तिवारी जी के वहाँ जाने का असर हुआ है?

श्री अर्जुनसिंह: इस प्रकार के विश्लेषण को मैं किसी प्रकार का महत्व नहीं देता। मैंने पहले ही कहा आपसे कि यदि अब भी काँग्रेस के अन्दर पर्सनल एजेंडा पार्टी एजेंडा से महत्वपूर्ण मानते रहेंगे लोग तो आज नारायण दत्त तिवारी हैं, कल कोई और होगा। यह कोई मतलब नहीं रखता है। अब तो इस बात को साफ होना पड़ेगा की पार्टी के हित में और देश के हित में, पहले देश उसके बाद पार्टी इस दृष्टिकोण से हमारे आचरण को करने में हम कहाँ तक सफल होते हैं नहीं होते, फिर पार्टी का भविष्य नहीं है इसमें भूल भूलैया में पड़ने की जरूरत नहीं है लेकिन मैं समझता हूँ कि पार्टी के अधिकांश लोग खास तौर से सामान्य जो कार्यकर्ता हैं, वो तो इसको मानने के लिए तैयार नहीं हैं। कुछ नेताओं के बीच में भी अपने मन को नहीं संभाल पा रहे हैं। अपना पर्सनल एजेंडा पार्टी के ऊपर जरूरी है। इसके विरोध में मैं आवाज उठाता रहता हूँ। कोशिश करूँगा इतना ही मैं कर सकता हूँ। उसमें कोई कसर तो नहीं रखूँगा।

प्रश्न: नेताओं की बात तो आपने खूब कही। याद इंदौर की आ रही है, जहाँ आप लोग तीन दिन के लिए जुड़े थे। मंच पर सभी नेता एक साथ जुड़े थे। मैं भी मध्यप्रदेश का हूँ। मध्यप्रदेश में इतने नेता लोग हैं। मंच पर जब आप लोग बैठते हैं तो मतैक्य होते हैं, उसके बाद जब हम अलग-अलग बोलियाँ बोलते हैं, तो उस वक्त क्या स्थिति बनती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ये बात आपने अच्छी कही। संकेत दिया। मतैक्य का मतलब अब नेताओं के बीच में मतैक्य से सीमित नहीं रहना चाहिए और इस बिन्दु को मैंने उठाया है। जो एक्शन प्लान बनाने के लिए समिति थी, उसमें उठाया है, एक्शन प्लान का अंग बन गया है और वर्किंग कमेटी ने उसको अप्रूव कर दिया है। वर्किंग कमेटी के फैसले का अंग बन गया है। अब जितने नेता मतैक्य की बात करते हैं, वे सचमुच में किस हद तक मतैक्य चाहते हैं ये टेस्ट होने वाला है। एक्शन प्लान के एक बिन्दु में ये कहा गया है कि पिछले चुनाव में वो भी स्थिति निर्मित हुई जिसमें बहुत से काँग्रेस के साथ नहीं शामिल किए जा सके। कहीं और चुनाव अपनी जगह ठीक है इसमें कोई डिस्टर्ब करने की जरूरत नहीं है, लेकिन ये लोग जो नहीं शामिल हो सके, इनको शामिल किया जाए। यह हमारी पार्टी की एकता के लिए जरूरी है। ये तो फैसला है अब प्रत्येक नेता इस पर या तो सहायक हो सकता है या बाधक हो सकता है। हमारे जो ग्रुप की बात आपने कही है। हमारे ग्रुप से बाहर के जो लोग हैं हम उनके बारे में कितने सहिष्णु होकर और उनको अपनी पार्टी में लेने के लिए तैयार

है और उसके लिए कोशिश करेंगे। इस पर निर्भर करेगा कि हम कितनी ईमानदारी से इस एकता के पक्ष में है।

प्रश्न: ये कौन तय करेगा?

श्री अर्जुनसिंह: ये पार्टी को तय करना है और कॉंग्रेस अध्यक्ष ने वर्किंग कमेटी में जब ये सवाल आया तो उठते-उठते उन्होंने यह अपील की। अखबारों में ये चीज दी नहीं गई। पता नहीं क्यों नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि इस दिशा में आप सब लोगों से उनका मतलब था कि जो वर्किंग कमेटी के मेम्बर थे, वर्किंग कमेटी के मेम्बर से मैं ये अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने स्वयं के आचरण से और एक्शन से यह स्पष्ट दिखा देंगे कि वे सबको साथ में लेकर चलने के इच्छुक हैं। शुरूवात तो वर्किंग कमेटी के मेम्बर से होगी। प्रत्येक वर्किंग कमेटी मेम्बर एक चुनाव की प्रक्रिया से आया है अपने-अपने प्रदेश में से। प्रदेश में से जो लोग नहीं आ पाए हैं उनको इस पार्टी से उसमें लाने में वो कितनी दूर तक पहल करते हैं, इससे स्पष्ट हो जाएगा।

प्रश्न: अध्यक्ष की अपील का कितना प्रभाव पड़ता है?

श्री अर्जुनसिंह: सवाल यह नहीं है प्रभाव पड़ता है, यह अब आगे पता चलेगा न। मैं भी एकता की बात कहता रहा हूँ। जब मुझे यह सवाल आए कि जो आज तक मेरे ग्रुप के साथ नहीं है हम उसको अपने साथ पार्टी में लाने के लिए तैयार नहीं हैं और एकता चाहते हैं ये दो.....मुँही बात कैसे हो सकती है।

प्रश्न: इंदौर से ही, अब हम सिरे से ही बात करना चाहेंगे, वहाँ तो ठीक ठाक है। सब लोग आए हुए हैं, आप भी हैं, माधवरावजी भी है, विद्याजी भी हैं, वोराजी भी हैं। बाद में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाने लगी। ये क्या मुख्यमंत्री या वहाँ की सरकार को कुछ निर्देश देना था या कुछ बताना था?

श्री अर्जुनसिंह: किसी ने कोई ऐसी बात तो वहाँ नहीं कही, देखिए इसमें आज के संदर्भ में हम लोगों का दृष्टिकोण और जो एक्शन होना चाहिए वो बहुत साफ है। हम मानकर चलते हैं सभी जो कॉंग्रेस के लोग हैं, नेता हों, कार्यकर्ता हों वो अगले साल नवम्बर में होने वाले विधान सभा चुनाव में मध्यप्रदेश में भाजपा को हराकर फिर से प्रदेश में कॉंग्रेस की सरकार बनाने के पक्षधर हैं। ये तो मानकर चलते हैं। अगर ऐसा है जैसा मैं मानता हूँ तो हमें क्या करना है। सरकार कैसी है, मंत्रिमण्डल कैसा है, काम कैसा कर रहे हैं, इसकी जिम्मेदारी दिग्विजय सिंह पर है, मुख्यमंत्री पर है। वे आँकलन करें कि किस हद तक उनके मंत्रिमण्डल के कार्यकलापों से अगले साल होने वाले चुनावों में कॉंग्रेस को पुन: बहुमत पाना संभव होगा या मुश्किल होगा, यह जिम्मेदारी उनकी है, वे फैसला करें और इस फैसले के लिये कोई 6 महीने नहीं लगने चाहिए। यह फैसला उनको इसी साल के अन्दर-अन्दर कर लेना पड़ेगा और पार्टी के लोगों को आश्वस्त होना पड़ेगा कि जो फैसला उन्होंने किया है वह पार्टी के हित में है।

प्रश्न: उनका तो यह कहना है कि जो बड़े नेता हैं, वे इस तरह के फैसले नहीं करने देते है।

श्री अर्जुनसिंह: बिल्कुल गलत है, मैं तो कह रहा हूँ कि करें फैसला कौन उनको मना करता है।

प्रश्न: अर्जुन सिंह जी हम दिग्विजय सिंह जी की बात कर रहे थे।

श्री अर्जुनसिंह: ये उनका कहना कि उनको उनकी सरकार को ठीक करने में, सुधारने में हम लोग बाधक है, मैं समझता

हूँ कि यह तो गलत है। कोई बाधा नहीं कोई एतराज नहीं, किसी को कोई किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है, करें तो।

प्रश्न: जब पचमढ़ी में उनके मंत्रिमण्डल की बैठक हुई और जिसमें सुभाष यादव ने तेवर अपनाए कि मैं पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टी में चला जाऊँगा। इसको भी इशारों से देखा जा रहा था। माना यह जाता है कि सुभाष यादव आपके बहुत करीबी हैं, कहीं इस तरह की बात करने से पहले आपसे बात हुई हो, सलाह हुई हो, आप क्या कहते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो इस तरह की बात करने की कोई सलाह किसी को दे ही नहीं सकता। मुझसे सुभाष यादवजी की कोई बात नहीं हुई है। ऐसा प्रश्न तो उठना ही नहीं चाहिए। यह प्रश्न जरूर उठना चाहिए कि इस तरह की भाषा इस्तेमाल करने की क्या वजह है, उन्होंने ऐसा क्यों कहा। खास तौर से इसी प्रकार की शिकायत करते-करते हमारे प्रदेश के वरिष्ठ साथी अरविंद नेताम पार्टी छोड़ गए। पहले वो भी यही कहते थे, उसको नजरअँदाज किया गया उनको लगा कि इस पार्टी में हमारा कोई स्थान नहीं है। उस पर सोचना ज्यादा जरूरी है। मुझे यह खुशी है कि मुख्यमंत्री में केवल सुभाष यादव का नहीं करीब-करीब उनके मंत्रिमण्डल के सभी मंत्रियों ने करीब-करीब इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए। भाषा में अन्तर हो सकता है भावना में कोई अन्तर नहीं था। तो अब उन्होंने कहा भी है कि अब इसके बाद इसको ठीक करूँगा, जरूरत पड़ी तो सर्जरी करूँगा। मगर बात सँभली नहीं। तो हम तो उस दिन का इंतजार कर रहे हैं कि ठीक करें जरूरत पड़े तो सर्जरी करें। उसमें हम उनके साथ हैं।

प्रश्न: हाँ ये तो आपके नेता जो लोग ये जानेंगे कि आपका आश्वासन दिग्विजय सिंह को है तो उनको तो इस मार्ग में परेशानियाँ रहती हैं तो पता नहीं वहाँ पर तो केन्द्र में मध्यप्रदेश के कितने लोग हैं, लेकिन तब लोग टाँग खींचते रहते हैं। ऐसा कुछ उनके दिमाग में है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए वो पार्टी के लिए और साथ ही साथ मध्यप्रदेश के लिए जो भी सही कदम उठाएँगे, मैं ब्लैंकेटली उनको आश्वासन देता हूँ लेकिन ये नहीं होगा कि काम तो किया जाए कुछ लोगों की स्वार्थ पूर्ति के लिए और मुँह सबका बंद किया जाए कि साहब आप मेरे बीच में टाँग मत अड़ाईए, ये नहीं होगा।

प्रश्न: ठीक बात है। अर्जुन सिंहजी जो जिस तरीके का घटना चक्र बन रहा है, जो भी तोड़-फोड़ हो रही है, कॉंग्रेस में भी हो रही है, बी.एस.पी. में भी हो रही है, बी.जे.पी. में भी इक्का-दुक्का लोग निकल रहे हैं तो किस तरीके से राजनैतिक समीकरण बन रहे हैं या यह किस तरफ ईशारा करते हैं, इस तरह का बनने वाला समीकरण।

श्री अर्जुनसिंह: ये देखिए कई दल की मान्यताएँ जिसे कहते हैं मेल्टिक पाट है उसमें है। ऐसी इस तरह की बातें सामने नजर आ रही है। मेरा ख्याल है कि ये बहुत थोड़े समय के लिए ऐसी स्थिति है। कुछ तो राजनीतिक दल और पार्टियाँ और नेता इसको ठीक करेंगे। उससे भी ज्यादा भरोसा तो मुझे देश की जनता पर है। अगर पार्टियाँ और नेता लोग इसको ठीक नहीं कर पाए तो इस देश की जनता जागरूक है, मतदाता जागरूक है। वो इसको ठीक करेंगे।

प्रश्न: अर्जुन सिंहजी काफी अर्से के बाद आप फिर से अब कॉंग्रेस कार्य समिति के सदस्य बने है, आए

हैं। और आपको कई तरह के काम भी दिए गए हैं। जैसे कि आपने इशारा भी किया था कि प्रारूप समिति काँग्रेस के भी आप सदस्य थे। लेकिन फिर भी कहीं न कहीं यहाँ पर चर्चा रहती है कि आपकी जो भूमिका या आपको जो भूमिका दी जानी चाहिए या तो आपको मिली नहीं या वो कर नहीं रहे हैं और कहीं न कहीं डिसीडेंस्ड वाली बात सामने आती है। अब किस क्षेत्र में आती है आप इसके बारे में बता सकते हैं। इसकी क्या वजह हो सकती है, कुछ भ्राँतियाँ भी हो सकती हैं, कहीं सच्चाई भी हो सकती है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि भ्राँति ही ज्यादा है। यही भ्राँति ही हमारे भूतपूर्व काँग्रेस के अध्यक्ष नरसिंहरावजी को भी थी। मैं तो सलाह देता था कि काँग्रेस को कैसे मजबूत किया जाए। काँग्रेस कमजोर हो रही है, उसको कैसे रोका जाए। ये तो डिसीप्लीन से नहीं है। लेकिन यहाँ जो एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होती है जिस स्तर पर कि चारों तरफ कान भरने वाले लोग ज्यादा होते हैं, वो नेता को बताते हैं कि ये जो कह रहे हैं आपको एंब्रास करने के लिए कह रहे हैं। आप तो स्वयं पूरी तरह से सक्षम हैं, काँग्रेस को ठीक करने के लिए। क्यों कोई इस तरह का सुझाव दे। इसके शिकार हो गए श्री नरसिंहरावजी और उससे भी बढ़कर शिकार हो गई काँग्रेस पार्टी। मेरा ये मानना है और मुझे विश्वास है कि इस तरह की स्थिति केसरीजी के साथ नहीं होगी क्योंकि उन्होंने दुर्दशा काँग्रेस की देखी है और काँग्रेस को मजबूत करने का जो संकल्प है, उस पर किसी का भी अविश्वास नहीं है, कितना कर पाएँगे, नहीं कर पाएँगे वह तो अलग बात है लेकिन उनका संकल्प दृढ़ है। क्या करना चाहते हैं इस पर कोई संदेह नहीं है। तो मैं आशा करता हूँ कि डिसीजन-डिसीजन्स की बात कानाफूसी वाले लोग करते हैं। वो अपने आप खत्म हो जाएगा।

प्रश्न: लेकिन कुछ तो तथ्य इस मामले में सामने आते हैं। कलकत्ता में सी.डब्लू.सी. के इलेक्शन का...

श्री अर्जुनसिंह: नहीं उस हद तक लोग सफल हो गए, तो मैं वही तो आपसे कह रहा हूँ कि उस हद तक कान भरने वाले लोग सफल हो गए। लेकिन चुनाव होने के बाद आज जो हमारे केसरीजी के संबंध हैं, मैंने उनको उल्हाना नहीं दिया कि आपने क्यों हमारा पैनल में नाम नहीं रखा। मैंने तो एक बार भी नहीं कहा। चुनाव के नतीजे आने के बाद यही कहा कि सोनियाजी का आशीर्वाद और केसरीजी की सद्भावना इसकी वजह से मैं जीत गया और जीतने के बाद मैंने रास्ते में ही प्लेन में ही वहाँ से लौटते वक्त उनसे कहा कि काँग्रेस के लिए जो कुछ भी करना चाहेंगे उसमें मैं पूरी तरह से आपके साथ हूँ और जब से मैं कोशिश कर रहा हूँ। तो ये चीज आज पैदा नहीं होने देना चाहिए जो लोग आज काँग्रेस के हित की बात सोचते हैं वहाँ फिर वही पर्सनल एजेंडा आ जाता है तो मैंने अपने पर्सनल एजेंडा को पार्टी पर न तो पहले लादा है न आज लादूँगा और लोग क्या करते हैं वह तो लीडर को देखना है।

प्रश्न: गुजरात के मामले में क्या कहेंगे। जो बाघेला सरकार से एक बार आपने समर्थन वापस लिया, साथ में यह भी चस्पा कर दिया गया कि व्यक्ति बदल दें तो हम समर्थन देंगे।

श्री अर्जुनसिंह: वो लोकल लीडर्स पर छोड़ा गया है अगर लोकल लीडर्स ठीक समझते हैं तो उनको अनुमति दी गई है।

बी.जे.पी. ने अपने सभी वायदे तोड़े

25 अक्टूबर 1997 ग्वालियर में पत्रकारवार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न: उत्तर प्रदेश काँग्रेस पार्टी के विघटन के बारे में आपका क्या कहना है और किन कारणों से यह हुआ है?

श्री अर्जुनसिंह: ये विघटन नहीं है, सत्ता लोलुप लोगों की कवायद है। और ऐसी कवायद के बारे में कोई टिप्पणी करना ऐसे लोगों के महत्व को बढ़ाना है। उस पर मैं कुछ कहना नहीं चाहता। लेकिन जो एक भारतीय जनता पार्टी अपने लिए वातावरण बनाने का प्रयास कर रही है, जैसे बहुत बड़ा नैतिक कदम उठा हो और बाकी लोग उसमें बाधक बन गए हों। यही बी.जे.पी. ने यू.पी. में सार्वजनिक रूप से आश्वासन दिया था कि दल बदल विधेयक लेकर आएँगे पर न बी.एस.पी. पार्टी और न, अन्य किसी पार्टी ने वह किया वहाँ तो शुरूआत ही कुर्सी के बँटवारे को लेकर हुई। मैंने तो आज तक हिन्दुस्तान में ऐसा उदाहरण देखा ही नहीं। दुनिया में भी शायद कोई ढूँढने से मिलेगा जहाँ यह समझौता हो कि छ: महीने हम रहेंगे, छ: महीने तुम रहोगे। इससे बढ़कर और अवसरवादी कोई भी कदम नहीं हो सकता। छ: महीने के बाद जो भी स्थिति बनी उसमें बात नहीं जमी। यह स्थिति निर्मित हुई कि अगर नैतिकता का जरा भी छुआसा भी होता तो कल्याणसिंह को उसी समय इस्तीफा दे देना चाहिए था। लेकिन इस समय भारतीय जनता पार्टी हर कीमत पर कहीं न कहीं सत्ता हथियाना चाहती है और जितनी उनकी नैतिकता की दुहाई और लम्बे चौड़े सिद्धांतों का बखान है वह केवल लोगों को भ्रम में डालने का है। एक धोखे का वातावरण तैयार कर के ताकि लोग उसमें उलझ जाए। और वह देखने को मिल गया।

दूसरा इसका पहलू यह है कि अभी छ: महीने भी नहीं हुए। जुलाई के लोक सभा के अधिवेशन में 6 या 7 दिन तक लोक सभा को चलने नहीं दिया गया इस मुद्दे को लेकर कि बिहार में लालू यादव के खिलाफ चार्जशीट दायर करने की अनुमति दी गई, इस वक्त तक दायर भी नहीं हुई थी। इसलिए उनको मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे देना चाहिए, ऐसे में कैसे मुख्यमंत्री रहेगा। और यहाँ पर श्री कल्याणसिंह न केवल उनके खिलाफ चार्टशीट दायर हो गई है बल्कि सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें कंटेम्प्ट के मामले में कंविक्ट किया है। सजा हुई है एक दिन की। वह सबसे बड़े नैतिकता के उदाहरण बन गए और चार महीने पहले लोक सभा में बी.जे.पी. ने जो कुछ किया उसका उत्तर प्रदेश में कोई असर नहीं होना चाहिए। इसलिए ये सब बातें केवल लोगों के बीच में भ्रम पैदा करने की चीजें हैं। काँग्रेस ने जो कुछ माँग की वह मेरी समझ में तो जो माँग राजनैतिक दायित्व की माँग हैं वो हैं। अब बाकी सरकार तो हमारी है नहीं, सरकार जो करना चाहती है करे। जहाँ तक राष्ट्रपति का सवाल है, राष्ट्रपतिजी ने जो परिस्थितियाँ उनके सामने रखी गई। उस पर उनका जो संवैधानिक आकलन था, उसको उन्होंने तय कर लिया। उसको सबने मान्य कर लिया और मानना चाहिए। राष्ट्रपति के खिलाफ तो किसी को कुछ कहने की गुँजाइश ही नहीं है।

प्रश्न: क्या उचित है उनका फैसला?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ इन परिस्थितियों में जो बातें उनको बताई गई। उस आधार पर उन्होंने फैसला किया।

प्रश्न: मंत्रि परिषद ने जो फैसला पहले लिया था।

श्री अर्जुनसिंह: अब मंत्रि परिषद के बारे में जितना कम कहा जाय उतना ही ठीक है।

प्रश्नः क्या वह निर्णय गलत था मंत्रि परिषद का?

श्री अर्जुनसिंहः अब यह तो वही बताए, पहले क्यों लिया और फिर गलत था कि नहीं था। जब पुनर्विचार के लिए राष्ट्रपति ने वापस भेजा। उस वक्त उनको बताना चाहिए था कि किन कारणों से हमने यह फैसला लिया लेकिन जैसा मैंने कहा कि उसको हम क्या कर सकते हैं।

प्रश्नः उत्तर प्रदेश के मामले को लेकर काँग्रेस कमजोर नहीं हुई, नेतृत्व को लेकर सवालिया निशान?

श्री अर्जुनसिंहः खैर सवालिया निशान किसी पर नहीं लगा है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि जो काँग्रेस में उत्तर प्रदेश में हुआ है वह अत्यंत क्षोभ का विषय है और ये हम सबको बहुत गंभीरता से विचार करने का विषय है। अभी तक लोग काँग्रेस से टूटकर भारतीय जनता पार्टी में नहीं गए हैं। ये पहली घटना है इसलिए हमें इसको काफी गहराई से लेना चाहिए और उस पर समुचित रूप से पार्टी को सतर्क होकर काम करने की जरूरत है।

प्रश्नः काँग्रेस सम्मेलन के बाद यह चर्चा आम हो गई थी की दिग्विजयसिंह जी को बदला जा रहा है, वो कहाँ तक सही है?

श्री अर्जुनसिंहः अब तो हमारा लक्ष्य है कि 98 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी यहाँ का नेतृत्व परिवर्तन न कर दे। काँग्रेस को वह बचा लें तो सब तीसमारखाँ माने जाएँगे। उसके पहले पैतरा भाँजने से कोई मतलब नहीं निकलता। और उसके लिए ही सबको कोशिश करना चाहिए। नेतृत्व परिवर्तन की बात काँग्रेस अध्यक्ष के कार्य क्षेत्र की बात है, वह करेंगे, नहीं चाहेंगे नहीं करेंगे। हम लोग सिर्फ बात ही करते रहे और परिवर्तन कर दे बी.जे.पी.।

प्रश्नः आप चाहते हैं कि दिग्विजयसिंह जी के नेतृत्व में चुनाव हो।

श्री अर्जुनसिंहः किसी के नेतृत्व में भी हो काँग्रेस निकलकर आए। जिसमें मेरी दिलचस्पी है, किसी के नेतृत्व में मेरी दिलचस्पी या किसी के खिलाफ मेरी रुचि नहीं है।

प्रश्नः आपको ऐसा नहीं लगता कि केसरी साहब के प्रस्ताव पर रिफलेक्ट करेगा।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं केसरी जी अध्यक्ष हैं जिस समय से हुआ है वह तो यथार्थ है इसको कैसे कोई इंकार कर सकता है। लेकिन इसमें केसरी जी को दोष देना मैं समझता हूँ कि न तो व्यावहारिक है और न यथार्थ रूप में ऐसा कोई प्रश्न है लेकिन इसीलिए केसरी जी ने चूँकि उनकी अध्यक्षता के समय ये हुआ है सबसे ज्यादा सीरियसली तो उन्होंने ही लिया है और लेना भी चाहिए उनको?

प्रश्नः इस मामले में सी.पी.एम. का रोल क्या था। उन्होंने जिस तरह से सपोर्ट किया, प्रेसीडेण्ट साहब को?

श्री अर्जुनसिंहः नहीं देखिए प्रेसीडेण्ट को तो इस मामले में कतई लाना नहीं चाहिए। प्रेसीडेण्ट ने तो अपनी Constitutionally responsibility discharge की है जिसको कतई फाल्ट नहीं किया जा सकता। उन्होंने जो कुछ किया बिल्कुल सही किया। जो स्थिति सामने रखी गई उस पर जो उनके विवेक से उनको एक्शन लेना था, वो उन्होंने लिया। जहाँ तक और पोलिटिकल पार्टीज का सवाल है यह स्पष्ट है कि लोग ये सवाल पूछते हैं कि ऐसा आपने अपने विवेक से फैसला लिया तो आपने पहले ही क्यों रिकमेंड किया नहीं करना था पहले ही अगर वह प्रिंसपल की बात होती। अब गवर्नमेण्ट

तो जिनकी है उनकी है, अब वही जवाब देंगे। हम क्या जवाब देंगे। हम लोग तो इतना कह सकते हैं कि हम लोगों ने जो माँग की वह माँग हमारी एक सहसा माँग नहीं थी, सोची समझी माँग थी और उस माँग को हम आज भी सही मानते हैं। फैसला चाहे जो कुछ भी हुआ हो और ये एक विचारणीय विषय है कि यूनाईटेड फ्रंट की सरकार का अस्तित्व इस बात को लेकर ही स्थापित हुआ कि देश में सांप्रदायिक शक्तियों के साथ कैसे हम कारगर ढंग से संघर्ष कर सकते हैं और उनको केन्द्र की सत्ता से अलग कर सकते हैं। ये तो एक पोलिटिकल फैसला था न और इस पोलिटिकल फैसले में सबके सब लोग शामिल थे। यह सरकार ही उसी लिए बनी तो अब हम लोगों को काँग्रेस की तरफ से मैं बात कह रहा हूँ निश्चित रूप से एक गहराई से और विस्तृत रूप से यूनाईटेड फ्रंट की सरकार और उसके जो घटक हैं उनसे इस बारे में विचार-विमर्श और विचारों का आदान प्रदान होना आवश्यक है। इसलिए कि इस घटना से कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे इनमें से कई घटकों के लिए आज बी.जे.पी. महत्वपूर्ण नहीं है कि उसका मुकाबला करना है, कांग्रेस महत्वपूर्ण हो गई है मुकाबले के लिए उसको एण्टी काँग्रेस की संज्ञा दी जाती है। अब अगर एण्टी काँग्रेस नम्बर वन पर आ गया है तो फिर कम्युनल पार्टी के खिलाफ फाईट करना कहाँ चला गया।

प्रश्न: आप किसी पार्टी का नाम लेना पसंद करेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं सभी जो घटक हैं, मैं एक पार्टी का नाम क्यों लूँ सभी हैं। मैं तो ये कह रहा हूँ डायलाग होना जरूरी है और हम लोग ऐसा चाहेंगे कि ऐसा हो क्योंकि यह बात यहीं तो समाप्त नहीं होती है। कम्युनल फोर्सेस के खिलाफ एक मोर्चा बनाने का ये मतलब नहीं है कि कोई प्रधान मंत्री बन जाय, कोई पचास मंत्री बन जायँ। वह उसका तात्पर्य नहीं हो सकता। किया कैसे जाय ऐसे अवसर पैदा हो तब कौन सा कदम उठाया जाय, यह महत्वपूर्ण है। जो ऐसा समझते हैं कि सरकार बन गई तो इतना पर्याप्त है, सब कुछ, मैं तो ऐसा नहीं मानता। चलिए मैं तो ऐसा समझता हूँ कि चूँकि ये आपस में खुली बातचीत होती है, तो मैं समझता हूँ कि कोई न कोई रास्ता निकल आयगा।

प्रश्न: ऐसा लगता नहीं है कि क्षेत्रीय पार्टियों की एकता हावी होने लगी है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए हावी होने की बात तो एक सामान्य चर्चा की बात है। कौन हावी हो रहा है मैं तो थ्रेस्ट आफ द मेटर पर जा रहा हूँ ना, भाई आँध्र हो, तमिलनाडू हो, पश्चिम बंगाल हो, आसाम हो, कर्नाटक हो जो भी जहाँ हो इकट्ठा तो वे एण्टी कम्युनल प्लान पर हुए। वे उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसका फैसला तो होना चाहिए। या कि केवल सत्ता में बने रहने का वह बहाना है।

प्रश्न: इन पार्टियों को बढ़ाने के लिए....

श्री अर्जुनसिंह: देखिए देवगौड़ा से जो समर्थन वापस लिया गया यह भी एक कारण था हर चीजों के अलावा, अब ये दूसरी घटना हुई है। इसलिए काँग्रेस पार्टी के लिए ऐसा सोचना स्वाभाविक है। हम सरकार को गिराना नहीं चाहते, समर्थन वापस नहीं लेना चाहते ये तो बार-बार हमारे अध्यक्ष कह चुके हैं। हम सब उससे जुड़े हुए हैं। लेकिन जिस उद्देश्य से यह सरकार बनी है, वह उद्देश्य भी तो पूरा हो। जब उस पर कोई सवाल आए तो वह काँग्रेस को मारने पर आमादा हो जाय, इसका क्या मतलब है, ऐसा कैसा चल सकता है। इसलिए यह चर्चा का विषय होना चाहिए और मैं समझता हूँ कि

अध्यक्ष महोदय की गंभीरता को समझते हुए जरूर इस प्रकार की प्रक्रिया को शुरू करेंगे।

प्रश्नः पार्टी द्वारा उत्तर प्रदेश में काँग्रेस को मजबूत करने की बात कही जा रही है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए काँग्रेस को अगर उत्तर प्रदेश में मजबूत करना है, तो सर पकड़ कर रोने से तो होगा नहीं। ये मानकर चलना चाहिए कि चलिए जो कुछ हुआ सो हुआ जो गए सो गए लेकिन यही काँग्रेस खत्म नहीं हो जाती। जो काँग्रेस का जनाधार कम हुआ है, उस जनाधार को मजबूत करने के लिए जो कुछ भी फैसला हो, वह द्रुतगति से और बहुत ही तीव्रता से आना चाहिए। अपने आप ये सब चीजें भूतकाल की हो जायगी। और वही फैसला हुआ है। अब तिवारीजी अध्यक्ष बने हैं एक तरह से नई टीम बनाकर उत्तर प्रदेश की जनता के बीच में काँग्रेस की बात कहना शुरू करें।

प्रश्नः मध्यप्रदेश में राजनीतिक संघर्ष टल गया या अभी है।

श्री अर्जुनसिंहः अपने-अपने नजरिए से लोग संकट देखते हैं, उसकी परिभाषा करते हैं। और फिर उसके हिसाब से अपना-अपना उद्‌बोधन करते हैं। मैं तो यह मानता हूँ कि संकट तो नहीं लेकिन चुनौती देखी है और वह चुनौती है, सन् 98 के नवंबर में विधान सभा के चुनाव में उसको ध्यान में रखकर जो काम काँग्रेस को मजबूत करने के लिए हो फिर से काँग्रेस के प्रति मध्यप्रदेश की जनता का विश्वास प्राप्त करने का हो वही मुख्य और महत्वपूर्ण हो। इसमें जिसकी जितनी जिम्मेदारी हो वह अपनी जिम्मेदारी उठाए।

भारतीय प्रजातंत्र में राजनीतिक अस्थिरता

4 नवम्बर 1997 जयलोक, जबलपुर के श्री अजीत वर्मा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्नः देश की राजनीतिक स्थिति अस्थिर है। प्रजातांत्रिक मान्यताएँ, प्रतिबध्दताएँ नष्ट हो रही है। इस संबंध में आपके क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंहः काफी अस्थिर हैं सब मान्यताओं को चुनौती भी है और संकट भी है। ऐसे समय में सबसे पहले अपने ही विचारों को स्पष्ट कर लेना जरूरी होता है और फिर देश के प्रजातंत्र की दिशा क्या हो और क्या होना चाहिए। दूसरा यह कि जो प्रतिबद्धताएँ होती हैं राजनीति में उनका कोई मूल्य है कि नहीं है या सब सुविधा के आधार पर ही फैसला होना चाहिए, चाहे वित्त का हो या धन का हो। इस दौर से गुजर रहे हैं उसमें आम आदमी का सबका अपना-अपना योगदान है स्वयं करेंगे उस पर निर्भर करेगा आगे का।

प्रश्नः यह जो आपने चर्चा की हम लोग तो यह मानकर चल रहे हैं कि मानना चाहिए भी और स्पष्ट है कि यह आप पहले से कर रहे थे?

श्री अर्जुनसिंहः आभास तो था।

प्रश्नः उसी की कल्पना के तहत आपने एक वैचारिक प्रश्न किया था कि काँग्रेस को अपने रास्ते पर लौटाने की कोशिश के उसी परिप्रेक्ष्य में आपका जो ध्यान था आज आप क्या सोच रहे हैं कि काँग्रेस की दिशा आज क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए इसका विरोध तो कोई नहीं कर रहा है। इतना तो संतोष है।

प्रश्न: हम तो समझते है कि आपने 5-6 मुद्दे जो उठाए थे, आज कॉंग्रेस के सब लोग नीचे से ऊपर तक उन्हीं बातों की तारीफ कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: इसमें कोई व्यक्तिगत बात नहीं है। सवाल यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए भटकाव के इतने अवसर आते हैं कि भटकना स्वाभाविक रहता है। कॉंग्रेस भी भटकी, हम लोग भी भटके। मैं समझता हूँ कि समय नहीं है इन सब चीजों के लिए। एक तो पार्टी के अन्दर सभी प्रकार की रेखाओं को मिटाकर, भुलाकर कॉंग्रेसजनों की एकता एक सामान्य रूप से बनाई जानी चाहिए और अगर उसमें हम सीरियस नहीं हैं, आनेस्ट नहीं हैं, उसके आगे और किसी की बात का मेरी समझ में कोई मतलब नहीं है। क्योंकि जब कोई चीज बिखरने लगती है, तो जितना समेटा जाता है, वही तो सिमटती हैं। अगर हम सब बिखरने ही दें तो वह शक्ति बचेगी कहाँ से। लेकिन अभी भी कुछ पूर्वाग्रह हैं, लोगों की कुछ धारणाएँ हैं कि फलाना हमारे साथ हैं, फलाना हमारे साथ नहीं हैं। हमारा भी असर है, चार लोग इधर आ जाएँगे तो क्या हमारा असर कम हो जाएगा। ये सब दिक्कतें हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि अब नीतियों और उन कार्यक्रमों की अनिवार्यता है और मुझे तो यह विश्वास है कि यह अनिवार्यता कॉंग्रेस के अन्दर उभरकर आएगी उसको कोई रोक नहीं सकता और जो नेता उसको रोकने की कोशिश करेंगे वे इंरिलेवेंट हो जाएँगे।

प्रश्न: वोरा समिति की रिपोर्ट और संयुक्त मोर्चे की सरकार जिस दिशा में काम कर रही है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जहाँ तक वोरा कमेटी की रिपोर्ट की बात है उसमें तो आम सहमति है। वोरा कमेटी से मतलब उस मुद्दे से है क्रिमिलाईजेशन इन पोलिटिक्स अपराधीकरण से, अब उस मामले में तो कहीं कोई भी विचारों में भिन्नता नहीं है। सवाल यह है कि उसको किस तरह से कार्य रूप में परिणित किया जाय। उसमें हर पार्टी की अपनी-अपनी दिक्कतें हैं। दिक्कत वैसे कोई वैचारिक नहीं है, व्यावहारिक हैं क्योंकि हमारी पार्टी में 10 लोग जो हमारे चारों तरफ हैं उनमें से तीन उस प्रवृत्ति के हैं, तो उन तीन को हम कैसे अलग करें। ये एक विचार है और अगर वो चुने हुए लोग हैं, तो और भी दिक्कत है। हमारी मेजार्टी दो से बनी है तो तीन कैसे अलग हो सकते हैं और जहाँ तक जैन कमीशन का प्रश्न है, वह तो मैं समझता हूँ कि अगले लोक सभा सत्र में रिपोर्ट तो पेश होगी अंतरिम रिपोर्ट। उसको तो नहीं रोकेगी सरकार और भी क्या उसमें निकलकर आता है पता चलेगा क्या है उसमें?

प्रश्न: कॉंग्रेस की अभी जो स्थिति है। तरह-तरह के समाचार आते हैं। जैसे भारतीय जनता पार्टी ने किया जैसा उत्तर प्रदेश में उन्होंने किया है तो उससे फायदा लेकर केन्द्र में वैसा प्रयोग करने के बराबर संकेत मिलते हैं। कॉंग्रेस की क्या संभावना है क्या उसके टूटन की कोई संभावना है?

श्री अर्जुनसिंह: बी.जे.पी. ऐसी कोशिश करे तो उसमें तो कोई आश्चर्य नहीं है। यह भी संभव है कि थोड़े बहुत लोग इस मत के भी हों कि यहाँ तक क्यों न चले जायँ लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि आज जो पार्टी का स्वरूप है, केन्द्र में उसमें वैसी कोई बात होगी, जैसा मध्यप्रदेश में हुआ है।

प्रश्न: गुजरात में भी परिवर्तन हुआ। बाघेला जी का पारिख साहब के रूप में उसमें आपकी भी महत्वपूर्ण भूमिका है क्या? गुजरात के बारे में आपके विचार बताएँ क्या वह सरकार चलेगी?

श्री अर्जुनसिंह: गुजरात की स्थिति में दो महत्वपूर्ण बातें है केवल बघेलाजी के बदलने की बात तो पहले ही तब थी जब प्रेसीडेण्ट ने गुजरात में जाकर कह दिया था कि इनको बदलना है तो वह बदलना ही था। एक तो यह कि जिन आरोपों से बदलने की बात कही गई थी उनको, काँग्रेस ने वहाँ नेता बदले जाने की बात को नजरअँदाज नहीं किया और बाघेलाजी से और उनकी पार्टी ने यह स्वीकार करा लिया कि जितने भी निश्चित आरोप जिनके खिलाफ भी लगे हों उनको तुरन्त लोकायुक्त को भेज देना चाहिए। दूसरा स्टेंडिंग कमेटी बनी उसमें काँग्रेस के और उनके लोग रहेंगे। जितने नीति विषयक और महत्वपूर्ण प्रशासनिक निर्णय होंगे वह सामंजस्य के साथ हो और तीसरी बात जो निश्चित रूप से और किसी जगह नहीं हुई वह यह कि वहाँ जो बी.जे.पी. की सरकार है, वह काँग्रेस के मूल नीतियों और कार्यक्रमों को भी अमल में लाने की कोशिश करेगी वह भी सरकार के कार्यों का एक अंग होगा। वरना काँग्रेस केवल समर्थन देती है और काँग्रेस की नीति की कोई बात आई तो अपनी बात भले करा लें लेकिन काँग्रेस की बात तो होती नहीं है। इन चीज को उन्होंने माना है, देखें किस हद तक करते हैं।

प्रश्न: दो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश। पश्चिम बंगाल में जो ममता बेनर्जी के नेतृत्व में चुनौती वाले प्रश्न आ रहे हैं। क्या वहाँ काँग्रेस का उनसे समन्वय हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ममता बेनर्जी और स्वामी यह मूलत: नई पीढ़ी के नेता हैं। थोड़ा बहुत तो टकराव स्वभाविक हो जाता है लेकिन सही ढंग से बैठकर विचार विमर्श किया जाय करवाया जाय तो मैं ऐसा तो नहीं समझता कि स्थिति बिल्कुल दायरे के बाहर हो जाय।

प्रश्न: क्योंकि अभी तो ममता बेनर्जी ने यह माँग रखी कि सोनियाजी राजनीति में आएँ तभी...

श्री अर्जुनसिंह: वह माँग तो अपनी जगह ठीक है। लेकिन यह कहना कि सोनिया जी नहीं आती तब तक मैं बाकी काँग्रेसजनों से लड़ती रहूँगी। ये तो कोई तर्क नहीं है।

प्रश्न: उत्तर प्रदेश में नारायणदत्त तिवारी काँग्रेस के अध्यक्ष बने हैं। उससे वहाँ किसी तरह के परिवर्तन की सम्भावना बनती है क्योंकि उनके बनते ही वहाँ...

श्री अर्जुनसिंह: मेरा ख्याल है कि तिवारीजी वहाँ पर जरूर फर्क लाएँगे और सभी चीजें बहुत पहले से नहीं कही जा सकती। लेकिन जो उनका वहाँ पर वक्तव्य है उसका असर पड़ेगा और जो कुछ अभी हुआ है। एक तरह से गठित होने के बाद ही वातावरण में तब्दीली आती है जो लोग रह गए हैं वह सोचते हैं कि भाई चलो हमारी जिम्मेदारी है। मेरा तो ऐसा ख्याल है कि तिवारीजी जरूर कोई फर्क लाएँगे।

Unconditional support to united front government

6 दिसम्बर 1997 आउट लुक मेगज़ीन के श्री भीमरेजी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : Now in case of fight against BJP, U.F. and Congress, there have been two important forces together and this Jain Commission and specially the United Front reluctance to consider the Congress demand and a Government had to fall in that, you see any possibility of, you are joining hands on the limited issues, because there is a fear of hung parliament again?

Shri A. S.: See, we are not hardbound on and there is no frustration against anyone in the U.F. but they must also understand the congress. Congress is not an available handmade as and when required, if we did not approach the whole thing in that spirit. First test came when the U.P. Elections were held. We are really interested in check mating BJP. Atleast they could have worked out some kind of arrangement before that still the people of Uttar Pradesh did not give BJP a majority. After that again the second test came They could have supported a BSP, Congress government, U.F. could have done it. Again they refuse to do it. And it was, I think almost as a rebound from these, that this BJP-BSP alliance came about. Voicing high sounding principles, a high sounding metaphor does not make history. It is when you act in a certain situation that is what determine whether you are sincere or not sincere. So I don't think to condemn anyone for that, one must realise that these are the things which make their some thing reasonable and something unreasonable. I am quite hopeful that any constituency of U.F. they will and they have realised that lying anti-congressism is not the order of the day and that does come to pass I think there will be areas of agreement. There is no doubt about it.

Question : On one more question, I would like clarification, you have said many people like Sonia Gandhi there is a demand within the party but that you did not see collective expression of appeal from working committee.

Shri A. S.: See, I have always mentioned that she had to take a decision, the appeal has been made by the congress President in public.

Question : To day is December 6th, so what is this day mean for he country, for the congress party and for you.

Shri A. S.: For the country it is very sad reminder, how personal agendas can disturb the unanimity of a nation, pause a threat to its integrity and create unsurmountable some times barriers between a section of the people and another but I hope that this has become a reminder only not a reality again. So far as, it is for the party, I do believe and I hope our party is correct and the party has learnt its lesson in this matter. And never again shall it do anything where the intention of the congress party in matters of some fundamental issues will be doubtful. So for as my personal thinking is concerned personally my view is nothing in respect of this.

Question : Your political line has been effected by this ....

Shri A. S.: Yes, I know, but for me it is continuation of commitment, which have become deeper and deeper, so long as I have to stand by to it. I will do it. For that only I can pray to God.

Question : You see, Mr. L.K. Advani, made a statement on the 4th of this December, if Muslims forward a plea then he will be willing to negotiate on behalf of the Hindus with the Muslims....

Shri A. S.: First thing is, that I hope everyone will reject, as they have rejected in the past, that Mr. Advani and his party is the sole representatives of the Hindus, it is very preposterous thing to suggest. Secondly what BJP and Advaniji And Vajpaiji says and now a days is so intimately connected with their vulgour lust for power. People does not know what is sincere and what is not. Spokesman of the party actually gave up the issue of Ram while in the run to get effort to get defection from the congress in the parliament. Ram was forgotten, another things were forgotten, so what is the sanctity of their words and their commitment.

Sonia factor

8 दिसम्बर 1997 बी.बी.सी. लन्दन के विशेष संवाददाता श्री जार्ज अरने को दिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : I want to ask you regarding Sonia factor can you tell me something regarding Sonia .... herself played a part in the central decision of congress party to withdraw support from U.F. Government?

Shri A. S.: Contrary to the general perception the fact is that she has not even suggested such a thing to anybody in the congress party.

Question : So, why has congress party taken such a strong action on the basis of the reports, dealing with the assassination of her husband?

Shri A. S.: You, see, that is actually something which people can not understand. Rajiv Gandhi was her husband but apart from that he was also the congress Prime Minister of this country, he also was the President of the Indian National Congress, taking part in the election campaign when he was assassinated. So it would be incorrect to say that the congress took this decision only because he happened to be the husband of Sonia Gandhi, I think this will be clearly understood.

Question : How it is important for the congress to get Sonia Gandhi in to act actively in the compaign as Mr. Kesri is saying in to day's statement.

Shri A. S.: Well that is something which she has to decide, and congress president has made a suggestion.

Question : You say decision but it is how important to the party?

Shri A. S.: Fairly if she decides to, then it will definetely be very very helpful to the party.

Question- Why is it that Sonia Gandhi, she is married into the Nehru Gandhi family but she is not a politician ....

Shri A. S.: You can not fully understand this unless you know the basic situation of India. I mean who can dispute that she was not born in this country, who can dispute that she married into the Nehru Gandhi family on that there can be not two opinion but having married

into the family as we in India have seen her. She has been able to live up to the expectations first of that family under all kind of circumstances..... because specially congress man.... that during the Janta Party government during 1977-78. When Mrs. Indira Gandhi was imprisoned in Tihad Jail for 7 days on a totally trumpet contact issue. It is Mrs. Sonia Gandhi who use to go to the jail .... Then after the tragic assassination. She was not in favour of Rajiv Gandhi to be in politics, well known but when Mrs. Indira Gandhi fell that she needed the help of Rajiv Gandhi after the unfortunate incident that took place of Mr. Sanjayji, inspite of her own inhibition and everything, she did not stand in the way. And when Mrs. Indira Gandhi was assassinated, it is she who took her to the hospital. Rajivji was not in Delhi. Then when Rajivji was assassinated, the Congress party in fact offered her the Presidentship of the party. All these are matters of record and I am not making up anything, she politely refused and since then in the last 6 years this is something which is perhaps, may not be very well understood in the west. But in India, going a long way have impackable behaviour and conduct as a widow of Rajivji, has won her both appreciation and also support in a very long has won her both appreciation and also support in a very long political arena. Now this being the background. The assassination enquiry, the manner in which it was handled allowed to drive on, prevented, sought to be round up. All this has happened in last 5-6 years. In this background, when ultimately the report came and on the basis of the evidence standard in the Commission by the intelligence agencies, by officials of the Government the commission has come to a certain conclusion. It is not an arbitrary thing or imagine something and sought to fit it into the recommendation. It is all based on the evidence. Now after that has come and the attitude that the U.F. Government took to it, we only wanted that well those people, the party that has been inducated the Ministers, belonging to that party should be asked to step down, appoint a juries panel, ask them to go into the evidence. If they clears them then even two months take them back. They took it up as it is of no consequence. Now, please understand what this country is. It is a matter in which the Congress party and the country mean feel to treat, Rajivji's assassination as a thick accident. It is very very unfair.

Question : That explain, I think the withdrawing of support but to return Sonia Gandhi herself has explained many of the reasons why she is held in such public affection, but again, I ask you could be in public affection as Prince Diana was.... a great person.

Shri A. S.: I don't think there is any comparison between Prince Diana who was a great person in her own life and Mrs. Sonia Gandhi, she has not expressed a least desire, that she is interested in any office.

Question : But congress is trying to draw her into the politics...

Shri A. S.: What the congress party is trying to say that your good willing your position in this

country in the background of all that could help the congress party and that was a decision she has to take she has not been asked to take over the Presidentship or Prime Ministership of this country. Only to question the party to which, four generation of her family, two of them paid the supreme price, so that party feel that her help is needed. She has to decide.

मध्यप्रदेश में काँग्रेस का बिखराव नहीं है

10 दिसम्बर 1997 लोकमत तथा अक्षय वार्ता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न : जैन आयोग के प्रकरण को लेकर के काँग्रेस नेतृत्व की जो प्रक्रिया रही पूरे मामले को डील करने की, उस से आप कहाँ तक संतुष्ट हैं?

श्री अर्जुनसिंह: ये व्यक्तिगत संतुष्टि या असंतुष्टि का प्रश्न नहीं है। ये विषय काँग्रेस पार्टी के लिए एक अहम विषय है और प्रत्येक स्टेज पर इस विषय पर पूर्ण तरीके से एक सर्वानुमति से फैसला हुआ है और मैं नहीं समझता कि इस बारे में काँग्रेस के अंदर कोई मतभेद है।

प्रश्न : इस पूरी प्रक्रिया को डील करने में जो समय लगा और कार्य समिति ने जिन परिस्थितियों में सारे निर्णय लिए। समय-समय पर कार्यसमिति के विभिन्न सदस्यों ने अपनी-अपनी राय व्यक्त की। आप उस पूरी प्रक्रिया को राजनीतिक दृष्टि से कितना काँग्रेस के लिए उपयोगी मानते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जिस संदर्भ में ये सब फैसले हुए हैं, आप पूरे संदर्भ में देख कर के कोई अपना विचार बना सकते हैं। मेरे ख्याल से सर्वानुमति और सभी दृष्टिकोणों का समावेश कर के ही फैसला लेना उचित था। थोड़ी-सी देरी भले हुई हो, पर मैं समझता हूँ कि पूरी तरह से सही हुआ है।

प्रश्न : गुजराल सरकार को समर्थन जिस वक्त दिया था काँग्रेस ने, बिना शर्त समर्थन की बात की थी और जिस मुद्दे पर समर्थन वापस लिया, उसे आप क्या लोकतांत्रिक मानते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: समर्थन तो दिया गया था इस आधार पर कि देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिक ताकतों को रोकने के लिए एक राजनीतिक गठबंधन होना चाहिए। और काँग्रेस ने अपनी ओर से उस मामले में कहीं भी किंचित मात्र भी रुकावट नहीं डाली। उसके बावजूद कि साम्प्रदायिक शक्तियों को रोकने के लिए जो एक इच्छा-शक्ति और प्रयास दृष्टिगोचर होने चाहिए, उसका अभाव रहा। जब उत्तर प्रदेश में चुनाव हुए, उस अवसर पर इस यूनाइटेड फ्रण्ट और काँग्रेस को मिल कर एक साझा प्रयत्न करने की जरूरत थी, वो नहीं हुई। इस के बावजूद बी.जे.पी. को बहुमत नहीं मिला। फिर सवाल आया बी.जे.पी. को रोकने के लिए सरकार बनाने का। उस समय काँग्रेस की ओर से ये सुझाव आया और काँग्रेस अध्यक्ष स्टेयरिंग कमेटी तक में गए। बी.जे.पी. को रोकने के लिए काँग्रेस समर्थक बी.एस.पी. की सरकार को समर्थन मिलना चाहिए, वो भी नहीं मिला और अंततः आठ-नौ महीने के उहापोह के बाद बी.एस.पी. ने बी.जे.पी. से अपना समीकरण बना लिया।

तो जो उद्देश्य था, वो उद्देश्य तो पूरा होता नहीं दिखा और जब बाद में ये सवाल भी आया कि बी.जे.पी.-बी.एस.पी. गठबंधन टूटने के बाद जो परिस्थितियाँ बनीं, उसमें भी जो पूरी प्रक्रिया हुई, वो इस बात का द्योतक नहीं थी कोई दृढ़ प्रतिज्ञा कि वो बी.जे.पी. गवर्नमेंट को रोकना ही

चाहती है। इन सब चीजों के बावजूद काँग्रेस का समर्थन रहा।

यहाँ यह प्रश्न आ जाता है, जो आपने प्रश्न किया कि आखिर इतने महीनों तक बिना किसी लाग लपेट के, यदि मैं ये शब्द यूज करूँ, काँग्रेस ने तो अपनी ओर से पूरा समर्थन दिया। साम्प्रदायिक शक्तियों को रोकने की जो कथा है, वो तो मैंने बता ही दी। वैसे भी काँग्रेस पर इस समय, इन अठारह महीनों में समय-समय पर हर प्रकार से प्रहार भी होते रहे, कोई कहता था कि मजबूरी है, कोई कहता था कि कर लें, क्या करना है। आई मीन, जो एक पार्टनर के साथ और जिसके बलबूते पर सरकार बनी है, उसके बारे में इस तरह के विचार शोभा नहीं देते।

इस सब चीज के बावजूद, यह प्रश्न आता है कि जब जिस पार्टी ने इन परिस्थितियों में पूरा समर्थन यू.एफ. को दिया तो जैन आयोग से जो उपजे हुए जो प्रश्न थे, उनमें काँग्रेस पार्टी किस हद तक पूरी तरह से विचलित है, इसका कुछ तो आभास यूनाईटेड फ्रण्ट को करना चाहिए था। क्या हम लोग केवल इस्तेमाल करने की वस्तु हैं कि जब तक सरकार में बने रहना है, तब तक तो ठीक है, लेकिन हमारी भावनाओं को ठुकराते भी रहे, प्रहार भी करते रहे। जब ऐसा संवेदनशील विषय भी आया तो भी एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया।

माँग क्या थी? माँग तो इतनी सी थी न कि डी.एम.के. का एक अंग, पार्टी और उसके नेता जैन आयोग के, उसकी वजह से संदिग्ध स्थिति में ला दिए गए हैं। माँग इतनी थी कि जो उनके तीन मंत्री हैं, उनको आप दस दिन के लिए ही सही, हटा दें सवाल तो यह था कि एक जूरी का पैनल, जूरिस्ट का पैनल उन तथ्यों को देख ले। साक्ष्य को देख ले। अगर वो इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसके आधार पर इस प्रकार की बात नहीं कही जानी थी, तो आप उनको फिर वापस ले लें। पाँच ही दिन में देख लें। पाँच ही दिन में निर्णय ले लें, लेकिन अगर इतना भी काँग्रेस के बारे में समझने के लिए तैयार नहीं थे, तो अब ये तो संभव नहीं था कि हम लोग कह दें कि साहब बड़ा खेद है, हमें राजीवजी की हत्या हो गई और बड़ा खेद है, जो लोग उसमें शामिल हैं, या जिनकी वजह से हत्या हुई, उनसे भी हम कुछ नहीं कह सकते। हमें सरकार में बने रहना है। सत्ता का भोग करना है, तो राजीवजी के जिंदाबाद हम बोलते रहेंगे, लेकिन उनकी हत्या को हम एक स्वीकार कर लेते हैं कि भाई हो गई तो क्या किया जाए?

अगर ये कोई कल्पना करे कि काँग्रेस ऐसा करेगी तो फिर काँग्रेस के बारे में बहुत बड़ी गलतफहमी है।

प्रश्न : दो प्रश्न, साहब, इसमें मेरे हैं। पहला प्रश्न तो यह है कि जो आपने पूरा घटनाक्रम, वृतान्त बताया, उसमें एक चीज बड़ी साफ हुई कि काँग्रेस को निर्णय करने में, जो भी निर्णय किया, उसको करने में बहुत लम्बा समय लगा। जो निर्णय एक समय के पहले तमाम चीजों की, जैसा आपने कहा- साम्प्रदायिकता का मुद्दा। साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर अनेक अवसर पहले ऐसे आए, जिससे यूनाईटेड फ्रंट से मतभेद हुए और काँग्रेस मूक दर्शक की तरह देखती रही। आप नहीं मानते समय से पूर्व इस निर्णय को काँग्रेस को कर लेना चाहिए था। नहीं किया, तो उसके लिए आप किस किस को जिम्मेदार ठहराएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आज कल के राजनीतिक डायलाग में सबसे पहले लोग अँगुली उठाने के लिए उत्प्रेरित करते

हैं। मेरा दृष्टिकोण यह नहीं है। यहाँ अगुँली उठाने की जरूरत है, वहाँ उठाने में हिचकना भी नहीं चाहिए। ये भी बहुत साफ है और मैंने कभी हिचका भी नहीं। आप जानते हैं। लेकिन खामखाँ इस तरह के प्रश्न पर यह कहना कि फँला जिम्मेदार है। जब हमने एक निर्णय लिया काँग्रेस की ओर से कि हमें देश के अंदर इस बात को करना है कि साम्प्रदायिक शक्तियाँ न बढ़े तो जिस हद तक भी जा सकते थे, हम लोगों को जाना था और इसीलिए गए। लेकिन जब ऐसा प्रश्न आ गया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि इन लोगों ने जरा भी काँग्रेस के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है, क्योंकि बेसिकली यथार्थ तो यह है कि ये जितने भी यूनाईटेड फ्रण्ट के घटक हैं, ये सब तो घोर काँग्रेस विरोध पर ही पनपे हैं तो अब लगा कि शायद लोग उससे उभर नहीं पा रहे हैं। उससे ऊपर नहीं आ पा रहे हैं तो फिर फैसला लेना पड़ा।

प्रश्न : दूसरा मेरा प्रश्न यह था कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जब राजीव गाँधी की हत्या का प्रश्न आया और एक गंभीर राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा उससे जुड़ा तो जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में आपने राज्य सरकार की बर्खास्तगी की माँग भी की? और आपने केवल समर्थन वापसी की बात उठाई कि केन्द्र सरकार से समर्थन वापस ले लिया जाए। जब मेन इंडेक्ट किया गया व्यक्ति, जिस व्यक्ति की रहनुमाई में एक सरकार चल रही है लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सबसे पहले उस राज्य सरकार की बर्खास्तगी की माँग होनी चाहिए थी?

श्री अर्जुनसिंह: इससे एक ही बात स्पष्ट होती है कि ऐसे संवेदनशील प्रश्न को लेकर भी जिसने सारे काँग्रेस को झकझोर दिया हो, फिर भी हम देश में साम्प्रदायिक शक्तियों को बढ़ने से रोकने के बारे में अनभिज्ञ नहीं थे और कोई इस तरह से ये नहीं था कि उसका हमें लेना देना नहीं है, लेकिन अगर उतनी बात भी नहीं हुई, फिर क्या किया जाय। जब दो तीन मंत्रियों को नहीं निकाल सकते थे, इस बेसिस पर कि भाई आप देख लें, जूरिस्ट देख कर बता दे और यही बात हुई है।

आपको स्मरण दिलाना चाहूँगा, जैसे ही जैन रिपोर्ट आई तो बड़े जोर-शोर से आया कि हम ठक्कर रिपोर्ट भी रखेंगे। लोगों ने कहा न कि आपने आर.के. धवन को क्यों वर्किंग कमेटी में बना रखा है, जिनके ऊपर उसी तरह का इण्डक्टमेंट ठक्कर कमीशन ने किया है। इस तरह के प्रश्न किए गए। एक-दो दफे करने के बाद फिर ठक्कर कमीशन की कोई बात नहीं कर रहा है। क्यों नहीं कर रहा है? ये तो आप लोगों को पूछना चाहिए इनसे कि आप ठक्कर कमीशन के बारे में क्यों नहीं बोलते हैं। उसका सीधा कारण यह है कि ठक्कर कमीशन इंदिरा जी की हत्या 31 अक्टूबर को हुई। नवम्बर 18-20 तारीख को ठक्कर कमीशन का गठन हुआ और 31 दिसम्बर उसी वर्ष 84 में आर.के धवन जिस पद पर थे, उससे उन्होंने इस्तीफा दे दिया। इस्तीफा क्यों दिया? ये तो सामने कहीं नहीं आया। लेकिन स्वाभाविक है कि इस्तीफा उन्होंने इस धारणा से दिया होगा कि मैं इतना नजदीक था, इतना ये साबित हो गया। अब मुझे कमीशन बैठ गया है तो कमीशन का फैसला आ जाए कुछ आ जाए मैं देखूँगा।

मेरा ख्याल है कि डेट आप वेरीफाय कर लें। कमीशन का फैसला और सुझाव, रिकमेण्डेशन आया, वह साल, डेढ़ साल बाद आया 86 में। उसमें उन्होंने इन लीगल आप ससपीसियन, यानी संदेह की सुई का इशारा धवन के बारे में किया था। उस निष्कर्ष के आधार पर एक विशेष जाँच

पड़ताल की टीम गठित की गई, अनन्तराम के नेतृत्व में। तीन साल तक, चार साल तक उस टीम ने पूरी छान-बीन की धवन साहब की। आप ये समझिए जो इंटेरोगेशन, जिस तरह से इंटेरोगेशन होता है, उसी तरह से इंटेरोगेशन हुआ धवन का। 89 में इन्होंने जनवरी या फरवरी में उस टीम ने रिपोर्ट दी कि नहीं, धवन साहब का कोई कहीं पर ऐसे आधार नहीं है कि हम उनके ऊपर संदेह कर सकें। उसके बाद धवन वापस आए पार्लियामेंट में और राजीवजी ने बयान दिया।

प्रश्न : समर्थन वापसी के बाद काँग्रेस ने सरकार बनाने का दायित्व अपने ऊपर लेने का प्रयत्न किया किसी प्रकार। उसमें उन्होंने आरोप लगाया भाई सत्ता लोलुपता की वजह से समर्थन वापस लिया गया है। इस बारे में तो जनता को मेसेज गलत तो नहीं गया।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, नहीं, गलतफहमी जनता में कुछ लोगों ने फैलाई है, लेकिन देश में अस्थिरता फैल जाए, इसके भी हम हामी नहीं थे और इसलिए हम लोगों ने इन लोगों से कहा कि जिस प्रकार से 18 महीने हमने आँख मूँदकर आपका समर्थन किया, केवल इस मुद्दे पर कि हम देश में साम्प्रदायिक शक्तियों को रोकना चाहते हैं तो अपेक्षा की जाती है कि आप भी हमारा समर्थन करेंगे और वो करते तो अस्थिरता का दौर नहीं आता।

प्रश्न : काँग्रेस अध्यक्ष के बारे में यह आरोप लग रहा है इस बार कि पूरे प्रकरण में उन्होंने जान बूझ कर गुजरात सरकार को बरकरार बनाए रखने के लिए इन मामलों में इतनी ढील दी, जिसके कारण काफी विलम्ब के बाद यह अंतिम निर्णय पार्टी के दबाव में आकर लिया कि समर्थन वापस ले लिया जाए।

श्री अर्जुनसिंह: इस तरह का प्रचार जरूर कुछ लोग कर रहे हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि यह सही नहीं है।

प्रश्न : अब जब लोक सभा भंग हो गई है और चुनाव की ओर सब लोग बढ़ गए हैं, काँग्रेस का भविष्य आप किस रूप में देख रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस का भविष्य मैं ज्योतिषी के दृष्टिकोण से, नजरिए से नहीं देख रहा हूँ। कुछ राजनीतिक जो आधार होते हैं और जिनको सामने रख कर ही, निर्णय तो जनता का होता है, लेकिन जो प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और जो आभास सामने आते हैं।

पहली बात तो यह है कि केवल काँग्रेस पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है, जिसकी उपस्थिति सारे भारत में है। बाकी सब कई पार्टियाँ हैं, बिना किसी एक्सेप्सन के, उनकी उपस्थिति देश के कोने-कोने व सारे देश में नहीं है।

दूसरी बात ये कि काँग्रेस ने इन 18 महीने के अपने स्पष्ट आचरण से यह साबित कर दिया कि सेकुलर पालिसी और पार्टी में काँग्रेस का ही केवल अटूट विश्वास है। जैसा मैंने पहले ही कहा, बाकी लोगों ने अपना नक्शा अभी इसमें भी दिखा दिया और इसके पहले तो इनमें से कई घटक भारतीय जनता पार्टी के साथ मिल कर सरकार बनाए हैं। सरकार में रहे हैं। वी.पी. सिंह की सरकार चली है बी.जे.पी. के समर्थन के आधार पर। एक तो वो है।

तीसरी ये कि जो क्षेत्रीय समस्याओं को लेकर पार्टियाँ गठित हुई हैं। काँग्रेस ने कभी क्षेत्रीय समस्याओं और उनकी भावनाओं को अनदेखा नहीं किया। राष्ट्रीय समूचे चरित्र में, चरित्र तो गलत शब्द होगा, आवश्यकताओं में, क्षेत्रीय आवश्यकताएँ और भावनाओं का समावेश कर के ही काँग्रेस ने देश में काम करने की कोशिश की। हो सकता है कि कहीं कई घटनाओं की वजह से ऐसा कहीं-कहीं बात उभर कर आई है कि क्षेत्रीय भावनाओं को अनदेखा किया गया है। इसलिए क्षेत्रीय पार्टियाँ

केवल अपने क्षेत्र तक सीमित होकर और उन्होंने जनता के बीच में जाकर समर्थन पाया।

प्रश्न : आप पूर्व में अगर एक नजर डालें काँग्रेस के इतिहास पर तो देश के सभी राजनीतिक दल मिल कर काँग्रेस का मुकाबला करते थे, आज परिस्थिति भिन्न हो गई है। आज भाजपा ऐसे बड़े कैनवास पर फैल गई है कि काँग्रेस भी छोटे दलों के साथ मिल करके अकेली भा.ज.पा. का मुकाबला कर रही है। इन दोनों परिस्थितियों में काँग्रेस को आप कहाँ पाते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः मैंने कहा न कि परिस्थितियों की वजह से और कुछ शायद हमारी गलतियों की वजह से भी ये बात उभरी है और अब उसी को ही तो दुरूस्त करने का साहस दिखाना पड़ेगा और मैं समझता हूँ कि काँग्रेस में यह साहस है। चूँकि हमारी उपस्थिति है सारे देश में, तो ये जो कमी है, ये पूरी होगी और निश्चित रूप से एक प्रीएमीनेंट, क्या कहेंगे हिन्दी में, सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति के रूप में ये काँग्रेस पार्टी उभर कर सामने आएगी।

प्रश्न : विभिन्न राज्यों में काँग्रेस के अंदर असंतोष चुनाव से पूर्व शुरू हो गया है। पश्चिम बंगाल में ममता बेनर्जी अलग फोरम बना बैठी हैं। बिहार में जगन्नाथ मिश्र अलग से फोरम बनाए बैठे हैं। मध्यप्रदेश में दिलीप सिंह भूरिया ने फोरम बनाया है और विभिन्न राज्य हैं, जहाँ इस तरह के, और बंगरप्पा ने पार्टी छोड़ दी है। इन तमाम परिस्थितियों का जो आने वाले चुनाव हैं, उस पर क्या असर होने वाला है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, ये परिस्थितियाँ निश्चित रूप से चिंता के विषय हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है। एक प्रयास होगा कि काँग्रेस के मूल आदर्शों और सिद्धांतों को यथावत रखते हुए अलग-अलग जगह इस प्रकार की घटनाएँ घट रही हैं, उनके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने की कोशिश होगी। वे प्रयास अभी भी जारी हैं, लेकिन उस प्रयास को और स्पष्ट रूप से गति मिल रही है, ऐसा भी दिखे।

प्रश्न : ये जो असंतोष है, इस असंतोष का क्या कारण महसूस करते हैं? आप की कहाँ पर कमी है, काँग्रेस के अंदर, जिस के कारण ही यह असंतोष फूटा?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, असंतोष का कारण अलग-अलग जगह तो अलग-अलग हो सकते हैं, और उसमें उसकी व्याख्या करने में मुझे हिचकिचाहट नहीं, लेकिन बहुत टाइम लगेगा। आपके कालम में अपनी बात छपने का न आप के पास समय है और न स्थान है। मोटे तौर से मैं यह कह सकता हूँ कि जो अभी संगठन के चुनाव हुए, उन चुनावों में कुछ लोगों को ऐसा लगा कि वे काँग्रेस की मुख्य धारा से अलग हो गए हैं। अब चुनाव की प्रक्रिया तो ऐसी होती है कि कोई जीतता है, कोई हारता है और एक ऐसे समय में काँग्रेस के चुनाव हुए जब काँग्रेस सत्ता में भी नहीं है, क्योंकि सत्ता कुछ लोगों को जोड़ने वाला काम करती है। (हंसते हुए) हकीकत यह है तो उसके बाद भी काँग्रेस अध्यक्ष ने यह कोशिश की और वर्किंग कमेटी में यह बात रखी गई है। हमारा जो एक्सन प्लान बना, उसमें उसका स्थान है, समावेश है कि ऐसे हर प्रदेश से जहाँ ऐसे इस प्रकार से कुछ लोगों को ऐसा लग रहा है, धारणा है, उनको उसके अंदर फिर से समावेश कर के एक ये स्थिति बननी चाहिए, जिससे किसी को ऐसा महसूस न हो और उसकी शुरूआत भी हुई है। आँध्र प्रदेश में हुई। हमारे प्रदेश में हुई और भी एक-दो प्रदेशों में हुई, लेकिन वो प्रक्रिया होना थी दिसम्बर के अंत तक और इस बीच में आ गए चुनाव। चुनाव के माहौल में फिर ये चीजें दूसरा रूप ग्रहण कर लेती हैं। इसलिए मैं कह

रहा हूँ कि वो चिंता का विषय है और मुझे उम्मीद है कि उनका हम समाधान कर सकेंगे।

प्रश्न : सर, भा.ज.पा. का यह कहना है कि 1996 के जनादेश को काँग्रेस और यू.एफ. बाद में जो है, अलग तरीके से तोड़-मरोड़ कर के उसकी परिभाषा निकाली। अब चूँकि लोक सभा के चुनाव सामने है और अब फिर यू.एफ. और काँग्रेस आमने सामने आ गए हैं और चुनाव के बाद अगर दोनों को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला तो इस बात की क्या गारण्टी है कि फिर जनादेश को यू.एफ. और काँग्रेस एक साथ नहीं आएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए भविष्य के गर्त में क्या है? यह तो आज कह कर उस पर तर्क-वितर्क करने का कहाँ तक औचित्य है। मैं नहीं समझता, लेकिन जो लकीर खींची गई है पहले भी और आज भी वो तो साम्प्रदायिक शक्तियों और अन्य के बीच में है। आप इस तरह के राजनीतिक सोच को बिलकुल त्याग कर आगे कि बात भी नहीं सोच सकते हैं तो इसलिए जब बात सामने आएगी तब।

अगर बी.जे.पी. को पूर्ण बहुमत मिल गया तो सब के मुँह बंद हो जाएँगे। फिर तो जनादेश वही होगा और जनादेश तो सभी को मानना ही है, लेकिन जनादेश वैसा होगा नहीं। उसका कारण यह है कि शायद बी.जे.पी. के लोग एक बात समझ नहीं पाए कि जो भी उसकी तस्वीर सामने लाने की कोशिश हुई। मैं तो अभी हाल की बात ही केवल नहीं कहता, पिछले, समझ लीजिए, पाँच सात सालों में वो एक ऐसी पार्टी की तस्वीर है, जो हर मोड़ पर, हर मौके पर पैंतरा बदल कर, स्वरूप बदल कर सिद्धांत बदल कर अपनी नीतियों में परिवर्तन कर के कहीं पूरी तरह से, येन केन प्रकारेण वो सत्ता में आना चाहते हैं।

तो ठीक है। उनके प्रयास में किसी को बाधा डालने का तो अधिकार नहीं है। वो तो कर ही सकते हैं। देश की जनता उनको उस रूप से समर्थन नहीं देगी, जैसी उनकी कल्पना है।

उन्होंने राम को ही छोड़ दिया। भगवान राम के पीछे एक तरह से सारे देश में जैसे बी.जे.पी. के लोग ही भगवान राम के भक्त हों। अब केवल केन्द्र में पिछले दिनों उनको काँग्रेस के एम.पीज को लुभा कर अपने पक्ष में लाने के लिए उन्होंने आगे हम इस इशु को भी अभी ठण्डा कर देते हैं तो ये सब चीजें देशवासियों के मन में जाती है। फिर वो जाकर के कहें चुनाव के मैदान में कि हम अब फिर से पवित्र हो गए। अब फिर से हम राम की बात कहेंगे। कह सकते हैं, लेकिन अगर देश की जनता को इतना भ्रम में डाल कर भी वे समझते हैं कि उनको बहुमत मिलेगा तो उनको सोचने का हक है।

प्रश्न : इसके अलावा जो भारतीय जनता पार्टी का जो चरित्र का विश्लेषण जो आपने किया है, कमोवेश यही चरित्र बहुजन समाज पार्टी का है, तो बहुजन समाज पार्टी के साथ अगर काँग्रेस समझौते की बात सोचती है तो राजनीतिक दृष्टि से काँग्रेस के लिए कितना उचित है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, ये तो आज की परिस्थितियों में क्या फैसला होगा उसका मुझे पूर्वाभास नहीं है और न मैं कह सकता हूँ, लेकिन बी.एस.पी. और बी.जे.पी. का एक ही तरह से देखना, यह शायद राजनीतिक यथार्थ नहीं होगा। बी.एस.पी. तो अभी की पार्टी है। मुश्किल से आठ-नौ साल से तो सामने आई है।

प्रश्न : बसपा की समूची राजनीति जातिवादी, सत्ता लोलुपता और सत्ता लोलुपता के लिए होने वाले गठबंधनों पर आधारित है और उनके जो प्रमुख है, कांशीराम जी वो इस बात की स्पष्ट घोषणा

कर चुके हैं कि केवल लाभ के लिए राजनीतिक गठबंधन करते हैं तो राजनीतिक दल जो विशुद्ध लाभ की दृष्टि से गठबंधनों की बात करता हो। जातिवादी की राजनीति करता हो। ऐसे दल को काँग्रेस कैसे गले के नीचे उतारेगा?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, कम से कम वो भ्रम में तो किसी को नहीं रखते हैं। रह गया यह कि हम जातिवादी उनके साथ बन जाएँ और हम भी केवल सत्ता के लिए सब कुछ करने लगें तो हम सहभागी हुए। ऐसा तो काँग्रेस कभी नहीं करेगी। रह गया टेक्टली बी.जे.पी. और साम्प्रदायिक शक्तियों को थोड़ा-सा मार्जनाइलाइज करने के लिए टेक्टली अरेजमेण्ट हो सकते हैं, लेकिन हम उनके सभी जो कहते हैं, उस पर हमारा विश्वास हो गया हो, वो हमारे प्लेंक हो गए। ऐसी बात तो कभी नहीं है।

प्रश्न : फिर बी.जे.पी. की बात कर रहा हूँ। काँग्रेस का एक नारा होता था-एक स्थायित्व वाली सरकार हम देंगे। भा.ज.पा. उस नारे को हथियाने की कोशिश कर रही है। इसके अलावा उसका यह भी कहना है कि सभी को परखा एक बार हमको भी मौका मिलना चाहिए? इस पर आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, उन्होंने महात्मा गाँधी को ही हथिया लिया तो इस स्थायित्व के मुद्दे को हथियाने की बात तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी बीच में गोडसे हीरो बने थे। अभी भी मतलब उस समय की बात मैं नही कह रहा हूँ और फिर गाँधी जी प्रमुख बन गए तो स्थायित्व की रट लगाने से कोई स्थायित्व थोड़े ही आएगी। उसकी क्षमता भी तो प्रदर्शित होनी चाहिए। जब मैं कह रहा हूँ कि सारे भारत में उनकी उपस्थिति ही नहीं है। राजनीतिक स्थायित्व की बात तो बिल्कुल खोखलापन है। केवल ये समझ करके कि देश के अंदर आज लोग स्थायित्व चाहते हैं और मैं भी सोचता हूँ कि देश के लोग सही चाहते हैं। इसलिए हम भी उसी को चाहते हैं। यह केवल प्रचार मात्र है, कोई आधार उसका है नहीं?

प्रश्न : सर, आम तौर से देखा गया है कि काँग्रेस की हार का कारण कई बार काँग्रेस के लोग ही रहते है। तो ये सब न रहे, इसके लिए टिकिट वितरण एक पारदर्शी और न्यायप्रिय तरीके से हो, उसके लिए क्या रास्ता अख्तयार किया गया है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, 12 तारीख को वर्किंग कमेटी में यही सब मुद्दे विचार के लिए हैं तो मेरी समझ में इस संबंध में मेरा सार्वजनिक रूप के कुछ कहना उचित नहीं होगा और आज तो 10 तारीख है। परसों बैठक हो रही है। उसमें वैसे ही फैसले इन सब चीजों के बारे में होंगे। इसकी आवश्यकता को हम सब महसूस करते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि टिकिट का वितरण सही ढंग से होना चाहिए। निष्ठावान लोगों को टिकिट दिया जाना चाहिए। खास तौर से युवकों और नव युवको .... को।

वर्किंग कमेटी में बात होगी। खास तौर से मायनार्टीज, बेकवर्ड और वीकर सैक्शन की महिलाएँ, इनका भी उचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए। यही सब आधार होंगे चयन के।

प्रश्न : पुराने चुनाव पर अगर एक नजर डालें, चुनाव परिणामों पर तो यह देखा गया है कि काँग्रेस की पराजय के पीछे काँग्रेसियों का ही हाथ रहा है और उसके लिए तमाम समय-समय पर विश्लेषण हुए और कमेटियाँ बनीं और यह कहा गया कि भाई-भतीजावाद, पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों के नजदीकी रिश्तेदारों को टिकिट देना। ये इसके मुख्य कारण उभर कर आए थे।

श्री अर्जुनसिंहः इन सब चीजों को ध्यान में रख कर फैसला करना पड़ेगा। इसमें कोई दो राय नहीं।

भविष्य हम सबका है, और पूरे राष्ट्र का है। यह कोई अनिश्चित भविष्य नहीं है। अनिश्चित तो उसका भविष्य होता है, जिसे अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और सिद्धान्तों की जानकारी न हो। अड़चने आ सकती है, कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी विपरीत परिस्थितियाँ आ सकती हैं, लेकिन भविष्य निश्चित है।

— श्री अर्जुनसिंह

6 अप्रैल 1998

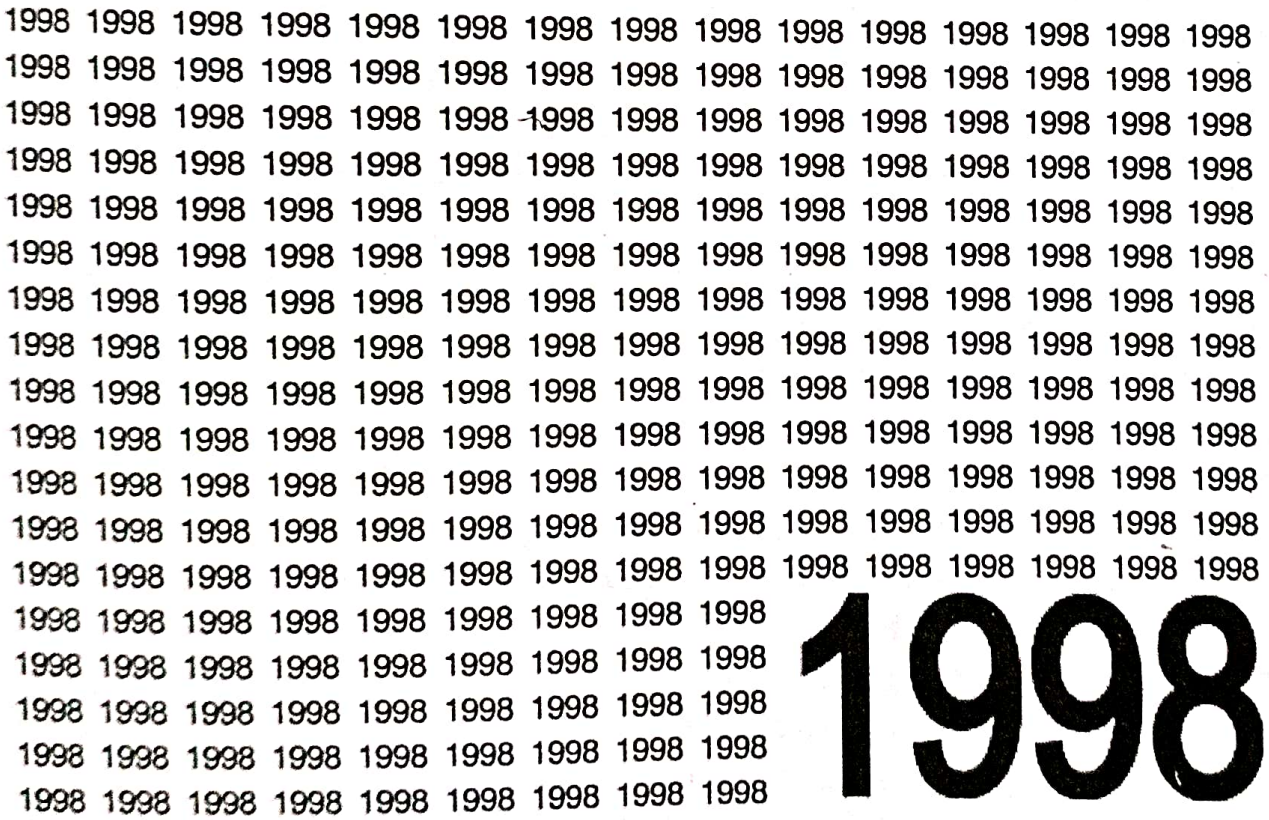

1998

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

देश की रक्षा करने का दायित्व हमारे कंधो और काँग्रेस के ऊपर है

2 फरवरी 1998 को नरसिंहपुर में काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं के बीच दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रदेश के इस अंचल के काँग्रेस के सभी जागरूक आदरणीय साथियों, नरसिंहपुर आने का जब-जब मुझे अवसर मिलता है बहुत सी स्मृतियाँ सामने आ जाती हैं, स्वर्गीय आदरणीय मुशरान साहब का वह सौम्य व्यक्तित्व हमारे आदरणीय सम्मानित बुजुर्ग जो आज हमारे बीच में नहीं है। चौधरी साहब आदि बहुत से हमारे ऐसे साथी जिनके मार्गदर्शन में हमने काम किया है प्रदेश में। उनकी छवि सामने आती है और फिर एक उत्साही समिति नवयुवकों की जो कंधे से कंधा मिलाकर पिछले 40 वर्षों से काम कर रही हैं। उन्होंने एक सेवा और संघर्ष का इतिहास नरसिंहपुर में रचा है उन सम्मानित साथियों के बीच में आकर मैं कोई भाषण देना उपयुक्त नहीं समझता। केवल आपसे आज के संदर्भ में कुछ ऐसी स्थितियों से आपको अवगत कराना चाहता हूँ जिनकी वजह से एक तो यहाँ लोकसभा के चुनाव हुए हैं और दूसरे वे कौन से ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर इन चुनावों के परिणाम से मिलेगा। यह एक प्रचार काफी व्यापक रूप से किया गया कि काँग्रेस पार्टी ने यह मध्यावधि चुनाव देश पर थोप दिया है। इससे बढ़कर भ्रामक और कोई बात नहीं हो सकती है। काँग्रेस पार्टी 1996 में देश के मतदाताओं का पूर्ण बहुमत प्राप्त न होने के कारण एक ऐसी स्थिति में आ गई थी जहाँ उसे यह फैसला करना था कि हिन्दुस्तान के राजनीतिक परिवेश में कौन सी भूमिका काँग्रेस निभाए। मैं समझता हूँ कि वह सही निर्णय लिया गया कि जब जनादेश काँग्रेस के पक्ष में नहीं था तो काँग्रेस को सरकार बनाने की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहिए थी लेकिन साथ ही साथ इस तरह का प्रयास और ऐसी विचारधारा की पार्टियों को जो भारत की विरासत को खंडित करना चाहते हैं जो हमारे बीच में इस तरह की रेखाएँ खींचने में लगे हुए हैं जिनसे मानसिक रूप से, सैद्धांतिक रूप से, भावनात्मक रूप से देश में विघटन की स्थिति पैदा हो सकती है। ऐसी शक्तियों को भारत की बागडोर न सौंपी जाय। यह फैसला काँग्रेस ने किया है। और अब लोग भूल रहे हैं और हो भी जाता है कभी-कभी कि बिना इस बात को विचार किए कि कौन सी पार्टी सरकार बनाएगी, काँग्रेस ने यह फैसला किया कि हम देश की सांप्रदायिक शक्तियों को रोकने के लिए जो भी पार्टी सामने आएगी या गठबंधन सामने आएगा हम उसका समर्थन करेंगे। तब तक दैवगौड़ाजी का प्रधान मंत्री पद पर चयन नहीं हुआ था। और जब यूनाइडेड फ्रंट बना, पूरा समर्थन उनको बिना शर्त दिया गया। स्वभाविक था, सबसे पहले यह आधार कि देश के अन्दर, सांप्रदायिक शक्तियाँ मजबूत न हों। ऐसा सोचना और ऐसी दिशा में बढ़ना, कम से कम काँग्रेस के साथियों के बीच में कुछ समझाने की जरूरत नहीं है। लेकिन जो अभाव हुआ वह अभाव अच्छा नहीं हुआ। एक मौका आया उत्तर प्रदेश के चुनाव हुए और उस चुनाव में यह अवसर मिला कि देश की सबसे बड़ी राजनीतिक प्रगतिशील शक्तियों को एक तरफ करके बी.जे.पी. को चुनौती दी जा सके। लेकिन यह कोशिश करने के बावजूद भी नहीं हुआ। यह अलग बात

है कि अलग-अलग तरीके से लड़ने के बावजूद भी उत्तर प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को बहुमत दिया। लेकिन उन शक्तियों ने मिलकर वह काम नहीं किया जो उनको करना चाहिए था। उसके बाद भी जब यह प्रश्न आया कि चुनाव के बाद कौन सरकार बनाए तो वही लोग जो राष्ट्र के स्तर पर तो भारतीय जनता पार्टी को रोकने के लिए काँग्रेस का समर्थन लेने में नहीं हिचकिचा रहे थे, उन्होंने काँग्रेस की उस दलील को नहीं माना कि उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को रोकने के लिए मायावती की सरकार बनना चाहिए। ये ऐतिहासिक तथ्य हैं और इसी की वजह एक के बाद एक परिस्थितियाँ निर्मित हुई। जहाँ वह स्थिति आ गई कि आगे कुछ नहीं चल सका। इसके बावजूद देवगौड़ाजी ने काँग्रेस का समर्थन लेकर काँग्रेस के कंधे पर बैठकर प्रधान मंत्री का पद सुशोभित किया।

दूसरी तरफ काँग्रेस को ही पूरी तरह से कमजोर करने की कोशिश की गई। ऐसी परिस्थिति में इतनी कमजोर और असहाय काँग्रेस पार्टी नहीं हो गई थी, कि अपनी ही जड़ों को काटने वालों को अपने ही कंधों पर बिठाए और इसलिए उनसे समर्थन वापस लिया गया। लेकिन हम देश के अन्दर अस्थिरता नहीं चाहते थे। देश के अन्दर हम कोई ऐसी स्थिति निर्मित नहीं होने देना चाहते थे जिससे कि सांप्रदायिक शक्तियाँ मजबूत हों। इसलिए उस यूनाइटेड फ्रंट के दूसरे नेता श्री गुजराल साहब को काँग्रेस ने समर्थन दिया। मैं समझता हूँ कि इससे ज्यादा और क्या प्रमाण हो सकता है कि काँग्रेस ने मध्यावधि चुनाव हर हालत में टालने की कोशिश की। लेकिन अब अगर प्रधान मंत्री केवल पद को सुशोभित करने के लिए हो और देश की हालत दिनों दिन बिगड़ती चली जाय तो काँग्रेस को अपनी तरफ से कुछ कहना तो पड़ेगा ही। क्योंकि पार्टी सहयोग दे रही है, समर्थन दे रही है तो ऐसी स्थिति हम कैसे निर्मित होने दें, कि नुकसान तो हमारे हिस्से में आए क्योंकि देश की जनता तो यह जानती थी कि यह सरकार बनी हुई हैं केवल काँग्रेस की वजह से। अगर काँग्रेस का समर्थन न हो तो यह सरकार एक दिन नहीं रह सकती और जो हुआ देश में वह आप सब लोग अच्छी तरह से देखते रहे। जानते हुए कि कितनी स्थितियाँ खराब हुईं, इन सबके बावजूद काँग्रेस ने अपना समर्थन कायम रखा।

पिछले 50 वर्षों में 45 वर्षों में काँग्रेस को जनता ने समर्थन दिया और पाँच साल तक चलने वाली स्थाई सरकारें काँग्रेस ने ही दी हैं। पर विगत पाँच वर्षो में मिलीजुली सरकारें बनी और चार प्रधानमंत्री इस बीच में बने। ये ऐसी कुछ बातें हैं जो सामने हैं और उनमें आपस में कहने को शायद कुछ रहे उनमें से कोई ऐसा नहीं हुआ जिसने भारतीय जनता पार्टी के साथ किसी ने किसी समय गठबंधन करके उनके सहारे से न रहे हों। चाहे विश्वनाथ प्रताप सिंहजी हों, चाहे वह लेफ्ट फ्रंट के लोग हों, चाहे वह जनता दल के लोग हों।

काँग्रेस के अन्दर दुर्भाग्य से कुछ कमजोरियाँ आई हैं। और इन कमजोरियों की वजह से काँग्रेस के ऊपर से जनता का विश्वास उठा। अगर हम अपने दल से जुड़े रहना चाहते हैं, उसकी भलाई चाहते हैं, उसकी तरक्की चाहते हैं तो आँख मूँदकर हम नहीं चल सकते हैं। आँख खोलकर हमें चलना पड़ेगा। जो कमियाँ हैं, जो गल्तियाँ हैं उनके लिए कहीं आवश्यक हो तो जनता से हमें माफी माँगना चाहिए, जो सुधारने की जरूरत है, उसको सुधारना चाहिए। जिन चीजो के बारे में भ्रम पैदा हुआ है, उस भ्रम को दूर करना चाहिए।

आज देश की रक्षा करने का दायित्व हमारे आपके कंधे पर हैं और काँग्रेस के एक-एक साथी से मैं यह दरख्वास्त करना चाहता हूँ कि इसमें दो मत नहीं हैं कि काँग्रेस एक बहुत ही कठिन दौर से गुजर रही है, यों कहिए कि जो कुछ काँग्रेस ने किया अभी तक उस सबको आज दाँव पर लगा दिया है। उसी की भावना के अनुरूप हम आपको काम करना पड़ेगा।

काँग्रेस को अपने ऐतिहासिक कर्तव्य को निभाने का फिर से एक मौका दीजिए ताकि इतिहास के इस मोड़ पर काँग्रेस देश को भ्रमित होने से बचा सके। भटकाव से बचा सके। बिखराव से बचा सके। यह सब आप लोगों के हाथ में हैं। इस क्षेत्र में, हर क्षेत्र में सारे देश में इस मौके पर हम सब मिलकर अपने कर्तव्य को पूरा करें। निश्चित रूप से काँग्रेस मजबूत होकर उभरकर सामने आएगी तो देश की मजबूती को कोई रोक नही सकता है और सांप्रदायिक शक्तियों का जो यह विलाप हो रहा है यह विलाप अपने आप शांत हो जाएगा।

अटलजी प्रधान मंत्री केवल लाल किले पर झण्डा फहराने के लिए नहीं बने

1998 सतना की चुनावी सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

काँग्रेस के उम्मीदवार श्री सईद अहमदजी, और सतना के सम्मानित नागरिक बन्धुओं। मैं तो बेरिस्टर साहब से भी एक शब्द कम बोलना चाहता था। लेकिन चूँकि उन्होंने तीन ही शब्द कहे हैं इसलिए तीन से चार-पाँच शब्द तो हो ही जाएँगे। शायद आप लोगों को काँग्रेस के बारे में कुछ बताने की जरूरत नहीं हैं, आपको देश की स्थिति के बारे में कुछ बताने की जरूरत नहीं है। भारत वर्ष कहाँ जा रहा है इसको आप सब अच्छी तरह से देख रहे है और भारतीय जनता पार्टी का आचरण, कथनी और करनी में कितना अन्तर हैं शायद पहले समझ में नहीं अताा लेकिन इन सात महीनों में देश के हर व्यक्ति को समझ में आ गया है। हमें ये आलोचना करने की जरूरत नहीं है। भारतीय जनता पार्टी ने धर्म को आधार बनाकर राजनीति करने की कोशिश की, इसलिए कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि धर्म के आधार पर राजनीति करके जो कुछ हासिल हो सका वह भारतीय जनता पार्टी ने हासिल कर लिया। हम लोग हिन्दू विरोधी नहीं हैं। शायद आडवानी और बाजपेयीजी से बेहतर हिन्दू हैं। लेकिन हिन्दू धर्म को अपने राजनैतिक उपलब्धि के लिए, स्वार्थ के लिए न कभी शामिल किया है, न आगे कभी करेंगे और जिन लोगों ने किया है उन्होंने देश का कितना बड़ा नुकसान किया है, वह अब आप सबके समझ में आ रहा है। अटलजी प्रधान मंत्री तो बन गए लेकिन लगता है जैसे केवल लाल किले के झण्डा फहराने के लिए ही प्रधान मंत्री बने हैं। भारत का प्रधान मत्री पंचायत का अध्यक्ष नहीं है, किसी जनपद का अध्यक्ष नहीं है, किसी नगर निगम का अध्यक्ष नहीं है, वह देश के 100 करोड़ लोगों की आशाओं ओर आकाक्षाँओं, निराशाओं और उपलब्धियों के लक्ष्य का सबका प्रतिनिधित्व करता है लेकिन आज कुछ ऐसा नज़ारा देखने में आ रहा है कि अटल बिहारीजी को इन सब चीज़ों की तरफ देखने का समय नहीं है। इसलिए समय नहीं है क्योंकि उनका आधे से ज्यादा समय तो अपनी कुर्सी को बरकरार रखने में व्यतीत है। उस शक्ति का उपयोग और प्रयोग किस के लिए किया जाए और किस प्रकार से किया जाए यह निर्धारित करता है कि किस दिशा में देश जाएगा। जब उन्हें इस बात की फुर्सत ही नहीं है। सबेरे का वक्त जयललिताजी को फोन करने में जाता है, दोपहर के वक्ता ममताजी से बात होती है और शाम होते तक समता से दो हाथ निपटने पड़ते हैं तो किस वक्त बेचारे बाजपेयीजी देश के बारे में सोचें। बेराज़गार युवकों को रोज़गार दिलाने की बात सोचें, जनता की समस्याओं को सोचें। वे तो ये कहिए पोखरन में एक विस्फोट एटम का हो गया और वह भी इसलिए क्योंकि 1960 से लेकर पंडितजी के नेतृत्व में भारत के वैज्ञानिकों ने प्रमुखता के आधार पर देश के हर पहलू पर हम सर्वोच्च रहे, इसके लिए उन्होंने कोशिश की, अपने समय में इन्होंने बटन दबा दिया। यह हँसी मजाक की बात नहीं है। हम सबको गर्व है। हम सब महसूस करते है कि हमारे देश के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा काम करके दिखाया है जिसके लिए वे सक्षम है और इसके लिए कई दशकों से वे तैयारी कर रहे हैं और इसलिए हम सबको उस बात पर गर्व है लेकिन अकेले

पोखरन के विस्फोट से देश की समस्याएँ नहीं सुलझेंगी। इसका महत्व अपनी जगह पर है लेकिन देश के सामने और भी समस्याएँ है, उनके लिए भी तो कोई रास्ता ढूँढना पड़ेगा। अगर उस रास्ते को ढूँढने के लिए समय नहीं है, कोई विचार नहीं है तो आखिर वो तो सताएँगी। इस देश के लोगों को ही सताएँगी जैसे इस समय सता रही हैं। अभी मध्यप्रदेश में वाजपेयीजी आए थे इंदौर में। मैं इत्तफ़ाक से वहीं पर था उन्होंने कहा कि महँगाई बढ़ने का कारण पचास साल की काँग्रेस की नीतियाँ हैं। अर्थात् काँग्रेस ने महँगाई जुलाई 1998 में बढ़ाई। इसका ये मतलब हुआ कि जब से काँग्रेस ने यहाँ के लोगों के आशीर्वाद से देश का इंतजाम संभाला 15 अगस्त, 1947 से तब से पंडितजी, शास्त्रीजी, इंदिराजी, और राजीवजी इसी तैयारी में लगे हुए थे कि जब अटल बिहारी वाजपेयीजी प्रधान मंत्री बने उस समय कीमतें बढ़वा दी जाएँ। कितनी हास्यास्पद बात है। अगर उन नीतियों की वजह से होता उन 45 सालों में जब काँग्रेस सत्ता में थी तब ऐसी हालत क्यों नहीं हुई?

आज तो वाजपेयीजी कहते हैं कि हाँ बात सही है, जमाखेरी इस महँगाई के पीछे है। उसके बाद फिर कोई बात ही नहीं है। ऐसे असहाय और असमर्थ हमारे देश के प्रधान मंत्री हो जाएँगे इसकी कल्पना हम लोगों ने नहीं की थी। लेकिन इसका असर केवल भारतीय जनता पार्टी पर पड़ता होता तो हम लोगों को कोई तकलीफ नहीं होती। लेकिन इसका असर देश पर पड़ रहा है। आम आदमी बेताब हो रहा है, बेसब्र हो रहा है ओर उसको ऐसा लगता है कि क्या देश के अन्दर ऐसा कुछ होना संभव नहीं है जिससे हमें राहत मिल सके। क्या हम सब कुछ चन्द मुनाफाखोरों के लिए कुर्बान कर दिए जाएँगे इसकी वजह से लोगों के मन में अशांति है और धीरे-धीरे हम उस स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ देश बिखराव की ओर जा सकता है। इसलिए यह चुनाव जो हो रहा है, इस चुनाव का महत्व केवल मध्यप्रदेश की विधानसभा की सीटों तक ही संभव नहीं हैं विधानसभा में तो हम चाहते हैं कि काँग्रेस के उम्मीदवार जीतकर आएँ लेकिन उससे भी बड़ी बात यह है कि देश में जो अस्थिरता फैल रही है, बैचेनी फैल रही है, जो राजनीतिक रिक्तता हो रही है अगर इसको रोका नहीं गया तो देश में बिखराव भी शुरू हो सकता है और जब भारत जैसे बड़े देश में बिखराव की प्रक्रिया शुरू होगी तो कहाँ जाकर रुकेगी। इसका कोई अंदाजा नहीं है।

आज देश में शून्यता जो आई है उसको भरने की जरूरत है और स्पष्ट है चाहे जितनी लम्बी चौड़ी बातें वाजपेयीजी करें, आडवाणी जी करें वे इस मामले में समर्थ नहीं हैं कि भारत के अन्दर आम लोगों का फिर से आत्मविश्वास लौटे। भविष्य के बारे में वे निश्चिन्त होकर सोचें। उस बात का अहसास करें कि जैसा अभी तक हमने अपने देश को बनाया है, आगे भी बना सकते हैं। यह अगर कोई कर सकता है, ये भावना कोई पैदा कर सकता है तो केवल काँग्रेस कर सकती है और इसलिए मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अपने-अपने उम्मीदवार हैं। सब कुछ अच्छी बात है लेकिन सबसे ऊपर देश हैं अगर देश नहीं रहेगा तो न हम विधायक रहेंगे, न सांसद रहेंगे, न प्रधान मंत्री रहेंगे, न कुछ रहेंगे। वही हाल हो जाएगा जो रूस के अन्दर हो गया। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करने आया हूँ कि ये विषय केवल मध्यप्रदेश की विधानसभा तक सीमित नहीं है। अगर मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली में जैसा दिख रहा है काँग्रेस का वर्चस्व बन जाता है तों यह रिक्तता खत्म हो जाएगी। ये आत्मविश्वास की कमी खत्म हो जाएगी। एक मजबूत केन्द्रय राजनैतिक शक्ति फिर से भारत के अन्दर होगी और ये देश को एकजुट करने मे सक्षम होगी। देश को आगे ले जाने में सक्षम होगी। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि 25 तारीख को पँजे पर मोहर लगाकर आप प्रदेश के लिए तो एक मजबूत सरकार बनाएँ। एक अपने सेवक को स्वीकार करके विधानसभा में भेजें लेकिन उससे भी बड़ी बात यह है कि भारत को बिखराव से रोकने के लिए आपको फैसला करना है। जहाँ तक हमारे उम्मीदवार का सवाल है तो मैं उस पर लम्बी-चौड़ी बात नहीं कहना चाहूँगा। बहुत से लोग अपने-अपने तरीके से

फैसला करते है। मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि जिस व्यक्ति को भी ये जरा भी सोचने में दिक्कत नहीं है। आजकल सोचने में भी तो बहुत दिक्कत होती है। जिस व्यक्ति को जरा भी सोचने में नहीं है तो श्रीमती सोनिया गाँधी के द्वारा जिस उम्मीदवार को चुनाव में उतारा गया है वह हम सबका उम्मीदवार है इसलिए हम उसी की मदद करेंगे। वह कृपा करके इस समय अपना काम करें और जो अपने-अपने तरीके से सोचते हैं, कोई इस आधार पर सोचेगा, कोई उस आधार पर सोचेगा, किसी को कोई रोक नहीं सकता लेकिन फिर वे कम से कम काँग्रेस की वफादारी की डींग न हाँके। वे कम से कम देश हित की बात न कहें और वे मेहरबानी करके मेरे बनकर न रहें। ये मैं जरूर साफ करना चाहूँगा।

मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि एकजुट होकर इस मौके पर हम कंधे से कंधा मिलाकर काम करें और हम दिखा दें कि अगर देश की आजादी की लड़ाई के लिए काँग्रेस जद्दोजहद करके कुर्बानी दे सकती है तो इस देश को बनाकर रखने के लिए भी फिर से कुर्बानी देने की जरूरत हो तो हम इसके लिए भी तैयार हैं। इतना ही नहीं मैं आपसे कहने आया हूँ और कोशिश करूँगा कि जिले के कुछ और स्थानों पर भी जाऊँ लेकिन कुछ दिक्कतें हैं। बरसात भी है, हमारे पास साधन नहीं हैं। जितनी दूर तक मैं जाऊँगा, लेकिन यहाँ जो लोग इकट्ठे हुए हैं वे कम से कम मेरी बात को सब जगह पहुँचा सकते हैं। तो जहाँ भी पहुँचा सकते हैं पहुँचाने की कृपा करें। आप लोगों ने काफी देर इंतजार किया, मेरी वजह से आप लोगों को जो असुविधा हुई उसके लिए मैं माफी चाहता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

काँग्रेस कार्यकर्त्ता अपने में विश्वास और इच्छा शक्ति पैदा करें

6 अप्रैल 1998 काँग्रेस अधिवेशन दिल्ली में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

परम आदरणीय सोनियाजी, आदरणीय नरसिंहरावजी, आदरणीय श्री केसरीजी, काँग्रेस कार्यकारिणी के सभी आदरणीय सदस्यगण। आदरणीय सोनियाजी जैसा प्रेरणादायी सिद्धांतवादी और हमारे पार्टी के सदस्य और इतिहास से पूरी तरह से जुड़ा हुआ व्यक्ति अपने आप भाषण दे यह हम सबके लिए एक संकल्प समझा जाएगा। कोई भी प्रस्ताव हो उस प्रस्ताव की कितनी भी अच्छी भाषा हो, विचार हो वह सोनियाजी के इस भाषण में ऐसा नहीं हुआ। इसलिए औपचारिक रूप से राजनैतिक प्रस्ताव जो आया है लेकिन अब काँग्रेस के सदस्य के नाते आपसे निवेदन करना चाहते हैं कि सोनियाजी के उद्‌गार, ये भावनाएँ और इस महान संस्था के भविष्य को रेखांकित करने वाली योजनाएँ, हमारे लिए आज के लिए जो यहाँ पर उपस्थित हैं, और उन हजारों हजार काँग्रेस के साथियों के लिए जो यहाँ पर नहीं हैं। एक नया संकल्प, उनके ये निर्णय आज इस ऐतिहासिक बैठक में हुआ है। और यही निर्णय हमारे उन इरादों को पूरी तरह से देश में प्रचारित करेगा। यह केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने वाली बात नहीं है, ये संजीदगी से सोचने वाली बात है और काँग्रेस पार्टी जिसने भारत की आजादी की लड़ाई लड़ी, देश को आजाद कराया। 45 वर्षों तक देश के नव निर्माण में राष्ट्र नायक पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में, इंदिराजी के नेतृत्व में, शास्त्रीजी के नेतृत्व में, राजीवजी के नेतृत्व में योगदान दिया। आज हमारे पार्टी के अध्यक्ष सोनियाजी के शब्दों में हम स्वयं जिम्मेदार है, विपक्ष में बैठने के लिए। यह बात हम सबके लिए उत्प्रेरित करने वाली है और अगर हम इन परिस्थितियों पर काबू पाना चाहते हैं। इतिहास के इस मोड़ को ..... देश हित में मोड़ना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें कुछ सोचना पड़ेगा, हमें कुछ करना पड़ेगा। और उससे भी ज्यादा हमें अपने को सुधारना चाहिए। ये बात

सोनियाजी ने बहुत विस्तार से अपने अध्यक्षीय भाषण के उद्‌गार में कही है। इस प्रस्ताव में भी उनका वही दृष्टिकोण दिखाई देता है। हम किस दिशा में जाना चाहते हैं। यह तो काँग्रेस के हमारे कार्यक्रम हमारी नीतियाँ अपने आप स्पष्ट करती हैं। लेकिन अगर हम उन सिद्धांतों, नीतियों और कार्यक्रम के बारे में स्वयं अपने मस्तिष्क में स्पष्ट नहीं है, तो इस प्रकार का भटकाव हो जाना स्वाभाविक है। उस भटकाव की वजह से हम आज इस स्थिति पर आ गए हैं, हमको यह सुनना पड़ रहा है कि हम स्वयं इस बात के लिए जिम्मेदार हैं।

काँग्रेस पार्टी का यह भटकाव कैसे हुआ? शताब्दी अधिवेशन में राजीव गाँधी ने जो भाषण दिया था वो भाषण यहाँ पर उपस्थित अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के सदस्यों ने स्वयं सुना होगा। वो भाषण सारे भारत के काँग्रेस के लोगों ने पढ़ा होगा। लेकिन अगर उस भाषण में कही गई बातों की ओर हमारा ध्यान नहीं गया। लेकिन हम उस आत्मविवेचन की स्थिति से जो आज गुजर रहे हैं। क्या दिलों पर हाथ रखकर हममें से प्रत्येक ये कह सकता है जो राजीव गाँधजी ने जो उस दिन कहा था, उसका अक्षरशः पालन किया गया? क्या हम यह कह सकते हैं कि काँग्रेस की जिन कमियों के बारे में उनका संकेत इतना स्पष्ट था, उसे हमने समझने की कोशिश की? उस पर अमल करने की तो बात ही नहीं की। इस समूचे भाषण का जिसमें हम सब लोग विद्यमान थे जिस वक्त कहा गया। अगर एक वाक्य में श्री राजीव गाँधी के भाषण को उतारा जा सकता है तो मेरी समझ में यही कहा जा सकता है कि प्रजातंत्र में सत्ता-सत्ता के लिए नहीं है, यह सत्ता सेवा के लिए है। अगर उस सेवा के संघर्ष के बारे में भारत के मतदाताओं को हमारे बारे में भ्रम हो जाए तो इससे बढ़कर हमारे लिए क्या खराब बात होगी।

कभी-कभी ऐतिहासिक संयोग होते हैं। आज भी ऐसा ही ऐतिहासिक संयोग हैं। मैं अपनी नजरों से ऐसा ही संयोग लगभग देख रहा हूँ। 1985 में राजीवजी ने जिन संकल्पों को हमारे सामने रखा था, आज लगभग 15 साल बाद वही संकल्प, वही सिद्धांत, वही आदर्श और वही दृढ़ता के साथ उनको पूरा करने का इरादा है। आज श्रीमती सोनिया गाँधी ने वही सब रखा है। अब ये हमारे आपके ऊपर है, कि हम और आप इस रास्ते पर कितनी ईमानदारी से चलना चाहते हैं। इन सब बातों को जरा अलग रखकर मैं यह कहना चाहता हूँ जो आपमें से बहुत से लोग रहे होंगे। 1985 में उस अधिवेशन में मुझे बोलने का मौका दिया गया और राजीवजी को संबोधित करके मैंने कहा कि आपका इस अध्यक्षीय भाषण में भारत के भविष्य को बनाने के लिए जिसको 'सायलेन्ट रिव्यूलेशन' कहते हैं, उसका संकेत मिलता है। आज सोनियाजी का भाषण इस बात का स्पष्ट संकेत है कि काँग्रेसजनों के लिए यह स्वाभाविक और सरल आदर्श अब इतिहास बन जाने चाहिए। यदि ये अब आगे चलेगी तो आज भारत के लिए काँग्रेस का संगठन बनाने का समय नहीं है क्योंकि ऐसी शक्तियाँ आज देश में उभरकर आई हैं जो प्रतातंत्र संघर्ष में कभी भी उभरकर नहीं आनी चाहिए। मेरी स्पष्ट मान्यता है, माननीय सभापति महोदया, भारतीय जनता पार्टी अपने आप में उसका कोई वजूद नहीं है, वही मायने में एक ही संगठन है जिसने ये सब कुछ संभव किया है। यदि हम भ्रम में पड़े रहे तो आज तो उनको 180 सीटें करीब मिली है, आगे चलकर के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को भारत की लोक सभा में बहुमत मिल सकता है। यदि हम गफलत में रहे, यदि हम उनकी चालों को अच्छी तरह से समझ नहीं सके। ये एक अधिनायकवादी सोच से पूरी तरह से ओतप्रोत शक्ति है। लोक सभा में विश्वास के मत पर हो रही बहस में भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्र शेखर जी ने केवल संकेत दिया, ध्यान आकर्षित किया राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक के कथन को जिसमें ये उल्लेख था कि उनके आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महावीर और इस देश के महान संत कबीर और लोग नहीं है। उनके आदर्श इस दुनिया में सबसे दुर्दान्त अधिनायकवादी एडोल्फ हिटलर है। आडवाणी जी ने क्या कहा टेलिवीजन में दिखाया, अखबारों में भी था, ऐसा छल किया, उनका यही कहना था नहीं-नहीं ये चीजें

छोड़ दी गई हैं। कब छोड़ दी गई हैं। किसने घोषणा की। यहाँ यही भ्रम का प्रस्ताव वो लोग बना रहे हैं और इस जगह पहुँचे कैसे, सबसे पहला प्रयोग इस कीमत पर सत्ता हथियाने का था। आप सबको याद होगा। 1996 में 13 दिन के लिए वाजपेयीजी प्रधान मंत्री बने थे। मैं चाहूँगा कि प्रसार भारती, उनका उस दिन का भाषण भी उसी दिन टेलीकास्ट हुआ जब उन्होंने कहा था कि चाहे कुछ भी हो जाए हम सत्ता में रहें या नहीं रहें, हम जोड़-तोड़ के आधार पर सरकार नहीं बनाएँगे। क्या आज भारत के लोग भूल सकते हैं कि उस दिन का दिया गया वाजपेयीजी का भाषण और इस विश्वास प्रस्ताव में भारत की लोक सभा में विश्वास लेने के लिए भाषण। इसमें कोई सामन्जस्य है, सामन्जस्य हो कैसे सकता है, जोड़-तोड़ की जो चरम उत्कर्ष की, जो परिभाषा हो सकती हे उसका उपयोग करके आज ये पार्टी शासन में आई है। और ये कहानी शुरू हुई उत्तर प्रदेश से जहाँ हर तरह की हरकतें अपना लीं, सरकार हथियाई। अब शायद 100 से ज्यादा मंत्री हो गए हों और फिर शुरू हुआ दूसरा अध्याय जब ग्यारहवीं लोक सभा भंग होने का प्रसंग आया। आडवाणीजी ने बाजपेयीजी ने सबसे कहा आइए सब लोग टूट-टूट कर आइए हम बनाते हैं सरकार। लोकसभा के चुनाव नहीं होंगे। आडवाणीजी ने तो घोषणा ही कर दी है कि 40 काँग्रेस के लोग मिल गए हैं, 7 और आ जाएँ तो हमारा काम बन जाएगा। वो सात आते ही उन 40 में से एक भी नहीं गया था। वह सिर्फ एक प्रचार करने के लिए था। काँग्रेस का एक भी व्यक्ति नहीं गया। लेकिन आमंत्रण तो खुल्ला था और उस आमंत्रण के पीछे यह वायदा किया था। वायदा यह था आर्टिकल 370, राम जन्म भूमि, मथुरा और काशी के विषय ये सब हम पीछे कर देंगे, आज लोगों को कामनसीविल कोड से दिक्कत है, उसको भी भुला देंगे। वो नहीं हुआ। लोक सभा भंग हो गई। और उसके बाद चुनाव का प्रश्न आया। अपने बलबूते पर लड़ने की पूरी हिम्मत तो थी नहीं। तो चुनाव के लिए गठबन्धन करने के लिए लोगों की जरूरत थी। उसकी तलाश में किसी प्रकार का भी तालमेल नहीं है। ऐसे लोग इस गठबन्धन में आए उसके लिए फिर से दूसरे प्रकार का प्रचार किया गया। आप आइए चाहे वो ए.आई.डी.एम.के. हो, चाहे वो और कोई हो। सब लोग आइए हम इन सब विषयों को अलग रख देंगे और गठबन्धन बन गया। देखिए चुनाव शुरू होने से तीन दिन पहले बी.जे.पी. का मेनीफेस्टो तब तक नहीं निकला। अमूमन तो बी.जे.पी. का मेनीफैस्टो सबसे पहले निकल जाता है। काँग्रेस का मेनीफेस्टो सबसे आखिर में निकलता हैं लेकिन अबकी दफे बी.जे.पी. ने अपने मेनीफेस्टो को रोक रखा था। जब तक कि उनके एलायन्स से सब चीजें नहीं हो गईं। जब गठबन्धन हो गए तब मेनीफेस्टो निकला। और उसमें साफ-साफ कहा गया कि जितने भी मुद्दे हैं, ये सब बी.जे.पी. के मुद्दे रहेंगे और इन पर हम अमल करेंगे। कहा गया ये कि गठबन्धन के आधार पर और लोगों का समर्थन मिल गया जो लोग बी.जे.पी. की इन संकीर्ण भावनाओं से प्रेरित होकर बी.जे.पी. का समर्थन करते रहे हैं। उनको अपने पास रखने के लिए मेनीफेस्टो में उनका जिक्र कर दिया गया।

यहाँ मैं आपसे एक निवेदन करना चाहूँगा जरा बारीकी से देखने की जरूरत है। यह सब कुछ करने के बावजूद इस देश की जनता ने उनको तो बहुमत दिया ही नहीं। जो गठबन्धन उन्होंने बनाया था, उन सबके गठबन्धन को मिलाकर भी लोकसभा में बहुमत नहीं मिला। इसका क्या मतलब है। इसका मतलब मेरे नजरिए से यह है कि इस देश की जनता इन अवसरवादी चीजों से पूरी तरह भिज्ञ है ओर उनको नहीं होने देने के लिए कृतसंकल्प हैं। अब लम्बे-चौड़े बयान दिए जाते हैं कि जनमत हमको मिला है। अब अगर जनमत की और कोई परिभाषा हो जाए तो अलग है। अगर जनमत का प्रतिबिम्ब लोकसभा में चुने हुए लोगों से होता है, तो वह जनमत इनको नहीं मिला। यह स्पष्ट है अब। उसके बाद सरकार बनाने का सवाल आया, बहुमत नहीं मिला। अगर वो दाँवपेंच वाले काम से बहुमत मिल गया होता तो इन सबको तो वो ठिकाने लगा देते, मिला नहीं और लोगों की जरूरत है और जो गठबन्धन में आए उनका बड़ा ख्याल रखने की जरूरत है। तब निकला एक नया फार्मूला। नेशनल एजेंडा। अब देखिए जो पार्टी अपने

मेनीफेस्टो में इन सब मुद्दों को रखती है। जिसके आधार पर भी जनता के बीच में जाती है। चुनकर आने के बाद वह नेशनल एजेंडा में परिवर्तित हो जाती है। जिनमें उन सब मुद्दों को फिर दरकिनार कर दिया जाता है, इस काम से। ताकि वो गठबन्धन बना रहे। ये नेशनल एजेंडा देश की आम सहमति के लिए नहीं है। ये नेशनल एजेंडा इस सरकार को बनाए रखने की मजबूरी है, तो ये बातें हमें अपने सब लोगों के बीच में भी कहनी चाहिए और देश के लोगों के बीच में भी कहनी चाहिए। सवाल आता है इनको सब कहने के करने के इन्स्ट्रूमैंट्स हैं? माननीय सभापति महोदया ने बहुत साफ शब्दों में कहा है कि संगठन जो इन सब कामों को करने की जिम्मेदारी रखता है उसकी हालत जो आज है उसमें व्यापक तब्दीली चाहिए। इस प्रस्ताव में बहुत स्पष्ट इस ओर संकेत ही नहीं है, बल्कि जहाँ तक मैं समझता हूँ पहले कभी-भी अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी में इस प्रकार से बात नहीं कही गई। आज परिस्थितियाँ ऐसी है, आज पार्टी की स्थिति ऐसी है, इसमें कहा गया है दिस सेशन ऑफ दी ए.आई.सी.सी. इज ओनली ..... फार एनालिसेस। एण्ड दी इनीशियेटिव शी प्रपोसेज टू टेक एण्ड गिव्स हर फुल अथारिटी टू रिस्ट्रकचर दी आर्गनाईजेशन एट आल लेवल। (तालियाँ) मैं आपसे एक ही प्रार्थना करना चाहता हूँ। जैसा मैंने अभी अपने भाषण के दौरान कहा। सन् 1985 में जो आदरणीय राजीवजी करना चाहते थे, वो ठीक तरह से नहीं कर पाए। क्योंकि उस समय काँग्रेस सत्ता में थी। बहुत सी ऐसी बातें वे करना चाहते थे। वे नहीं हो सकीं। सत्ता के कई ऐसे प्रश्न होते हैं, जिनकी वजह से अड़चनें पैदा होती हैं। इनमें चुनाव संयोग नहीं है, लेकिन संयोग है उन्हीं के शब्दों में आज हम विपक्ष में हैं। पूरी आजादी आपको है और अब हम सब लोगों को भी इस बात का आभास है कि राजीव जी के उन इशारों को न समझने की वजह से उन पर अमल न करने की वजह से हमारी यह दुर्दशा है। आज समूचे देश ने काँग्रेस पार्टी को एक मौका दिया है सुधरने का। बिना किसी एक्सेप्शन के आपके इस प्रयास में पूरा समर्थन हर दम तक करेगा और जो भी फैसला आपने लिया उस फैसले को अमल में लाने के लिए हम सब अपना कर्तव्य समझेंगे। मेरी भावना एक जो मैं कहता हूँ, ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं। इस देशके प्रत्येक काँग्रेसजन से है, एक ऐसा भी शेड्यूल है जिसका प्रस्ताव हम करें। बहुत ही सुसंवेदना के साथ उसका रीजन है। हम इक्कीसवीं सदी में जाने की जितनी बातें सोचते हैं। स्वर्गीय राजीव गाँधी का वो वाक्य "आत्म विश्वास धरातल पर सामने आया है।"

इस समय ये जो राजनैतिक परिस्थितियाँ हैं, वो केवल काँग्रेस के लिए ही नहीं उन सभी राजनीतिक दलों के लिए भी संकेत करती है जो धर्मनिरपेक्षता और प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं। एक दौर चला इसी दौर में काँग्रेस को कमजोर करने का। काँग्रेस को समाप्त करने का और काफी हद तक वो स्थिति बन गई और इसमें केवल बी.जे.पी. का हाथ हो यह भी नहीं हैं हमें स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि केवल बी.जे.पी. ने अकेले काँग्रेस को कमजोर करने की बात की होती, तो उसको अभी और कई वर्ष लग जाते। सुदृढ़ता पाने में, लेकिन अन्य धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी और जो हमारी शक्तियाँ हैं, उन्होंने काँग्रेस को कमजोर करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। आज उनको भी मालूम पड़ गया है कि परिणाम क्या होगा? इसका परिणाम यह है कि फासिस्ट कम्यूनीटिज़ को आपके ऊपर शासन करने का मौका मिला है। इस देश के अन्दर धर्मनिरपेक्ष और प्रजातंत्र में विश्वास करने वाली शक्तियाँ मजबूत की जाएँ और उसमें जिम्मेदारी काँग्रेस की नहीं है। इन सब पार्टियों की है, जो इसमें विश्वास करती हैं ईमानदारी से।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया ने अपने भाषण में युवकों के लिए बहुत विस्तार से जिक्र किया है उसका प्रतिबिम्ब भी इस प्रस्ताव के अन्दर है और हमारे आज के प्रयास ही इन इरादों को पूरा करने के हैं। खास तौर से जहाँ तक गरीब लोग आदिवासी, हरिजन, पिछड़े वर्ग हैं, वे आज भी आतंक के शिकार हैं, शोषण के शिकार हैं। और इन सबके बारे में हममें में प्रत्येक को अपने-अपने तरीके से जानकारी दी है। यदि हम पूरी इमानदारी से इस शोषण से और आतंक से मुक्ति दिलाने में जो हम सबका थोड़ा बहुत योगदान हो सकता है वो करना शुरू कर दें तो एक फिज़ा बन सकती

है इस देश के अन्दर जो कि इन लोगों के मन में जो एक जरा सा अविश्वास पैदा हो गया है, कॉंग्रेस के बारे में हम उसे दूर कर सकें और ये अविश्वास दूर हो जाए तो ये अधिनायकवादी शक्तियाँ जो हैं, इनके मन में ये सब चीजें आती ही नहीं हैं। वो तो सत्ता में पहुँचने के जो साधन जुटाते हैं। इस देश के गरीबों की सेवा करने के माध्यम है ओर ये जिम्मेदारी हम में से प्रत्येक को निभानी है। आज सोनियाजी ने वादा किया है, हम लोगों को कि वे सारे भारत का भ्रमण करेंगी। मैं आपसे कहना चाहता हूँ आपके कदम-कदम जिस-जिस जगह जाएँगे, उस विश्वास को पैदा करेंगे, उस इच्छाशक्ति को पैदा करेंगे, उस परस्पर विरोधों को दूर करेंगे जिनकी वजह से हम परेशान हैं और जिनकी वजह से हमारा अहित हुआ है और उन्हीं कदमों पर आगे चलकर भारत का इतिहास एक करवट लेगा। ये संकल्प इस अधिवेशन में हम सब मिलकर लें। वे कार्यकर्त्ता जिनकी आहट देश के कोने-कोने में सुनाई पड़नी चाहिए, उसके लिए हम सब दृढ़ संकल्पित होकर यहाँ से जाएँ। यही इस अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य है। आप सब लोगों ने मेरी बात सुनी, प्रस्ताव को पास करके। आज सोनियाजी के उस संकल्प को पूरा करने का प्रण लें, यही मेरी प्रार्थना है। जय हिन्द।

आज की पीढ़ी को साबित करना है कि वह विरासत के लायक है

12 मई 1998 हैदराबाद में श्री पी. शिवशंकर के सम्मान समारोह में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश —

सम्माननीय श्री पी. शिवशंकरजी, सम्माननीय श्री पुरुषोत्तम रेड्डीजी, सम्माननीय श्रीमती पी. शिवशंकरजी और इस समारोह सभा में आए हुए सभी आदरणीय बंधुओं। मैं अपने को गौरवान्वि महसूस कर रहा हूँ आज हैदराबाद में आकर इस समारोह में, सम्मान समारोह में भाग लेकर और वो भी एक ऐसे व्यक्ति के सम्मान में, जिन्होंने अपने लम्बे राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों में अपने कृतित्व से वो मान और मर्यादा अर्जित की है, जिसके लिए लोग हर दम अपने जीवन में प्रयासरत रहते हैं।

मैं सम्मान करने आया हूँ, यहाँ औपचारिकता के नाते नहीं, मैं सम्मान करने आया हूँ, यहाँ श्री शिवशंकरजी का एक इंसान की हैसियत से। एक ऐसी इंसानियत जिसके दिल में जगह है, जिसके दिमाग में सोचने का माद्‌दा है, अपने लिए नहीं, अपने परिवार के लिए नहीं, देश के दलित, सर्वहारा वर्ग के लिए।

मैं सम्मान करने आया हूँ एक ऐसे व्यक्ति का, जो वफादारी का महत्व समझता है। आज की दुनिया में कई तरह की वफादारियाँ प्रचलित हैं। एक सुविधा की वफादारी है। एक सत्ता की वफादारी है। एक संयोग की वफादारी है। लेकिन जो लोग अपने जीवन के सामने कुछ मौलिक वफादारियों को रख कर काम करने की कोशिश करते हैं, वे सम्मान के पात्र होते हैं और शिवशंकरजी उनमें से इस देश के अंदर एक प्रमुख व्यक्ति है।

मैं सम्मान करने आया हूँ एक कॉंग्रेस के कार्यकर्ता का, जिसके पैर जमीन पर हैं और जिसके दिल उन हजारों कार्यकर्ताओं के साथ धड़कता है, जिनकी पहचान ही कॉंग्रेस की पहचान है। मैं आज यहाँ सम्मान करने आया हूँ भारत के एक सपूत का, जिसने जीवन की विषमताओं से जूझना सीखा है। जो अपनी मेहनत और अपनी क्षमता से अपना रास्ता बनाना जानता है और जो सदैव कॉंग्रेस के उन महान सिद्धांतों को सामने रखकर उनके तरीके से चलना चाहता है, चाहे वो धर्मनिरपेक्षता के हों, चाहे वो समाज के कमजोर वर्ग के हितों के लिए संघर्ष करने का हो, चाहे वो राष्ट्र के गौरव को सुरक्षित रखने के लिए हर प्रयास का हो।

देश के लिए यह एक संक्रमण काल है। यह संक्रमण काल हम सबकी पहचान बनाने का भी समय है, इम्तहान

देने का भी समय है और अपने अस्तित्व को स्थापित करके जनता के बीच में अपनी और काँग्रेस पार्टी जिसके हम सब कार्यकर्ता है, उसकी सार्थकता प्रमाणिता करना है। चारों तरफ विश्वास का संकट दिखता है। हमारी जितनी भी संवैधानिक संस्थाएँ हैं, उनके बारे में अनेकों प्रश्न खड़े हो गए हैं, जो उतावले हैं, उत्तर पाने के लिए। हमारे सामने एक विशाल चुनौती है, जो चुनौती केवल व्यक्ति की नहीं और केवल दल की नहीं, राष्ट्र की चुनौती है। उन करोड़ों लोगों के लिए सम्मान का स्थान प्राप्त करने का जो आज भी हमारी सोच की, हमारी चिंता की और शायद कभी-कभी आस्था के भी दायरे में अपनी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं।

देश की आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी एक नए भारत के निर्माण के लिए। उस भारत का निर्माण काफी हद तक हुआ है। पिछले पचास वर्ष इस बात के गवाह हैं कि हमारे देश के महान नेताओं ने ठोस आधार पर हिन्दुस्तान की इमारत को खड़ा करने की कोशिश की है। आज इस पीढ़ी को भी ये साबित करना होगा कि हम उस विरासत के लायक हैं कि नहीं या हम ऐसी पीढ़ी या ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जाएँगे कि आने वाले समय में जो अपनी समृद्ध विरासत को बचाना तो दूर, उसे बिखर जाने देता है और कभी अपने हितों से उसको बिखेरता है।

इस संदर्भ में आज देश का राजनीतिक जीवन चल रहा है। सामाजिक जीवन चल रहा है। आर्थिक जीवन चल रहा है। ये चुनौती काँग्रेस पार्टी को एक अवसर भी देती है और वो अवसर अपने स्वयं को मजबूत करने का तो है ही, इस देश की जनता की सेवा और संघर्ष करने के लिए एक सशक्त माध्यम बनने का भी एक अवसर है और इसीलिए आज हमें इस बात का विश्वास और भरोसा है कि श्रीमती सोनिया गाँधी के नेतृत्व में, जो सभी पूर्वाग्रहों के ऊपर हैं। जो सामान्य रूप से जो विचारों में भी होते हैं, गुटबाजियाँ होती हैं, उनके ऊपर हैं और समस्त काँग्रेस परिवार को एकता के सूत्र में जोड़ कर भविष्य का सामना करने के लिए आह्वान करना चाहती हैं।

ऐसे अवसर पर हमें श्री पी. शिवशंकरजी जैसे व्यक्तियों की जरूरत है जो निःस्वार्थ भाव से बिना किसी खतरों की परवाह किए बगैर बिना किसी बात की लालच किए बगैर कि हमें इसमें मिलता क्या है और क्या नहीं मिलता है। एक रास्ते पर चलने को तैयार हैं, जो रास्ता समाज को आगे ले जाए। जो इस देश के अनेकों धर्मों को मानने वाले लोगों को एक इंसानी बिरादरी के रास्ते पर ले जाए। जो देश के दलितों के लिए सर्वहारावर्ग के लिए संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर हो।

ऐसे व्यक्तित्व का हम यहाँ सम्मान भी करते हैं और उनके दीर्घ जीवन और भविष्य में अनेक प्रकार से देश की सेवा करने के लिए उनको अवसर मिले और उसमें वो खरे उतरें। इसके लिए मैं उन्हें शुभकामना और मंगल कामना भी करता हूँ। धन्यवाद। जय हिन्द।

Congress has inherited the sprit of 'Do or Die' for the Nation

9 अगस्त 1998 बंगलोर, कर्नाटक काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Respected Shri Dharam Singhji, President of the Karnataka Pradesh congress committee, Smt. Margret Alvaji, Shri Bungarappaji and all respected colleagues.

Today is a very solemn and important day in the history of our country. It was on this day 55 years ago that the Congress party assembled at Gwalia Tank in Bombay to pass the 'Quit India' resolution, which was the final clarion call of the Congress party in the struggle for our Country's independence. All those who are fortunate enough to take part in that struggle have entered the

annals of our country's illustrious history for those who were not in a position to join that struggle. History has given us, an opportunity to fulfill the dreams of those freedom fighters who made all the sacrifices so that we may live in a free country. To Congress party, ours is a special responsibility to the people of this country because we have inherited the legacy of the freedom fight. Other Parties that are in the political field today they came into existence only after India became independent. Before that they have no political entity, none as the Bhartiya Janta Party, the Jan Sangh. The Samajvadi party or whatever party may call the left parties, only the Communist party of India was there. But unfortunately they misread the writing on the wall and at a very crucial moment in the national history when we were struggling for, against the British empire the Communist party of ndia distance itself from the freedom movement. Still it is a party which was then and this is here now what as Congressmen are, we expected to do 55 years after that call by Gandhiji was given in Bombay. As we are assembling here our Persident is in Bombay raising the flag of Congress party at that very spot where it was raised 55 years ago, will that remain, is symbol only, is symbolic act to be repeated every year on the 9th of August as a ritual and shall we as Congressmen be satisfied with that. This is the real question today. I am glad to hear Hanuman Thappaji and our friend here, making certain clear points regarding the role of the Congress party how it can become strong what are our sicknesses and how we can really prove worthy of those martyre who laid down their life for the country. The first decision has to be taken on that as a Congress worked to whom do we owe the first responsibility to ourselves as to where we are standing what is the position and post that we have got, how can we work if we don't have a position to work from, is that going to be the first requirement or are we going to act in the manner in which thousands and thousands of people started acting on their own after 9th Aug. 1942 when the Congress gave the call for do or die. They did and they died at least let's show that we have inherited that spirit, may be, we are not capable of doing anything more than that, but let's at least demonstrate that we have inherited that spirit that we are one, we can do something even though we don't occupy and office either in the party or in the Govt. why has the party come to this position? That we are not in power in the centre.

The BJP today has come into power, not because of their programme, they don't have a programme. They have come into power because a certain vacuum developed in the country's political thinking. The Congress had a programme, had a policy and was implementing as long as the people believed that Congress was doing this, they supported the Congress. The movement spreaded but they are not true in the interest of the minorities, they want to make compromises where the weaker sections are concern, they have become involved in castiest politics. You have something never taken into consideration in the Congress party. The people distant themselves and the BJP is a party like this who had only religion as their plank they entered the political minds of the people and mind you, in a democratic system there is no vacuum, nobody is going to wait for five year or ten years for the Congress to come back to power after every thing has gone. So today the line that Smt. Sonia Gandhi has taken is not merely a decision born out of temporary requirements first, the party has to enter once again, the hearts and minds of the people of the country and how do you do that?

It is only through the instrumentality of a mass movement.

I can tell you this is going to happen again. The agitational path which Soniaji has taken, will lead the Congress party to the same place where it laid the party in 1980 under Smt. Indira Gandhi. In the mean time, if this Govt. collapses as it is down to collapse the way it is going. The Congress party will certainly carry out its constitutional responsibility to do whatever it can, to provide a stable Govt. at the centre. But in the present set up there won't be a stable Govt this is also quite clear. But that is to decide the point if a situation arises we will have to do it but in the meanwhile as I have said in the very beginning, "we have to make our party strong". We are all equal in the Congress party. It will be improper for me to tell you how to make the party strong. You have to tell me how to make the party strong.

It is when we hesitate to speak the correct thing and do the right but all kind of problems arise in the party that is why in the last AICC session at Delhi on 6th April, Mrs. Gandhi was very-very clear on this point, she doesn't want sycophancy now in this party, we had enough of it the damage that it has caused to the Congress is immense. Our commitment must be understood by the people. They must be understood by the minorities, by the weaker sections, by all the communities in this country. The question of caste and the advantages that come out of that, don't belong to the political domain. Yes, we have many castes in India, and all the communities have a very important history behind them but that is for that purpose, it has nothing to do with politics. All these things now the Congress party will have to take care of and I am not at all despondent, I am not at all despaired that the Congress has a very major role to play in the future re-generation of India and the 21st century though we have lost our great leader who was looking to the 21st century yet I can say with all if I assess my command that the 21st century will be the century when the Congress will start its second innings of re-generation of this country.

Karnataka has been one of the most progressive states of the country at all times. Here you have an opportunity once again to close ranks come together and I agree that delays must not occur in revamping the party. If a purist disappointed he must have an executive to function and inordinate delay naturally not only reflexed on the President but it, reflexed on the centre leadership. I have just talk to Dharam Singhji he told me that within a week he will see that the new executive is announced, he has consulted everyone, taken everyone into confidence and whatever decision is taken now each one of us have to work shoulder to shoulder to see that in Karnataka if the election takes place next year, the Congress party again regains the confidence of the people.

The communal sectarian elements who today occupy positions of power, you can rest assured it is an accident of history and when accidents happen, people are injured, some people are hurt slightly, some are hurt badly. I hope the country has not hurt badly in this accident of political history and the Congress party once again start serving the country and all of us play our role as soldiers in this great organisation. This is the pledge that we have to take on 9th August, which is a day of remmemberance, commitment and of hope. Thank you.

काँग्रेस कम्पनी नहीं है

30 अगस्त, 1998 कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में काँग्रेस कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर में दिए गए समापन भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

हरियाणा प्रदेश काँग्रेस के सम्मानित अध्यक्ष श्री वोहराजी, सम्मानित सुल्तान सिंहजी, मंच पर विराजे हुए सभी सम्मानित साथियों और इस प्रशिक्षण शिविर में भाग ले रहे आदरणीय बहनों और भाइयों, मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ वोहराजी का कि उन्होंने मुझे एक मौका दिया हरियाणा प्रदेश के जुझारू साथियों से साक्षात्कार करने का। हरियाणा के काँग्रेस के अपने कामों से, अपने हौसले से दिल्ली का हौसला बढ़ाते आए हैं और मैं ऐसी उम्मीद करता हूँ कि आगे आने वाले समय में भी आप सब बहनों और भाइयों का यही रोल रहेगा।

ट्रेनिंग कैम्प बहुत ही सामयिक है, लेकिन मेरी अपनी राय है और मेरी ऐसी मान्यता है कि जो इसमें ट्रेनिंग का भाषण देने आते हैं सबसे पहले उनको अपनी ट्रेनिंग लेनी चाहिए। क्योंकि पिछले दस सालों को काँग्रेस का इतिहास हमें यह बताता है कि यदि पार्टी की एकता कमजोर हुई है, यदि हमारी सैद्धांतिक प्रतिबद्धता कमजोर हुई है, यदि प्रजातंत्र में जो आचरण जन मानस की अपेक्षा है, उसमें कमी आई है, तो यह आम काँग्रेसजनों की वजह से नहीं आई है। यह ऊपर से आई है और जब तक हम इस बात को खुले दिल से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, तब तक मैं समझता हूँ कि हम आपको क्या ट्रेनिंग देंगे? जब तक हम खुद ट्रेनिंग नहीं लेते?

काँग्रेस की ट्रेनिंग क्या है? यह कोई कम्पनी नहीं है। केाई रोजगार का दफ्तर नहीं है, जिसमें हमें यह बताना है कि आप किस प्रकार से अपना आचरण रखते हैं। कितनी बिक्री आप करें? ताकि आपकी कम्पनी ठीक से चले। यह एक ऐसी राजनीतिक संस्था है, जिसकी शुरुआत एक बहुत बड़े लक्ष्य को सामने रखकर की गई। इस देश की आजादी और जिसका समूचा स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास उन अनेकों घटनाओं से भरा पड़ा हे, जिनसे इस संस्था ने भारत के करोड़ों लोगों को न केवल प्रेरणा दी न केवल मार्गदर्शन दिया, बल्कि स्वयं अपने आचरण से अपने नेताओं ने यह जाहिर किया कि हम किस रास्ते पर जा सकते हैं और हमें वहाँ पहुँचने के लिए स्वयं को किस प्रकार से अपने आचरण को ढालना पड़ेगा?

अब अपने स्वयं के आचरण के बजाय हम लोग उपदेश देने के काम में लग गए हैं। मैं उदाहरण के लिए आपको बताता हूँ। यदि साम्प्रदायिकता की बात आती है तो हम साम्प्रदायिकता के खिलाफ भाषण देंगे और जोरदार तफतीश करेंगे, लेकिन कुछ ऐसे लोग जो सदैव समाज को अंदर से कमजोर करने में लगे रहते हैं, जो साम्प्रदायिकता के माध्यम से ही अपनी राजनीतिक रोटी सेंकते हैं, अगर वो परिस्थिति का निर्माण ऐसा कर देंगे तो हम पुलिस की गह देखेंगे, शासन की गह देखेंगे, अपनी अँगुली उठा कर कुछ करने की बात नहीं सोचेंगे। एक जमाना था जब ऐसी परिस्थितियों में सबसे पहले बीच-बचाव करने के लिए, शांति स्थापित करने के लिए काँग्रेस के लोग ही आया करते थे। आपने नाम सुना होगा श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का वे कानपुर के थे। शहीद हो गए इसी में। आज हमारी प्रतिबद्धता इस मामले में और खरी होने की जरूरत है।

हम जमीन की बात करते हैं। सामाजिक न्याय की बात करते हैं। लैण्ड रिफार्म की बात करते है। जो खेतिहर मजदूर है, उसके पास कुछ नहीं है, उसके अधिकारों की बात करते है। और हमारी संस्था का एक बहुत प्रमुख कार्यक्रम है, लेकिन इन कार्यक्रमों को अमलीजामा पहनाने के लिए हम में से कौन कितना प्रयास करता है ईमानदारी से? यह किसी दूसरे से पूछने की जरूरत नहीं है। अपने दिल पर हाथ रख कर स्वयं सोचने की जरूरत है।

इन्हीं सब कारणों से मैं चाहे जितने उदाहरण आगे देता रहूँ, इन्हीं सब कारणों से आम आदमी जो जाति-पाँति के आधार पर नहीं, काँग्रेस में कभी जाति-पाँति का आधार बना कर कोई संगठन नहीं बनाया। सबको उचित संदर्भ में उसका अधिकार मिले, न्याय मिले और इस संस्था के माध्यम से उसे काम करने का अवसर मिले। यही आधार था काँग्रेस के बनने का और यही आधार था काँग्रेस की मजबूती का। आज वो आधार कमजोर होने की वजह से अब जातियों के आधार पर लोगों का महत्व हो गया, चूँकि अभी काँग्रेस ने यह रास्ता चुना नहीं और अब चुन भी नहीं सकती, इसलिए हम किनारे हो गए हैं।

इसको हम किस प्रकार से दूर करें? यह हमारे साथियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय है। अब इसमें मैं कोई बहुत बड़ा उपदेश नहीं दे सकता। छोटी-छोटी बातों से ही बात बनती है और बिगड़ती भी है। यदि काँग्रेस के लोग इस विषय पर अपने दिल और दिमाग स्पष्ट कर लें तो मैं नहीं समझता कि कोई अड़चन है पार्टी को फिर से लोगों में विश्वास स्थापित करने की।

दूसरी बात है हमारे आचरण की। इस बात का जिक्र करने में थोड़ी सी अप्रियता भी आ सकती है और लोगों की नाराजगी भी हो सकती है, लेकिन कोई विकल्प नहीं है। यदि काँग्रेस फिर से नजदीक जाना चाहती है आम लोगों के, तो हमारे संस्था के जो महत्वपूर्ण कर्णधार हैं, उन्हें अपने आचरण को एक स्तर का बना कर रखना पड़ेगा।

आपको मालूम है काँग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी ने पहली बार इस विषय के अत्यधिक महत्व को देखते हुए एक ऐसी कमेटी, आचरण समिति (एथिक्स कमेटी) जो इसके पहले काँग्रेस में नहीं थी ए.आई.सी.सी. में उसका गठन किया है अर्थात् आचरण भी काँग्रेसजनों का एक महत्वपूर्ण पहलू होगा, उसकी सार्थकता का और उसके काम करने में सफलता का। मैं समझता हूँ कि इस तरह की कमेटियाँ हर प्रदेश में बनना चाहिए।

जहाँ अवसरवादिता का वातावरण हो, वहाँ स्पष्ट है कि हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। केवल शासन में जाने के लिए ही रास्ता ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है और मैं तो समझता हूँ कि काँग्रेस अध्यक्ष ने बहुत सही निर्णय लिया है कि काँग्रेस पार्टी उठा-पटक करके सरकार नहीं बनाएगी। पार्टी अपने को मजबूत करेगी। आम लोगों के नजदीक ले जाने के कार्यक्रम में लगेगी और यदि कोई ऐसी परिस्थिति निर्मित होती है, जहाँ केन्द्र में सरकार गिरती है तो उस हालत में जो संवैधानिक जिम्मेदारी काँग्रेस की है, उस जिम्मेदारी को पूरा करने में काँग्रेस पीछे नहीं हटेगी।

स्पष्टवादिता और स्पष्ट विचार काँग्रेस के लिए नितांत आवश्यक है। इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि संस्था के अंदर और यह कहते समय मुझे थोड़ी-सी हिचकिचाहट जरूर है, क्योंकि मेरी यह बात कुछ लोगों को अच्छी नहीं लगेगी। संस्था का इस्तेमाल ही अपने व्यक्तिगत हितों के लिए करने का किसी भी काँग्रेस के साथी को नहीं है। यह बात साफ होनी चाहिए, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है। यह भी उतना ही स्पष्ट है। हमारे व्यक्तिगत हितों को बढ़ाने के लिए या उनकी रक्षा करने के लिए यदि काँग्रेस संस्था का कहीं भी इस्तेमाल हो सकता है तो बेहिचक हुआ है और यही वजह है कि संस्था की साख निरन्तर गिरती चली गई है। अब इसको आगे नहीं गिरने देना चाहिए। किसी को परमिशन नहीं होनी चाहिए। किसी कानून के तहत नहीं, काँग्रेस के अंदर ऐसा वातावरण काँग्रेस के साथियों को निर्मित करना चाहिए कि यदि कोई भी व्यक्ति संस्था को अपने हितों के लिए इस्तेमाल करता है तो यह साफ हो जाना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का इस पार्टी में कोई स्थान नहीं है।

अंतिम बात जो मैं आप से कहना चाहता हूँ वह आज के संदर्भ में है। श्रीमती सोनिया गाँधी को हम सब लोगों ने मिलकर देश के हजारों-हजार कार्यकर्ताओं ने उनसे कह कर राजनीति में आने का आमंत्रण दिया। उसके बावजूद उनको कोई रुचि नहीं थी। कोई दिलचस्पी नहीं थी। कोई अपने लिए महत्वाकांक्षा से नहीं बँधी हुई थी। लेकिन काँग्रेस

की फजीहत को देखते हुए, काँग्रेस की स्थिति को देखते हुए उन्होंने अपना वो फैसला बदल कर और काँग्रेस में आने का और काँग्रेस के माध्यम से देश की राजनीति में भाग लेने का फैसला भी किया।

हाँ, हम ही ढीले पड़ जाएँगे। हम अपने बारे में सोचने लग जाएँगे। हम ही अपने बारे में सोचने लगेंगे कि सोनियाजी ने हमको क्या दिया? क्या नहीं दिया? हमें कोई पद मिला या नहीं मिला? काँग्रेस में हम कहाँ हैं? हमें क्या काम मिला है? अगर हम इस उधेड़ बुन में लगे रहेंगे, तो हम काम भी कुछ नहीं कर सकते है और इतने पद पार्टी में नहीं है कि सबको मिल जाएँ। भाई किसी न किसी को तो पार्टी में बिना पद के भी रहना पड़ेगा और जब इस ऊहापोह में जो हमारी दिशा है, वो भ्रमित होगी। और जब दिशा भ्रमित होगी तो हम कुछ कर पाएँगे, इसमें बहुत बड़ा संदेह है।

मैं वोहराजी, उन के सब साथियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि हरियाणा के हमारे साथी सारे भारत को एक ऐसा संदेश देंगे, जो संदेश एक दफे फिर से झकझोर कर हम सबको खड़ा कर देगा और हम सब कंधे से कंधा मिला कर एक दूसरे के साथ, एकता के साथ भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ेंगे। काँग्रेस को मजबूत करने की दिशा में बढ़ेंगे और सोनियाजी के नेतृत्व को एक ऐसा चमत्कारिक नेतृत्व बना कर रखेंगे, जो नेतृत्व फिर से देश के उत्थान के लिए जुट सके और इक्कीसवीं सदी में भारत को उस उच्चतम स्थान पर ले जा सके, जिसकी कल्पना देश के हजारों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने की थी और जिसके लिए हमारे बड़े-बड़े नेताओं ने बलिदान दिया— गाँधीजी ने, इंदिराजी ने और राजीवजी ने। आज इसी संकल्प की जरूरत है। हम सब मिल कर यह संकल्प करें। यह हमारी प्रार्थना है। धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकार वार्ता

B.J.P. ignored Ram Mandir after coming to power

21 जनवरी 1998 वाशिंगटन पोस्ट की विशेष संवाददाता सुश्री राम लक्ष्मी को दिए गए साक्षत्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : After the assassination of Rajiva Gandhi was there any drift in the congress policy?

Shri A. S.: In the bang guard of the freedom movement during last five years preceding the 96 election after the assessination of Rajivji a certain drift was seen in the Congress policy and the secular credential which is a very cardinal basic principle on which the congress has been functioning for the last so many decades that itself came under question specially in the aftermath of the demolition of the Babri Maszid and weaker sections of the country they felt as the liberalisation programme which was conceived correctly and it was in the interest of the country, yet the perception that gained at the end currently was that it did not take into account the hopes and aspirations of the poorer section of the people who happen to be much larger in number, in this country and they also drifted away from the party.

Question : And that is being done about the traditional vote bank .....

Shri A. S.: And therefore, all that happened whatever happened, then the corruption issue came to form because of the various scams involving, allegedly even the Prime Minister. So this is new situation in which that election took place. Now there is nothing of that nature in this election. And the congress party has not hesitating in accepting some of the mistakes that were committed by it.

Question : You mean thereby demolition.

Shri A. S.: Yes, demolition and also of the pro poor stands of the party that also became more sharply as now and this is how we have shifted that focus there enough.

Question : So minority and the poor people were also the traditional constituency of the congress has been, the lower caste, backward, dalit, why has that shifted away from congress and what will you do to bring them back .....

Shri A. S.: As I told you, as we feel major reasons and the effort is that must be convinced that the party has not diluted its stand on that issue that affect them. And it acquires the centre position now as entire approach will be public affairs and ..... now this is a question of convincing them, we hope that we will be able to convince them.

Question : What will be your strategy, so if congress voted to power will it be a different government than what it was, say in 91 to 95?

Shri A. S.: Obviously there has been no doubt about it. And see stabilitiy is not an issue in a vacuum..... what itself does not convey anything, except when you are related to your basic policies and programmes. It is those programmes which have been your stands consistently. They are not stable, and he has to adopt everything according to the need of the hour then how can you breed about stability. The congress party has mentioned that the progress of this country depends one-on economic progress and modernisation 2-keeping the interest of the poors, dalits and backwards in the forefront. In whatever policy you formulate, then the secular quality of this country should not be weaken in any way. Because in a country where you have so many people living diverse religion, diverse customs, you can not have anything except to secular approach to it. So that everyone feel that he is very much part of the whole polity. Now if you start distinguishing between religion and religion, caste and caste then you come to a situation where you have to face a fragmented situation. And it is that fragmented situation which has brough about the fragmented mandate, for example the regional aspirations. Now regional aspirations are very much part of the national scene, part of the National aspiration.

Question : Why secular quality of the country is weaken?

Shri A. S.: See, what happened then that congress was a platform for everyone including the regional aspirations. Now the people felt that no the regional aspirations are not perhaps reflected in the congress approach. Then leaders who have no direct interest at the national level, they bring up a sharper focus on the purely regional things, then

you can come to power in a region. There is no doubt in a democratic system if you raise the hopes and aspirations, you can come to power but you can not implement anything without a national perspective. So this is what that is happening now.

Question : That is your view to national perspective

Shri A. S.: Yes I think to a very large extent.

Question : And do you think for this 18 months congress supporting 14 party government, is not hurt you in any way .....

Shri A. S.: It has, because you see we were taking the name for every thing that these people are doing and we had no direct say in what is to be done. And even the most important thing of checkmating the communal, rise of communal elements in the country. That has also not happened in the manner it should have so you loose on both grounds, we tried to see that characters are but unfortunately it does not see that at all then of course came the question of assassination of Rajiv Gandhi and the report of the Jain Commission.

Question : Will you say for economic policy exactly what do you mean by that, I mean do you mean the first five year for welfare budget cut and you would not cut this time .... because economic reform as it was proceeded by Mr. Man Mohan Singh is a long term, think when you have to take the government.

Shri A. S.: You see that, at the end of the road theory that will not do in this country. Because the end of the road for poor people is today is not ten years hence so is that today is not taken care of atleast in a reasonable manner, that the end of the road theory just will not click here. And since it is a democratic country, the people who are dissatisfied and feel that they are being cheated I mean they are not going to be with you. That is part of the management I can see that. You can not say that everything on this side or everything on that side. And that is what management political, social, economic management mean.

Question : What you feel the impact of the Mrs. Gandhi's campaign on the prospect. Would you feel an emotional appeal or what .....

Shri A. S.: Imotionally as, but in the impact would be that the congress now has brought focus back on what it has been doing for the country all these years. These five years of sort of the blurring of the total thrust of the congress party will not be back and that I am sure with her own appeal will make a very great impact.

Question : So are you regretting about last five years?

Shri A. S.: I am not regretting, but you have to assess it candidly. Whether he would like it or not. Nobody is recreating .....

Question : You took about the economic policies having been in too harsh. I think mostly it was job creation that is going on ..... more and more investment in industry.....

Shri A. S.: Job creation is there at a certain level, technological level, there is no doubt but the

poor people do not live at that level. India lives at different level and a list of things which should have been continued for example agriculture. Now agriculture is an area where a list of-things are dependent onhow far this state supports them. Now you withdraw that support and you have a situation. Fertiliser, for example. Now I do concede that this is not going to be, should not be, and can not be, the policy for all time to come. But how he does it makes a difference ....

Question : But the last two years, Rao Government you did go back to the political version, so I thought the main, the five years you did pretty well, first three years you went for there, 1'st two you gave into a ..... And I thought the main failure communication, you can not communicate what you have done when you went to the polls when you went to the people don't you be?

Shri A. S.: May be to some extent, but you see public perception is not only dependent only of what you communicate, public perception, is something which people perceive also.

Question : Which state you think the Congress would be strongest in the state assembly poll?

Shri A. S.: I think in most of the southern states Congress would make a very good story, in the north also Rajsthan, Madhya Padesh, Orrisa, and in Uttar Pradesh also.

Question : And because of Mrs. Gandhi?

Shri A. S.: Yes, partly because of her.

Question : What do you think that your party depends upon one family for leadership, there are so many leaders like you and others.....

Shri A. S.: There would not be a shortcoming but the party has taken a clear decision that this issue will be decided after the election. Now so far as the family is concerned I think we are not talking of a family which has inherited some thing by birth. This family has become the focus of the nation because of the sacrifice and the service that the family has rendered to the country in the last say 80-90 years. Beginning of this century, now, that is something which in India matters. If it was a inheritance by birth, I don't think it will matter, there are many princes who were born great and are no where to be seen to day. Continued service and sacrifice, even two members of the family have been martyred, you can not scrab this to a dynastic thing and what must be kept in mind that each member of the family came into the political circle through a democratic mandate. Mrs. Gandhi was elected, she was not nominated, neither was Rajiv Gandhi nominated he had to face an election within a month of his being sworn in. and they have been winning, they have been loosing. Mrs. Gandhi hereself lost but then by dint of her own character, her own role she was able to regain the trust of the people. So this is part of a democratic system where a family has acquired a preamblence because of a long service and sacrifice, since they acquired a special significance what you can do.

Question : The BJP in the last election when there were three formation, there was leftist in the centre is congress and BJP but now it becoming more, more and middle of the role party so they were talking of the congressisation of BJP so what would be the role of the congress, if BJP comes at centre?

Shri A. S.: You see, we are not at all concerned where the BJP wants to position itself for a very simple reason that you know that the BJP has no ideological base, has no programmatic character and wants to get power at any cost. This is the soul objective and I think the people of India are wise enough not to allow such a thing to happen, so I don't like to go into this matter. You just have a review what the BJP has been saying for the last 20 years and you will see shifting from this to that, that is something which does not deal. For example took question of Ram Mandir at Ayodhya, was a very powerful issue but it is no longer their issue. They say they can wait and even on this issue at the height of the political fall out from the demolition of the Babri Maszid which was demolished to build the temple and this is how it was related in the public mind, 92 December, it is very significant and that shows how the people of this country think and act. December 92 the mosque was demolished and they thought that by this act they will sweep northern India specially U.P. where the temple was to be build even within a year of election takes place, in all the 4 states of the north and each one of them the BJP losses, voters were the same 80 per cent were Hindus they did not vote for the BJP. You see secular approach is very much in the Indian mind There is not an imported ideology from anywhere that we are saying that you become secular, this infringe even in the Hindu religion, which most of the people profession. It is such a catholic religion, it has place for every one and what else a secular, if you have respect for every one, for every religion, for every faith and belief then that is what a true, and that is what Hinduism. It is one of our cardinal principle that Hindus can not be a true Hindu if he does not know how to respect the religion of somebody else.

Question : So do you think this appeal to one religion, one caste, it is Dalit, Hindu is all temporary.

Shri A. S.: It is a temporary. I think it has already been ignored in the past.

Question : Even though appeal to caste?

Shri A. S.: Caste will take little more time.

Question : But there was appeals to the caste by Kashiram, Mayawati, it is also because some where dalits being made down by congress, they are feeling impatience?

Shri A. S.: Yes, what you are saying that is unfortunate and that is what has to be adjusted and to be corrected.

Question : Thank you so much.

Sonia can lead a huge party like Congress

22 मार्च 1998 टाइम्स ऑफ इंडिया के श्री अजगरी जेदी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Question : Now since a new leadership has come up in your party that is streering in some circle the changeover has not been very smooth and in some reports out going party president instrumental in ousting him? What exactly was this?

Shri A. S.: See we must see two thing happening in parallel in the last at least 6 months. One was the attitude of the partymen to the person of Smt. Sonia Gandhi. First manifested itself on conference at Calcutta she was only an ordinary member then also she went to attend the conference on the invitation of Mr. Kesri. These are facts, known facts, and the response that the delegates who elected Mr. Kesri as the President was very obvious and on the very platform Mr. Kesri made a public statement that he would welcome Mrs. Sonia Gandhi to take over the presidentship of the party. That is the first point of time when this idea was noted at all and by none else than the President himself. Then came the elections. She till then had not decided to actively campaign. It is again Mr. Kesri and many other leaders also requested her that she should campaign for the party and at the same time between Calcutta and December of last year on one or two public occasion, Sevadal Meeting, Youth Congress meeting Kesri repeated what he said at Calcultta, perhaps little more force fully. Second phase was her campaign and I am not going into the integrity and the percentage of the seats established one thing is beyond any doubt that she has established a sympathy with the people of this country and also with Congressmen across the country. This was a public demonstration. This was not a managed or contrived or in any way arranged demonstration. Now these two things having become clear, every one in the party legitimately expected that Mr. Kesri will follow up his own suggestion and bring about a situation where this would happen, and was not at all unnatural for congress to expect that. Now unfortunately Shri Kesri had some reservation in his mind, I don't know what it was. If he had consulted any member of the C.W.C. that he was going to make a public announcement about his decision to resign, I am sure whom-so-ever he might have consulted he would have told him that making a blank, announcement without a clearcut follow up procedure could send the wrong signal to create the problems when there are none. Till that day there was no problem, none of us had made any request to him that he should decide to step down. Now why did he suddenly go and said this in the press? Instead of consulting the C.W.C. individual members who were perhaps more dependable from his point of view. No one was consulted. Now that is a slight background which is not commonly known. One day before, he made this statement on Monday. On Saturday

there was some discussion at a personal level where a couple of members of AICC were present where this idea was brought.

Question : C.W.C. or AICC?

Shri A. S.: C.W.C. and it was when this subject was brought naturally the only thing they could have said is that it is up to you and you have to make a decision as what do you want to do. The earlier publicly that is on record. These people got the impression that she was totally not interested to the idea of becoming President of congress and then next day he met Soniyaji also, that is a matter of record also. I don't know what was transpired there and then he makes a statement of Monday that he has decided to step down and now the matter will go to the AICC and he will make a statement informing the people of the congressmen and of the country about how he was humiliated and it is a part of the same statement too, not on different occasion and I mean after that statement the entire issue of a changeover which Kesriji himself wanted in a decent, dignified manner was in the view of many of our colleagues dealt very shabby by the statement, and then it becomes an idea to go through the AICC and in the AICC every one had a free debate. Kesriji gave a long statement about how he was humiliated and all that and then says now I am compelled to do this, there is no part of any compulsion. It is in this background that happened subsequently.

Question : No, but he has accused you personally for trying to create problem for him, was there any such thing?

Shri A. S.: Well, I have never created any problem for him. The fact is that every turn of events where his interest was involved, I went out of the way to do what I thought and I was not asked by anyone and under no compulsion to help him. When his election was under way he was being challenged by Mr. Sharad Pawar, he did not asked me neither did anybody else On my own I held a press conference and said what I thought was correct that Mr. Pawar was fighting a proxy battle on behalf of Mr. Narsimha Rao. Then he asked me to go to Maharashtra. After I had made the statement and I went there. Subsequent events clearly show that he was elected. I am not saying that because of me but I was certainly part and parcel of the campaign to elect him. Then comes the plannery. He asked me to help in drafting the political affairs committee resolution, with other collegues, I drafted it and reached there. The draft is drastically amended. O.K. even that was allright, decision is a decision but he don't trust me to move that resolution. This is normally the convention I did not say anything to anybody, any congressman could move it, Madhav Rao moved it, he did a good job of it, so also I can say. After that whatever was done, in my view was clumsy. I would not say disgraceful but certainly clumsy. Say from the platform there that some people had leave

there and all that kind of things, then the election to the congress working committee, panel was circulated and everyone was told anybody but Mr. Arjun Singh and all of you know that I never made it an issue even then I contested and I will say publicly I said then was there but also gave him credit as his good wishes also was there. But the decision was of the AICC members. I don't remember any time when any such occasion arose, so I think this is a, may be some people were feeding him all that kind of information it is totally wrong.

Question : Now since there is a new leadership in the party what challenges do you think you have and at the same time you have new government which is led by the BJP, so what challenges do you think?

Shri A. S.: See, since you have asked both these questions, I can answer only one at a time. First is the party. Now that fact is that Mrs. Sonia Gandhi has taken over the Presidentship and she is also the Chairperson of this C.P.P. has brought about very qualitative change and a positive one in the minds and the affairs of the congress party and congress workers. Whether it is to the liking of somebody or not that is immaterial I know many in the opposition would not like such a thing to happen but the party has taken a decision. I see the party from now going in a direction which will equip it for the next political battle, the election, two years end, four years end, five years end that is the outer limit. I think the party is equipped and atleast the party then stands up and fights. It is too early at this moment to give out an entire scenario of the next five years, but I think the manner in which her acceptance of the Presidentship of the party has been taken by congressmen across the country. This is the first positive Signal that have come out after her assuming the leadership, that atleast all sections want to work in a manner so that she is convinced that they are working under her leadership. This will be the starting point for anything she wants to do. I can not see beyond this because after the AICC session on 6th is held and it is a formal gratification over when the working committee decided events after that, but I have a firm feeling along with me that everyone has a feeling that she will move in the manner. This will retain the confidence of the Congress workers and also give us very clear cut direction in which we have to go. Some indication of that she has already given in her speech delivered before the CPP in four of five points that she had specially mentioned broadly defined to begin with what her agenda is going to be, and I don't think anybody can take exception to them. So far as the Government part is concerned, It is true that B.J.P. Prime Minister Shri Vajpayeeji has assumed power and is now leading this coalition government. I would call heterogeneous elements who have nothing in common except the desire to be in power. Whether it was pre-poll alliance or post poll gathering of support, I think there is no difference, all of them are there because only they want

to be there. That they have anything objective or the common objective in view related to the challenges facing the country, I think will be totally wrong to assume that at all. They are there for themselves. They will remain there as long as their interest is there. I think they pick up, they developed clearly indicate that no one should be any doubt on account of that. The second part is which I think is much more dangerous that this Government the Prime Minister included are not free agents by themselves. They are on a tight lash whether publicly or non-publicly of the RSS. Any deviation this way or that way except for minor things which don't count will not be tolerated by the R.S.S.

Question- This how can you say?

Shri A. S.: This I am saying. It is not only in this, I would like to take you back in 1977 when Morarji Desai was the Prime Minister in the Janta Government this issue of the RSS and the BJP came up by way of the issue of dual membership, and how it was resolved this to be recounted. None of these people denounced, Vajpayeeji and Advaniji included, I am not talking of the other leaders that, yes we are proud to be in R.S.S. This is my recollection I am subject to correction. After that lot of things have happened. 1977 to 1997, are 20 years, in this period whether it was a state, whether it was a centre, every single step which this party took was totally under the guidance and direction of the R.S.S. There was not one but so many instances to prove. Now take the question of the Ayodhya issue, sometimes the BJP section of the leadership would say that, that is not part of our agenda, immediately this impression was corrected by somebody from the R.S.S. In the demolition actually demolition Kalyan Singhji, I mean all these people. It is a sort of begging the question is how do you prove that, then comes the recent scenario leading up to the formation of this Government. The B.J.P. knew that if they overplay their cards on the Hindutva and the Ram Janma Bhoomi issue, things may not turned out to their advantage, which they realise in the elections to the State Government in 1993, immediately after the demolition. Rajasthan, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh and Himachal Pradesh all these four states, the leadership there, the Chief Ministers there were actively involved and helping the demolition effort. The B.J.P. naturally felt that their dismissal would lead to a what you call a back lash bring all these Governments to the power with a bigger majority that eventually did not come to power not even in Uttar Pradesh where the whole thing was done so they realised that what you call in Urdu, the country's Mizaz did not tolerate all this kind of absurd abrasion. They had to do something to it if not correct to confuse the issue and they started talking that no this is not the part of our agenda and we are liberal somebody would say that even 370, individual statements when it came to the crucks of

placing the manifesto of the B.J.P. before the country all those statements which gave the impression that all these hard line issues are not going to be part of the B.J.P.'s agenda before the people, impression was totally demolished in because the agenda of the B.J.P. as spelled out in the manifesto was the same as the R.S.S. always said. Then came the formation, the period leading to the formation again those sounds were coming out that we are liberaly and we are this and that and everything and they also put it into a document which is called now the national agenda, all those issues are not there.

Question : Do you visualise a situation where this government will be pulled down by their own allies?

Shri A. S.: Well since they are there only for the sake of power, the moment that they feel that their power is being diluted on any acount the conflict will start. There is nothing else binding them.

Question : Will you not try to create some problem for them?

Shri A. S.: Well, as a political party we are certainly going to help them to survive, if they fall because of their own contradiction then that is so but all political parties totally opposite to the B.J.P. will take the decision as the option occur.

Question : This is some, most of the people still are not convinced that whether Mrs. Sonia Gandhi has a strategy to deal with the enemy like B.J.P.

Shri A. S.: Well I think that was the impression people had but the fact that unequivocally and in very clear and simple language she has identified B.J.P. for all its stands and live in as the political enemy number one in the party and that is what she had articulated throughout her campaign. I am quit sure that having identified on her she has the requisite what you may call the capacity to see that the party is geared towards that direction and I am sure that coming events will clearly demonstrate that.

Question : Yes, but to lead, a huge party like congress, is not a easy thing and she has no practical experience of leading your party, actively involved in party work?

Shri A. S.: Well that is a matter of fact, as I feel that she has that capacity and events will prove that, she has, and it will also be the fact that the party has absolutely no reservations about it, no one that helps.

Question : But there comes question of some of you who have enough experience too being the leader of the party, where many of you have ambition also to lead the party but is it possible for all of you to give up your ambition so easily?

Shri A. S.: Well in public affairs and in matters where others are also involved, it is the capacity to restrain ambition for a higher purpose which in my view, I am not talking for anybody else, ultimately serves both the persons and also the cause of that is how I see the situation.

Question : No, but what I mean is that may be there are people in your party who have accepted her leadership for some time but after some time they do try to change her leadership.

Shri A. S.: Well, I can not speak for everybody I can only speak for myself, this is what my mental formulation and this is going to be the ambit. I have no intention whatsoever to do anything beyond this and I hope that many in the party who may feel that, that they ought to be some where but also realise that in the present circumstances that is the only say in rational way to function both in the individual and in the interest of the party.

BJP has not changed its ideology

26 मार्च 1998 आब्जरवर के श्री शिवप्रसाद जॉन के साथ साक्षात्मकार के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

Question : What changes you foresee in congress under the new leaderships?

Shri A. S.: I think what changes will actually occur we can only see after she has actually made those, but what congress workers all over the country looking forward to, I can certainly visualise what they are looking forward to. See the biggest thing is that Mrs. Sonia Gandhi enjoys the trust and confidence of congressmen all across the country without any exception, because as congress workers she is a person above all sectional and above all consideration which normally get attached. Secondly the recent elections have demonstrated that the people of this country also recognise her and somewhere or the other and therefore this has taken together gives her the opportunity to make such changes in the party which will remove the misgivings and sometimes they will be hard warning to congress workers because of perceive injustice to them and also bring them closer to the people. There have been only two, after the elections were over they was actually one occasion where she made a speech, post election, that was only, when she was elected the chairperson and the five points that she had mentioned as the priority, they themselves are indicative of her own thinking. So that is what she thinks and she acts on it. Then the congress can look forward to an active face.

Question : Coming back to the secularism, in fact you have been talking .... what is in secularism. Is it anti BJPism or secularism is a different concept?

Shri A. S.: You see anti BJPism is not a separate philosophy. I don't consider anti BJP. That is an issue, what is the BJP profounding so far. I don't have enough time to go through the entire gallop just pin point two or three. They say that a certain section of people Hindus, Hindutva has to be the pre eminent position in comparison to all others this is the unstated statement of the BJP as against this the concept that a constitution give every single section of the people to whatever caste or religion, they belog will have

equal rights in this country. No one is bigger or stronger than the other. Number two, by their conduct. over the years they treat other religions as of lesser significance and unimportant.

Question : What are your views about common civil code?

Shri A. S.: No, I am coming, now common civil code is being talked of because without appearing to be authoritarian that is the way to do it. If there are ten kinds of the people in the country, they have their own traditions So this multi character of the country is there. There are certain basic things that can not be to guidelines. There is question of oath of loyalty to the country, you can not imagine any distinction whatever it be. There are certain other things on which they can't but personal law, that is what the common civil code, personal law, if we want to make a common civil code, the idea may not be absolutely wrong, but it has to be with the total consent of everyone concerned. You can not say that I wanted therefore it is to be imposed. This is the kind of thing which the BJP has been voicing from time to time, to super impose a point of view over others. That is something we can not ignore.

Question : So what will be the role of congress during this period, are you ready to be in opposition?

Shri A. S.: Yes. we are in the opposition. As our President has said, we will offer constructive co-operation but not at the cost of the ideologies and policies and programmes of the Congress party, but as an opposition we would like that the Government serves in the interest of the people.

Question : But what about the restructuring and review of earlier policies also by Mrs. Sonia Gandhi?

Shri A. S.: Every President has right to, and that right, I am sure she will exercise, with discretion and concern of and in the interest of the congress and also will concern for the interest of the country.

Question : Will that review means allies Mr. Kesri had gone in Bihar .....

Shri A. S.: I think one can not elaborate every thing, let her say what she has to say in AICC meeting on the 6th that perhaps may give us some indication.

Question : You have been fighting against corruption and communalism and Laloo is being termed as a corrupt politician, so how you see it?

Shri A. S.: Well after Sukhram becoming the minister, lot of things have gone, Congress will never support that kind of things. Under certain circumstances the decision was taken that will not also be reviewed.

Question : In Bihar Congress unit chief has ben demanding the withdrawal of support to Laloo Yadav.

Shri A. S.: I don't know under what corcumstances they are doing that, but that is a decision which can only be taken by the central leadership.

You seel all these decisions are to be taken at the congress working committee level. Discussions are being held at various levels but no one can say that this is going to be done because that will be a decision, that the Congress President will take and in consultation with the C.W.C.

Question : Once you have been a sort of king of Madhya Pradesh but you lost election this time.

Shri A. S.: You see there are no kings and queens in a republic we are only workers.

Question : M.P. was in pocket of Arjun Singh.

Shri A. S.: No, I refuse to accept that kind of definition. Madhya Pradesh is too big and too important. I don't agree that the vast State's affairs to become any body's pocket. Yes, I had the privilege to serve this state under the guidance of Smt. Indira Gandhi, Rajiv Gandhi and now I am there under Smt. Sonia Gandhi, the President. Whatever I can do as a worker I have certainly do now whatever I could do earlier I did then.

Question : Just last question, reorganisation of states are likely to go on this 2000, so how you see that it was by the constitutional amendment up to 2000 a reorganisation committee will be set up, if the states delimitations of constituencies .... BJP is favouring it immediate as soon as possible the reorganisation committee should be set up and they will recommend also, that there should be more states?

Shri A. S.: Well, basically I am not against the small states but this exercise must be given into very carefully because India is big country having so many local identities and some of these local identities are very strong and very rich also and they add to the totality of this country's image. We have to go about it carefully, so that whatever decision is taken in the reorganisation of states keeps in view atleast two things, one that the basic unity and integrity of the country will not be jeopardized at any circumstances, Number two, that these new entities are economically, politically viable, so that they function in a way which serve the interest of the people. These are the two paramount consideration under which they should be done.

Question : Coming to the Madhya Pradesh again suppose it is divided into two or three .....

Shri A. S.: I don't want to go into that mechanical question with this point of view that this exercise should be gone into, as to be when it has to be gone into that also we have to decide carefully and it should not be a unilateral decision. It should be initially taken in consultation with all the political parties.

Question : Will you oppose division of Madhya Pradesh.

Shri A. S.: With these consideration in view, a decision should be taken whether it is for Madhya Pradesh or for any other state, and I am saying that I have not opposed to that but these are the conditions under which a decision should be taken, Madhya Pradesh include it.

There can be no difference of opinion on matter of defence

16 अप्रैल 1998 संडे (मध्यकालीन) के श्री मधु तनखा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Question : What you have to say on BJP's decision to make the Prasar Bharti Act. They allowed Prasar Bharti ordinance to pass which was bay of former President Mr. L.K. Adwani.

Shri A. S.: You see the implications, I may not be knowing because I was not present in the legislative process when brought about the Prasar Bharti Act. On this I am quite sure that the objective of the BJP is to gain control of this media directly indirectly, subterraneantly or in whatever manner it is possible. So, all these notions that they are going through is towards that objective. That is what you will have to prevent and all foreign independent system of broadcasting, not under control of Government maximum freedom. But it should be, freedom should not be regimentation of a different slot, which the BJP and the RSS want to impose on this organ of the state. As this is a state control thing.

Question : What do you have to say about the allegation on RSS behind the killing of Mahatma Gandhi?

Shri A. S.: I mean, do we have to prove it again and obviously, I am not saying RSS as a body but the ideology and the thought processes the kind of ambience that was created, was all done by the RSS and subsequently now they are even justifying it. They wanted to kill Mahatma Gandhi because he was a single man army, if you can use the word army for Gandhiji, standing between communal chaos and the future of this country. So he had to be removed. The only thing that they did not bargain for it. That his martyrdom actually stopped the onward march of the communal forces. This is the result which they have not bargain.

Question : What about the BJP's double stand to ones its protect or the dismissal of Laloo Gov-

Shri A. S.: ernment while along Jai Lalita to be a part of Government?
Well this is one example of their double faced approach to public events and there are many other examples, sudden decision to put all the contentious issues like abolition of article 370, Common Civil Code, implementation, Ram Janam Bhoomi, Kashi, Mathura, they are all now on the back burner apparently to lull other parties conscience. So that they can continue to support the party. BJP to remain in power but in fact none of them rather been abandoned so this is a kind of double face that is going on, is this one?

Question : Though BJP and its allies mentioned that it will exercise to induct nuclear weapons. The Pakistani aeronautics has already applied the Gauri Missile which can reach to

Kerala north, Chennai and Gohati. So is it not a worrysome factor?

Shri A. S.: Well, I think in these matter of defence, this tendency to short of ones mouth, ...I don't think it is very responsible way of going about it. All the things that are required for the defence of this country there can be no difference of opinion of the attempt to put it on the statutory book.

Question : Did you think is it appropriate that a commission has been appointed to review our constitution.

Shri A. S.: You see, the constitution has been amended more than 70 times, even more than that, so amendment of constitution has not something objectionable and as and when the situation arises and the Parliament feels that it is required to amend. It can be amended. But to say that a general review of the Constitution is going to take place raises avoidable misgivings. It is specifically mentioned that look in this chapter that article is not helpful for implementations of policies which are very necessary for the country's progress, this they have done in the past, they can still be done in the future but when you say that you are going to have a general review then the impression is given that you want to change both the character, content and the direction that the Constitution wants to follow. Because the Constitution has directive principles as part of it. Now that is the kind of approach which has raised. I doubt and we should not go into it in this manner.

Question : But some of the allies also have agreed .....

Shri A. S.: Who has agreed or not agreed is not a point. The issue that you have raised, is a basic issue with that my answer, I have said.....

Question : What about 'Berojgari Hatao' step, is it a good step but are they not proceeding to the Indian calibre to believe that agriculture is the right area and employment is largely possible in it. Do you think the unemployment can be eradicated by this.....

Shri A. S.: Well, unemployment is a serious issue in the country and the number of unemployed itself proves that how serious the problem is. But it can not be treated an urban or rural issue. It has to be treated as an issue which affects the people. Whether they are in urban areas or rural areas and both will have to be tackled. And on this issue, I think my personal opinion is that we should try to arrive at a certain consensus which could then help the Government of India to implement programmes which really go through. You have used the word calibre. I think to play on calibre of the people is the worst thing that a Government can do.

Question : What is Sonia Gandhi doing to check the communal forces progressing speedily?

Shri A. S.: Well, this can not be a mechanical operation, but to create awareness of this situation, number one, then to mobilise public opinion number two and to make the Congress

party, party of the entire compaign. These are the three ways for this which can be done.

Question : Do you think that the controversial tie. Mr. Qottrochi was a middle man in the Bofors scandal. Do you want the Congress party want that Bofors scandal should be solved

Shri A. S.: We have always said that the matter should be investigated and nothing should be stopping that, the second thing, late Rajiv Gandhi as a Prime Minister, made a statement, on the floor of the house in 1989, categorically denied that any member of his family had anything to do with that. Number three till now inspite of all the tall claims and declaration made by the various government leaders and Prime Ministers Till now, not an iota of evidence has been produced, which could legally link Rajiv and his family to Bofors. What happens to others we are not concern.

Question : Mr. Vajpayeeji had made a statement that Rajiv Gandhi told in Chandni Chowk that Mr. Rajiv Gandhi was among the beneficiary.

Shri A. S.: Let him prove this, I mean statement means nothing. Well. if, that is what I am saying this campaign of calumny against Rajiv has a very well teeth rooted basis. They wanted to destroy a young person who had the Karishma capacity and the potentiality to emerge as a leader of this country for atleast two decade, so he had to be destroyed. For that they tried the campaign of calumny and .....saying till now nothing has been proved. V.P. Singh said that I will do it in 11-days. He was in power for 11-months and colud not do it. Now Vajpaijee makes an annoucement and we should believe it. When they could not destroy him in this campaign of columny and they say that he might came back to power in 1991, the conspiracy to eliminate him physically was brought into operation and it was done. So there are lot of things by which we should go by what political leaders say.

Question : But Qottrochi was certainly a middle man.

Shri A. S.: Well, Qottrochi is not a member of Shri Rajivji's family, if this is the impression ...

Question : Is he not a cousion of Mrs. Sonia Gandhi .....?

Shri A. S.: I don't think so ....

Question : But he was the owner of the firm which transacted the plea.

Shri A. S.: I am saying you go into all that, do whatever the law permits you to do, but you can not by implication, in the absence of any proof what so ever try to malign the Rajiv Gandhi family. If you have a proof bring it to light.

Question : Congress said that at the earliest this Bofors issue should be brought to light.

Shri A. S.: She herself said it. If you remember one of her first speeches. She made while on the campaign trial, she wanted all the things to come out.

Sonia Gandhi is Indian and can hold any top post in the government

29 अप्रैल 1998 संडे आब्जरवर के ब्यूरो प्रमुख सुदीप बनर्जी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Question : What new policies congress wants to implements under the new leadership of Smt. Sonia Gandhi?

Shri A. S.: The Congress, under Smt. Sonia Gandhi, the thrust is towards fussion, fusion of all the fundamental ideas of the Congress party with the experience gain during the last 8 or 9 years and with the clear intention of making use of this fusion to build an India, which is technologically sound, and in a position to give hope and sustenance and a place under the sun to all the weaker sections of society in the country, SC/ST, OBC, minorities and also to ensure participation of women in the government of the country. This is what the Congress under Smt. Sonia Gandhi introduced.

Question : Congress under Smt. Sonia Gandhi on the future.

Shri A. S.: The past will not be alien to the present, the past will help us understand the basic structure of this country, the basic ethos of the Congress party and that will help us to force new ideas, new concepts for the future of the country.

Question : How you react to the BJP and alliance that Smt. Sonia Gandhi is an Italian and can not hold top posts of the country?

Shri A. S.: You see, I believe that the attempt of the BJP alliance to focus on the person of Smt. Sonia Gandhi is an object admission, that they have nothing as to say except her origin. No one can say today that Mrs. Sonia Gandhi was born in Allahabad in 1946. She was very much born in Milano according to our information in Italy. Having come into the family of the Nehru's as a daughter in law, since then till now the country have witnessed a metamorphosis of a personality totally attuned to the Indian ethos both in happiness and in brief her examplnary behaviour since she entered that family till now has given her legitimate credentials of an Indian lady. Having become an Indian citizen she has acquired all the rights that grow in the citizenship of India. This is the basic thing, however, much people when like to distort it this fact remains and at least I am confident and all of us are confident that the people of India are much wiser and much more liberal and much more discriminting then many of the so-called leaders. They have accepted Smt. Sonia Gandhi as an Indian beyond any doubt in the political arena as head of the Congress party. She has gone through the democratic test as the leader in the last assmebly election where under her leadership three states return to Congress Govts.

Question : On what issues you are going to criticise BJP?

Shri A. S.: The first thing that will have to be projected is the dismal failure of the BJP coalition to address the most crucial issues that beset the country in 13th months they have shown how inapt the work to address any single issue forcefully and effectively take where economy anything. The second would be the Congress view of what thing is to bless that India must occupy in the committee of nations all the socio economic order. The Congress has always held to be very important in the scheme of things in this country where the poor are attended to, their problems are solved and the society based on justice and humanity emerges as the sustaining point for Indian democracy.

Question : Will you like to explain the reasons, why congress could not form the government?

Shri A. S.: Nothing went wrong so far as the Congress party was concerned we were aware of the facts that only a purely Congress Govt. that party supporting it from outside could be relevant because they were inner contradicitions among the other arrive, which would come to the fore and not allow the coalition to start even what they say of functioning and this was decided amongst all the parties and Mulayam Singh included became a Party to it for inexpressible reasons after the vote was taken in the Lok Sabha he made a somersault which ultimately prevented the alternative Govt. from being formed. Now what are his motivations why he did it, how he did it, is now very documented. I don't have to make any comments.

भाजपा का हिडन एजेन्डा सामने आया

4 मई 1998 ए.आई.सी.सी. में पत्रकारों से चर्चा के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

भारतीय जनता की जो नेशनल काफ्रेंस का अधिवेशन गाँधीनगर में हुआ है, उसके संबंध में ए.आई.सी.सी. की प्रेस रिलिज आपके हाथ में है। एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने देश को भ्रमित करने का बहुत ही सुनियोजित प्रयास किया। जहाँ असली मुद्दे पर्दे के पीछे रखे गए हैं और एक वातावरण जो हकीकत से परे हैं उसको देश के सामने प्रोजेक्ट किया गया है।

साथ में लेकर चलने का प्रेसीडेंट जो बी.जे.पी. के हैं, श्री कुशभाऊ ठाकरे जी, प्रधान मंत्री श्री वाजपेयीजी और गृहमंत्री श्री अडवाणीजी के भाषणों से यह बात साफ उभरकर सामने आ गई कि इस लूली लँगड़ी सरकार का किसी प्रकार से चलते रहने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने एक स्ट्रेटेजी बना रखी है और जो उनका असली उद्देश्य है, जिसको अबकी दफे उन्होंने फिर से दोहराया है। जैसे किसी मुद्दे पर वे पीछे नहीं गए हैं। जैसे धारा 370 का हो, राम जन्म भूमि का हो, कामन सिविल कोड का हो, काशी का हो, मथुरा का हो यह सब मुद्दे आज भी बरकरार है और उनका वही संगठन है, जो भारतीय जनता पार्टी को लगातार सत्ता में बने रहने देने के लिए कार्यरत है। उसका संगठन कहाँ पर रहेगा बी.जे.पी. और आर.एस.एस. के मूल्याँकन में और इनको उन्होंने छिपाया भी नहीं यह कह कर कि ये तो स्ट्रेटेजिक कारणों से सरकार को चलाते रहने के लिए इस धर्म का पालन करना पड़ा। वहीं पर बी.जे.पी. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ठाकरेजी ने सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का जिक्र किया अपने भाषण में, यह शब्द बहुत लुभावना

है। लेकिन दुनिया इस बात की साक्षी है कि कलचरल नेशनलिज्म का दूसरा अर्थ रेजीमेंटेशन है। एकरूपता की भारत जैसी सरल सोसायटी के देश के लिए कोई दूसरा एजेण्डा सामने ला सकते हैं। जैसा कि 1925 से 1935 के बीच में यूरोप में फासिस्टवाद का उदय हुआ। उस समय भी कुछ इस तरह की भाषा का प्रयोग किया गया। ये ऐसी चीजें है जो देश को सचेत करती हैं। और हम ऐसी आशा करते हैं कि देश के लोग और राष्ट्रीय पार्टियाँ गम्भीरता से इन विषयों को लेकर और हमारे देश की उस सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाकर रखने की कोशिश करना जिसमें एकरूपता नहीं, विभिन्नता का स्वरूप झलकता रहा है। बार-बार एक हिडन एजेण्डा की बात आती रही है और प्रधान मंत्री और गृहमंत्री स्वयं कहते हैं कि वो क्या है हिडन एजेण्डा, वो कोन सा एजेण्डा है कल उस हिडन एजेण्डे से भी बड़ा सा पर्दा उठाया गया है। कल शाम को श्री बी.एल. शर्मा, जो संयोजक हैं, विश्व हिन्दू परिषद के उन्होंने जी.टी.वी. को रात को एक बयान दिया है जो टेलीकास्ट हुआ है। रात को साढ़े दस बजे। आप में से शायद कुछ लोगों ने भी देखा होगा। उसमें उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि अयोध्या में मंदिर बनाने का काम हमारा शुरू हो गया है। हम जयपुर और दूसरे प्रदेशें से इसका बाह्य स्वरूप को तैयार कर रहे हैं। और उपयुक्त समय पर अयोध्या में मंदिर को ले जाकर खड़ा कर दिया जाएगा।

मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि काँग्रेस अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनाने के खिलाफ नहीं है। लेकिन जो इस समय न्यायिक प्रक्रिया चल रही है, उस न्यायिक प्रक्रिया के पूरा होने के पूर्व ही इस तरह का प्रयास देश की शांति और व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसका अंदाज लगाया जा सकता है। और हम जानना चाहते हैं कि देश के प्रधान मंत्री श्री वाजपेयीजी और गृहमंत्री श्री अडवाणीजी को इस बात की जानकारी है या नहीं। और यदि जानकारी है, तो इस बारे में उनका स्वयं का मत क्या है? पिछले अनुभवों से थोड़ा सतर्क भी रहने की जरूरत है। क्योंकि नीचे से ऊपर तक देश के संवैधानिक संस्थानों, सुप्रीम कोर्ट को सभी जगह अलग बयान देने के बाद भी वही किया गया जो उनका एजेण्डा था। क्या वही एजेण्डा फिर भारतीय जनता पार्टी या उसके संघ परिवार के जो अन्य संस्थान हैं, उन्होंने तय कर लिया है। हम यह जानना चाहते है कि देश के हित में प्रधान मंत्री और गृहमंत्री इस संबंध में सार्वजनिक रूप से ब्यान दें।

प्रश्न: राष्ट्रीय प्रणाली की बात करने के पीछे क्या कारण है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए राष्ट्रीय प्रणाली का जहाँ तक सवाल है यह ऐसा विषय है जिस पर सतही तौर से कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की जा सकती। काँग्रेस की इसके बारे में जो पोजीशन होगी वह वर्किंग कमेटी में डिस्कशन के बाद हम अधिकारिक तौर से सामने लाएगे। वैसे अभी तक काँग्रेस ने इस विषय पर अपनी प्रतिकूल टिप्पणी ही सामने रखी है।

प्रश्न : क्या इस राष्ट्रीय विषय पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: राष्ट्रीय बहस को कभी कोई रोकता नहीं कैसे रोक सकता है। लेकिन काँग्रेस का इसमें दृष्टिकोण क्या है, इस पर वर्किंग कमेटी में विचार करके सामने लाएँगे।

मध्यप्रदेश लोकसभा चुनाव में काँग्रेस का बुरा प्रदर्शन

8 मई 1998 रतलाम में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न : मध्यप्रदेश में लोकसभा के दो चुनाव परिणामों में काँग्रेस ने बुरा प्रदर्शन किया, आखिर काँग्रेस की

कौन से मजबूरी है जो 'स्टेटस को' वाली स्थिति लगातार बनी हुई है या आप यह सोचते हैं कि जो स्थिति आज है वह पिछले इलेक्शन को दृष्टिगत रखते हुए सिचुएशन को हम कुछ कम कर सकते हैं?

श्री अर्जुनसिंह : देखिए दोनों चुनावों में जो नतीजे आए। वह तो सर्वविदित है, न कोई विवाद की गुंजाइश है, न टिप्पणी की गुंजाइश है। पूरी स्थिति की समीक्षा करने के लिए और इस विषय पर सभी लोगों से सलाह मशविरा कर के इसकी विस्तृत रूप से समीक्षा हो, हर स्तर पर और उसके आधार पर काँग्रेस अध्यक्ष ने यह फैसला लिया कि यहाँ पर किस प्रकार के नेतृत्व परिवर्तन की जरूरत नहीं है। मैं समझता हूँ कि यह फैसला उनका सर्वथा उचित है, और हम लोगों की जिम्मेदारी यह है कि समीक्षा के दौरान और जो चीजें उभरकर सामने आई हैं, उन पर ध्यान केन्द्रित करके और एकता के साथ प्रयास हो, तो निश्चित रूप से आने वाले विधान सभा चुनावों में पार्टी को सफलता मिलेगी।

प्रश्न : एकता के लिए आपके क्या प्रयास है?

श्री अर्जुनसिंह: एकता के लिए किसी प्रयास की जरूरत नहीं है। सवाल यह है कि काँग्रेस का जो कार्यकर्ता है, या जो अपने को नेता कहते हैं, सबको यह फैसला करना है कि वह पार्टी के लिए क्या कर सकते हैं, और क्या दे सकते हैं और पार्टी ने हम लोगों को सबको कुछ न कुछ विगत वर्षों में दिया है। अब समय आ गया है पार्टी के लिए देने का? यह तो व्यक्तिगत निर्णय जब एक स्तर पर आ जाएगा तो एकता कायम हो जायगी बाकी ऊपर से एकता कायम नहीं होगी।

प्रश्न : सन् 96 में लोकसभा के चुनाव हुए, उसमें जो काँग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा था। उसकी समीक्षा की गई। उसके बाद भी 97 के चुनाव में कोई खास रिजल्ट नहीं आया तो समीक्षा का कोई मतलब नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो अपना-अपना मत है। पार्टी ने समीक्षा करके एक फैसला लिया है। मैं समझता हूँ कि उन परिस्थितियों में फैसला सही है। अब आगे उनमें निर्णय तो इस प्रदेश की जनता देगी।

प्रश्न : लालकृष्ण आडवाणी ने पिछले 15 दिनों में कई बार बयान दिए प्रेसीडेंशियल फार्म ऑफ गवर्नमेण्ट के बारे में? आपकी राय क्या है, क्या देश के लिए यह समय आ गया है जब प्रेसीडेंशियल फार्म ऑफ गवर्नमेण्ट के बारे में सोचना चाहिए पहली बात और दूसरा क्या कांस्टीट्यूशनल रिव्यू का वर्क इस देश के लिए आवश्यक है।

श्री अर्जुनसिंह: आपने तीन बातें कहीं। अडवाणीजी की राय, दूसरा हम लोगों का इसमें रूख क्या है मैं अपनी कोई व्यक्तिगत राय तो इसमें दे नहीं सकता। और तीसरा कांस्टीट्यूशनल रिव्यू करने का समय आ गया है। जहाँ तक अडवाणीजी का दृष्टिकोण है वह दृष्टिकोण मेरी समझ में किसी मौलिक चिंतन का परिणाम नहीं है। कोई न कोई मुद्दा भ्रम पैदा करने के लिए उठता रहे, ताकि देश के लोगों का उन बातों की तरफ से ध्यान बँटा रहे जिनकी वजह से किसी भी शासन या प्रशासन का मूल्यांकन होता है। और एक राय आम जनता की बनती है। जहाँ तक समय आ गया है कि इस ओर हम लोगों की राय क्या है। काँग्रेस के अन्दर भी समय-समय पर कुछ नीतियाँ या सुझाव पहले दिए गए है लेकिन उन सुझावों पर ऐसा कोई निर्णय काँग्रेस पार्टी का नहीं है कि काँग्रेस पार्टी की यह तब्दीली हमारे संविधान में मान्य नहीं है। अब फिर से वह बातें आ रही है। अबकी दफे अडवाणीजी की तरफ

से आ रही है। तो अभी तक की स्थापित राय तो एक है। उसको मैं बता ही चुका हूँ। इस पर फिर से विचार हो सकता है और मैं समझता हूँ कि शायद अगली वर्किंग कमेटी में हो। दूसरा सवाल आपने पूछा कि क्या समय आ गया है, तो अडवाणीजी को तोऐसा नहीं कहना चाहिए क्योंकि जिस प्रणाली से हम आज तक चले हैं उसी प्रणाली से चलकर तो आज वह होम मिनिस्टर बने हैं। लेकिन जिसे वह नकार कर के किसी न किसी रूप में बने रहना चाहते हैं तो ऐसा होता है, वह भी एक स्वरूप है।

प्रश्न : रक्षामंत्री का चीन के लिए दिया गया वक्तव्य। इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? क्या उस वक्तव्य को आप उचित मानते है?

श्री अर्जुनसिंह: कोई भी वक्तव्य राष्ट्र के हितो को ध्यान में रखकर दिया जाना चाहिए। हर चीज़ को किस समय किस रूप में कहना है, ये महत्व रखता है। मैं उनके वक्तव्य के मेरिट, डि मेरिट पर नहीं जाना चाहता शायद जो बात सार्वजनिक रूप से उन्होंने कहीं थोड़े से संयम की जरूरत है।
दोनों देशो के बीच अच्छे संबंध हों, चीन भारत के संबंध बिगड़े नहीं, क्योंकि संबंध बिगड़ने से कोई लाभ न भारत को है न चीन को है।

प्रश्न : लेकिन यूनाइटेड फ्रंट की गवर्नमेण्ट ने भी तो इसको फर्स्ट टाईम नेशन की श्रेणी में लिया था चायना को, तो जार्ज फर्नाडीस कहाँ राँग है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए यह कोई दो पड़ौसी जो शहर में रहते हैं उनके विवाद का सवाल नहीं है। दुनिया के दो पापुलर और अपनी तरह से महत्वपूर्ण देशों के बीच में संबंध का सवाल है जिसका असर सिर्फ उन्हीं दो देशों तक सीमित नहीं रहेगा और इसीलिए डिप्लोमेसी होती है, बहुत सी चीजें हैं जो हम अलग से देखें तो उनको गलत समझेंगे। लेकिन जब हम विश्व के समन्वयकारी परिप्रेक्ष्य में देखेंगे तो कौन कहाँ तक ले जाना है तो इस पर विचार करेंगे। आखिर एक बात तो स्पष्ट है कि चीन का हमारा तो संघर्ष हो चुका है, आम संघर्ष हो चुका है। 1962 में लेकिन उससे कोई फैसला तो नहीं हुआ। आखिर उन संबंधों को फिर बनाने की जो कोशिश हुई उससे हम इतनी दूर आए हैं तो कोई ऐसा कारण न हो कि सारे देश का हित ही दाँव पर लग जाय तब तक इन सब चीजों को संयम के साथ कहना चाहिए।

प्रश्न : राजीव गाँधी हत्या काण्ड को जैन कमीशन की रिपोर्ट पर काँग्रेस ने एक सरकार को गिरा दिया। आज काँग्रेस चुप क्यों है। आप कोई संदेश देना चाहते हैं, जनता को?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं चुप क्यों है? रिपोर्ट संसद में आनी चाहिए और जो भी एक्शन लेना है, वह पूर्ण होना चाहिए।

प्रश्न : आपको ऐसा लगता है कि अटल बिहारी वाजपेयी सरकार विदेश नीति से हट रही है।

श्री अर्जुनसिंह: किस नीति पर कायम है।

प्रश्न : मुलायमसिंह यादव, काँग्रेस के साथ मिलकर या ब.स.पा. के साथ मिलकर सरकार बनाएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए यह कोई ऐसे ही चलते हुए तो प्रस्ताव विचार के लिए नहीं आ सकता है। यह तो वर्किंग कमेटी के दायरे की बात है, उन्होंने किस संदर्भ में क्या कहा है। वह विचार हो सकता है।

प्रश्न : भारतीय जनता पार्टी गठबंधन सरकार कैसा कार्य कर ही है, क्या वह अपना कार्यकाल पूरा करेगी? आपके क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंह : गठबंधन तो है, पर सरकार नहीं है। सरकार जिस चीज को कहते हैं इस संबंध में वह तो कहीं दिखाई नही देती, कुर्सी पर बैठे रहने को सरकार थोड़ी कहते हैं। जिसकी कोई नींव, स्थायितव न हो, कार्यक्रम भ्रामक हो और जिस पार्टी का मुख्य रूप से आया है, बी.जे.पी. वह दो मुँही बात करे उनके सिद्धांत और कार्यक्रम दो हैं। जो उनके मेनीफेस्टो में हैं सरकार बनाना और सरकार में बने रहने के लिए दूसरे सिद्धांत और जो मुद्दे हैं उन्हें पीछे छोड़ देना, तो ऐसी सरकार कैसे चल सकती है और किस बात पर चलेगी।

प्रश्न : आपके हिसाब से कौन से सिद्धांत पर चलना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: सिद्धांत यह कि जनता के बीच में जाइए और जिस आधार पर जनता ने आपको विश्वास का मत दिया उस पर चलिए। इसमें क्या शक है।

प्रश्न : कॉंग्रेस नेतृत्व में गैर भाजपावाद की क्या संभावना है? क्या गठबंधन की सरकार आप बनाएगें?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ये गैर भाजपावाद अपने आप में कोई वाद नहीं है। इस देश की एकता और अखण्डता को कायम रखने के लिए भारत का जो मिला जुला समाज है, उस समाज के संरक्षण के लिए जो कुछ भी जरूरत है वह होना चाहिए। वरना इतने बड़े देश में कोई संदेह पैदा होगा, टकराव पैदा होगा तो फिर देश की एकता बच नहीं सकती। दूसरी यह कि हमारी नीतियाँ और कार्यक्रम जहाँ वर्तमान समय की आवश्यकताएँ और नेतृत्व को देखते हुए उनमें तब्दीलियाँ आना चाहिए। वही हमें इस बात को कभी भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए हिन्दुस्तान में उसी नीति एवं कार्यक्रम के सहारे कोई सरकार चल सकती है जो देश के करोड़ों-करोड़ों गरीबों का ख्याल रखकर आगे बढ़े, चाहे वह कॉंग्रेस हो, या अन्य कोई हो। जो नहीं करेगा तो उसका भुगतान उसको भुगतान पड़ेगा।

प्रश्न : छोटे राज्यों के बारे में भारतीय जनता पार्टी ने जो नीति अपनाई है देश भर में उनमें अलग-अलग प्रांतों से नए-नए राज्य बनाने की बात उठने लगी हैं। इसमें आपकी समग्र प्रतिक्रिया क्या है। क्या आप पसंद करेंगे रिअर्गनाईजेशन कमीशन फिर से बिठाया जाय जो छोटे-छोटे राज्यों को प्रस्तावित कर सकें।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए यह विषय केवल पोलिटिकल ऐजेण्डा के रूप में इस्तेमाल किया जाना ठीक नहीं है। छोटे राज्यों की कल्पना और उनको बनाना बिल्कुल अलग विषय है जो उस राज्य की आर्थिक स्थिति जिसको लायब्लिटी कहते हैं उसको देखकर ही किया जा सकता है। इसलिए एक झटके में राय देना मैं उचित नहीं समझता। अलग-अलग जैसे छत्तीसगढ़ का है। अब छत्तीसगढ़ के बारे में कॉंग्रेस की राय पहले से ही थी कि छत्तीसगढ़ बनना चाहिए क्योंकि वहाँ सब चीजें विद्यमान हैं लेकिन वह आज बने कल बने, यह तो बहुत सी बातों पर निर्भर करता है।

प्रश्न : पर इससे अन्य राज्यों की आर्थिक स्थिति तो प्रभावित होगी न?

श्री अर्जुनसिंह: अन्य राज्यों की आर्थिक स्थिति तो प्रभावित होगी। इसके लिए अगर कोई इस तरह की धारणा है, या मंशा है, तो उसको आप कब तक दबाकर रखेंगे।

प्रश्न : चाहे कॉंग्रेस समाप्त हो?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझ गया, बिहार में झारखण्ड के बारे में है, लेकिन अब झारखण्ड को भी स्वीकार किया ही जा रहा है।

प्रश्न : एक कमीशन बने?

श्री अर्जुनसिंह : अब कमीशन बने, लेकिन मैं समझता हूँ कि एक समग्र दृष्टिकोण तो अपनाना चाहिए ताकि यह पोलिटिकल एजेण्डा का प्रश्न न बनें यही मेरा कहना हैं।

प्रश्न : यह जो कांस्टीट्यूशनल अमेण्डमेंड की बात चल रही है। इसके पीछे बी.जे.पी. की क्या मंशा हो सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए बी.जे.पी. के पास जैसा मैंने कहा कि कोई ऐसा आधार नहीं है जिससे वह देश के सामने यह कह सके कि यह है जिसको लेकर हमने इतने वर्षों तक संघर्ष किया, उस पर हम अमल करना चाहते हैं, वह तो कर नहीं सकते। मेनीफेस्टो से नेशनल एजेण्डा बन गया तो अब ऐसी कोई बात कहना चाहिए। अब एक नई बात शुरू कर दी हैं इसके पीछे कोई सोच नहीं हे, क्योंकि आज यह पहली बार थोड़ी हुआ है। यह तो हमेशा से यह होता रहा है।

प्रश्न : भोपाल गैस त्रासदी पर किसी अधिकारी पर मुकदमा न चलना, सी.बी.आई. द्वारा इंक्वायरी न करना, इस बारे में आपकी सोच क्या है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो समझता हूँ कि इस पर कार्रवाई होना चाहिए।

प्रश्न : इस देश की गठबंधन सरकार की नीति ही बन गई है?

श्री अर्जुनसिंह: इस देश की नीति वही है, जो भारत का मतदाता तय करता है। भारत के मतदाताओं के सामने मेरी समझ में यह अपना राजनीतिक दृष्टिकोण है। एक धार्मिक तस्वीर हमारे सामने आती रही जिसकी वजह से ऐसा निर्णय लेने में उनको आजादी नहीं मिली जिससे कि किसी एक दल को बहुमत मिल सके। मेरा ऐसा ख्याल है कि धीरे-धीरे यह भ्रम छँट रहा है और जो अगला चुनाव होगा देश का मतदाता सोच समझकर पहले भी फैसला करता था, आगे भी फैसला करेंगे। शायद यह विषय, विषय के रूप में न रहे, यह मेरी मान्यता है।

प्रश्न : पिछले 10 वर्षों में एक-एक करके राज्य चले गए। अब सिर्फ मध्यप्रदेश बच गया है तो इसका क्या कारण है?

श्री अर्जुनसिंह: कभी-कभी स्मरण दिलाना भी उचित और अनुचित की संज्ञा में गिना जाता है। यही स्मरण दिलाने की वजह से तो मुझे काँग्रेस से निष्कासित कर दिया था। लेकिन अब मैं समझता हूँ कि काँग्रेस का नेतृत्व इन विषयों पर संजीदगी से सोचता है। यह प्रयास होगा कि जनता की अपेक्षाओं के मुताबिक पार्टी काम करे। यह जो ट्रेंड है, प्रवाह है इसको बदला जाय, इतना ही मैं कह सकता हूँ।

प्रश्न : मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल आज अरबों रुपये के घाटे में है। राज्य शासन का अप्रत्यक्ष रूप से यह आरोप है कि जब अर्जुन सिंहजी मुख्मंत्री थे तो एक बत्ती कनेक्शन के तहत प्रदेश भर में हजारों गरीबों को जो एक बत्ती कनेक्शन दिए थे उसका फिर दुरुपयोग हुआ? उसका खामियाजा विद्युत मण्डल को भुगतना पड़ा?

श्री अर्जुनसिंह: उसका थोड़ा दुरुपयोग हुआ होगा तो उसका खामियाजा विद्युत मण्डल को भुगतना पड़ा होगा। अब अगर यहाँ की काँग्रेस सरकार मेरे ही खिलाफ चुनाव लड़ रही है तो फिर मैं उसका उत्तर उसी तरह से दूँगा। सवाल यह है कि असलियत कुछ और ही है। और अगर एक बत्ती कनेक्शन देने से बोझ बढ़ता है, तो प्रजातंत्र में ऐसे ही कार्य करने के लिए तो सरकारें बनती हैं। केवल बड़े-बड़े लोगों

के लिए बिजली देकर ही हम अपनी सार्थकता को कैसे कायम कर सकते हैं। यह संयोग है, मैं किसी को दोष नहीं देता। वर्ष 85-86 के बाद बिजली के उत्पादन के क्षेत्र में जो प्रयास होना चाहिए था वह नहीं हुआ। उसको भी पूरा करने की कोशिश करना चाहिए अगर उत्पादन नहीं बढ़ेगा तो बोझ तो बढ़ता ही जाएगा लेकिन अगर उत्पादन और बोझ में समन्वय हो जाएगा तो परेशानी नहीं होगी।

प्रश्न : प्रदेश सरकार ने जो नई आबकारी नीति बनाई है उसके कारण पूरे प्रदेश में गली-गली में मोहल्ले-मोहल्ले में शराब की दुकानें खुल गई हैं। और पूरे प्रदेश में हिंसात्मक घटनाएँ हो रही हैं। इन कामों से, क्या आपकी पार्टी की ओर से या काँग्रेस के वरिष्ठ नेता होने के नाते सरकार के इस निर्णय की समीक्षा करने के लिए दबाव डालेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: आबकारी नीति के कई पहलू हैं जिन पहलुओं को काँग्रेस पार्टी नजरअंदाज नहीं कर सकती। इसका मतलब यह नहीं कि हम टोटल शराबबंदी कर दें लेकिन जो उसका सामाजिक पहलू है और खासकर के समाज के गरीब तबकों पर जो उसका प्रभाव है, उसको तो नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

प्रश्न : प्रदेश में बढ़ते आतंकवाद को क्या पुलिस बल बढ़ाकर रोका जा सकता हैं, यह कैसे संभव होगा?

श्री अर्जुनसिंह: पुलिस बल तो हरदम बढ़ता है, घटता है लेकिन एक तो जो वातावरण, आजकल हिंसा जो हवा में है, उस हिंसा को रोकने की चेष्टा होनी चाहिए और शासन ही रोक ले ऐसा नहीं है। एक वातावरण बनना चाहिए। मध्यप्रदेश तो एक बहुत ही शांतिप्रिय प्रदेश रहा है।

प्रश्न : आज आपने काँग्रेस कार्यकर्ताओं की दिक्कतें सुनी पर आपने कुछ संबोधन नहीं किया। उनकी जो बातें आपने सुनी हैं उस पर आप कोई कार्रवाई करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: मैं कार्रवाई करने वाला कौन होता हूँ लेकिन ये चीजें आवश्यक हैं, जिनका कि असर होगा।

संगठन को मजबूत करने के लिए टास्क फोर्स बना था

22 मई 1998 दैनिक भास्कर की सुश्री शिखा परिहार के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न : काँग्रेस संगठन को मजबूत करने की बात फिर से उठी है। टास्क फोर्स जो बनाया गया है, यह पहले की तैयारियों से कितना अलग है?

श्री अर्जुनसिंह: पहले भी कोर कमेटी बनी थी। उसका भी मैं सदस्य था, और इस नई कोर कमेटी का भी सदस्य हूँ, जो मिसेस गाँधी ने टास्क फोर्स बनाया है। सबसे पहला फर्क तो एप्रोच में हैं, पहले जो समिति बनाई गई थी, वह पहले दिन से ही हम सबको ये आभास था कि ये केवल एक रस्म अदायगी है। पहले की उस कोर कमेटी की रपट की जानकारी किसी को नही है। अबकी दफे जो टास्क फोर्स बना है कम से कम ये आभास किसी को नहीं था। कितने सदस्य उसमें थे, सब समझते है और सब समझते थे क्योंकि जो कुछ भी कहा जा सकता है उस पर निश्चित रूप से अमल भी होगा और उसका प्रमाण यह है, या यूँ कहिए कि उसके पीछे विश्वास करने का कारण यह है कि जो स्टेडिंग वर्किंग कमेटी की तीन दिन जो बैठकें चली, उनमें विस्तार से इस पर चर्चा हुई है। जबकि पहली बार ऐसी चर्चा हुई नहीं थी। और इसलिए मेरा विश्वास है कि कई ऐसे विषयों पर जो टास्क फोर्स में निर्णय होंगे उन पर अमल होगा।

प्रश्न : जैसे .....

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि एक तो लेजिसलेटिव अफेर्स कमेटी के बारे में एथिक्स कमेटी भी बनाई गई है। एथिक्स का उस समय भी जिक्र हुआ था। लेकिन बना नहीं, किन्तु एथिक्स कमेटी बनती तो बहुतों को परेशान कर देती।

प्रश्न: स्थिति तो अभी भी वैसी ही है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं जो समिति बनी है न, अगर समिति बनने के बाद उन लोगों को इसमें सदस्य बनाया है वे ही इसके बारे में अनमयस्क हो जाएगे या नहीं करेंगे तो उसके बारे में एकाउंटिब्लिटी तो सामने आएगी। कहा तो जा सकता है कि आप कमेटी के सदस्य हैं, आपके समाने यह शिकायत आए तो इस पर क्या बात हुई।

प्रश्न : इसका पैरामीटर क्या होगा?

श्री अर्जुनसिंह: पैरामीटर तो अब कमेटी खुद ही बनाएगी। मेन चीज तो यही है कि ऐसे विषय जो किसी भी प्रकार से मैं जनरल कह रहा हूँ, यह कोई उसमें डेफिनेशन में नहीं लिखा है, वो तो कमेटी खुद ही बना लेगी अपने पैरामीटर। लेकिन यह है कि ऐसे प्रकरण या शिकायतें जिससे कॉंग्रेस की छवि किसी प्रकार से प्रतिकूल हो, प्रभावित हो, उस बात पर भी विचार करके अपना सुझाव कॉंग्रेस प्रेसीडेंट को दे।

प्रश्न : एक जनरल बात हो गई है, कॉंग्रेस जब पावर में होती है तो कुछ मुट्ठी भर लोग पावर में रहते हैं। अपने-अपने पदों पर रहते हैं तो लगता है कि पार्टी चल रही है। अगर 5 साल चली लेकिन लगातार डिक्लाइन की तरफ तो क्या यह समझे कि कमजोर हो गया है?

श्री अर्जुनसिंह: उसी को एडजस्ट करने का यह अवसर है और जो आप कह रही हैं, बिल्कुल सही कह रही हैं। उस चीज को टास्क फोर्स में एडजस्ट करने की कोशिश की गई है। अब वहाँ कितना हस्तक्षेप हो सकेगा। ये तो समय बताएगा लेकिन दृष्टिकोण वही है। ये कुछ लोगों को फिर से सत्ता में आने के लिए कॉंग्रेस का कोई प्लान नहीं है। कॉंग्रेस को फिर मजबूत करके और जो नीतियाँ कार्यक्रम और जो सिद्धांत कॉंग्रेस के हैं, जिन कारणों से भी उसमें जन विश्वास की कमी आई हुई है, उन कारणों को पूरा करना हमारा कर्तव्य है और आम तौर से कॉंग्रेस जिन लोगों से जिन वर्गों से दूर हुई है, उसको दूर करना है और फिर आज के जन जीवन से जुड़े सवालों को कॉंग्रेस पार्टी की ओर से उठाना पार्टी की जिम्मेदारी है। अपोजिशन एक संघर्ष है एक आंदोलन है इन सब चीजों को करके हमें अपने जनधार को मजबूत करना है।

प्रश्न : जैसा अभी लेटेस्ट यह माना जाता है कि यहाँ भी और पार्टी में भी सोनियाजी के आसपास कोई एक खास टीम काम कर रही है। आप उसमें आते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो कपोल कल्पित बातें हरदम लोग कहते हैं। जो सोनियाजी को जानते हैं वह कभी विश्वास ही नहीं कर सकते। वह किसी से प्रभावित नहीं है।

प्रश्न : यहाँ प्रिसेप्शन जोनल बन रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: यह प्रिसेप्शन नहीं है। यह एक सोचने का प्रिसेप्शन है। कोई हकीकत हो तो कोई प्रिसेप्शन समझ

में आय। कुछ लोगों को मेरे बारे में नकारात्मक सोचकर कुछ न कुछ करते रहने में रुचि है। इससे ज्यादा स्पष्ट और मैं क्या कह सकता हूँ। लेकिन उनकी उस रुचि से मुझे कोई असर नहीं होता है और न मैं उसकी वजह से प्रभावित होता हूँ। यह मेरा काम है मैं करता हूँ अगर छाप देंगे आप थोड़ा तो ठीक ही है नहीं छापेंगे तो ठीक ही है।

प्रश्न : यह माना जाता है कि सोनियाजी अभी नई-नई राजनीति में आई हैं। ग्राउण्ड लेबल पर जाकर कुछ नहीं कर पाती हैं। इसलिए कुछ लोग इस पर ज्यादा डिपेण्ड नहीं करते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: भाई यह उनका अधिकार है कि वह किससे राय लें। इसमें और किसी का अधिकार है नहीं। और जहाँ तक मेरी जानकारी है वह सबसे राय लेती हैं। कोई स्पेशल राय देने वाला नहीं है। इससे ज्यादा तो लीडरशिप के बारे में कोई क्या चीज कह सकता है। मैं तो रोज देखता हूँ सब लोगों की बात होती है।

प्रश्न : मध्यप्रदेश की हम अभी बात कर रहे थे। आप मध्यप्रदेश में दो बार मुख्यमंत्री रहे हैं। उस समय काँग्रेस काफी अपर हेण्ड मानी जाती थी। खास तौर से संगठन के जो चुनाव हुए तो आपको क्या फर्क लगता है?

श्री अर्जुनसिंह: तुलनात्मक समीक्षा से कोई निष्कर्ष जो निकलेगा वह कुछ व्यावहारिक नहीं है। हर समय की परिस्थितियाँ अलग होती हैं। उस समय की परिस्थितियाँ अलग थी। आज की परिस्थितियाँ अलग हैं। लेकिन ये तो सही है कि चाहे तब की बात हो चाहे अब की बात हो प्रशासन को लगता है कि जन समस्याओं पर क्या हो और उनसे संबंधित निर्णय कैसे होते हैं? कैसा क्रियान्वयन किया जा रहा है? उनका असर तो अंततः पड़ता ही है। अब भी पड़ेगा, निगेटिव पाजिटिव जो भी है। दूसरी जो एक छवि होती है तो हरदम मध्यप्रदेश के संदर्भ में कहें तो देश के संदर्भ में कहें तो, किसी तरह से मध्यप्रदेश में जो आदिवासी, हरिजन, पिछड़ा वर्ग और कमजोर वर्ग के लोग हैं उनकी समस्याओं के समाधान की है। प्राथमिकताएँ कितनी दी जा रही हैं और कितनी नहीं दी जा रही हैं। इसमें कहीं कुछ हो रहा है, नहीं हो रहा है, यह भी विषय है इसका असर भी पड़ता है। कल भी पड़ता था आज भी पड़ेगा। इन चीजों के अलावा बाकी तो फिर तुलनात्मक बात मैं नहीं समझता कि कोई है।

प्रश्न : इस बात को प्राथमिकता देने की बात चल रही है, तो इसको लेकर पहले से ही आप काफी दिनों से काफी मुखर हुए हैं। आवाज आपके समय में उतनी नहीं थी जब आपने शुरूआत की थी। इस वर्ग को आगे लाने के लिए लेकिन अब जब वह जागरूक हो गए हैं, और काफी रिप्रजेंटेशन हैं, वहाँ 70 प्रतिशत के करीब गवर्नमेण्ट में भी, तो यह करेंगे। मुख्यमंत्री पद जो हैं, वह उनको दिया जाय?

श्री अर्जुनसिंह: मुख्यमंत्री पद भी एक राजनीतिक पद है तो राजनीतिक आकांक्षाओं के अनुकूल अगर किसी स्टेज पर बात होती है, तो इसमें अप्राकृतिक क्या है? अब कैसे होना है, नहीं होना है, अंततः इस पर फैसला तो जो लोग चुनकर आते है वही करेंगे। कोई रिजर्वेशन से तो होगा नहीं, संवैधानिक रिर्सोसेस से तो कुछ नहीं होगा। जब विधायक चुनकर आते हैं उस वक्त वह फैसला करेंगे।

प्रश्न : यह माना जाता है कि अपर क्लास के लोग जब चुनने का मौका आता है, तो एक होकर, यह फीलिंग

भी इस वर्ग के लोगों में आई है, उसमें जब लीडर चुनने का मौका आता है, तो अपर कास्ट को ही प्राथमिकता मिलती है, और आपस में वह लोग तय करते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी अगर किसी की धारणा है तो वह गलत है और ऐसी धारणा बनने नहीं देना चाहिए।

भारत की स्थिति

28 अक्टूबर 1998 ऑफ अमेरिका के श्री शर्मा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न : आज का भारत आप किस तरह की परिस्थितों में देखते हैं और जबकि 50 साल भारत पूरे कर चुका है अपने आजादी के और आप इसे किस प्रकार आँकेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: भारत के आजादी के ये 50 वर्ष दुनिया के इतिहास के महत्वपूर्ण वर्ष रहे हैं और भारत की आजादी अपने आप में विश्व की उन घटनाओं में से एक है जिसने एक बहुत व्यापक प्रभाव डाला है दुनिया के इतिहास में क्योंकि भारत की आजादी एक प्रकार से उनकी सफलता का एक बिन्दु था, जो संघर्षरत् थे, दुनिया में साम्राज्यवाद के खिलाफ और अन्याय के खिलाफ और इसीलिए भारत की आजादी के साथ-साथ एशिया और अफ्रीका के कई मुल्क आज़ाद हुए। जिन परिस्थितियों में भारत 15 अगस्त 1947 को था, वह सर्वविदित है। देश का बँटवारा हुआ, एक दूसरों की सरहदों को पार किया गया, पलायन हुआ। इस सबके बावजूद भारत में प्रजातंत्र के ढाँचे को सुरक्षित भी रखा और मजबूत भी किया। और कोशिश यह रही कि प्रजातांत्रिक तरीके से आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन लाए जायें और ये 50 साल इस बात के प्रमाण हैं कि यह प्रयास बहुत हद तक सफल रहा, अनेकों कठिनाइयों और कमियों के बावजूद।

प्रश्न : आज के परिप्रेक्ष्य में जातीय संबंधों को आप किस तरह से देखते हैं, हिन्दू-मुस्लिम, उच्च वर्ग या निम्न वर्ग .....

श्री अर्जुनसिंह: हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश में जहाँ हजारों तरह के अलग-अलग वर्ग हैं, जातियाँ भी हैं और धर्म भी हैं वहाँ एकदम से हम कोई कल्पना नहीं कर सकते। जहाँ अनेकता में एकता है वह है भारत वर्ष। इसलिए जातियों, धर्मों और इनके भिन्न अलग-अलग स्वरूप यहाँ विद्यमान रहे हैं और हैं और रहेंगे। कभी-कभी टकराव की स्थिति इनके बीच में आती है और अपने आप से नहीं कुछ लोगों के द्वारा पैदा की जाती है। क्योंकि लोग एक माध्यम बना लेते हैं, अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए। आज उसी दौर से हम गुजर रहे हैं, कुछ जातीयता का बढ़ावा हो गया है। लेकिन धीरे-धीरे यह बात फिर समाप्त होगी और जो परिवर्तन हो रहे हैं, देश के अंदर, एक नई पीढ़ी आजादी के बाद जो पैदा हुई अब वह अपने पूरे सैलाब पर आ रही है। उन लोगों के मन ये सब चीजें उस हद तक प्रभाव नहीं डालती हैं जितना की पुराने लोगों के ऊपर डालती हैं। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि सामाजिक से पिछड़े वर्ग और पिछड़ी जातियाँ जो हैं वे सदियों तक अपने को उपेक्षित मानती रहीं और सामाजिक और आर्थिक रूप से उनको अवसर नहीं मिले, अब वे राजनीतिक रूप से अपने वर्चस्व को कायम करने की चेष्टा कर रही हैं। प्रजातंत्र में इन सब चीजों का सम्मिश्रण होता रहता है। कहीं-कहीं टकराव भी होता है चूँकि ढाँचा प्रजातांत्रिक है, वे सब चीजें मिलकर एक समन्वय

के स्तर पर आती है।

प्रश्न : कुछ सप्ताह में कुछ राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं, काँग्रेस पार्टी अपने आपको किस तरह उसके लिए तैयार कर ही है?

श्री अर्जुनसिंह: श्रीमती सोनिया गाँधी के नेतृत्व में काँग्रेस पार्टी ने एक सघन अभियान देश में छेड़ा है। जहाँ हम काँग्रेस पार्टी की नीतियाँ, सिद्धांत और कार्यक्रम हैं उनको प्राथमिकता देकर और उनमें जनता का विश्वास पुनर्जागृत करने की कोशिश कर रहे हैं। संस्था को भी इस लायक बनाने की चेष्टा हो रही है कि वह नई चुनौतियों का सामना कर सके। बहुत से लोग संस्था में आए हैं, नौजवान आए हैं, महिलाएँ आई हैं। मैं समझता हूँ यह चुनाव काँग्रेस के लिए भी महत्वपूर्ण है और देश के लिए भी महत्वपूर्ण है। चुनाव में काँग्रेस को बहुत अच्छी सफलता मिलेगी, ऐसी हम लोगों की मान्यता है।

प्रश्न : भारत और पाकिस्तान के बीच में तनाव को किस प्रकार से कम किया जा सकता है यह काँग्रेस पार्टी के साथ में हो तो वह क्या चाहेगी या किस प्रकार का रास्ता अपनाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस पार्टी ने तो सदैव पाकिस्तान के साथ दोस्ती का और परस्पर हितों को ध्यान में रखकर संबंध बनाए, हम यही चाहते हैं कि पाकिस्तान मजबूत हो, पाकिस्तान समृद्धशाली हो, खुशहाल रहे और इसमें हम दोनों का एक साथ सहयोग हो। वहाँ की खुशहाली में भारत के लोगों का सहयोग रहे, यहाँ की खुशहाली में पाकिस्तान के लोगों का सहयोग रहे। मुश्किल यह है कि कुछ तबके पाकिस्तान के अंदर शांतिपूर्ण तरीके से प्रगति से अपने हितों के विपरीत मानते हैं और इसीलिए इस तरह की परेशानियाँ पैदा होती हैं। दोनों देशों के आम लोगों में कोई टकराव नहीं, न किसी प्रकार की प्रतिद्वंदिता है। अगर प्रतिद्वंदिता है तो प्रगति के लिए है। कौन ज्यादा तरक्की कर सकता है। व्यापार है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान है। इन सबको बढ़ावा देकर वह वातावरण काँग्रेस चाहती है जिस वातावरण में दो देश मित्र देश के रूप में आगे बढ़ सकें .....।

प्रश्न : भारत और अमरीका के बीच में अन्य सभी क्षेत्रों में तो बड़े मधुर संबंध रहे। अच्छा सहयोग, सहकार होता रहा, लेकिन अक्सर यह भी होता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सैद्धान्तिक मतभेद भी बने रहे हैं और एक दूसरे के प्रति गलतफहमियाँ भी हो जाती हैं। इन कटुताओं और गलतफहमियों को दूर करने के क्या तरीके हैं और संबंधों के कड़वाहट न आए उसके लिए क्या किया जाना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, हिन्दुस्तान तो सदैव से अमरीका से बहुत अच्छे और परस्पर हितकारी संबंध बनाए रखने का हिमायती रहा है और वैसे भी विश्व के दो सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश जिनमें सिद्धांतों की एकरूपता है। मूल्यों की एकरूपता है, उन्हें मित्र तो स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। यह तो परस्पर विरोध की बात आपने की तो सही मायने में हिन्दुस्तान के लोग उसका कारण समझ नहीं पाते क्योंकि ऐसा कोई कारण ही नहीं कि परस्पर विरोध हो। एक प्रजातंत्र में विश्वास है। व्यक्ति की स्वतंत्रता पर विश्वास है, न्याय पर आधारित शासन तंत्र है, इन सब में तो कोई मतभेद हो नहीं सकता है। वही मूल्य जो आपके है, वही मूल्य हमारे हैं। अब देशों के हितों की टकराहट हो सकती है। लेकिन यहाँ भी भारत की ओर से कोई ऐसा प्रयास ही नहीं है, न कभी भारत की इच्छा रही है, न कभी कोशिश हुई कि हम किसी दूसरे देश पर अपना प्रभुत्व जमाएँ या अपना प्रभाव जमाएँ। वहाँ भी कोई आधार नहीं है। इसलिए हम लोगों के लिए यह मुश्किल है जरा समझना कि अमरीका और भारत

के बीच मतभेद क्यों? लेकिन कुछ स्थितियाँ बनी जिससे कुछ हुआ और इसका कारण यही है कि वर्चस्व की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत ने कभी विश्वास नहीं किया, और विश्वास नहीं किया तो हम उसका साथ नहीं दे सकते और वहीं कभी-कभी टकराहट होती है।

प्रश्न : भारत की आर्थिक स्थिति, परमाणु परीक्षण के बाद लगे प्रतिबंधों के परिणाम क्या होंगे?

श्री अर्जुनसिंहः थोड़ी बहुत दिक्कतें पैदा होंगी। इसमें कोई दो राय नहीं, लेकिन इन दिक्कतों पर काबू पाने में भारत सक्षम है, ऐसा मैं मानकर चलता हूँ।

प्रश्न : परमाणु परीक्षण करना अपने आप में काँग्रेस पार्टी की दृष्टि से सही कदम था या गलत?

श्री अर्जुनसिंहः यह राष्ट्रीय हितों की बात है और यह परीक्षण शायद काँग्रेस इस समय नहीं करती। अगर वह सत्ता में होती। लेकिन परीक्षण किए गए हैं, तो इसके विरोध में तो हम नहीं हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यह हम स्वीकार करते हैं जो कुछ हुआ। खासतौर से हमारे वैज्ञानिक हैं देश के, उन्होंने साबित किया है कि उच्चतम स्तर पर उनमें क्षमता है।

प्रश्न : आज से 5 साल बाद काँग्रेस अपने को किस स्थिति में देखती है?

श्री अर्जुनसिंहः पाँच वर्ष तो बहुत होते हैं। मैं तो समझता हूँ कि अगले वर्षों के अंदर ही काँग्रेस पार्टी पुनः पूर्ववत् देश की सेवा में जो उसका प्रमुख स्थान था उस स्थान पर पहुँचेगी मुझे इसका पूरा विश्वास है।

कारगिल के मसले पर लोगों ने अपनी राय ज़ाहिर की। मैं आज एक बात कहना चाहता हूँ और दावे के साथ कहना चाहता हूँ कि जितने भी प्रमाण अभी तक सामने आए हैं, उससे यह साफ ज़ाहिर होता है कि यह घुस पैठिए दिसम्बर के महिने में कारगिल के अंदर स्थापित हो चुके थे और इसकी जानकारी दिसम्बर के आखरी हफ्ते में भारत सरकार को मिल चुकी थी और जब वाजपेयीजी लाहौर की बस यात्रा करने जा रहे थे, तो इनको इस बात का इल्म था।

— श्री अर्जुनसिंह

18 जुलाई 1999

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.H.E.L., BHOPAL
26927

1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999 1999

1999

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले सही राह चलें

4 जून कुलगढ़ी (सतना) में मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय बैरिस्टर साहब, समारोह के अध्यक्ष श्री इंद्रजीतजी, और इस समारोह में भाग लेने आए आदरणीय देवियों और सज्जनों। आज मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ कि एक ऐसे निष्ठावान और समर्पित व्यक्तित्व के इस आयोजन में मुझे भाग लेने का अवसर मिला। स्वतंत्रता सँग्राम सेनानी इस देश की वे विभूतियाँ हैं जिन्होंने अपने वर्तमान को देश के भविष्य के लिए न्यौछावर किया। मैं बैरिस्टर साहब की बात से पूर्णतः सहमत हूँ कि हमारे देश की शिक्षण संस्थाएँ जो ऐसे महापुरुषों के कार्यक्षेत्र में विद्यमान हैं, उन्हें उनके नाम से अलंकृत करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी कम से कम उनके नाम से तो परिचित रहे और शायद इसी बहाने उनके कार्य से भी परिचित होने की मंशा जगे। मिश्राजी ने अपनी स्वयं की प्रेरणा से जो अपने लिए लक्ष्य रखा वो आज अनुकरणीय बन गया क्योंकि उसमें सत्यता है किसी प्रकार का उसमें आवरण नहीं है। हम सबके लिए ये नितांत आवश्यक है।

आपने चर्चिल का नाम सुना होगा। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री थे। द्वितीय महायुद्ध में उन्होंने ब्रिटेन को विजय दिलाई। लेकिन एक ऐसा उनके जीवन का पहलू मैं आपके सामने बताना चाहता हूँ वो दर्द करता है। सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग किस प्रकार से अपने को सही रास्ते पर रख सकते हैं। जिस व्यक्ति को हटाकर चर्चिल प्रधान मंत्री बने ब्रिटेन में जब उनकी मृत्यु हुई तो ब्रिटेन की संसद में सवालों के रूप में शोक प्रस्ताव आया और उस पर चर्चिल का भाषण हुआ। भाषण तो लंबा चौड़ा है, लेकिन उसका एक बहुत ही सूक्ष्म अंश मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। जीवन भर राजनीतिक प्रतिद्वंदिता एक ही पार्टी में रहते हुए थी और उन्हीं से उन्होंने सत्ता हथियाई थी। लोग समझते थे कि आज के भाषण में चर्चिल उन चीजों को भी उजागर करेंगे जो उनके जीते जी वो बखान नहीं कर सके। लेकिन चर्चिल ने जो कहा उसका हिन्दी अनुवाद करने की कोशिश कर रहा हूँ। कुछ गलत हो तो क्षमा करियेगा। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति की आत्मा उसकी सही पथ प्रदर्शक होती है। तो फिर उस व्यक्ति की रक्षा करने के लिए उसके द्वारा निष्ठा से उठाया गया कदम जिनमें कोई दुराग्रह न हो वो उसकी रक्षा करते हैं। क्योंकि जीवन में ऐसे उतार चढ़ाव होते है, ऐसी विफलताएँ होती हैं जो सदैव इंसान को कचोटती रहती हैं। लेकिन अगर ये अपनी स्मृति की रक्षा के लिए कवच रहे तो चाहे जैसा भी हो कितना कोई भी कितना खेल खेले वह व्यक्ति सदैव इज्जत, मान और मर्यादा के मार्ग पर ही चलता है। मैं समझता हूँ कि ऐसे ही व्यक्तित्व पंडित मिश्र थे। आज उसकी अलग-अलग विवेचना होती रही। कोई कुछ कहता रहे कोई अच्छा कहे, कोई बुरा कहे, कोई पर्याप्त कहे कोई अपर्याप्त कहे। लेकिन एक बात सच है कि मर्यादा के पथ पर चलने से आज हम और आप उनको स्मरण करते है। हमारे देश का समाज ऐसे ही लोगों की प्रतिष्ठा करता आया है। और इसीलिए जब सारी दुनिया में सम्पूर्ण मर्यादाएँ भंग हो गई है तो भारत में आज भी मर्यादाओं के कुछ अंश आज भी बचे है। हम आज भी अपने को आगे बढ़ाने में सक्षम है। इस समय भारत

में जितना भी किया जाय वो कम है।

इंद्रजीत जी ने आपको इस तरफ संकेत किया है, मैं भी उनके पीछे लगा रहूँगा जब तक के आपकी ये माँगें पूरी न कर दें। क्योंकि मंत्री वो है, इस तरह का वचन वो ही दे सकते हैं। मैं तो पीछे लगे रहने का ही वचन दे सकता हूँ। वो मैंने आपको दिया है। पंडित मिश्र के सुपुत्र महोदय ने अपने भाषण में कहा कि जो यहाँ के लोगों की माँगें हैं, जो उनका कहना है, उसे मैं पूरा करने की कोशिश करूँ। मैं उन्हें दूँ तो वो भी मुझे बहुत कुछ देंगे। मैं एक बहुत सामान्य कार्यकर्ता हूँ.काँग्रेस का, मैं उस बात को कर नहीं सकता। कार्यकर्ता होने के नाते प्रयास कर सकता हूँ और आपसे उसके एवज में कुछ माँगना भी नहीं चाहता हूँ। केवल आपका आशीर्वाद बना रहे यही मेरे लिए काफी है।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

मंच पर आकर हमारी तारीफ़ नहीं करें

30 जनवरी 1999 उत्तर प्रदेश काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं की बैठक में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

सम्मानित भाई सलमान खुर्शीद जी, मंच पर पधारे हुए सभी सम्मानित साथियों और शिविर में भाग लेने के लिए आए हुए बहनों और भाइयों, सबसे पहले तो मैं इस बात पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर करना चाहता हूँ कि उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी ने इस शिविर का आयोजन किया ताकि प्रदेश भर के काँग्रेस के साथी बहनें एक दूसरे से साक्षात्कार कर सकें और सामूहिक रूप से देश की और प्रदेश की उन सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं से उनका साक्षात्कार हो सके, जो आज हमारे मुल्क को और हमारे उत्तर प्रदेश को प्रभावित करती है। काँग्रेस एकमात्र बेस पार्टी है, इसमें कोई अलग से केडर नहीं बनता है न तो यह रिपोर्टिंग करता हैं। लेकिन एक परंपरा काँग्रेस की रही है कि जब हम मात्र बेस पार्टी की बात करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम आँख पर पट्टी बाँधकर केवल पीछे-पीछे चलने के हिमायती है। और किसी प्रकार के विचार से, आलोचना से और आत्म चिंतन से दूर रहना चाहते हैं। कोई भी जीवंत पार्टी या कौम तभी आगे जाती है, जब समस्याओं के बारे में विवेचना हो, आलोचना हो, हमारे तौर तरीकों की, हमारी नीतियों की, हमारे कार्यक्रमों की आलोचना हो, और उसी के माध्यम से फिर नए-नए रास्ते निकलते हैं। जिन रास्तों पर चलने का काँग्रेस के साथियों को अवसर मिलता है और इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन्हीं रास्तों पर काँग्रेस ने इस देश को आगे बढ़ाने का अपना दायित्व पूरा किया। संयोग से कुछ वर्षों से ये विचार मंथन का जो रास्ता था, जो प्रक्रिया थी, वो शिथिल पड़ गई और यही वजह है कि सारे मुल्क में काँग्रेस संस्था ने एक राजनैतिक ठहराव का अनुभव किया। वह विचार मंथन की प्रक्रिया फिर से शुरू हुई और पचमढ़ी में जो सम्मेलन हुआ आप में से बहुत से लोग वहाँ आए होंगे। आपने अनुभव किया होगा कि काँग्रेस के अन्दर कितने खुलकर विचार व्यक्त करने का अवसर मिला। मैंने कभी हाल में ऐसा नज़ारा देखा नहीं है। हो सकता है ए.आई.सी.सी. की बैठकें हो, पी.सी.सी. की बैठकें हो और लोग अपने विचार व्यक्त कर सकें लेकिन सोनिया जी ने उसे देखकर ही अपने विचार व्यक्त किए। अधिकांश लोग मंच की ओर देखकर ही अपने विचार व्यक्त करते है। लेकिन सोनिया जी ने उस परंपरा को फिर से चालू किया जिसकी शुरुआत जवाहरलालजी ने की थी जब वे अध्यक्ष थे। काँग्रेस पार्टी के एक ऐसे ही सम्मेलन में मुझ से पंडितजी ने कहा था कि यहाँ मंच पर आकर हमारी तारीफ मत करिए वो तो मै वैसे ही सुनता

रहता हूँ। आप ये बताइए कि आप हमसे क्या अपेक्षा करते हैं? हम लोग जो कर रहे हैं उससे कहाँ तक सहमत हैं, कहाँ तक असहमत हैं, किस अनुभव से आपके आधार पर काँग्रेस को नई दिशा में ले जाने से प्रगति हो सकती है। नौवरा में सोनिया जी ने भी वही किया, राजीव जी ने भी वही कोशिश की लेकिन मीटिंग हो नहीं सकी। उसके बाद भी कई तारीखें लगी, लेकिन कैम्प हुआ नहीं। सबसे पहला निर्णय काँग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद 6 अप्रैल 1998 में ए.आई.सी.सी. में सोनिया जी ने घोषण की कि सितम्बर के महीने में तुम्हारा कैम्प पचमढ़ी में होगा। और अनेकों कठिनाइयों के बावजूद ना जाने कितनी राय आई कि स्वतंत्र कैम्प होगा तो क्या होगा? कैसे लोग कहेंगे? काँग्रेस की हालत वैसे ही कमजोर है। कैम्प में और विरोधाभासी बातें होगी। इसलिए कैम्प स्थगित कर देना चाहिए। लेकिन उन्होंने कैम्प स्थगित नहीं किया और जो लोग इस कैम्प में भाग लेने के लिए आए उनको ये बहुत सुखद अनुभव हुआ कि पहली बार काँग्रेस के बीच में खुल के विचार-विमर्श हुआ। और काँग्रेस की मूल रूप से नीतियों पर भी टीका टिप्पणी हुई, आलोचना हुई, और अन्त में पचमढ़ी की घोषणा सामने आई। आप सबके सामने है। आप स्वयं महसूस करेंगे कि उसका क्या असर हुआ? ये तीन राज्यों के चुनाव में आपको साफ नजर आएगा। एक नया आत्मविश्वास काँग्रेस के अन्दर पैदा हुआ। वो आत्म विश्वास केवल आत्म विश्लेषण से विकसित होता है। जब हम सोचने की प्रक्रिया बन्द कर देंगे तो हमें आगे क्या करना है, कौन हमें बताएगा या तो नेता भाषण दे देगा और सब लोग ताली बजा देंगे, लेकिन पार्टी, नेताओं के भाषणों से नहीं चलती है। पार्टी चलती है कार्यकर्ताओं के विचार मिलने से। एक दूसरे के साथ बात करके रास्ता दिखाने से। और इसलिए मैं केवल एक शुभ लक्षण नहीं मानता मुझे विश्वास है कि ऐसे ही दो और शिविर होंगे।

अब प्रश्न आता है कि वो कौन सा मुख्य सवाल है। जिन पर हमें आज प्राथमिक रूप से विचार करना चाहिए। मेरे मत में सबसे पहली बात संगठन की है। अब मैं संगठन की बात कहता हूँ। मेरा तात्पर्य किसी समय के संगठन से नहीं है। कोई भी संगठन तारीखों में नहीं मापा जाता है। संगठन तालमय होता है। संगठन का स्वरूप क्या है? उसके बनने में कौन सी प्रक्रिया अपनाई गई है? उसको हर समय ताजा बना कर रखने के लिए क्या संभव होता है, क्या किया जा सकता है? उससे संगठन बनता है इसलिए सबसे पहली अँगुली काँग्रेस के साथियों ने पचमढ़ी में रखी। वह संस्था के बनाव का समय था। हम सब लोग कोई दस वर्ष से कोई बीस वर्ष से, कोई पच्चीस वर्ष से, कोई तीस वर्ष से, कोई चालीस वर्ष से संस्था में चले आ रहे हैं और चुने जाते रहे हैं। मेम्बरशिप होती रही लेकिन कहीं न कहीं सबको मन में यह संकोच होता था कि काश संस्था के बनाव कि जो प्रक्रिया हैं वो इतनी साफ सुथरी होती कि संस्था के बन जाने के बाद कम से कम लोगों को अँगुली उठाने का मौका नहीं मिलता।

सबसे पहली बात जो जरूरी है जिस ओर सोनिया जी ने संकल्प लेकर कदम उठाए हैं वो पार्टी को मजबूत बनाने के लिये उठाये है। यह संकल्प और प्रक्रिया अकेले संकल्प से कुछ नहीं होता। जब तक वो बिल्कुल साफ प्रक्रिया सामने न आए। जिसके द्वारा इस संकल्प को पूरा करने की दिशा में बढ़े। काँग्रेस का चुनाव, उस प्रक्रिया का अत्यंत महत्वपूर्ण एक पड़ाव है। यह चुनाव स्वच्छ तरीके से हो, स्पष्ट हो, और किसी प्रकार से गलत तरीके न अपनाए जा सकें। ये कुछ दिनों से काँग्रेस के कार्यकर्ताओं की माँग थी, इच्छा थी लेकिन ये माँग और इच्छा चुनाव होने के बाद मुखर कैसे होती थी उससे पहले मुखर नहीं होती थी। क्योंकि हम सब इसी में लगे रहते थे कि किसी तरह से चुनाव हो जायँ, हमारा वर्चस्व कायम हो जाय। जिला स्तर पर हम काबिज हो जायँ। देश पर हम काबिज हो जायँ। या ए.आई.सी.सी. में पहुँच जायँ और किन्हीं पदों पर पहुँच जायँ। इसलिए चुनाव को एक बहुत साफ तरीके से करने का उन्होंने फैसला लिया। संविधान में संशोधन हुआ और अब चुनाव करवाने की जिम्मेदारी प्रदेश काँग्रेस के

पदाधिकारियों की नहीं है। जिला कॉंग्रेस के पदाधिकारियों की नहीं है। केवल पी.आर.ओ. के इंतजाम करने के बाद चुनाव हो पाएगा। इसलिए वही सब करता है। अब एक प्राधिकरण बनाया है चुनाव के लिए जो सारे मुल्क में साफ सुथरे तरीके अपनाकर चुनाव कराने के लिए काम करके उसको पूरा कर सकें। और इसमें किसी भी नेता का दख़ल नहीं है। और जिनको प्राधिकरण के में रखा गया है उनसे यह कह दिया गया है कि तीन साल तक आप इस प्राधिकरण के सदस्य है, तब तक आप संस्था के किसी भी पद पर नहीं आ सकते। इस चुनाव के बाद जो संस्था कॉंग्रेस की देश में उभरकर आएगी उसका सीधा संबंध जो जड़ के कार्यकर्ता हैं, उनसे होगा, शक्ति बढ़ेगी और जो भी कॉंग्रेस करना चाहेगी उसका असर व्यापक देश में होगा। फिर प्रतिनिधित्व का सवाल है, महिलाओं के प्रतिनिधित्व का सवाल है, पंचायतों में राजीवजी ने तैतीस प्रतिशत आरक्षण किया हैं। आपको मालूम है कि वो संवैधानिक संविधान जो राजीवजी लाए थे उसे भारतीय जनता पार्टी ने राज्य सभा में वोट देकर गिरा दिया। आज अटलबिहारी वाजपेयी और बड़े-बड़े नेता महिलाओं के लिए लंबे-चौड़े भाषण देते हैं कि आज बिल पास हो। जब ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को अधिकार देने का सवाल था, इन्हीं लोगों ने राज्य सभा में उस संवैधानिक संशोधन को गिरा दिया लेकिन उस समय भी कॉंग्रेस हटी नहीं। और 1991 और 1996 के बीच में कॉंग्रेस ने वह संवैधानिक संशोधन पास किए और आज दस-बीस हजार नहीं लाखों महिलाएँ ग्रामीण अँचलों में उस स्थान पर पहुँची हैं, जहाँ वह समाज के काम में अपना हाथ बँटा सकें। पार्लियामेण्ट में वो बिल अभी तक पास नहीं हुआ लेकिन कॉंग्रेस के संविधान में संशोधन करके कॉंग्रेस के अन्दर महिलाओं को तैंतीस प्रतिशत आरक्षण देने का अधिकार प्राप्त हो गया है और आप देखेंगे जो हमारे साथी यहाँ पदाधिकारी हैं, सलमान भाई हैं और हमारे सब साथी हैं उन सबका यह संकल्प है कि ये संविधान में जो संशोधन हुआ है, ये केवल दिखावे के लिए न रहे। जब चुनाव संपन्न हो जाय तो सचमुच में हर कमेटी में तैंतीस प्रतिशत महिलाएँ हमारी भागीदारी के लिए आगे आएँ। फिर पिछड़े वर्गों की बात, हरिजनों की बात, आदिवासियों की बात, अल्पसंख्यकों की बात, उनका भी समुचित प्रतिनिधित्व हो, इसका प्रावधान हो।

आने वाले समय में उत्तर प्रदेश में कॉंग्रेस आगे आयगी। मुझे ही नहीं और मैं समझता हूँ कि सामान्य लोगों को उत्तर प्रदेश के लोगों को ये विश्वास है, जो अंततः हमारी साख को मजबूत करके जो हमारा आपका सबका ऐतिहासिक दायित्व है, एक ऐसे समाज की रचना करेंगे जो समाजवाद पर आधारित हो, सहिष्णुता पर आधारित हो, बराबरी पर आधारित हो। जहाँ समाज के हर वर्ग को अपने हक को पाने के लिए साफ रास्ता नज़र आए। वह काम करने की जिम्मेदारी हमारी आपकी है। जिसे हम पूरा करेंगे।

देश के सामने चुनौतियाँ हैं

1 मई 1999 मल्लपुरम (कालीकट, केरल) में मुस्लिम लीग की सभा में दिए गए उद्‌बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

सबसे पहले मैं नीर मोहम्मद अली साहब के प्रति आदर और सम्मान व्यक्त करना चाहता हूँ। ये न केवल केरल के बल्कि भारत के नेताओं में है, जो देश में साइकोलॉजिकली जड़ों को मजबूत बनाने में बहुत ही योगदान दे रहे है। इस विशाल सभा में शामिल होने के लिए आए मुस्लिम लीग के सदस्य, नागरिक और भाइयों। मै भाई नीर मोहम्मद साहब का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहता हूँ, कि उन्होंने मुझे आज इस सम्मेलन में आने का निमन्त्रण दिया। वैसे एक दफे पूर्व में भी आपके बीच आने का मुझे सौभाग्य मिला। लेकिन इस समय आपके बीच में लाने

का अवसर एक ऐसे मौके पर मिला है। जब सारा देश एक बहुत बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है। आज जो चुनौतियाँ देश के सामने हैं, वे किसी व्यक्ति के लिए नहीं है। किसी पार्टी के लिए नहीं है। केवल किसी सिद्धान्त के लिए नहीं है। हमें चुनौतियाँ जो आज देश के सामने उभरकर आई हैं। वो देश की एकता और अखण्डता के बीच है। हमारा देश और इसमें रहने वाले करोड़ों-करोड़ों लोग अलग-अलग धर्म को मानते हैं। अलग-अलग भाषा बोलते हैं। अलग-अलग पहनावा पहनते हैं, अलग-अलग रीति-रिवाज मानते हैं। इनको अनेकता में एकता की कड़ी बाँधकर रखने वाली एक ही चीज है और वह है इस देश की धर्म निरपेक्षता। हम अपने-अपने रास्ते पर चलें, लेकिन एक देश के नागरिक बनने की कोशिश करें।

संविधान केवल एक तरह के नागरिक को पहचानता है। वो चाहे जिस धर्म को मानता हो देश के किसी कोने में रहता हो। किसी जाति का हो, पुरुष हो या स्त्री हो, सबको बराबरी का हिस्सा देकर, बराबरी का स्थान देकर संविधान की नजर में रखा गया है। आज जब उसमें रेखाएँ खींची जा रही हैं। अलग-अलग वर्गीकरण हो रहा है, और ये कौन कर रहा है ये भारतीय जनता पार्टी जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इशारे पर अपने राजनैतिक कदम उठाती है। उसके द्वारा ये वर्गीकरण देश के अंदर किया जा रहा है। जो बहुत बड़ा खतरा है। हमारे देश की आजादी के लिए, हमारे देश के भविष्य के लिए। देश को गुमराह करने का जितना आप समझ सकते हैं, भारतीय जनता पार्टी ने कोशिश की है, किसी राजनैतिक पार्टी ने पिछले पचास सालों में नहीं की। ऐसा कोई भी रास्ता नहीं है जिसका उन्होंने सत्ता में पहुँचने के लिए इस्तेमाल न किया हो।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ, सबसे पहले आप इस बात को अपने दिमाग से निकाल दीजिए कि अटल बिहारी वाजपेयी जी को इस देश का मैनडेट मिला था कि वो प्रधान मंत्री बनें। मैनडेट उसको कहते है जनता का जो आदेश होता है उसको मिले। पिछले लोकसभा चुनाव में और पाँच सौ से ज्यादा सदस्य होते हैं किसी प्रकार से उन सब लोगों को जोड़कर जो अपने सिद्धांतों को फेंकने के लिए तैयार थे, अपने झंडे को फेकने के लिए तैयार थे, अपने इलेक्शन मेनीफेस्टो को जला देने के लिए तैयार थे। ऐसी पार्टी का कुनबा जोड़कर उन्होंने बहुमत प्राप्त करके और आज इसको जनता का आदेश कहते हैं इससे बढ़कर और प्रजातंत्र की मखौल क्या हो सकती है। ये कोई सरकार नहीं थी, ये कोई कोलिएशन गवर्नमेन्ट नहीं थी। ये ऐसे राजनीतिज्ञों का गिरोह था, जो हर कीमत पर कुर्सी तक पहुँचना चाहता था और हर कीमत पर उस कुर्सी को बचाकर रखना चाहता था। चाहे वे अटल बिहारी वाजपेयी हो, चाहे वो फर्नांडिस, हो, चाहे और उसके घटक हों, और उसके लिए सब कुछ किया इन्होंने पिछले 13 महिनों में। और अब हम सबको कहना चाहते हैं कि हमने बड़ी उपलब्धि की। क्यों हटा दिया आपने क्या कुसूर था? कुसूर ये था, कि प्रजातंत्र में जो जनता को धोखा देता है, उससे बढ़कर कसूरवार कोई आदमी नहीं होता है। वाजपेयी जी ने उनके साथियों से जो वादा किया था उस वादे को बलाए ताक रख कर कुर्सी पर पहुँचने के लिए समझौते किए और कुर्सी पर पहुँचने के बाद सारी सत्ता का उपयोग अपने परिजनों के लिए, अपने लिए और अपनी पार्टी के लिए किया। और यही कारण है कि भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा ने अलग किया। इन पिछले 13 महिनों में संविधान की कोई ऐसी धारा नहीं बची जिसका उल्लंघन न हुआ हो, इन 13 महिनों में आम जनता की जरूरतों की ऐसी कोई चीज नहीं है जिसके भाव आसमान न छू रहे हों। इन 13 महिनों में जानमाल का खतरा गाँव-गाँव, शहर-शहर और बड़े शहरों में है। आज दिल्ली जो देश की राजधानी है वो अपराधों की राजधानी बन गई है। गौर करने वाली बात है कि जिस देश का गृहमंत्री स्वयं एक मुकदमें में ऐक्यूज्ड है, बाबरी मस्जिद की शहादत के वक्त, वाजपेयी जी तो नही थे, लेकिन आडवाणीजी वहीं पर मौजूद थे। अँगुली नहीं उठाई उसको रोकने के लिए और आज वो अदालत के कटघरे में खड़े है और देश के गृहमंत्री

भी हैं और हम सब लोगों को उपदेश देते हैं। जब ये हालत पहुँच जाएँ, तो ऐसी सरकार को एक मिनट के लिए भी नहीं रखना चाहिए जो हमारे रक्षा मंत्री हैं वो देश की रक्षा करने के लिए तो कम काम करते हैं, ऐसे लोगों की रक्षा के लिए काम करते हैं जो देश के अंदर अमन-चैन को खत्म करना चाहते हैं। टेरेरिस्ट लोग हैं, बन्दूकें, तोपें, सब उनके पास पहुँचती है। जब आर्मी उसको रोकती है, तो डिफेन्स मिनिस्टर का आदेश जाता है इसको जाने दें। अगर किसी दूसरे देश में इस प्रकार के प्रमाण मिलते तो पाँच दिन भी नहीं लगते ऐसे मंत्री को पद से हटाने के लिए। ये केवल भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जो खुद बने रहने के लिए ऐसे जघन्य कामों में भी दखलंदाजी नहीं कर रही है। और फिर समझती है और आशा करती है कि भारत के लोग आँख मूँदकर उनका समर्थन करें। ये कहलाते तो देश भक्त है, पर सारे देश की आँखों में धूल झोंककर ये इरादा रखते थे कि वे वहाँ पर बैठे रहेंगे। जहाँ वो फरेब से पहुँचे है। अपने अधिकार से नहीं पहुँचे हैं और इनको ये अंदाज था कि शायद देश के लोग ये पहचानने में भूल करेंगे कि किस दिशा में ये देश को ले जाना चाहते हैं। चीन से 1962 में लड़ाई हुई तो सबको याद है लेकिन दो महान् देशों के बीच में टकराव नहीं रहना चाहिए, वो भी अगर पड़ौसी देश है तो श्री राजीव गाँधी चायना गए और आपस में मिलजुल कर चलने की बात शुरू की, वहाँ की सरकार ने भी ये समझा कि हमें दोनों देशों के बीच में सामान्य रिश्ते कायम करने चाहिए। 15 साल से वो रिश्ते कायम करने के लिए तो आगे बढ़ रहे थे, बातें हो रही थी, अचानक श्री जार्ज फर्नांडिस ने पोखरन के विस्फोट के समय विस्फोट होते ही घोषणा कर दी कि चायना हमारा दुश्मन नम्बर एक है। और उसके खिलाफ हमने विस्फोट का ये काम किया और लिखा किसको प्रेसीडेन्ट क्लिंटन को चिट्ठी गई। जरा सोचिए इसी को दिमाग का दिवालीयापन कहते हैं। राष्ट्रों के बीच के सम्बन्ध तीसरे राज्य के द्वारा नहीं दिखाए जाते, अगर चीन की शिकायत करनी थी सीधे चीन से शिकायत की जाती, अमेरिका के प्रेसीडेन्ट के पास शिकायत भेजने का क्या मतलब है। इसका मतलब केवल ये है कि इनको डिप्लोमेसी जिसको कहते हैं, राष्ट्रीय सम्बन्ध उसकी ए.बी.सी.डी, भी नहीं मालूम। ये समझते हैं, जैसे गाँवों में आपस में टकराव हो जाता है तो सरपँच के पास पहुँचकर उससे शिकायत करके अपने प्रतिद्वन्दी को सजा दिलाने की बात करते है। और पोखरण ये पोखरण क्या भारतीय जनता पार्टी सरकार ने विस्फोट किया है, पहला विस्फोट तो 1980 में हुआ था। 1982 में हुआ था। लगातार जो हमारे वैज्ञानिक उसमें लगे थे, और धीरे-धीरे ये शक्ति उन वैज्ञानिकों ने क्षमता पैदा की। जहाँ विस्फोट के लिए हम तत्पर हो गए। बस इन्होंने विस्फोट की आज्ञा दे दी। ये देश को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं कि हमने पोखरण में विस्फोट करके अपने देश के लिए कोई उपलब्धि हासिल की है। हम इसे देश के लिए तो उपलब्धि नहीं मानते है, लेकिन भरतीय जनता पार्टी के लिए ये उपलब्धि जरूर है कि उनका ऐसा नजरिया रहे। इन 13 महिनों में जो भी हुआ है, वाजपेयीजी लाखों रुपये का विज्ञापन छपवाकर अखबारों में अपनी उपलब्धि बताते है, जरा उपलब्धि की बात उनसे पूछिए, उन परिवारों से जिनको प्याज खाने की मुसीबत आ गई, आलू नहीं मिलता था, तरकारी नहीं मिलती थी, दाल नहीं मिलती थी, चूल्हे नहीं जलते थे, उनसे पूछिए की क्या उपलब्धि रही। आज जो चारों तरफ आतंक और अत्याचार का वातावरण फैल रहा है और जो उसके शिकार हो रहे है खास तौर से माताएँ, बहनें और बच्चे उनसे पूछिए। ये लोग बताएँगे कि उपलब्धि इन 13 महिनो की क्या हुई इसके बावजूद कॉंग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी ने कहा कि हम इस सरकार को अपनी ओर से किसी भी तरह से दखल देकर गिराने की कोशिश नहीं करेंगे। लेकिन अगर ये सरकार अपने आप अपने बीच की आपस की लड़ाई से गिर जाती है, तो जो हमारी जिम्मेदारी है, हम उसको निभाने की कोशिश करेंगे। जब उनके स्वयं के साथी डॉ. जयललिता ने उनसे समर्थन वापस ले लिया और वाजपेयी सरकार लोकसभा में अल्पमत में आ गई और राष्ट्रपति महोदय ने वाजपेयीजी को आदेश दिया कि

लोकसभा के अंदर विश्वास का मत प्राप्त करो और वह जब लोकसभा में विचार के लिए वह प्रस्ताव आया तो काँग्रेस ने और अन्य सभी सेक्युलर पार्टीज़ ने उस प्रस्ताव के विरोध में मत देकर इस सरकार को अल्पमत में ला दिया। क्या वाजपेयीजी ये आशा करते थे कि काँग्रेस पार्टी और सेक्युलर पार्टी जो अपोजिशन में थी, वो वाजपेयीजी के पक्ष में वोट देकर उनको बचाते। हमारा कर्तव्य था कि ऐसी सरकार जिसने 13 महिनों तक तांडव नृत्य किया है देश के अंदर अपने आप अल्पमत में आ गई है, और जब उसे बहुमत साबित करने के लिए वो आई तो हम उसका विरोध करके सही तस्वीर देश के सामने रखे और अब वाजपेयीजी ऐसे रो रहे हैं जैसे किसी के हाथ से खिलौना चला गया हो। हिन्दुस्तान कोई खिलौना नहीं है। हिन्दुस्तान की सियासत बच्चों की तरह नहीं चलेगी, हिन्दुस्तान की सियासत वैसे चलेगी जिससे देश मजबूत बना रहे। भविष्य में कमजोर न हो और वही सियासत आज देश को हमें देनी है। इसकी जिम्मेदारी सबसे ज्यादा देश की सेक्युलर के पार्टियों के ऊपर हैं। ये चुनौती जो आज सामने चुनाव के रूप में आई है। ये एक ऐसी चुनौती है जिस का उत्तर केवल नेताओं के द्वारा नहीं दिया जा सकता इसका उत्तर हम और आप जितने लोग हैं, जो करोड़ों मतदाता, जो वोट डालेंगे, उनको देना होगा। जब वो उत्तर देंगे तब देश की रक्षा होगी। तब भारत का भविष्य सुनिश्चित होगा। ये उत्तर देने के लिए आप तैयार रहें। सेक्युलर फोर्सेस की एकता कायम रहे।

काँग्रेस के प्रति जनता में विश्वास की कमी आ गई है

18 जुलाई 1999 लखनऊ में कौमी संगठन की सभा में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

इस बैठक के सम्मानीय अध्यक्ष श्री खुर्शीद साहब, हमारे बुजुर्ग आदरणीय श्री नारायण दत्त तिवारी, आदरणीय बहन मोहसिनाजी तथा उ.प्र. के कोने-कोने से आए हुए आदरणीय बहनों और भाइयों, करीब-करीब मुल्क के सभी प्रदेशों में मुझे जाने का मौका मिला और मैं आपसे यकीनन कहना चाहता हूँ वोट की राजनीति तो अपनी जगह है। लेकिन इस मुल्क की तरक्की के लिए सबको एक सूत्र में बाँधकर चलने के लिए जो सोनियाजी ने जहन बनाया है। जिस नक्शे कदम पर वह चलना चाहती हैं, भारत का भविष्य उसी पर निर्भर करता है और इसीलिए लोगों के बीच में खलबली भी है क्योंकि हमने सियासत का रंग भी देखा है, रुआब भी देखा है, अंजाम भी देखा है। कितनी सफाई से बात कही जाए इसका कोई मतलब नहीं है, कितने भूल भुलैया में डालकर हम अपनी चीज़ को समाने ले आएँ, जिससे हमारे ऊपर कोई जिम्मेदारी न आए। यह चीजें अब काँग्रेस के अंदर नहीं होंगी।

माइनारिटिज़ के जो इंस्टीट्यूशन हैं, संविधान में तो दिया हुआ है, कि आर्टिकल 30 में संविधान उसकी सुरक्षा देता है, लेकिन माइनारिटी के जो इंस्टीट्यूशन चलाते हैं, आप उनसे पूछें कितनी दिक्कतें उनको पैदा होती हैं अपने इंस्टीट्यूशन को चलाने के लिए। उसका कारण एक है कि आर्टिकल 30 में संविधान ने कमिटमेंट तो दे दिया, वायदा तो दे दिया, लेकिन उस आर्टिकल के नीचे जो और एक्ट बनने थे वे अभी नहीं बन पाए हैं। सबसे पहला कदम होगा, अगर आपने विश्वास किया काँग्रेस पर तो माइनारिटी के जो इंस्टीट्यूशन है उनमें उनका किस प्रकार से हक और हकूक सुरक्षित किया जा सके, इसके बारे में एक विस्तृत कानून बनाया जाएगा ताकि जो उनको दिक्कतें पैदा होती है, यह दिक्कतें पैदा न हो (तालियों की आवाज.....) फिर अलग-अलग कामों में जुड़े हुए लोग हैं। कोई किसी से कहने नहीं गया। आल इंडिया मुव्हमेंट कॉंफ्रेंस के सारे मुल्क के जो पदाधिकारी हैं, उन्होंने टाइम लेकर 4 दिन पहले सोनियाजी से भेंट की, अपनी बात कही और जो उनकी दिक्कतें हैं, उनके बारे में जिक्र किया। यह इस बात को दिखाता

है कि सारे मुल्क के अंदर एक विश्वास की नई कड़ी जुड़ रही है काँग्रेस के साथ उन लोगों के साथ जो इस मुल्क के अंदर सबको साथ में लेकर आगे बढ़ना चाहती है। (तालियों की आवाज .....) मैं इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योकि जगह-जगह यहाँ पर भी अपनी भाषा में इस सब चीजों का जिक्र किया है।

कारगिल के मसले पर कई लोगों ने अपनी अपनी राय जाहिर की। मैं आज एक बात कहना चाहता हूँ और दावे के साथ कहना चाहता हूँ कि जितने भी प्रमाण अभी तक सामने आए हैं, उससे यह साफ़ जाहिर होता है कि यह घुसपैठिए दिसम्बर के महीने में कारगिल के अंदर स्थापित हो चुके थे और इसकी जानकारी दिसम्बर के आखरी हफ्ते में भारत सरकार को मिल चुकी थी और जब वाजपेयीजी लाहौर की बस यात्रा करने जा रहे थे, तो इनको इस बात का इल्म था। आज तो बड़ी लम्बी चौड़ी चुनौतीयाँ दी जा रही हैं पाकिस्तान को, जब बस पर चढ़कर गए थे और गले मिलने की नौबत जब आई उस वक्त भी दो बातें कर लेते, अब तो कह रहे हैं कि मैं तो सो रहा था उस वक्त प्रधान मंत्री कहते हैं। जो प्रधान मंत्री देश का गफलत में सोता रहे, उससे मुल्क क्या उम्मीद कर सकता है। अब आज इनक्वायरी की बात शुरू हुई है। वह भी इसी नजरिए से कि इनक्वायरी जैसे होती है, सबसे छोटे से छोटे अफसर के ऊपर जिम्मेदारी डालकर कह देंगे इसने इत्तला नहीं दी समय पर। यह सरासर गलत बात है। ये इंटेलीजेंस का फेलियर केवल नहीं है एक स्टेज पर इंटेलीजेंस का फेलियर हो सकता है, लेकिन बाद में समूची की समूची जानकारी भारत शासन को थी, और फेलियर पोलिटिकल लीडरशिप की है, इंटेलीजेंस की नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में जब देश गुजर रहा है तो निश्चित रूप से आवाम की जिम्मेदारी होती है कि हम अपने बीच में जो हमारी थोड़ी बहुत नाकेफ़ांकियाँ भी हैं, कहीं कोई मतभेद हैं, उनको एक सीमा से ऊपर न जाने दें और हिन्दुस्तान को हरदम, जब वह एक रहा है तो जिंदा रहा है,जब बँटा है छोटी छोटी बातों में तो गुलाम हुआ है। यह नसीहत हमें कभी भी नहीं भूलना चाहिए। ये ऐसा मुल्क है जिसमें सबके लिए स्थान है, दुनिया का शायद ही कोई मुल्क हो जिसमें इतने धर्मों को मान-सम्मान दोनों मिला हो, जितना भारत वर्ष से मिला है। आज इस पर गर्व करके, गौरव करके हमें उनको मजबूत रिश्तों में बाँधना है।

भारत माता की वलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले शहीदों के चरणों में श्रद्धाँजलि

2 अगस्त 1999 कढ़वा जम्मू और कश्मीर में शहीदों के सम्मान में आयोजित सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय सम्मानित विधायक श्री लाज सिंहजी, पी.सी.सी. की जनरल सेक्ट्री और अन्य साथीगण आज हमारा यहाँ उपस्थिति होना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

जब मुझे यह मौक़ा मिल रहा है कि भारत माता की बलिवेदी पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले शहीदों के चरणों में श्रद्धाँजलि अर्पित कर पर रहा हूँ। इन शहीदों ने इस जुलाई में अपने शौर्य का परिचय देकर देश भक्ति का परिचय देकर और अपना बलिदान देकर न केवल अपनी पारिवारिक परंपरा को कायम रखा, बल्कि साथ ही साथ उन्होंने सारे मुल्क के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें बिना किसी संकोच के, बिना किसी हिचक के उन मूल्यों के लिए बलिदान दिया, जिन मूल्यों से भारत की पहचान बनी है और आगे भी बनी रहेगी। विशेषकर जम्मू कश्मीर में जो एक नमूना है, भारत की गंगा जमुना, संस्कृति जो एक ऐसे उसूल पर कायम है, जिसे लोगों ने अपने खून से सींचा है। भारत की एकता और अखंडता और इस देश के रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पहचान और अपना-अपना हक़

अगर हिन्दुस्तान में कहीं रेखांकित होता है तो वह जम्मू कश्मीर की धरती से होता है और यही वजह है कि फिरका परस्त और धर्म के नाम पर उन्माद से भरे हुए लोग जम्मू और कश्मीर की पवित्र धरती को अपने नापाक इरादों से साज़िश करके उसे नष्ट करना चाहते हैं।

पाकिस्तान की यह हरकत सबको अच्छी तरह से मालूम है और पाकिस्तान की हरकतें कभी कामयाब नहीं होंगी। जब तक इस देश में ऐसे शहीद विद्यमान रहेंगे, पाकिस्तान ने बहुत ही घूर्तता से ये परिस्थितियाँ पैदा की, जिसकी सर्वथा निंदा होनी चाहिए। लेकिन साथ ही साथ हमें इस बात को भी नहीं भूलना है कि अपने देश की रक्षा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी भारत के लोगों की है। मुझे पिछले एक साल से भाई लालसिंहजी अपने क्षेत्र में आने का निमंत्रण देते रहे है। मै उनके निमंत्रण पर तो उस समय नहीं आ सका, लेकिन आज जो आयोजन उन्होंने और उनके साथियों ने किया है। मैंने अपना फ़र्ज समझा कि मैं यहाँ हाज़िर रहूँ। यहाँ पर इस बात को कहना निहायत जरूरी है कि जैसा एक बहुत बड़े विचारक पंडित नेहरू ने इस बात को बार-बार दोहराया है, अँग्रेजी में यह है "Eternal vigilance is the Price of Liberty." आजादी की क़ीमत सतत् चौकन्ना रहना है और कोई उसकी क़ीमत नहीं हैं। हमें अपने देश की आज़ादी के लिए चौकन्ना रहकर फ़र्ज अदा करना है शहीदो के परिवारों के प्रति केवल सतही तौर से हमें अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करनी चाहिए और इसलिए जो लाल सिंहजी ने आयोजन किया है उन परिवारों की मदद करने के लिए आप लोगों ने आयोजन किया है। आप सबकों मैं इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। यह समय भाषण का नहीं है, उपदेश देने का नहीं है यह समय केवल श्रद्धाँजलि देने का है। मैं उन सब वीर शहीदों के चरणों में अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूँ और उनके संतृप्त परिवारों के प्रति इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपके परिवारो ने सबसे बड़ी और आखिरी क़ीमत देश की आज़ादी के लिए चुकाई है। आपके प्रति हम अपनी जिम्मेदारी को निभा सकें। इसकी शक्ति हमें अर्जित करनी और इसमें हमें ईमानदारी से कोशिश करनी है, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूँ और इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ। जय हिन्द।

"Eternal vigilance in the price of Liberty"

2 अगस्त 1999 जम्मू, इन्टलेक्चुअल फोरम के कार्यक्रम में संबोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Respected Shri Puri, former V.C. University of Jammu, respected Shri N.R.Sharma, Secretary Intellectual Forum, Shri B.P. Singhji Dean, Faculty of Law, distinguished members of the audience at the outset I must express my deep gratitude to all of you for having assembled here and giving me the opportunity to interact with you on a subject which has been introduced here.

I agree with many of the persuasion as initiated in the subject by him because it was very obvious that his transparent analysis was not awaited for or against anyone. But tried to draw impartially what is of importance to the nation. The sentence that Pandit Jawahar Lal Nehru uttered after independence, comes to my mind. When he said "Eternal vigilance is the price of liberty." Liberty came to India in a normal way, in a peaceful revolution comparatively and perhaps that is why we in this country, could not fully grace. What is the price of liberty? This is not reflection for anyone but this is the psychological background in which the common people of this country, view all that happened after 15 Aug. 1947 though it is true, that during the freedom struggle thousands

and thousands of people took part in the freedom movement, many were martyre, many homes were destroyed but the revolution for the freedom of the country as is commonly understood around the globe did not come to India and for this we must thank only one person that is the father of the nation Mahatma Gandhi.

There was a section of people in India who believed in arm conflict and wanted the freedom to be fought on those lines, but Gandhiji knew that if an arm conflict were to ensure in India the stacks would be against India because we did not have where wither to raise in arm conflict and true to the genious of this country. He saw formidable weapon which could be used against the might of the largest and strongest empire in the world. That is non-violence, lack of fear and peaceful resistance. I don't think the route with anybody else would have given what you say trying it out. But Gandhi forced that instrument of battle and history justified his decision when a nation achieved liberty. Liberty which did not entail human sacrifice of suffering beyond the certain limit and above all did not condition minds and hearts of the people of this country into hatred against the colonial power. The significance of this perhaps is lost on us also because such a freedom struggle could not have been waged by cowardly people as Gandhiji used to say it is the height of courage when you refuse to submit to terror and injustice. But between these two things something happened which I believe it is my assessment did not make us really voice to the world.

We adopted a constitution giving the fullest right to everyone. The fundamental rights, rights to education, the democracy, the right to vote. The Indian army is the most brilliant professional armed force in the world. They have a heritage of bravery. They have inspiration and have the training and that is why under the most trying circumstance they have maintained absolute propriety about civil and military authorities their functioning and the line of authorities but when aberrations take place and they are not taking into account by people who are supposed to be taken into account beyond certain event, human nature is such that anything could happen. This is the first lesson we must draw from this subject. I don't want to appear partisn though it is very tainting to do so, more so after speech of General Jamva. There is one thing which I consider crucial to Indian democracy and that is the element of accountability. It is one of the sad factors of our progress of Indian democracy. That the issue of accountability which live at the root of a democratic system has not been given that much importance, something we should have happened naturally there has to be a human approach about it and hesitation about it or some other form of action and even than persons who are accountable tried to find wages and means to get out of it and I am not speaking of any political party. I am speaking of broad the Indian democracy yes, if there is no accountability to the Parliament of this country our democracy can't be strengthened and if we have been able to sustain the democratic system in India. It is primarily because of the trust and faith of the common man. He has many things to come about it but he believes, he trusts and therefore, does not cross that forbidden life. But when even like Kargil happened and then everybody wants to turn his face away instead of allowing, a

candid review of allowing. All the things come out because democracy is not a secret society in Pakistan. It is quite natural process a thing to happen because there are no democracy. You call them oligarchy and that selected oligarchy which differs from time to time. The democratic rules and pressures that control Indian political system and therefore, I think it is very necessary but all the events and facts that live behind this episode must not be brushed under the carpet. They should be brought to the notice of the Indian people. If there is something which they find fall brief as a democratic society we must accept unless we prescribed to the theory of superior knowledge. This is also one of the weaknesses, some of us believe that we have the knowledge.

That is the surest way to destroy democracy. In the democratic system the people are the ultimate masters and a master must know what is happening only then he can judge otherwise pointing accusing fingers at someone, some other party will point an accusing finger at us. But if we allow the normal functioning of a democratic system then we can hope to keep things under check. Sometimes some comments are made about Pt. Jawahar Lal Nehru in the Chineese aggression Yes, it was the period but Panditji never fought about it. Where as he said that the public opinion had already found Mr. Krishna Menon guilty he did not hesitate a single minute to ask him to quit.

I don't want to take any name but certain things have occurred in the last thirteen or fourteen months which give much to be desired in the running of the defence system certain basic facts of beyond question speech in Parliamentary record. That is not an allegation being made by anyone today. What have been stated then had any grain of truth it should have lead to something. After that a clumsy attempt was made to make us believe that what had happened in Kargil was not the fault of Nawaj Sharif the Prime Minister of Pakistan and this attempt was joined also by the Prime Minister. The perfidy of Pakistan is so apparent and blatant that even a child can't say that Nawaj Sharif was not aware. The whole thing was a plan and precisely implemented operation. We were busy with Lahore and I am not decrying Lahore's importance because India always wants peaceful relations with all our neighbours particularly with Pakistan but the desire to have peaceful relations should not close our eyes to ugly realities of the Pakistan its pattern of behaviour and only if you had kept your antina up perhaps that kind of things has happened, would not have happend. So, this is the kind of balance of approach which is needed have always been saying one thing and I want the people of this country have a right too. We don't want to disturb the morale of the armed forces, we don't want to take sides but this country wants to know from non else when the Prime Minister himself as to when did he come to know for the first time that these intrusion are taking place. This question is being asked for the last twenty days. There is no response from him, neither from his Minister of Information Shri Pramod Mahajan total silence, why? Is the country not entitle to know this? Failure answer it obviously because once an answer is given to this question then many other questions will arise which will be very difficult to answer. There is another aspect and which military strategy will be better equipped to answer it. We can't remain static on the issue that we can not

discuss publicly where at least those who are responsible for it must be aware of it accepted the necessary and then go about it.

The great general of Nepolian who said that "War is ultimate weapon of diplomacy." But here it appears that the weapon and actions concerning the same are so jumbled up. We all want the best relation with America, friendship with America is a very positive factor for India. Both are democratic republics.

There is a question to be asked and the intelligent people of India want to ask that question till now the officially stated position of America, that Jammu & Kashmir is disputed territory. I think I am not mis-quoting anyone, you all must be remembering what was said, now if Jummu & Kashmir is disputed territory in the eyes of United States of America. what we are doing and what we have done itself falls through. Jammu & Kashmir is not a disputed territory so far as India is concerned. It is the sovereign right of India that prevails in Jammu & Kashmir yes, we have been deprived some of our land, adversely occupied by Pakistan, to avoid bloodshed. But here is the resolution unanimously adopted by the Parliament of India. This says that the territory occupied by Pakistan belongs to India and must come to India. That is stated position of our country and stated position of America that Jammu & Kashmir is a disputed territory.

There are certain issues which you can't turn your head. On the other hand, it is true that a developing country like India, can't afford to wage war either you spendid on the armaments or spendid on drinking water for the poor people, housing, health, communication all which go to make like worthwhile and therefore, for India war can never be a policy time and again India sought peace around the world only because the time and the sources that we have today are not enough for us to develop our country and also to fight a war. The whole concept of peaceful coexistence that was initiated by India and which lead to the formation of the third world. It is because powerful developing country of the world believed in this theory which was profounded by Pandit Jawahar Lal Nehru, Succarno, China of course, became victum of its own granious..... But we have not abandoned I mean, can't afford to abandoned as we go from strength to strength as our resources increase the dilemma becomes sharp and sharp.

The people of this country should know what is happening in Kargil take them in confidence don't treat everyone as less knowledgeable and we only have superiour knowledge and third is that the basic postulates if now given Govt. conduct, public conduct in this country must be minutely discussed and define very carefully. We can't have a free for all, we can't have limitless criticism. Let's pull ourselves up and now define for ourselves our goal in the next century because a next century will be much, faster than 20th century and if we are left behind there time that the half way mark in the 21st century is reached ..... We can by the middle of the 21st century becomes super powers, not acquire anybodies land, because India has the unique example at least in recorded history that it never have the arm forces at this country to acquire other country's land.

युवा पीढ़ी के भ्रमित होने पर देश दिशाहीन हो जाएगा

14 अगस्त 1999 जयपुर राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समारोह में सम्बोधन के प्रमुख अंश इस प्रकार है—

राजस्थान शासन के सम्मानित शिक्षा मंत्री डॉ. वी.डी. खन्नाजी, सम्माननीय उप कुलपति प्रो. आहूजा जी, श्री प्रदीप सिंह अध्यक्ष छात्र संघ, विश्वविद्यालय के सभी बहनों और भाइयों जिन्होंने इस आयोजन में भाग लिया है, यहाँ पर उपस्थित देवीयों और सज्जनों।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे यहाँ आने का सुअवसर मिला और आपने जो एक प्रयास किया है अपने कार्यकाल में उन प्रयासों की सफलता को देखने का। गौड़ाजी के शपथ समारोह में मैं आया था और यह मेरे लिए बहुत संतोष का विषय है कि जिस उत्साह से उन्होंने अपना कार्यकाल प्रारम्भ किया था, उसके दुगने उत्साह से इस कार्यकाल की समाप्ति उन्होंने की है (तालियों की आवाज .....) यह पीढ़ी जो अब भारत की युवा पीढ़ी से आगे बढ़कर उस श्रेणी में आने वाली जो इस देश की जिम्मेदारियाँ संभालेगी, उनके लिए यह बहुत निर्णायक समय है। एक शताब्दी का अंत और नई शताब्दी का प्रारम्भ केवल समय का मापदण्ड नहीं है, संस्कृतियों का, आदर्शों का, उद्देश्यों का एक परिवर्तन है। हर युग अपने युग के अनुरूप, आदर्शों के अनुरूप अपने को ढालने की कोशिश करता है। भारत 21वीं सदी में प्रवेश करने जा रहा है। जहाँ उसके हजारों वर्ष का इतिहास और निकट पूर्व का इतिहास जिसने देखा है, गुलामी, पराभव और लाचारी को जिसने देखा है, अपने आत्मबल से, साहस से और सहयोग से एक निहत्थे राष्ट्र को आजादी प्राप्त करते हुए, ये इतिहास की वे घटनाएँ हैं, जो शायद अगली शताब्दी के अंत तक विश्वास करने योग्य ही न रहें। लेकिन यही घटनाएँ और उन घटनाओं को घटित करने वाले महापुरुष उनके मूल्य, उनके आदर्श, आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बनें, ये नितान्त आवश्यक है। इसलिए जरूरी है कि क्योंकि हम सब देख रहे हैं दुनिया के चारों तरफ प्रगतिशील राष्ट्र, उन्नतशील राष्ट्र और सम्पन्न राष्ट्रों की श्रेणी में आने वाले देशों की युवा पीढ़ी, एक भ्रमित युवा पीढ़ी की संज्ञा ग्रहण कर रही है और जब युवा पीढ़ी भ्रमित हो जाए तो देश किस दिशा में जाएगा, इसका अंदाज लगाना मुश्किल है। मैं कोई तुलनात्मक दृष्टि से बात नहीं कर रहा हूँ। लेकिन पाश्चात्य देशों में इस समय एक प्रकार से जो सामूहिक कमी आ रही है, सामाजिक मूल्यों की, सामाजिक बन्धनों में और राष्ट्रीय उद्देश्यों में, तात्कालिक लाभ, हर प्रकार से अपने वर्चस्व को कायम करने की अभिलाषा और हर कीमत पर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए चेष्टा ये तात्कालिक लाभ तो दे सकते हैं। तात्कालिक रूप से लोगों को संतोष दे सकते हैं। लेकिन इतिहास के झरोखे से देखने लायक नहीं बना सकते। यह हमारे आपके लिए विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए सोचने लायक बात है कि हम भारत के उस वैभव को, उस आकार को और उस व्यक्तित्व को कायम रखें जिसने आदिकाल के प्रारम्भ से ही सारे वसुधैव को अपने कुटुम्ब के नाम से ही घोषित किया। इतनी छोटी-छोटी दीवारे आज खड़ी हो रही हैं कहीं जाति के नाम पर, कहीं धर्म के नाम पर, कहीं सम्प्रदाय के नाम पर, कहीं विचारधाराओं के नाम पर, ये वह भारत नहीं है जिसके लिए हजारों लोगों ने फाँसी के फँदे चूमे थे।

यह वह भारत नहीं है जिसके लिए गाँधी का बलिदान हुआ था, यह वह भारत नहीं है जिसमें देश के उन महान क्रांतिकारियों ने सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला इन लोगों ने सर्वस्व अपना न्यौछावर किया। उस भारत की परिकल्पना हमारे मस्तिष्क में सदैव रहनी चाहिए और हम अपने जीवन को

अपने सब जीवन के कार्यों को करते हुए अपने-अपने परिवार के लिए सब कुछ काम करते हुए इस भारत की परिकल्पना अपने दिल और दिमाग से दूर न होने दें ये मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है। राजस्थान की पवित्र भूमि, जिसमें त्याग, बलिदान और संघर्ष हर कण में समाया हुआ है यह राज्य भारत की प्रतिष्ठा, भारत के वैभव और भारत की गरिमा को चार चाँद बनाने में सफल हो, उसमें इस राज्य की युवा पीढ़ी का योगदान सबसे प्रमुख हो मेरी यही शुभकामनाएँ है, जय हिन्द।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय इतिहास के प्रतीक और प्रहरी हैं

19 दिसम्बर 1999 इलाहाबाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस स्मारक राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में दिए गए उद्घाटन भाषण के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

आदरणीय केसरीनाथ त्रिपाठीजी, आदरणीय बहन श्रीमती बहुगुणाजी, राष्ट्रीय युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र माथुरजी, और इस आयोजन में पधारे हुए सभी आदरणीय देवियों और सज्जनों।

यह हम सबके लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि एक ऐसे परिसंवाद में हम हिस्सा ले रहे हैं जिससे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम जुड़ा हुआ है। नेताजी का इतना बहुआयामी जीवन था, जिससे उनके जीवन का हर पहलू एक नई दिशा और एक नई प्रेरणा का स्रोत रहा है, इसलिए नेताजी के संबंध में कुछ कहना इतने थोड़े से समय में सार्थक नहीं होगा। हम इतना ही कह सकते हैं कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय इतिहास के उस प्रहर के प्रतीक और प्रहरी हैं, जिस प्रहर में केवल संघर्ष, त्याग और बलिदान की ही पहचान हुआ करती थी और वही पहचान उन्होंने अपने जीवन में बनाई है। अगर सबसे बड़ा कोई पाठ हमें उनके जीवन से सीखना है तो मेरी नजर में एक ही चीज़ है, वह है उनकी प्रखर राष्ट्रीय भक्ति और यदि यह कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि राष्ट्र धर्म का पालन करने वालों में अग्रिम पंक्ति में देश में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को गिना जा सकता है। वैसे धर्म तो हिन्दुस्तान में इतने हैं जिसकी गिनती करना मुश्किल है और यह एक प्रकार से हम सबके लिए सौभाग्य की बात है, गौरव की बात है कि दुनिया में भारत ही ऐसा देश है, जिसमें दुनिया में विद्यमान प्रत्येक धर्म को, चिन्तन को, सम्मान और स्थान दोनों मिला हुआ है। लेकिन राष्ट्र धर्म की परिभाषा जो अपने आप में उतारकर दिखा सके, ऐसा व्यक्तित्व नेताजी का ही था। यह प्रश्न अब जरूर खड़ा होगा कि २१ वीं सदी की शुरुआत में हम किसी राष्ट्र धर्म का दर्शन करें क्योंकि अब इतनी परिभाषाएँ बना दी गई हैं, राष्ट्र धर्म की कि जिनको या तो हम अपनी महत्वाकांक्षा से जोड़ना चाहते हैं या अपने स्वयं राजनीतिक सोच और चिन्तन से जोड़ना चाहते हैं या यूँ कह दीजिए कि सीमित तौर से हम अपने स्वार्थ से जोड़ना चाहते हैं। आने वाली शताब्दी युवाओं की शताब्दी है। बजाए कोई आदेश देने, मार्ग दर्शन देने के, मैं केवल आगाह करना चाहता हूँ इस देश के युवाओं को कि आने वाली शताब्दी को आप क्या बनाना चाहते हैं, यह आपके ऊपर है। हम में से किसी के उपदेश पर यह निर्भर नहीं करता है। अपने लिए सफलता की बात, क्षमता की बात, राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की बात, ये सब तो स्वाभाविक है, यह हर मनुष्य करता है। कोई समन्वित तरीके से करता है, जहाँ समाज का हित भी संबंधित हो और कोई संकुचित दायरे में करता है, जहाँ समाज का हित और अपने व्यक्तिगत हितों में टकराव भी आ जाए तो कोई परवाह नहीं। आने वाला समय विज्ञान और ज्ञान के विस्फोट का समय होगा। जब असीम शक्तियाँ मानवता की मुट्ठी में रहेंगी और उन शक्तियों को काबू में रखते हुए विश्व

के, देश के, समाज के और अपने कल्याण की बात सोचने की क्षमता, यदि आने वाली पीढ़ी के युवाओं में नहीं रहेगी तो क्या उसके भयंकर परिणाम होंगे, हम लोग तो देखने के लिए नहीं रहेंगे लेकिन आने वाला समय एक प्रकार से शून्य का समय भी हो सकता है। इसलिए यह नितान्त जरूरी है कि हम समन्वय के दृष्टिकोण से ही लोगों के बीच में सामंजस्य पैदा करके ही आगे बढ़ने के तरीके से अपने हर कार्यक्षेत्र में काम करने का प्रयास करें और यह केवल आने वाले समय में युवाओं के लिए जरूरी है। मैं समझता हूँ उससे कहीं ज्यादा जरूरी आज के समय के लिए है क्योंकि यह बात हमें समझनी चाहिए कि आज जो विश्व का नक्शा बन रहा है वह वर्चस्व की लड़ाई का नक्शा है और उस वर्चस्व की लड़ाई के दौरान राष्ट्रों की क्या स्थिति रहेगी यह विषय प्रत्येक राष्ट्र के लिए आवश्यक भी है और उसके बारे में सोचकर संकल्प लेकर कुछ करने का भी है, इस संदर्भ में तो मैं इतना ही संकेत दे सकता हूँ और आज के समय में इसकी बहुत बड़ी अहमियत है। पिछले शताब्दी अर्थात् 20वीं शताब्दी, इन 100 वर्षों में दुनिया में समानांतर शक्तियों और विचार-धाराओं का टकराव हम सबने देखा है। एक ओर हिंसा पर आधारित अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की दौड़, अधिनायकवादी शक्तियों की ओर से देखने को मिली। दूसरी ओर इन शक्तियों का प्रतिरोध करने वाली जो प्रजातांत्रिक शक्तियाँ है उनके द्वारा भी बल पर ही आधारित एक प्रयास को भी हम लोगों ने देखा। करीब करीब जो मैंने समानांतर शब्द इस्तेमाल किया वर्ष 1994 से लेकर 1998 के विश्व युद्ध के समय और इधर वर्ष 1937 से लेकर 1945 तक विश्व युद्ध, यह अद्‌भुत संयोग है कि दुनिया में एक तरफ जन हिंसा, प्रतिहिंसा के बीच में दौड़ हुई थी। यह अलग बात है कि एक तरफ अधिनायकवादी शक्तियाँ थीं, दूसरी तरफ प्रजातांत्रिक शक्तियाँ थी लेकिन दोनों का आधार हिंसा ही थी। वहीं पर इस दुनिया के अंदर एक ऐसा प्रयोग भी हो रहा था, जो वर्ष 1917 से ही शुरू हुआ या यों कहिए कि पूरी तरह वर्ष 1920 से, जो हिंसा को अलग रखकर आत्बल पर और अहिंसा पर आधारित शक्ति अर्जित करने का प्रयोग था। जो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की ओर से प्रेरित किया जा रहा था और देखिए यह संयोग कैसे जाकर ऐसे निर्णायक मोड़ पर पहुँचता है, जब एक तरफ हिंसा की दौड़ में अधिनायकवाद की पराजय होती है और प्रजातांत्रिक शक्तियाँ हैं उभरकर सामने आती हैं वहीं पर करीब-करीब उसी के आसपास वर्ष 1945 में द्वितीय महायुद्ध समाप्त होता है और वर्ष 1947 में भारत आज़ाद होता है। यह केवल मात्र संयोग नहीं हैं और यह इस बात का द्योतक है कि मनुष्य के अंदर किस प्रकार से मान्यताएँ बनती हैं, मजबूत होती हैं और किस प्रकार से दुनिया के रंगमंच पर एक दूसरे प्रकार की धारा बहकर निकलती है। क्या यह कभी कोई कल्पना कर सकता था कि जिस ब्रिटिश साम्राज्य ने जर्मनी को हराकर अपना वर्चस्व कायम किया, वर्ष 1945 में, उसी ब्रिटिश साम्राज्य को दो साल के अंदर गाँधीजी की अहिंसा के सामने घुटने टेकने पड़ेंगे। यह कल्पना के परे की बात है। लेकिन आने वाले दिनों में गाँधी के मंत्र को अगर हमने याद रखा और उसी के प्रकाश में हमने अपने फैसले करने का सिलसिला जारी रखा तो आने वाली शताब्दी भारत की शताब्दी होगी क्योंकि जब तक दरिद्र नारायण को फिर से हम स्मरण करके उसके आँख के आँसू पोछने का संकल्प नहीं करते बाकी जितनी भी चकाचौंध की बातें हैं, वह चकाचौंध जरूर रहेंगी। लेकिन भारत को अपने पैरों पर खड़ा नहीं कर सकती हैं। यह बात हमें याद रखना चाहिए किसी भी पीढ़ी के लिए इससे बढ़कर कोई उद्देश्य नहीं हो सकता, कोई आदर्श नहीं हो सकता कि वह अपने समाज और देश को अपने पैरों पर खड़ा होने के लायक बनाने में अपना सब कुछ सर्वस्व न्यौछावर कर सकें। धन्यवाद। जयहिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकार वार्ता

धर्मान्तरण

12 जनवरी 1999 दिल्ली ए.आई.सी.सी. की पत्रकारवार्त्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : What is the opinion of Congress about conversion?

Shri A. S.: Well, I think on this the Congress President has spoken very definitely when her visit to Gujarat took place. So, it is not a matter which is closed for us but when it has to be done, will be decided.

Question : Do you support conversion?

Shri A. S.: I am in India so, I support the fundamental rights, guaranteed to every citizen in which we are free to practice and prophese any faith, we like it.

Question : My question is that Orissa, Madhya Pradesh and in remote areas where christian Clergy men are converting poor Adivasi, poor S.C. by giving them some food, giving some money and in the North East, it has happened?

Shri A. S.: This is the stand of some members of the Sangh Parivar and certain people who don't want to look at realities I don't go along with.

प्रश्न : इसका तात्पर्य यह है कि आप ईसाई मिशनरीज द्वारा धर्मान्तरण के लिए अपनाए जा रहे तरीकों का समर्थन करते हैं?

श्री अर्जुन सिंह: मैंने कहा कि उस विषय पर प्रश्न समाप्त नहीं हुआ है, अगर हम आशा करें कि सही दशा में बढ़ने की कोशिश होगी तो गलत नहीं होगा। जब वह स्थिति आएगी तब इस प्रकार की बात भी सामने आएगी।

प्रश्न : कहा जा रहा है कि इसाई धर्मान्तरण के माध्यम से वे देशान्तरण करना चाहते है, जो गंभीर मामला है?

श्री अर्जुन सिंह: पर्याप्त गंभीर है, लेकिन केवल हमारे मानने से नहीं होता है। ये बात तो सरकार जो गुजरात में है और जो भारत में है, उन्हें इस बात का अहसास हो कि ये ज्यादा जरूरी है।

Question : How do you think that the Supreme Court involved in this?

Shri A. S.: That issue can be addressed, that is our belief once the central Govt. is serious about this matter, we can certainly devise wage and means to bring that about and we will help in that.

Question : Do you agree with the Prime Minister's statement to have Nation-wide discussion on conversion?

Shri A. S.: I think this is a statement which at least any of us sitting here, all of us sitting here and certainly the people of India would never expect a Prime Minister of our country to make what is the issue to be debated something has happened which is a breach of law and something is being alleged without any basic proof on issue which is a

fundamental right between these two, what is that the Prime Minister seeks to gain out of a debate, accept to bury the whole issue.

Question : If the Government takes initiative to start discussion on conversion what would you do?

Shri A. S.: You see, that is why we have said in our statement. We would like initiative to be taken by the Govt. and if they take that an initiative we will certainly join in a dialogue to see how it is best done.

Question : Are you waiting a reaction from the Government?

Shri A. S.: I want a reaction from the Govt. whether they are able to prepare even to consider this, let that come then we will say in what manner it can be done.

Question : It is said that Smt. Sonia Gandhi being a christian help conversions?

Shri A. S.: Well, I think that could be a childish wish of some people Smt. Sonia Gandhi is above all this and she is not affected by this at all.

Question : Demand on this issue all parties meeting should be convened?

Shri A. S.: Well, I think it could be appropriate to have a meeting of the national integration council on this. I don't think we have to demand every think that is right, what is done to be also concern of the Govt. But I say that would be a good idea. If a meeting of the national integration council were held.

Question : Will the meeting of national integration council discuss conversion?

Shri A. S.: Well, it will certainly make a different because I am quite concerned and quite sure also, that the focus in the National Integration Council will be on doing somethingwhich protects the minorities and also takes care of the fundamental rights and the law of the land. It will be a focus discussion.

Question : What is your reaction on Prime Minister's statement about nation-wide discussion on conversion?

Shri A. S.: Next sentence is that unfortunately the first reaction of the Prime Minister during his visit to Gujarat, was to totally absorb the local administration of any blame in this matter and only the positive sugestion that he could bring out is to ask for a National debate on conversion. No one can be misled about this. It is a clumsy attempt to divert attention from the cracks of the matter attrocities against Christians to a wider debate on the axe of conversion which is the main allegation being levelled agaist christian by the Sangh Pariwar.

प्रश्न : आप धर्मान्तरण के मुद्दे पर राष्ट्रीय बहस का क्यों विरोध कर रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आप तो वही डिबेट करना चाहते है जो वाजपेयीजी चाहते है, अगर वह डिबेट करवाना है और हम उसके लिए तैयार है तो उस डिबेट से इन सब प्रश्नो का उत्तर दिया जा सकता है। सवाल वह नहीं है, सवाल यह है कि जो कुछ हुआ है वह संविधान के विपरीत हुआ है।

Question : Will you demand for imposition of President rule in Gujarat?

Shri A. S.: The Congress President herself has said that if this thing don't stop then we would also not hesitate to demand imposition of President rule in Gujrat and action under and article 355 we have already demanded.

प्रश्न : क्या संघ परिवार ने अब ईसाइयों के विरुद्ध अभियान छेड़ा है।

श्री अर्जुनसिंह: स्टेटमेंट में काँग्रेस पार्टी ने मुख्य रूप से गुजरात की जो स्थिति है, उस पर चिन्ता व्यक्त करते हुए ये संकेत दिया है कि संघ परिवार और उसके जो सदस्य हैं, उन लोगों ने पहले तो मुस्लिम माइनॉरिटी को टारगेट किया, उसकी परिणति देश को भुगतनी पड़ी। बाबरी मस्जिद का गिरना और उसके फलस्वरूप देश में हिंसा और अव्यवस्था फैली। उनका हरदम यह उद्देश्य रहता है कि साम्प्रदायिक सद्भाव डिस्टर्ब किया जाए, अराजकता फैले, धार्मिक उन्माद फैले और उससे फिर ये राजनीतिक लाभ लें। जो कुछ हद तक इन्होंने लिया भी है। अब बारी क्रिश्चियन माइनॉरिटिज़ की है। उनके खिलाफ ये वातावरण बनाकर आरोप प्रत्यारोप किए जा रहे हैं कि जैसे हिन्दू धर्म को उनके कनवर्शन की वजह से खतरा पैदा हो गया है। कही-कहीं यह भी संकेत दिया जा रहा है कि काँग्रेस पार्टी इसमें उनकी मदद कर रही है। इससे बढ़कर हास्यास्पद चीज़ कोई और नहीं हो सकती है। काँग्रेस पार्टी का इतिहास ही इस बात का गवाह है कि भारत के हर धर्म को मानने वाले, हर जाति के, हर क्षेत्र के लोगों ने इस महान् संस्था का नेतृत्व किया है 115 साल के इतिहास में। इसलिए यह सवाल तो उठता ही नहीं। हम यह उम्मीद करते थे कि जब प्रधान मंत्री गुजरात गए और सब जगह वे बयान देते रहे कि मैं सेक्युलरिज्म की बहुत रक्षा करने वाला हूँ और अब पुजारी बन गया हूँ और मेरी प्रतिबद्धता है तो हम यह उम्मीद करते थे कि वहाँ जाकर जो कुछ भी वे देखें और जो कुछ भी वह कहें, उससे यह बात परिलक्षित हो कि वे सचमुच में सबको एक नज़र से देखकर जो सही चीज है वह कहना चाहिए। लेकिन उनके वहाँ के दिए हुए वक्तव्य से यह स्पष्ट हो गया कि वह एकतरफा बात करना चाहते हैं। उन्होंने वहाँ के स्थानीय प्रशासन को पूरी तरह से दोषमुक्त कर दिया और उल्टे देश के अंदर एक डिबेट की माँग कर दी किस बात पर, कनवर्शन पर, धर्म परिवर्तन पर, ये वही विषय हैं जिसको संघ परिवार आरोप के रूप में बराबर कहता आ रहा है तो अत्याचार की घटनाएँ वह सब तो अलग रह गई, उसमें सब क्षेत्र मुक्त हैं। अगर नेशनल डिबेट होना है तो जो चार्ज है संघ परिवार का उस पर हो, हम लोगों को इस पर सख्त एतराज है, हम ये चाहते हैं कि इस विषय को इस प्रकार से सुलझाया जाए ताकि देश में शांति सद्भाव कायम रहे। अब उसका एक रास्ता है कि सरकार कोई ऐसा रास्ता निकालने की कोशिश करे कि सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से इस समस्या का समाधान किया जाए। अगर सरकार इस तरफ कहना चाहती है तो फिर हम लोग भी उसमें कुछ स्पष्ट सुझाव देने को तैयार हैं। मैं यही कह रहा हूँ कि यह तो इस पर निर्भर करता है कि सरकार इसके लिए तैयार है कि नहीं, अगर उनकी मंशा ही नहीं है तो फिर मैं क्या कह सकता हूँ।

प्रश्न : लेकिन जब वहाँ केन्द्र सरकार, राज्य सरकार को एलेज्ड कर चुकी है तो क्या राष्ट्रपति शासन लगाने की काँग्रेस माँग नहीं कर सकती?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस ने आर्टिकल 355 के बारे में पहले ही कहा है जो आर्टिकल 355 संविधान का किस प्रदेश

में जो परिस्थिति निर्मित हो उसके बारे में जानकारी लेने का है और एक प्रकार से ध्यान आकर्षित करने का है कि जो चीजें गलत हो रही है, कैसे वह किया जाए, वह तो हम कह चुके हैं। काँग्रेस अध्यक्ष ने कह दिया है कि यदि वहाँ की स्थिति में सुधार नहीं दिखा और बिगड़ने लगी तो हम 356 की भी माँग करेंगे।

Question : A number of ministes from Orissa, has said that law and order situation is bad there, what do you think?

Shri A. S.: You see, if you are aware of the Congress party is functioning any person, any Congress worker from any State has always had the right to bring his views to the notice of the leadership and agitate on a point. But what actually will be done is not something which demanded by some people. As I have said in this particular case this allegations came and judical inquiry has been set up. Whatever is the results of that inquiry on that basis action will he taken.

गठबंधन सरकार को समर्थन परिस्थितियों पर निर्भर

10 अप्रैल 1999 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Shri A. S.: I think you have a copy of the statement that has been issued. I don't have to add anything to it accept the information that a combine delegation of the opposition parties is calling on the President at 5.30 P.M. today. requesting him to kindly direct Vajpayee Govt. to seek a vote of confidence in the Lok Sabha. On the precedence as said by him in the political scenario that developed during the last days of the Prime Ministership of Shri Dev Goda. Since this request will be made and it will then depend on the discretion of the President as to what he would like to do. I would not say anything other to that.

Question : Which parties are going with you to meet the President?

Shri A. S.: The left parties are going RJD and Shri Mulayam Singhji they have reached and this is at the moment that is the line up Shri Dev Godaji is going AIADMK is not going because they have just withdrawn and where that position is clear so this is the only addition to the statement.

Question : In case your request is not accepted by the President, are you going to move noconfidence motion?

Shri A. S.: I have just precisely said that, that since what happens after this request, the discretion of the President. I would not like to make any comment of it.

Question : Why you are not demanding resignation of Vajpayeeji? If Vajpayee's Govt. falls are you ready to form the government?

Shri A. S.: We have not sought the resignation of Shri Vajpayee Govt. because we don't want to leave this country at the mercy of a communal, and corrupt, people and therefore, so

obviously the next step will have to be taken and as the situation develops the Congress has already gone on record that in this contingency which has a reason it will carry out its constitutional responsibility.

Question : Congress has said previously that they would not form coalition government. Your comment on this?

Shri A. S.: I would like to remind you this question has a reason from the Pachmarhi declaration. The Panchmarhi declaration has not said that the Congress will never form a coalition Govt. and if we kindly take the trouble of reading it. You will be clear that the Congress has said in that declaration that a question of forming a coalition Govt. depends on the circumstances.

प्रश्न : गठबंधन सरकार को काँग्रेस लीड करेगी या और कोई पार्टी को आप सरकार बनाने देंगे और समर्थन करेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह विषय सबके बीच में चर्चा के द्वारा तय होगा।

प्रश्न : जो स्थिति उत्पन्न हुई है राष्ट्रपति के पास सभी दल मिलने जा रहे हैं तो अभी राष्ट्रपति से क्या माँग करने जा रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अभी तो केवल इतनी ही माँग करने जा रहे हैं कि जो स्थिति देवगौड़ाजी के समय थी, आज भी वैसी ही स्थिति है, और जैसा उन्होंने उस वक्त निर्णय लिया था वोट ऑफ कान्फडेंस के निर्देश के लिए वैसा ही निर्णय वे अभी भी लें।

प्रश्न : जब राष्ट्रपति के पास पूरा विपक्ष जाएगा कि सरकार को रहने का कोई अर्थ नहीं है तो क्या कोई वैकल्पिक सरकार की व्यवस्था की बात भी आपको उनसे बतानी पड़ेगी कि कोई वैकल्पिक सरकार बनाई जाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: इस विषय पर आज तो कोई चर्चा नहीं होगी क्योंकि यह सवाल उठेगा उनके निर्णय के बाद और उनके निर्णय के बारे में हम कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते।

प्रश्न : कुछ पार्टियाँ काँग्रेस के खिलाफ भी रही हैं तो काँग्रेस सब पार्टियों को एक साथ लेकर केसे चल पाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो आप पूर्व धारणा के आधार पर कहते हैं बिना किसी पूर्वाग्रह के देखें तो जितनी भी पार्टियाँ हैं, ये सब इस बात से सहमत हैं कि यह सरकार देश के हित का संवर्धन नहीं कर पाएगी और इसलिए देश हित पहले आता है, आपस की दुश्मनी जोड़ तोड़ बीच में नहीं आती।

हम सरकार को 'टॉपल' नहीं करेंगे

16 अप्रैल 1999 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Question : How can you say that the motion of confidence will be defeated?

Shri A. S.: All the fears that are being voiced regarding the success of the effort of the opposi-

tion to defeat the motion of confidence are misplaced and misconceived. This is not going to pass of that we are absolutely certain.

Question : How many members will oppose the vote of confidence?

Shri A. S.: Well, I am sure we are not discussing the numbers here because it is the majority and minority in the vote that counts and we are certainly not involved in any exercise like the one, we have witnessed regarding Chotola but we are confident that on principle and specific issues the majority will be against the motion of confidence.

Question : Who will be behind the Congress party or Jayalalita is behind.....

Shri A. S.: Yes, it will be a numbers game but it is necessary for me to spell out all the numbers for and against. Yes, let them spell out let me see the vote tomorrow.

प्रश्न : पहले से जो बीजेपी के खिलाफ पार्टियाँ रहीं वह भी आज बीजेपी के साथ खड़ी हैं, ऐसे में आपका दावा कहाँ तक साबित हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसे में जो परिस्थिति है वह परिस्थिति एक बनावटी परिस्थिति है और मेरी जानकारी के मुताबिक किसी भी प्रकार से मोशन ऑफ कान्फिडेंस को बहुमत नहीं मिलेगा लेकिन इससे ज्यादा मैं इस समय इसको बढ़ा चढ़ाकर कहना नहीं चाहता क्योंकि कुछ चीजें तो under constant review of the parties हैं

Question : Will Jayalalita support the congress and the left parties?

Shri A. S.: Well, somebody told me after this get together with Jayalalita had become alone that the present BJP set up has collapsed so I should say maintain that, that the relationship with Jayalalita has nothing to do with this.

प्रश्न : क्या आप सरकार को टॉपल करना चाहते है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस ने शुरू से ही स्पष्ट किया था और स्टेटमेंट में भी स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि हमने सरकार को टॉपल करने की कोई कोशिश किसी स्थिति में नहीं की। जब अपने कारनामों से सरकार इस परिस्थिति में पहुँच गई जहाँ उनका अल्पमत हो गया तो अल्पमत हो जाने के बाद यह मोशन ऑफ कॉनफिडेन्स लोकसभा में आया है। लोकसभा के लिए यह अवसर है कि वे इस पर निर्णय करे और उस निर्णय की प्रक्रिया में हमारा स्पष्ट मत है कि कल की वोटिंग स्पष्ट कर देगी कि इस मोशन को स्पोर्ट मेजॉरिटी का नहीं है। वैकल्पिक सरकार की बात स्पष्ट है काँग्रेस ने शुरू से कहा है कि उन परिस्थितियों में जब ऐसी संभावना नजर आएगी तो काँग्रेस initiative लेगी। मैं समझता हूँ कि मैं काम्पिटेंट नहीं हूँ उन कारणों में जाने के लिए जिनकी वजह से चौटाला ने अपनी राय बदली।

प्रश्न : क्या जयललिता ने समर्थन वापस लेकर गलती की?

श्री अर्जुनसिंह: यह समर्थन वापस लेने का उनका अपना विवेक था उसमें न काँग्रेस ने उनको अपनी ओर प्रोत्साहित किया और न उस बारे में उनसे कोई चर्चा हुई। अब उन्होंने समर्थन वापस लिया, उन्होंने बात बताई है कि किस लिए लिया और यह भी स्पष्ट है कि हम सब का अनुभव पिछले एक साल का यही है इस सरकार को चलते रहने देना देश हित में ठीक नहीं है और इसीलिए जो फैसला कल होगा

वह उसी संदर्भ में होगा।

प्रश्न : बीजेपी कह रही है कि काँग्रेस देश को मध्यावधि चुनाव की ओर ले जाना चाहती है?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस बिल्कुल मध्यावधि चुनाव की ओर नहीं ले जाना चाहती। मध्यावधि चुनाव काँग्रेस की प्रायरिटी नहीं है। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं है कि इस सरकार को हम इसी तरह से चलते रहने दें। सरकार गिरेगी वैकल्पिक सरकार बनेगी, यह परिस्थिति आपके सामने स्पष्ट आएगी।

Question : Is there any preconditon laid by other parties to give support to Congress to form the government?

Shri A. S.: You see, there is no mention of any pre-condition, may I read it out again, these are the words, these are not views besides that coalition will be considered only when absolutely necessary. This is no condition. When it becomes necessary, it will be considered and that too on the basis of agreed programmes this is no condition and will not weaken the party or compromise its basic ideology. I mean which party will compromise its basic ideology.

Question : Your national agenda?

Shri A. S.: There won't be a national agenda because national agenda Shri Vajpayeeji and company have decided to abandon their manifestoes. We will not abandon our manifesto neither will be asked other parties to abandon their menifestoes, we will prepare agreed programme and as far as the national agenda is concerned when they claim a mandate. It is not on the basis of national agenda whatever nember of seats they got, certainly not a mandate but they won some seats, those seats who has won on issues which have nothing to do with the agenda.

Government is in the making

23 अप्रैल 1999 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Question : What are the developments in the fast changing political scenario of the country?

Shri A. S.: In the fast changing political scenario one picture is constant that the secular parties are quite clear that do not have to allow or we should not rather allow the resurgence of the communal forces in the country that is the underlying factor in the attitudes of all the secular parties. The comments and opinion expressed by various leaders of these secular parties as I see them, are quite clear on this point. The Congress President is meeting with President of India at 7.30 P.M. this evening to discuss with him aspects of the responsibility given to her to explore the possibility of forming a Govt. Now with regards to that part it will not be proper for me, to prevent whatever discussion is going to take place and express any opponent honour. I am certain however that this

underlying sentiment which I have just expressed which relates to all the secular parties will ultimately being a deciding factor and the communal forces will not be allowed at the stage of come back. I think this is all I can say at the moment.

Question : Are you talking with Mulayam Singh Yadav?

Shri A. S.: This is not a question of talking. They are not pursued with whom we have either lost touch or we have decided to break relations so talks are going on with everyone why only Shri Mulayam Singhji.

Question : What Sonia Gandhi will discuss with the President of India?

Shri A. S.: Well, that is the subject matter on which the Congress President will discuss the President of India as I said the task that the President of India has assigned to her is exploring the possibility of establishing a viable Govt. I hope you saw the press communique that day. So that is something which will be discussed.

प्रश्न : आर.एम.पी. फारवर्ड ब्लाक, मुलायमसिंह, सबके जो आज स्टेण्ड हैं, उसको देखते हुए क्या काँग्रेस 272 का फिगर दे पाएगी प्रेसिडेंट को?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, फिगर की बात तो मैं यहाँ कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि इसका फैसला हाउस के फ्लोर पर होता है। लेकिन प्रेसीडेंट किसी तरह से इस पर सेटिसफाई होना चाहते हैं तो That is entirely his right, in his discretion and the Congress President will try to satisfy the President.

Question : Your Party President told us today that she will be able to make 272 MPs, 245 claim to the Govt. today it seems the claim as following flat where did you go wrong in the strategy did you not discuss all these .....

Shri A. S.: We have not gone wrong on our strategy and I am saying again the clear intention an effort of the Congress party from day one was to consolidate the secular forces. We were able to do it at the time when the confidence vote was sought by the BJP and everyone fails there it will be carried. We said that it would not be situation as is the same today that we are quite confident that the unity of the secular forces in the country will be maintained.

Question : Some secular parties were not favouring Congress party?

Shri A. S.: If any of the secular parties have decided to fall out of line form the line up of the secular forces. It is for them to decide we have nothing to say on that. The Congress party does not desire to take any step or stand, which will hamper in the consolidation of secular forces.

प्रश्न : क्या सोनिया गाँधी ने श्री चन्द्रशेखर से मुलाकात की है?

श्री अर्जुनसिंह: चन्द्रशेखर और सोनियाजी से मुलाकात हुई है उनके बीच में बात क्या हुई यह मैं नहीं जानता।

Question : What is your opinion on Shri Mulayam Singh's comment?

Shri A. S.: Well, it is very easy to react because people sometimes can't content themselves I

would prefer to keep quite and maintain, restrain, because we have the highest regard and respect for Shri Mulayam Singh.

Question : Do you agree that congress party has played pivotal role to destablise the country?

Shri A. S.: As I said the other day past 8 or 9 months continuous barrage of questions, statements the Congress party should take initiative why are not coming forward to through out the BJP Govt. We stood our ground that the Congress party will not play destablize role in the country. We also said that in case of inherent contradiction the Govt. at the centre falls, which mean it, gets into a minority the party would play its constitutional role. That is the situation, which obtain after Jayalalita withdrew her support and in those circumstances the Congress party play its role as it felt constitutionally to be right.

Question : Is there any possibility of horse trading?

Shri A. S.: Well, we are not counting many horse trading or anything like that but I said in the very beginning the underlying sentiment in Parliament and the country is that all secular forces, parties must combine to prevent the resurgence of communal factors.

Question : Has congress deviate from Pachmari declaration?

Shri A. S.: You see the constitution of the party and the Pachmarhi declaration there was sought to be inter-mineral and then inference don't from it. That is why, it was essential for me to say that coalition Govt. is not something which is beyond the preview of Congress as line of thinking because the Pachmarhi declaration itself provided for it. Now at some point of time the Congress President felt that is not necessary. Now that is why I am saying it is.

प्रश्न : देश में फिर से चुनाव कराने की माँग के बारे में आपके क्या विचार हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, चुनाव के मामले में तो दो मुँही बातें भाजपा कर रही है। वोट में हारने के तुरंत बाद वाजपेयी ने कहा कि अब चुनाव होगा, उसके पहले भी कह रहे थे कि वोट हमारे खिलाफ देंगे तो चुनाव होगा और बाद में भी चुनाव की बातें कर रहे हैं। अब मैंने सुना कि आज थोड़ा नजरिया बदला है, काँग्रेस ने तब कहा था और आज भी कह रही है कि हमको चुनाव नहीं होने देना है, वह भी एक विषय है जिसको हम ध्यान में रखेंगे।

राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप

27 अप्रैल 1999 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

Friends, I have no statement to make today. I have no particular statement to make today and like to answer to questions do you think necessary.

Somebody has informed me that a pamphlet has been distributed in the Press Conference of Shri Mulayam Singhji which is unsigned pamphlet, containing the lot of things about me. If Mulayam

Singhji is interested in a public debate on the life and times of Arjun Singh and the life and times of Shri Mulayam Singh. I am open for it but one question, which ought to have been answered, has not been answered, which was specifically mentioned by us yesterday, that question relates to the reasons and circumstances which made Shri Mulayam Singh change his mind supporting a Congress. Govt as an alternative to the Vajpayee Govt. which he had been campaigning for in the last 7 or 8 months that question has not been addressed by him still remains unanswered.. I think that is the question which politically needs to be answered.

Question : Shri Mulayam Singhji had repeated many times the reasons. Have you not read them?

Shri A. S.: Well, I don't know what can and can not be repeated, the point is those incidence have been gone over what you many call, a tooth calm and have been well documented during that period that is why I am saying. If you want to open debate on the life and times of Mulayam Singh and the life and times of Arjun Singh I am open for it.

प्रश्न : अखबारों में जो खबर आई है कि जो मुलायम सिंह ने डिसिज़न लिया है उसके पीछे चन्द्रशेखजी की भी भूमिका है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो खुद ही कह रहा हूँ कि जो असली मुद्दा और असली सवाल है उसका उत्तर मुलायम सिंहजी क्यों नहीं दे रहे हैं कि वे कौन से कारण है जिसकी वजह से जो वे 8-9 महीने से माँग करते आ रहे हैं और जब वह घटना घटित हुई तब उन्होंने इरादा अपना बदल दिया उसके पीछे क्या कारण है, ये राष्ट्र जानना चाहेगा।

प्रश्न : मुलायम सिंहजी ने आरोप लगाया है कि आप नागपुर के निर्देश पर चलते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: इतना हास्यास्पद प्रश्न मुलायम सिंहजी को इस समय याद आ रहे हैं उसका तो एक ही निष्कर्ष मैं निकालता हूँ कि जो नहीं होना चाहिए, वह संतुलन खो चुके हैं।

प्रश्न : समाचार पत्रों में विज्ञापन छपा है जिसमें मुलायम सिंहजी को छोड़कर सभी की प्रतिक्रिया छपी है।

श्री अर्जुनसिंह: यह पर्याप्त संकेत है उस अन्दरूनी गठबंधन का।

प्रश्न : कॉंग्रेस की आगे क्या रणनीति होगी, आप आगे क्या सोच रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, रणनीति का मामला पब्लिक डिबेट का तो नहीं हो सकता है, लेकिन 10 झूठ मिलकर एक सच नहीं बन सकते हैं। ये फिलासफी आर.एस.एस. की और बी.जे.पी. की हरदम रही है। हम लोग समूचे देश में इस बात को स्पष्ट करेंगे कि किन परिस्थितियों की वजह से ये नौबत आई। काफी डिटेल स्टेटमेंट हमने इशु किया है। अब देश के अलग-अलग भागों में भी इस बात का खुलासा किया जाएगा और रणनीति जो है वह वर्किंग कमेटी बनाएगी, इतना विश्वास मै आपको दिला सकता हूँ। ये रणनीति जिसको कहते हैं कि निचले स्तर पर किसी प्रकार की गतिविधियों की नहीं होगी। सभी मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट राजनीतिक रूप में देश की जनता को कॉंग्रेस का समर्थन क्यों करना चाहिए उसको उजागर करेगी।

प्रश्न : जार्ज फर्नांडीज़ के द्वारा कहा गया है कि जून में चुनाव हुए तो राष्ट्रहित में होगा और उसके बाद

हुए तो राष्ट्रहित में नहीं होंगे, आपकी क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: जार्ज फर्नांडीज़ तो यह समझते हैं कि जो उनके मुखारबिन्द से निकल जाए वह राष्ट्रहित में है और जो किसी और के द्वारा कहा जाए वह देशद्रोही है। इस तर्क को मैं हास्यास्पद मानता हूँ और इसको कोई कमेन्ट करने के लायक नहीं मानता हूँ।

Question : Will you abide by the decision of the Election Commission?

Shri A. S.: Yes, we have said yesterday very clearly that this is a decision ultimately in the present circumstances for the election commission and the Hon'ble President whatever decision is taken we are O.K.

Question : Will congress make alliance with different parties before the election?

Shri A. S.: Where I think an unequal alliance takes place either in haste or in compulsion the Congress party is not going to that route at all. It will be a well considered decision taking everything into account.

Question : Who blocked your way to form a secular government?

Shri A. S.: They say that politics is for thick skin people. But there is a limit to everthing those people who deliberately and without sufficient reason help the B.J.P. by blocking the alternative secular Govt. I don't think Congress can have anything to do it.

Question : Is it a failure on your part to compromise with other political parties of alliance?

Shri A. S.: Well, I won't say that it was our failure, it was certainly totally unprotectable position that came up at the certain point of time, when we had never even imaging about it because of his continuous interaction with us till that moment. That is a position.

Sonia Gandhi is not a foreigner

28 अप्रैल 1999 इकानामिक टाइम्स के श्री सूरज थापा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

Question : Congress inability to form an alternative government at the centre, what's gamble?

Shri A. S.: Well, I won't say the word "gamble" because the anatomy of this decision must to be understood clearly, We were not at all in the toppling game from the beginning. On this account some of the opposition groups particularly Mr. Mulayam Singh Yadav hereald all kinds of asccusations and put all kinds of passions that we should move and do it. Congress party, and Soniaji had taken a clear cut decision that we will play the role of a constructive opposition and only in the event of the Govt. collapsing because of its own contradiction, we shall play our constitutional role.

Question : You say the Congress would not like to talking game but before Jayalaita had even withdrawal, tea party meeting and secondly there was telephone conversation which you, yourself in the Press meeting at the day before support was withdrawal to the

Govt. so doesn't it mean that the Congress was also .....

Shri A. S.: No-no, tea party was attended that was not a tea party to encourage anything and if a tea party Soniaji attends and has the effect of this kind of political hurricane what can she do but no conversation took place between Jayalalita and anyone of us till she had withdrawn only after she wanted to perhaps communicate but I think it was made very clear to her that we are not going to get interested in anything so this is one part. After her withdrawal, factually the Govt. came to minority and in that process the second constitutional scene had to start. The President directed Vajpayeeji to seek a vote of confidence. We became active in the Parlimentary thing after the Govt. was directed to seek a vote of confidence. The background is that Shri Mulayam Singh, Shri Lalu Yadavji, had all the time being saying, Congress party position was clear we did not want to read in what they call the coalition coils, or the coils of the coalition, Insist many parties who are prepared to support at this stage and not beyond the stage. For example, TMC was prepared to vote out the BJP Govt. but if AIADMK became a partner in the coalition they were not prepared to support it, similar stands have taken by other also. We are aware of it. Keeping all this in view, it was considered appropriate but the Govt. should be, that if a congress Govt. and all these people should support..... and this there was total agreement on the part of Mulayam Singh Yadav, Hari Krishanji Surgeet who was a witness to it. It is they who actually to finalise it and then the Congress party agreed to it.

Question : So there was no assurance from Samajvadi party to the Congress as such?

Shri A. S.: Well, we never presumed that he would be going to right about turn at the last moment and then the other thing is, that had been such an intention on his part. He should have given one side assurance is coming from him, he is not telling us anything. I never said this on the day we met the President on the 16th, when the Govt. had fallen. I mean the support had withdrawn and we had gone to seek the President's intervention for a vote of confidence that day he said before the media there is no problem. Once this Govt. falls in within one hour we will be following position, where could we suspect and why should we suspect, so this is the scenario and afterwards what went wrong with him and how he came to this conclusion that only he can explain, I can't.

Question : Coming to the congress, you say that there was so much of deferences between other TMC & AIADMK excetra so the conclusion in Congress was that all the combination would only lead towards the Congress minority Govt. supported from outside by the other parties this was the conclusion. Why did the Congress not come out earlier even before vote of confidence?

Shri A. S.: How they come out before many things you assess TMC joined very late, the left view about Jayalalita joined in the coalition was non Jayalalitaji also ultimately saw the

wisdom of this and agreed for the minority Govt. These are the things which happened in quick succession I mean if we had been in the toppling game, two months earlier we had settled everything.

Question : There were two overlying consideration between as mentioned one was that avoiding a mid-term poll and another was setting up of secular alternative formation. So why not support a third front even if it meant?

Shri A. S.: You see, that in the last moment, till the last moment almost we were told by third front that Jyotibasu he is not available I hope you also remenbered that scenario and we could not be thought of any other person leading the third front. In the mean time the Congress Working Committee held to review everything and the working committee unanimously felt that looking to our past experience on two occasions where we supported the Govt. from the outside and the treatment meeted out to the Congress was not doing. We should not now again fall into it. Mulayam Singh was the defence Minister of this country for nearly two years on the basis of the support that Congress party had lent to the set up when he was a minister it was alright for the Congress because he was the minister. Congress is good. Now for some inexpressibly reason which we can not know was being said I don't want to go into that, Congress is now his enemy number one and till 18th was not his enemy number one. That's all right, what's happened, is happened. He never wanted that why we always thought that once a Govt. is set up the question of mid-term poll, will not be there.

Question : But this proposal from the left, about Mr. Jyotibasu becoming the Prime Minister, Mr. Somnath Chatterji is on record we have got Dr. Manmohan Singh who accepted that one day before on Saturdy, Sunday was your CWC, on Saturday Mr. Inderjeet Gupta sounded about the idea informally to Dr. Manmohan Singh which he said, he did raise in the CWC also?

Shri A. S.: Well, he might have raised. I don't know members who raised what in the CWC, Mr. Manmohan Singh is part of the CWC and the decision of the CWC was unanimous.

Question : Coming to Sonia Gandhi she has so far enjoyed an image of you know, not being for power but suddenly the party had pushed her to the front so do you think her image may have suffered, USP may have suffered?

Shri A. S.: I think she stuck in the commitment she made to the people not talking to the BJP Govt. to play the constructive opposition role when the Govt. has collapsed on its own, she didn't encourage anyone to do it. At that point of time she had said that we will play our constitutional role, what is the constitutional role of an opposition? To vote for the Govt. can anybody visualize that any opposition anywhere in the world would vote for the Govt. and still remain an opposition.

Question : I just want to go back effort this Congress decision to annource that it had the support of 272, was it a mistake on the part of Sonia Gandhi?

Shri A. S.: I think the Congress President has herself clarified it this is again an example of transparency and sense of absolutely correctness, would it not have been correct to presume that the person who voted to remove, Vajpayee would also support and ulternative Govt. which will replace him and she didn't hide when she could not get to that figure, other politician would have never told the figure. They have said we are trying. We are trying and all would have been guessing she was candid enough to say that I have been able to get the support from so many and I am still trying.

Question : There was also another view in the Congress that it should not stake claim on the basis of the second largest Party?

Shri A. S.: That was the constitutional basis that remains the constitutional basis the question since the President has taken a step in that direction exactly when we have to go along with there.

Question : Was it a mistake?

Shri A. S.: Not a question of what is a mistake you see having stated the constitutional position that was stated at the very first instance. After that if the President wants to be satisfied in some other way how can give any political party reference.

Question : Your own role in this political crisis, recent political crisis, raised you as, was the impression, a chief strategist in this whole exercise?

Shri A. S.: Well, I was not the chief strategist and neither did I have a role over and above others I certainly did not wait for an invitation from the Congress President to do what I could do.

Question : But there was overlying impression in the Congress party you along with so gang of four....

Shri A. S.: Well, the gang of four was coin for China which is thousands of km away, the entire political culture and the entire style of functioning where is the different. All working committee members are involved some were given specific assignments. Now I am not saying who was given what assignment and how for they succeeded or failed, was everyone trying his best. But to say that only I was there, is absolutely not only a travesty of truth, it is motivated campaign for what reason I don't know.

Question : As for as the CWC is concerned there were also complaints that the CWC was never consulted as such and it just met for 20 minutes also on the first occasion where you passed resolution authorising Sonia and then for the second time you met after everything at field?

Shri A. S.: In between what had to be done, individual members of CWC were meeting continuously the Congress President and they were being assigned roles I can't say all that because

it's not proper to say so that the working committee was not consulted. between is not correct.

Question : But it was select group only of Working Committee.....

Shri A. S.: Everyone has to, can do something somewhere and you can't sit down all together and discuss everything that is happening whoever could do anthing, anywhere, was given a task some people consulted to Congress President on their own, talk to her, take suggestions, they were acted upon.

Question : I am just reflecting that many of the party MP's have given this apprehension that may be, you will get a personal agenda of your own.....

Shri A. S.: I don't have a personal agenda where the party agenda is concerned that party and the leader of the party their agenda is my agenda. There are some people who have different agenda and have acted upon it.

Question : Who are these?

Shri A. S.: Whoever they may be, I am not one of them.

Question : Take an example, besides this party failure to keep Chotala together on the secular fans.....

Shri A. S.: So, I am responsible further?

Question : They are saying that since you are, their impression is that, you are the chief strategist?

Shri A. S.: That is not correct that's what I am saying. If you want to build up a campaign against someone. You can always go that way. Chotala was never the person whom I was supposed to cultivate or keep in where he was I was not there, somebody else was there. But that I can't say because that would be breaching the party discipline.

काँग्रेस को पुनः सत्ता में आने की आशा

8 मई 1999 नवभारत भोपाल के संवाददाता श्री अनुज गुप्ता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

प्रश्न : लोक सभा भंग होने पर आपको कैसा महसूस हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: अब इसमें महसूस होने की तो बात नहीं है, किसी को ये बात पसंद नहीं आई कि फिर से मध्यावधि चुनाव हो रहे है। और कॉंग्रेस पार्टी ने तो हरचंद कोशिश भी की कि चुनाव न हो, लेकिन अब कुछ लोगों ने हट कर लिया चाहे कुछ भी हो, ऐसा हम करेंगे।

प्रश्न : कुछ लोग याने मुलायम सिंह?

श्री अर्जुनसिंह: हॉं मुलायम सिंह। देखिए, चाहे अटकल बाजी कोई करता रहे, मै तो करना नहीं चाहता। अभी तक किसी को वो सही-सही खुद ही नहीं बता सके, और इस बारे में तो उनके ही द्वारा सच्ची जानकारी मिलेगी। आज मिले, कल मिले, परसों मिले, अभी तक जो बातें कही गई बिल्कुल सही है।

प्रश्न : जिस तरह से लोकसभा भंग हुई, उसका देश की राजनीति पर, अभी की राजनीति पर, और आगे

की राजनीति पर, क्या असर आप मानते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः मेरा ऐसा मानना है कि शायद, अब ये खिचड़ी सरकारों के बारे में मतदाताओं के मन में कुछ विचार विमर्श गहराई से हो रहे है, और इसका क्या परिणाम होगा, ये तो उनके फैसले से ही मालूम होगा। लेकिन अभी यह विचार का विषय है।

प्रश्न : खिचड़ी सरकारे तो इसीलिए आई हैं, कि काँग्रेस लगातार कमजोर होते चली गई।

श्री अर्जुनसिंहः कुछ हद तक सही है। उसमें कोई बुराई थोड़ी है।

प्रश्न : क्या आपको लगता है कि पिछले एक साल से जबसे मिसेस गाँधी पार्टी अध्यक्ष बनी हैं तबसे क्या पार्टी ठीक तरह से काम में लग पाई है?

श्री अर्जुनसिंहः पूरी तरह से तो नहीं लेकिन काफी हद तक उस दिशा में सोनिया जी ने कोशिश की है। उसके परिणाम भी निकले। पिछले विधानसभा चुनाव में, लेकिन समय बहुत ही कम था जितना भी जो कुछ भी इस रूप में हो सका इसका परिणाम निकलता है। अब लोकसभा के चुनाव में काफी फर्क पड़ेगा।

प्रश्न : ये काफी फर्क क्या काँग्रेस की सरकार को वापस ला पाएगी?

श्री अर्जुनसिंहः सम्भावना तो पूरी है। लेकिन अंततः मतदाताओं का ही फैसला होगा सम्भावना तो पूरी है।

प्रश्न : आपका ये विश्वास किन बिन्दुओं पर टिका हुआ है?

श्री अर्जुनसिंहः सबसे ज्यादा तो मतदाता की संजीदगी पर टिका है। ये बात कोई पहली दफे इस दशे के मतदाताओं ने प्रकट की हो ऐसी बात नहीं है। पहले भी की है। कठिनाइयों के बावजूद काँग्रेस पार्टी में एकता का प्रभाव ज्यादा ठोस तरीके से हुआ है। जो काँग्रेस पार्टी ने विचार और कार्य के लिए बिन्दु बनाए वो आम लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा वे सोचते हैं। इसके लक्षण भी दिखाई देते हैं। महिलाओं के संबंध में, अपराधीकरण के संबंध में गलतिओं के समाधान के संबंध में धर्म निरपेक्षता के मान्य सिद्धांतो को सुरक्षित करना, उनको स्थापित करना, उनको ध्यान में रखकर आचरण करना। ये सब चीजे हैं जिससे जनता में विश्वास बनता है।

प्रश्न : आपने महिलाओं की बात कही। महिलाओं को जब संगठन में आरक्षण दिया गया तो अब उनको ये उम्मीद है कि लोकसभा चुनाव में भी उनको एक तिहाई सीटों पर खड़ा किया जा सकता है, क्या उनको ये धारणा बना लेनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंहः अब एक तिहाई एक दम से न भी हो, लेकिन आज जो है, उससे कहीं ज्यादा होगी, इसमें तो कोई संदेह नहीं। और एक तिहाई एक दम से सम्भव हो जाए ये मैं नहीं कह सकता। लेकिन अगर इस दिशा में बढ़ने का संकल्प ही दिख जाए तो भी कोई छोटी बात नहीं।

प्रश्न : क्या ये फैसला पार्टी में हुआ है, कि जो पिछली भंग लोक सभा के जो सांसद थे उनको फिर से खड़ा किया जाएगा?

श्री अर्जुनसिंहः ऐसा किसी व्यापक निर्णय की मुझे जानकारी नहीं है। सामान्यतः कहीं कोई और बात होगी, क्योंकि अभी इस विषय पर बैठकर कोई निर्णय तो हुआ नहीं, काँग्रेस अध्यक्ष के लेबल पर तो हरदम हो ही सकता है। वहाँ ये धारणा है कि सामान्यतः जो लोग अभी चुनकर आए है, वो उसके विपरीत के वजह से बात नहीं है, कोई कारण नहीं के उनको न दिया जाए।

प्रश्न : एक धारणा बन रही है कि ये लोक सभा चुनाव एक तरीके से अटल बिहारी वाजपेयी और श्रीमती

सोनिया गाँधी के बीच जनमत संग्रह के रूप में उभर कर आएगा?

श्री अर्जुनसिंह: नही-नहीं ये बिल्कुल गलत है।, और न ऐसा चुनाव काँग्रेस के तरफ से करवाने का इरादा है। काँग्रेस नेतृत्व को एक पहचान देती है, और सोनिया जी के नेतृत्व को पहचान मिली। लेकिन वो काँग्रेस के लिए स्थान पर वो मानी जाए, ऐसा तो कभी काँग्रेस ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिए नहीं किया, आज करने का तो सवाल ही नहीं है। ये बात सही है कि सोनिया जी के नेतृत्व में पहचान उनके कृतित्व से मिली है। उसका फायदा काँग्रेस को मिल ही रहा है। अब वाजपेयी जी का तो कोई कृतित्व का कोई सवाल ही नहीं है, वो तो गठजोड़ है। अब गठजोड़ में जो उससे आगे रहेगा वो नेता है। अब भारतीय जनता पार्टी का जो मेनीफेस्टो हैं, राजनैतिक विचार है, सोच है, वो तो खत्म ही हो गया। ये तो मेनीफेस्टो ही रद्द हो गया।

प्रश्न : अब उनका हिन्दूवाद?

श्री अर्जुनसिंह: जो भी हो हिन्दूवाद भी हो तो मैं क्या कहूँ। भाई भारतीय जनता पार्टी ने तो बहुत लम्बा-चौड़ा अपना भी मेनीफेस्टो बनाया था। आज तो वो मेनीफेस्टो है ही नहीं, उन्हीं ने घोषणा कर दी की वो मेनीफेस्टो हमारा नहीं है। अब नेशनल एजेन्डा ऑफ गवर्नेन्स को इसका मतलब ये हे कि कैसे सरकार बनाकर टिके तो। जब उद्देश्य ही बदल गया तो अब पार्टी की बात कौन करेगा। वो तो ये कह सकते है कि हमारे पास केवल वापपेयी जी हैं। उन्हीं को तौल लो, लेकिन हम लोग ये नहीं कहेंगे कि सोनिया जी है इन्हीं को तौल लो। सोनिया जी ने काँग्रेस के नेतृत्व को उन्होंने एक पहचान दी है। और काँग्रेस का स्थाई जो उसके मूल हैं, आदर्श है, और कार्यक्रम हैं, उनके साथ है। ये फर्क है इसलिए ये वाजपेयी जी वर्सेस सोनिया गाँधी का मैं समझता हूँ कोई आधार ही नहीं है।

प्रश्न : जैसा आपने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने अपना घोषणा पत्र छोड़ दिया है इसको आप जनता के बीच किस रूप में ले जाएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: अब ये तो चुनाव के दौरान उभरकर वैसे ही आएगी, सबसे पहली बात तो यही है कि जब पार्टी इस तरह का आचरण करती है तो वह केवल अपने निहित अवसरवादिता को ही मुखरित करती है। और अवसरवादिता की सीमाएँ जनता को समझना चाहिए। यही कहेंगे और क्या।

प्रश्न : काँग्रेस की ओर से इस बार चुनाव में प्रमुख मुद्दे क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: प्रमुख मुद्दे तो मेनीफेस्टो में ही आएगे। लेकिन मुख्य रूप से तो एक अभी जो हमारा टी.वी. इन्टरव्यू हो रहा था, उसमें यही बात मैने कहीं। देखिए काँग्रेस की तस्वीर और काँग्रेस को लोग क्या समझते है। ये कोई आज कल और परसों के बीच में तो तय हुआ नहीं। एक सौ तेरह साल हो गए काँग्रेस ने बहुत सी चीजें ऐसी की हैं जो इतिहास में दर्ज है। उसने कई गलतियाँ भी की जिनसे नुकसान भी उठाया। तो अब तो संतुलन कायम करके और काँग्रेस की वो तस्वीर सामने आनी चाहिए कि इक्कीसवीं शताब्दी में। जिस प्रकार से स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में बीसवीं शताब्दी में काँग्रेस ने सफलता पाई। एक नए राष्ट्र की परिकल्पना उभरकर सामने आई। पचास साल तो उसी में बिताए। उसको और निखार पैदा करके और कार्यक्रम बनाना है। उसकी रूपरेखा बनानी पड़ेगी सुधारने का इसमें धर्म निरपेक्षता एक मलभूत स्तम्भ होगा। देश के गरीब लोगों के भविष्य का कोई ठोस आधार होगा। कुछ ऐसी समस्याएँ है, जो की राष्ट्रीय समस्याएँ होनी चाहिए। और काँग्रेस ने हर दम उनको

इन्ही रूप में देखा।

प्रश्न : किन बातों को?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो विदेशी मामलों के रूप में जो समस्या आई है, विदेशी नीति और रक्षा नीति। आजादी के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू सर्वमान्य नेता थे। वो जब कोई भी बात रखते थे, सभी उसको स्वीकार करते थे। उस समय तो उन्होंने इन दो क्षेत्रों में सब को साथ में लकर चलने की बात की, और इसीलिए पिछले चालीस-पचास सालों में इन विषयों पर ऐसा कोई गहारा मतभेद देश की पार्टियों के बीच में नहीं था। बीच में अटल बिहारी जी विदेश मंत्री बने। उनको स्मरण दिलाया, मुरारजी देसाई और उनकी सरकार ने उनकी ये घोषणा थी कि जो जवाहरलाल जी की विदेश नीति है वही विदेश नीति सरकार बनाए। उस समय जवाहरलाल नेहरू जी के प्रति इस तरह के भाव व्यक्त करना कोई अनिवार्य कार्य नहीं था। और राजनैतिक रूप से तो बिल्कुल उचित नहीं। तो इस प्रकार से राष्ट्रीय मुद्दों को काँग्रेस ने बनाकर रखने की कोशि की। ये तो दुर्भाग्य की बात है अबकी दफे वाजपेयी जी के आवरण में वे अकेले अपने मालिक रहे नहीं।

प्रश्न : क्या आप इसको ब्यौरे के साथ बताना चाहेंगे किस तरह से विदेश नीति और रक्षा नीति में परिवर्तन आया है?

श्री अर्जुनसिंह: विदेश नीति में अगर सब लोग बैठ के बात करते, विचार विमर्श के बाद आता तो ये स्टेटमेन्ट जो मिस्टर जॉर्ज फर्नांडिस ने दिया, कि चायना हमारा दुश्मन नम्बर एक है। एक तो ये भाषा ही डिप्लोमेसी की भाषा नहीं है। ये तो युद्ध की भाषा है। और आज इस समय चीन से युद्ध करने की कोई परिस्थिति नहीं है। सही ये है कि युद्ध के बाद परिस्थितियों को सुधारने की दिशा में हम बढ़े, और काफी हद तक उस दिशा में आगे बढ़ गए। एशिया में चीन का और भारत का युद्ध कोई उत्साहवर्धक चीज नहीं है। न उसके लिए देखने वाली चीज है। उसको ऐवाइड करने के लिए प्रयास होना ज्यादा स्वाभाविक है। जहाँ तक विदेश नीति है उसके बारे में तो कोई चर्चा ही नहीं होती। ज्यादा आज नॉर्मल लाईन अनलिमिट है। हमने तो कोई बयान प्रधानमंत्री का सुना नहीं पिछले 13 महिनों में।

प्रश्न : परमाणु विस्फोट और असि मिसाईल के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री ने ये कहा कि पिछली सरकारों पर अमरीका का दबाव था, और वो सरकार विस्फोट नहीं कर पा रही थी। पर इस सरकार ने किसी तरह के दबाव को सहे बिना ये काम किया। वे शायद ये संकेत देना चाह रहे थे, कि उनके सामने ये बात या अमरिका और भारत का दुश्मन नहीं बना है उनके कार्यकाल में?

श्री अर्जुनसिंह: ये किसको भुलावे में डालना चाहते हैं। भाषण के लिए ठीक है। लेकिन जो लोग इसके बारे में जानते है उनके सामने ये बात नहीं चलेगी।

प्रश्न : क्या काँग्रेस इन बातों को जनता के बीच रखेगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब सवाल यह है कि काँग्रेस इन बातों को राजनैतिक इसका मुद्दा बनाए तो वो भी दोषी होगी। इन मुद्दों का राजनीतिकरण करने का उस हद तक तो खैर हम नहीं जाएँगे, लेकिन ये जो विकृतियाँ पैदा हुई है, उनकी तरफ तो जाएँगे।

प्रश्न : मध्यप्रदेश काँग्रेस के कुछ नेता ये कह रहे है कि पिछले विधानसभा चुनाव जो कि अभी चार-पाँच

महिने पहले हुए हैं, उसमें काँग्रेस ने चूँकि 23 लोकसभा सीटों पर बढ़त ली थी, इसलिए जैसे कभी मुख्यमंत्री जी का बयान आया कि हम 18 से अधिक सीटें जीतेंगे, लेकिन ये महत्वपूर्ण तथ्य है कि पिछली बार आपको बहुमत सिर्फ इस कारण मिल पाया क्योंकि बहुजन समाज पार्टी ने छिपे रूप से काँग्रेस की मदद की थी। और इस बार भारतीय जनता पार्टी के साथ तालमेल के बारे में उस पार्टी में विचार चल रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए बहुजन समाज पार्टी ने छिपे रूप से इस प्रकार की मदद की थी ये सवाल नहीं था। सवाल ये था कि बहुजन समाज पार्टी ने शेयर ऑफ इंफ्लुेन्स पहले से तय कर लिया था कि हम यहाँ कन्सन्ट्रेट करेंगे। अब अबकी दफे उनकी क्या नीति होगी मैं कह नहीं सकता।

प्रश्न : मेरे पूछने का आशय ये था कि जो विधानसभा चुनाव के समय जो ताकत आप अपनी मान रहे थे, वो आपकी एक्चुयल ताकत नहीं थी। वह तालमेल की वजह से थी। क्योंकि इस बार उनसे कोई तालमेल नहीं है। कोई बात नहीं है तो सीटे बढ़ने की उम्मीद कैसे करेगी काँग्रेस?

श्री अर्जुन सिंह: नहीं बहुत से ऐसे एरियाज़ हैं जहाँ पर घटित हुई बहुजन समाज पार्टी का कोई वजूद नहीं है। ऐसे ऐरीयाज़ भी मध्यप्रदेश में है जहाँ पर घटित हुई या बढ़त हुई उसमें तो उनका कोई योगदान नहीं है। इसलिए ऐसी कोई बात नहीं है। हाँ सामान्य रूप से तो बहुजन समाज पार्टी का असर है, इसमें कोई शक नहीं है।

राजीव हत्या काँड में चन्द्रास्वामी की क्या भूमिका थी?

20 मई 1999 दिल्ली में जैन कमीशन मसले पर पत्रकारों से चर्चा के प्रमुख अंश —

I would like to make it very clear that the subject matter of this conferenece is only related to the issue of the letter that you have got which is in your possession already and we have just met the Home Minister Mr. L.K. Advani alongwith Shri R.N.Mittal who is the congress party Counsel in the Jain Commision of inquiry. The purpose of our meeting the Home Minister is clear from leter, we believe that stand which the Congress party had always maintained that there was a wider conspiracy in this assassination plot against Rajivji is now very slowly but certainly coming to light as nothing to say about the judgement of the Supreme Court because that judgement is based on the evidene that was raised before the Supreme Court about 26 accused who have been convicted by TADA court and the judgement of the Supreme Court is on that basis but the wider conspiracy about which both the Justice Verma Commission of inquiry and Justice Jain Commission of inquiry, Justice Verma and Justice Jain have said that there was cover up in the entire matter. It is that cover up now which has to be destroyed and the truth relating to other people who were involved in the conspiracy should come out and law of the land should take care of anyone count to be involved We reminded Home Minister of the assurance given by him on the floor of Parliament while placing the final report of the Jain Commission and the ATR on the table of the House that the Govt. will go to the farthest extent to get at the bottom everything and we told him about the apprehensions that as has happened in the

past in connection with very crucial witnesses that they were eliminated and nobody afterwards looked back and found out why such thing has happened and valuable and crucial were lost for all time to come and since the threat of this kind of situation has again arisen, We asked for security cover to Mr. Padbhanabhan Rangnathan and whatever he has knowledge of should be taken into account and then the MBMA should proceed. The Home Minister has assured us of this now we will see in what manner that assurance is carried out. That is all I have to say.

प्रश्न : आप यह कैसे कह सकते हैं कि राजीव जी की हत्या के पीछे बड़ी साजिश थी? क्या आपके पास कोई साक्ष्य है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए जो कहा जा चुका है उसको फिर से रिपीट करने की मैं आवश्यकता नहीं समझता हूँ। आज तो वह तथ्य independently सामने आ रहे हैं। हमने क्या कहा और किसने क्या कहा, उसके अतिरिक्त स्त्रोतों से उनके बारे में जानकारियाँ सामने आ रही है। हमारा केवल इतना ही कहना है कि जो जानकारी आ रही है, उस जानकारी का नोटिस लिया जाए और जो लोग इस प्रकार की जानकारी देने की बात कह रहे हैं, उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया जाए ताकि इस समूचे प्रकरण का जो एक दुःखद अध्याय रहा है जहाँ जानने वाले लोग, बोलने वाले लोग यहाँ तक कि पुलिस द्वारा गिफ्तार किए हुए लोग accused की हैसियत से वो रात को भाग गए। रात भर पुलिस ने कहा कि हमने उनको ढूँढा और रेस्ट हाउस से 100 गज के अन्दर सबेरे उनकी पेड़ में लटकी हुई लाश मिली। जहाँ ऐसे दुःखद उदाहरण हैं तो यह और भी जरूरी है कि सरकार इस जिम्मेदारी को समझे और अब कोई ऐसी बात ना हो, यह महत्वपूर्ण है।

प्रश्न : सुरक्षा की गारंटी देने के संबंध में आपकी क्या चर्चा हुई?

श्री अर्जुनसिंह: अब तो होम मिनिस्टर, जो एम.डी.एम.ए. के भी चार्ज में हैं, क्योंकि वह होम मिनिस्ट्री में है, वह अपनी जिम्मेदारी निभाए। सुरक्षा देने की भी प्राथमिक जिम्मेदारी होम मिनिस्ट्री की है। आश्वासन उन्होंने दोनों चीजों की दी है। और चर्चा के लिए वहाँ पर होम सेक्रेटरी, सी.बी.आई. डाइरेक्टर, एडीशनल होम सेक्रेटरी उनको भी बुला लिया था। सबके सामने बात हुई है और हम लोग देखेंगे आगे क्या होता है।

प्रश्न : आप को केन्द्रीय सरकार से इस कॉड के संबंध में क्या अपेक्षा है।?

श्री अर्जुनसिंह: इसीलिए हम लोग मिलने गए थे, अगर हम उनके उस आश्वासन से संतुष्ट हो जाते तो आज मिलने की जरूरत नहीं थी। हम लोगों ने उनसे स्पष्ट कहा है कि संवैधानिक रूप से जो आप कह रहे हैं, वह तो ठीक है लेकिन इस समूचे केस की पृष्ठभूमि को देखते हुए उसकी ओर से एश्योरेस होना चाहिए, केन्द्रीय सरकार के द्वारा एश्योरेस होना चाहिए, एक्शन होना चाहिए यही उनसे बात कही है।

प्रश्न : आपके अनुसार वह कौन व्यक्ति है जो इस कॉड के पीछे है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं किसी भी व्यक्ति के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता क्योंकि वह पूर्वाग्रह से ग्रसित होगा। हम केवल इतना ही कह रहे है कि जो भी तथ्य सामने आ रहे है या आ सकते है उनको सामने आने देना चाहिए और उनके आधार पर कार्रवाई होना चाहिए।

प्रश्न : इस संबंध में आपका निष्कर्ष क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं जाना चाहता इन तथ्यों के आधार पर जो होना चाहिए नियमानुसार सामान्य प्रक्रिया और इस केस की पृष्ठ भूमि और महत्व को देखते हुए किया जाना चाहिए।

प्रश्न : क्या आपको लगता है कि इसमें चन्द्रास्वामी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं कोई जिन्न नहीं हूँ जो बातें कही जा रही हैं वह इनवेस्टिगेंटिंग एजेन्सीज़ का काम है, उसका पता लगाएँ और निष्कर्ष पर पहुँचे और देश को बताएँ कि बात सही है कि नहीं है।

प्रश्न : जिस तरह से आरोप लगे हैं तो क्या आपको लगता है कि ज्यादा गंभीरता से चन्द्रास्वामी के खिलाफ काम होना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह तो आप ओपिनियन की बात पूछ रहे हैं, जाँच होगी तो गंभीरता से ही होगी, सतही और हल्की जाँच का कोई मतलब नहीं है, जबकि जैन कमीशन ने तो स्पष्ट ही लिखा है कि इसकी जाँच होना चाहिए, उनका इन्ट्रोगेशन होना चाहिए, मेरे कहने की क्या ज़रूरत है।

प्रश्न : इस सम्बन्ध में आपकी जानकारी क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: जो आप कह रहे हैं कुछ लोगों का मत ऐसा हो सकता है लेकिन मैंने भी जैसे आपने सुना है वैसे मैंने भी सुना है। मेरी जानकारी आप ही के स्तर की है कि सुप्रीम कोर्ट ने जिन 26 लोगों की अपील सुनी, उनमें से कुछ को षड्यंत्र में शामिल माना और उसकी वजह से उनका जो सेन्टेन्स था टाडा का उसको अपहोल्ड किया लेकिन एक्यूज्ड के अलावा जो षड्यंत्र था या नहीं मेरी जहाँ तक जानकारी है कोई मत सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने व्यक्त नहीं किया। आज जो बात गृहमंत्री से हुई उसमें भी यह बात आई कि सुप्रीम कोर्ट ने फैसले की वजह से एन.डी.एम.ए. को इनक्वायरी करनी है या कार्रवाई करनी है, फारवर्ड एक्शन के लिए, कोई व्यवधान नहीं है जो सरकार स्वयं उस फैसले को नही मानतीं उन्होंने तो एक्जामिन किया है परिस्थिति को।

Conspiracy in Rajiva Gandhi's Assassination

23 मई 1999 ए.आई.सी.सी. में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

I would like to add my apologies this is one given by Mr. Jogi disturbing you on Sunday. There is very popular song "Never on a Sunday, never on a Sunday". That is why the AICC doesn't have a briefing on a Sunday..... The reason why Pranab Dada and I wanted to tell you something today was that for the first time un-noticed by the media, We had a meeting with the Hon'ble Prime Minister last evening and didn't want any speculation on that account, that is the sole reason why we troubled you on Sunday. The letters you have got to fairly express it as to what we felt and while a letter was written. The Hon'ble Prime Minister also confirmed to us that he is aware of certain plots that ae being made in this connections and he has already informed the Congress President and all precautionary measures he has ordered the security forces to take. We only reiterated that this is matter of the highest importance and concern to all of us and the country. He wanted any suggestions that we could make in this regard. We told him that on our own, we are not equipped to make any

suggestions. All we can do, is to meticulously follow as political party any suggestions that the security or intelligence makes to us. But to make thing easier we agreed to the suggestion that somebody will be designated on behalf of the party to liaison with the security agencies so that the correct thing can be done. I drew his attention to the report of the Verma Commission of Inquiry which was set up only to look into the security lapses which laid to the assassination of Shri Rajiv Gandhi and we requested that the issues listed in that commission report should be looked into carefully and whatever is required to be done, should be done.

This is so far as this issue is concern, so this is what we had to inform you if there are any question, I don't see where there can be any question.

Question : Will you disclose what is written in the letter?

Shri A. S.: What is there in the letter, is there in letter. The Prime Minister said that he has information that certain people want to move in this matter and he has taken care of that, That is what he told us.

Question : Will you name the person whom you think was involved in the conspiracy of the assassination of Rajiva Gandhi?

Shri A. S.: Well, I am not in a position and I don't want to take any name. The situation I have described in the letter and I don't think it is anywhere confused it is very explicit. This was confirmed when the Prime Minster himself told us that yes he is aware of certain thing in this connection, so at the moment our only concern is that whatever step have to be taken, should be taken that is all.

श्रीमती सोनिया गाँधी को मारने की धमकी

24 मई 1999 दिल्ली इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों से चर्चा के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

जो कुछ पत्र में लिखा हुआ है वह तो स्पष्ट है इसी के संदर्भ में प्रणव दादा और मैं कल प्रधान मंत्रीजी से मिलने गए थे और उनसे हम लोगों ने जानना चाहा कि इस विषय पर उनकी तरफ से क्या कार्रवाई हुई है क्योंकि इस पत्र को राष्ट्रपतिजी ने कार्रवाई के लिए उन्हीं के पास भेज दिया। जैसा कि उनके उत्तर से स्पष्ट है। प्रधान मंत्रीजी ने कहा कि उन्हें भी इसी प्रकार की कुछ जानकारियाँ मिली हैं कि इस प्रकार का थ्रेट है और उन्होंने काँग्रेस अध्यक्ष को भी दी है। अपनी ओर से हम लोगों ने उनको यह निवेदन किया कि वर्मा कमीशन ऑफ इनक्वायरी में जो राजीवजी के Assassination के समय सिक्युरिटी एपरेटस में कमियाँ थी उनको इनक्वायर करने के लिए बैठाया गया था। जो निष्कर्ष वर्मा कमीशन ने इस संबंध में दिए हैं उनका अध्ययन करके जो कमियाँ उस वक्त पाई गईं, उनको दुरुस्त करने की कार्रवाई होनी चाहिए। अपनी ओर से पार्टी को हमें क्या करना है इस विषय पर जो भी हमसे एजेन्सियाँ कहेंगी पार्टी उस चीज को ध्यान में रखकर अपनी गतिविधियों को संचालित करेगी और हम आशा करते है कि वह कमियाँ दूर करके टोटल सिक्युरिटी का इंतजाम किया जाएगा।

प्रश्न : आपने राष्ट्रपति को दिए गए पत्र में क्या लिखा है?

श्री अर्जुनसिंह: चिट्ठी में हमने यह लिखा है कि भारत में तीन बार 30 जनवरी 1948, 31 अक्टूबर 1984 और 21 मई 1991 ये तीन देश के महान नेताओं की हत्या हुई। इन घटनाओं के पहले हर प्रकार से इनको टारगेट बनाकर उनकी निन्दा की गई, उनके खिलाफ घृणा पैदा की गई और उन्हें जिम्मेदार ठहराया गया अनेक प्रकार की बातों के लिए, वे सही हो या न हो और इस वातावरण में कुछ सिरफिरे लोगों ने यही ठीक समझा कि वे इनकी हत्या करें इसका केवल उसमें उल्लेख किया गया है और इस पृष्ठभूमि में यह कहा गया है कि आज उसी प्रकार की स्थिति देश में सोनिया जी के संबंध में निर्मित की जा रही है उन्हीं को टारगेट किया जा रहा है, उन्हीं के ऊपर सब चीजें लगाई जा रही हैं। हर प्रकार से वातावराण को उत्तेजित किया जा रहा है, उनके खिलाफ।

प्रश्न : श्रीमती सोनिया गाँधी की सुरक्षा के बारे में आपको क्या अपेक्षा है सरकार से?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो प्रधान मंत्री ने स्वयं हम लोगों को बता दिया अब उनसे ज्यादा तो हम जानते नहीं उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार किया कि हाँ, उनके पास ऐसी जानकारी है कि इस प्रकार की टारगेटिंग हो रही है और वे उसको रोकने के लिए उचित कदम उठा रहे हैं और उसकी जानकारी उन्होंने काँग्रेस प्रेसीडेंट को दे दी है इससे ज्यादा हम क्या कह सकते हैं।

प्रश्न : कहा जा रहा है कि सोनियाजी की सुरक्षा को खतरा है ऐसे में सिंह साहब कहाँ तक उचित होगा कि ऐसे में चुनाव में जाएँ?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इसकी वजह से कोई भी राजनीतिक नेता और वह भी सोनियाजी के स्तर की नेता कभी अपने कर्तव्यों से तो अलग हटेंगी नहीं, यह तो हम लोगों की चिंता है और हमें संतोष है कि इस चिंता में स्वयं प्रधान मंत्री भागीदार हैं, इस चीज पर पूरा प्रिकॉशन लिया जाए और इसके अलावा इसमें कुछ नहीं।

प्रश्न : बीजेपी ने यह कहा कि इसका राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए क्या आपको लगता है यह राजनीति से परे विषय है?

श्री अर्जुनसिंह: हमारी भी मान्यता है हमने तो इसको राजनीतिक विषय बनाया ही नहीं।

प्रश्न : लेकिन एक षड्यंत्र जिसमें राजनीतिक लोग शामिल हैं वही लोग जो पहले.....

श्री अर्जुनसिंह: आप इसको पढ़ लीजिए इसके बाद आपको सब चीजें क्लियर हो जाएँगी।

Question : The issue has come up just before AICC session in which an appeal is likely to make Smt. Sonia Gandhi to consider taking back her resignation?

Shri A. S.: Whatever her decision may be is entirely her to take.

Question : Tomorrow its almost certain that this appeal would be made by the AICC?

Shri A. S.: The AICC will make the appeal this is certain, on that we are only hoping that she accepts the appeal.

प्रश्न : क्या प्रधान मंत्री श्रीमती सोनिया गाँधी को सुरक्षा प्रदान कर कुछ प्रलोभन दे रहे है?

Shri A. S.: One I don't think that is the intention of the Prime Minister. I don't believe this is so and second of anybody is under the impression there she is going to be intimidated in taking a decision or not taking a decision that person doesn't know Smt. Sonia Gandhi.

काँग्रेस का संकट

30 मई 1999 नई दुनिया, इन्दौर के श्री सुरेश बाफना के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

प्रश्न : काँग्रेस में जो संकट चल रहा है, उसको आप किस रूप में देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: रूप में लेने का सवाल क्या है, वह तो परिस्थिति का निर्माण हो गया। काँग्रेस के कुछ नेताओं की खुदगर्जी की वजह से, और जो बदमिजाजी इन लोगों ने की उसका गहरा आघात सोनियाजी को हुआ है क्योंकि किसी राजनीतिक मुद्दे पर कोई मतभेद हो जाए तो बात समझ में आती है, व्यक्तिगत आधार पर वही लोग जो तीन दिन पहले तक दूसरा नगाड़ा बजाते थे, अचानक उन्होंने ये शुरू किया तो ज्यादा उनको उससे धक्का लगा। अब हम लोगों की तरफ से कोशिश है कि अपनी जो जिम्मेदारी है उसको फिर से निर्वहन करें, अभी तक तो आशय यह देखना है कि आगे क्या होता है।

प्रश्न : सोनियाजी ने जो 272 सांसदों का राष्ट्रपतिजी के सामने दावा किया तो किस आधार पर किया क्योंकि उसी वक्त मुलायम सिंह यादव ने, पत्रकार जो वहाँ पर मौजूद थे, उनको कहा था कि .....

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, उन्होंने दावा तो किया ही नहीं, उन्होंने यह कहा कि 272 लोग काँग्रेस के, इस गठबंधन सरकार के खिलाफ हैं, 270 ने तो वोट दिया, जिसने वोट दिया क्या उसको पक्ष में माना जाएगा, विपक्ष में ही माना जाएगा ना।

प्रश्न : जी हाँ।

श्री अर्जुनसिंह: बाकी जो 2 वोट थे, एक वोट दे नहीं सके, एक से गलती हो गई आ नहीं सके। वे संख्या जो मैंने बताई की 272 लोग इस सरकार के खिलाफ हैं उन्होंने यह नहीं कहा कि इनके सबके दस्तखत मेरे पास हैं, ऐसा नहीं कहा।

प्रश्न : राष्ट्रपति भवन से बाहर निकलते हुए ऐसा कहा था पत्रकारों को?

श्री अर्जुनसिंह: यही कहा था .....

प्रश्न : कि 272 का समर्थन है?

श्री अर्जुनसिंह: और क्या, यही मतलब था ना?

प्रश्न : लेकिन मुलायम सिंह यादव उसी वक्त कह रहे थे कि इस बारे में अभी हमारी उनसे कोई बातचीत नहीं हुई, ना तो सरकार के स्वरूप पर बातचीत हुई, ना कौन नेतृत्व करेगा इस पर बातचीत हुई?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, स्वरूप के बारे में तो ये 6 महीने से कह रहे थे, एक बार नहीं, ना जाने कितने बार कि इसे बाहर से समर्थन देंगे। ये इनिशिएटिव तो लें, ये तो मिली हुई है बी.जे.पी. से यही तो कहते थे और कहा था कि हम सरकार में नहीं जाएँगे यदि ये बात है वहाँ, सोनियाजी बने हम समर्थन करेंगे। आप सुरजीत से पूछें लेकिन अब सवाल यह है कि ऐसे लोगों के बारे में जिनकी बात का कोई महत्त्व ही नहीं है हम क्यों अपना समय बर्बाद करें।

प्रश्न : आपकी भूमिका के बारे में खास तौर से भीतर और बाहर भी है कुछ लोग वे आपत्ति प्रकट करते रहते है, कुछ लोगों का ऐसा कहना है और अखबारों ने भी छापा है कि आप फोतेदारजी, आर.डी.प्रधान, मि.जॉर्ज आप चार लोग थे, उन्होंने सोनियाजी को प्रभावित किया किसी रूप में?

श्री अर्जुनसिंह: यह सरासर गलत है।, सब चीजों की सी.डब्ल्यू.सी. में बात हुई, वहाँ पर सब बातें तय हुई, चार लोगों को यह अवसर नहीं था कि वह प्रभावित करें सब उसमें सम्मिलित थे। सबको अलग-अलग काम सौपा हुआ था। अब इसी से आप अँदाजा लगा लें, इस वक्त का हम लोगों का दृष्टिकोण क्या है, हमारी वफादारी पहली और आखरी काँग्रेस पार्टी और उसकी अध्यक्ष सोनिया गाँधी के लिए है। हम पार्टी का हित चाहते हैं। हम आपस में कोई पाइंट स्कोर करना नहीं चाहते और ऐसा कुछ कहकर हम लोगों के बीच में मतभेद पैदा हो ये भी नहीं चाहते, इसलिए मैं चुप रहा। खामोश इसलिए रहा कि मैं जानता था कि एक न एक दिन ये अपना असली स्वरूप सामने प्रकट करेंगे। अब हमको किसी को कुछ कहने की जरूरत ही नहीं, जरा भी जो सोच सकता है, समझ सकता है, वह समझ गया है, इनके आचरण से ही, मैं क्यों आगे बढ़कर उसमें पड़ूँ, यह है।

प्रश्न: संगमाजी ने यह कहा है कि कार्यसमिति और संसदीय दल ने सोनियाजी को यह अधिकार नहीं दिया था कि वे राष्ट्रपति के सामने सरकार बनाने का दावा पेश करें।

श्री अर्जुनसिंह: अब जो कह रहे हैं और पहले जो हुआ अगर वह विरोधाभास न दिखाएँ तो बोलें क्या? यह सब आफ्टर थॉट है, सरासर गलत है। कभी जब आपने उनको अपना नेता चुन लिया तो आप पीछे जाएँगे कि आप क्या बोल रही हैं, सरकार बनानी है, यह तो वर्किंग कमेटी ने तय किया, सी.पी.सी. में तय हुआ क्या संगमाजी को भेज देते।

प्रश्न: उनका कहना था कि एक्सप्लोर करें लेकिन दावा पेश करें यह बात नहीं हो, उसमें यह फर्क कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं संगमाजी के मुँह नहीं लगना चाहता हैं सोचता हूँ वह मर्यादा के नीचे की बात है।

प्रश्न: क्या आपको लगता है जो 15 मई की कार्य सति की बैठक थी, उसमें जैसे तीनों लोगों ने विदेशी मूल के मुद्दे को उठाया, वह किसी बड़े राजनीतिक षड्यंत्र का हिस्सा है?

श्री अर्जुनसिंह: निश्चित रूप से क्योंकि केवल मुद्दा उठाने तक सीमित होता तो मैं समझता कि ठीक है वह एक विचार व्यक्त करने का मौका था। तीन घंटे के अंदर लिखा पत्र भी पहुँच गया 5 पन्ने का, तब इससे तो समझने वाले समझते हैं, यह तो पूर्व नियोजित षड्यंत्र था, उसको अंजाम देने का प्रयास था। लेकिन एक चीज समझ लीजिए जो कुछ उन्होंने किया है उसमें वे सफल नहीं होंगे, न काँग्रेस को नुकसान पहुँचाने में सफल होंगे, उनकी जो महत्वकांक्षा है, उसकी तो दूर तक सफल होने का सवाल ही नहीं है।

प्रश्न : षड्यंत्र की क्या स्थिति थी, किस तरह का षड्यंत्र था?

श्री अर्जुनसिंह: धीरे-धीरे उजागर होगा, जल्दीबाजी नहीं करना चाहिए।

प्रश्न: संगमाजी का यह भी कहना है कि जो 15 मई को बैठक थी उसमें जब दोहरी नागरिकता का मुद्दा उठाया सोनियाजी का, तब सोनियाजी ने कोई स्पष्टीकरण इस पर नहीं दिया। 15 तारीख की बैठक में प्रणव मुखर्जी ने भी भोपाल में कहा था कि इस संबंध में मुझे भी कोई जानकारी नहीं है? क्या वास्तविकता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, सोनियाजी ने वहाँ पर स्पष्ट कहा, That was the only intervention उन्होंने कहा कि आप कैसी बात कर रहे है इस विषय को तो पार्टी में प्रेस के सामने मान लिया उन्होंने कहा कि

मि. कपिल सिब्बल और उनके साथ थे अजीत जोगी, ये बात स्पष्ट कर दी गई है, आपको न मालूम यह बात अलग है यह खुद कहा उन्होंने।

प्रश्नः यह कहा जा रहा है कि सोनियाजी ने शपथ पत्र के माध्यम से, कुछ लीगल डिस्कशन चल रहा है उस पर, उन्होंने जो है शपथ पत्र के माध्यम से इटली की नागरिकता का परित्याग नहीं किया जो जरूरी था, इस बहस के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, यह बहस तो हर वक्त किसी न किसी बहाने उठती रहेगी। कथित तथाकथित, कपोल कल्पित यह सब, एक बात बहुत साफ है कि उन्होंने इटली नेशनलिटी रिनाउन्स किया और इंडियन नेशनलिटी एक्सेप्ट किया इस बारे में कोई संदेह या किसी भी प्रकार का भ्रम नहीं है, अब बाकी लोग कहते रहें उससे क्या होता है।

प्रश्नः विदेशी मूल का मुद्दा लोकसभा चुनाव को किसी हद तक प्रभावित करेगा, क्या आपको नहीं लगता कि काँग्रेस कार्य समिति के सदस्यों द्वारा यह मुद्दा उठाने से अब ग्रामीण इलाकों में भी इस मुद्दे पर चर्चा हो रही है?

श्री अर्जुनसिंहः चर्चा तो कहीं भी हो सकती है, लेकिन इस मुद्दे पर ग्रामीण अँचल में कोई मत विभाजन नहीं होगा, कौन किसको मत देगा, निर्णय उनका क्या होगा? यह इस विषय पर नहीं होगा, अन्य विषयों को लेकर होगा। ये मेरी मान्यता है।

प्रश्नः चार घंटे तक सी.डब्ल्यू.सी. में इस विषय पर चर्चा होने के बाद ये अचानक जो कुछ हुआ कि कुछ लोगों की समझ में नहीं आया कि संगमाजी कैसे उनके साथ चले गए जबकि...

श्री अर्जुनसिंहः मैं आपसे कह रहा हूँ कि धीरे-धीरे इस षड्यंत्र की एक-एक परतें उभरेंगी, उस पूरे षड्यंत्र की परते उभरेंगी, तब तक इंतजार करना है।

प्रश्नः भाजपा की तरफ से एक सवाल उठाया जा रहा है कि अमरीका, इटली, ब्रिटेन के संविधान में यह व्यवस्था है कि वहाँ जन्मा व्यक्ति ही उच्च पद पर जाने का हकदार है तो भारत के संविधान में जो यह लोग माँग कर रहे हैं तो इसको आप किस तरह से फर्क करते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः मैं फर्क इसलिए नहीं करता कि जब संविधान बना तो माननीय अटल बिहारी वाजपेयी, के.एल.शर्मा, आडवाणीजी वहाँ नहीं थे। यह संविधान बनाया उन लोगों ने जिन्होंने अपनी जिन्दगी के कई साल जेल के सीखचों के पीछे बिताए हैं। जिनके ऊपर राष्ट्र भक्ति के बारे में प्रश्न लगानें की हिमाकत कोई नहीं कर सकता। कान्स्टीट्एन्ट एसेम्बली में इस पर बहस हुई और बहस के बाद एक निर्णय हुआ वह अपने देश के लोगों ने किया है। वे जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, उनकी बुद्धिमत्ता को हम प्रश्न वाचक चिह्न लगा दें? जो ये हैं जिनका स्वतंत्रता संग्राम से कोई लेना देना नहीं है। आज हम उनकी बात पर बहस शुरू कर दें, इसका औचित्य क्या है?

प्रश्नः कॉंग्रेस अध्यक्ष पद से सोनियाजी के त्याग पत्र को आप किस रूप में देखते हैं। केवल तीन नेताओं के विरोध के आधार पर अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर पार्टी को क्या अस्थिरता के भँवर में नहीं डाल दिया?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, यह गहरी वेदना का असर है, उन्हें राजनीति में आने की कोई अनिवार्यता नहीं थी। यही शरद पावर, संगमा यही तारिक और उनके साथ अन्य हजारों लोग सब सम्मिलित थे, उनसे प्रार्थना

करने के लिए, सोनियाजी को अध्यक्ष बनाने के प्रस्ताव के बार में स्वयं शरद पवार गए थे उनसे फाइनल अनुमति लेने के लिए आपको याद है।

प्रश्नः अच्छी तरह याद है वे और एन्थोनीजी गए थे।

श्री अर्जुनसिंहः इसलिए इनके अधिकार में बात नहीं है कि वे उनके बारे में कुछ इस तरह के सवाल उठा सकें। 6 मई को स्वयं पवार ने महिलाओं, पत्रकारों के बीच में जो बात कही वह भी स्पष्ट है। 17 अप्रैल को जब वाजपेयी सरकार गिरी, लोकसभा की सीढ़ियों पर जो इन्होंने कहा सोनिया गाँधी जिन्दाबाद, लोगों को भूला थोड़े ही है, उन्होंने कई बार बोला।

प्रश्नः सोनियाजी के समर्थन में एक उन्माद पार्टी के अंदर उठा है, इसको आप किस रूप में लेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः चूंकि इनका दिल और दिमाग साफ है। सोनियाजी इस देश के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं। एक नागरिक की हैसियत से उनके सब पूरे अधिकार हैं और 30 वर्ष पहले भारत के प्रमुख परिवार में बहू बनकर आईं। जिस परिवार ने इस देश के लिए सेवाएँ भी दीं हैं, संघर्ष भी किया है और बलिदान भी दिया है, इसलिए केवल कांग्रेसजनों के बीच में नहीं, सामान्यजनों के बीच में भी उनके प्रति दुर्व्यवहार के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया है, उसका दिग्दर्शन इसमें हो रहा है यही कारण है।

प्रश्नः सोनिया गाँधीजी ने इस्तीफा नहीं दिया तो क्या काँग्रेस पार्टी में टकराव की आशँका है?

श्री अर्जुनसिंहः बहुत कठिनाई में हम लोग फँस जाएँगे। हमारी पूरी आशा है कि वे स्वयं चीजों को समझ गई हैं, समझती थी और अततः कोई ऐसा फैसला लेंगी, जिससे काँगेस को नुकसान न हो।

प्रश्नः काँग्रेस पार्टी के लिए क्या सुखद स्थिति है कि वह एक नेता पर इतनी निर्भर हो जाए कि उसके बिना पार्टी के बिखरने का खतरा पैदा हो?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, सुखद या दुःखद अलग-अलग लोगों की मानसिकता पर है, यथार्थ यही है और भारत में काँग्रेस के अंदर भी इसी प्रकार की मानसिकता का स्पष्ट रूप से प्रभाव है उसमें किसी को अच्छा लगे, न लगे यह तो अपनी-अपनी बात है।

देश की जनता ही फैसला करेगी

6 जून 1999 रीवा में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

प्रश्न : जम्मू-कश्मीर में घुसपैठियों की समस्या कैसे हल की जा सकती है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए वहाँ क्या समस्या है लेकिन बहुत कुछ कहा जा चुका है और कहा गया है। लेकिन आज के समय पर तो केवल एक ही प्रश्न है। समस्त राजनीतिक पार्टियों के सामने और काँग्रेस उसी पर विश्वास करती है। फिर सहयोग और समाधान देना काँग्रेस का ही काम है। काम में सफलता दिलाना चाहिए कि वहाँ घुसपैठियों को निकाल दें। बाकी जो चीजे हैं जो उनकी महत्वपूर्ण है और उनके ऊपर निश्चित रूप से ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा।

प्रश्न : लाहौर घोषणा-पत्र के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः ये तो हम कह रहे है बहुत सी चीजें कही जा सकती है। लाहौर घोषणा-पत्र एक पड़ाव रहा। उद्देश्यहीन

प्रयास होता है। स्वयं व्यक्तिगत राजनीतिक लाभ लेकर तो यही परिणाम निकलता है। लेकिन ये सब चीजें विवादास्पद हैं। उनको इस वक्त उठाना उचित नहीं है।

प्रश्न : काँग्रेस चुनाव में गठबँधन बनाने की दिशा में क्या कर रही है?

श्री अर्जुनसिंह: अभी कोई निश्चित नहीं हुआ है। वर्किंग कमेटी के सामने यह फैसला होगा। विचार-विमर्श चल रहा हैं लेकिन अभी फैसला नहीं हुआ है।

प्रश्न : अभी पंचायत और मण्डी के चुनाव यहाँ स्थागित हुए। इस बात को लेकर कि आरक्षण 50 फीसदी हो।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आरक्षण तो सामाजिक समीकरण बनाने का सवाल है। उसमें कोशिश यही होनी चाहिए कि वह सर्वमान्य हो। लेकिन कभी-कभी अदालतें कुछ अपना दृष्टिकोण अलग रखती हैं। इसकी वजह से ये हुआ है। मैं समझता हूँ कि इसका भी हल निकाला जाएगा और वह भी सबकी राय से क्योंकि आरक्षण का विषय तो विवाद के परे हैं। उस मामले में तो कोई नए सिरे से सोचने का सवाल नहीं है।

प्रश्न : वैकल्पिक सरकार के गठन के मामले में क्या मुलायम सिंह के साथ बात हुई?

श्री अर्जुनसिंह: पूरी तरह से असल में वे लोग सोनियाजी का वर्चस्व किसी भी स्थिति में काँग्रेस और देश में नहीं देखना चाहते हैं और कारण उसके पीछे बहुत सरल और स्पष्ट हैं। उनके आगे उन लोगों की किसी की नहीं चलेगी तो इससे ऐसी कोशिश करो फिर वो नौबत ही न आए तो उस समय किया जब सरकार गिरी और सरकार बनाने का सवाल आया। अब जनता के बीच में चुनाव होकर फैसला होने का समय आया तो विद्रोह करके और ऐसे मुद्दे उठाकर जिनको भा.ज.पा. ने शुरू किया उनका ऐसा ख्याल है कि जनता को भी रोक सकेंगे। लेकिन अब फैसला जनता अपना करेगी। ऐसे लोगों के बहकावे में आकर कोई फैसला नहीं होना है।

प्रश्न : काँग्रेस क्या क्षेत्रीय पार्टियों के साथ गठबँधन करेगी?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो अभी विचार-विमर्श चल रहा है। इसमें अभी मैं कुछ कहना नहीं चाहता। लेकिन मोटे तौर से ये सबसे बड़ी हो उसके पीछे जो कारण हैं क्षेत्रीय भावनाओं व आकाँक्षाओं का समावेश पहले काँग्रेस के ही दृष्टिकोण में रहा करता था वो बीच में थोड़ा गुल हो गया। जिसकी वजह से क्षेत्रीय भावनाएँ जो थीं उनको केन्द्रित करके क्षेत्रीय दल मुख्य दल बन गए और उनको समर्थन मिल गया। काँग्रेस का ये प्रयास हैं कि वो जो पूर्ववत क्षेत्रीय हैं उसमें काँग्रेस ही ये सब आशाओं और आकाँक्षाओं का समावेश अपने ही दृष्टिकोण में कर सके। ये किया जा रहा है और अंततः लोकसभा के चुनाव में तो राष्ट्रीय दल ही ऐसी भावनाओं का समावेश करके विकल्प के रूप में देखे जा सकते हैं। वरना यही खंडित जनादेश है, यही खंडित सरकार, वहाँ कुर्सी की छीना झपटी ही मुख्य कार्य होता है वह हम लोगों ने देखा। पिछले तीन सालों में इससे आशा है कि शायद देश की जनता इसको समझ सकेगी और सही निर्णय ले सकेगी।

प्रश्न : चुनाव में पार्टी की नीति रीति क्या होगी?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए इस विषय पर जो उद्‌बोधन सोनियाजी का हुआ है, वही पार्टी का नीति विषयक आधार है। उन्होंने देश की जनता के ऊपर छोड़ा और देश की जनता को ही फैसला करना चाहिए उसका फैसला

न तो अटलजी कर सकते हैं और न पवार कर सकते हैं, और न संगमा कर सकते हैं। वह देश की जनता को ही करना चाहिए। जहाँ तक प्रधान मंत्री बनाने का सवाल है मैंने स्पष्ट कहा कि जैसी एक प्रक्रिया है जिसमें सांसद चुनकर आते हैं, वो लोग निश्चय करते हैं वो करेंगे जिसको चुनेंगे वो चुने जायँगे।

प्रश्न : ये जो अभी गोवा में हुआ उसके बारे में आपकी प्रतिक्रिया क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: पहली प्रतिक्रिया तो मेरी ये है कि गोवा के मतदाताओं का यह बहुत सूझबूझ से भरा निर्णय है। ये शायद पूरे देश को दिशा निर्देश भी दे सकता है और उसी की आवश्यकता भारत को इस समय है।

प्रश्न : जो कारगिल में चल रहा है। पाकिस्तान के विदेशमंत्री बातचीत के लिए यहाँ आना चाह रहे हैं। भारत ने उसको मना कर दिया है। उस पर आपकी क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: भारत ने ये नहीं कहा कि आप न आएँ। तारीखों के बारे में शायद कुछ है। वो तारीखें तो तय करना सरकार का काम है। उसमें हम आप क्या कर सकते हैं?

प्रश्न : आज के पेपरों से तो ऐसा लगता है कि प्रधान मंत्री ने उनको मना कर दिया है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं मैंने पेपर पढ़े नहीं है दिल्ली के लेकिन मेरा ऐसा ख्याल है कि केवल तारीखों के बारे में मतभेद है।

प्रश्न : लेकिन आपको ऐसा नहीं लगता है.....?

श्री अर्जुनसिंह: जो लगता है वह बाद में आएगा मैंने कहा है न कि कहने के लिए बहुत कुछ है लेकिन एक जिम्मेदारी पार्टी की हैसियत से हमें कब क्या कहना है ये हमें सोचना है।

प्रश्न : कारगिल के बारे में काँग्रेस की क्या नीति है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए इसमें तो हम लोगों को कहने को बहुत है और इतना ज्यादा है कि कहना पड़ेगा ही लेकिन इस समय काँग्रेस का स्पष्ट मत है कि हमने प्राथमिकता केवल उन घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने में देरी नहीं होना चाहिए और उसमें हमारे देश की सेनाओं का और जो सरकार आज बनी है वह बुद्धिमान है हमें उसका समर्थन करना चाहिए बाकी बाद में हम फिर कहेंगे जो कुछ कहना होगा।

कारगिल में सैनिकों ने स्तुत्य कार्य किया

18 जुलाई लखनऊ में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

स्वागत के सुर में मैं अपना भी सुर मिलाना चाहता हूँ और हम सबको बड़ा इत्मीनान है कि उ.प्र. में भाई सलमानजी के उनके साथियों की रहनुमाई में उ.प्र. में काँग्रेस का पुनः वर्चस्व कायम होगा, इसका हम सबको विश्वास है। आपने आज एक वक्तव्य देखा होगा प्रधान मंत्री के विशेष सचिव श्री बृजेश मिश्रा का जिसमें उन्होंने कहा है कि कारगिल के घुसपैठियों के बारे में सरकार जाँच करायेगी और यह पता करेगी कि कैसे इंटेलीजेन्स नाकामयाब रही। मेरा यह स्पष्ट मत है कि इस तरह की जाँच करने का जो इरादा जाहिर किया गया है, वह केवल इस समूचे मसले पर लीपापोती करने का एक बहाना है।

मीडिया के द्वारा अन्य स्रोतों से यह बात साफ जाहिर हो चुकी है कि कारगिल में जो घुसपैठिए आए, वो

काफी पहले आए शायद वाजपेयीजी की लाहौर यात्रा के पहले। अब चूँकि देश के बहादुर जवानों ने भारत की भूमि को घुसपैठियों से मुक्त करा दिया है जिसके लिए सारा राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ है। यह निहायत जरूरी है कि असलियत अब देश के सामने आए, अच्छा हुआ सरकार ने ही उसकी पहल शुरू कर दी। इरादा तो कुछ और है लेकिन हम चाहते हैं कि जाँच का दायरा और तरीका दोनों के बारे में देश की सभी राजनीतिक पार्टियों से विचार विमर्श करके फैसला किया जाए और यह स्पष्ट है कि केवल चन्द अफसरों का दोषी करार देकर और इस मामले को रफा दफा नहीं किया जा सकता। अगर इसमें जिम्मेदारी प्राथमिक रूप से है तो वह देश के प्रधान मंत्री, गृह मंत्री और रक्षा मंत्री की है उन्हे भी जाँच के दायरे में लाया जाना चाहिए ताकि सही बात देश के सामने आए।

दूसरी बात यह है कि यह मात्र संयोग नहीं है कि 6 मई को जब पहली बार देश को यह मालूम हुआ कि ऐसी गतिविधियाँ हुई हैं और सरकार ने भी बयान दिया कि हम कार्रवाई करने जा रहे हैं उसी समय पर दो बयान आए। रक्षा मंत्री के, जिसकी पुष्टि प्रधान मंत्री ने की। पहला बयान तो यह था कि पाकिस्तान के प्रधान मंत्री इस पूरी घटना से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। दूसरा बयान यह भी आया कि इन घुसपैठियों को सेफ पैसेज भी दिया जा सकता है। मैं समझता हूँ कि यह अद्‌भुत संयोग होगा कि वह सेफ पैसेज की बात जो इस घटना के शुरूआत में की गई, वही सेफ पैसेज आज सरकार ने इनको दिया है। यह सब चीजें जाँच के दायरे में आना चाहिए ताकि हम अपने इन शहीदों को जो हँसते-हँसते देश पर बलिदान हो गए, उनके प्रति भी न्याय कर सकें। जहाँ तक उ.प्र. के भाइयों और बहनों का सवाल है, एक नई फ़िजा मैं चारों तरफ देख रहा हूँ। जो अब जाति-पांति और छोटे-छोटे दायरों से ऊपर उठकर जैसा कि सदैव उ.प्र. की परम्परा रही, इतिहास रहा, अब सारे राष्ट्र के बारे में सोचने के लिए यहाँ के लोग तत्पर हैं और इसका दूरगामी परिणाम आने वाले चुनावों में देश के हित में होगा।

प्रश्न : कारगिल जाँच के संबंध में आपके क्या सुझाव हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, उसके बारे में मैं कोई फैसला या सुझाव देना उचित नहीं समझता हूँ। जब मेरी यह राय है कि समूचे प्रश्न पर सभी पार्टियों से सलाह मशविरा करके ही कोई फैसला होना चाहिए, वरना यह सरकार का जो एक तरीका होता है जाँच बैठा दी, अब कहेंगे कि जाँच होने तक चुप रहिए और 6 महीने बाद जाँच का नतीजा आएगा तो कहेंगे कि फलाने-फलाने अफसर इसके लिए जिम्मेदार हैं।

प्रश्न : इस बार के चुनाव में मुख्य मुद्दे क्या होंगे आपको?

श्री अर्जुनसिंह: वह तो हमारे अध्यक्ष ने पहले ही बताया है एक देश में राजनीतिक स्थायित्व के विरूद्ध जो खण्डित जनादेश की स्थिति बनती है उसकी वजह से देश की एकता में और देश के हित के साधन में बहुत कमी होती है दूसरा है साम्प्रदायिक शक्तियों से निजात पाना और उस संदर्भ में काँग्रेस पार्टी सारे देश के लोगों में जहाँ एक ओर अपील करेगी वैसे ही उसी प्रकार से अपनी ओर से भी इस दिशा में पहल करेगी।

प्रश्न : आपके ऊपर यह आरोप लगता है कि जब बाबरी मस्जिद का डिमोलेशन हो रहा था उसके एक दिन पहले आप लखनऊ तक आए...

श्री अर्जुनसिंह: अगर आप कुछ चीजें भूलकर काफी चीजों को याद रखना चाहते हैं तो आपकी मर्जी है। लेकिन यह हकीकत नहीं है जिस प्रकार से आपने जो बात कही है, मैं जरूर आया तो था पर चोरी-चोरी नहीं आया था, और चोरी-चोरी वापस भी नहीं गया था। निश्चित बात थी कि नरसिम्हाराव जी

नहीं चाहते थे कि मै अयोध्या जाऊँ और उन्होंने मुझे कहा कि आप लखनऊ में इन लोगों से बात करके और फिर आइए। मैंने उनकी बात को माना क्योंकि वे हमारे प्रधान मंत्री थे, मैं उनकी केबिनेट में था, लेकिन यहाँ कि स्थिति को देखते हुए दिल्ली वापस जाकर मैंने आग्रह किया था कि अगर उचित कार्रवाई नहीं हुई तो 6 तारीख को मस्जिद की शहादत हो सकती है।

प्रश्न : बाबरी ढाँचे को ढहाने को आप किस तरह से देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बाबरी मस्जिद के विषय में, समूचे प्रकरण पर इस समय मेरे मत में उचित रुख यही होगा कि अब यह विषय फिर से अदालत के पास पहुँच गया है। जहाँ से भाजपा ने सभी मर्यादाओं को तोड़कर चौराहे पर लाकर उसको बना दिया था, अब पुनः यह अदालत के दायरे में है जल्दी से जल्दी उसका फैसला हो और जो भी फैसला हो वह सबको मान्य हो, इस बात को काँग्रेस अपनी ओर से कहेगी।

प्रश्न : क्या यह सही है कि बाबरी ढाँचा विध्वंस में काँग्रेस की भी मौन स्वीकृति थी?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस ने तो खास ऐसी बात नहीं कही थी। सवाल यह है कि आरोप जिनके ऊपर लगे हैं उन पर अदालतों में कार्रवाई हो रही है। उसको रोकने का सवाल नहीं है और उसके बारे में अपनी कोई राय जाहिर करने का सवाल नहीं है। अंतिम फैसला तो मतदाता किसी विषय पर करते हैं। जब तक कोई आरोप सिद्ध न हो तो देश के कानून के मुताबिक तो वह इनोसेंट है।

Television is a new arena of election campaign

27 अगस्त 1999 श्री अतुल घोष के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Question : Do you think that television has also become an arena for electioneering through which one is conducting a battle campaign other than which is happening?

Shri A.S. : See, election campaign is carried out at different levels and the medium of the campaign one is of course, the first person speech of the candidate then press publicity, written pamphlet and all that. Now the radio, and television are addict to the mass communication by the candidate vis-a-vis his election programme so obviously it is a new dimension that is no doubt about it.

Question : New dimension of television compaigning has started, has it also given rights to new breed of television politicians?

Shri A.S. : I think the arena of television politician is not very healthy one but the thing is that it is a means which every politician would like to utilize for putting across his views to as large section of people as possible added advantage of his own picture being communicated along with businesses.

Question : But for some politicians who are important spokespersons of different parites their existence primarily depend upon this media?

Shri A.S. : That is part of the way you go about it, sometime some people are more adapted at it, others are not so adapted at it.

Question : Do you think these people who are Kapil Sibble, Arun Jetaly, Sitaram Yechuri that is a breed ot politicians so do you think that these people just because coming more and more on television that help them gain extra clout as politician, which is beyond them what they have put in, in terms of field work?

Shri A.S. : Obviously I mean but this is not a discourage their strecher and their position that is a matter of fact that many of these people who come on televtion as spokesperson of different parties have not gone through the meal as they say in the political sense. That's a fact. But one should not hold that against them.

Question : But these people who are senior politicians, may not be so articulated at the same time, do you think just because the voice this held against them जो एक चीज हो रही है कि Senior politicians have been working from 30-40 years in the field they have been pushed out of televtion just because, they are not very telegenic or young?

Shri A.S. : I don't think that has been anywhere consciously, unconsciously it might have happened here and there but I don't think that is a conscious attempt in that.

Question : There is no conscious decision to keep?

Shri A.S. : No-no.

Question : इस साल आप लोगों ने कितने टेलीविज़न प्रोग्राम किए?

Shri A.S. : Well, very difficult to keep count.

Question : Has it as much as you been doing in the past years?

Shri A.S. : Whenever it was thought necessary by the party or by me, that I should do it, has been no hesitation in doing it.

Question : Would you not say that there has been a proportional decrease?

Shri A.S. : The opportunity doesn't arrive where I should do something I should not be thrusting myself just be on the TV.

Question : यह और बताइए कि is there sort of latest bias है क्या smart English speaking people या coming certain kind of a profile तो इसमें grass route politician he is never going to be that sleek, so why should he be denied opportunity of facing the electronic media?

Shri A.S. : You see, these are things in which you are not denied or you grab question of the necessity as it arises for the party to put its point of you across, we should look at it from that angle I don't think there is any personal bias for or against anyone whenever that such an issue comes where people who are directly involved into decision making in issues. They will come where it is only question of representing what has been decided or reacting of certain events others will come.

Question : एक बात और बताइए कि कॉंग्रेस में भी जैसे कपिल सिब्बल, अजीत जोगी, अम्बिका सोनी Those are the new faces on television so is there slightly a shift away from the senior politcians?

Shri A.S. : That's precisely what I am saying there is no conscious shift liffle more is being read into it that is there.

Effect of Kargil war

अगस्त 1999 पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं —

Question : What is the heritage of this country? What were the effects of chinese war? Do you suggest that Defence Minister should resign because of the lapses in Kargil War?

Shri A.S. : Please, please we wanted to hear superior wisdom so that we could also be lightened but that should be short so that even I remember what I have to reply. If I remember I am replying to what you have asked me and Jamwal Shab will certainly say what he has to say. As far as I remember this is a matter of record that Mr. Krishna Menon resigned before the war ended. You can check up and secondly, about the hertiage of this country. The heritage of this country not defined by individuals however, high important or wise they may be. The heritage is forced by common people of our country, don't be mislead the A, B and C create a heritage. The heritage is that which is decided by collective wisdom of the country and on that I think there can be no two opinions that the heritage of our country is peace not war, so far as the third question that you have asked which I recollect, I hope I am not forgetting it, is the Rajya Sabha session aksed for and while were there things talked about them. If the Rajya Sabha session had been held. I don't think the heavens would have fallen and I will only like to remind you that the height of the Chinese war. The present Prime Minister of India Shri Atal Bihari Vajpayee raised these very question and these very manner and Pt. Jawahar Lal Nehru does not hesitate even one day to summon the Rajya Sabha and ask everyone to come for discussion. Rajya Sabha and Lok Sabha can not go against the interest of our country.

The point that was made, whether you call it, disfailure or that failure is immaterial the fact remains that people came in this war or; war like situation was dealt with within our borders. It was not dealt with outside our borders and therefore, that question arose now if you think that in the Chinese war no territory was taken back by India that is not a factual statement. Yes, Siachin is not about in the other sectors, the land that Chinese have taken, may be by mitual agreement, just is it happened here, I don't think these comparisions to derive or to praise anyone is relevant that is why I have in the very beginning said, the point is that unless we are able to fix our priorites properly than these things well happen and some other aspects of the matter which I don't hope that there is no relationship and that perhaps promted that question by the spokesman according to the official thing, the whole thing came to knowledge of Govt. of India on 6th May. If I remember correctly within a couple of days of 6th May. The Defence Minister of India and the Prime Minister of India both hint that the Pakistan Govt. political Govt. is not involved in this. Second hint that

came, I don't know in what background, the issue of safe passage something events historically happen in manner, which give rise to many questions, which can't be answered. Now, they will be answered in due time they will be answered. The reason for this question to be posed or subdue to be expressed. We don't know one thing we know that when Pakistan intruders went back our guns were silent and whether you can call it safe passage or whatever you may call.

Question : The new regional party of Mr. Mufti, what do you think has the position to have many impact on the the future prospect of the Govt. in the State?

Shri A.S. : My assessment is and with all due respects to Mr. Mufti because I thought he will apply more rational parameter for his action. This is an action which has no basis one can't understand why he had to do this and he has also not explained it. Only thing that has come out is that he wanted a discussion with the militance without any conditions what we have said in the Press. Just recollect India has faced such problem with millitancy in this kind of situation where a section of our own people have sort to go out from the orbit of national thing and pose such problems. We saw it in the North East, Mizoram, Assam. We saw it in Punjab and I can tell you at least in two instances. I was directly involved both in Punjab and Mizoram. We never said that there won't be any discussion free and frank discussion. No condition asked only that be maintained and I think we can't afford not to maintain is that whatever solution we want to find out, has to give within the parameter of the Indian constitution. If Mufti can say that I don't see anybody disagree with him but he seems to be hinting there is the solution available beyond the pale of constitution. That the country is not prepared to accept. So far as impact is concern, I have grave doubt whether he will have any impact in Jammu & Kashmir outside का तो सवाल ही नहीं उठता।

Orissa Situation

नवम्बर 1999 दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं?

The statement issued by the A.I.C.C. under our signature is quite pointed all but I have to say that is time that the agenda of the Sangh Pariwar seems to be murdered mayhem and intimidation should be taken note of nationally and all parties and people who believe in the secular nature of our party should devise wages and means to halt this senseless violence and loss of life property and also the credibility of the country. As has ben mentioned in the press not that Chief Minister of Orissa was asked by the Congress President to proceed to the spot and he is already reported back to her. The General Secretary incharge of Orissa Shri Madhav Raoji has also gone there and I think he would be returning to Udeshwar by the evening. There is a very definite pattern in the whole

thing. What is the objective one can't definitely say but one thing is clear that the theory propounded by the Sangh Pariwar sometime back about ethnic cultural purity and unity one can imagine their all the methodology is seem to have been evolved by the Sangh Pariwar to achieve that. So the condemnation of this incidence was very very sharp by the Congress President, which I have quoted in the statement. We are confident that the people who are involved will be apprehended the name of the Mr. Dara Singh, who is a resident of Itava in U.P. has come out prominently as the leader of this whole pack. He has not been caught yet. But Orissa authorities are confident that they will be able to apprehend him also. This is all I have to say, Mukerji dada wants to say something.

Question : Why the orissa government has not taken stern action against the culprits?

Shri A.S. : You see, the answer to this question would be very simple. I won't say simple but it has to be answered in that way. That you can't take any action against someone unless their action acrosses the limits of law. The point is that if certain things are projected in a manner the people want to move in that direction certainly is taken, note of by the authorities. But you can't prevent them unless the law is broken. Now it is quite clear from not only this incidence but incidence is happening all over the country. The Sangh Pariwar has taken up a programme believing that they are behind the pale of the law. That is the impression that can't be allowed to go and it is this, which the Prime Minister address.

Question : Has this incidence shown failure of proper security arrangements in the State?

Shri A.S. : No, you see, can't expect any Govt. to protect. Every hamlet and as we all know the missionary work in very isolated places in almost inaccessible places and it is a work which obviously is something dealing with humanitarian work. Now this person who was killed along his two children, was running a big leprosy hospital there, and from many years who is there any apprehension to the person of that missionary. Every year he used to hold such meeting there and nothing happened. So then if one day these people, some people decide to take the law into their hands stealthly come to a vehicle in the dead of night and perpetuate this act, I don't think it is possible to apprehend and then preventive action from before that is what I mean.

Question : Do you find some ulterior motive to distablize the country?

Shri A.S. : Well, I think whatever action has to be taken and these comments. I don't have to contest because they are born out of essence of anxiety. I don't think anybody wants to target India for anything.

Question : Do you agree to have a national debate on such incidences?

Shri A.S. : The Prime Minister wants to treat this entire issue seriously then you should come out of that national debate mind set. He thinks is going resolve everything. Once these things are taken seriously even the question of banning such organisation can

also be addressed. Some incident have happened, which are unfortunate no doubt about it.

Question : What is the approach of Congress aboutl this incidence?

Shri A.S. : I think the approach can only be understood in the context of the traditional Congress approach, which has been consisted over the decades where going to any shrine whether it is of any religious denomination, is not invested with any political significance and it has always being treated as such and I see, no reason why anybody should treat her visit in other way.

Question : The State Govt. held this tour?

Shri A.S. : I think this was done, must be about a month back when there whole things started about state conventions and all.

Question : Is Sonia Gandhi's visit to Orissa was organised?

Shri A.S. : Of course, it is a normal visit, her visit is to attend the State level political conference of Andhra Pradesh.

Question : Who else has gone to the place of incidence?

Shri A.S. : Well, I think now that the General Secretary has gone there, the Chief Minister has gone and come back all the facts that they have collected tomorrow morning.

Question : How you explain the incidance occurrence?

Shri A.S. : Well, some months ago, perhaps a year ago, a definition of India's one culture, one nation, one family, one people I mean that kind of regimentation in the country was propounded by the Sangh Pariwar. So since you ask me what is how this explain I said may be it is a projection of that.

Question : How the State Govt. handle this incidence?

Shri A.S. : Well, State Govt. have to mainly handle this. They must now identify such areas and the security consciousness must be brought about on good thing that happened in Orissa, which perhaps could be replicated else where else that a meeting of all village leaders, Panchyat from all religious denomination was held in the presence of Chief Minister where a peace committee was formed and Hindus, Christian and everyone they collectively decided to see that such a thing does happen again and that they will give protection to these people.

Question : What action Congress has decided to take?

Shri A.S. : We are waiting for the return of Shri Madhav Raoji as soon as he comes back because he has gone to the spot. This is based on the information of the Chief Minister where he had to dash yesterday itself and in the morning he has informed the Congress President let him come back then we will decided on that.

प्रश्न : कॉंग्रेस पार्टी इसमें क्या करने जा रही है?

श्री अर्जुनसिंह: उड़ीसा में जो अत्यंत दुःखद घटना घटी है, इसके बारे में कल जैसे ही महाराष्ट्र के दौरे से कॉंग्रेस प्रेसिडेंट श्रीमती सोनिया गॉंधी वापस आईं, उनकी जानकारी में लाया गया, जिस पर उन्होंने गहरी

वेदना और दुःख प्रकट किया। इस तरह की हिंसा की वारदातें जानबूझकर की जा रही हैं। और निर्दोष जाने जा रही हैं, उन्होंने तत्काल उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री पटनायक को निर्देश दिया कि वे इसकी पूरी जानकारी लेने के लिए और जाँच करके दोषी व्यक्तियों को जल्दी पकड़कर उनको सजा दिलाने की प्रक्रिया पूरी करें। श्री पटनायक वहाँ गए, वहाँ से उन्होंने सूचना दी उसके आधार पर मैं यह कर रहा हूँ कि यह हमला करीब 100 लोग जो बजरंग दल के तथाकथित लोग हैं, उन्होंने किया है, कुछ लोग जो उनको बचाना चाहते थे उनको भी उन्होंने वहाँ नहीं आने दिया और उस गाड़ी में जहाँ ये डॉक्टर और उनके दो बच्चे सो रहे थे, उसमें पेट्रोल छिड़कर और आग लगाई गई। उनको भी उससे बाहर नहीं निकलने दिया और यह अत्यंत लोमहर्षक घटना हुई।

प्रश्न : क्या संघ परिवार हताश है?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो स्पष्ट दिख रहा है कि संघ परिवार ही डिस्परेट है। और बजरंग दल उसका अंग है। शायद भारत की जो ऐतिहासिक परम्परा रही है सद्भाव की धमर्निरपेक्षता की वह इनको रास नहीं आ रही है या कि वे समझते हैं कि इतनी आसानी से वे इसको खंडित कर सकते थे वह हो नहीं पा रहा है। इसलिए इस तरह की घटनाएँ हो रही हैं।

Question : Is it also related to the resurgence to the Congress?

श्री अर्जुनसिंह: अगर उनको काँग्रेस से राजनीतिक तरीके से खतरा है उसकी राजनीतिक तरीके से कोशिश करें। काँग्रेस अगर रिसर्जेन्स हुआ है जनता के माध्यम से तो नहीं हुआ।

प्रश्न: मगर ये काँग्रेस रूलिंग स्टेट में पहली बार हुआ है पहले यह गुजरात तक ही सीमित था अब इन क्षेत्रों में भी फैल रहा है जहाँ काँग्रेस का शासन है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं नहीं समझता कि यह काँग्रेस रूल स्टेट में किया गया है। यह पूरे देश के लिए प्लान किया गया है। यह जरूर है कि आशंका अब है, जहाँ काँग्रेस रूल स्टेट हैं वहाँ ये घटनाएँ घटित होंगी, मुझे विश्वास है कि जो मुख्यमंत्री हैं, काँग्रेस रूलिंग स्टेट्स के वे इससे पूरी तरह से सतर्क हैं।

प्रश्न : कनवर्शन से जुड़ी हुई एक बहुत वीभत्स वारदात हुई है इसके बारे में आप कुछ कहेंगे? कनवर्शन की वजह से ही क्या इनको जिंदा जला दिया गया?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल गलत है। जो वहाँ 15-20 साल से वहाँ काम कर रहे हैं। तो गत वर्षों में क्यों नहीं हुआ।

प्रश्न : अभी आपका क्या प्लान है?

श्री अर्जुनसिंह: अभी तो हमारी पार्टी के जनरल सेक्ट्री इनचार्ज श्री माधव रावजी वहाँ गए हैं। कल तक या रात तक वे वापस आएँगे।

म.प्र. में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब

19 दिसम्बर 1999 इलाहाबाद में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

प्रश्न : म.प्र. में एक मिनिस्टर की हत्या हुई है?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो बड़ी ही वीभत्स घटना है और एक बहुत होनहार राजनीतिज्ञ की हत्या हुई है, यह बात आपने आप में ही उसका एक बेकग्राउण्ड है। यह बात है कि हिंसा की प्रक्रिया को ऐसे नहीं रोका जा सकता

है, उन परिस्थितियों पर काबू पाना चाहिए जिसकी वजह से कुछ लोग भ्रमित होकर इस रास्ते पर जाते है। इसके शिकार तो निर्दोष लोग ही होते है। काँवरे ने तो किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं, बहुत ही सीधा साधा कार्यकर्ता था पिछड़े वर्ग का एक बहुत सक्रिय वर्कर था।

प्रश्न : यह क्या दिग्विजय सरकार की असफलता नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, फेलियर तो ऐसी घटना में प्रशासन का कुछ न कुछ फेलियर तो होता ही है, लेकिन जैसा मैने कहा ना कि यह आइसोलेटेड इन्सीडेंस ऑफ वाइलेंस को आप रोक नहीं सकते।

प्रश्न : यह प्रतिक्रिया की घटना थी कि....

श्री अर्जुनसिंह: यह तो प्रतिक्रियात्मक ही है लेकिन यह जरूर है कि इसकी गहराइयों में जाकर कि यह सब क्यों हो रहा है, उसको तो जरूर देखना चाहिए।

प्रश्न : जिस प्रदेश का मंत्री ही सुरक्षित नहीं है वहाँ की जनता....

श्री अर्जुनसिंह: इसके लिए तो आप जनर्लाइजेशन जरूर कर सकते हैं, उसको ना तो मैं उसका कान्टेस्ट करता, ना उसका सपोर्ट करता, लेकिन सवाल उससे ज्यादा गहरा है यह मेरा कहना है।

प्रश्न : आपको क्या लगता है कि यह क्यों हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जो शासकीय ढाँचा है, वह समाज के जो सबसे गरीब लोग हैं, उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को पूरी तरह से पूर्ण नहीं कर पा रहा है। सही बात यह है अब यह कई आरोप-प्रत्यारोप का विषय नहीं है। वह चिन्तन का विषय है, उस पर कदम उठाने का सवाल है। क्योंकि न तो यह एक पार्टी से जुड़ा विषय है, न तो एक प्रदेश से है। आप देख रहे हैं चारों तरफ क्या हो रहा है, कहाँ आंध्र प्रदेश, कहाँ मध्यप्रदेश, कहाँ बिहार सभी जगह है।

प्रश्न : क्या मुख्यमंत्री बदले जा सकते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह तो कोई उसके लिए विषय नहीं है।

प्रश्न : सी.डब्ल्यू.सी. में आगे चलकर कोई परिवर्तन हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जो निर्णय होना है उस निर्णय के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता। अब जरा दो चार दिन, 10 दिन जो भी लगे उसके अंदर तो निर्णय हो ही जायगा तो अपने आप में पता चल ही जाएगा।

प्रश्न : बिहार के मामले में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: चुनाव लड़ने की तैयारी है, और अपने बलबूते पर लड़ने की तैयारी है।

प्रश्न : किसी से अलायन्स....

श्री अर्जुनसिंह: अभी तो स्पष्ट है किसी से नहीं है।

अल्पसंख्यकों के लिए काम करें।

दिसम्बर 1999 जयपुर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश इस प्रकार है —

बहुत सी जानकारियाँ तो आप लोगों को मिल ही गई होगी। मेरे आने का मकसद था ये कॉंग्रेस प्रेसिडेंट का माइनॉरिटिज़ के लिए 7 पाइंट जो रिलीज़ किया था, उसके ऊपर हर स्टेट में जहाँ पर कॉंग्रेस की सरकारें है तो उसी का सभी जगह जो अपने मुख्यमंत्री है, उनसे मिलकर बातचीत करने का कि किस हद तक उस पर कार्रवाई हो सकी

है। उसी सिलसिले में मैं यहाँ आया था। गेहलोत जी से कल रात को बात हुई थी उन्होंने जो मुझे एक स्टेटमेंट दिया है वह आप लोगों को शायद मालूम ही होगा। यह दिसम्बर 1999 का है, इसमें शिक्षा, लेंग्वेज, राज्य अल्पसंख्यक आयोग, इकानामिक बेकवर्डनेस के सिलसिले में स्टेट लेवल कार्पोरेशन सेट अप किया जा रहा है। इम्प्लायमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम भी है, ये सब अलग-अलग केटेगरी के 7 पाइंट हैं, उन पर जो यहाँ पर कार्रवाई हुई है, उसकी जानकारी मैं आपको दे देता हूँ। आप इसको देख सकते हैं। हम सबको इस पर संतोष है, कुछ चीजें बाकी हैं वह भी आपको इससे मालूम हो जाएगा कि कौन-कौन सी बाकी हैं। इस संबंध में गेहलोत जी ने कल यह कहा है कि वह एक मंत्रिमंडल की उप समिति गठित करेंगे जो उनके सभापतित्व में इस पूरे प्रोग्राम को इंम्पलीमेंट करने के लिए और आगे कार्रवाई करने के लिए उत्तरदाई होगी। इससे एक हाइएस्ट लेवल पर एकाउन्टेब्लिटी भी स्थापित हो जायगी और फिर मैं समझता हूँ कि आगे और तेजी से इस पर काम हो सकेगा। वैसे जो मेनिफेस्टो पार्लियामेंट के चुनाव में आया हुआ था काँग्रेस का, उसका मुख्य संबंध तो केन्द्रीय सरकार से है, लेकिन ये काँग्रेस अध्यक्ष ने अपने पार्टी के मुख्यमंत्रियों से कहा है उनमें से अगर ऐसे पहलू हैं जिन पर स्टेट में भी अमल हो सकता है तो वे उन मेनिफेस्टो को देखकर और उस पर भी कार्रवाई करें। यह बेकग्राउण्ड है। यह हमारे श्री खान साहब हैं हमारा जो केन्द्र में ए.आई.सी.सी. का डिपार्टमेंट है, उसके सम्मानीय सदस्य हैं, मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं और हम दोनों आए थे और गेहलोत जी को हम लोगों ने अपनी ओर से धन्यवाद दिया है और आशा करते हैं कि आगे चलकर माइनारिटीज़ के सिलसिले में स्टेट में जो कार्रवाई हो रही है वह और तेजी से आगे बढ़ेगी।

प्रश्न : आपकी योजना को राज्य व्यापी बनाने के लिए क्या किया जा रहा है?

श्री अर्जुनसिंह : इसमें जितने स्टेप्स दिए गए हैं, ये स्टेट लेवल का एक्शन लेने वाले हैं। जब स्टेट लेवल पर एक्शन हो जाएगा तो उसके बाद ही फिर सर्क्युलेट करेंगे नीचे, स्टेट लेवल पर एक्शन हो गया है, जैसे माइनारिटी कमीशन का बनना अब यह पहले खत्म कर दिया गया था। शेखावत जी के टाइम में, अब इसको इन्होंने पुनस्थार्पित किया है तो ऊपर से ही तो पता चलेगा नीचे क्या पता चलेगा।

प्रश्न : गुजरात सरकार ने वहाँ राष्ट्रीय सेवक संघ में जाने के लिए सरकारी कर्मचारियों को छूट दे दी है। इस संबंध में केन्द्रीय सरकार को क्या कार्रवाई करना चाहिए तथा काँग्रेस का क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंह: यह बहुत ही, संगीन और संवेदनशील विषय है और यह एक प्रकार से भारतीय प्रशासन को एक प्रदेश के नहीं, शासन तंत्र को विकृत करने वाला एक कदम है। मैं इस पर अलग से कमेन्ट इसलिए नहीं कर रहा हूँ क्योंकि इस विषय को विशेष तौर से कल दिल्ली में काँग्रेस वर्किंग कमेटी के सामने उस पर विचार विमर्श होगा और वर्किंग कमेटी की तरफ से एक अधिकृत स्टेटमेंट आयगा इसलिए मैं आज पर कुछ नहीं कहना चाहता हूँ, रह गया यह कि आर.एस.एस. का और केन्द्र की सरकार का क्या रिश्ता है, यह एक बहुत रहस्य की बात है। कभी तो उनकी तरफ मुखातिब हो जाते है वाजपेयीजी, कभी अनमुनी करने लगते है। लेकिन स्पष्ट है कि यह जो तरीका है यह केवल लोगो को भ्रम में डालने की बात है। अंततः दोनों के उद्देश्य और दोनों के विचार एक है तो ये विकृतियाँ तो इस राजनीतिक तंत्र में और ज्यादा नजर आएगी आगे चलकर। अब हम लोग इतना ही कर सकते है कि ये विकृतियाँ उस हद तक न पहुँच जाएँ जो समूचे देश को प्रभावित प्रतिकूल तरीके से करें।

यह हिन्दुस्तान की राजनीतिक लड़ाई है, जहाँ से फरेबी राजनीतिक लोग, बाजीगर राजनीतिक लोग, जो केवल इधर से उधर तस्वीर बनाकर, करिश्मे दिखाकर, वायदा खिलाफी करके जनता को भ्रम में डालना चाहते हैं, इनके बारे में इस प्रदेश की जनता फैसला करेगी, सारे हिन्दुस्तान में इसकी आवाज जाएगी, उसका मैसेज जाएगा।

— श्री अर्जुनसिंह

12 फरवरी 2000

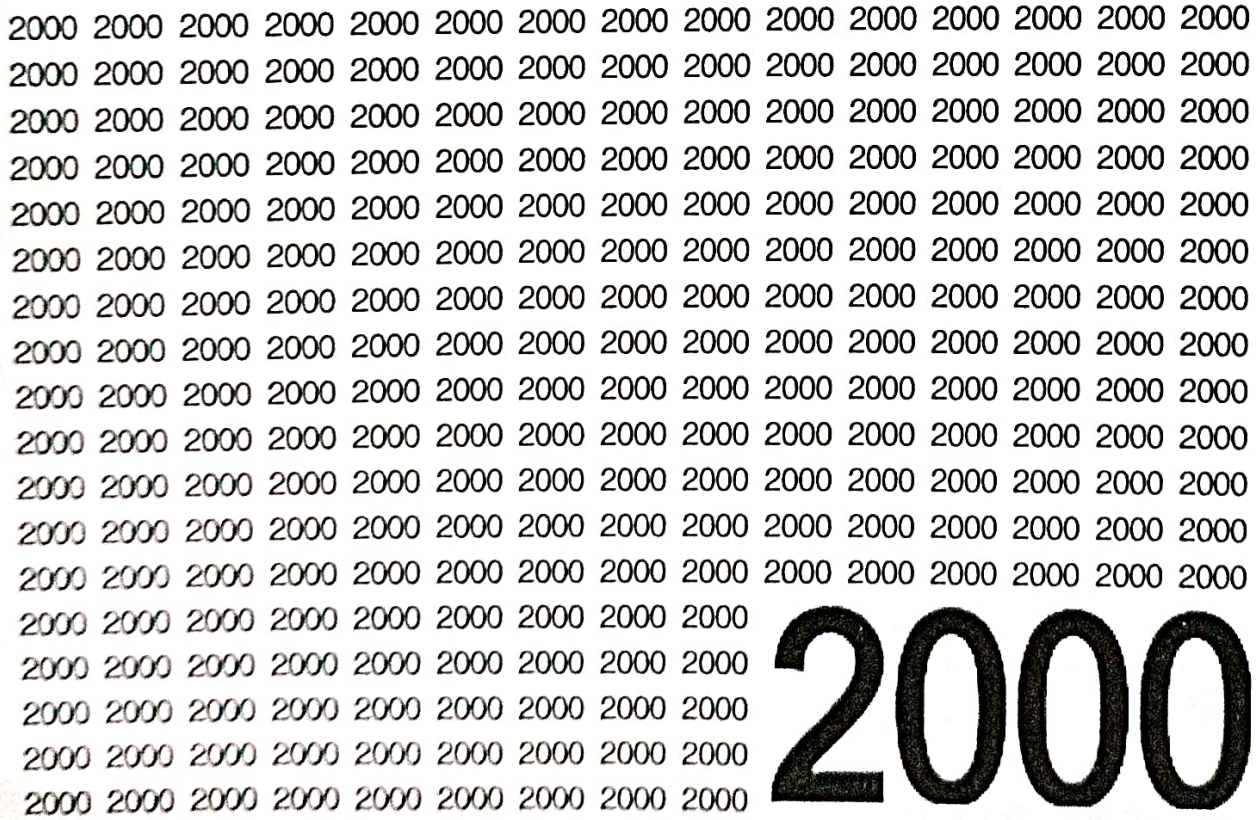

2000

श्री अर्जुनसिंह: अन्य प्रदेशों में

किसान हितों की रक्षा होना चाहिए

12 फरवरी 2000 को कलायत (हरियाणा) में चुनावी सभा के भाषण के प्रमुख अंश —

काँग्रेस के सभी आदरणीय साथियों और इस सभा में आए हुए आदरणीय बुज़ुर्गगण, नौजवान साथियों, आदरणीय माताओं और बहनों!

आज हरियाणा की इस वीरभूमि में आकर आप सबके दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला। मैं इसके लिए चौधरी वीरेन्द्र सिंहजी का और इस क्षेत्र के काँग्रेस के उम्मीदवार भाई बलदेवजी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। हरियाणा प्रदेश हमारे देश का वह प्रदेश है जिसने इस बात को साबित किया कि भारत का कृषक वर्ग कृषि मजदूर ये हौसला और क्षमता रखने हैं कि उन्होंने भारत को सही मायने में अन्नदाता का स्वरूप देकर अन्न के मामले में अपने पैरों पर खड़े होने के लायक बनाया। दुनिया के अंदर ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ के किसानों से किसी भी प्रकार से हरियाणा के किसानों का योगदान देश के निर्माण में कम रहा हो और इसीलिए ये पहली ज़िम्मेदारी है प्रादेशिक शासन की और केन्द्रीय शासन की कि वे किसानों की रक्षा सबसे पहले करें। यदि किसानों के हितों की रक्षा नहीं होती है उनको भुलावे में रखकर केवल वोट पाने के लिए काम होता है तो यह एक तरह से हिन्दुस्तान को कमजोर करने वाली बात होगी।

अब हरियाणा में तो बहुत सी बातें चौटालाजी के बारे में अलग-अलग तरह की कही जाती हैं। दिल्ली में तो हम लोग केवल एक ही बात जानते हैं कि अगर हिन्दुस्तान में कोई राजनीतिक बाजीगर है तो केवल चौटालाजी हैं, हरियाणा के। किसी दिन वे वाजपेयीजी की बगल में हैं। किसी दिन उनको गाली दे रहे हैं। कभी जो 4-5 लोगों का सौदा कहीं और से हो जाता है। मैं समझ नहीं सकता कि हरियाणा के वे बहादुर लोग जिन्होंने देश की सरहद की रक्षा की है, जिनमें असीम क्षमता है वे ऐसे राजनीतिक बाजीगरों के चक्करों में पड़ क्यों जाते हैं। समय आ गया है कि आप इस स्थिति को सुधारें। अकेले चौटालाजी ही काफी थे। एक फरेबी काफी होता है, अब तो भारतीय जनता पार्टी के फरेबी नेता भी उनसे जुड़ गए हैं। जिन्होंने समूचे हिन्दुस्तान को धोखा देने में बहुत महारत दिखाई है। ये चौटालाजी और बीजेपी का गठबंधन, यह केवल दो स्वार्थी राजनीतिक तत्वों का गठबंधन है। इससे जनता के हित का कोई लेना देना नहीं है। यह बात आपको अच्छी तरह से समझना चाहिए।

क्या आपकी मदद होती रही है, नहीं भी होती रही होगी लेकिन काँग्रेस पार्टी ने अपने कुछ सिद्धान्त और उसूल बनाकर रखे हैं। सबसे पहला उसूल काँग्रेस का यह है कि भारतवर्ष के गरीब के पीछे हम खड़े रहना चाहते हैं। वह किसी जाति, धर्म का हो, हिन्दुस्तान के किसी कोने में रहता हो, कोई भी भाषा बोलता हो, वह भारत का है और हम सब उसके हैं। ये सिद्धान्त हैं काँग्रेस पार्टी के, क्योंकि किसान इस देश की रीढ़ है, इसलिए जितनी भी योजनाएँ और कार्यक्रम बने उनमें प्राथमिकता किसानों के हितों को दी जाए, उनकी समस्याओं को दिया जाए और

तीसरी बात है कि भारतवर्ष दुनिया के सामने कभी भी सिर झुकाने के लिए तैयार नहीं है। हम किसी से लड़ना नहीं चाहते। खामोखाँ किसी से दुश्मनी मोल लेना नहीं चाहते, लेकिन भारत को किसी ने आँख दिखाई, तो हम उसको बर्दाश्त नहीं करते। यही तीन चीजें काँग्रेस पार्टी की है।

आज जो कुछ हुआ है। आपने देखा कि किस प्रकार से बीजेपी ने देश के हितों को कमजोर किया है और चौटालाजी उसमें उनके साथ गए हैं और वे समझते हैं कि सारे हरियाणा के लोगों को भुलावे में डालकर फिर से यहाँ से वोट ले लेंगे। बिजली की बात हो, मुफ्त मिलेगी, अरे भाई पहले बिजली पैदा होगी तभी तो मिलेगी, बिजली पैदा करने के लिए चौटालाजी ने पिछले 8-9 सालों में क्या किया? यह मुफ्त बाँटने की बात अलग है, लेकिन जो बिजली पैदा ही नहीं की जा रही है, तो बाँटेंगे क्या? इस तरह की बातें किसानों को केवल गुमराह करने की बातें हैं। अब देश गुमराह होने के लिए तैयार नहीं है। इसीलिए यह राजनीतिक लड़ाई, हरियाणा में जिसका 22 तारीख को फैसला होगा, यह राजनीतिक लड़ाई केवल हरियाणा की नहीं रही है। यह हिन्दुस्तान की राजनीति की लड़ाई है, जहाँ से फरेबी राजनीतिक लोग, बाजीगर राजनीतिक लोग, जो केवल इधर से उधर तस्वीर बनाकर, करिश्मे दिखाकर, वायदा ख़िलाफी करके जनता को भ्रम में डालना चाहते हैं, इनके बारे में इस प्रदेश की जनता फैसला करेगी, सारे हिन्दुस्तान में इसकी आवाज जाएगी, उसका मैसेज जायगा और लोग समझेंगे कि हरियाणा के लोगों ने पहचान करने की शुरुआत कर दी है। जो कुछ कार्यक्रम हरियाणा के विकास का हुआ है। यह मुझे कहने की जरूरत नहीं है। वह सब काँग्रेस की देन है। जितनी योजनाएँ चाहे वे सिंचाई की हो, चाहे वह सड़कों की हो, चाहे वह शिक्षा की हो, चाहे वह बिजली की हो, हर बात पर काँग्रेस की मुहर लगी है, आज से 25-30 वर्षों से लेकर आज जो रुकावट आई है देश में और हरियाणा में, जहाँ डमरू बजाकर राजनीति करने की एक नई फिजा शुरू हो गई है, मेहरबानी करके इन बाजीगरों का डमरू बंद कीजिए और काँग्रेस के प्रत्याशी को विजयी बनाइए। धन्यवाद।

जात पाँत के आधार पर काँग्रेस की नीति नहीं बनती

14 फरवरी 2000 बख्तियारपुर (बिहार) की चुनावी सभा में दिए गए भाषण के अंश -

काँग्रेस पार्टी के इस क्षेत्र के सम्मानित उम्मीदवारों, राजेन्द्र कुमार यादवजी, इस मंच पर विराजे हुए काँग्रेस सभी आदरणीय साथियों और इस सभा में पधारे हुए आदरणीय बुजुर्गों, नौजवान साथियों! आज आपके बीच में आकर आपके दर्शन करके और आपसे दो शब्द कहने का जो मुझे अवसर मिला है। इसके लिए मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि बिहार की यह, वो धरती है, वो भूमि है, जिसका अद्वितीय इतिहास रहा है। हजारों साल से ये भूमि भारत के महान पुरुषों को जन्म देती आई है। देश की आजादी की लड़ाई बिहार से जब चंपारण जिले से फौजी बाबा ने शुरू की थी, वही युद्ध था जिसने देश को आजादी दिलाई और उनके साथ में कैसे लोग थे। डाक्टर राजेन्द्र प्रसादजी, भारत के पहले राष्ट्रपति बने, जयप्रकाशजी जिन्होंने भारत की समग्र क्रांति में समूचे देश को आंदोलित किया, श्री सिन्हाजी न जाने कितने हमारे देश के राजनीतिज्ञ लोगा थे जिन्होंने बिहार को अपनी जन्मस्थली, कर्मस्थली बनाकर सारे देश को लाभ दिया। इसलिए जब हम आज बिहार की धरती पर आकर खड़े होते है तो एक तो जो इतिहास की बेला हमें मिली है, वही आज के इतिहास की हालत को देखकर रोना भी आता है। क्योंकि इस पीढ़ी के राजनीतिक नेताओं ने केवल अपनी खुदगर्जी को सामने रखकर समूचा अपना राजनीतिक चरित्र गिराया है। ये न इतिहास की बात है, न न्याय की बात है, न शांति की बात है।

सामाजिक न्याय का जो नारा है वो खोखला नारा है। अगर समाज के कमजोर वर्ग के लोग हरिजन हों या

छोटे-छोटे किसान या मजदूर हो वो मारे जाते रहे हैं। इसी बीच विकास की नींव हर किसी को नहीं मिली है। खास तौर से जो समाज के सबसे कमजोर वर्ग के लोग हैं, गरीब वर्ग के हैं सबसे ज्यादा अन्याय उनके साथ हुआ है। हमारे हरिजन भाई जिनकी माली हालत अच्छी नहीं है, जिनको आगे बढ़ने के लिए रास्ते नहीं हैं। उनके लिए लालू यादवजी ने क्या किया है? एक कोई ऐसी मिसाल दें जिसको हम कह सकें कि ये काम बिहार के लोगों की भलाई के लिए किया गया है। ठीक है आप नारा देकर लंबी चौड़ी बातें करके लोगों को भुलावे में डालकर जब तक चाहे लोगों को भुनाते रहे। लेकिन आज वो समय आ गया है। हम 21 वीं सदी की दहलीज़ पर खड़े हैं। सारी दुनिया के साथ हिन्दुस्तान को भी कदम उठाकर भविष्य के साथ आगे बढ़ना है और उस स्थिति में अगर बिहार आज की हालत में खड़ा रहेगा तो कई दशक पीछे हम चले जाएँगे। जबकि दुनिया कहीं की कहीं पहुँच जायगी। आज एक नया गठबंधन बना है, अटलबिहारी वाजपेयीजी के नेतृत्व में जिसमें ऐसे-ऐसे महारथी हैं जिन्होंने काम तो शुरू किया गाँधी जी की सेवा करके, जिन्होंने अपनी राजनीति की नींव डाली डॉक्टर राममनोहर लोहिया और जय प्रकाश बाबू की छत्र छाया में। आज वे सब कुर्सी के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और बी.जे.पी. की गोद में जाकर बैठ गए। क्या यह भारत का भविष्य होगा कि जहाँ सिर्फ कुर्सी की चाहत हो चाहे उसके लिए अपने आदर्श खोना पड़े, चाहे अपने सिद्धांत खोना पड़े, अपनी इज्जत खोना पड़े? किसी प्रकार से अपने घर को भरो।

यह जमाना अब बिहार में समाप्त होना चाहिए। उसको समाप्त करने की क्षमता आज किसी में है तो आप में है, जो मतदाता हैं और पार्टी यदि कोई है जो उसको कर सकती है तो वह काँग्रेस पार्टी है। जो सोनियाजी के नेतृत्व में काम कर रही है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आप इस मायाजाल को साफ करिए। अब ये जात पाँत के आधार पर राजनीति को चलाने का यही अंजाम होगा। जो आज बिहार में हुआ है। इसलिए मेरी आपसे पुरजोर दरखास्त है कि जो पार्टी गुलामी से निकालकर आजादी के मैदान में लाई पिछले पचास सालों में भारत को आगे बढ़ाने की कोशिश की, कहाँ से कहाँ पहुँचाया। आप उस पार्टी को फिर से, सहारा दीजिए। ये मैं नहीं कहता कि काँग्रेस पार्टी से कभी कोई गलतियाँ नहीं हुई, हुईं लेकिन काँग्रेस में फर्क इतना ही है कि हम अपनी गलतियों को स्वीकारने का हौसला भी रखते हैं और जनता से माफी माँग आगें ठीक ढंग से चलने का वादा भी कर सकते हैं। जितनी अन्य पार्टियाँ हैं वे कभी दाएँ मुड़ेगी, कभी बाएँ मुड़ेगी, कभी नीचे जाएगी, कभी चुपचाप बैठ जाएगी, कभी किसी से हाथ मिला लेंगी। काँग्रेस पार्टी ने कभी भी सांप्रदायिक शक्तियों से पिछले 100 साल के इतिहास में हाथ नहीं मिलाया। भले गाँधी को भी जान देनी पड़ी। श्रीमती गाँधी को कीमत देनी पड़ी अपनी जान की और राजीव गाँधी को देनी पड़ी। लेकिन अपने सिद्धांत पर अटल रहे। ये है भारत की तस्वीर को बनाने की चाहत। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि चुनाव के दिन आप पँजे के निशान पर मोहर लगाकर एक होनकर सेवक के रूप में श्री यादवजी को चुनिए। आपके बिहार को एक नई फिजा में ले जाने के लिए आपके क्षेत्र को आगे बढ़कर काम कर सकें। यही मेरी आपसे प्रार्थना है। धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकार वार्ता

आर.एस.एस. की भूमिका संदिग्ध

10 फरवरी 2000 को ए.आई.सी.सी. में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

ये बात जो आर.एस.एस. के संबंध में इस समय प्रधान मंत्री और गृह मंत्री द्वारा कही जा रही है, यह एक

तरह से उस विषय में जो सही प्रश्न है, उसको नजरअंदाज करके ये सब बातें कही जा रही हैं। भ्रम फैलाने के लिए, आज हम ये मानते हैं कि जो गैरकानूनी या अन-ला-फुल एक्टिविटी करने पर आर.एस.एस. को बैन किया था, उस सूची से आर.एस.एस. को निकाल दिया गया। इसमें कोई दो राय नहीं है लेकिन यह तो स्पष्ट हुआ कि किसी गैरकानूनी कार्रवाई करने के लिए उस सूची में आर.एस.एस. आया। लेकिन यह विषय आज नहीं है। इस समय तो कुछ विशिष्ट कार्रवाई करने के लिए उस सूची में उसको शामिल किया गया। सवाल यह है कि आर.एस.एस. की भूमिका क्या रही है? उसके उद्देश्य क्या रहे हैं, उसकी सोच क्या रही है और कौन सी दिशा देने के लिए इस संस्था की स्थापना की गई थी?

जैसा कि मैंने अपने वक्तव्य में कहा है कि 75 वर्ष करीब-करीब हो रहे हैं इस संस्था को स्थापित हुए और यदि प्रधान मंत्री और गृह मंत्री के वक्तव्य के आधार पर हम चलें तो यह साँस्कृतिक संस्था है जिसने भारत में बहुत से सांस्कृतिक कार्यक्रम किए हैं। तीन प्रमुख साँस्कृतिक पहलू के कार्यक्रम इसके हुए, एक तो इन्होंने पूरी तरह इस बात की तकवारी की कि कहीं दूर से भी इनका छुआता देश के उस राजनीतिक संघर्ष में न हो, जो देश ने अपनी आज़ादी के लिए लड़ा। दूसरा इन्होंने वह वातावरण तैयार करने में बहुत बड़ी मदद की, जिस वातावरण का फायदा उठाकर नाथूराम गोड़से ने अपने कार्य को देश हित में बताते हुए गाँधीजी की हत्या की। तीसरा सांस्कृतिक कार्यक्रम बाबरी मस्जिद को गिराने का था जिसे संघ ने अपनी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी और कर्तव्य के रूप में निरूपित किया और इसी संदर्भ में मैंने इस वक्तव्य में श्री गोलवलकरजी के विचारों को उद्धृत किया है, जो सरसंघचालक थे आर.एस.एस. के और इस संस्था के मुख्य वैचारिक प्रणेता स्रोत थे और दूसरा वह शपथ जो प्रत्येक आर.एस.एस. के स्वयं सेवक को ग्रहण करना पड़ता है, लेना पड़ता है जब वह संस्था का सदस्य बनता है। उसको मैंने उद्धृत किया है।

प्रधान मंत्री और गृह मंत्री जो समय-समय पर अपने लिए बहुत बड़े गौरव की बात बताकर और इस संस्था से जुड़ने की बात कहते हैं उनसे मैंने कुछ सवाल किए हैं कि श्री गोलवलकरजी की विचारधारा, जो संघ की विचाराधारा को परिभाषित करती है, उससे वे किस हद तक सहमत है, नहीं है और जो शपथ ली जाती है जो शपथ उन्होंने भी ली होगी, जब उन्होंने आर.एस.एस. ज्वाइन किया होगा उस शपथ की शब्दावली भी और गोलवलकरजी के विचार भी पूरी तरह से भारतीय संविधान के मूल उद्देश्य और उसके आदर्शों के विपरीत हैं। इन दो में से प्रधान मंत्री और गृह मंत्री किसको महत्त्व देते हैं। यह प्रश्न पूछा जाए।

प्रश्न : किस कारण प्रधान मंत्री अपने को आर.एस.एस. का सदस्य बता रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, प्रधान मंत्री बहुत उतावले हैं इस वक़्त यह साबित करने के लिए कि वे भी आर.एस.एस. में है। पता नहीं क्या कारण ऐसा खड़ा हो गया है लेकिन वह उनकी परेशानी है। सीधा सवाल तो अब ये आएगा इस देश में कि भारत गाँधीजी के आदर्शों पर चलेगा या गोलवलकर के आदर्शों पर चलेगा, यह जवाब देश को देना है और यह देश इनको देगा, इनकी समझ में पहले नही आएगा उस प्रकार से देगा, जिस प्रकार से इनकी समझ में आएगा।

प्रश्न : आज ही उनके एक मंत्री ने कहा है कि संघ के एक प्रचारक को देश ने जब प्रधान मंत्री चुन किया है तो अब संघ सांस्कृतिक है कि नही है....

श्री अर्जुनसिंह: यह टिप्पणी के योग्य तो नही है लेकिन आपने प्रश्न किया है तो मै जरूर टिप्पणी करूँगा। वरना यह विषय टिप्पणी के योग्य नहीं है क्योंकि संविधान मे और प्रजातंत्र में जनमत माना जाता है,

उस जनमत के आधार पर जनता फैसला करती है। बड़ी होशियारी से श्री वाजपेयीजी ने और उनके सहयोगियों ने दूर से भी लेश मात्र भी इस बात की शंका न हो कि वे उन मुद्दों से जुड़े हैं जो संघ के मुद्दे हैं इसलिए उन्होंने एन.डी.ए. बनाया और एन.डी.ए. बनाकर उन सब मुद्दों को जिनसे संघ जुड़ा था उनको बेक बर्नर पर रख दिया। अब ये बेक बर्नर और फ्रंट बर्नर जो नई थ्योरी पॉलिटिकल इस देश में ईज़ाद की गई है, यह कहने के लिए तो वाक्य बहुत अच्छे हैं, चाहे वह बेक बर्नर से हो या फ्रंट बर्नर से हो, यह तरीके देश में आग लगाने के हैं और वह आग नहीं लगनी चाहिए इसीलिए आज देश में इस बारे में विचार हो और जो विचार करते हैं वे आगे आकर अपनी राय दें, जनमत बनाएँ और वह स्थिति आने न दें यह इसका मकसद है।

प्रश्न : क्या राजग में सभी दल सेक्युलर हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बातचीत यथार्थ में हो या न हो यह हम मानकर चलते हैं कि वे सभी दल ईमानदारी से सेक्युलर हैं और वे स्वयं इस विषय पर निश्चित सोचेंगे ऐसी मेरी मान्यता है।

प्रश्न : अभी इसके खिलाफ में कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है...

श्री अर्जुनसिंह: समाचार-पत्रों से यदि समझा जाए तो प्रतिक्रियाएँ तो आनी शुरू हुई हैं। करुणानिधि की आई है, टी.डी.पी. की आई है।

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.H.E.L., BHOPAL
26927



CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.H.E.L.
2692
26927



इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन की स्थापना कवि-चिंतक और राजनीतिज्ञ श्री श्रीकान्त वर्मा ने 1982 में की थी, जो सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों का राष्ट्रीय संगठन है। पिछले बाईस वर्षों में इस संगठन ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक साहित्यिक परिसम्वाद और सांस्कृतिक समारोह आयोजित किये हैं, जिनमें सार्क देशों के लेखकों का सम्मेलन तथा महात्मा गाँधी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर पर परिसम्वाद उल्लेखनीय है।

इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन भारत के साहित्यकारों का मंच है, जिसके माध्यम से भाषायी कट्टरपन, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयतावाद के विरुद्ध लगातार आवाज़ उठायी जा रही है। भाषायी सीमाओं को तोड़ते हुए सभी भारतीय भाषाओं के बीच सम्वाद विकसित करने के उद्देश्य से परस्पर अनुवाद, पुस्तक प्रकाशन और साहित्य संकलन की दिशा में यह मंच सक्रिय है। यह भारत में एक ऐसा वैचारिक आन्दोलन है जो भारतीय संस्कृति की बहुवाचकता के प्रति समर्पित है।

प्रत्येक धर्म; आस्था, विश्वास और कर्मठता का सुंदर समन्वय है। हिन्दू धर्म आस्थाओं का पुंज है, ईसाई धर्म विश्वासों को कसौटी पर खरा उतारने का अलौकिक अवसर है और इस्लाम धर्म कठिन से कठिन परिस्थितियों में कर्मठता का प्रमाण देने का माध्यम है। मंदिर हो, मस्जिद हो, गिरजाघर हो या गुरुद्वारा - कहीं भी परमात्मा के दयालु, करुणामय व स्थितप्रज्ञ स्वरूप के दर्शन करने में मुझे कोई दिक्कत [illegible] महसूस नहीं हुई।

[illegible]